JANNATI ZEVAR (HINDI)

तख़रीज शुदा

मसाइल व आदाब और सबक़ आमोज़ वाक़िआ़त का ला जवाब मजमूआ़

जन्नती ज़ेवर



तालीफ़ : शैख़ुल ह़दीष ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी رحمة الله تعالى عليه

इस किताब में आप पढ़ेंगे

मुरीद को किस त़रह़ रहना चाहिये	अवलाद की परवरिश का त़रीक़ा	सास बहू के झगड़े और इन का ह़ल	इस्लाम में औ़रत का मर्तबा व मक़ाम
नमाज़, वुज़ू, ग़ुस्ल, रोज़ा, ज़कात और ह़ज के मसाइल	उम्महातुल मोअमिनीन और दीगर सालिहात का तज़किरा	रोज़ी में बरकत के वज़ाइफ़	क़ुरआने पाक की सूरतों के ख़वास

المدينة العلمية
(دعوتِ اسلامی)

मकतबतुल मदीना
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ***! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।***

(المُستطرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : *अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।*

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

*किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये ।*

जन्नती ज़ेवर

यह किताब **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या** **(दा'वते इस्लामी)** ने "उर्दू" **ज़बान** में पेश की है। **मजलिसे तराजिम, बरोडा** **(दा'वते इस्लामी)** ने इस किताब को "**हिन्दी**" **रस्मुल ख़त़** में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़-लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, e-mail या sms) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर षवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी (रस्मुल ख़त़) का तराजिम चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	ष = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح

ज़ = ژ	ज़ = زھ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = ـعـ
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
् = ْ	ु = ُ	ि = ِ	- = َ	ी = یٖ	ू = وُ	ा = آ

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)
मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,
नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द
Mo. + 91 9327776311
E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुतालआ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا (پ۱۷، الحج:۲۳)

जन्नत में पहनाए जाएंगे सोने के कंगन और मोती

जन्नती ज़ेवर

इस्लामी मसाइल व ख़साइल का ख़ज़ाना

–: तालीफ़ :–

हज़रत शैख़ुल हदीष

अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी मुजद्दिदी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه

–: नाशिर :–

मक्तबतुल मदीना

421, उर्दू मार्केट, मटया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद,

देहली– 6 फ़ोन : 011-23284560

الصلوٰۃ والسلام علیک یارسول اللہ   وعلٰی اٰلک واصحابک یا حبیب اللہ

जुम्ला हुक़ूक़ ब हक़्क़े नाशिर महफ़ूज़ हैं

नाम किताब : जन्नती ज़ेवर

मुसन्निफ़ : अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ 'ज़मी رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (शो 'बए तख़रीज)

सिने त़बाअ़त : ज़ुलक़ा 'दतुल ह़राम, 1434 हि.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली - 6

-: मक्तबतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :-

❁... अह़मदाबाद : सिलेक्टेड हाऊस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, मो. + 919327168200

❁... मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

❁... नागपूर : सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पूरा, नागपूर फ़ोन : 9326310099

❁... अजमेर : 19 / 216 फ़्लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, (0145) 2629385

❁... हुबली : A.J मुधल कोम्पलेक्स, A.J मुधल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक - 08363244860

❁... हैदराबाद : मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, (040) 2 45 72 786

E.mail : ilmia26@yahoo.com

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

"जन्नती ज़ेवर पूरी पढ़े" के 17 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की 17 निय्यतें

अज़ : शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार** क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم :-

((نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ))

"मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"

(المعجم الکبیر للطبرانی،الحدیث:۵۹۴۲،ج۶،ص۱۸۵،داراحیاء التراث العربی بیروت ملتقطاً)

दो मदनी फूल :-

﴿1﴾ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का षवाब नहीं मिलता।

﴿2﴾ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा उतना षवाब भी ज़ियादा।

﴿1﴾.... इख़्लास के साथ मसाइल सीख कर रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ का ह़क़दार बनूंगा।

﴿2﴾.... ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और

﴿3﴾.... क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा

﴿4﴾.... इस के मुत़ालए़ के ज़रीए़ फ़र्ज़ उ़लूम सीखूंगा।

﴿5﴾.... अपना वुज़ू, गुस्ल वग़ैरा दुरुस्त करूंगा।

﴿6﴾.... जो मस्अला समझ में नहीं आएगा उस के लिये आयते करीमा

فَسْئَلُوْٓا اَھْلَ الذِّکْرِ اِنْ کُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो ऐ लोगो इ़ल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इ़ल्म नहीं* (پ۱۴،النحل:۴۳)

पर अ़मल करते हुए उ़-लमा से रुजूअ़ करूंगा।

﴾7﴿.... "عِنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِيْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَةُ" या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त रह़मत नाज़िल होती है। (حلیۃ الاولیاء،حدیث: ۱۰۷۵۰،ج۷،ص۳۳۵،دارالکتب العلمیۃ بیروت)

इस किताब में दिये गए बुज़ुर्गों के वाक़िआ़त दूसरों को सुना कर ज़िक्रे सालिह़ीन की बरकतें लूटूंगा।

﴾8﴿....(अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा।

﴾9﴿....(अपने ज़ाती नुस्ख़े के) याद दाश्त वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा।

﴾10﴿....जिस मस्अले में दुश्वारी होगी उस को बार बार पढ़ूंगा।

﴾11﴿....ज़िन्दगी भर अ़मल करूंगा।

﴾12﴿....जो नहीं जानते उन्हें सिखाऊंगा।

﴾13﴿....येह किताब पढ़ कर उ़-लमाए ह़क़्क़ा से नहीं उलझूंगा।

﴾14﴿....दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा।

﴾15﴿....(कम अज़ कम 12 अ़दद या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा।

﴾16﴿....इस किताब के मुत़ालए़ का षवाब सारी उम्मत को ईसाल करूंगा।

﴾17﴿....किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी तौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा।

(मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

★.....★.....★

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : *बानिये दा'वते इस्लामी, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत ﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाह़ी कुतुब ﴾4﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तख़रीज ﴾6﴿ शो'बए तराजिम

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़्रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़षे ख़ैरो बरकत, ह़ज़्रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़्रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए । اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم



रमज़ानुल मुबारक, 1425 हि.

पेशे लफ़्ज़

इन्सान की इस्लाह़ दीने इस्लाम का अव्वलीन मक़्सद है। मर्द व औ़रत की ह़ैषिय्यत इस ए'तिबार से एक सी है, बल्कि शरीअ़ते इस्लामिय्या ने ख़्वातीन के हुक़ूक़ बित्ताकीद इरशाद फ़रमाए क्यूंकि अ़र्सए दराज़ से येह सिनफ़े नाज़ुक ज़ुल्मो सितम का निशाना बनी हुई थी। क़ुदरत ने अगर्चे इसे मर्द की त़रह़ ज़ी रूह़ और ज़ी शुऊ़र बनाया था लेकिन इस के साथ बरताव मिट्टी की बेजान मुर्तियों का सा किया जाता था। जूए में इसे दाव पर लगाया जाता था। ख़ावन्द की लाश के साथ क़ानूनन इसे जल कर राख होना पड़ता था। कहीं इसे तमाम बुराइयों की जड़ और इन्सान की सारी बद बख़्तियों का सर चश्मा यक़ीन किया जाता था और कहीं चोटी के नामवर फ़ल्सफ़ी इस के इन्सान होने को भी मश्कूक निगाहों से देखा करते थे। इस को मिल्किय्यत के हुक़ूक़ ह़ासिल न थे। इसे अज़्दवाजी बंधनों में मुक़य्यद करने से पहले इस से कोई राय लेने तक का तसव्वुर न था। येह, बल्कि इस से भी बद तर ह़ालात थे जिन में इस्लाम से पहले येह सिनफ़े नाज़ुक गिरिफ़्तार थी।

लेकिन इस्लाम ने पहली मरतबा ए'लान किया कि जिस त़रह़ मर्द के हुक़ूक़ औ़रत पर हैं इसी त़रह़ औ़रत के हुक़ूक़ भी मर्द पर हैं। इस की भी राय है और क़ानून इस की राय का एह़तिराम करता है। इसे अपने वालिदैन, अपने ख़ावन्द, अपनी अवलाद का वारिष तस्लीम किया गया। इस को मिल्किय्यत के हुक़ूक़ तफ़्वीज़ किये गए। मर्द को बीवी के साथ हुस्ने सुलूक का हुक्म दिया। बेटी की सूरत में इस को रह़मत क़रार दिया। मां के रूप में इस के क़दमों को जन्नत की चौखट से तशबीह दी। ग़रज़ मुआ़शरे में इसे वोह इ़ज़्ज़त और मक़ाम दिया जिस का इस से पहले तसव्वुर भी न किया जा सकता था।

अब एक मुसलमान औ़रत पर येह लाज़िम हो जाता है कि वोह ता'लीमाते इस्लामिय्या से वाक़िफ़िय्यत व आगाही ह़ासिल करे, इन्हें अपने ज़ेह्न में वसीअ़ जगह दे। इस जहाने ना पाएदार में इस के शबो

रोज़ इसी के मुताबिक़ गुज़रें । क्यूंकि इस रज़्मगाहे ह़यात में जीत उसी की है जिस ने अपना जीना मरना इस्लाम के मुताबिक़ कर लिया ।

بحمدہ تعالیٰ इस्लामी बहनों को इस्लामी अ़क़ाइद व मसाइल से रू शनास करवाने के लिये शैख़ुल ह़दीष अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيه ने येह किताब "जन्नती ज़ेवर" तरतीब दी । किताब क्या है ? **इस्लामी मसाइल** व **ख़साइल** का एक बेहतरीन मजमूआ़ है, इस में ज़िन्दगी गुज़ारने से मुतअ़ल्लिक़ तक़रीबन तमाम ही शो'बों का तज़्किरा है, ख़्वाह ए'तिक़ादात का बयान हो या इ़बादात का, मुआ़मलात हों या अख़्लाक़ियात तक़रीबन सभी को मौसूफ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيه ने आसान पैराए में अपनी किताब में ज़िक्र कर दिया है गोया एक सिलेबस «syllabus» सलीस अन्दाज़ में मुरत्तब कर के इस्लामी बहनों के हाथों में दे दिया । अब इस्लामी बहनों को चाहिये कि वोह इस से भर पूर इस्तिफ़ादा करें और अह़कामे शरीअ़त सीख कर इस पर अ़मल पैरा हों ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मजलिसे "अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या" «दा'वते इस्लामी» ने अकाबिरीन व बुज़ुर्गाने अहले सुन्नत की मायानाज़ कुतुब को ह़त्तल मक़दूर जदीद दौर के तक़ाज़ों के मुताबिक़ शाएअ़ करने का अ़ज़्म किया है चुनान्चे येह किताब भी इस सिलसिले में शामिल की गई और नई कम्पोज़िंग, मुकर्रर प्रूफ़ रीडिंग, दीगर नुस्ख़ों से मुक़ाबला, आयाते कुरआनी की मोह़तात़ तत़बीको तस्ह़ीह़, ह़वाला जात की तख़रीज, अ़रबी व फ़ारसी इ़बारात की दुरुस्ती और पैरा बन्दी वग़ैरा, नीज़ माख़ज़ो मराजेअ़ की फ़ेहरिस्त के साथ इसे शाएअ़ किया, यूं येह नुस्ख़ा दीगर नुस्ख़े के मुक़ाबले में दुरुस्त और अग़लात़ से मुबर्रा नुस्ख़ा क़रार दिया जा सकता है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ "अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या" के मदनी उ़-लमा की येह काविश और इन की मेह़नत क़ाबिले सताइश व लाइक़े तह़सीन है, **अल्लाह** عزوجل इन की येह पेशकश क़बूल फ़रमा कर जज़ाए जज़ील अ़ता फ़रमाए, इन्हें मज़ीद हिम्मत और लगन के साथ दीन की ख़िदमत का जज़्बा अ़ता फ़रमाए । اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلم

शो'बए तख़रीज (मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

फ़ेहरिस्त मज़ामिन

आवाज़ बैठ जाए तो तीन इलाज

﴾1﴿ नमक का छोटा सा टुकड़ा आग में ख़ूब गर्म कर के किसी चीज़ से पकड़ कर फ़ौरन ठन्डे पानी के गिलास में बुझा दीजिये, फिर वोह नमक की डली पानी से निकाल कर इस पानी को पी जाइये। दो तीन बार येह इलाज करने से اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाइदा हो जाएगा।

﴾2﴿ एक चमच जव शरीफ़ के दाने चबाइये और चूसिये फिर आख़िर में निगल जाइये।

﴾3﴿ ख़श्ख़ाश के छिलके और अजवाइन हम वज़्न लीजिये और पानी में उबाल कर बरदाश्त के क़ाबिल हो जाने के बा'द इस पानी से ग़रारे कीजिये। (नेकी की दा'वत, स. 601)

उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : मुख़्लिस वोह है जो अपनी नेकियां ऐसे छुपाए जैसे अपनी बुराइयां छुपाता है। (الزواجر عن اقتراف الكبائر، ج ۱، ص ۱۰۲)

कुछ मुसन्निफ़ के बारे में

शैखुल ह़दीष ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی हिन्द के ज़िल्अ़ मऊ के गंजानाबाद क़सबा घोसी में सि. 1333 हि. में पैदा हुए । आप के वालिदे माजिद का नाम शैख़ अ़ब्दुर्रह़ीम और वालिदा का नाम **ह़लीमा बीबी** था ।

ता'लीम व तर्बिय्यत :– मौलाना ने ता'लीम मद्रसा मुह़म्मदिय्या अमरोहा, मद्रसा मन्ज़रे इस्लाम बरेली में अ़लल तरतीब मौलाना ग़ुलाम जीलानी आ'ज़मी, मौलाना ह़िक्मतुल्लाह अमरोहवी, ह़ज़रते मौलाना सय्यिद ख़लील काज़िमी मुह़द्दिष अमरोहवी, ह़ज़रते मौलाना शाह सरदार अह़मद मुह़द्दिषे आ'ज़म पाकिस्तान से ह़ासिल की । **10** शव्वालुल मुकर्रम सि. **1355** हि. को दारुल उ़लूम ह़ाफ़िज़िय्या सईदिय्या रियासत दादों अ़लीगढ़ पहुंचे, ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ा से दौरए ह़दीष पढ़ा, सि. **1356** हि. सनदे फ़ज़ीलत मर्ह़मत हुई ।

बैअ़त व ख़िलाफ़त :– **17** सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सि. **1353** हि. में ह़ज़रते अलह़ाज ह़ाफ़िज़ शाह अबरार ह़सन ख़ान साहि़ब नक्शबन्दी शाह जहान पूरी से सिलसिलए नक़्शबन्दिय्या में बैअ़त हुए और **25** सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सि. **1358** हि. में हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते मौलाना अलह़ाज ह़ामिद रज़ा ख़ान साहि़ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सिलसिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या की ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमाई इस के बा'द ह़ज़रते मौलाना क़ाज़ी मह़बूब अह़मद अ़ब्बासी साहि़ब ख़लीफ़ा ह़ाफ़िज़ शाह अबरार ह़सन साहि़ब शाह जहान पूरी ने सिलसिलए नक़्शबन्दिय्या मुजद्दिदिय्या की ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाया ।

दर्सो तदरीस :– आप ने दर्जे ज़ैल मदारिस में तदरीस के फ़राइज़ सर अन्जाम दिये ।

﴾1﴿ मद्रसा इस्ह़ाक़िय्या जोधपूर में एक साल ।

﴾2﴿ मद्रसा मुह़म्मदिय्या ह़नफ़िय्या अमरोहा ज़िल्अ़ मुरादाबाद में तीन साल ।

﴾3﴿ दारुल उ़लूम अशरफ़िय्या मुबारक पूर में दस साल ।

﴾4﴿ दारुल उ़लूम शाहे आ़लम अह़मदाबाद (गुजरात) में ब ओ़हदए शैख़ुल ह़दीष तीन साल।

﴾5﴿ दारुल उ़लूम समदिय्या अ़लाक़ा बम्बई में ब ओ़हदए शैख़ुल ह़दीष तीन साल।

﴾6﴿ मद्रसा मिस्कीनिय्या धोराजी काठियावाड़ में ब ओ़हदए शैख़ुल ह़दीष तीन साल।

﴾7﴿ मद्रसा मन्ज़रे ह़क़ टान्डा ज़िल्अ़ फ़ैज़ाबाद में ब ओ़हदए शैख़ुल ह़दीष ग्यारह साल।

﴾8﴿ दारुल उ़लूम फ़ैज़ुर्रसूल बराऊं शरीफ़ में ब ओ़हदए शैख़ुल ह़दीष सात साल।

بحمدہ تعالیٰ इन दर्स गाहों में तक़रीबन तीन सो से ज़ाइद त़लबा आप के दर्स से फ़ारिग़ुत्तह़सील व दस्तार बन्द हो कर हिन्दूस्तान व पाकिस्तान, बंगला देश, इंग्लेन्ड और अफ़्रीक़ा में दीनी ख़िदमात अन्जाम दे रहे हैं।

सफ़रे ह़ज और आप के मशाइख़े ह़रमैन : 19 शव्वालुल मुकर्रम सि. 1378 हि. में ह़रमैने शरीफ़ैन रवाना हुए। मक्कए मुकर्रमा में ह़ज़रते मुफ़्ती मुह़म्मद सइ़दुल्लाह अल मक्की ने सिह़ाह़ सत्ता व दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़ व ह़ज़्बुल बह़्र की इजाज़त दे कर सनदें अ़त़ा फ़रमाईं और मुफ़्ती अल मालिकिय्या मौलाना सय्यिद अ़लवी अ़ब्बास मक्की ने सिह़ाह़ सत्ता की सनद अ़त़ा फ़रमाई और ह़ज़रते शैख़ुल ह़रम मौलाना मुह़म्मद इब्नुल अ़रबी अल जज़ाइरी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बुख़ारी और मौत़ा शरीफ़ की सनदे ख़ास से सरफ़राज़ फ़रमाया और मदीनए मुनव्वरा में शैख़ुद्दलाइल ह़ज़रते अ़ल्लामा यूसुफ़ बिन मुह़म्मद बिन अ़ली बिश्शुबली ह़रीरी मदनी ने अपनी सनदे ख़ास के साथ दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़ की इजाज़त अ़त़ा फ़रमाई।

वा'ज़ व तक़रीर :- आप एक बुलन्द पाया मुक़र्रिर थे। वा'ज़ व तक़रीर का ह़ल्क़ा बहुत वसीअ़ था। ज़बान में शीरीनी, रवानी और ताषीर थी। मुल्क के तूलो अ़र्ज़ में आप के बयानात की धूम मची हुई थी।

तसानीफ़ :- आप की ख़ास ख़ास तसानीफ़ जो بحمدہ تعالٰی तब्अ़ हो कर मुल्क व बैरूने मुल्क में मक़्बूलिय्यत पा चुकी हैं, ह़स्बे ज़ैल हैं।

﴾1﴿ सीरतुल मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ﴾2﴿ जन्नती ज़ेवर ﴾3﴿ करामाते सह़ाबा عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان ﴾4﴿ ईमानी तक़रीरें ﴾5﴿ नूरानी तक़रीरें ﴾6﴿ ह़क़्क़ानी तक़रीरें ﴾7﴿ क़ुरआनी तक़रीरें ﴾8﴿ इरफ़ानी तक़रीरें ﴾9﴿ नवादिरुल ह़दीष ﴾10﴿ औलियाए रिजालुल ह़दीष ﴾11﴿ रूह़ानी ह़िकायात ﴾ह़िस्सा अव्वल﴿ ﴾12﴿ रूह़ानी ह़िकायात ﴾ह़िस्सा दुवुम﴿ ﴾13﴿ मा'मूलातुल अबरार ﴾14﴿ क़ियामत कब आएगी ? ﴾15﴿ मशाइख़े नक़्शबन्दिय्या ﴾16﴿ मौसिमे रह़मत ﴾17﴿ बहिश्त की कुंजियां ﴾18﴿ जहन्नम के ख़त़रात ﴾19﴿ अ़जाइबुल क़ुरआन ﴾20﴿ ग़राइबुल क़ुरआन ﴾21﴿ जवाहिरुल ह़दीष ﴾22﴿ आईनए इ़ब्रत ﴾23﴿ सामाने आख़िरत ﴾24﴿ मसाइलुल क़ुरआन

शे'र व शाइरी :- ज़मानए त़ालिबे इ़ल्मी से ही आप को शे'रो सुख़न का ज़ौक़ था। ना'त और क़ौमी नज़्मों के इ़लावा ग़ज़ल की सिनफ़ में भी तब्अ़ आज़माई फ़रमाते थे और बा क़ाइदा मुशाइरों में भी शरीक होते थे। आप ने अपने अश्आ़र का मज्मूआ़ मुरत्तब कर लिया था मगर दारुल उ़लूम अशरफ़िय्या मुबारक पूर में आप के कमरे के अन्दर आग लग गई जिस में क़ीमती किताबों के साथ येह नादिरुल वुजूद बयाज़ भी नज़्रे आतश हो गई। आप की कुछ ना'तें और नज़्में जो रिसालों में छप चुकी थी और बा'ज़ तलामीज़ा के पास चन्द ना'तें और नज़्में इस त़रह़ बाक़ी रह गईं हैं कि

कुछ बुल बुलों को याद है कुछ क़मरियों को ह़िफ़्ज़
बिखरी हुई चमन में यूं मेरी दास्तान है

विसाल :- बराऊं शरीफ़ के दौरे तदरीस में दो बार आप पर फ़ालिज का ह़म्ला हुवा लेकिन ब फ़ज़्ले ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ इलाज से फ़ालिज का अषर जाता रहा मगर पहले जैसी तुवानाई बाक़ी न रही। वफ़ात से छे माह क़ब्ल शदीद बीमार हुए बिल आख़िर **5** रमज़ानुल मुबारक सि. **1406** हि. **15** मई सि. **1985** ई. बरोज़ जुमा'रात ब वक़्ते अ़स्र इल्मो ह़िक्मत, फ़ज़्लो कमाल का येह महरे दरख़्शां हमेशा के लिये ग़ुरूब हो गया। दूसरे दिन बा'द नमाज़े जुमुआ़ हज़ारों सोगवारों ने इस पैकरे इल्मो दानिश और साह़िबे क़लम मुसन्निफ़ को इन की ज़ाती ज़मीन पर सिपुर्दे ख़ाक कर दिया। ﴿رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه﴾

﴿मुलख़्ख़स अज़ सीरते सदरुश्शरीआ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه﴾

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

तक़रीज़

अज़ : ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन साह़िब رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ

अ़ल्लामतुल अ़स्र शैख़ुल ह़दीष **ह़ज़रते मौलाना अलह़ाज अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा साह़िब आ'ज़मी मुजद्दिदी क़िब्ला** مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی अपने इल्मी जाहो जलाल और फ़ज़्लो कमाल के एतिबार से अकाबिर उ़–लमाए अहले सुन्नत में एक ख़ुसूसी इम्तियाज़ के साथ मुमताज़ हैं। आप एक मुसल्लमुष्षुबूत, माहिरे दरसियात, साह़िरुल बयान और एक ख़ुसूसी त़र्ज़े तह़रीर के मूजिद व कामयाब मुसन्निफ़ होने की बिना पर मुल्क व बैरूने मुल्क "**जामेउ़स्सिफ़ात**" मशहूर हैं। चन्द ख़ास ख़ास और अहम मौज़ूआ़त पर आप की छोटी बड़ी पन्दरह किताबें त़ब्अ़ हो कर अ़वाम व ख़वास से ख़िराजे तह़सीन ह़ासिल कर चुकी हैं।

ज़ेरे नज़र किताब "**जन्नती ज़ेवर**" आप ने अ़वाम और ख़ास कर औ़रतों के लिये तसनीफ़ फ़रमाई है जिस को मैं बग़ौर पढ़ कर इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि ज़रूरते ज़माना के लिह़ाज़ से येह किताब बहुत ही अहम, निहायत ही अनमोल और बेह़द मुफ़ीद है और بحمدہ تعالیٰ सह़ीह़ व मो'तमद मसाइल और बेहतरीन आदाब व ख़साइस के साथ साथ इ़ब्रत ख़ेज़ नसीह़तों और रिक़्क़त अंगेज़ वाक़िआ़त का ला जवाब मजमूआ़ है।

मौला तआ़ला ह़ज़रते मुसन्निफ़ क़िब्ला को जज़ा अ़त़ा फ़रमाए और बरादराने अहले सुन्नत व ख़वातीने मिल्लत को इस किताब की ज़ियादा से ज़ियादा इशाअ़त की तौफ़ीक़ बख़्शे।

آمین بجاہ حبیبہ سید المرسلین صلوات اللہ تعالیٰ وسلامہ علیہم اجمعین

जलालुद्दीन अह़मद अमजदी
ख़ादिम दारुल इफ़्ता फ़ैज़ुर्रसूल
बराऊं शरीफ़ ज़िल्अ़ बस्ती
25, ज़िल क़ा'दा सि. 1399 हि.

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

सबबे तालीफ़

मुसलमान औ़रतों की आज़ाद ख़यालो से मुस्लिम मुआ़शरे की तबाही व बदहा़ली देख कर बार बार दिल कुढ़ता और जलता था। इस लिये एक मुद्दत से येह ख़याल था कि मुसलमान औ़रतों की सलाहो़ फ़लाह़, और इन की बद ए'तिक़ादियों और बद आ'मालियों की इस्लाह़ के लिये एक किताब लिख दूं। मगर अफ़्सोस कि कषरते कार व हुजूम अफ़्कार के मैदाने मेह़शर में इस त़रफ़ तवज्जोह की फ़ुरसत ही नहीं मिली। यहां तक कि मेरे मुख़्लिस मुरीद मौलवी ए'जाज़ हु़सैन साहि़ब क़ादिरी मालिक **ए'जाज़ बुक डेपो** होड़ा ने बड़ी दिलसोज़ी के साथ मेरे नाम एक ख़त़ में तह़रीर किया कि एक ऐसी किताब की बेह़द ज़रूरत है जो मुसलमान औ़रतों की दीनी व दुन्यावी ज़रूरतों के मुतअ़ल्लिक़ ज़रूरी मा'लूमात की जामेअ़ हो ताकि वोह मुसलमान बच्चियों के ता'लीमी कोर्स में दाख़िल हो सके और मुसलमान लड़कियों को जहेज़ में दी जा सके। इस के बा'द मेरी तसानीफ़ के दूसरे क़द्र दानों ने भी ज़बानी और क़लमी त़ौर पर तक़ाज़ों का ऐसा तूमार बांध दिया कि मैं अह़बाब के इस मुत़ालबे को नज़र अन्दाज़ न कर सका। ह़द हो गई कि सब से आख़िर में ज़िल्अ़ बस्ती के सेठ अलह़ाज मुल्ला मुह़म्मद ह़नीफ़ यार अ़लवी जिन का बम्बई के इल्म दोस्त व दीनदार सेठों में शुमार है। उन्हों ने बराऊं शरीफ़ में मेरे रू बरू बैठ कर बर जस्ता येह कह दिया कि आप ने हमारे लड़कों के हाथों में देने के लिये तो बहुत सी किताबें लिख दी हैं लेकिन हमारी लड़कियों के हाथों में देने के लिये आप ने अब तक कुछ भी नहीं लिखा येह सुन कर मुझे बे ह़द तअस्सुफ़ हुवा और मैं ने येह अ़ज़्म कर लिया कि اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ बहुत जल्द एक ऐसी किताब लिखूंगा जो औ़रतों और मर्दों दोनों की इस्लाह़ के लिये ज़रीअ़ए हिदायत और

मुझ गुनहगार के लिये सामाने आख़िरत बन जाए। चुनान्चे ख़ुदावन्दे करीम का बे शुमार शुक्र है कि सिर्फ़ चन्द माह की क़लील मुद्दत में क़िस्म क़िस्म के गुलहाए मज़ामीन को चुन चुन कर मसाइल व ख़साइल का एक ख़ूब सूरत गुलदस्ता "**जन्नती ज़ेवर**" के नाम से नाज़िरीन की ख़िदमत में नज़्र करता हूं येह किताब मुन्दरिजए ज़ैल दस उ़नवानों का मजमूआ़ है।

(1) मुआ़मलात (2) अख़्लाक़िय्यात (3) रुसूमात (4) ईमानिय्यात (5) इबादात (6) इस्लामिय्यात (7) तज़्किरए सालिह़ात (8) मुतफ़र्रिक़ हिदायात (9) अ़मलिय्यात (10) मीलाद व ना'त

और بحمده تعالىٰ हर उ़नवान के तह़्त ज़रूरी हिदायात और इस्लामी मसाइल व ख़साइल का एक ह़द तक काफ़ी ज़ख़ीरा जम्अ़ कर दिया है। इस लिये नाज़िरीन से उम्मीद करता हूं कि मेरी कोताहियों की इस्लाह़ फ़रमाएंगे और उम्मते मुस्लिमा की सलाह़ो फ़लाह़ के लिये इस किताब की इशाअ़त में अपनी त़ाक़त भर ज़रूर ह़िस्सा लेंगे। ख़ुदावन्दे करीम मेरी इस ह़क़ीर क़लमी ख़िदमते दीन को शरफ़े क़बूल से सरफ़राज़ फ़रमाए।

(आमीन)

आख़िर में ह़ज़रते गिरामी मौलाना अलह़ाज मुफ़्ती जलालुद्दीन साह़िब क़िब्ला अमजदी मुदर्रिस दारुल उ़लूम फ़ैज़ुर्रसूल बराऊं शरीफ़ व अज़ीज़ुल क़द्र मौलाना क़ुदरतुल्लाह साह़िब रज़वी मुदर्रिस दारुल उ़लूम फ़ैज़ुर्रसूल बराऊं शरीफ़ का शुक्र गुज़ार हूं कि इन दोनों साह़िबान ने किताब की तसह़ीह़ में ह़िस्सा ले कर मेरे बार को हल्का और मेरे क़ल्ब को मुत़मइन कर दिया।

فجزاهما الله تعالى احسن الجزاء وهو حسبى و نعم الوكيل وصلى الله تعالىٰ علىٰ
خير خلقه محمّد واله وصحبه اجمعين

अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा अल आ'ज़मी عُفِیَ عَنْهُ

घोसी 7 शव्वाल सि. 1399 हि.

इन्तिसाब

मेरी अहलिया सालिहा ख़ातून के नाम

जो **43** बरस से निहायत वफ़ादारी के साथ मेरी ख़िदमत कर रही हैं, मेरे बच्चों को पाला, मेरा घर संभाला और मुझे इल्मी व दीनी ख़िदमतों के लिये ख़ानगी फ़िक्रों से आज़ाद कर दिया। इन के लिये मेरी दुआ है कि

तुम सलामत रहो हज़ार बरस

हर बरस के हों दिन पचास हज़ार

अब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी عُفِیَ عَنْہُ

6 शव्वाल सि. **1399** हि.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ह़म्द

ऐ खुदावन्दे जहां ! ऐ ख़ालिक़े लैलो नहार
हो नहीं सकती तेरी ह़म्दो षना है बे शुमार

तू दो आ़लम का ह़क़ीक़ी मालिको मुख़्तार है
ज़र्रे ज़र्रे पर तेरा चलता है हुक्मो इक़्तिदार

तूने बख़्शी है फ़लक के चांद तारों को चमक
तेरी कुदरत से गुलो गुंचा पे आता है निखार

रह़मते आ़लम के दामाने करम का वासित़ा !
बख़्श दे मेरे गुनाहों को 'हूं नादिम' शर्मसार

खोल दे मेरी दुआ़ओं के लिये बाबे क़बूल
अ़र्ज़ करता हूं तेरे आगे ब चश्मे अश्कबार

o......... ★ ..... ★ ....o

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

ना'त

रौज़ए पुरनूर पर हम को बुलाएं या रसूल ﷺ
फिर वहां से उ़म्र भर वापस न आएं या रसूल ﷺ

मन्ज़रे त़यबा बना देता है दिल को बे क़रार
याद आती हैं मदीने की फ़ज़ाएं या रसूल ﷺ

गुलिस्ताने ज़िन्दगी नज़्रे ख़ज़ां होने लगा !
भेज दो बाग़े मदीना की हवाएं या रसूल ﷺ

गुम्बदे ख़ज़रा को देखें दश्ते सह़राओं में फिरें
तेरी आग़ोशे करम में मुस्कुराएं या रसूल ﷺ

आप के दरबारे अक़्दस में हज़ारों की त़रह़
हम भी आ कर दास्ताने ग़म सुनाएं या रसूल ﷺ

o.........★.....★........o

《1》

मुआ़मलात

मुआ़मलात न हों गर दुरुस्त इन्सान के

तो जानवर से भी बदतर है आदमी की ह़यात

औ़रत क्या है ?

औ़रत – खुदा की बड़ी बड़ी ने'मतों में से एक बहुत बड़ी ने'मत है।

औ़रत – दुन्या की आबादकारी और दीनदारी में मर्दों के साथ तक़रीबन बराबर की शरीक है।

औ़रत – मर्द के दिल का सुकून, रूह़ की राह़त, ज़ेह्न का इत़मीनान, बदन का चैन है।

औ़रत – दुन्या के ख़ूब सूरत चेहरे की एक आंख है। अगर औ़रत न होती तो दुन्या की सूरत कानी होती।

औ़रत – आदम عَلَیْہِ السَّلَام व ह़ज़रते ह़व्वा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के सिवा तमाम इन्सानों की "मां" है इस लिये वोह सब के लिये क़ाबिले एह़तिराम है।

औ़रत – का वुजूद इन्सानी तमद्दुन के लिये बेह़द ज़रूरी है अगर औ़रत न होती तो मर्दों की ज़िन्दगी जंगली जानवरों से बदतर होती।

औ़रत – बचपन में भाई बहनों से मह़ब्बत करती है। शादी के बा'द शोहर से मह़ब्बत करती है। मां बन कर अपनी अवलाद से मह़ब्बत करती है। इस लिये औ़रत दुन्या में प्यार व मह़ब्बत का एक "**ताज मह़ल**" है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
نحمده ونصلی علی رسوله الکریم

औ़रत इस्लाम से पहले

इस्लाम से पहले औ़रतों का ह़ाल बहुत ख़राब था दुन्या में औ़रतों की कोई इ़ज़्ज़त व वुक़्अ़त ही नहीं थी। मर्दों की नज़र में इस से ज़ियादा औ़रतों की कोई है़षिय्यत ही नहीं थी कि वोह मर्दों की नफ़्सानी ख़्वाहिश पूरी करने का एक ''खिलौना'' थी। औ़रत दिन रात मर्दों की क़िस्म क़िस्म की ख़िदमत करती थीं और त़रह़ त़रह़ के कामों से यहां तक कि दूसरों की मेह़नत मज़दूरी कर के जो कुछ कमाती थीं वोह भी मर्दों को दे दिया करती थीं मगर ज़ालिम मर्द फिर भी इन औ़रतों की कोई क़द्र नहीं करते थे बल्कि जानवरों की त़रह़ इन को मारते पीटते थे। ज़रा ज़रा सी बात पर औ़रतों के कान नाक वग़ैरा आ'ज़ा काट लिया करते थे और कभी क़त्ल भी कर डालते थे। अ़रब के लोग लड़कियों को ज़िन्दा दफ़्न कर दिया करते थे और बाप के मरने के बा'द उस के लड़के जिस त़रह़ बाप की जाइदाद और सामान के मालिक हो जाया करते थे इसी त़रह़ अपने बाप की बीवियों के मालिक बन जाया करते थे और इन औ़रतों को ज़बरदस्ती लौंडियां बना कर रख लिया करते थे। औ़रतों को इन के मां-बाप भाई-बहन या शोहर की मीराष में से कोई ह़िस्सा नहीं मिलता था न औ़रतें किसी चीज़ की मालिक हुवा करती थीं अ़रब के बा'ज़ क़बीलों में येह ज़ालिमाना दस्तूर था कि बेवा हो जाने के बा'द औ़रतों को घर से बाहर निकाल कर एक छोटे से तंगो तारीक झोपड़े में एक साल तक क़ैद में रखा जाता था वोह झोपड़े से बाहर नहीं निकल सकती थीं न ग़ुस्ल करती थीं न कपड़े बदल सकती थीं, खाना-पानी और अपनी सारी

ज़रूरतें इसी झोंपड़े में पूरी करती थीं बहुत सी औ़रतें तो घुट घुट कर मर जाती थीं और जो ज़िन्दा बच जाती थीं तो एक साल के बा'द इन के आंचल में ऊंट की मेंगनियां डाल दी जाती थीं और इन को मजबूर किया जाता था कि वोह किसी जानवर के बदन से अपने बदन को रगड़ें फिर सारे शहर का इसी गन्दे लिबास में चक्कर लगाएं और इधर उधर ऊंट की मेंगनियां फैंकती हुई चलती रहें येह इस बात का ए'लान होता था कि इन औ़रतों की इद्दत ख़त्म हो गई है इसी त़रह़ की दूसरी भी त़रह़ त़रह़ की ख़राब और तक्लीफ़ देह रस्में थीं जो ग़रीब औ़रतों के लिये मुसीबतों और बलाओं का पहाड़ बनी हुई थीं और बेचारी मुसीबत की मारी औ़रतें घुट घुट कर और रो रो कर अपनी ज़िन्दगी के दिन गुज़ारती थीं हिन्दूस्तान में तो बेवा औ़रतों के साथ ऐसे ऐसे दर्दनाक ज़ालिमाना सुलूक किये जाते थे कि जिन को सोच सोच कर कलेजा मुंह को आ जाता है हिन्दू धर्म में हर औ़रत के लिये फ़र्ज़ था कि वोह ज़िन्दगी भर क़िस्म क़िस्म की ख़िदमतें कर के "पती पूजा" (शोहर की पूजा) करती रहे और शोहर की मौत के बा'द उस की "चिता" की आग के शो'लों पर ज़िन्दा लैट कर "सती" हो जाए या'नी शोहर की लाश के साथ ज़िन्दा औ़रत भी जल कर राख हो जाए। ग़रज़ पूरी दुन्या में बे रह़म और ज़ालिम मर्द औ़रतों पर ऐसे ऐसे ज़ुल्मो सितम के पहाड़ तोड़ते थे कि इन ज़ालिमों की दास्तान सुन कर एक दर्दमन्द इन्सान के सीने में रंजो ग़म से दिल टुकड़े टुकड़े हो जाता है इन मज़्लूम और बे कस औ़रतों की मजबूरी व लाचारी का येह आ़लम था कि समाज में न औ़रतों के कोई हुक़ूक़ थे न इन की मज़्लूमिय्यत पर दादो फ़रियाद के लिये किसी क़ानून का कोई सहारा था हज़ारों बरस तक ये ज़ुल्मो सितम की मारी दुख्यारी औ़रतें अपनी इस बे कसी और लाचारी पर रोती बिल-बिलाती और आंसू बहाती रहीं मगर दुन्या में कोई भी इन औ़रतों के ज़ख़्मों पर मर्हम रखने वाला और इन की मज़्लूमिय्यत के आंसूओं को पौंछने वाला दूर दूर तक

नज़र नहीं आता था न दुन्या में कोई भी इन के दुख–दर्द की फ़रियाद सुनने वाला था न किसी के दिल में इन औ़रतों के लिये बाल बराबर भी रह़्मो करम का कोई जज़्बा था औ़रतों के इस ह़ाले ज़ार पर इन्सानिय्यत रंजो ग़म से बे चैन और बे क़रार थी मगर इस के लिये इस के सिवा कोई चारा कार नहीं था कि वोह रह़मते ख़ुदावन्दी का इन्तिज़ार करे कि अर–ह़मर्राह़िमीन ग़ैब से कोई ऐसा सामान पैदा फ़रमा दे कि अचानक सारी दुन्या में एक अनोखा इन्क़िलाब नुमूदार हो जाए और लाचार औ़रतों का सारा दुख–दर्द दूर हो कर इन का बेड़ा पार हो जाए चुनान्चे रह़मत का आफ़्ताब जब त़ुलूअ़ हो गया तो सारी दुन्या ने अचानक येह मह़सूस किया कि

जहां तारीक था, ज़ुल्मत कदा था, सख़्त काला था
कोई पर्दे से क्या निकला कि घर घर में उजाला था

औ़रत इस्लाम के बा'द

जब हमारे रसूले रह़मत ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुदा की त़रफ़ से "**दीने इस्लाम**" ले कर तशरीफ़ लाए तो दुन्या भर की सताई हुई औ़रतों की क़िस्मत का सितारा चमक उठा। और इस्लाम की ब दौलत ज़ालिम मर्दों के ज़ुल्मो सितम से कुचली और रौंदी हुई औ़रतों का दर्जा इस क़दर बुलन्दो बाला हो गया कि इ़बादात व मुआ़मलात बल्कि ज़िन्दगी और मौत के हर मर्ह़ले और हर मोड़ पर औ़रतें मर्दों के दोश ब दोश खड़ी हो गईं और मर्दों की बराबरी के दर्जे पर पहुंच गईं मर्दों की त़रह़ औ़रतों के भी ह़ुक़ूक़ मुक़र्रर हो गए और इन के ह़ुक़ूक़ की ह़िफ़ाज़त के लिये ख़ुदावन्दी क़ानून आस्मान से नाज़िल हो गए और इन के ह़ुक़ूक़ दिलाने के लिये इस्लामी क़ानून की मा तह़्ती में अ़दालतें क़ाइम हो गईं। औ़रतों को मालिकाना ह़ुक़ूक़ ह़ासिल हो गए चुनान्चे औ़रतें

अपने महर की रक़मों, अपनी तिजारतों, अपनी जाइदादों की मालिक बना दी गईं और अपने मां-बाप, भाई-बहन अवलाद और शोहर की मीराषों की वारिष क़रार दी गईं। ग़रज़ वोह औ़रतें जो मर्दों की जूतियों से ज़ियादा ज़लीलो ख़्वार और इन्तिहाई मजबूरो लाचार थीं वोह मर्दों के दिलों का सुकून और इन के घरों की मलिका बन गईं चुनान्चे कुरआने मजीद ने साफ़ साफ़ लफ़्ज़ों में ए'लान फ़रमा दिया कि,

خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّ رَحْمَةً ؕ (پ۲۱،روم:۲۱)

"अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हारी जिन्स से बीवियां पैदा कर दीं ताकि तुम्हें इन से तस्कीन ह़ासिल हो और उस ने तुम्हारे दरमियान मह़ब्बत व शफ़्क़त पैदा कर दी।"

अब कोई मर्द बिला वजह न औ़रतों को मार-पीट सकता है न इन को घरों से निकाल सकता है और न कोई इन के मालो अस्बाब या जाइदादों को छीन सकता है बल्कि हर मर्द मज़हबी तौ़र पर औ़रतों के हुक़ूक़ अदा करने पर मजबूर है चुनान्चे ख़ुदावन्दे कुद्दूस ने कुरआने मजीद में फ़रमाया कि,

وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِىْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۪ (پ۲،البقرہ:۲۲۸)

"औ़रतों के मर्दों पर ऐसे ही हुक़ूक़ हैं जैसे मर्दों के औ़रतों पर अच्छे सुलूक के साथ।"

और मर्द के लिये फ़रमान जारी फ़रमा दिया कि

وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ (پ٤،النساء:۱۹)

"और अच्छे सुलूक से औ़रतों के साथ ज़िन्दगी बसर करो।"

तमाम दुन्या देख ले कि दीने इस्लाम ने मियां-बीवी की इजतिमाई ज़िन्दगी की सदारत अगर्चे मर्द को अ़ता फ़रमाई है और मर्दों को औ़रतों पर ह़ाकिम बना दिया है ताकि निज़ामे ख़ानादारी में अगर कोई बड़ी

मुश्किल आन पड़े तो मर्द अपनी खुदादाद ताक़त व सलाहिय्यत से इस मुश्किल को हल कर दे लेकिन इस के साथ साथ जहां मर्दों के कुछ हुक़ूक़ औरतों पर वाजिब कर दिये हैं। वहां औरतों के भी कुछ हुक़ूक़ मर्दों पर लाज़िम ठहरा दिये गए हैं। इस लिये औरत और मर्द दोनों एक दूसरे के हुक़ूक़ में जकड़े हुए हैं ताकि दोनों एक दूसरे के हुक़ूक़ को अदा कर के अपनी इजतिमाई ज़िन्दगी को शादमानी व मसर्रत की जन्नत बना दें। और निफ़ाक़ व शिक़ाक़ और लड़ाई झगड़ों के जहन्नम से हमेशा के लिये आज़ाद हो जाएं।

औरतों को दर्जात व मरातिब की इतनी बुलन्द मंज़िलों पर पहुंचा देना येह हुज़ूर नबिय्ये रहमत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का वोह एहसाने अज़ीम है कि तमाम दुन्या की औरतें अगर अपनी ज़िन्दगी की आख़िरी सांस तक इस एहसान का शुक्रिया अदा करती रहें फिर भी वोह इस अज़ीमुश्शान एहसान की शुक्र गुज़ारी के फ़र्ज़ से सुबुक दोश नहीं हो सकतीं। سُبْحٰنَ اللّٰه तमाम दुन्या के मोहसिने आ'ज़म हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने रहमत का क्या कहना ?

वोह नबियों में रहमत लक़ब पाने वाला
मुरादें ग़रीबों की बर लाने वाला
मुसीबत में ग़ैरों के काम आने वाला
वोह अपने पराए का ग़म खाने वाला
फ़क़ीरों का मावा ज़ईफ़ों का मलजा
यतीमों का वाली गुलामों का मौला

औरत की ज़िन्दगी के चार दौर

औरत की ज़िन्दगी के रास्ते में यूं तो बहुत से मोड़ आते हैं मगर इस की ज़िन्दगी के चार दौर ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं।

﴾1﴿ औ़रत का बचपन ﴾2﴿ औ़रत बालिग़ होने के बा'द

﴾3﴿ औ़रत बीवी बन जाने के बा'द ﴾4﴿ औ़रत मां बन जाने के बा'द

अब हम औ़रत के इन चारों ज़मानों का और इन वक़्तों में औ़रत के फ़राइज़ और इन के हुक़ूक़ का मुख़्तसर तज़किरा साफ़ साफ़ लफ़्ज़ों में तह़रीर करते हैं। ताकि हर औ़रत इन हुक़ूक़ व फ़राइज़ को अदा कर के अपनी ज़िन्दगी को दुन्या में भी ख़ुशह़ाल बनाए और आख़िरत में भी जन्नत की ला ज़वाल ने'मतों और दौलतों से सरफ़राज़ हो कर माला माल हो जाए।

﴾1﴿ औ़रत का बचपन

औ़रत बचपन में अपने मां-बाप की प्यारी बेटी कहलाती है इस ज़माने में जब तक वोह ना बालिग़ बच्ची रहती है शरीअ़त की त़रफ़ से न उस पर कोई चीज़ फ़र्ज़ होती है न उस पर किसी क़िस्म की ज़िम्मेदारियों का कोई बोझ होता है वोह शरीअ़त की पाबन्दियों से बिल्कुल आज़ाद रहती है और अपने मां-बाप की प्यारी और लाडली बेटी बनी हुई खाती पीती, पहनती ओढ़ती और हंसती खेलती रहती है और वोह इस बात की ह़क़दार होती है कि मां-बाप, भाई-बहन और सब रिश्तेनाते वाले उस से प्यार व मह़ब्बत करते रहें और उस की दिल बस्तगी और दिलजोई में लगे रहें और उस की सिह़ह़त व सफ़ाई और उस की आ़फ़िय्यत और भलाई में हर क़िस्म की इन्तिहाई कोशिश करते रहें ताकि वोह हर क़िस्म की फ़िक्रों और रंजों से फ़ारिगुल बाल और हर वक़्त ख़ुश व ख़ुर्रम और ख़ुशह़ाल रहे जब वोह कुछ बोलने लगे तो मां-बाप पर लाज़िम है कि उस को **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नाम सुनाएं फिर उस को कलिमा वग़ैरा पढ़ाएं जब वोह कुछ और ज़ियादा समझदार हो जाए तो उस को सफ़ाई सुथराई के ढंग और सलीक़े सिखाएं उस को निहायत प्यार व मह़ब्बत और नर्मी के साथ इन्सानी शराफ़तों की बातें बताएं और अच्छी अच्छी बातों का शौक़ और बुरी बातों से नफ़रत

दिलाएं जब पढ़ने के क़ाबिल हो जाए तो सब से पहले उस को कुरआन शरीफ़ पढ़ाएं। जब कुछ और ज़ियादा होशियार हो जाए तो उस को पाकी व नापाकी वुज़ू व गुस्ल वग़ैरा का इस्लामी त़रीक़ा बताएं और हर बात और हर काम में उस को इस्लामी आदाब से आगाह करते रहें। जब वोह सात बरस की हो जाए तो उस को नमाज़ वग़ैरा ज़रूरियाते दीन की बातें ता'लीम करें और पर्दे में रहने की आ़दत सिखाएं और बरतन धोने, खाने पीने, सीने पिरोने और छोटे मोटे घरेलू कामों का हुनर बताएं और अ़मली त़ौर पर उस से येह सब काम लेते रहें और उस की काहिली और बे परवाई और शरारतों पर रोक टोक करते रहें और ख़राब औ़रतों और बद चलन घरानों के लोगों से मेल-जोल पर पाबन्दी लगा दें और उन लोगों की सोहबत से बचाते रहें। आ़शिक़ाना अश्आ़र और गीतों और आ़शिक़ी मा'शूक़ी के मज़ामीन की किताबों से, गाने बजाने और खेल तमाशों से दूर रखें ताकि बच्चों के अख़्लाक़ व आ़दात और चाल चलन ख़राब न हो जाएं। जब तक बच्ची बालिग़ न हो जाए इन बातों का ध्यान रखना हर मां-बाप का इस्लामी फ़र्ज़ है। अगर मां-बाप अपने इन फ़राइज़ को पूरा न करेंगे तो वोह सख़्त गुनाहगार होंगे।

﴾2﴿ औ़रत जब बालिग़ हो जाए

जब औ़रत बालिग़ हो गई तो **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ و صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से शरीअ़त के तमाम अह़काम की पाबन्दी हो गई। अब उस पर नमाज़, रोज़ा और ह़ज व ज़कात के तमाम मसाइल पर अ़मल करना फ़र्ज़ हो गया और **अल्लाह** तआ़ला के हुक़ूक़ और बन्दों के हुक़ूक़ को अदा करने की वोह ज़िम्मेदार हो गई अब उस पर लाज़िम है कि वोह खुदा के तमाम फ़र्ज़ों को अदा करे और छोटे बड़े तमाम गुनाहों से बचती रहे। और येह भी उस के लिये ज़रूरी है कि अपने मां-बाप और बड़ों की ता'ज़ीम व ख़िदमत बजा लाए और

अपने छोटे भाइयों बहनों और दूसरे अ़ज़ीज़ो अक़ारिब से प्यार व महब्बत करे। पड़ोसियों और रिश्तेनाते के तमाम छोटों, बड़ों के साथ उन के मरातिब व दर्जात के लिह़ाज़ से नेक सुलूक और अच्छा बरताव करे। अच्छी अच्छी आ़दतें सीखे और तमाम ख़राब आ़दतों को छोड़ दे और अपनी ज़िन्दगी को पूरे तौ़र पर इस्लामी ढांचे में ढाल कर सच्ची पक्की पाबन्दे शरीअ़त और ईमान वाली औ़रत बन जाए और इस के साथ साथ मेह़नत व मशक़्क़त और सब्रो रिज़ा की आ़दत डाले मुख़्तसर येह कि शादी के बा'द अपने ऊपर आने वाली तमाम घरेलू ज़िम्मेदारियों की मा'लूमात ह़ासिल करती रहे कि शोहर वाली औ़रत को किस त़रह़ अपने शोहर के साथ निबाह करना और अपना घर संभालना चाहिये वोह अपनी मां और बड़ी बुढ्ढी औ़रतों से पूछ पूछ कर इस का ढंग और सलीक़ा सीखे और अपने रहन-सहन और चाल-चलन को इस त़रह़ सुधारे और संवारे कि न शरीअ़त में गुनाहगार ठहरे न बरादरी व समाज में कोई इस को त़ा'ना मार सके।

खाने पीने, पहनने ओढ़ने, सोने जागने, बात चीत ग़रज़ हर काम हर बात में जहां तक हो सके ख़ुद तक्लीफ़ उठाए मगर घर वालों को आराम व राह़त पहुंचाए। बिग़ैर मां-बाप की इजाज़त के न कोई सामान अपने इस्ति'माल में लाए न किसी दूसरे को दे। न घर का एक पैसा या एक दाना मां-बाप की इजाज़त के बिग़ैर ख़र्च करे। न बिग़ैर मां-बाप से पूछे किसी के घर या इधर उधर जाए। ग़रज़ हर काम, हर बात में मां की इजाज़त और रिज़ामन्दी को अपने लिये ज़रूरी समझे। खाने, पीने, सीने पिरोने, अपने बदन, अपने कपड़े और मकान व सामान की सफ़ाई ग़रज़ सब घरेलू काम धन्दों का ढंग सीख ले और इस की अ़मली आ़दत डाल ले ताकि शादी के बा'द अपने सुसराल में नेकनामी के साथ ज़िन्दगी बसर कर सके और मैके वालों और सुसराल वालों के दोनों घर की चहीती और प्यारी बनी रहे।

पर्दे का ख़ास तौ़र पर ख़याल और ध्यान रखे। गै़र मह़रम मर्दों और लड़कों के सामने आने जाने, ताक झांक और हंसी मज़ाक़ से इन्तिहाई परहेज़ रखे। आ़शिक़ाना अश्आ़र, अख़्लाक़ को ख़राब करने वाली किताबों और रसाइल व अख़्बारात को हरगिज़ न देखे बद किरदार और बे ह़या औ़रतों से भी पर्दा करे और हरगिज़ कभी इन से मेल जोल न रखे खेल तमाशों से दूर रहे और मज़्हबी किताबें ख़ुसूसन सीरते मुस्त़फ़ा व सीरते रसूले अ़रबी, तम्हीदे ईमान और मीलाद शरीफ़ की किताबें मषलन "ज़ीनतुल मीलाद" वग़ैरा उ़-लमाए अहले सुन्नत की तस्नीफ़ात पढ़ती रहे।

फ़र्ज़ इ़बादतों के साथ नफ़्ली इ़बादतें भी करती रहे। मषलन तिलावते कु़रआन व तस्बीहे़ फ़ाति़मा मीलाद शरीफ़ पढ़ती पढ़ाती रहे और ग्यारहवीं शरीफ़ व बारहवीं शरीफ़ व मोह़र्रम शरीफ़ वग़ैरा की नियाज़ व फ़ातिह़ा भी करती रहे कि इन आ'माल से दुन्या व आख़िरत की बे शुमार बरकतें ह़ासिल होती हैं। हरगिज़ हरगिज़ बद अ़क़ीदा लोगों की बात न सुने और अहले सुन्नत व जमाअ़त के अ़क़ाइद व आ'माल पर निहायत मज़्बूती के साथ क़ाइम रहे।

﴾3﴿ औ़रत शादी के बा'द

निकाह़ :- जब लड़की बालिग़ हो जाए तो मां-बाप पर लाज़िम है कि जल्द अज़ जल्द मुनासिब रिश्ता तलाश कर के उस की शादी कर दें। रिश्ते की तलाश में ख़ास तौ़र से इस बात का ध्यान रखना बेह़द ज़रूरी है कि हरगिज़ हरगिज़ किसी बद मज़्हब के साथ रिश्ता न होने पाए बल्कि दीनदार और पाबन्दे शरीअ़त और मज़्हबे अहले सुन्नत के पाबन्द को अपनी रिश्तेदारी के लिये मुन्तख़ब करें। बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीष में है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि औ़रत से शादी करने में चार चीज़ें देखी जाती हैं।

﴾1﴿ दौलत मन्द ﴾2﴿ ख़ानदानी शराफ़त ﴾3﴿ ख़ूब सूरती ﴾4﴿ दीनदारी **"लेकिन तुम दीनदारी को इन सब चीज़ों पर मुक़द्दम समझो ।"**

(صحیح البخاری، کتاب النکاح ـ ٦٧ـ باب الاکفاء فی الدین (١٦)رقم الحدیث ٥٠٩٠، ج٣،ص ٤٢٩)

अवलाद की तमन्ना और अपनी ज़ात को बदकारी से बचाने की निय्यत के लिये निकाह़ करना सुन्नत है और बहुत बड़े अज्रो षवाब का काम है **अल्लाह** तआ़ला ने क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाया कि।

وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَالصّٰلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَاِمَآئِكُمْ ۔ (پ١٨،النور:٣٢)

"या'नी तुम लोग बे शोहर वाली औ़रतों का निकाह़ कर दो और अपने नेक चलन ग़ुलामों और लौंडियों का भी निकाह़ कर दो ।"

ह़दीष शरीफ़ में है कि तौरात शरीफ़ में लिखा है कि..... "जिस शख़्स की लड़की बारह बरस की उ़म्र को पहुंच गई और उस ने उस लड़की का निकाह़ नहीं किया और वोह लड़की बदकारी के गुनाह में पड़ गई तो इस का गुनाह लड़की वाले के सर पर भी होगा ।"

(مشکوۃ المصابیح ، کتاب النکاح، باب الولیّ فی النکاح الخ ، رقم ٣١٣٩،ج٢، ص ٢١٢)

दूसरी ह़दीष में है कि ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि : "**अल्लाह** तआ़ला ने तीन शख़्सों की इमदाद अपने ज़िम्मए करम पर ली है। ﴾1﴿ वोह ग़ुलाम जो अपने आक़ा से आज़ाद होने के लिये किसी क़दर रक़म अदा करने का अ़हद करे और अपने अ़हद को पूरा करने की निय्यत रखता हो । ﴾2﴿ ख़ुदा की राह में जिहाद करने वाला ﴾3﴿ वोह निकाह़ करने वाला या निकाह़ करने वाली जो निकाह़ के ज़रीए ह़राम कारी से बचना चाहता हो ।"

(الجامع الترمذی، کتاب فضائل الجهاد ، باب ماجاء فی المجاهد والناکح الخ، رقم ١٦٦١، ج٣،ص ٢٤٧)

औ़रत, जब तक उस की शादी नहीं होती वोह अपने मां-बाप की बेटी कहलाती है मगर शादी हो जाने के बा'द औ़रत अपने शोहर की बीवी बन जाती है और अब उस के फ़राइज़ और उस की ज़िम्मेदारियां

पहले से बहुत ज़ियादा बढ़ जाती हैं वोह तमाम हुक़ूक़ व फ़राइज़ जो बालिग़ होने के बा'द औ़रत पर लाज़िम हो गए थे अब इन के इ़लावा शोहर के हुक़ूक़ का भी बहुत बड़ा बोझ औ़रत के सर पर आ जाता है जिस का अदा करना हर औ़रत के लिये बहुत ही बड़ा फ़रीज़ा है। याद रखो कि शोहर के हुक़ूक़ को अगर औ़रत न अदा करेगी तो उस की दुन्यावी ज़िन्दगी तबाहो बरबाद हो जाएगी और आख़िरत में वोह दोज़ख़ की भड़कती हुई आग में जलती रहेगी और उस की क़ब्र में सांप बिच्छू उस को डंसते रहेंगे और दोनों जहां में ज़लीलो ख़्वार और त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाबों में गिरिफ़्तार रहेगी। इस लिये शरीअ़त के हुक्म के मुत़ाबिक़ हर औ़रत पर फ़र्ज़ है कि वोह अपने शोहर के हुक़ूक़ को अदा करती रहे और उ़म्र भर अपने शोहर की फ़रमां बरदारी व ख़िदमत गुज़ारी करती रहे।

शोहर के हुक़ूक़ :- **अल्लाह** तआ़ला ने शोहरों को बीवियों पर ह़ाकिम बनाया है और बहुत बड़ी बुज़ुर्गी दी है इस लिये हर औ़रत पर फ़र्ज़ है कि वोह अपने शोहर का हुक्म माने और ख़ुशी ख़ुशी अपने शोहर के हर हुक्म की ताबेअ़दारी करे क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला ने शोहर का बहुत बड़ा ह़क़ बनाया है याद रखो कि अपने शोहर को राज़ी व ख़ुश रखना बहुत बड़ी इ़बादत है और शोहर को ना ख़ुश और नाराज़ रखना बहुत बड़ा गुनाह है। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "अगर मैं ख़ुदा के सिवा किसी दूसरे के लिये सजदा करने का हुक्म देता तो मैं औ़रतों को हुक्म देता कि वोह अपने शोहरों को सजदा किया करें।"

(جامع الترمذی، کتاب الرضاع (۱۰)باب ماجاء فی حق الزوج علی المرأۃ، رقم ۱۱۶۲، ج۲،ص۳۸۶)

और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह भी फ़रमाया है कि "जिस औ़रत की मौत ऐसी ह़ालत में आए कि मरते वक़्त उस का शोहर उस से ख़ुश हो वोह औ़रत जन्नत में जाएगी।"

(سنن ابن ماجه، کتاب النکاح، ٤-باب حق الزوج علی المرأۃ، رقم ١٨٥٤، ج٢،ص٤١٢)

और येह भी फ़रमाया कि "जब कोई मर्द अपनी बीवी को किसी काम के लिये बुलाए तो वोह औ़रत अगर्चे चूल्हे के पास बैठी हो उस को लाज़िम है कि वोह उठ कर शोहर के पास चली आए।"

(جامع الترمذی، کتاب الرضاع، باب ماجاء فی حق الزوج علی المرأۃ (ت:۱۰) رقم ۱۱۶۳، ج۲، ص۳۸۶)

ह़दीष शरीफ़ का मत़लब येह है कि औ़रत चाहे कितने भी ज़रूरी काम में मशग़ूल हो मगर शोहर के बुलाने पर सब कामों को छोड़ कर शोहर की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो जाए।

और रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने औ़रतों को येह भी हुक्म दिया कि "अगर शोहर अपनी औ़रत को येह हुक्म दे कि पीले रंग के पहाड़ को काले रंग का बना दे और काले रंग के पहाड़ को सफ़ेद बना दे तो औ़रत को अपने शोहर का येह हुक्म भी बजा लाना चाहिये।"

(سنن ابن ماجہ، کتاب النکاح، ٤/٤ـ باب حق الزوج علی المرأۃ، رقم ۱۸۵۲، ج۲، ص٤۱۱)

ह़दीष का मत़लब येह है कि मुश्किल से मुश्किल और दुश्वार से दुश्वार काम का भी अगर शोहर हुक्म दे तो जब भी औ़रत को शोहर की ना फ़रमानी नहीं करनी चाहिये बल्कि उस के हर हुक्म की फ़रमां बरदारी के लिये अपनी त़ाक़त भर कमर बस्ता रहना चाहिये और रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का येह भी फ़रमान है कि "शोहर बीवी को अपने बिछौने पर बुलाए और औ़रत आने से इन्कार कर दे और उस का शोहर इस बात से नाराज़ हो कर सो रहे तो रात भर ख़ुदा के फ़िरिश्ते उस औ़रत पर ला'नत करते रहते हैं।"

(صحیح مسلم، کتاب النکاح، باب تحریم امتناعھا من فراش زوجھا، رقم ۱٤۳٦، ص۷۵۳)

प्यारी बहनो ! इन ह़दीषों से सबक़ मिलता है कि शोहर का बहुत बड़ा ह़क़ है और हर औ़रत पर अपने शोहर का ह़क़ अदा करना फ़र्ज़ है शोहर के हुक़ूक़ बहुत ज़ियादा हैं इन में से नीचे लिखे हुए चन्द हुक़ूक़ बहुत ज़ियादा क़ाबिले लिह़ाज़ हैं।

1. औ़रत बिगै़र अपने शोहर की इजाज़त के घर से बाहर कहीं न जाए न अपने रिश्तेदारों के घर न किसी दूसरे के घर।

2. शोहर की गै़र मौजूदगी में औ़रत पर फ़र्ज़ है कि शोहर के मकान और मालो सामान की हि़फ़ाज़त करे और बिगै़र शोहर की इजाज़त किसी को भी न मकान में आने दे न शोहर की छोटी बड़ी चीज़ किसी को दे।

3. शोहर का मकान और माल व सामान येह सब शोहर की अमानतें हैं और बीवी इन सब चीज़ों की अमीन है अगर औ़रत ने अपने शोहर की किसी चीज़ को जान बूझ कर बरबाद कर दिया तो औ़रत पर अमानत में ख़ियानत करने का गुनाह लाज़िम होगा और इस पर ख़ुदा का बहुत बड़ा अ़ज़ाब होगा।

4. औ़रत हरगिज़ हरगिज़ कोई एसा काम न करे जो शोहर को ना पसन्द हो।

5. बच्चों की निगहदाश्त, इन की तर्बिय्यत और परवरिश ख़ुसूसन शोहर की गै़र मौजूदगी में औ़रत के लिये बहुत बड़ा फ़रीज़ा है।

6. औ़रत को लाज़िम है कि मकान और अपने बदन और कपड़ों की सफ़ाई सुथराई का ख़ास तौ़र पर ध्यान रखे। **फ़ौहड़ मैली कुचैली** न बनी रहे बल्कि बनाव सिंघार से रहा करे ताकि शोहर इस को देख कर ख़ुश हो जाए। ह़दीष शरीफ़ में है कि "बेहतरीन औ़रत वोह है कि जब शोहर उस की त़रफ़ देखे तो वोह अपने बनाव सिंघार और अपनी अदाओं से शोहर का दिल ख़ुश कर दे और अगर शोहर किसी बात की क़सम खा जाए तो वोह उस क़सम को पूरी कर दे और अगर शोहर ग़ाइब रहे तो वोह अपनी ज़ात और शोहर के माल में हि़फ़ाज़त और ख़ैर ख़्वाही का किरदार अदा करती रहे।" (سنن ابن ماجه، كتاب النكاح، باب فضل النساء، رقم ١٨٥٧، ج٢، ص ٤١٤)

शोहर के साथ ज़िन्दगी बसर करने का त़रीक़ा :- याद रखो कि मियां–बीवी का रिश्ता एक ऐसा मज़्बूत तअ़ल्लुक़ है कि सारी उ़म्र इसी बंधन में रह कर ज़िन्दगी बसर करनी है। अगर मियां–बीवी में पूरा पूरा इत्तिह़ाद और मिलाप रहा तो इस से बढ़ कर कोई ने'मत नहीं। और अगर ख़ुदा न करे मियां–बीवी के दरमियान इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया और झगड़े तकरार की नौबत आ गई तो इस से बढ़ कर कोई मुसीबत नहीं कि मियां–बीवी दोनों की ज़िन्दगी जहन्नम का नुमूना बन जाती है और दोनों उ़म्र भर घुटन और जलन की आग में जलते रहते हैं।

इस ज़माने में मियां–बीवी के झगड़ों का फ़साद इस क़दर ज़ियादा फैल गया है कि हज़ारों मर्द और हज़ारों औ़रतें इस बला में गिरिफ़्तार हैं और मुसलमानों के हज़ारों घर इस इख़्तिलाफ़ की आग में जल रहे हैं और मियां–बीवी दोनों अपनी ज़िन्दगी से बेज़ार हो कर दिन रात मौत की दुआ़एं मांगा करते हैं। इस लिये हम मुनासिब समझते हैं कि इस मक़ाम पर चन्द ऐसी नसीह़तें लिख दें कि अगर मर्द व औ़रत इन पर अ़मल करने लगें तो अल्लाह तआ़ला से उम्मीद है कि मियां–बीवी के झगड़ों से मुस्लिम मुआ़शरा पाक हो जाएगा और मुसलमानों का हर घर अम्नो सुकून और आराम व राह़त की जन्नत बन जाएगा।

﴾1﴿ हर औ़रत शोहर के घर में क़दम रखते ही अपने ऊपर येह लाज़िम कर ले वोह हर वक़्त और हर ह़ाल में अपने शोहर का दिल अपने हाथ में लिये रहे और उस के इशारों पर चलती रहे अगर शोहर हुक्म दे कि दिन भर धूप में खड़ी रहो या रात भर जागती हुई मुझे पंखा झलती रहो तो औ़रत के लिये दुन्या व आख़िरत की भलाई इसी में है कि थोड़ी तक्लीफ़ उठा कर और सब्र कर के इस हुक्म पर भी अ़मल करे और किसी वक़्त और किसी ह़ाल में भी शोहर के हुक्म की ना फ़रमानी न करे।

﴾2﴿ हर औ़रत को चाहिये कि वोह अपने शोहर के मिज़ाज को पहचान ले और बग़ौर देखती रहे कि उस के शोहर को क्या क्या चीज़ें और कौन कौन सी बातें ना पसन्द हैं और वोह किन किन बातों से ख़ुश होता है और कौन कौन सी बातों से नाराज़ होता है उठने बैठने, सोने जागने, पहनने ओढ़ने और बात चीत में उस की आ़दत और उस का ज़ौक़ क्या और कैसा है? ख़ूब अच्छी त़रह़ शोहर का मिज़ाज पहचान लेने के बा'द औ़रत को लाज़िम है कि वोह हर काम शोहर के मिज़ाज के मुत़ाबिक़ करे हरगिज़ हरगिज़ शोहर के मिज़ाज के ख़िलाफ़ न कोई बात करे न कोई काम।

﴾3﴿ औ़रत को लाज़िम है कि शोहर को कभी जली कटी बातें न सुनाए न कभी उस के सामने ग़ुस्से में चिल्ला चिल्ला कर बोले न उस की बातों का कड़वा तीखा जवाब दे न कभी उस को त़ा'ना मारे न कोसने दे न उस की लाई हुई चीज़ों में ऐ़ब निकाले न शोहर के मकान व सामान वग़ैरा को ह़क़ीर बताए न शोहर के मां-बाप या उस के ख़ानदान या उस की शक्लो सूरत के बारे में कोई ऐसी बात कहे जिस से शोहर के दिल को ठेस लगे और ख़्वा मख़्वाह उस को सुन कर बुरा लगे इस क़िस्म की बातों से शोहर का दिल दुख जाता है और रफ़्ता रफ़्ता शोहर को बीवी से नफ़रत होने लगती है जिस का अन्जाम झगड़े लड़ाई के सिवा कुछ भी नहीं होता यहां तक कि मियां-बीवी में ज़बरदस्त बिगाड़ हो जाता है जिस का नतीजा येह होता है कि या तो त़लाक़ की नौबत आ जाती है या बीवी अपने मैके में बैठे रहने पर मजबूर हो जाती है और अपनी भावजों के त़ा'ने सुन सुन कर कुफ़्त और घुटन की भट्टी में जलती रहती है और मैके और सुसराल वालों के दोनों ख़ानदानों में भी इसी त़रह़ इख़्तिलाफ़ की आग भड़क उठती है कि कभी कोर्ट कचहरी की नौबत आ जाती है और कभी मार पीट हो कर मुक़द्दमात का एक न ख़त्म होने वाला सिलसिला शुरूअ़ हो जाता है और मियां-बीवी की ज़िन्दगी जहन्नम बन जाती है और दोनों ख़ानदान लड़ भड़ कर तबाहो बरबाद हो जाते हैं।

﴾4﴿ औ़रत को चाहिये कि शोहर की आमदनी की हैसिय्यत से ज़ियादा ख़र्च न मांगे बल्कि जो कुछ मिले इस पर सब्रो शुक्र के साथ अपना घर समझ कर हंसी ख़ुशी के साथ ज़िन्दगी बसर करे अगर कोई ज़ेवर या कपड़ा या सामान पसन्द आ जाए और शोहर की माली ह़ालत ऐसी नहीं है कि वोह इस को ला सके तो कभी हरगिज़ शोहर से इस की फ़रमाइश न करे और अपनी पसन्द की चीज़ें न मिलने पर कभी हरगिज़ शिकवा शिकायत न करे न ग़ुस्से से मुंह फुलाए न त़ा'ना मारे, न अफ़्सोस ज़ाहिर करे। बल्कि बेहतरीन त़रीक़ा येह है कि औ़रत शोहर से किसी चीज़ की फ़रमाइश ही न करे क्यूंकि बारबार की फ़रमाइशों से औ़रत का वज़्न शोहर की निगाह में घट जाता है। हां अगर शोहर ख़ुद पूछे कि मैं तुम्हारे लिये क्या लाऊं तो औ़रत को चाहिये कि शोहर की माली हैसिय्यत देख कर अपनी पसन्द की चीज़ त़लब करे और जब शोहर चीज़ लाए तो वोह पसन्द आए या न आए मगर औ़रत को हमेशा येही चाहिये कि वोह इस पर ख़ुशी का इज़्हार करे। ऐसा करने से शोहर का दिल बढ़ जाएगा और उस का ह़ौसला बुलन्द हो जाएगा और अगर औ़रत ने शोहर की लाई हुई चीज़ को ठुकरा दिया और उस में ऐ़ब निकाला या उस को ह़क़ीर समझा तो इस से शोहर का दिल टूट जाएगा जिस का नतीजा येह होगा कि शोहर के दिल में बीवी की त़रफ़ से नफ़रत पैदा हो जाएगी और आगे चल कर झगड़े लड़ाई का बाज़ार गर्म हो जाएगा और मियां–बीवी की शादमानी व मसर्रत की ज़िन्दगी ख़ाक में मिल जाएगी।

﴾5﴿ औ़रत पर लाज़िम है कि अपने शोहर की सूरत व सीरत पर न त़ा'ना मारे न कभी शोहर की तह़क़ीर और उस की ना शुक्री करे और हरगिज़ हरगिज़ कभी इस क़िस्म की जली कटी बोलियां न बोले कि हाए **अल्लाह**! मैं कभी इस घर में सुखी नहीं रही। हाए हाए मेरी तो सारी उ़म्र मुसीबत ही में कटी। इस उजड़े घर में आ कर मैं ने क्या देखा ? मेरे मां–बाप ने मुझे भाड़ में झोंक दिया कि मुझे इस घर में बियाह दिया मुझ नगोडी को इस घर में कभी आराम नसीब नहीं हुवा। हाए मैं किस फक्कड़ और

दल दर से बियाही गई। इस घर में तो हमेशा उल्लू ही बोलता रहा। इस क़िस्म के ता'नों और कोसनों से शोहर की दिल शिक्नी यक़ीनी तौर पर होगी जो मियां–बीवी के नाज़ुक तअ़ल्लुक़ात की गर्दन पर छुरी फेर देने के बराबर है ज़ाहिर है कि शोहर इस क़िस्म के ता'नों और कोसनों को सुन सुन कर औ़रत से बेज़ार हो जाएगा और मह़ब्बत की जगह नफ़रत व अ़दावत का एक ऐसा ख़त़रनाक तूफ़ान उठ खड़ा होगा कि मियां–बीवी के ख़ुश गवार तअ़ल्लुक़ात की नाव डूब जाएगी जिस पर तमाम उ़म्र पछताना पड़ेगा मगर अफ़्सोस कि औ़रतों की येह आ़दत बल्कि फ़ित़रत बन गई है कि वोह शोहरों को ता'ने और कोसने देती रहती हैं और अपनी दुन्या व आख़िरत को तबाहो बरबाद करती रहती हैं। ह़दीष शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं ने जहन्नम में औ़रतों को ब कषरत देखा। येह सुन कर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने पूछा कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! इस की क्या वजह है कि औ़रतें ब कषरत जहन्नम में नज़र आईं। तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि औ़रतों में दो बुरी ख़स्लतों की वजह से। एक तो येह कि औ़रतें दूसरों पर बहुत ज़ियादा ला'न ता'न करती रहती हैं दूसरी येह कि औ़रतें अपने शोहरों की नाशुक्री करती रहती हैं चुनान्चे तुम उ़म्र भर इन औ़रतों के साथ अच्छे से अच्छा सुलूक करते रहो। लेकिन अगर कभी एक ज़रा सी कमी तुम्हारी त़रफ़ से देख लेंगी तो येही कहेंगी कि मैं ने तुम से कोई भलाई देखी ही नहीं। (صحیح البخاری، کتاب الایمان ـ ۲۱ـباب کفران العشیرو کفر دون کفر، رقم ۲۹، ج۱،ص ۲۳ وایضافی کتاب النکاح ۸۹،باب کفران العشیر وھو الزوج الخ، رقم ۵۱۹۱، ج۳،ص ۴۶۳)

﴾6﴿ बीवी को लाज़िम है कि हमेशा उठते बैठते बात चीत में हर ह़ालत में शोहर के सामने बा अदब रहे और उस के ए'ज़ाज़ व इकराम का ख़याल रखे। शोहर जब कभी भी बाहर से घर में आए तो औ़रत को चाहिये कि सब काम छोड़ कर उठ खड़ी हो और शोहर की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाए उस की मिज़ाज पुर्सी करे और फ़ौरन ही उस के

आराम व राहृत का इन्तिज़ाम करे और उस के साथ दिलजोई की बातें करे और हरगिज़ हरगिज़ ऐसी कोई बात न सुनाए न कोई ऐसा सुवाल करे जिस से शोहर का दिल दुखे।

《7》 अगर शोहर को अ़ौरत की किसी बात पर ग़ुस्सा आ जाए तो अ़ौरत को लाज़िम है कि उस वक़्त ख़ामोश हो जाए और उस वक़्त हरगिज़ कोई ऐसी बात न बोले जिस से शोहर का ग़ुस्सा और ज़ियादा बढ़ जाए और अगर अ़ौरत की त़रफ़ से कोई क़ुसूर हो जाए और शोहर ग़ुस्से में भर कर अ़ौरत को बुरा भला कह दे और नाराज़ हो जाए तो अ़ौरत को चाहिये कि ख़ुद रूठ कर और गाल फुला कर न बैठ जाए बल्कि अ़ौरत को लाज़िम है कि फ़ौरन ही आ़जिज़ी और ख़ुशामद कर के शोहर से मुआ़फ़ी मांगे और हाथ जोड़ कर, पाऊं पकड़ कर जिस त़रह़ वोह माने उसे मना ले। अगर अ़ौरत का कोई क़ुसूर न हो बल्कि शोहर ही का क़ुसूर हो जब भी अ़ौरत को तन कर और मुंह बिगाड़ कर बैठ नहीं रहना चाहिये बल्कि शोहर के सामने आ़जिज़ी व इन्किसारी ज़ाहिर कर के शोहर को ख़ुश कर लेना चाहिये क्यूंकि शोहर का ह़क़ बहुत बड़ा है उस का मर्तबा बहुत बुलन्द है अपने शोहर से मुआ़फ़ी तलाफ़ी करने में अ़ौरत की कोई ज़िल्लत नहीं है बल्कि येह अ़ौरत के लिये इ़ज़्ज़त और फ़ख़्र की बात है कि वोह मुआ़फ़ी मांग कर अपने शोहर को राज़ी कर ले।

《8》 अ़ौरत को चाहिये कि वोह अपने शोहर से उस की आमदनी और ख़र्च का ह़िसाब न लिया करे क्यूं कि शोहरों के ख़र्च पर अ़ौरतों के रोक टोक लगाने से उ़मूमन शोहर को चिड़ पैदा हो जाती है और शोहरों पर ग़ैरत सुवार हो जाती है कि मेरी बीवी मुझ पर हुकूमत जताती है और मेरी **आमदनी ख़र्च** का मुझ से ह़िसाब त़लब करती है इस चिड़ का अन्जाम येह होता है कि रफ़्ता रफ़्ता मियां-बीवी के दिलों में इख़्तिलाफ़ पैदा हो जाया करता है इसी त़रह़ अ़ौरत को चाहिये कि अपने शोहर के कहीं आने जाने पर रोक

टोक न करे न शोहर के चाल चलन पर शुबा और बद गुमानी करे कि इस से मियां–बीवी के तअ़ल्लुक़ात में फ़साद व ख़राबी पैदा हो जाती है और ख़्वाह मख़्वाह शोहर के दिल में नफ़रत पैदा हो जाती है।

《9》 जब तक सास और ख़ुसर ज़िन्दा हैं औ़रत के लिये ज़रूरी है कि इन दोनों की भी ताबेअ़दारी और ख़िदमत गुज़ारी करती रहे और जहां तक मुमकिन हो सके इन दोनों को राज़ी और ख़ुश रखे। वरना याद रखो ! कि शोहर इन दोनों का बेटा है अगर इन दोनों ने अपने बेटे को डांट डपट कर चांप चड़ा दी तो यक़ीनन शोहर औ़रत से नाराज़ हो जाएगा और मियां–बीवी के दरमियान बाहमी तअ़ल्लुक़ात तह्स नह्स हो जाएंगे इसी त़रह़ अपने जेठों, देवरों और नन्दों, भावजों के साथ भी ख़ुश अख़्लाक़ी बरते और इन सभों की दिलजोई में लगी रहे और कभी हरगिज़ हरगिज़ इन में से किसी को नाराज़ न करे। वरना ध्यान रहे कि इन लोगों से बिगाड़ का नतीजा मियां–बीवी के तअ़ल्लुक़ात की ख़राबी के सिवा कुछ भी नहीं। औ़रत को सुसराल में सास और ख़ुसर से अलग थलग रहने की हरगिज़ कभी कोशिश नहीं करनी चाहिये। बल्कि मिल जुल कर रहने में ही भलाई है। क्यूंकि सास और ख़ुसर से बिगाड़ और झगड़े की येही जड़ है और येह ख़ुद सोचने की बात है कि मां–बाप ने लड़के को पाला पोसा और इस उम्मीद पर उस की शादी की, कि बुढापे में हम को बेटे और उस की दुल्हन से सहारा और आराम मिलेगा लेकिन दुल्हन ने घर में क़दम रखते ही इस बात की कोशिश शुरूअ़ कर दी कि बेटा अपने मां–बाप से अलग थलग हो जाए तो तुम ख़ुद ही सोचो की दुल्हन की इस ह़रकत से मां–बाप को किस क़दर ग़ुस्सा आएगा और कितनी झुंझलाहट पैदा होगी इस लिये घर में त़रह़ त़रह़ की बद गुमानियां और क़िस्म क़िस्म के फ़ितना व फ़साद शुरूअ़ हो जाते हैं यहां तक कि मियां–बीवी के दिलों में फूट पैदा हो जाती है और झगड़े तकरार की नौबत आ जाती है और फिर पूरे घर वालों की ज़िन्दगी तल्ख़ और

तअ़ल्लुक़ात दरहम बरहम हो जाते हैं लिहाज़ा बेहतरी इसी में है कि सास और ख़ुसर की ज़िन्दगी भर हरगिज़ कभी औ़रत को अलग रहने का ख़याल भी नहीं करना चाहिये हां अगर सास और ख़ुसर ख़ुद ही अपनी ख़ुशी से बेटे को अपने से अलग कर दें तो फिर अलग रहने में कोई ह़रज नहीं। लेकिन अलग रहने की सूरत में भी उल्फ़त व मह़ब्बत और मैल जोल रखना इन्तिहाई ज़रूरी है ताकि हर मुश्किल में पूरे कुम्बे को एक दूसरे की इमदाद का सहारा मिलता रहे और इत्तिफ़ाक़ व इत्तिह़ाद के साथ पूरे कुम्बे की ज़िन्दगी जन्नत का नुमूना बनी रहे।

《10》 औ़रत को अगर सुसराल में कोई तक्लीफ़ हो या कोई बात ना गवार गुज़रे तो औ़रत को लाज़िम है कि हरगिज़ मैके में आ कर चुग़ली न खाए क्यूंकि सुसराल की छोटी छोटी सी बातों की शिकायत मैके में आ कर मां–बाप से करनी येह बहुत ख़राब और बुरी बात है सुसराल वालों को औ़रत की इस ह़रकत से बे ह़द तक्लीफ़ पहुंचती है यहां तक कि दोनों घरों में बिगाड़ और लड़ाई झगड़े शुरूअ़ हो जाते हैं जिस का अन्जाम येह होता है कि औ़रत शोहर कि नज़रों में भी क़ाबिले नफ़रत हो जाती है और फिर मियां–बीवी की ज़िन्दगी लड़ाई झगड़ों से जहन्नम का नुमूना बन जाती है।

《11》 औ़रत को चाहिये कि जहां तक हो सके अपने बदन और कपड़ों की सफ़ाई सुथराई का ख़याल रखे। मेली कुचेली और फोहड़ न बन रहे बल्कि अपने शोहर की मरज़ी और मिज़ाज के मुत़ाबिक़ बनाव सिंघार भी करती रहे। कम से कम हाथ पाऊं में मेहंदी, कंघी चोटी, सुरमे काजल वग़ैरा का एहतिमाम करती रहे। बाल बिखरे और मैले कुचैले चुड़ेल बनी न फिरे कि औ़रत का फोहड़ पन आ़म त़ौर पर शोहर की नफ़रत का बाइ़ष हुवा करता है ख़ुदा न करे कि शोहर औ़रत के फोहड़ पन की वजह से मुतनफ़्फ़िर हो जाए और दूसरी औ़रतों की त़रफ़ ताक झांक शुरूअ़ कर दे तो फिर औ़रत की ज़िन्दगी तबाहो बरबाद हो जाएगी और फिर उस को उ़म्र भर रोने धोने और सर पीटने के सिवा कोई चारए कार नहीं रह जाएगा।

«12» औ़रत के लिये येह बात भी ख़ास तौ़र पर क़ाबिले लिहाज़ है कि जब तक शोहर और सास और ख़ुसर वग़ैरा ना खा पी लें ख़ुद न खाए बल्कि सब को खिला पिला कर ख़ुद सब से अख़ीर में खाए। औ़रत की इस अदा से शोहर और उस के सब घर वालों के दिल में औ़रत की क़द्रो मंज़िलत और मह़ब्बत बढ़ जाएगी।

«13» औ़रत को चाहिये कि सुसराल में जा कर अपने मैके वालों की बहुत ज़ियादा ता'रीफ़ और बड़ाई न बयान करती रहे क्यूंकि इस से सुसराल वालों को येह ख़याल हो सकता है कि हमारी बहु हम लोगों को बे क़द्र समझती है और हमारे घर वालों और घर के माह़ोल की तौहीन करती है इस लिये सुसराल वाले भड़क कर बहु की बे क़द्री और उस से नफ़रत करने लगते हैं।

«14» घर के अन्दर सास, नन्दें या जेठानी, देवरानी या कोई दूसरी औ़रतें आपस में चुपके चुपके बातें कर रही हों तो औ़रत को चाहिये कि ऐसे वक़्त में उन के क़रीब न जाए और न येह जुस्तजू करे कि वोह आपस में क्या बातें कर रही हैं और बिला वजह येह बद गुमानी भी न करे की कुछ मेरे ही मुतअ़ल्लिक़ बातें कर रही होंगी कि इस से ख़्वाह मख़्वाह दिल में एक दूसरे की त़रफ़ से कीना पैदा हो जाता है जो बहुत बड़ा गुनाह होने के साथ साथ बड़े बड़े फ़साद होने का सबब बन जाया करता है।

«15» औ़रत को येह भी चाहिये कि सुसराल में अगर सास या नन्दों को कोई काम करते देखे तो झट पट उठ कर ख़ुद भी काम करने लगे इस से सास नन्दों के दिल में येह अषर पैदा होगा कि वोह औ़रत को अपना ग़मगुसार और रफ़ीक़े कार बल्कि अपना मददगार समझने लगेंगी जिस से ख़ुद ब ख़ुद सास नन्दों के दिल में एक ख़ास क़िस्म की मह़ब्बत पैदा हो जाएगी ख़ुसूसन सास, ख़ुसर और नन्दों की बीमारी के वक़्त औ़रत

को बड़ चढ़ कर ख़िदमत और तीमार दारी में हिस्सा लेना चाहिये कि ऐसी बातों से सास, ख़ुसर, नन्दों बल्कि शोहर के दिल में औ़रत की त़रफ़ से जज़्बए महब्बत पैदा हो जाता है और औ़रत सारे घर की नज़रों में वफ़ादार व ख़िदमत गुज़ार समझी जाने लगती है और औ़रत की नेक नामी में चार चांद लग जाते हैं।

﴾16﴿ औ़रत के फ़राइज़ में येह भी है कि अगर शोहर ग़रीब हो और घरेलू काम काज के लिये नोकरानी रखने की त़ाक़त न हो तो अपने घर का घरेलू काम काज ख़ुद कर लिया करे इस में हरगिज़ हरगिज़ न औ़रत की कोई ज़िल्लत है न शर्म। बुख़ारी शरीफ़ की बहुत सी रिवायतों से पता चलता है कि ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस साहिबज़ादी ह़ज़रते फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का भी येही मा'मूल था कि वोह अपने घर का सारा काम काज ख़ुद अपने हाथों से किया करती थीं कूंवें से पानी भर कर और अपनी मुक़द्दस पीठ पर मशक लाद कर पानी लाया करती थीं ख़ुद ही चक्की चला कर आटा भी पीस लेती थीं इसी वजह से इन के मुबारक हाथों में कभी कभी छाले पड़ जाते थे इसी त़रह़ अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की साहिब ज़ादी ह़ज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के मुतअ़ल्लिक़ भी रिवायत है कि वोह अपने ग़रीब शोहर ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के यहां अपने घर का सारा काम काज अपने हाथों से कर लिया करती थीं यहां तक कि ऊंट को खिलाने के लिये बाग़ो में से खजूरों की गुठलियां चुन चुन कर अपने सर पर लाती थीं और घोड़े के लिये घास-चारा भी लाती थीं और घोड़े की मालिश भी करती थीं।

﴾17﴿ हर बीवी का येह भी फ़र्ज़ है कि वोह अपने शोहर की आमदनी और घर के अख़राजात को हमेशा नज़र के सामने रखे और घर का ख़र्च इस त़रह़ चलाए कि इ़ज़्ज़त व आबरू से ज़िन्दगी बसर होती रहे। अगर शोहर की आमदनी कम हो तो हरगिज़ हरगिज़ शोहर पर बेजा फ़रमाइशों का बोझ न डाले। इस लिये कि अगर औ़रत ने शोहर को मजबूर किया

और शोहर ने बीवी की महब्बत में क़र्ज़ का बोझ अपने सर पर उठा लिया और ख़ुदा न करे उस क़र्ज़ का अदा करना दुश्वार हो गया तो घरेलू ज़िन्दगी में परेशानियों का सामना हो जाएगा और मियां-बीवी की ज़िन्दगी तंग हो जाएगी इस लिये हर औ़रत को लाज़िम है कि सब्रो क़नाअ़त के साथ जो कुछ भी मिले ख़ुदा का शुक्र अदा करे और शोहर की जितनी आमदनी हो उसी के मुत़ाबिक़ ख़र्च करे और घर के अख़राजात को हरगिज़ हरगिज़ आमदनी से बढ़ने न दे।

﴾18﴿ औ़रत को लाज़िम है कि सुसराल में पहुंचने के बा'द ज़िद और हटधर्मी की आ़दत बिल्कुल ही छोड़ दे। उ़मूमन औ़रतों की आ़दत होती है कि जहां कोई बात उन की मरज़ी के ख़िलाफ़ हुई फ़ौरन ग़ुस्से में आग बगूला हो कर उलट पलट शुरूअ़ कर देती हैं येह बहुत बुरी आ़दत है लेकिन मैके में चूंकि मां-बाप अपनी बेटी का नाज़ उठाते हैं इस लिये मैके में तो ज़िद और हटधर्मी और ग़ुस्सा वग़ैरा से औ़रत को कुछ ज़ियादा नुक़्सान नहीं पहुंचता लेकिन सुसराल में मां-बाप से नहीं बल्कि सास, ख़ुसर और शोहर से वासित़ा पड़ता है इन में से कौन ऐसा है जो औ़रत के नाज़ उठाने को तय्यार होगा? इस लिये सुसराल में औ़रत की ज़िद और हटधर्मी और ग़ुस्सा और चिड़-चिड़ा पन औ़रत के लिये बे ह़द नुक़्सान का सबब बन जाता है कि पूरे सुसराल वाले औ़रत की इन ख़राब आ़दतों की वजह से बिल्कुल ही बेज़ार हो जाते हैं और औ़रत सब की नज़रों में ज़लीलो ख़्वार हो जाती है।

﴾19﴿ उ़मूमन सुसराल का माह़ोल मैके के माह़ोल से अलग थलग होता है और सब नए नए लोगों से औ़रत का वासित़ा पड़ता है इस लिये सच पूछो तो सुसराल हर औ़रत के लिये एक इम्तिह़ान गाह है जहां उस की हर ह़रकत व सकनत पर नज़र रखी जाएगी और उस के हर अ़मल पर तन्क़ीद की जाएगी। नया माह़ोल होने की वजह से सास और नन्दों से कभी कभी ख़यालात में टकराव भी होगा और इस मौक़अ़ पर बा'ज़

वक़्त सास और नन्दों की त़रफ़ से जली कटी और त़ा'नों कोसनों की कड़वी कड़वी बातें भी सुननी पड़ेगी ऐसे मौक़ओं पर सब्र और ख़ामोशी औ़रत की बेहतरीन ढाल है औ़रत को चाहिये कि सास और नन्दों को हमेशा बुराई का बदला भलाई से देती रहे और इन के त़ा'नों कोसनों पर सब्र कर के बिल्कुल ही जवाब न दे और चुप साध ले येह बेहतरीन त़रीक़ए अ़मल है ऐसा करते रहने से إِنْ شَاءَ اللهُ تعالٰی एक दिन ऐसा आएगा कि सास और नन्दें ख़ुद ही शर्मिन्दा हो कर अपनी ह़रकतों से बाज़ आ जाएंगी।

﴾20﴿ औ़रत को सुसराल में ख़ास तौ़र पर बात चीत में इस चीज़ का ध्यान रखना चाहिये कि न तो इतनी ज़ियादा बात चीत करे जो सुसराल वालों और पड़ोसियों को ना गवार गुज़रे और न इतनी कम बात करे कि मिन्नत व ख़ुशामद के बा'द भी कुछ न बोले इस लिये कि येह ग़ुरूर व घमन्ड की अ़लामत है जो कुछ बोले सोच समझ कर बोले और इतनी नर्म और प्यार भरे लहजों में बात करे कि किसी को ना गवार न गुज़रे और कोई ऐसी बात न बोले जिस से किसी के दिल पर भी ठेस लगे ताकि औ़रत सुसराल वालों और रिश्ते नाते वालों और पड़ोसियों सब की नज़रों में हरदिल अ़ज़ीज़ बनी रहे।

बेहतरीन बीवी की पहचान :- ऊपर लिखी हुई हिदायतों के मुत़ाबिक़ सुवाल पैदा होता है कि बेहतरीन बीवी कौन है ? तो इस का जवाब येह है कि।

बेहतरीन बीवी वोह है !

﴾1﴿ जो अपने शोहर की फ़रमां बरदारी और ख़िदमत गुज़ारी को अपना फ़र्ज़े मन्सबी समझे।

﴾2﴿ जो अपने शोहर के तमाम हुक़ूक़ अदा करने में कोताही न करे !

﴾3﴿ जो अपने शोहर की ख़ूबियों पर नज़र रखे और उस के उ़यूब और ख़ामियों को नज़र अन्दाज़ करती रहे।

﴾4﴿ जो ख़ुद तक्लीफ़ उठा कर अपने शोहर को आराम पहुंचाने की कोशिश करती रहे।

﴾5﴿ जो अपने शोहर से उस की आमदनी से ज़ियादा का मुत़ालबा न करे और जो मिल जाए उस पर सब्रो शुक्र के साथ ज़िन्दगी बसर करे।

﴾6﴿ जो अपने शोहर के सिवा किसी अजनबी मर्द पर निगाह न डाले और न किसी की निगाह अपने ऊपर पड़ने दे।

﴾7﴿ जो पर्दे में रहे और अपने शोहर की इ़ज़्ज़त व नामूस की ह़िफ़ाज़त करे।

﴾8﴿ जो शोहर के माल और मकान व सामान और ख़ुद अपनी ज़ात को शोहर की अमानत समझ कर हर चीज़ की ह़िफ़ाज़त व निगहबानी करती रहे।

﴾9﴿ जो अपने शोहर की मुसीबत में अपनी जानी व माली क़ुरबानी के साथ अपनी वफ़ादारी का षुबूत दे।

﴾10﴿ जो अपने शोहर की ज़ियादती और ज़ुल्म पर हमेशा सब्र करती रहे।

﴾11﴿ जो मैका और सुसराल दोनों घरों में हर दिल अ़ज़ीज़ और बा इ़ज़्ज़त हो !

﴾12﴿ जो पड़ोसियों और मिलने जुलने वाली औ़रतों के साथ ख़ुश अख़्लाक़ी और शराफ़त व मुरुव्वत का बरताव करे और सब उस की ख़ूबियों के मद्दाह़ हों !

﴾13﴿ जो मज़हब की पाबन्द और दीनदार हो और हुक़ूक़ुल्लाह व हुक़ूक़ुल इ़बाद को अदा करती रहे।

﴾14﴿ जो सुसराल वालों की कड़वी कड़वी बातों को बरदाश्त करती रहे।

﴾15﴿ जो सब घरवालों को खिला पिला कर सब से आख़िर में ख़ुद खाए पिये।

सास बहू का झगड़ा :- हमारे समाज का येह एक बहुत क़ाबिले अफ़्सोस और दर्दनाक सानिह़ा है कि तक़रीबन हर घर में सदियों से सास बहु की लड़ाई का मा'रका जारी है। दुन्या की बड़ी से बड़ी लड़ाइयों यहां तक कि आ़लमी जंगों का ख़ातिमा हो गया मगर सास बहू की जंगे अ़ज़ीम येह एक ऐसी मन्ह़ूस लड़ाई है कि तक़रीबन हर घर इस लड़ाई का मैदाने जंग बना हुवा है .... ! ! !

किस क़दर तअ़ज्जुब और हैरत की बात है कि मां कितने लाड प्यार से अपने बेटों को पालती है और जब लड़के जवान हो जाते हैं तो लड़कों की मां अपने बेटों की शादी और इन का सहरा देखने के लिये सब से ज़ियादा बेचैन और बे क़रार रहती है और घर घर का चक्कर लगा कर अपने बेटे की दुल्हन तलाश करती फिरती है। यहां तक कि बड़े प्यार और चाह से बेटे की शादी रचाती है और अपने बेटे की शादी का सहरा देख कर ख़ुशी से फूले नहीं समाती मगर जब ग़रीब दुल्हन अपना मैका छोड़ कर और अपने मां–बाप, भाई बहन और रिश्तेनाते वालों से जुदा हो कर अपने सुसराल में क़दम रखती है तो एक दम सास बहू की ह़रीफ़ बन कर अपनी बहू से लड़ने लगती है और सास बहू की जंग हो जाती है और बे चारा शोहर मां और बीवी की लड़ाई की चक्की के दो पाटों के दरमियान कुचलने और पीसने लगता है। ग़रीब शोहर एक त़रफ़ मां के एह़सानों के बोझ से दबा हुवा और दूसरी त़रफ़ बीवी की मह़ब्बत में जकड़ा हुवा मां और बीवी की लड़ाई का मन्ज़र देख देख कर कौफ़्त की आग में जलता रहता है और उस के लिये बड़ी मुश्किल येह आन पड़ती है कि अगर वोह इस लड़ाई में अपनी मां की ह़िमायत करता है तो बीवी के रोने धोने और इस के त़ा'नो और मैके चली जाने की धमकियों से उस का भेजा खोलने लगता है। और अगर बीवी की पासदारी में एक लफ़्ज़ बोल देता है तो मां अपनी चीख़ो पुकार और कोसनों से सारा घर सर पर उठा लेती है और सारी बरादरी में "औ़रत का मुरीद" "ज़न परस्त" "बीवी का ग़ुलमटा" कहलाने लगता है और ऐसे गर्म गर्म और दिल ख़राश त़ा'ने सुनता है कि रंजो ग़म से उस के सीने में दिल फटने लगता है।

इस में शक नहीं कि सास बहू की लड़ाई में सास बहू और शोहर तीनों का कुछ न कुछ क़ुसूर ज़रूर होता है लेकिन मेरा बरसों का तजरिबा येह है कि इस लड़ाई में सब से बड़ा हाथ सास का हुवा करता है ह़ालांकि हर सास पहले ख़ुद भी बहू रह चुकी होती है। मगर वोह अपने बहू बन कर रहने का ज़माना बिल्कुल भूल जाती है और अपनी बहू से ज़रूर लड़ाई करती है और इस की एक ख़ास वजह येह है कि जब तक लड़के की शादी नहीं होती। सो फ़ीसदी बेटे का तअ़ल्लुक़ मां ही से हुवा करता है। बेटा अपनी सारी कमाई और जो सामान भी लाता है वोह अपनी मां ही के हाथ में देता है और हर चीज़ मां ही से त़लब कर के इस्ति'माल करता है और दिन रात सेंकड़ों मरतबा अम्मां-अम्मां कह कर बात बात में मां को पुकारता है। इस से मां का कलेजा ख़ुशी से फूल कर सेर भर का हो जाया करता है और मां इस ख़याल में मगन रहती है कि मैं घर की मालकन हूं। और मेरा बेटा मेरा फ़रमां बरदार है लेकिन शादी के बा'द बेटे की मह़ब्बत बीवी की त़रफ़ रुख़ कर लेती है। और बेटा कुछ न कुछ अपनी बीवी को देने और कुछ न कुछ इस से मांग कर लेने लगता है तो मां को फ़ित़री त़ौर पर बड़ा झटका लगता है कि मेरा बेटा कि मैं ने इस को पाल पोस कर बड़ा किया। अब येह मुझ को नज़र अन्दाज़ कर के अपनी बीवी के क़ब्ज़े में चला गया। अब अम्मां-अम्मां पुकारने की बजाए बेगम-बेगम पुकारा करता है। पहले अपनी कमाई मुझे देता था। अब बीवी के हाथ से हर चीज़ लिया दिया करता है। अब घर की मालकन मैं नहीं रही इस ख़याल से मां पर एक झलाहट सुवार हो जाती है और वोह बहू को जज़्बए ह़सद में अपनी ह़रीफ़ और मद्दे मुक़ाबिल बना कर इस से लड़ाई झगड़ा करने लगती है और बहू में त़रह़ त़रह़ के ऐ़ब निकालने लगती है और क़िस्म क़िस्म के त़ा'ने और कोसने देना शुरूअ़ कर देती है बहू शुरूअ़ शुरूअ़ में तो येह ख़याल कर के कि येह मेरे शोहर की मां है कुछ दिनों तक चुप रहती है मगर जब सास ह़द

से ज़ियादा बहू के ह़ल्क़ में उंगली डालने लगती है तो बहू को भी पहले तो नफ़रत की मतली आने लगती है फिर वोह भी एक दम सीना तान कर सास के आगे त़ा'नों और कोसनों की क़ै करने लगती है और फिर मुआ़मला बढ़ते बढ़ते दोनों त़रफ़ से तरक्क़ी ब तरक्क़ी सुवालो जवाब का तबादला होने लगता है यहां तक कि गालियों की बम्बारी शुरूअ़ हो जाती है। फिर बढ़ते बढ़ते इस जंग के शो'ले सास और बहू के ख़ानदानों को भी अपनी लपेट में ले लेते हैं। और दोनों ख़ानदानों में भी जंगे अ़ज़ीम शुरूअ़ हो जाती है।

मेरे ख़याल में इस लड़ाई के ख़ातिमे की बेहतरीन सूरत येही है कि इस जंग के तीनों फ़रीक़ या'नी सास, बहू और बेटा तीनों अपने अपने हुक़ूक़ व फ़राइज़ अदा करने लगे तो اِنْ شَاءَ اللّٰہ تعالٰی हमेशा के लिये इस जंग का ख़ातिमा यक़ीनी है। इन तीनों के हुक़ूक़ व फ़राइज़ क्या हैं ? इन को बग़ौर पढ़ो।

सास के फ़राइज़ :– हर सास का येह फ़र्ज़ होता है कि वोह अपनी बहू को अपनी बेटी की त़रह़ समझे और हर मुआ़मले में इस के साथ शफ़्क़त व मह़ब्बत का बरताव करे अगर बहू से इस की कमसिनी या ना तजरिबा कारी की वजह से कोई ग़लत़ी हो जाए तो त़ा'ने मारने और कोसने देने के बजाए अख़्लाक़ व मह़ब्बत के साथ इस को काम का सह़ीह़ त़रीक़ा और ढंग सिखाए और हमेशा इस का ख़याल रखे कि येह कम उ़म्र और ना तजरिबा कार लड़की अपने मां–बाप से जुदा हो कर हमारे घर में आई है इस के लिये येह घर नया और इस का माह़ोल नया है इस का यहां हमारे सिवा कौन है ? अगर हम ने इस का दिल दुखाया तो इस को तसल्ली देने वाला और इस के आंसू पौंछने वाला यहां दूसरा कौन है ? बस हर सास येह समझ ले और ठान ले कि मुझे अपनी बहू से हर ह़ाल में शफ़्क़त व मह़ब्बत करनी है बहू मुझे ख़्वाह "कुछ" न समझे मगर मैं तो इस को अपनी बेटी ही समझूंगी तो फिर समझ लो कि सास बहू का झगड़ा आधे से ज़ियादा ख़त्म हो गया।

बहू के फ़राइज़ :- हर बहू को लाज़िम है कि अपनी सास को अपनी मां की जगह समझे और हमेशा सास की ता'ज़ीम और इस की फ़रमां बरदारी व ख़िदमत गुज़ारी को अपना फ़र्ज़ समझे। सास अगर किसी मुआ़मले में डांट डपट करे तो ख़ामोशी से सुन ले। और हरगिज़ हरगिज़, ख़बरदार ख़बरदार कभी सास को पलट कर उलटा सीधा जवाब न दे बल्कि सब्र करे इसी त़रह़ अपने ख़ुसर को भी अपने बाप की जगह जान कर उस की ता'ज़ीम व ख़िदमत को अपने लिये लाज़िम समझे। और सास ख़ुसर की ज़िन्दगी में इन से अलग रहने की ख़्वाहिश ज़ाहिर न करे और अपनी देवरानियों और जेठानियों और नन्दों से भी ह़स्बे मरातिब अच्छा बरताव रखे और येह ठान ले कि मुझे हर ह़ाल में इन्ही लोगों के साथ ज़िन्दगी बसर करनी है।

बेटे के फ़राइज़ :- हर बेटे को लाज़िम है कि जब इस की दुल्हन घर आ जाए तो ह़स्बे दस्तूर अपनी दुल्हन से ख़ूब ख़ूब प्यार व मह़ब्बत करे लेकिन मां-बाप के अदबो एह़तिराम और इन की ख़िदमत व इत़ाअ़त में हरगिज़ हरगिज़ बाल बराबर भी फ़र्क़ न आने दे। अब भी हर चीज़ का लैन दैन मां ही के हाथ से करता रहे और अपनी दुल्हन को भी येही ताकीद करता रहे कि बिग़ैर मेरी मां और मेरे बाप की राय के हरगिज़ हरगिज़ न कोई काम करे न बिग़ैर इन दोनों से इजाज़त लिये घर की कोई चीज़ इस्ति'माल करे। इस त़र्ज़े अ़मल से सास के दिल को सुकून व इत़मीनान रहेगा कि अब भी घर की मालिका मैं ही हूं और बेटा बहू दोनों मेरे फ़रमां बरदार हैं। फिर हरगिज़ हरगिज़ कभी भी वोह अपने बेटे और बहू से नहीं लड़ेगी जो लड़के शादी के बा'द अपनी मां से ला परवाई बरतने लगते हैं और अपनी दुल्हन को घर की मालिका बना लिया करते हैं उ़मूमन उसी घर में सास बहू की लड़ाइयां हुवा करती हैं लेकिन जिन घरों में सास बहू और बेटे अपने मज़्कूरा बाला फ़राइज़ का ख़याल रखते हैं। उन घरों में सास बहू की लड़ाइयों की नौबत ही नहीं आती।

इस लिये बेहद ज़रूरी है कि सब अपने अपने फ़राइज़ और दूसरों के हुक़ूक़ का ख़याल व लिहाज़ रखें ख़ुदावन्दे करीम सब को तौफ़ीक़ दे और हर मुसलमान के घर को अम्नो सुकून की बहिश्त बना दे। (आमीन)

बीवी के हुक़ूक़ :- अल्लाह तआला ने जिस तरह मर्दों के कुछ हुक़ूक़ औरतों पर लाज़िम फ़रमाए हैं इसी तरह औरतों के भी कुछ हुक़ूक़ मर्दों पर लाज़िम ठहरा दिये हैं। जिन का अदा करना मर्दों पर फ़र्ज़ है। चुनान्चे कुरआने मजीद में है।

وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِیْ عَلَیْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ۔ (پ۲،البقرہ:۲۲۸)

या'नी औरतों के मर्दों के ऊपर इसी तरह कुछ हुक़ूक़ हैं जिस तरह मर्दों के औरतों पर अच्छे बरताव के साथ,

इसी तरह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلہٖ وَسلَّم ने फ़रमाया है कि "तुम में अच्छे लोग वोह हैं जो औरतों के साथ अच्छी तरह पेश आएं।"

(مشکوۃ المصابیح ، کتاب النّکاح ، باب عشرۃ النساء وما لکل واحدۃ من الحقوق ، رقم ۳۲٦٤، ج۲،ص ۲٤۰)

और हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام का येह भी फ़रमान है कि "मैं तुम लोगों को औरतों के बारे में वसिय्यत करता हूं लिहाज़ा तुम लोग मेरी वसिय्यत को क़बूल करो।"

(صحیح البخاری، کتاب احادیث الانبیاء ، باب خلق آدم صلوات اللہ علیہ الخ ، رقم ۳۳۳۱، ج۲،ص ٤۱۲)

और एक हदीष शरीफ़ में येह भी है कि कोई मोमिन मर्द किसी मोमिना औरत से बुग़्ज़ व नफ़रत न रखे क्यूंकि अगर औरत की कोई आदत बुरी मा'लूम होती हो तो उस की कोई दूसरी आदत पसन्दीदा भी होगी।

(صحیح مسلم ، کتاب الرضاع ـ۱۸ـباب الوصیۃ بالنساء ، رقم ۱٤٦۹،ص ۷۷٥)

हदीष का मत़लब येह है कि ऐसा नहीं होगा कि किसी औरत की तमाम आदतें ख़राब ही हो बल्कि इस में कुछ अच्छी कुछ बुरी हर

क़िस्म की आ़दतें होंगी तो मर्द को चाहिये कि औ़रत की सिर्फ़ ख़राब आ़दतों ही को न देखता रहे बल्कि ख़राब आ़दतों से नज़्र फिरा कर उस की अच्छी आ़दतों को भी देखा करे। बहर ह़ाल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने औ़रतों के कुछ हुक़ूक़ मर्दों के ऊपर लाज़िम क़रार दे दिये हैं। लिहाज़ा मर्द पर ज़रूरी है कि नीचे लिखी हुई हिदायतों पर अ़मल करता रहे वरना ख़ुदा के दरबार में बहुत बड़ा गुनाहगार और बरादरी और समाज की नज़्रों में ज़लीलो ख़्वार होगा।

﴾1﴿ हर शोहर के ऊपर उस की बीवी का येह ह़क़ फ़र्ज़ है कि वोह अपनी बीवी के खाने, पहनने और रहने और दूसरी ज़रूरियाते ज़िन्दगी का अपनी हैषिय्यत के मुत़ाबिक़ और अपनी त़ाक़त भर इन्तिज़ाम करे और हर वक़्त इस का ख़याल रखे कि येह **अल्लाह** की बन्दी मेरे निकाह़ के बंधन में बंधी हुई है और येह अपने मां-बाप, भाई-बहन और तमाम अ़ज़ीज़ो अक़ारिब से जुदा हो कर सिर्फ़ मेरी हो कर रह गई है और मेरी ज़िन्दगी के दुख सुख में बराबर की शरीक बन गई है इस लिये इस की ज़िन्दगी की तमाम ज़रूरियात का इन्तिज़ाम करना मेरा फ़र्ज़ है। याद रखो ! जो मर्द अपनी ला परवाई से अपनी बीवियों के नानो नफ़्क़ा और अख़राजाते ज़िन्दगी का इन्तिज़ाम नहीं करते वोह बहुत बड़े गुनाहगार, हुक़ूक़ुल इ़बाद में गिरिफ़्तार और क़हरे क़ह्हार व अ़ज़ाबे नार के सज़ावार हैं।

﴾2﴿ औ़रत का येह भी ह़क़ है कि शोहर उस के बिस्तर का ह़क़ अदा करता रहे। शरीअ़त में इस की कोई ह़द मुक़र्रर नहीं है मगर कम से कम इस क़दर तो होना चाहिये कि औ़रत की ख़्वाहिश पूरी हो जाया करे और वोह इधर उधर ताक झांक न करे जो मर्द शादी कर के बीवियों से अलग थलग रहते हैं और औ़रत के साथ उस के बिस्तर का ह़क़ नहीं अदा करते वोह ह़क़्क़ुल इ़बाद या'नी बीवी के ह़क़ में गिरिफ़्तार और बहुत बड़े गुनाहगार हैं। अगर ख़ुदा न करे शोहर किसी मजबूरी से अपनी औ़रत के

इस ह़क़ को न अदा कर सके तो शोहर पर लाज़िम है कि औ़रत से उस के इस ह़क़ को मुआ़फ़ करा ले बीवी के इस ह़क़ की कितनी अहम्मिय्यत है इस बारे में अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का एक वाक़िआ़ बहुत ज़ियादा इ़ब्रतख़ेज़ व नसीह़त आमेज़ है। मन्क़ूल है कि अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ रात को रिआ़या की ख़बरगीरी के लिये शहरे मदीना में गश्त कर रहे थे अचानक एक मकान से दर्दनाक अश्आ़र पढ़ने की आवाज़ सुनी। आप उसी जगह खड़े हो गए और ग़ौर से सुनने लगे तो एक औ़रत येह शे'र बड़े ही दर्दनाक लहजे में पढ़ रही थी कि

فَوَ اللّٰہِ لَوۡلَا اللّٰہُ تُخۡشٰی عَوَاقِبُہٗ
لَزُحۡزِحَ مِنۡ ھٰذَا السَّرِیۡرِ جَوَانِبُہٗ

"या'नी ख़ुदा की क़सम अगर ख़ुदा के अ़ज़ाबों का ख़ौफ़ न होता
तो बिला शुबा इस चारपाई के कनारे जुम्बिश में हो जाते।"

अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने सुब्ह़ को तह़क़ीक़ात की तो मा'लूम हुवा कि औ़रत का शोहर जिहाद के सिलसिले में अ़र्सए दराज़ से बाहर गया हुवा है और येह औ़रत उस को याद कर के रंजो ग़म में येह शे'र पढ़ती रहती है। अमीरुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के दिल पर इस का इतना गहरा अषर पड़ा कि फ़ौरन ही आप ने तमाम सिपह सालारों को येह फ़रमान लिख भेजा कि कोई शादीशुदा फ़ौजी चार माह से ज़ियादा अपनी बीवी से जुदा न रहे।

(تاریخ الخلفاء للسیوطی، عمر فاروق رضی اللہ عنہ، فصل فی نبذ من اخبارہ وقضایاہ، ص ۱۱۰)

《3》 औ़रत को बिला किसी बड़े क़ुसूर के कभी हरगिज़ हरगिज़ न मारे। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि कोई शख़्स औ़रत को इस त़रह़ न मारे जिस त़रह़ अपने ग़ुलाम को मारा करता है फिर दूसरे वक़्त इस से सोह़बत भी करे।

(صحیح البخاری، کتاب النکاح ـ ۹٤ـ باب مایکرہ من ضرب النساء، رقم ٥٢٠٤، ج۳، ص٤٦٥)

हां अलबत्ता अगर औ़रत कोई बड़ा कुसूर कर बैठे तो बदला लेने या दुख देने के लिये नहीं बल्कि औ़रत की इस्लाह़ और तम्बीह की निय्यत से शोहर इस को मार सकता है मगर मारने में इस का पूरी त़रह़ ध्यान रहे कि उस को शदीद चोट या ज़ख़्म न पहुंचे।

फ़िक़ह की किताबों में लिखा है कि शोहर अपनी बीवी को चार बातों पर सज़ा दे सकता है और वोह चार बातें येह हैं।

﴾1﴿ शोहर अपनी बीवी को बनाव सिंघार और सफ़ाई सुथराई का हुक्म दे लेकिन फिर भी वोह फोहड़ और मैली कुचेली बनी रहे।

﴾2﴿ शोहर सोह़बत करने की ख़्वाहिश करे और बीवी बिला किसी उ़ज़्रे शरई मन्अ़ करे।

﴾3﴿ औ़रत ह़ैज़ और जनाबत से ग़ुस्ल न करती हो।

﴾4﴿ बिला वजह नमाज़ तर्क करती हो।

(الفتاوی القاضی خان،کتاب النکاح،فصل فی حقوق الزوجیۃ،ج۱،ص۲۰۳)

इन चारों सूरतों में शोहर को चाहिये कि पहले बीवी को समझाए अगर मान जाए तो बेहतर है वरना डराए धमकाए। अगर इस पर भी न माने तो इस शर्त़ के साथ मारने की इजाज़त है कि मुंह पर न मारे। और ऐसी सख़्त मार न मारे कि हड्डी टूट जाए या बदन पर ज़ख़्म हो जाए।

﴾4﴿ मियां–बीवी की ख़ुश गवार ज़िन्दगी बसर होने के लिये जिस त़रह़ औ़रतों को मर्दों के जज़्बात का लिह़ाज़ रखना ज़रूरी है इसी त़रह़ मर्दों को भी लाज़िम है कि औ़रतों के जज़्बात का ख़याल रखें वरना जिस त़रह़ मर्द की नाराज़ी से औ़रत की ज़िन्दगी जहन्नम बन जाती है इसी त़रह़ औ़रत की नाराज़ी भी मर्दों के लिये वबाले जान बन जाती है। इस लिये मर्द को लाज़िम है कि औ़रत की सीरत व सूरत पर त़ा'ना न मारे और औ़रत के मैके वालों पर भी त़ा'ना–ज़नी और नुक्ताचीनी न करे। न औ़रत के मां–

बाप और अ़ज़ीज़ो अक़ारिब को औ़रत के सामने बुरा भला कहे क्यूंकि इन बातों से औ़रत के दिल में मर्द की त़रफ़ से नफ़रत का जज़्बा पैदा हो जाता है जिस का नतीजा येह होता है कि मियां-बीवी के दरमियान नाचाक़ी पैदा हो जाती है और फिर दोनों की ज़िन्दगी दिन-रात की जलन और घुटन से तल्ख़ बल्कि अ़ज़ाबे जान बन जाती है।

﴾5﴿ मर्द को चाहिये कि ख़बरदार ख़बरदार कभी भी अपनी औ़रत के सामने किसी दूसरी औ़रत के हुस्नो जमाल या उस की ख़ूबियों का ज़िक्र न करे वरना बीवी को फ़ौरन ही बद गुमानी और येह शुबा हो जाएगा कि शायद मेरे शोहर का उस औ़रत से कोई सांठ-गांठ है या कम से कम क़ल्बी लगाव है और येह ख़याल औ़रत के दिल का एक ऐसा कांटा है कि औ़रत को एक लम्हे के लिये भी सब्रो क़रार नसीब नहीं हो सकता। याद रखो ! कि जिस त़रह़ कोई शोहर इस को बरदाश्त नहीं कर सकता कि उस की बीवी का किसी दूसरे मर्द से साज़-बाज़ हो इसी त़रह़ कोई औ़रत भी हरगिज़ हरगिज़ कभी इस बात की ताब नहीं ला सकती कि उस के शोहर का किसी दूसरी औ़रत से तअ़ल्लुक़ हो बल्कि तजरिबा शाहिद है कि इस मुआ़मले में औ़रत के जज़्बात मर्द के जज़्बात से कहीं ज़ियादा बढ़ चढ़ कर हुवा करते हैं लिहाज़ा इस मुआ़मले में शोहर को लाज़िम है कि बहुत एह़तियात़ रखे वरना बद गुमानियों का तूफ़ान मियां-बीवी की ख़ुश गवार ज़िन्दगी को तबाहो बरबाद कर देगा।

﴾6﴿ मर्द बिला शुबा औ़रत पर ह़ाकिम है। लिहाज़ा मर्द को येह ह़क़ ह़ासिल है कि बीवी पर अपना हुक्म चलाए मगर फिर मर्द के लिये येह ज़रूरी है कि अपनी बीवी से किसी ऐसे काम की फ़रमाइश न करे जो उस की त़ाक़त से बाहर हो या वोह काम उस को इन्तिहाई ना पसन्द हो। क्यूंकि अगर्चे औ़रत जबरन क़हरन वोह काम कर देगी। मगर उस के दिल में ना गवारी ज़रूर पैदा हो जाएगी जिस से मियां-बीवी की ख़ुश मिज़ाजी की ज़िन्दगी में कुछ न कुछ तल्ख़ी ज़रूर पैदा हो जाएगी। जिस का नतीजा येह होगा कि रफ़्ता रफ़्ता मियां-बीवी में इख़्तिलाफ़ पैदा हो जाएगा।

﴾7﴿ मर्द को चाहिये कि औ़रत की ग़लति़यों पर इस्लाह़ के लिये रोक टोक करता रहे । कभी सख़्ती और ग़ुस्से के अन्दाज़ में और कभी मह़ब्बत और प्यार और हंसी ख़ुशी के साथ भी बात चीत करे । जो मर्द हर वक़्त अपनी मुंछ में डन्डा बांधे फिरते हैं । मासिवाए डांट फिटकार और मार–पीट के अपनी बीवी से कभी कोई बात ही नहीं करते । तो उन की बीवियां शोहरों की मह़ब्बत से मायूस हो कर इन से नफ़रत करने लगती हैं । और जो लोग हर वक़्त बीवियों का नाज़ उठाते रहते हैं और बीवी लाख ग़लति़यां करे मगर फिर भी भीगी बिल्ली की त़रह़ उस के सामने मियाऊं मियाऊं करते रहते हैं उन लोगों की बीवियां गुस्ताख़ और शोख़ हो कर शोहरों को अपनी उंगलियों पर नचाती रहती हैं । इस लिये शोहरों को चाहिये कि ह़ज़रते शैख़ सा'दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی के इस क़ौल पर अ़मल करें कि

درشتی و نرمی بهم در به است
چو فاصد که جراح و مرهم نه است

या'नी सख़्ती और नर्मी दोनों अपने अपने मौक़ए़ पर बहुत अच्छी चीज़ हैं जैसे फ़स्द खोलने वाला ज़ख़्म भी लगाता है और मरहम भी रख देता है मत़लब येह है कि शोहर को चाहिये कि न बहुत ही कड़वा बने न बहुत ही मीठा । बल्कि सख़्ती और नर्मी मौक़अ़ मौक़अ़ से दोनों पर अ़मल करता रहे ।

﴾8﴿ शोहर को येह भी चाहिये कि सफ़र में जाते वक़्त अपनी बीवी से इन्तिहाई प्यार व मह़ब्बत के साथ हंसी ख़ुशी से मुलाक़ात कर के मकान से निकले और सफ़र से वापस हो कर कुछ न कुछ सामान बीवी के लिये ज़रूर लाए कुछ न हो तो कुछ खट्टा–मीठा ही लेता आए और बीवी से कहे कि येह ख़ास तुम्हारे लिये ही लाया हूं । शोहर की इस अदा से औ़रत का दिल बढ़ जाएगा और वोह इस ख़याल से बहुत ही ख़ुश और मगन रहेगी कि मेरे शोहर को मुझ से ऐसी मह़ब्बत है कि वोह मेरी नज़रों से

ग़ाइब रहने के बा'द भी मुझे याद रखता है और उस को मेरा ख़याल लगा रहता है ज़ाहिर है कि इस से बीवी अपने शोहर के साथ किस क़दर ज़ियादा महब्बत करने लगेगी !

《9》 औरत अगर अपने मैके से कोई चीज़ ला कर या ख़ुद बना कर पेश करे तो मर्द को चाहिये कि अगर्चे वोह चीज़ बिल्कुल ही घटिया दर्जे की हो। मगर इस पर ख़ुशी का इज़्हार करे और निहायत ही पुर तपाक और इन्तिहाई चाह के साथ इस को क़बूल करे और चन्द अल्फ़ाज ता'रीफ़ के भी औरत के सामने कह दे ताकि औरत का दिल बढ़ जाए और उस का हौसला बुलन्द हो जाए। ख़बरदार ख़बरदार औरत के पेश किये हुए तोहफ़ों को कभी हरगिज़ हरगिज़ न ठुकराए न इन को हक़ीर बताए न इन में ऐब निकाले। वरना औरत का दिल टूट जाएगा और उस का हौसला पस्त हो जाएगा। याद रखो कि टूटा हुवा शीशा तो जोड़ा जा सकता है मगर टूटा हुवा दिल बड़ी मुश्किल से जुड़ता है और जिस तरह शीशा जुड़ जाने के बा'द भी इस का दाग़ नहीं मिटता इसी तरह टूटा हुवा दिल जुड़ जाए फिर भी दिल में दाग़ धब्बा बाक़ी रह जाता है।

《10》 औरत अगर बीमार हो जाए तो शोहर का येह अख़्लाक़ी फ़रीज़ा है कि औरत की ग़म ख़्वारी और तीमारदारी में हरगिज़ हरगिज़ कोई कोताही न करे बल्कि अपनी दिलदारी व दिलजोई और भाग-दौड़ से औरत के दिल पर नक़्श बिठा दे कि मेरे शोहर को मुझ से बेहद महब्बत है। इस का नतीजा येह होगा कि औरत शोहर के इस एहसान को याद रखेगी। और वोह भी शोहर की ख़िदमत गुज़ारी में अपनी जान लड़ा देगी।

《11》 शोहर को चाहिये कि अपनी बीवी पर ए'तिमाद और भरोसा करे और घरेलू मुआमलात उस के सिपुर्द करे ताकि बीवी अपनी हैषिय्यत को पहचाने और उस का वक़ार उस में ख़ुद ए'तिमादी पैदा करे और वोह

निहायत ही दिलचस्पी और कोशिश के साथ घरेलू मुआ़मलात के इन्तिज़ाम को संभाले । रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि औ़रत अपने शोहर के घर की निगरान और मुहा़फ़िज़ है और इस मुआ़मले में औ़रत से क़ियामत में ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस पूछ–गछ फ़रमाएगा ।

बीवी पर ए'तिमाद करने का येह फ़ाइदा होगा कि वोह अपने आप को घर के इन्तिज़ामी मुआ़मलात में एक शो'बे की ज़िम्मेदार ख़याल करेगी और शोहर को बड़ी ह़द तक घरेलू बखेड़ों से नजात मिल जाएगी और सुकून व इत़्मीनान की ज़िन्दगी नसीब होगी !

﴾12﴿ औ़रत का उस के शोहर पर एक ह़क़ येह भी है कि शोहर औ़रत के बिस्तर की राज़ वाली बातों को दूसरों के सामने बयान न करे बल्कि इस को राज़ बना कर अपने दिल ही में रखे क्यूंकि ह़दीष शरीफ़ में आया है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि ख़ुदा के नज़्दीक बद तरीन शख़्स वोह है जो अपनी बीवी के पास जाए । फिर उस के पर्दे की बातों को लोगों पर ज़ाहिर करे और अपनी बीवी को दूसरों की निगाहों में रुसवा करे । (صحیح مسلم، کتاب النکاح۔۲۱۔باب تحریم افشاء سر المرأۃ،رقم ۱۴۳۷،ص۷۵۳)

﴾13﴿ शोहर को चाहिये कि बीवी के सामने आए तो मैले कुचैले गन्दे कपड़ों में न आए बल्कि बदन और लिबास व बिस्तर वग़ैरा की सफ़ाई सुथराई का ख़ास त़ौर पर ख़याल रखे क्यूंकि शोहर जिस त़रह़ येह चाहता है कि उस की बीवी बनाव सिंघार के साथ रहे इसी त़रह़ औ़रत भी येह चाहती है कि मेरा शोहर मैला कुचैला न रहे । लिहाज़ा मियां–बीवी दोनों को हमेशा एक दूसरे के जज़्बात व एह़सासात का लिह़ाज़ रखना ज़रूरी है । रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इस बात से सख़्त नफ़रत थी कि आदमी मैला कुचेला बना रहे और उस के बाल उलझे रहें । इस ह़दीष पर मियां–बीवी दोनों को अ़मल करना चाहिये ।

﴾14﴿ औ़रत का उस के शोहर पर येह भी ह़क़ है कि शोहर औ़रत की नफ़ासत और बनाव सिंघार का सामान या'नी साबुन, तेल कंघी, मेहंदी, ख़ुश्बू वग़ैरा फ़राहम करता रहे। ताकि औ़रत अपने आप को साफ़ सुथरी रख सके। और बनाव सिंघार के साथ रहे।

﴾15﴿ शोहर को चाहिये कि मा'मूली मा'मूली बे बुन्याद बातों पर अपनी बीवी की त़रफ़ से बद गुमानी न करे बल्कि इस मुआ़मले में हमेशा एह़तियात़ और समझदारी से काम ले। याद रखो कि मा'मूली शुबहात की बिना पर बीवी के ऊपर इल्ज़ाम लगाना या बद गुमानी करना बहुत बड़ा गुनाह है।

ह़दीष शरीफ़ में है कि एक देहाती ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबार में ह़ाज़िर हो कर कहा कि मेरी बीवी के शिकम से एक बच्चा पैदा हुवा है जो काला है और मेरा हम शक्ल नहीं है। इस लिये मेरा ख़याल है कि येह बच्चा मेरा नहीं है। देहाती की बात सुन कर हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि क्या तेरे पास कुछ ऊंट हैं? उस ने अ़र्ज़ किया कि मेरे पास बहुत ज़ियादा ऊंट हैं। आप ने फ़रमाया कि तुम्हारे ऊंट किस रंग के हैं? उस ने कहा सुर्ख रंग के हैं। आप ने फ़रमाया कि क्या इन में कुछ ख़ाकी रंग के भी है या नहीं? उस ने कहा : जी हां, कुछ ऊंट ख़ाकी रंग के भी हैं। आप ने फ़रमाया कि तुम बताओ कि सुर्ख़ ऊंटों की नस्ल में ख़ाकी रंग के ऊंट कैसे और कहां से पैदा हो गए? देहाती ने जवाब दिया कि मेरे सुर्ख़ रंग के ऊंटों के बाप दादाओं में कोई ख़ाकी रंग का ऊंट रहा होगा। उस की रग ने इस को अपने रंग में खींच लिया होगा। इस लिये सुर्ख़ ऊंटों का बच्चा ख़ाकी रंग का हो गया। येह सुन कर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि मुमकिन है तुम्हारे बाप दादाओं में भी कोई काले रंग का हुवा हो। और उस की रग ने तुम्हारे बच्चे को खींच कर अपने रंग का बना लिया हो। और येह बच्चा उस का हम शक्ल हो गया।

(صحیح البخاری، کتاب الطلاق، باب اذا عرض بنفی الولد، رقم ٥٣٠٥،ج٣،ص٤٩٧)

इस ह़दीष से साफ़ ज़ाहिर है कि मह़ज़ इतनी सी बात पर कि बच्चा अपने बाप का हम शक्ल नहीं है हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस देहाती को इस की इजाज़त नहीं दी कि वोह अपने इस बच्चे के बारे में येह कह सके कि येह मेरा बच्चा नहीं है। लिहाज़ा इस ह़दीष से षाबित हुवा कि मह़ज़ शुबे की बिना पर अपनी बीवी के ऊपर इलज़ाम लगा देना जाइज़ नहीं है बल्कि बहुत बड़ा गुनाह है।

﴾16﴿ अगर मियां–बीवी में कोई इख़्तिलाफ़ या कशीदगी पैदा हो जाए तो शोहर पर लाज़िम है कि त़लाक़ देने में हरगिज़ हरगिज़ जल्दी न करे। बल्कि अपने ग़ुस्से को ज़ब्त़ करे और ग़ुस्सा उतर जाने के बा'द ठंडे दिमाग़ से सोच समझ कर और लोगों से मश्वरा ले कर येह ग़ौर करे क्या मियां–बीवी में नबाह की कोई सूरत हो सकती है या नहीं ? अगर बनाओ और नबाह की कोई शक्ल निकल आए तो हरगिज़ हरगिज़ त़लाक़ न दे। क्यूंकि त़लाक़ कोई अच्छी चीज़ नहीं है। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि ह़लाल चीज़ों में सब से ज़ियादा ख़ुदा के नज़दीक ना पसन्दीदा चीज़ त़लाक़ है।

(سنن ابی داؤد، کتاب الطلاق، باب کراھیۃ الطلاق، رقم ۲۱۷۸، ج۲، ص۳۷۰)

अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता ऐसी सख़्त ज़रूरत पेश आ जाए कि त़लाक़ देने के सिवा कोई चारा न रहे तो ऐसी सूरत में त़लाक़ देने की इजाज़त है। वरना त़लाक़ कोई अच्छी चीज़ नहीं है !

बा'ज़ जाहिल ज़रा ज़रा सी बातों पर अपनी बीवी को त़लाक़ दे देते हैं और फिर पछताते हैं और आ़लिमों के पास झूट बोल बोल कर मस्अला पूछते फिरते हैं, कभी कहते हैं कि ग़ुस्से में त़लाक़ दी थी, कभी कहते हैं कि त़लाक़ देने की निय्यत नहीं थी, ग़ुस्से में बिला इख़्तियार त़लाक़ का लफ़्ज़ मुंह से निकल गया, कभी कहते हैं कि औ़रत माहवारी

की ह़ालत में थी, कभी कहते हैं कि मैं ने त़लाक़ दी मगर बीवी ने त़लाक़ ली नहीं। हालांकि इन गंवारों को मा'लूम होना चाहिये कि इन सब सूरत में त़लाक़ पड़ जाती है और बा'ज़ तो ऐसे बद नसीब हैं कि तीन त़लाक़ दे कर झूट बोलते हैं कि मैं ने एक ही बार कहा था और येह कह कर बीवी को रख लेते हैं और उ़म्र भर ज़िनाकारी के गुनाह में पड़े रहते हैं। इन ज़ालिमों को इस का एह़सास ही नहीं होता कि तीन त़लाक़ के बा'द औ़रत बीवी नहीं रह जाती। बल्कि वोह एक ऐसी अजनबी औ़रत हो जाती है कि बिग़ैर ह़लाला कराए उस से दोबारा निकाह़ नहीं हो सकता। खुदावन्दे करीम इन लोगों को हिदायत दे। (आमीन)

﴾17﴿ अगर किसी के पास दो बीवियां या इस से ज़ियादा हों तो उस पर फ़र्ज़ है कि तमाम बीवियों के दरमियान अ़द्ल और बराबरी का सुलूक और बरताव करे। खाने, पीने, मकान, सामान, रोशनी, बनाव सिंघार की चीज़ों ग़रज़ तमाम मुआ़मलात में बराबरी बरते। इसी त़रह़ हर बीवी के पास रात गुज़ारने की बारी मुक़र्रर करने में भी बराबरी का ख़याल मल्हूज़ रखे। याद रखो ! कि अगर किसी ने अपनी तमाम बीवियों के साथ यक्सां और बराबर सुलूक नहीं किया तो वोह हुक़ुकुल इ़बाद में गिरिफ़्तार और अ़ज़ाबे जहन्नम का ह़क़दार होगा।

ह़दीष शरीफ़ में है कि "जिस शख़्स के पास दो बीवियां हों और उस ने इन के दरमियान अ़द्ल और बराबरी का बरताव नहीं किया तो वोह क़ियामत के दिन मैदाने महशर में इस ह़ालत में उठाया जाएगा कि उस का आधा बदन मफ़्लूज (फ़ालिज लगा हुवा) होगा।"

(جامع الترمذی، کتاب النکاح، باب ما جاء فی التسویۃ بین الضرائر، رقم ۱۱٤٤، ج۲، ص۳۷۵)

﴾18﴿ अगर बीवी के किसी क़ौलो फ़े'ल, बदख़ूई, बद अख़्लाक़ी, सख़्त मिज़ाजी, ज़बान दराज़ी वग़ैरा से शोहर को कभी कभी कुछ अज़िय्यत और

तक्लीफ़ पहुंच जाए तो शोहर को चाहिये कि सब्रो तहम्मुल और बरदाश्त से काम ले। क्यूंकि औ़रतों का टेढ़ापन एक फ़ित्री चीज़ है।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि औ़रत ह़ज़रते आदम عَلَیْهِ السَّلَام की सब से टेढ़ी पस्ली से पैदा की गई अगर कोई शख़्स टेढ़ी पस्ली को सीधी करने की कोशिश करेगा तो पस्ली की हड्डी टूट जाएगी मगर वोह कभी सीधी नहीं हो सकेगी। ठीक इसी त़रह़ अगर कोई शख़्स अपनी बीवी को बिल्कुल ही सीधी करने की कोशिश करेगा तो येह टूट जाएगी या'नी त़लाक़ की नौबत आ जाएगी। लिहाज़ा अगर औ़रत से फ़ाइदा उठाना है तो उस के टेढ़ेपन के बा वुजूद उस से फ़ाइदा उठा लो येह बिल्कुल सीधी कभी हो ही नहीं सकती। जिस त़रह़ टेढ़ी पस्ली की हड्डी कभी सीधी नहीं हो सकती।

(صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب الوصاۃ بالنساء، رقم ۵۱۸۶، ج۳، ص۴۵۷)

《19》 शोहर को चाहिये की औ़रत के अख़राजात के बारे में बहुत ज़ियादा बख़ीली और कंजूसी न करे न ह़द से ज़ियादा फ़ुज़ूल ख़र्ची करे। अपनी आमदनी को देख कर बीवी के अख़राजात मुक़र्रर करे। न अपनी त़ाक़त से बहुत कम, न अपनी त़ाक़त से बहुत ज़ियादा।

《20》 शोहर को चाहिये कि अपनी बीवी को घर की चार दीवारी के अन्दर क़ैद कर के न रखे बल्कि कभी कभी वालिदैन और रिश्तेदारों के यहां आने जाने की इजाज़त देता रहे और उस की सहेलियों और रिश्तेदारी वाली औ़रतों और पड़ोसनों से भी मिलने जुलने पर पाबन्दी न लगाए। बशर्ते कि इन औ़रतों के मेल जोल से किसी फ़ितना व फ़साद का अन्देशा न हो और अगर उन औ़रतों के मैल मिलाप से बीवी के बद चलन या बद अख़्लाक़ हो जाने का ख़त़रा हो तो उन औ़रतों से मेल जोल पर पाबन्दी लगा देना ज़रूरी है और येह शोहर का ह़क़ है।

मुसलमान औ़रतों का पर्दा :- **अल्लाह** عزّ وجلّ व रसूल صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم ने इन्सानी फ़ित़रत के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ बदकारी के दरवाज़ों को बन्द करने के लिये औ़रतों को पर्दे में रखने का हुक्म दिया है। पर्दे की फ़र्ज़िय्यत और इस की अहम्मिय्यत क़ुरआने मजीद और ह़दीषों से षाबित है। चुनान्चे क़ुरआने मजीद में **अल्लाह** तआ़ला ने औ़रतों पर पर्दा फ़र्ज़ फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया कि,

وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُوْلٰى .(پ۲۲،الاحزاب:۳۳)

“तुम अपने घरों के अन्दर रहो और बे पर्दा हो कर बाहर न निकलो जिस त़रह़ पहले ज़माने के दौरे जाहिलिय्यत में औ़रतें बे पर्दा बाहर निकल कर घूमती फिरती थीं।”

इस आयत में **अल्लाह** तआ़ला ने साफ़ साफ़ औ़रतों पर पर्दा फ़र्ज़ कर के येह हुक्म दिया है कि वोह घरों के अन्दर रहा करें और ज़मानए जाहिलिय्यत की बे ह़याई व बे पर्दगी की रस्म को छोड़ दें। ज़मानए जाहिलिय्यत में कुफ़्फ़ारे अ़रब का येह दस्तूर था कि इन की औ़रतें ख़ूब बन संवर कर बे पर्दा निकलती थीं। और बाज़ारों और मेलों में मर्दों के दोश बदोश घूमती फिरती थीं। इस्लाम ने इस बे पर्दगी की बे ह़याई से रोका और हुक्म दिया कि औ़रतें घरों के अन्दर रहें और बिला ज़रूरत बाहर न निकलें और अगर किसी ज़रूरत से इन्हें घर से बाहर निकलना ही पड़े तो ज़मानए जाहिलिय्यत के मुत़ाबिक़ बनाव सिंघार कर के बे पर्दा न निकलें। बल्कि पर्दे के साथ बाहर निकलें। ह़दीष शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم ने फ़रमाया कि “औ़रत पर्दे में रहने की चीज़ है जिस वक़्त वोह बे पर्दा हो कर बाहर निकलती है तो शैत़ान उस को झांक झांक कर देखता है।”

(الجامع الترمذی، کتاب الرضاع، باب ۱۸، رقم ۱۱۷۶، ج۲، ص۳۹۲)

और एक ह़दीष में है कि ''बनाव सिंघार कर के इतरा इतरा कर चलने वाली औ़रत की मिषाल उस तारीकी की है जिस में बिल्कुल रोशनी ही न हो।''

(جامع الترمذی ، کتاب الرضاع ، باب ماجاء فی کراھیة خروج النساء فی الزینة ، رقم ۱۱۷۰ ، ج۲،ص۳۸۸)

इसी त़रह़ ह़ज़रते अबू मूसा अशअ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि ''ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया जो औ़रत ख़ुश्बू लगा कर मर्दों के पास से गुज़रे ताकि लोग उस की ख़ुश्बू सूंघें वोह औ़रत बद चलन है।'' (سنن النسائی، کتاب الزینة، باب مایکرہ للنساء من الطیب، ج۸،ص۱۵۳)

प्यारी बहनो ! आज कल जो औ़रतें बनाव सिंघार और उ़रयां लिबास पहन कर ख़ुश्बू लगाए बिला पर्दा बाज़ारों में घूमती हैं और सीनेमा, थियेटरों में जाती हैं वोह इन ह़दीषों की रोशनी में अपने बारे में ख़ुद ही फ़ैसला कर लें कि वोह कौन हैं ? और कितनी बड़ी गुनाहगार हैं ?

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बन्दियो ! तुम ख़ुदा के फ़ज़्ल से मुसलमान हो। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने तुम्हें ईमान की दौलत से माला माल किया है। तुम्हारे ईमान का तक़ाज़ा येह है कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अह़काम को सुनों और इन पर अ़मल करो। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने तुम्हें पर्दे में रहने का हुक्म दिया है। इस लिये तुम को लाज़िम है कि तुम पर्दे में रहा करो और अपने शोहर और अपने बाप दादाओं की इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत और उन के नामूस को बरबाद न करो। येह दुन्या की चन्द रोज़ा ज़िन्दगी आनी फ़ानी है। याद रखो ! एक दिन मरना है और फिर क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को मुंह दिखाना है। क़ब्र और जहन्नम के अ़ज़ाबों को याद करो ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत बीबी फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا और उम्मत की माओं या'नी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस बीवियों के नक़्शे क़दम पर चल कर अपनी दुन्या व आख़िरत को संवारो। और ख़ुदा के लिये यहूदो नसारा और मुशरिकीन की औ़रतों के त़रीक़ों पर चलना छोड़ दो।

पर्दा इ़ज़्ज़त है बे इ़ज़्ज़ती नहीं :- आज कल बा'ज़ मुलह़िद क़िस्म के दुश्मनाने इस्लाम मुसलमान औ़रतों को येह कह कर बहकाया करते हैं कि इस्लाम ने औ़रतों को पर्दे में रख कर औ़रतों की बे इ़ज़्ज़ती की है इस लिये औ़रतों को पर्दों से निकल कर हर मैदान में मर्दों के दोश बदोश खड़ी हो जाना चाहिये। मगर प्यारी बहनो ! ख़ूब अच्छी त़रह़ समझ लो कि इन मर्दों का येह प्रोपेगन्डा इतना गन्दा और घिनावना फ़रैब और धोका है कि शायद शैत़ान को भी न सूझा होगा।

ऐ **अल्लाह** عزوجل की बन्दियो ! तुम्हीं इन्साफ़ करो कि तमाम किताबें खुली पड़ी रहती हैं और बे पर्दा रहती हैं मगर कु़रआन शरीफ़ पर हमेशा ग़िलाफ़ चढ़ा कर इस को पर्दे में रखा जाता है तो बताओ क्या कु़रआने मजीद पर ग़िलाफ़ चढ़ाना येह कु़रआन की इ़ज़्ज़त है या बे इ़ज़्ज़ती ? इसी त़रह़ तमाम दुन्या की मस्जिदें नंगी और बे पर्दा रखी गई हैं मगर ख़ानए का'बा पर ग़िलाफ़ चढ़ा कर इस को पर्दे में रखा गया है तो बताओ क्या का'बए मुक़द्दसा पर ग़िलाफ़ चढ़ाना इस की इ़ज़्ज़त है या बे इ़ज़्ज़ती ? तमाम दुन्या को मा'लूम है कि कु़रआने मजीद और का'बए मुअ़ज़्ज़मा पर ग़िलाफ़ चढ़ा कर इन दोनों की इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत का ए'लान किया गया है कि तमाम किताबों में सब से अफ़्ज़लो आ'ला कु़रआन है। और तमाम मस्जिदों में अफ़्ज़लो आ'ला का'बए मुअ़ज़्ज़मा है इसी त़रह़ मुसलमान औ़रतों को पर्दे का हुक्म दे कर **अल्लाह** عزوجل व रसूल صلى الله تعالى عليه و اله وسلم की त़रफ़ से इस बात का ए'लान किया गया है कि अक़्वामे आ़लम की तमाम औ़रतों में मुसलमान औ़रत तमाम औ़रतों से अफ़्ज़लो आ'ला है।

प्यारी बहनो ! अब तुम्हीं को इस का फ़ैसला करना है कि इस्लाम ने मुसलमान औ़रतों को पर्दों में रख कर इन की इ़ज़्ज़त बढ़ाई है या इन की बे इ़ज़्ज़ती की है ?

किन लोगों से पर्दा फ़र्ज़ है ? :- हर ग़ैर मह़रम मर्द ख़्वाह अजनबी हो ख़्वाह रिश्तेदार बाहर रहता हो या घर के अन्दर हर एक से पर्दा करना औ़रत पर फ़र्ज़ है। हां, उन मर्दों से जो औ़रत के मह़रम हैं पर्दा करना औ़रत पर फ़र्ज़ नहीं। **मह़रम** वोह मर्द हैं जिन से औ़रत का निकाह़ कभी भी और किसी सूरत में भी जाइज़ नहीं हो सकता। मषलन बाप, दादा, चचा, मामूं, नाना, भाई, भतीजा, भानजा, पोता, नवासा, ख़ुसरान लोगों से पर्दा करना ज़रूरी नहीं है। ग़ैर मह़रम वोह मर्द हैं जिन से औ़रत का निकाह़ हो सकता है जैसे चचाज़ाद भाई, मामूंज़ाद भाई, फूफीज़ाद भाई, ख़ालाज़ाद भाई, जेठ और देवर वग़ैरा येह सब औ़रत के ग़ैर मह़रम हैं। और इन सब लोगों से पर्दा करना औ़रत पर फ़र्ज़ है। हमारे यहां येह बहुत ही ग़लत़ ख़िलाफ़े शरीअ़त रवाज है कि औ़रतें अपने देवरों से बिल्कुल पर्दा नहीं करतीं। बल्कि देवरों से हंसी मज़ाक़ और इन के साथ हाथा-पाई तक करने को बुरा नहीं समझतीं। ह़ालांकि देवर औ़रत का मह़रम नहीं है। इस लिये दूसरे तमाम ग़ैर मह़रम मर्दों की त़रह़ औ़रतों को देवरों से पर्दा करना फ़र्ज़ है। बल्कि ह़दीष शरीफ़ में तो यहां तक देवरों से पर्दे की ताकीद है कि "اَلْحَمْوُ الْمَوْتُ" या'नी देवर औ़रत के ह़क़ में ऐसा ही ख़त़रनाक है जैसे मौत। और औ़रत को देवर से इसी त़रह़ दूर भागना चाहिये जिस त़रह़ लोग मौत से भागते हैं।

(صحیح البخاری، کتاب النکاح ـ ۱۱۲ ـ باب لایخلون رجل بمرأة الخ رقم ۵۲۳۲، ج۳، ص ۴۷۲)

बहर ह़ाल ख़ूब अच्छी त़रह़ समझ लो कि ग़ैर मह़रम से पर्दा फ़र्ज़ है, चाहे वोह अजनबी मर्द हो या रिश्तेदार, देवर, जेठ भी ग़ैर मह़रम हैं इस लिये इन लोगों से भी पर्दा करना ज़रूरी है इसी त़रह़ कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन की औ़रतों से भी मुसलमान औ़रतों को पर्दा करना लाज़िम है। और उन को घरों में आने जाने से रोक देना चाहिये।

मस्अला :- औ़रत का पीर भी औ़रत का ग़ैर मह़रम है इस लिये मुरीदा को अपने पीर से भी पर्दा करना फ़र्ज़ है। और पीर के लिये भी येह जाइज़ नहीं कि अपनी मुरीदा को बे पर्दा देखे या तन्हाई में उस के पास बैठे। बल्कि पीर के लिये येह भी जाइज़ नहीं कि औ़रत का हाथ पकड़ कर उस को बैअ़त करे। जैसा कि ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने औ़रतों की बैअ़त के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि ह़ुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ से औ़रतों का इम्तिह़ान फ़रमाते थे जो औ़रत इस आयत का इक़रार कर लेती थी तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस से फ़रमाते थे कि मैं ने तुझ से येह बैअ़त ले ली। येह बैअ़त ब ज़रीअ़ए कलाम होती थी। ख़ुदा की क़सम कभी भी ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का हाथ किसी औ़रत के हाथ से बैअ़त के वक़्त नहीं लगा।

(صحیح البخاری ، کتاب المغازی، باب غزوۃ الحدیبیۃ،رقم ۴۱۸۲، ج۳،ص۷۵)

बेहतरीन शोहर की शान :- शोहरों के बारे में ऊपर लिखी हुई हिदायात की रोशनी में येह सुवाल पैदा होता है कि बेहतरीन शोहर कौन है ? तो इस सुवाल का जवाब येह है कि

बेहतरीन शोहर वोह है !

﴾1﴿ जो अपनी बीवी के साथ नर्मी, ख़ुश ख़ुल्क़ी और ह़ुस्ने सुलूक के साथ पेश आए !

﴾2﴿ जो अपनी बीवी के ह़ुक़ूक़ को अदा करने में किसी क़िस्म की ग़फ़्लत और कोताही न करे !

﴾3﴿ जो अपनी बीवी का इस त़रह़ हो कर रहे कि किसी अजनबी औ़रत पर निगाह न डाले !

﴾4﴿ जो अपनी बीवी को अपने ऐ़शो आराम में बराबर का शरीक समझे।

﴾5﴿ जो अपनी बीवी पर कभी ज़ुल्म और किसी क़िस्म की बेजा ज़ियादती न करे।

﴾6﴿ जो अपनी बीवी की तुन्द मिज़ाजी और बद अख़्लाक़ी पर सब्र करे।

﴾7﴿ जो अपनी बीवी की ख़ूबियों पर नज़र रखे और मा'मूली ग़लत़ियों को नज़र अन्दाज़ करे।

《8》 जो अपनी बीवी की मुसीबतों, बीमारियों और रंजो ग़म में दिलजोई, तीमारदारी और वफ़ादारी का षुबूत दे ।

《9》 जो अपनी बीवी को पर्दे में रख कर इ़ज़्ज़त व आबरू की हि़फ़ाज़त करे ।

《10》 जो अपनी बीवी को दीनदारी की ताकीद करता रहे और शरीअ़त की राह पर चलाए ।

《11》 जो अपनी बीवी और अहलो इ़याल को कमा कमा कर रिज़्क़े ह़लाल खिलाए ।

《12》 जो अपनी बीवी के मैके वालों और उस की सहेलियों के साथ भी अच्छा सुलूक करे ।

《13》 जो अपनी बीवी को ज़िल्लत व रुसवाई से बचाए रखे ।

《14》 जो अपनी बीवी के अख़राजात में बख़ीली और कन्जूसी न करे ।

《15》 जो अपनी बीवी पर इस त़रह़ कन्ट्रोल रखे कि वोह किसी बुराई की त़रफ़ रुख़ भी न कर सके ।

《4》 औ़रत मां बन जाने के बा'द

औ़रत जब साह़िबे अवलाद और बच्चों की मां बन जाए तो इस पर मज़ीद ज़िम्मेदारियों का बोझ बढ़ जाता है क्यूंकि शोहर और वालिदैन वग़ैरा के हुक़ूक़ के इ़लावा बच्चों के हुक़ूक़ भी औ़रत के सर पर सुवार हो जाते हैं जिन को अदा करना हर मां का फ़र्ज़े मन्सबी है । जो मां अपने बच्चों का ह़क़ अदा न करेगी यक़ीनन वोह शरीअ़त के नज़दीक बहुत बड़ी गुनाहगार, और समाज की नज़रों में ज़लीलो ख़्वार ठहरेगी ।

बच्चों के हुक़ूक़

《1》 हर मां पर लाज़िम है कि अपने बच्चों से प्यार व मह़ब्बत करे और हर मुआ़मले में उन के साथ मुशफ़िक़ाना बरताव करे और उन की दिलजोई व दिल बस्तगी में लगी रहे और उन की परवरिश और तर्बिय्यत में पूरी पूरी कोशिश करे ।

《2》 अगर मां के दूध में कोई ख़राबी न हो तो मां अपना दूध अपने बच्चों को पिलाए कि दूध का बच्चों पर बड़ा अषर पड़ता है।

《3》 बच्चों की सफ़ाई सुथराई। इन की तन्दुरुस्ती व सलामती का ख़ास तौ़र पर ध्यान रखे।

《4》 बच्चों को हर क़िस्म के रंजो ग़म और तक्लीफ़ों से बचाती रहे।

《5》 बे ज़बान बच्चे अपनी ज़रूरियात बता नहीं सकते। इस लिये मां का फ़र्ज़ है कि बच्चों के इशारात को समझ कर उन की ज़रूरियात को पूरी करती रहे।

《6》 बा'ज़ माएं चिल्ला कर या बिल्ली की बोली बोल कर या सिपाही का नाम ले कर, या कोई धमाके कर के छोटे बच्चों को डराया करती हैं। येह बहुत ही बुरी बातें हैं। बार बार ऐसा करने से बच्चों का दिल कमज़ोर हो जाता है और वोह बड़े होने के बा'द डरपोक हो जाया करते हैं।

《7》 बच्चे जब कुछ बोलने लगे तो मां को चाहिये कि उन्हें बार बार अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नाम सुनाए। उन के सामने बार बार कलिमा पढ़े। यहां तक कि वोह कलिमा पढ़ना सीख जाएं।

《8》 जब बच्चे बच्चियां ता'लीम के क़ाबिल हो जाएं तो सब से पहले उन को कुरआन शरीफ़ और दीनियात की ता'लीम दिलाएं।

《9》 बच्चों को इस्लामी आदाब व अख़्लाक़ और दीनो मज़हब की बातें सिखाएं।

《10》 अच्छी बातों की रग़बत दिलाएं और बुरी बातों से नफ़रत दिलाएं।

《11》 ता'लीमो तर्बिय्यत पर ख़ास तौ़र पर तवज्जोह करें और तर्बिय्यत का ध्यान रखें। क्यूंकि बच्चे सादा वरक़ के मानिन्द होते हैं। सादा काग़ज़ पर जो नक़्शो निगार बनाए जाएं वोह बन जाते हैं और बच्चों बच्चियों का सब से पहला मद्रसा मां की गोद है। इस लिये मां की

ता'लीमो तर्बिय्यत का बच्चों पर बहुत गहरा अषर पड़ता है। लिहाज़ा हर मां का फ़र्ज़े मन्सबी है कि बच्चों को इस्लामी तहज़ीब व तमद्दुन के सांचे में ढाल कर उन की बेहतरीन तर्बिय्यत करे। अगर मां अपने इस हक़ को न अदा करेगी तो गुनाहगार होगी !

﴾12﴿ जब बच्चा या बच्ची सात बरस के हो जाएं तो उन को तहारत और वुज़ू व गुस्ल का तरीक़ा सिखाएं और नमाज़ की ता'लीम दे कर उन को नमाज़ी बनाएं और पाकी व नापाकी और हलाल व हराम और फ़र्ज़ व सुन्नत वगै़रा के मसाइल उन को बताएं।

﴾13﴿ ख़राब लड़कों और लड़कियों की सोहबत, उन के साथ खेलने से बच्चों को रोके और खेल तमाशों के देखने से, नाच गाने, सिनेमा थियेटर वगै़रा लग़्विय्यात से बच्चों और बच्चियों को ख़ास तौर पर बचाएं।

﴾14﴿ हर मां-बाप का फ़र्ज़ है कि बच्चों और बच्चियों को हर बुरे काम से बचाए और उन को अच्छे कामों की रग़बत दिलाए ताकि बच्चें और बच्चियां इस्लामी आदाब व अख़्लाक़ के पाबन्द और ईमानदारी व दीनदारी के जोहर से आरास्ता हो जाए और सहीह मा'नों में मुसलमान बन कर इस्लामी ज़िन्दगी बसर करे।

﴾15﴿ येह भी बच्चों का हक़ है कि उन की पैदाइश के सातवें दिन मां-बाप उन का सर मुंडा कर बालों के वज़्न के बराबर चांदी ख़ैरात करें और बच्चे का कोई अच्छा नाम रखें। ख़बरदार ख़बरदार हरगिज़ हरगिज़ बच्चों बच्चियों का कोई बुरा नाम न रखें।

﴾16﴿ जब बच्चा पैदा हो तो फ़ौरन ही उस के दाएं कान में अज़ान और बाएं कान में इक़ामत पढ़ें ताकि बच्चा शैतान के ख़लल से महफ़ूज़ रहे और छूहारा वगै़रा कोई मीठी चीज़ चबा कर उस के मुंह में डाल दें ताकि बच्चा शीरीं ज़बान और बा अख़्लाक़ हो।

﴾17﴿ नया मेवा, नया फल पहले बच्चों को खिलाएं फिर ख़ुद खाएं कि बच्चे भी ताज़ा फल हैं। नए फल को नया फल देना अच्छा है।

﴾18﴿ चन्द बच्चे बच्चियां हों तो जो चीज़ें दें सब को यक्सां और बराबर दें। हरगिज़ कमी बेशी न करें। वरना बच्चों की ह़क़ तलफ़ी होगी। बच्चियों को हर चीज़ बच्चों के बराबर ही दें। बल्कि बच्चियों की दिलजोई व दिलदारी का ख़ास त़ौर पर ख़याल रखें। क्यूंकि बच्चियों का दिल बहुत नाज़ुक होता है।

﴾19﴿ लड़कियों को लिबास और ज़ेवर से आरास्ता और बनाव सिंघार के साथ रखें ताकि लोग रग़बत के साथ निकाह़ का पैग़ाम दें। हां इस का ख़याल रखें कि वोह ज़ेवरात पहन कर बाहर न निकलें कि चोरों डाकूओं से जान का ख़त़रा है। बच्चियों को बाला ख़ानों पर न रहने दें कि इस में बे ह़याई का ख़त़रा है।

﴾20﴿ ह़त्तल इमकान बारह बरस की उ़म्र में बच्चियों की शादी कर दें मगर ख़बरदार हरगिज़ हरगिज़ किसी बद दीन या बद मज़हब मषलन राफ़ज़ी, ख़ारजी, वहाबी, ग़ैर मुक़ल्लिद वग़ैरा के यहां लड़कों या लड़कियों की शादी न करें वरना अवलाद की बहुत बड़ी ह़क़ तलफ़ी होगी और मां-बाप के सरों पर बहुत बड़े गुनाह का बोझ होगा और वोह अ़ज़ाबे जहन्नम के ह़क़दार होंगे। इसी त़रह़ फ़ासिक़ों, फ़ाजिरों, शराबियों, बदकारों, ह़राम की कमाई खाने वालों, सूद ख़ोरों और ना जाइज़ काम धंदा करने वालों के यहां भी लड़कों और लड़कियों की शादियां न करें और रिश्ता तलाश करने में सब से पहले और सब से ज़ियादा मज़हबे अहले सुन्नत और दीनदार होने का ख़ास त़ौर पर ध्यान रखें।

अवलाद की परवरिश करने का त़रीक़ा :- हर मां-बाप को येह जान लेना चाहिये कि बचपन में जो अच्छी बुरी आ़दतें बच्चों में पुख़्ता हो जाती हैं वोह उ़म्र भर नहीं छूटती। इस लिये मां-बाप को लाज़िम है कि

बचपन ही में अच्छी आ़दतें सिखाएं और बुरी आ़दतों से बचाएं बा'ज़ लोग येह कह कर अभी बच्चा है। बड़ा होगा तो ठीक हो जाएगा। बच्चों को शरारतों और ग़लत़ आ़दतों से नहीं रोकते। वोह लोग दर ह़क़ीक़त बच्चों के मुस्तक़्बिल को ख़राब करते हैं और बड़े होने के बा'द बच्चों के बुरे अख़्लाक़ और गन्दी आ़दतों पर रोते और मातम करते हैं इस लिये निहायत ज़रूरी है कि बचपन ही में बच्चों की कोई शरारत या बुरी आ़दत देखें तो इस पर रोक टोक करते रहें बल्कि सख़्ती के साथ डांटते फिटकारते रहें। और त़रह़ त़रह़ से बुरी आ़दतों की बुराइयों को बच्चों के सामने ज़ाहिर कर के बच्चों को इन ख़राब आ़दतों से नफ़रत दिलाते रहें और बच्चों की ख़ूबियों और अच्छी अच्छी आ़दतों पर ख़ूब ख़ूब शाबाश कह कर इन का मन बढ़ाएं बल्कि कुछ इन्आ़म दे कर इन का ह़ौसला बुलन्द करें। इस से क़ब्ल बच्चों के ह़ुक़ूक़ के बयान में बच्चों के लिये बहुत सी मुफ़ीद बातें हम लिख चुके हैं अब इस से कुछ ज़ाइद बातें भी हम लिखते हैं। मां–बाप पर लाज़िम है कि इन बातों का ख़ास त़ौर पर ध्यान रखें। ताकि बच्चों और बच्चियों का मुस्तक़्बिल रोशन और शानदार बन जाए।

﴾1﴿ बच्चों को दूध पिलाने और खाना खिलाने के लिये वक़्त मुक़र्रर कर लो। जो औ़रतें हर वक़्त बच्चों को दूध पिलाती या जल्दी जल्दी बच्चों को दिन रात में बार बार खाना खिलाती रहती हैं उन के बच्चों का हाज़िमा ख़राब और मे'दा कमज़ोर हो जाया करता है और बच्चे **क़ै दस्त** की बीमारियों में मुब्तला हो कर कमज़ोर हो जाया करते हैं।

﴾2﴿ बच्चों को साफ़ सुथरा रखो मगर बहुत ज़ियादा बनाव सिंघार मत करो। कि इस से अकषर नज़र लग जाया करती है।

﴾3﴿ बच्चों को हर दम गोद में न लिये रहो बल्कि जब तक वोह बैठने के क़ाबिल न हों पालने में ज़ियादा तर सुलाए रखो। और जब वोह बैठने के

क़ाबिल हों तो उन को रफ़्ता रफ़्ता मस्नदों और तकियों का सहारा दे कर बिठाने की कोशिश करो। हर दम गोद में लिये रहने से बच्चे कमज़ोर हो जाया करते हैं। और वोह गोद में रहने की आ़दत पड़ जाने से बहुत देर में चलते और बैठते हैं।

﴾4﴿ बा'ज़ औ़रतें अपने बच्चों को मिठाई कषरत से खिलाया करती हैं। येह सख़्त मुज़िर है। मिठाई खाने से दांत ख़राब और मे'दा कमज़ोर, और ब कषरत सफ़रावी बीमारियां और फोड़े फुन्सी का रोग बच्चों को लग जाता है। मिठाइयों की जगह ग्लूकोज़ के बिस्किट बच्चों के लिये अच्छी गि़ज़ा है।

﴾5﴿ बच्चों के सामने ज़ियादा खाने की बुराई बयान करते रहो और हर वक़्त खाते पीते रहने से भी बच्चों को नफ़रत दिलाते रहो। मषलन यूं कहा करो कि जो ज़ियादा खाता है वोह जंगली और बद्दू होता है और हर वक़्त खाते पीते रहना येह बन्दरों की आ़दत हैं।

﴾6﴿ बच्चों की हर ज़िद पूरी मत करो कि इस से बच्चों का मिज़ाज बिगड़ जाता है और वोह ज़िद्दी हो जाते हैं और येह आ़दत उ़म्र भर नहीं छूटती।

﴾7﴿ बच्चों के हाथ से फ़क़ीरों को खाना और पैसा दिलाया करो। इसी त़रह़ खाने पीने की चीज़ें बच्चों के हाथ से उस के भाई बहनों को या दूसरे बच्चों को दिलाया करो ताकि सख़ावत की आ़दत हो जाए और खुद गरज़ी और नफ़्स परवरी की आ़दत पैदा न हो और बच्चा कन्जूस न हो जाए।

﴾8﴿ चिल्ला कर बोलने और जवाब देने से हमेशा बच्चों को रोको। ख़ास कर बच्चियों को तो ख़ूब ख़ूब डांट फिटकार करो। वरना बड़ी होने के बा'द भी येही आ़दत पड़ी रहेगी तो मैके और सुसराल दोनों जगह सब की नज़रों में ज़लीलो ख़्वार बनी रहेगी और मुंह फट और बद तमीज़ कहलाएगी।

﴾9﴿ गुस्सा करना और बात बात पर रूठ कर मुंह फुलाना। बहुत बुरा है और बहुत ज़ोर से हंसना ख़्वाह मख़्वाह भाई बहनों से लड़ना झगड़ना, चुग़ली खाना, गाली बकना इन ह़रकतों पर लड़कों और ख़ास कर लड़कियों को बहुत ज़ियादा तम्बीह किया करो। इन बुरी आ़दतों का पड़ जाना उ़म्र भर के लिये रुसवाई का सामान है।

﴾10﴿ अगर बच्चा कहीं से किसी की कोई चीज़ उठा लाए अगर्चे कितनी ही छोटी क्यूं न हो। इस पर सब घर वाले ख़फ़ा हो जाएं और सब घर वाले बच्चे को चोर चोर कह कर शर्म दिलाएं और बच्चे को मजबूर करें कि वोह फ़ौरन इस चीज़ को जहां से वोह लाया है उसी जगह इस को रख आए फिर चोरी से नफ़रत दिलाने के लिये उस का हाथ धुलाएं और कान पकड़ कर उस से तौबा कराएं ताकि बच्चों के ज़ेह्न में अच्छी त़रह़ येह बात जम जाए कि पराई चीज़ लेना चोरी है और चोरी बहुत ही बुरा काम है।

﴾11﴿ बच्चे गुस्से में अगर कोई चीज़ तोड़े फोड़े या किसी को मार बैठें तो बहुत ज़ियादा डांटो। बल्कि मुनासिब सज़ा दो ताकि बच्चे फिर ऐसा न करें इस मौक़अ़ पर लाड प्यार न करो।

﴾12﴿ कभी कभी बच्चों को बुज़ुर्गों और नेक लोगों की ह़िकायतें सुनाया करो। मगर ख़बरदार ख़बरदार **आ़शिक़ी-मा'शूक़ी** के क़िस्से कहानियां बच्चों के कान में न पड़ें। न ऐसी किताबें बच्चों के हाथों में दो जिन से अख़्लाक़ ख़राब हों।

﴾13﴿ लड़कों और लड़कियों को ज़रूर कोई ऐसा हुनर सिखा दो जिस से ज़रूरत के वक़्त वोह कुछ कमा कर बसर अवक़ात कर सकें। मषलन सिलाई का त़रीक़ा या मोज़ा बनियान, स्वेटर बुनना, या रस्सी का बुटना या चर्ख़ा कातना, ख़बरदार ख़बरदार इन हुनर की बातों को सिखाने में शर्मो आ़र मह़सूस न करो।

《14》 बच्चों को बचपन ही से इस बात की आ़दत डालो कि वोह अपना काम खुद अपने हाथ से करें वोह अपना बिछौना खुद अपने हाथ से बिछाएं। और सुब्ह़ को खुद अपने हाथ से अपना बिस्तर लपैट कर उस की जगह पर रखें। अपने कपड़ों और ज़ेवरों को खुद संभाल कर रखें।

《15》 लड़कियों को बरतन धोने और खाने पीने घरों और सामान की सफ़ाई सुथराई और सजावट, कपड़ा धोने, कपड़ा रंगने, सीने पिरोने का सब काम मां को लाज़िम है कि बचपन ही से सिखाना शुरूअ़ कर दे और लड़कियों को मेह़नत मशक़्क़त उठाने की आ़दत पड़ जाए इस की कोशिश करनी चाहिये।

《16》 मां को लाज़िम है कि बच्चों के दिल में बाप का डर बिठाती रहे ताकि बच्चों के दिलों में बाप का डर रहे।

《17》 बच्चे और बच्चियां कोई काम छुप छुपा कर करें तो उन की रोक टोक करो कि येह अच्छी आ़दत नहीं।

《18》 बच्चों से कोई मेह़नत का काम लिया करो मषलन लड़कों के लिये लाज़िम है कि वोह कुछ दूर दौड़ लिया करें और लड़कियां चर्ख़ा चलाएं या चक्की पीस लें ताकि उन की सिह़्ह़त ठीक रहे।

《19》 बच्चों और बच्चियों को खाने, पहनने और लोगों से मिलने मिलाने और मह़फ़िलों में उठने बैठने का त़रीक़ा और सलीक़ा सिखाना मां-बाप के लिये ज़रूरी है।

《20》 चलने में ताकीद करो कि बच्चे जल्दी जल्दी और दौड़ते हुए न चलें और नज़र ऊपर उठा कर इधर उधर देखते हुए न चलें। और न बीच सड़क पर चलें। बल्कि हमेशा सड़क के कनारे कनारे चलें।

मां-बाप के हुक़ूक़ :- हर मर्द व औ़रत पर अपने मां-बाप के हुक़ूक़ को भी अदा करना फ़र्ज़ है। ख़ास कर नीचे लिखे हुए चन्द हुक़ूक़ का ख़याल तो ख़ास त़ौर पर रखना बेह़द ज़रूरी है।

«1» ख़बरदार ख़बरदार हरगिज़ हरगिज़ अपने किसी क़ौल व फ़े'ल से मां-बाप को किसी क़िस्म की कोई तक्लीफ़ न दें । अगर्चे मां-बाप अवलाद पर कुछ ज़ियादती भी करें मगर फिर भी अवलाद पर फ़र्ज़ है कि वोह हरगिज़ हरगिज़ कभी भी और किसी ह़ाल में भी मां-बाप का दिल न दुखाएं ।

«2» अपनी हर बात और अपने हर अ़मल से मां-बाप की ता'ज़ीम व तकरीम करे और हमेशा उन की इ़ज़्ज़त व ह़ुरमत का ख़याल रखे ।

«3» हर जाइज़ काम में मां-बाप के हुक्मों की फ़रमां बरदारी करे ।

«4» अगर मां-बाप को कोई भी ह़ाजत हो तो जानो माल से उन की ख़िदमत करे ।

«5» अगर मां-बाप अपनी ज़रूरत से अवलाद के मालो सामान में से कोई चीज़ ले लें तो ख़बरदार ख़बरदार हरगिज़ हरगिज़ बुरा न मानें । न इज़्हारे नाराज़ी करें । बल्कि येह समझें कि मैं और मेरा माल सब मां-बाप ही का है । ह़दीष शरीफ़ में है कि ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स से येह फ़रमाया कि اَنْتَ وَ مَالُكَ لِاَبِيْكَ या'नी तू और तेरा माल सब तेरे बाप का है ।

(سنن ابن ماجہ، کتاب التجارات، باب ماللرجل من مال ولدہ، الحدیث ۲۲۹۲، ج ۳، ص ۸۱)

«6» मां-बाप का इन्तिक़ाल हो जाए तो अवलाद पर मां-बाप का येह ह़क़ है कि उन के लिये मग़्फ़िरत की दुआ़एं करते रहें और अपनी नफ़्ली इ़बादतों और ख़ैर व ख़ैरात का षवाब उन की रूह़ों को पहुंचाते रहें । खानों और शीरीनी वग़ैरा पर फ़ातिह़ा दिला कर उन की अरवाह़ को ईसाले षवाब करते रहें ।

«7» मां-बाप के दोस्तों और उन के मिलने जुलने वालों के साथ एह़सान और अच्छा बरताव करते रहें ।

﴾8﴿ मां–बाप के ज़िम्मे जो क़र्ज़ हो उस को अदा करें या जिन कामों की वोह वसिय्यत कर गए हों। उन की वसिय्यतों पर अ़मल करें।

﴾9﴿ जिन कामों से ज़िन्दगी में मां–बाप को तक्लीफ़ हुवा करती थी उन की वफ़ात के बा'द भी उन कामों को न करें कि इस से उन की रूहों को तक्लीफ़ पहुंचेगी।

﴾10﴿ कभी कभी मां–बाप की क़ब्रों की ज़ियारत के लिये भी जाया करें। उन के मज़ारों पर फ़ातिहा पढ़ें। सलाम करें और उन के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत करें इस से मां–बाप की अरवाह़ को ख़ुशी होगी और फ़ातिहा का षवाब फ़िरिश्ते नूर की थालियों में रख कर उन के सामने पेश करेंगे और मां–बाप ख़ुश हो कर अपने बेटे बेटियों को दुआ़एं देंगे।

दादा, दादी, नाना, नानी, चचा, फूफी, मामूं, ख़ाला, वग़ैरा के हुक़ूक़ भी मां–बाप ही की त़रह़ हैं यूंही बडे भाई का ह़क़ भी बाप ही जैसा है चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में है कि,

وحق كبير الاخوة حق الوالد على ولده۔

(شعب الایمان للبیهقی، باب فی بر الوالدین، فصل فی صلة الرحم، رقم ۷۹۲۹، ج۶، ص ۲۱۰)

या'नी बड़े भाई का ह़क़ छोटे भाई पर ऐसा है जैसा कि बाप का ह़क़ बेटे पर है।

इस ज़माने में लड़के और लड़कियां मां–बाप के हुक़ूक़ से बिल्कुल जाहिल और ग़ाफ़िल हैं। उन की ता'ज़ीमो तकरीम और फ़रमां बरदारी व ख़िदमत गुज़ारी से मुंह मोड़े हुए हैं। बल्कि कुछ तो इतने बड़े बद बख़्त और ना लाइक़ हैं कि मां–बाप को अपने क़ौलो फ़े'ल से अज़िय्यत और तक्लीफ़ देते हैं। और इसी त़रह़ गुनाहे कबीरा में मुब्तला हो कर क़हरे क़ह्हार व ग़ज़बे जब्बार में गिरिफ़्तार और अ़ज़ाबे जहन्नम के ह़क़दार बन रहे हैं।

ख़ूब याद रखो ! कि तुम अपने मां–बाप के साथ अच्छा या बुरा जो सुलूक भी करोगे वैसा ही सुलूक तुम्हारी अवलाद भी तुम्हारे साथ करेगी और येह भी जान लो कि मां–बाप के साथ अच्छा सुलूक करने से रिज़्क़ में तरक़्क़ी और उ़म्र में ख़ैरो बरकत नसीब होती है। येह **अल्लाह** तआ़ला के सच्चे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है जो हरगिज़ हरगिज़ कभी ग़लत़ नहीं हो सकता। इस बात पर ईमान रखो कि

हज़ार फ़लसुफ़ियों की चुनीं चुनां बदली
नबी की बात बदलनी न थी, नहीं बदली

रिश्तेदारों के हुक़ूक़ :- **अल्लाह** तआ़ला ने क़ुरआन शरीफ़ में और हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़दीष शरीफ़ में बार बार रिश्तेदारों के साथ एह़सान और अच्छे बरताव का हुक्म फ़रमाया है लिहाज़ा इन लोगों के हुक़ूक़ को भी अदा करना हर मुसलमान मर्द व औ़रत पर लाज़िम और ज़रूरी है। ख़ास त़ौर पर इन चन्द बातों पर अ़मल करना तो लाज़िमी है।

﴾1﴿ अगर अपने अ़ज़ीज़ो अक़रिबा मुफ़्लिस व मोह़ताज हों और खाने कमाने की त़ाक़त न रखते हों तो अपनी त़ाक़त भर और अपनी गुंजाइश के मुत़ाबिक़ उन की माली मदद करते रहें।

﴾2﴿ कभी कभी अपने रिश्तेदारों के यहां आते जाते भी रहें और उन की ख़ुशी और ग़मी में हमेशा शरीक रहें।

﴾3﴿ ख़बरदार ख़बरदार हरगिज़ हरगिज़ रिश्तेदारों से क़त़ए तअ़ल्लुक़ कर के रिश्ते को न काटें। रिश्तेदारी काट डालने का बहुत बड़ा गुनाह है रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि لا يدخل الجنة قاطع

(صحيح مسلم، كتاب البر والصلة الخ، باب صلة الرحم وتحريم قطيعتها، رقم ٢٥٥٦، ص ١٣٨٣)

"या'नी अपने रिश्तेदारों से क़तए़ तअ़ल्लुक़ करने वाला जन्नत में नहीं दाख़िल होगा।"

अगर रिश्तेदारों की त़रफ़ से कोई तक्लीफ़ भी पहुंच जाए तो इस पर सब्र करना और फिर भी उन से मेल जोल और तअ़ल्लुक़ को बर क़रार रखना बहुत बड़े षवाब का काम है।

ह़दीष शरीफ़ में है कि जो तुम से तअ़ल्लुक़ तोड़े तुम उस से मेल मिलाप रखो और जो तुम पर ज़ुल्म करे उस को मुआ़फ़ कर दो। और जो तुम्हारे साथ बद सुलूकी करे तुम उस के साथ नेक सुलूक करते रहो।
(المسند للامام احمد بن حنبل، حديث عقبه بن عامر، الحديث ١٧٤٥٧، ج٦، ص١٤٨، كنزالعمال، كتاب الاخلاق، باب صلة الرحم، الحديث ٦٩٢٦، ج٣، ص١٤٥)

और एक ह़दीष में येह भी है कि रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करने से आदमी अपने अहलो इ़याल का मह़बूब बन जाता है। और उस की मालदारी बढ़ जाती है। और उस की उ़म्र में दराज़ी और बरकत होती है। (جامع الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی تعليم النسب، رقم ١٩٨٦، ج٣، ص٣٩٤)

इन ह़दीषों से येह सबक़ मिलता है कि रिश्तेदारों के साथ नेक सुलूक करने का कितना बड़ा अज्रो षवाब है और दुन्या व आख़िरत में इस के फ़वाइद व मनाफ़ेअ़ किस क़दर ज़ियादा हैं और रिश्तेदारों के साथ बद सुलूकी और उन से तअ़ल्लुक़ काट लेने का गुनाह कितना भयानक और ख़ौफ़नाक है और दोनों जहां में इस का नुक़्सान और वबाल किस क़दर ज़ियादा ख़त़रनाक है। इस लिये हर मुसलमान मर्द व औ़रत पर लाज़िम है कि अपने रिश्तेदारों के ह़ुक़ूक़ अदा करने और उन के साथ अच्छा बरताव और नेक सुलूक करने का ख़ास त़ौर पर ध्यान रखे। याद रखो कि शरीअ़त के अह़काम पर अ़मल करना ही मुसलमान के लिये दोनों जहान में सलाह़ व फ़लाह़ का सामान है शरीअ़त को छोड़ कर कभी भी कोई मुसलमान दोनों जहान में पनप नहीं सकता।

जो लोग ज़रा ज़रा सी बातों पर अपनी बहनों, बेटियों, फूफियों, ख़ालाओं, मामूओं, चचाओं, भतीजों, भानजों वग़ैरा से येह कह कर क़त्ए तअ़ल्लुक़ कर लेते हैं कि आज से मैं तेरा रिश्तेदार नहीं और तू भी मेरा रिश्तेदार नहीं। और फिर सलाम-कलाम, मिलना-जुलना बन्द कर देते हैं यहां तक कि रिश्तेदारों की शादी व ग़मी की तक़रीबात का बाईकॉट कर देते हैं। ह़द हो गई कि बा'ज़ बद नसीब अपने क़रीबी रिश्तेदारों के जनाज़े और कफ़न दफ़न में भी शरीक नहीं होते तो इन ह़दीषों की रोशनी में तुम खुद ही फ़ैसला करो कि येह लोग कितने बड़े बद बख़्त, ह़िरमां नसीब और गुनाहगार हैं? (तौबा तौबा نَعُوْذُ بِاللّٰه)

पड़ोसियों के ह़ुक़ूक़ :- **अल्लाह** तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِه وَسَلَّم ने अह़ादीष में हमसायों और पड़ोसियों के भी कुछ ह़ुक़ूक़ मुक़र्रर फ़रमाए हैं। जिन को अदा करना हर मुसलमान मर्द व औ़रत के लिये लाज़िम व ज़रूरी है। क़ुरआने मजीद में है।

وَالْجَارِ ذِی الْقُرْبٰی وَالْجَارِ الْجُنُبِ. (پ٥، النساء:٣٦)

"या'नी क़रीबी और दूर वाले पड़ोसियों के साथ नेक सुलूक और अच्छा बरताव रखो।"

और ह़दीष शरीफ़ में आया है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِه وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام मुझ को हमेशा पड़ोसियों के ह़ुक़ूक़ के बारे में वसिय्यत करते रहे। यहां तक कि मुझे येह ख़याल होने लगा कि शायद अ़न क़रीब पड़ोसी को अपने पड़ोसी का वारिष ठहरा देंगे।

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلة، باب الوصیة بالجار والاحسان الیه، رقم٢٦٢٤، ص١٤١٣)

एक ह़दीष में येह भी है कि एक दिन ह़ुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام वुज़ू फ़रमा रहे थे तो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان आप के वुज़ू के धोवन को लूट लूट कर अपने चेहरों पर मलने लगे। येह मन्ज़र देख कर

आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम लोग ऐसा क्यूं करते हो ? सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया कि हम लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत के जज़्बे में येह कर रहे हैं। येह सुन कर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जिस को येह बात पसन्द हो कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत करे। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उस से मह़ब्बत करें उस को लाज़िम है कि वोह हमेशा हर बात में सच बोले। और उस को जब किसी चीज़ का अमीन बनाया जाए तो वोह अमानत को अदा करे और अपने पड़ोसियों के साथ अच्छा सुलूक करे।

(شعب الایمان، باب فی تعظیم النبی صلی الله علیه و سلم... الخ، رقم ١٥٣٣، ج٢، ص ٢٠١)

और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि वोह शख़्स कामिल दर्जे का मुसलमान नहीं जो ख़ुद पेट भर कर खा ले और उस का पड़ोसी भूका रह जाए। (شعب الایمان،باب فی الزکوۃ،فصل فی کراھیة امساک الفضل... الخ، رقم٣٣٨٩، ج٣، ص٢٢٥)

बहर ह़ाल अपने पड़ोसियों के लिये मुनदरिजए ज़ैल बातों का ख़याल रखना चाहिये।

﴾1﴿ अपने पड़ोसी के दुख सुख में हमेशा शरीक रहे और ब वक़्ते ज़रूरत उन की हर क़िस्म की इमदाद भी करता रहे।

﴾2﴿ अपने पड़ोसियों की ख़बरगीरी और उन की ख़ैर ख़्वाही और भलाई में हमेशा लगा रहे।

﴾3﴿ कुछ हदिय्यों और तोह़फ़ों का भी लैन-दैन रखे चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में है कि जब तुम लोग शोरबा पकाओ तो इस में कुछ ज़ियादा पानी डाल कर शोरबे को बढ़ाओ ताकि तुम लोग इस के ज़रीए अपने पड़ोसियों की ख़बरगीरी और उन की मदद कर सको।

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلة والادب، باب الوصية بالجار والاحسان الیه، رقم ٢٦٢٥، ص ١٤١٣)

आ़म मुसलमानों के हु़क़ूक़ :- जानना चाहिये कि अपने रिश्तेदारों के इ़लावा मुसलमान होने की ह़ैषिय्यत से हर मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर भी कुछ हु़क़ूक़ हैं। हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है कि इन को अदा करे। इन हु़क़ूक़ में से चन्द येह हैं।

《1》 मुलाक़ात के वक़्त हर मुसलमान अपने मुसलमान भाइयों को सलाम करे और मर्द मर्द से और औ़रत औ़रत से मुसाफ़ह़ा करे तो येह बहुत ही अच्छा और बेहतरीन अ़मल है।

मगर इस का ध्यान रहे कि काफ़िरों, मुशरिकों और मुर्तदों, इसी त़रह़ जुवा खेलने और शराब पीने और इस क़िस्म के गुनाहों में मशग़ूल रहने वालों को देखे तो हरगिज़ हरगिज़ इन लोगों को सलाम न करे। क्यूंकि किसी को सलाम करना येह उस की ता'ज़ीम है और ह़दीष शरीफ़ में है कि जब कोई मुसलमान किसी फ़ासिक़ की ता'ज़ीम करता है तो ग़ज़बे इलाही से अ़र्श कांप जाता है।

(الکامل فی ضعفاء الرجال،سابق بن عبداللہ الرقی،ج٤،ص٩٤٥)

《2》 मुसलमानों के सलाम का जवाब दे। याद रखो कि सलाम करना सुन्नत है और सलाम का जवाब देना वाजिब है।

《3》 मुसलमान छींक कर "اَلْحَمْدُ لِلّٰه" कहे तो "یرحمك الله" कह कर उस का जवाब दे।

《4》 कोई मुसलमान बीमार हो जाए तो उस की बीमार पुर्सी करे।

《5》 अपनी त़ाक़त भर हर मुसलमान की ख़ैर ख़्वाही और उस की मदद करे।

《6》 मुसलमानों की नमाज़े जनाज़ा और उन के दफ़्न में शरीक हो।

《7》 हर मुसलमान का मुसलमान होने की ह़ैषिय्यत से ए'ज़ाज़ व इकराम करे।

《8》 कोई मुसलमान दा'वत दे तो उस की दा'वत को क़बूल करे।

《9》 मुसलमान के ऐ़बों की पर्दा पोशी करे और उन को इख़्लास के साथ इन ऐ़बों से बाज़ रहने की नसीह़त करे।

«10» अगर किसी बात में किसी मुसलमान से रंजिश हो जाए तो तीन दिन से ज़ियादा इस से सलाम व कलाम बन्द न रखे।

«11» मुसलमानों में झगड़ा हो जाए तो सुल्ह़ करा दे।

«12» किसी मुसलमान को जानी या माली नुक़्सान न पहुंचाए न किसी मुसलमान की आबरू रेज़ी करे।

«13» मुसलमानों को अच्छी बातों का हुक्म देता रहे और बुरी बातों से मन्अ़ करता रहे।

«14» हर मुसलमान का तोह़फ़ा क़बूल करे और ख़ुद भी उस को कुछ तोह़फ़े में दिया करे।

«15» अपने से बड़ों का अदबो एह़तिराम, और छोटों पर रह़्म व शफ़्क़त करता रहे।

«16» मुसलमानों की जाइज़ सिफ़ारिशों को क़बूल करे।

«17» जो बात अपने लिये पसन्द करे वोही हर मुसलमान के लिये पसन्द करे।

«18» मस्जिदों या मजलिसों में किसी मुसलमान को उठा कर उस की जगह न बैठे।

«19» रास्ता भूले हुओं को सीधा रास्ता बताए।

«20» किसी मुसलमान को लोगों के सामने ज़लीलो रुसवा न करे।

«21» किसी मुसलमान की ग़ीबत न करे। न उस पर बोहतान लगाए।

इन्सानी हुक़ूक़ :- बा'ज़ ऐसे भी हुक़ूक़ हैं जो हर आदमी के दूसरे आदमी पर हैं ख़्वाह वोह काफ़िर हो या मुसलमान, नेकूकार हो या बदकार। इन हुक़ूक़ में से चन्द येह हैं।

«1» बिला ख़त़ा हरगिज़ हरगिज़ किसी इन्सान की जानो माल को नुक़्सान न पहुंचाए।

«2» बिला किसी शरई वजह के किसी इन्सान के साथ बद ज़बानी व सख़्त कलामी न करे।

«3» किसी मुसीबत ज़दा को देखे या किसी को भूक प्यास या बीमारी में मुब्तला पाए तो उस की मदद करे। खाना पानी दे दे। दवा इलाज कर दे।

﴾4﴿ जिन जिन सूरतों में शरीअ़त ने सज़ाओं या लड़ाइयों की इजाज़त दी है इन सूरतों में ख़बरदार ख़बरदार ह़द से ज़ियादा न बढ़े और हरगिज़ हरगिज़ ज़ुल्म न करे। येह शरीअ़ते इस्लाम की मुक़द्दस ता'लीम की रू से हर इन्सान का हर इन्सान पर ह़क़ है जो इन्सानी हैषिय्यत से एक दूसरे पर लाज़िम है। ह़दीष शरीफ़ में है कि,

الراحمون یرحمهم الرحمن ارحموا من فی الارض یرحمکم من فی السمآء

(جامع الترمذی ، کتاب البر والصلة ، باب ماجاء فی رحمة المسلمین ،رقم ۱۹۳۱ ،ج۳،ص ۳۷۱)

"या'नी रह़्म करने वालों पर रह़मान रह़्म फ़रमाता है। तुम लोग ज़मीन वालों पर रह़्म करो तो आस्मान वाला तुम लोगों पर रह़्म फ़रमाएगा।"

और एक दूसरी ह़दीष में रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صلّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلّم ने येह इरशाद फ़रमाया कि,

الخلق عیال الله فاحب الخلق الی الله من احسن الی عیاله۔

(کنزالعمال، کتاب الزکوٰۃ ، انباب الثانی فی السخاء والصدقة ، الفصل الاول ،رقم ۱۶۱۶۷ ، ج۶، ص ۱۶۴)

"या'नी तमाम मख़्लूक़ **अल्लाह** की इ़याल है जो उस की परवरिश की मोह़ताज है और तमाम मख़्लूक़ में सब से ज़ियादा **अल्लाह** के नज़्दीक वोह प्यारा है जो **अल्लाह** की इ़याल या'नी उस की मख़्लूक़ के साथ अच्छा सुलूक करे।"

जानवरों के हुक़ूक़ :- **अल्लाह** तआ़ला रह़मान व रह़ीम और अर-ह़मर्राह़िमीन है और उस के प्यारे रसूल रह़्मतुल्लिल आ़लमीन हैं। इस लिये इस्लाम जो ख़ुदा का भेजा हुवा और रसूल का लाया हुवा दीन है इस लिये इस दीन में जानवरों के भी कुछ हुक़ूक़ हैं जिन का अदा करना हर मुसलमान पर ज़रूरी है। जानवरों के चन्द हुक़ूक़ येह हैं।

﴾1﴿ जिन जानवरों का गोश्त खाना ह़राम है जब तक वोह ईज़ा न पहुंचाएं बिला ज़रूरत उन को क़त्ल करना मन्अ़ है।

﴾2﴿ जिन जानवरों का गोश्त ह़लाल है उन को भी जब कि खाने के लिये न हो बल्कि मह़ज़ तफ़रीह़ के लिये बिला ज़रूरत क़त्ल करना। जैसा कि बा'ज़ शिकारी लोग खाने या कोई फ़ाइदा उठाने के लिये नहीं शिकार करते बल्कि शिकार खेलते हैं या'नी मह़ज़ खेल कूद के त़ौर पर जानवरों का ख़ून कर के उन को ज़ाएअ़ कर देते हैं। येह शरीअ़त में जाइज़ नहीं है।

﴾3﴿ जो पालतू जानवर काम करते हैं उन को घास-चारा और पानी देना फ़र्ज़ है। और उन की त़ाक़त से ज़ियादा उन से काम लेना या भूका प्यासा रखना और बिला ज़रूरत ख़ुसूसन उन के चेहरों पर मारना गुनाह और नाजाइज़ है।

﴾4﴿ परन्दों के बच्चों को घोंसलों से निकाल लेना या परन्दों को पिंजरों में बन्द कर देना और बिला ज़रूरत इन परन्दों के मां-बाप और जोड़े को दुख पहुंचाना बहुत बड़ी बे रह़्मी और ज़ुल्म है जो किसी मुसलमान के लिये जाइज़ नहीं है।

﴾5﴿ बा'ज़ लोग किसी जानदार को बांध कर लटका देते हैं और उस पर ग़ुलैल या बन्दूक़ से निशाना बाज़ी की मश्क़ करते हैं येह भी परले दर्जे की बे रह़्मी और ज़ुल्म है जो हर मुसलमान के लिये ह़राम है।

﴾6﴿ जिन जानवरों को ज़ब्ह़ करना हो या मूज़ी होने की वजह से क़त्ल करना हो तो मुसलमान के लिये लाज़िम है कि उस को तेज़ धार हथियार से बहुत जल्द ज़ब्ह़ या क़त्ल कर दे। किसी जानवर को तड़पा तड़पा कर या भूका प्यासा रख कर मार डालना येह भी बड़ी बे रह़्मी है जो हरगिज़ हरगिज़ इस्लाम में जाइज़ नहीं है।

रास्तों के हुक़ूक़ :- बुख़ारी शरीफ़ में है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम से फ़रमाया कि तुम लोग रास्तों

पर बैठने से बचो। तो सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم रास्तों में बैठने से तो हम लोगों के लिये कोई चारा ही नहीं है। क्यूंकि इन रास्तों ही में तो हम लोग बैठ कर बात चीत किया करते हैं। तो रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर तुम लोग रास्तों पर बैठो तो रास्तों का ह़क़ अदा करते रहो। लोगों ने कहा कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم रास्तों के हुक़ूक़ क्या हैं? तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि रास्तों के हुक़ूक़ पांच हैं जो येह हैं।

﴾1﴿ निगाहे नीची रखना। मत़लब येह है कि रास्ता चूंकि आ़म गुज़रगाह होता है इस लिये रास्ते पर बैठने वालों को लाज़िम है कि निगाहें नीची रखें। ताकि ग़ैर मह़रम औ़रतों और मुसलमानों के उ़यूब मषलन कोढ़ी, सफ़ेद दाग़ वाले या लंगड़े लूले को बारबार घूर घूर कर न देखें जिस से इन लोगों की दिल आज़ारी हो।

﴾2﴿ किसी मुसाफ़िर या राहगीर को ईज़ा न पहुंचाएं। मत़लब येह है कि रास्तों में इस त़रह़ न बैठें कि रास्ता तंग हो जाए। यूं ही रास्ता चलने वालों का मज़ाक़ न उड़ाएं। न उन की तह़क़ीर और ऐ़बजोई करे। न दूसरी किसी क़िस्म की तक्लीफ़ पहुंचाएं।

﴾3﴿ हर गुज़रने वाले के सलाम का जवाब देते रहें।

﴾4﴿ रास्ता चलने वालों को अच्छी बातें बताते रहें।

﴾5﴿ ख़िलाफ़े शरीअ़त और बुरी बातों से लोगों को मन्अ़ करते रहें।

(صحیح البخاری ـ ۷۹ـ کتاب الاستئذان ، باب (۲) رقم ۶۲۲۹، ج ۴، ص ۱۶۵)

हुक़ूक़ को अदा करो, या मुआ़फ़ करा लो ! :- अगर किसी का तुम्हारे ऊपर कोई ह़क़ था और तुम उस को किसी वजह से अदा नहीं कर सके तो अगर वोह ह़क़ अदा करने के क़ाबिल कोई चीज़ हो मषलन

किसी का तुम्हारे ऊपर क़र्ज़ रह गया था तो इस को अदा करने की तीन सूरतें हैं या तो ख़ुद हक़ वाले को उस का हक़ दे दो। या'नी जिस से क़र्ज़ लिया था उसी को क़र्ज़ अदा कर दो या उस से क़र्ज़ मुआफ़ करा लो और अगर वोह शख़्स मर गया हो तो उस के वारिषों को उस का हक़ या'नी क़र्ज़ अदा कर दो। और अगर वोह हक़ अदा करने की चीज़ न हो बल्कि मुआफ़ कराने के क़ाबिल हो मषलन किसी की ग़ीबत की हो या किसी पर तोहमत लगाई हो तो ज़रूरी है कि उस शख़्स से इस को मुआफ़ करा लो। और अगर किसी वजह से हक़दारों से न उन के हुक़ूक़ को मुआफ़ करा सका न अदा कर सका। मषलन साहिबाने हक़ मर चुके हों तो उन लोगों के लिये हमेशा बख़्शिश की दुआ करता रहे और **अल्लाह** तआला से तौबा व इस्तिग़फ़ार करता रहे तो उम्मीद है कि क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआला साहिबाने हक़ को बहुत ज़ियादा अज्रो षवाब दे कर इस बात के लिये राज़ी कर देगा कि वोह अपने हुक़ूक़ को मुआफ़ कर दें। और अगर तुम्हारा कोई हक़ दूसरों पर हो। और उस हक़ के मिलने की उम्मीद हो तो नर्मी के साथ तक़ाज़ा करते रहो। और अगर वोह शख़्स मर गया हो तो बेहतर येही है कि तुम अपने हक़ को मुआफ़ कर दो। اِنْ شَآءَاللّٰہ عزوجل क़ियामत के दिन इस के बदले में बहुत बड़ा और बहुत ज़ियादा अज्रो षवाब मिलेगा। ﴿واللّٰه تعالٰی اعلم﴾

आम तौर पर लोग बन्दों के हुक़ूक़ अदा करने की कोई अहम्मिय्यत नहीं समझते। हालांकि बन्दों के हुक़ूक़ का मुआमला बहुत ही अहम, निहायत ही संगीन और बेहद ख़ौफ़नाक है। बल्कि एक हैषिय्यत से देखा जाए तो हुक़ूक़ुल्लाह (**अल्लाह** के हुक़ूक़) से ज़ियादा हुक़ूक़ुल इबाद (बन्दों के हुक़ूक़) सख़्त हैं। **अल्लाह** तआला तो अरहमर्राहिमीन है वोह अपने फ़ज़्लो करम से अपने बन्दों पर रहम फ़रमा कर अपने हुक़ूक़ मुआफ़ फ़रमा देगा मगर बन्दों के हुक़ूक़ को **अल्लाह** तआला उस वक़्त तक नहीं मुआफ़ फ़रमाएगा। जब तक बन्दे अपने हुक़ूक़ को न मुआफ़ कर दें। लिहाज़ा बन्दों के हुक़ूक़ को अदा करना या मुआफ़ करा लेना बेहद ज़रूरी है वरना क़ियामत में बड़ी मुश्किलों का सामना होगा।

ह़दीष शरीफ़ में है कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मरतबा सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया कि क्या तुम लोग जानते हो कि मुफ़्लिस कौन शख़्स है ? तो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया कि जिस शख़्स के पास दिरहम और दूसरे माल व सामान न हों वोही मुफ़्लिस है तो हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत में आ'ला दर्जे का मुफ़्लिस वोह शख़्स है कि वोह क़ियामत के दिन नमाज़ रोज़ा और ज़कात की नेकियों को ले कर मैदाने ह़श्र में आएगा मगर उस का येह ह़ाल होगा कि उस ने दुन्या में किसी को गाली दी होगी किसी पर तोहमत लगाई होगी । किसी का माल खा लिया होगा । किसी का ख़ून बहाया होगा, किसी को मारा होगा तो येह सब हुक़ूक़ वाले अपने अपने हुक़ूक़ को त़लब करेंगे तो **अल्लाह** तआ़ला उस की नेकियों से तमाम हुक़ूक़ वालों को उन के हुक़ूक़ के बराबर नेकियां दिलाएगा । अगर इस की नेकियों से तमाम हुक़ूक़ वालों के हुक़ूक़ न अदा हो सके बल्कि नेकियां ख़त्म हो गईं और हुक़ूक़ बाक़ी रह गए तो **अल्लाह** तआ़ला हुक्म देगा कि तमाम हुक़ूक़ वालों के गुनाह इस के सर पर लाद दो । चुनान्चे सब ह़क़ वालों के गुनाहों को येह सर पर उठाएगा फिर जहन्नम में डाल दिया जाएगा । तो येह शख़्स सब से बड़ा मुफ़्लिस होगा ।

(صحیح مسلم ، کتاب البر والصلۃ ، باب تحریم الظلم، رقم ۲۵۸۱ ،ص ۱۳۹۴)

इस लिये इन्तिहाई ज़रूरी है कि या तो हुक़ूक़ को अदा कर दो या मुआ़फ़ करा लो । वरना क़ियामत के दिन हुक़ूक़ वाले तुम्हारी सब नेकियों को छीन लेंगे और उन के गुनाहों का बोझ तुम अपने सर पर ले कर जहन्नम में जाओगे । ख़ुदा के लिये सोचो कि तुम्हारी बे कसी व बे बसी और मुफ़्लिसी का क़ियामत में क्या ह़ाल होगा ।

《2》

अख़्लाक़िय्यात

मुह़म्मद या'नी वोह ह़र्फ़े नु-ख़स्तीन कलक फ़ित़रत का
किया जिस ने मुकम्मल नुस्ख़ए "अख़्लाक़े इन्सानी"

चन्द बुरी बातें

हर मर्द व औ़रत पर लाज़िम है कि बुरी ख़स्लतों और ख़राब आ़दतों से अपने आप को और अपने अहलो इ़याल को बचाए रखे और नेक ख़स्लतों और अच्छी आ़दतों को ख़ुद भी इख़्तियार करे और अपने सब मुतअ़ल्लिक़ीन को भी इस पर कारबन्द होने की इन्तिहाई ताकीद करे। यूं तो अच्छी आ़दतों और बुरी आ़दतों की ता'दाद बहुत ज़ियादा है मगर हम यहां उन चन्द बुरी ख़स्लतों और ख़राब आ़दतों का ज़िक्र करते हैं। जिन में अकषर मुसलमान ख़ुसूसन औ़रतें गिरिफ़्तार हैं। उन बुरी आ़दतों की वजह से लोग अपने दीनो दुन्या को तबाहो बरबाद कर के दोनों जहां की सआ़दतों से मह़रुम हो रहे हैं।

《1》 **ग़ुस्सा :-** बे मह़ल और बे मौक़अ़ बात पर ब कषरत ग़ुस्सा करना, येह बहुत ख़राब आ़दत है। अकषर ऐसा होता है कि इन्सान ग़ुस्से में आ कर दुन्या के बहुत से बने बनाए कामों को बिगाड़ देता है और कभी कभी ग़ुस्से की झलाहट में ख़ुदावन्दे करीम की ना शुक्री और कुफ़्र का कलिमा बकने लगता है। और अपने ईमान की दौलत को ग़ारत और बरबाद कर डालता है। इसी लिये रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत को बे मह़ल और बात बात पर ग़ुस्सा करने से मन्अ़ फ़रमाया। चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में है कि एक शख़्स बारगाहे नुबुव्वत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे

किसी अ़मल का हुक्म दीजिये मगर बहुत ही थोड़ा हो तो आप ने इरशाद फ़रमाया कि "ग़ुस्सा मत कर" उस ने कहा कि कुछ और इरशाद फ़रमाइये तो आप ने फिर येही फ़रमाया कि "ग़ुस्सा मत कर" ग़रज़ कई बार उस शख़्स ने दरयाफ़्त किया मगर हर मरतबा आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येही फ़रमाया कि "ग़ुस्सा मत कर" येह बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीष है।

(صحيح البخاری، كتاب الادب، باب الحذر من الغضب، رقم ٦١١٦، ج ٤، ص ١٣١)

एक ह़दीष में आया है कि रसूले ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह इरशाद फ़रमाया कि पहलवान वोह नहीं है जो लोगों को पछाड़ देता है बल्कि पहलवान वोह है जो ग़ुस्से की ह़ालत में अपने नफ़्स पर क़ाबू रखे।

(صحيح البخاری، كتاب الادب، باب الحذر من الغضب، رقم ٦١١٤، ج ٤، ص ١٣٠)

ग़ुस्सा कब बुरा, कब अच्छा है ? :- ग़ुस्से के मुआ़मले में यहां येह बात अच्छी त़रह़ समझ लो कि ग़ुस्सा बज़ाते ख़ुद न अच्छा है न बुरा। दर ह़क़ीक़त ग़ुस्से की अच्छाई और बुराई का दारो मदार मौक़अ़ और मह़ल की अच्छाई और बुराई पर है अगर बे मह़ल ग़ुस्सा किया और इस के अषरात बुरे ज़ाहिर हुए तो येह ग़ुस्सा बुरा है और अगर बर मह़ल ग़ुस्सा किया और इस के अषरात अच्छे ज़ाहिर हुए तो येह ग़ुस्सा अच्छा है। मषलन किसी भूके प्यासे दूध पीते बच्चे के रोने पर तुम को ग़ुस्सा आ गया और तुम ने बच्चे का गला घोंट दिया तो चूंकि तुम्हारा येह ग़ुस्सा बिल्कुल ही बे मह़ल है इस लिये येह ग़ुस्सा बुरा है और अगर किसी डाकू को डाका डालते वक़्त देख कर तुम को ग़ुस्सा आ गया और तुम ने बंदूक़ चला कर उस डाकू का ख़ातिमा कर दिया तो चूंकि तुम्हारा येह ग़ुस्सा बिल्कुल बर मह़ल है। लिहाज़ा येह ग़ुस्सा बुरा नहीं बल्कि अच्छा है। ह़दीष शरीफ़ में जिस ग़ुस्से की मज़म्मत और बुराई बयान की गई है। येह वोही ग़ुस्सा है जो बे मह़ल हो और जिस के अषरात बुरे हों। बिल्कुल ज़ाहिर बात है कि ग़ुस्से में रह़्म की जगह बे रह़्मी और अ़द्ल

की जगह ज़ुल्म, शुक्र की जगह ना शुक्री, ईमान की जगह कुफ़्र हो तो भला कौन कह सकता है कि येह गुस्सा अच्छा है ? यक़ीनन येह गुस्सा बुरा है और येह बहुत ही बुरी ख़स्लत और निहायत ही ख़राब आ़दत है इस से बचना हर मुसलमान मर्द व औ़रत के लिये लाज़िम है।

गुस्से का इलाज :- जब बे मह़ल गुस्से की झलाहट आदमी पर सुवार हो जाए तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि उस को चाहिये कि वोह फ़ौरन ही वुज़ू करे। इस लिये कि बे मह़ल और मुज़िर गुस्सा दिलाने वाला शैत़ान है और शैत़ान आग से पैदा किया गया है और आग पानी से बुझ जाती है इस लिये वुज़ू गुस्से की आग को बुझा देता है।

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب مایقال عند الغضب، رقم ٤٧٨٤، ج٤،ص٣٢٧)

और एक ह़दीष में येह भी आया है कि अगर खड़े होने की ह़ालत में गुस्सा आ जाए तो आदमी को चाहिये कि फ़ौरन बैठ जाए तो गुस्सा उतर जाएगा। और अगर बैठने से भी गुस्सा न उतरे तो लैट जाए ताकि गुस्सा ख़त्म हो जाए।

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی ذر، رقم ٢١٤٠٦،ج٨،ص٨٠)

《2》 ह़सद :- किसी को खाता पीता या फलता फूलता आसूदा ह़ाल देख कर दिल जलाना और उस की ने'मतों के ज़वाल की तमन्ना करना। इस ख़राब जज़्बे का नाम "**ह़सद**" है। येह बहुत ही ख़बीष आ़दत और निहायत ही बुरी बला और गुनाहे अ़ज़ीम है। ह़सद करने वाले की सारी ज़िन्दगी जलन और घुटन की आग में जलती रहती है और इसे चैन और सुकून नसीब नहीं होता। **अल्लाह** तआ़ला ने कुरआने मजीद में अपने प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को हुक्म दिया है कि "ह़सद करने वाले के ह़सद से आप ख़ुदा की पनाह मांगते रहिये।" (پ٣٠،الفلق:٥)

और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "ह़सद नेकियों को इस त़रह़ खा जाती है जिस त़रह़ आग लकड़ी को खा लेती है।" (سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی الحسد، رقم ۴۹۰۳، ج۴، ص۳۶۰)

और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह भी फ़रमाया है कि तुम लोग एक दूसरे पर ह़सद न करो और एक दूसरे से क़त़ए़ तअ़ल्लुक़ न करो और एक दूसरे से बुग़्ज़ न रखो। और ऐ **अल्लाह** के बन्दो ! तुम आपस में भाई-भाई बन कर रहो।

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب تحریم التحاسد والتباغض، رقم ۲۵۵۹، ص۱۳۸۴)

ह़सद इस लिये बहुत बड़ा गुनाह है कि ह़सद करने वाला गोया **अल्लाह** तआ़ला पर ए'तिराज़ कर रहा है कि फ़ुलां आदमी इस ने'मत के क़ाबिल नहीं था उस को येह ने'मत क्यूं दी है ? अब तुम ख़ुद ही समझ लो कि **अल्लाह** तआ़ला पर कोई ए'तिराज़ करना कितना बड़ा गुनाह होगा।

ह़सद का इलाज :- ह़ज़रते इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی ने फ़रमाया है कि ह़सद क़ल्ब की बीमारियों में से एक बहुत बड़ी बीमारी है और इस का इलाज येह है कि ह़सद करने वाला ठंडे दिल से येह सोच ले कि मेरे ह़सद करने से हरगिज़ हरगिज़ किसी की दौलत व ने'मत बरबाद नहीं हो सकती। और मैं जिस पर ह़सद कर रहा हूं मेरे ह़सद से उस का कुछ भी नहीं बिगड़ सकता। बल्कि मेरे ह़सद का नुक़्सान दीनो दुन्या में मुझ को ही पहुंच रहा है कि मैं ख़्वाह मख़्वाह दिल की जलन में मुब्तला हूं और हर वक़्त ह़सद की आग में जलता रहता हूं और मेरी नेकियां बरबाद हो रही हैं और मैं जिस पर ह़सद कर रहा हूं मेरी नेकियां क़ियामत में उस को मिल जाएंगी। फिर येह भी सोचे कि मैं जिस पर ह़सद कर रहा हूं। उस को ख़ुदावन्दे करीम ने येह ने'मतें दी हैं और इस पर नाराज़ हो कर ह़सद में जल रहा हूं तो मैं गोया ख़ुदावन्दे तआ़ला के फ़े'ल पर

ए'तिराज़ कर के अपना दीनो ईमान ख़राब कर रहा हूं। येह सोच कर फिर अपने दिल में इस ख़याल को जमाए कि **अल्लाह** तआ़ला अ़लीमो ह़कीम है। जो शख़्स जिस चीज़ का अहल होता है **अल्लाह** तआ़ला उस को वोही चीज़ अ़ता फ़रमाता है। मैं जिस पर ह़सद कर रहा हूं। **अल्लाह** के नज़्दीक चूंकि वोह इन ने'मतों का अहल था। इस लिये **अल्लाह** तआ़ला ने उस को येह ने'मतें अ़ता फ़रमाई हैं और मैं चूंकि इन का अहल नहीं था इस लिये **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे नहीं दीं। इस त़रह़ ह़सद का मरज़ दिल से निकल जाएगा और ह़ासिद को ह़सद की जलन से नजात मिल जाएगी।

(احیاء علوم الدین، کتاب ذم الغضب والحقد والحسد، بیان الدواء الذی ینفی مرض الحسد عن القلب، ج۳،ص ۲٤۳)

सच है

उस के अलत़ाफ़ तो हैं आ़म शहीदी सब पर
तुझ से क्या ज़िद थी अगर तू किसी क़ाबिल होता

《3》 **लालच :-** येह बहुत ही बुरी ख़स्लत और निहायत ख़राब आ़दत है **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से बन्दे को जो रिज़्क़ व ने'मत और मालो दौलत या जाहो मर्तबा मिला है इस पर राज़ी हो कर क़नाअ़त कर लेना चाहिये। दूसरों की दौलतों और ने'मतों को देख देख कर ख़ुद भी उस को ह़ासिल करने के फैर में परेशान ह़ाल रहना और ग़लत़ व सह़ीह़ हर क़िस्म की तदबीरों में दिन रात लगे रहना येही जज़्बए ह़िर्स व लालच कहलाता है और ह़िर्स व त़म्अ़ दर ह़क़ीक़त इन्सान की एक पैदाइशी ख़स्लत है।

चुनान्चे ह़दीष शरीफ़ में है कि अगर आदमी के पास दो मैदान भर कर सोना हो जाए तो फिर वोह एक तीसरे मैदान को त़लब करेगा कि वोह भी सोने से भर जाए और इब्ने आदम के पेट को क़ब्र की मिट्टी के

सिवा कोई चीज़ नहीं भर सकती और जो शख़्स इस से तौबा करे **अल्लाह** तआ़ला उस की तौबा को क़बूल फ़रमा लेगा।

(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ، باب لو ان لابن آدم وادیین لابتغی ثالثاً، رقم ١٠٤٨، ص ٥٢١)

और एक ह़दीष में है कि इब्ने आदम बुड्ढा हो जाता है। मगर उस की दो चीज़ें जवान रहती हैं एक **उम्मीद** दूसरी माल की **मह़ब्बत**।

(صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب من بلغ ستین سنۃ، رقم ٦٤٢٠، ج٤، ص ٢٢٤)

लालच और ह़िर्स का जज़्बा **ख़ुराक, लिबास, मकान, सामान, दौलत, इ़ज़्ज़त, शोहरत** ग़रज़ हर ने'मत में हुवा करता है। अगर लालच का जज़्बा किसी इन्सान में बढ़ जाता है तो वोह इन्सान त़रह़ त़रह़ की बद अख़्लाक़ियों और बे मुरव्वती के कामों में पड़ जाता है और बड़े से बड़े गुनाहों से भी नहीं चूकता। बल्कि सच पूछिये तो ह़िर्स व त़म्अ़ और लालच दर ह़क़ीक़त हज़ारों गुनाहों का सर चश्मा है इस से ख़ुदा की पनाह मांगनी चाहिये।

लालच का इलाज :- इस क़ल्बी मरज़ का इलाज सब्रो क़नाअ़त है या'नी जो कुछ ख़ुदा की त़रफ़ से बन्दे को मिल जाए इस पर राज़ी हो कर ख़ुदा का शुक्र बजा लाए और इस अ़क़ीदे पर जम जाए कि इन्सान जब मां के पेट में रहता है। उसी वक़्त फ़िरिश्ता ख़ुदा के हुक्म से इन्सान की चार चीज़ें लिख देता है। इन्सान की उ़म्र, इन्सान की रोज़ी, इन्सान की नेक नसीबी, इन्सान की बद नसीबी, येही इन्सान का नविश्तए तक़्दीर है। लाख सर मारो मगर वोही मिलेगा जो तक़्दीर में लिख दिया गया है इस के बा'द येह समझ कर कि ख़ुदा की रिज़ा और उस की अ़त़ा पर राज़ी हो जाओ और येह कह कर लालच के क़लए़ को ढा दो कि जो मेरी तक़्दीर में था वोह मुझे मिला और जो मेरी तक़्दीर में होगा वोह आयन्दा मिलेगा और अगर कुछ कमी की वजह से क़ल्ब में तक्लीफ़ हो और नफ़्स इधर उधर लपके तो सब्र कर के नफ़्स की लगाम खींच लो। इसी त़रह़ रफ़्ता रफ़्ता क़ल्ब में क़नाअ़त का नूर चमक उठेगा और ह़िर्स व लालच का अन्धेरा बादल छट जाएगा। याद रखो !

हि़र्स ज़िल्लत भरी फ़क़ीरी है

जो क़नाअ़त करे, तवंगर है

﴾4﴿ **कन्जूसी :-** बख़ीली बहुत ही मन्हूस ख़स्लत है। बख़ील माल रखते हुए खाने पीने, पहनने ओढ़ने, वत़न और सफ़र हर जगह हर ह़ाल में हर चीज़ में हर क़िस्म की तक्लीफ़ें उठाता है और हर जगह ज़लील होता है और कोई भी इस को अच्छी नज़र से नहीं देखता है। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि सख़ी **अल्लाह** से क़रीब है। जन्नत से क़रीब है। इन्सानों से क़रीब है। जहन्नम से दूर है और बख़ील **अल्लाह** से दूर है। जन्नत से दूर है। इन्सानों से दूर है। जहन्नम से क़रीब है और यक़ीनन सख़ी जाहिल, इ़बादत गुज़ार बख़ील से ज़ियादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को प्यारा है।

(جامع الترمذی، کتاب البر والصلة ، باب ماجاء فی السخاء، رقم ۱۹٦۸، ج۳، ص۳۸۸)

और हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह भी फ़रमाया है कि धोकेबाज़ और बख़ील और एह़सान जताने वाला जन्नत में नहीं दाख़िल होगा। (جامع الترمذی، کتاب البر والصلة ، باب ماجاء فی البخل، رقم ۱۹۷۰، ج۳، ص۳۸۸)

और येह भी ह़दीष में आया है कि दो ख़स्लतें ऐसी हैं जो दोनों एक साथ मोमिन में इकठ्ठा जम्अ़ नहीं होंगी। एक **कन्जूसी** दूसरी **बद अख़्लाक़ी**। (جامع الترمذی، کتاب البر والصلة ، باب ماجاء فی البخل، رقم ۱۹٦۹، ج۳، ص۳۸۷)

ह़दीष का मत़लब येह है कि येह दोनों ख़स्लतें बुरी हैं और येह दोनों बुरी ख़स्लतें मोमिन में एक साथ नहीं पाई जाएंगी। मोमिन अगर बख़ील होगा तो बद अख़्लाक़ नहीं होगा। और अगर बद अख़्लाक़ होगा तो बख़ील नहीं होगा। और अगर तुम किसी ऐसे मन्हूस आदमी को देखो कि वोह बख़ील भी है और बद अख़्लाक़ भी है तो समझ लो कि उस के ईमान में कुछ फ़ुतूर ज़रूर है और येह कामिल दर्जे का मुसलमान नहीं है।

बुख़्ल का इलाज :- ह़ज़रते इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى ने फ़रमाया कि कन्जूसी एक ऐसा मरज़ है कि इस का इलाज बेह़द दुश्वार है खुसूसन बुड्ढा आदमी बख़ील हो तो वोह तक़्रीबन ला इलाज है और कन्जूसी का सबब माल की मह़ब्बत है । जब तक माल की मह़ब्बत दिल से ज़ाइल नहीं होगी कन्जूसी की बीमारी रफ़्अ़ नहीं हो सकती । फिर भी इस के दो इलाज बहुत ही कामयाब और कार आमद हैं और वोह येह हैं अव्वल येह कि आदमी सोचे कि माल के मक़ासिद क्या हैं ? और मैं किस लिये पैदा किया गया हूं ? और मुझे दुन्या में माल जम्अ़ करने के साथ साथ कुछ आ़लमे आख़िरत के लिये भी ज़ख़ीरा जम्अ़ करना चाहिये जब येह ख़याल दिल में जम जाएगा तो फिर दिल में दुन्या की बे षबाती और आ़लमे आख़िरत का ध्यान पैदा होगा और ना गहां दिल में एक ऐसा नूर पैदा हो जाएगा कि दुन्या से और दुन्या के मालो अस्बाब से बे रग़बती और नफ़रत पैदा होने लगेगी फिर बख़ीली और कन्जूसी की बीमारी खुद ब खुद दफ़्अ़ हो जाएगी और जज़्बए सख़ावत इस त़रह़ पैदा हो जाएगा कि खुदा की राह में माल ख़र्च करते हुए उस को लज़्ज़त मह़सूस होने लगेगी ।

और दूसरा इलाज येह है कि बख़ीलों और सख़ी लोगों की ह़िकायात पढ़े और आ़लिमों से ब कषरत इस क़िस्म के वाक़िआ़त सुनता रहे कि बख़ीलों का अन्जाम कितना बुरा हुवा है और सख़ी लोगों का अन्जाम कितना अच्छा हुवा है इस क़िस्म के वाक़िआ़त व ह़िकायात पढ़ते पढ़ते, सुनते सुनते बख़ीली से नफ़रत और सख़ावत की रग़बत दिल में पैदा हो जाती है और रफ़्ता रफ़्ता कन्जूसी का मरज़ ज़ाइल हो जाता है ।

(احیاء علوم الدین ، کتاب ذم البخل وذم حب المال ، بیان علاج البخل ، ج۳، ص ۳۲۲)

《5》 तकब्बुर :- येह शैत़ानी ख़स्लत इतनी बुरी और इस क़दर तबाह कुन आ़दत है कि येह भूत बन कर जिस इन्सान के सर पर सुवार हो जाए

समझ लो कि उस की दुन्या व आख़िरत की तबाही यक़ीनी है शैत़ान अपनी इस मन्हूस ख़स्लत की वजह से मरदूदे बारगाहे इलाही عزوجل हुवा। और ख़ुदावन्दे क़ह्हार व जब्बार ने ला'नत का तौक़ उस के गले में पहना कर उस को जन्नत से निकाल दिया।

तकब्बुर के मा'नी येह हैं कि आदमी दूसरों को अपने से ह़क़ीर समझे। येही जज़्बा शैत़ाने मलऊ़न के दिल में पैदा हो गया था कि जब **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام के सामने फ़िरिश्तों को सजदा करने का हुक्म फ़रमाया तो फ़िरिश्ते चूंकि तकब्बुर की नुह़ूसत से पाक थे सब फ़िरिश्तों ने सजदा कर लिया लेकिन शैत़ान के सर में तकब्बुर का सौदा समाया हुवा था उस ने अकड़ कर कह दिया कि।

اَنَا خَیْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِیْ مِنْ نَّارٍ وَّ خَلَقْتَهٗ مِنْ طِیْنٍ ۝ (پ۲۳،صٓ:۷٦)

"या'नी मैं ह़ज़रते आदम से अच्छा हूं। ऐ **अल्लाह** ! तूने मुझ को आग से पैदा किया है और आदम को मिट्टी से पैदा फ़रमाया"

उस मलऊ़न ने ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام को अपने से ह़क़ीर समझा और सजदा नहीं किया।

याद रखो कि जिस आदमी में तकब्बुर की शैत़ानी ख़स्लत पैदा हो जाएगी उस का वोही अन्जाम होगा जो शैत़ान का हुवा कि वोह दोनों जहान में ख़ुदावन्दे क़ह्हारो जब्बार की फिटकार से मरदूद और ज़लीलो ख़्वार हो गया। याद रखो कि तकब्बुर ख़ुदा को बेह़द ना पसन्द है और येह बहुत ही बड़ा गुनाह है। **ह़दीष शरीफ़** में है कि जिस शख़्स के दिल में राई बराबर ईमान होगा वोह जहन्नम में नहीं दाख़िल होगा और जिस शख़्स के दिल में राई बराबर तकब्बुर होगा वोह जन्नत में नहीं दाख़िल होगा। (صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب تحریم الکبر وبیانه، رقم ۹۱،ص ٦۱)

एक दूसरी ह़दीष में आया है कि मैदाने मह़शर में तकब्बुर करने वालों को इस त़रह़ लाया जाएगा कि उन की सूरतें इन्सानों की होंगी मगर उन के क़द च्यूंटियों के बराबर होंगे और ज़िल्लत व रुसवाई में येह घिरे

हुए होंगे और येह लोग घसीटते हुए जहन्नम की त़रफ़ लाए जाएंगे और जहन्नम के उस जेलख़ाने में क़ैद कर दिये जाएंगे जिस का नाम ''बोलस'' (ना उम्मीदी) है और वोह ऐसी आग में जलाए जाएंगे जो तमाम आगों को जला देगी जिस का नाम ''**नारुल अन्यार**'' है और उन लोगों को जहन्नमियों का पीप पिलाया जाएगा।

(جامع الترمذی، کتاب صفة القيامة، باب ت، ١١٢، رقم ٢٥٠٠، ج٤، ص٢٢١)

प्यारी बहनो और अ़ज़ीज़ भाइयो ! कान खोल कर सुन लो कि तुम लोग जो खाने, कपड़े, चाल चलन, मकान व सामान, तहज़ीब व तमद्दुन, मालो दौलत हर चीज़ में अपने को दूसरों से अच्छा और दूसरों को ह़क़ीर समझते रहते हो। इसी त़रह़ बा'ज़ उ़-लमा और बा'ज़ इ़बादत गुज़ार इ़ल्मो इ़बादत में अपने को दूसरों से बेहतर और दूसरों को अपने से ह़क़ीर समझ कर अकड़ते हैं। येही **तकब्बुर** है। ख़ुदा के लिये इस शैत़ानी आ़दत को छोड़ दो और तवाज़ोअ़ व इन्किसारी की आ़दत डालो। या'नी दूसरों को अपने से बेहतर और अपने को दूसरों से कमतर समझो।

ह़दीष शरीफ़ में है कि जो शख़्स **अल्लाह** عزوجل के लिये तवाज़ोअ़ व इन्किसारी करेगा **अल्लाह** तआ़ला उस को बुलन्द फ़रमा देगा। वोह ख़ुद को छोटा समझेगा मगर **अल्लाह** तआ़ला तमाम इन्सानों की निगाहों में उस को अ़ज़मत वाला बना देगा और जो शख़्स घमन्ड और तकब्बुर करेगा **अल्लाह** तआ़ला उस को पस्त कर देगा वोह ख़ुद को बड़ा समझेगा मगर **अल्लाह** तआ़ला उस को तमाम इन्सानों की नज़र में कुत्ते और ख़िन्ज़ीर से ज़ियादा ज़लील बना देगा।

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی سعید الخدری، رقم ١١٧٢٤، ج٤، ص١٥٢)

घमन्ड का इ़लाज :- घमन्ड का इ़लाज येह है कि ग़रीबों और मिस्कीनों की सोह़बत में रहने लगे और इन लोगों की ख़िदमत करे। तवाज़ोअ़ व इन्किसारी का त़रीक़ा इख़्तियार करे और अपने दिल में येह ठान ले कि मैं हर मुसलमान की ता'ज़ीम और उस का ए'ज़ाज़ व इकराम करूंगा। ख़्वाह उस के कपड़े कितने ही मैले क्यूं न हों मैं उस को अपने बराबर

बिठाऊंगा और हर वक़्त इस का ध्यान रखे कि ख़ुदावन्दे करीम का शुक्र है कि मुझ को उस ने दूसरों से अच्छा बनाया है लेकिन वोह जब चाहे मुझ को सारे जहान से बद तर बना सकता है अपनी कमतरी और कोताही का ख़याल अगर दिल में जम गया तो तकब्बुर का भूत लाखों कोस दूर भाग जाएगा। (واللہ اعلم)

﴾6﴿ चुग़ली :- या'नी किसी की बात सुन कर किसी दूसरे से इस तौर पर कह देना कि दोनों में इख़्तिलाफ़ और झगड़ा हो जाए। येह बहुत बड़ा गुनाह और बहुत ख़राब आदत है। तजरिबा है कि मर्दों से ज़ियादा औरतें इस गुनाह में मुब्तला हैं। ह़दीष शरीफ़ में चुग़ल ख़ोरी को रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلم ने गुनाहे कबीरा बताया है।

(کتاب الکبائر للامام الذھبی، الکبیرۃ الثالثۃ والاربعون، النمام، ص۱۸۲)

यहां तक कि एक ह़दीष में येह आया है कि चुग़ल ख़ोर जन्नत में नहीं दाख़िल होगा।

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان غلظ تحریم النمیمۃ، رقم ۱۰۵، ص۶۶)

और एक ह़दीष में येह भी है कि तुम लोगों में सब से ज़ियादा ख़ुदा के नज़दीक ना पसन्दीदा वोह है जो इधर उधर की बातों में लगाई बुझाई कर के मुसलमान भाइयों में इख़्तिलाफ़ और फूट डालता है।

(المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث عبد الرحمن بن غنم، رقم ۱۸۰۲۰، ج۶، ص۲۹۱)

और एक ह़दीष में येह भी फ़रमाने रसूल صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلم है कि चुग़ल ख़ोर को आख़िरत से पहले उस की क़ब्र में अ़ज़ाब दिया जाएगा।

(صحیح البخاری، کتاب الوضوء، باب من الکبائر ...الخ، الحدیث۲۱۶، ج۱، ص۹۵)

इस के इ़लावा चुग़ली की बुराई के बारे में बहुत सी ह़दीषें आई हैं।

मुसलमान भाइयो और बहनो ! किसी की कोई बात सुनो तो ख़ूब समझ लो कि तुम इस बात के अमीन हो गए अगर दूसरों तक इस बात के पहुंचाने में कोई दीनो दुन्या का फ़ाइदा हो जब तो तुम ज़रूर इस

बात का चर्चा करो लेकिन अगर इस बात को दूसरों तक पहुंचाने में दो मुसलमानों के दरमियान इख़्तिलाफ़ और झगड़े का अन्देशा हो तो ख़बरदार ख़बरदार हरगिज़ कभी भी इस बात का न चर्चा करो न किसी दूसरे से कहो वरना तुम पर अमानत में ख़ियानत करने और चुग़ुल ख़ोरी का गुनाह होगा और इस गुनाह का दुन्या में भी तुम पर येह वबाल पड़ेगा कि तुम सब की निगाहों में बे वक़ार और ज़लीलो ख़्वार हो जाओगे और आख़िरत में भी अज़ाबे जहन्नम के हक़दार ठहरोगे।

7 ग़ीबत :- किसी को ग़ाइबाना बुरा कहना या पीठ पीछे उस का कोई ऐब बयान करना येही ग़ीबत है चुनान्चे एक हदीष में है कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया कि क्या तुम लोग जानते हो कि ग़ीबत क्या चीज़ है। सहाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने कहा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ियादा जानने वाले हैं। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि तुम्हारा अपने भाई की उन बातों को बयान करना जिन को वोह ना पसन्द समझता है। येही ग़ीबत है तो सहाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह बताइये कि अगर मेरे उस दीनी भाई में वाक़ेई वोह बातें मौजूद हों तो क्या इन बातों का ज़िक्र करना भी ग़ीबत कहलाएगा? हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर उस के अन्दर वोह बातें वाक़ेई होंगी जभी तो तुम उस की ग़ीबत करने वाले कहलाओगे और अगर उस में वोह बातें न हों और तुम अपनी तरफ़ से घड़ कर कहोगे जब तो तुम उस पर बोहतान लगाने वाले हो जाओगे जो एक दूसरा गुनाहे कबीरा है जिस का करने वाला जहन्नम का ईंधन बनेगा।

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلة، باب تحریم الغیبة، رقم ۲۵۸۹، ص ۱۳۹۷)

याद रखो! ग़ीबत इतना बड़ा गुनाह है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यहां तक फ़रमाया कि

اَلْغِيْبَةُ اَشَدُّ مِنَ الزِّنَا या'नी ग़ीबत ज़िना से बड़ा गुनाह है।

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب وغیرہ، باب الترھیب من الغیبة والبھت بیانھما والترغیب فی ردھما، رقم ۲۴، ج۳، ص ۳۳۱)

हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का येह भी इरशाद है कि मैं ने मे'राज की रात में कुछ लोगों को इस ह़ाल में देखा कि वोह जहन्नम में अपने नाख़ुनों से अपने चेहरों को खुरच खुरच कर नोच रहे हैं। मैं ने ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से पूछा कि येह कौन लोग हैं ? तो उन्हों ने बताया कि येह वोह लोग हैं जो दुन्या में लोगों की ग़ीबत और आबरू रेज़ी किया करते थे।

(الترغيب والترهيب، كتاب الادب وغيره، باب الترهيب من الغيبة والبهت، رقم ٢١، ج٣، ص ٣٣٠)

याद रखो कि पीठ पीछे किसी आदमी की उन बातों को बयान करना जिन को वोह पसन्द नहीं करता येह ग़ीबत है ख़्वाह उस का कोई ज़ाहिरी ऐब हो या बातिनी, उस का पैदाइशी ऐब हो या उस का अपना पैदा किया हुवा ऐब हो। उस के बदन, उस के कपड़ों, उस के ख़ानदान व नसब, उस के अक़्वाल व अफ़्आल चाल-ढाल, उस की बोल-चाल ग़रज़ किसी ऐब को भी बयान करना या ता'ना मारना येह सब ग़ीबत ही में दाख़िल है लिहाज़ा इस ग़ीबत के गुनाह से हर मुसलमान मर्द व औरत को बचना लाज़िम और ज़रूरी है।

क़ुरआने मजीद में **अल्लाह** तआला ने इरशाद फ़रमाया कि :

وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ. (پ٢٦،الحجرات:١٢)

"और एक दूसरे की ग़ीबत न करो। तुम में कोई येह पसन्द करेगा कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए ? तो येह तुम्हें गवारा न होगा।

मत़लब येह है कि ग़ीबत इस क़दर घिनावना गुनाह है जैसे अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाना तो जिस त़रह़ तुम हरगिज़ हरगिज़ कभी येह गवारा नहीं कर सकते कि अपने मरे हुए भाई की लाश का गोश्त काट काट कर खाओ। इसी त़रह़ हरगिज़ हरगिज़ कभी किसी की ग़ीबत मत किया करो।"

किन किन लोगों की ग़ीबत जाइज़ है ? :- ह़ज़रते अ़ल्लामा अबू ज़करिया मुह़्युद्दीन बिन शरफ़ नववी (मुतवफ़्फ़ा 676 हि.) ने मुस्लिम शरीफ़ की शर्ह़ में लिखा है कि शरई अग़राज़ व मक़ासिद के लिये किसी की ग़ीबत करनी जाइज़ और मुबाह़ है और इस की छे सूरतें हैं ।

अव्वल मज़्लूम का ह़ाकिम के सामने किसी ज़ालिम के ज़ालिमाना ऊ़यूब को बयान करना । ताकि उस की दाद रसी हो सके ।

दुवुम किसी शख़्स की बुराइयों को रोकने के लिये किसी साह़िबे इक़्तिदार के सामने उस की बुराइयों को बयान करना ताकि वोह अपने रो'ब दाब से उस शख़्स को बुराइयों से रोक दे ।

सिवुम मुफ़्ती के सामने फ़तवा त़लब करने के लिये किसी के ऊ़यूब को पेश करना ।

चहारुम मुसलमानों को शर व फ़साद और नुक़्सान से बचाने के लिये किसी के ऊ़यूब को बयान कर देना मषलन झूटे राावियों, झूटे गवाहों, बद मज़्हबों की गुमराहियों, झूटे मुसन्निफ़ों और वाइज़ों के झूट और इन लोगों के मक्रो फ़रैब को लोगों से बयान कर देना । ताकि लोग गुमराही के नुक़्सान से बच जाएं इसी त़रह़ शादी बियाह के बारे में मश्वरा करने वाले से फ़रीक़े षानी के वाक़ेई ऐ़बों को बता देना या ख़रीदारों को नुक़्सान से बचाने के लिये सामान या सौदा बेचने वाले के ऊ़यूब से लोगों को आगाह कर देना ।

पन्जुम जो शख़्स अ़लल ए'लान फ़िस्क़ो फुजूर और क़िस्म क़िस्म के गुनाहों का मुर्तकिब हो मषलन चोर, डाकू, ज़िनाकार, ख़ियानत करने वाला, ऐसे अश्ख़ास के ऊ़यूब को लोगों से बयान कर देना ताकि लोग नुक़्सान से मह़फ़ूज़ रहें और इन लोगों के फन्दों में न फंसें ।

शशुम किसी शख़्स की पहचान कराने के लिये उस के किसी मश्हूर ऐ़ब को उस के नाम के साथ ज़िक्र कर देना । जैसे ह़ज़राते मुह़द्दिषीन का त़रीक़ा है कि एक ही नाम के चन्द रावियों में इम्तियाज़ और उन की पहचान के

लिये आ'मश (चुंधा) आ'रज (लंगड़ा) आ'मा (अन्धा) अह़वल (भेंगा) वग़ैरा ऐ़बों को उन के नामों के साथ ज़िक्र कर देते हैं। जिस का मक़्सद हरगिज़ हरगिज़ न तौहीन व तन्क़ीस है न ईज़ा रसानी बल्कि इस का मक़्सद सिर्फ़ रावियों की शनाख़्त और इन की पहचान का निशान बताना है।

(شرح صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ والادب، باب تحریم الغیبۃ، تحت حدیث الغیبۃ ذکرک اخاک...الخ، ج ۱، ص ۳۲۲)

ऊपर ज़िक्र की हुई सूरतों में चूंकि किसी के ऐ़बों को बयान कर देना है इस लिये बिला शुबा येह ग़ीबत तो है। लेकिन इन सूरतों में शरीअ़त ने जाइज़ रखा है कि अगर कोई शख़्स किसी की ग़ीबत कर दे तो न कोई ह़रज है न कोई गुनाह बल्कि बा'ज़ सूरतों में इस क़िस्म की ग़ीबत मुसलमानों पर वाजिब हो जाती है। मषलन ऐसे मौक़ओ़ं पर कि अगर तुम ने किसी के ऐ़ब को बयान न कर दिया तो किसी मुसलमान के नुक़्सान में पड़ जाने का यक़ीन या ग़ालिब गुमान हो। मिषाल के त़ौर पर एक मुसलमान रक़म ले कर जा रहा हो और एक सफ़ेद पोश डाकू तस्बीह़ व मुसल्ला लिये बुज़ुर्ग बन कर उस मुसलमान के साथ साथ चल रहा हो और मुसलमान बिल्कुल ही इस डाकू के बारे में ला इ़ल्म हो और तुम को यक़ीन है कि येह डाकू ज़रूर ज़रूर उस भोले भाले मुसलमान को धोका दे कर लूट लेगा और तुम इस डाकू के ऐ़ब को जानते हो तो इस सूरत में एक भोले भाले मुसलमान को नुक़्सान से बचाने के लिये डाकू के ऐ़ब को उस मुसलमान से बयान कर देना तुम पर वाजिब है। ह़ज़रते शैख़ सा'दी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इसी बात को इस त़रह़ बयान फ़रमाया है कि

اگر بینی کہ نابینا وچاہ است اگر خاموش می مانی گناہ است

या'नी तुम अगर देखो कि एक अन्धा जा रहा है और उस के आगे कुंवां है तो तुम पर लाज़िम है कि अन्धे को बता दो कि तेरे आगे कुंवां है इस से बच कर चल। और अगर तुम उस को देख कर चुप रह गए और अन्धा कुंवें में गिर पड़ा तो यक़ीनन तुम गुनाहगार ठहरोगे।

﴾8﴿ बोहतान :– झूट–मूट अपनी त़रफ़ से गढ़ कर किसी पर कोई इल्ज़ाम या ऐब लगाना इस को इफ़्तरा, तोहमत और बोहतान कहते हैं। येह बहुत ख़बीष और ज़लील आ़दत है और बहुत बड़ा गुनाह है। ख़ास कर किसी पाक दामन मर्द या औ़रत पर ज़िनाकारी की तोहमत लगाना येह तो इतना बड़ा गुनाह है कि शरीअ़त के क़ानून में इस शख़्स को अस्सी (80) कोड़े मारे जाएंगे और उ़म्र भर किसी मुआ़मले में इस की गवाही क़बूल नहीं कि जाएगी और क़ियामत के दिन येह शख़्स दोज़ख़ के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार होगा।

﴾9﴿ झूट :– येह वोह गन्दी घिनावनी और ज़लील आ़दत है कि दीनो दुन्या में झूटे का कहीं कोई ठिकाना नहीं। झूटा आदमी हर जगह ज़लीलो ख़्वार होता है और हर मजलिस और हर इन्सान के सामने बे वक़ार और बे ए'तिबार हो जाता है और येह बड़ा गुनाह है कि **अल्लाह** तआ़ला ने कुरआने मजीद में ए'लान फ़रमा दिया है कि :

لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ. (پ۳، آلِ عمران: ٦١)

या'नी कान खोल कर सुन लो कि झूटों पर ख़ुदा की ला'नत है और वोह ख़ुदा की रह़मतों से मह़रूम कर दिये जाते हैं। कुरआने मजीद की बहुत सी आयतों और बहुत सी ह़दीषों में झूट की बुराइयों का बयान है। इस लिये याद रखो कि हर मुसलमान मर्द व औ़रत पर फ़र्ज़ है कि इस ला'नती आ़दत से ज़िन्दगी भर बचता रहे। बहुत से मां–बाप बच्चों को चुप कराने के लिये डराने के तौ़र पर कह दिया करते हैं कि चुप रहो घर में "माऊं" बैठा है या चुप रहो सन्दूक़ में लड्डू रखे हुए हैं तुम रोओगे तो सब लड्डू धूल मिट्टी हो जाएंगे। ह़ालांकि न घर में "माऊं" होता है न सन्दूक़ में लड्डू होते हैं न रोने से लड्डू धूल मिट्टी हो जाते हैं तो ख़ूब समझ लो येह सब भी झूट ही है। इस क़िस्म की बोलियां बोल कर वालिदैन गुनाहे कबीरा करते रहते हैं और इस क़िस्म की बातों को लोग

झूट नहीं समझते । ह़ालांकि यक़ीनन **हर वोह बात जो वाक़िए के ख़िलाफ़ हो झूट है** और हर झूट ह़राम है ख़्वाह बच्चे से झूटी बात कहो या बड़े से । आदमी से झूटी बात कहो या जानवर से । झूट बहर ह़ाल झूट है और झूट ह़राम है ।

कब और कौन सा झूट जाइज़ है :- काफ़िर या ज़ालिम से अपनी जान बचाने के लिये या दो मुसलमानों को जंग से बचाने और सुल्ह़ कराने के लिये अगर कोई झूटी बात बोल दे तो शरीअ़त ने इस की रुख़्सत दी है । मगर जहां तक हो सके इस मौक़अ़ पर भी ऐसी बात बोले और ऐसे अल्फ़ाज़ मुंह से निकाले कि खुला हुवा झूट न हो बल्कि किसी मा'ना के लिह़ाज़ से वोह सह़ीह़ भी हो इस को अ़रबी ज़बान में "**तोरिया**" कहते हैं । मषलन डाकू ने तुम से पूछा कि तुम्हारे पास माल है कि नहीं ? और तुम को यक़ीन है कि अगर मैं इक़रार कर लूंगा तो डाकू मुझे क़त्ल कर के मेरा माल लूट लेगा तो उस वक़्त येह कह दो "मेरे पास कोई माल नहीं है" और निय्यत येह कर लो कि मेरी जेब या मेरे हाथ में कोई माल नहीं है ।

बॉक्स या झोले में है तो इस मा'नी के लिह़ाज़ से तुम्हारा येह कहना कि मेरे पास कोई माल नहीं है येह सच है और इस मा'नी के लिह़ाज़ से मेरी मिल्किय्यत में कोई माल नहीं है येह झूट है । इसी क़िस्म के अल्फ़ाज़ को अ़रबी में "**तोरिया**" कहा जाता है । और जहां जहां येह लिखा हुवा है कि फ़ुलां फ़ुलां मौक़ओं पर मुसलमान झूट बोल सकता है । इसी का येही मत़लब है कि "**तोरिया**" के अल्फ़ाज़ बोले । और अगर खुला हुवा झूट बोलने पर कोई मुसलमान मजबूर कर दिया जाए तो उस को लाज़िम है कि वोह दिल से इस झूट को बुरा जानते हुए जानो माल को बचाने के लिये सिर्फ़ ज़बान से झूट बोल दे और इस से तौबा कर ले । (وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعلم)

《10》 ऐ़बजोई :- इधर उधर कान लगा कर लोगों की बातों को छुप छुप कर सुनना या ताक झांक कर लोगों के ऐ़बों को तलाश करना। येह बड़ी ही छिछोरी ह़रकत और ख़राब आ़दत है। दुन्या में इस का अन्जाम बदनामी और ज़िल्लत व रुसवाई है और आख़िरत में इस की सज़ा जहन्नम का अ़ज़ाब है ऐसा करने वालों के कानों और आंखों में क़ियामत के दिन सीसा पिघला कर डाला जाएगा। क़ुरआने मजीद में और ह़दीषों में ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस और हमारे रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि

“وَلَا تَجَسَّسُوْا”

(الترغيب والترهيب، كتاب الادب وغيره، الترهيب من الحسد وفضل السلامة الصدر، رقم ١، ج٣، ص٣٤٦)

या'नी किसी के ऐ़बों को तलाश करना ह़राम और गुनाह है मर्दों की ब निस्बत औ़रतों में येह ऐ़ब ज़ियादा पाया जाता है लिहाज़ा प्यारी बहनो ! तुम इस गुनाह से खुद भी बचो और दूसरी औ़रतों को भी बचाओ।

《11》 गाली गलोच :- इस गन्दी आ़दत की बुराई हर छोटा बड़ा जानता है। यक़ीनन फोहड़ और फ़ोह़्श अल्फ़ाज़ और गन्दे कलामों को बोलना येह कमीनों और रज़ील व ज़लील लोगों का त़रीक़ा है। और शरीअ़त में ह़राम व गुनाह है। ह़दीष शरीफ़ में है कि

سِبَابُ الْمُسْلِمِ فُسُوْقٌ ـ

(صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب بيان قول النبي ...... الخ، رقم ٦٤، ص٥٢)

या'नी किसी मुसलमान से गाली गलोच करना येह फ़ासिक़ का काम है

आज कल औ़रत व मर्द सभी इस बला में मुब्तला हैं जिस का नतीजा येह है कि बड़ों की फ़ोह़्श कलामियों और गालियों को सुन सुन कर बच्चे भी गन्दी और फोहड़ गालियां बकने लगते हैं और फिर बचपन से बुढ़ापे तक इस गन्दी आ़दत में गिरिफ़्तार रहते हैं लिहाज़ा हर मर्द व औ़रत पर लाज़िम है कि कभी हरगिज़ हरगिज़ गालियां और गन्दे अल्फ़ाज़

मुंह से न निकालें। कौन नहीं जानता कि कभी कभी गाली गलोच की वजह से ख़ूंरेज़ियां–लड़ाइयां हो जाया करती हैं और मुसलमानों की जान व माल का अ़ज़ीम नुक़्सान हो जाया करता है इस लिये मुस्लिम मुआ़शरे को तबाह करने में बद ज़बानियों और गालियों का बहुत बड़ा दख़्ल है। लिहाज़ा इस आ़दत को तर्क कर देना बेह़द ज़रूरी है ख़ास कर औ़रतों को अपनी सुसराल में इस का हर वक़्त ख़याल रखना चाहिये। क्यूंकि सेंकड़ों औ़रतों को त़लाक़ उन की बद ज़बानियों और गालियों की वजह से हो जाया करती है और फिर मैके और सुसराल वालों में मुस्तक़िल झगड़ों की बुन्याद पड़ जाती है और दोनों ख़ानदान तबाही व बरबादी के ग़ार में गिर कर हलाक हो जाते हैं।

﴾12﴿ **फ़ुज़ूल बकवास :–** मर्दों और औ़रतों की बुरी आ़दतों में से एक बहुत बुरी आ़दत बहुत ज़ियादा बोलना और फ़ुज़ूल बकवास है। कम बोलना और ज़रूरत के मुत़ाबिक़ बात चीत येह बहुत ही पसन्दीदा आ़दत है। ज़रूरत से ज़ियादा बात और फ़ुज़ूल की बकवास का अन्जाम येह होता है कि कभी कभी ऐसी बातें भी ज़बान से निकल जाती हैं जिस से बहुत बड़े बड़े फ़ित्ने पैदा हो जाते हैं और शर व फ़साद के तूफ़ान उठ खड़े होते हैं। इस लिये रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि

وَ کَرِہَ لَکُمْ قِیْلَ وَ قَالَ وَ کَثْرَۃَ السُّوَالِ وَ اِضَاعَۃَ الْمَالِ۔

(صحیح البخاری، کتاب الزکاۃ،باب قول اللہ تعالٰی لا یسألون الناس إلحافا، الحدیث ۱٤۷۷، ج ۱، ص ٤۹۸)

या'नी **अल्लाह** तआ़ला को येह ना पसन्द है कि बिला ज़रूरत क़ील और क़ाल और फ़ुज़ूल अक़्वाल आदमी की ज़बान से निकलें। इसी त़रह कषरत से लोगों के सामने किसी चीज़ का सुवाल करते रहना और फ़ुज़ूल कामों में अपने मालों को बरबाद करना येह भी **अल्लाह** तआ़ला को ना पसन्द है येह भी सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि अपनी ज़बानों को फ़ुज़ूल बातों से हमेशा बचाए रखो।

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب وغیرہ، الترغیب فی الصمت الاعن خیر والترھیب من کثرۃ الکلام، رقم ٥، ج ۳، ص ۳۳٦)

क्यूंकि बहुत सी फ़ुज़ूल बातें ऐसी भी ज़बानों से निकल जाती हैं जो बोलने वालों को जहन्नम में पहुंचा देती हैं। इसी लिये तमाम बुज़ुर्गों ने येह फ़रमाया है कि तीन आ़दतों को लाज़िम पकड़ो। कम बोलना, कम सोना, कम खाना क्यूंकि ज़ियादा बोलना, ज़ियादा सोना, ज़ियादा खाना, येह आ़दतें बहुत ही ख़राब हैं और इन आ़दतों की वजह से इन्सान दीनो दुन्या में ज़रूर नुक़्सान उठाता है।

﴾13﴿ **नाशुक्री :-** ख़ुदावन्दे करीम के इन्आ़मों और इन्सानों के एह़सानों की नाशुक्री, इस मन्हूस और बुरी आ़दत में नव्वे फ़ीसद मर्द व औ़रत गिरिफ़्तार हैं। बल्कि औ़रतें तो निनानवे फ़ीसद इस बला में मुब्तला हैं। ज़रा किसी घराने को या किसी औ़रत के कपड़ों या ज़ेवरात को अपने से ख़ुशह़ाल और अच्छा देख लिया तो ख़ुदा की नाशुक्री करने लगती हैं और कहने लगती हैं कि ख़ुदा ने हमें ना मा'लूम किस जुर्म की सज़ा में मुफ़्लिस और ग़रीब बना दिया। ख़ुदा का हम पर कोई फ़ज़्ल ही नहीं होता। मैं नगोड़ी ऐसे फूटे करम ले कर आई हूं कि न मैके में सुख नसीब हुवा न सुसराल में ही कुछ देखा। फ़ुलानी फ़ुलानी घी दूध में नहा रही है। और मैं फ़ाक़ों से मर रही हूं। इसी त़रह़ औ़रतों की आ़दत है कि उस का शोहर अपनी त़ाक़त भर कपड़े, ज़ेवरात, साज़ो सामान देता रहता है लेकिन अगर कभी किसी मजबूरी से औ़रत की कोई फ़रमाइश पूरी नहीं कर सका तो औ़रतें कहने लगती हैं कि तुम्हारे घर में हाए हाए कभी सुख नसीब नहीं हुवा। इस उजड़े घर में हमेशा नंगी भूकी ही रह गई। कभी भी तुम्हारी त़रफ़ से मैं ने कोई भलाई देखी ही नहीं। मेरी क़िस्मत फूट गई तुम्हारे जैसे फ़तो फ़क़ीर से बियाही गई। मेरे मां-बाप ने मुझे भाड़ में झोंक दिया। इस क़िस्म की नाशुक्री करती और जली कटी बातें सुनाती रहती हैं। चुनान्चे हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मैं

ने जहन्नम में ज़ियादा ता'दाद औरतों की देखी तो सहाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने कहा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इस की क्या वजह है कि औरतें ज़ियादा जहन्नमी हो गईं तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इस का सबब येह है कि औरतें एक दूसरे पर बहुत ज़ियादा ला'नत मलामत करती रहती हैं और नाशुक्री करती रहती हैं। तो सहाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم क्या औरतें ख़ुदा की नाशुक्री किया करती हैं ? आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि औरतें एह़सान की नाशुक्री करती हैं और अपने शोहरों की नाशुक्री करती हैं। इन औरतों की येह आदत है कि तुम ज़िन्दगी भर में इन के साथ एह़सान करते रहो लेकिन अगर कभी कुछ भी कमी देखेंगी तो येही कह देंगी कि मैं ने कभी भी तुम्हारी त़रफ़ से कोई भलाई देखी ही नहीं।

(صحیح البخاری ، کتاب الایمان ، باب کفران العشیر ۔۔۔الخ، رقم ۲۹ ، ج ۱ ، ص ۲۳)

अज़ीज़ बहनो ! सुन लो ख़ुदा के इन्आ़मों और शोहर या दूसरों के एह़सानों की नाशुक्री बहुत ही ख़राब आ़दत और बहुत बड़ा गुनाह है। हर मुसलमान मर्द व औ़रत के लिये लाज़िम है कि वोह हमेशा अपने से कमज़ोर और गीरी हुई ह़ालत वालों को देखा करे कि अगर मेरे पास घटिया कपड़े और ज़ेवर हैं तो ख़ुदा का शुक्र है कि फ़ुलां और फ़ुलानी से तो हम बहुत ही अच्छी ह़ालत में हैं कि इन लोगों को बदन ढांपने के लिये फटे पुराने कपड़े भी नसीब नहीं होते। इसी त़रह़ अगर मेरे शोहर ने मेरे लिये मा'मूली गिज़ा का इन्तिज़ाम किया है तो इस पर भी शुक्र है क्यूंकि फ़ुलानी फ़ुलानी औ़रतें तो फ़ाक़ा किया करती हैं। बहर ह़ाल अगर तुम अपने से कमज़ोर और ग़रीबों पर नज़र रखोगी तो शुक्र अदा करोगी और अगर तुम अपने से मालदारों पर नज़र करोगी तो तुम नाशुक्री की बला में फंस कर अपने दीनो दुन्या को तबाहो बरबाद कर डालोगी। इस लिये लाज़िम है कि नाशुक्री की आ़दत छोड़ कर हमेशा ख़ुदा के इन्आ़मों और

शोहर वग़ैरा के एह्सानों का शुक्रिया अदा करते रहना चाहिये। अल्लाह तआ़ला कुरआने मजीद में फ़रमाता है।

لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ ۝ (پ۱۳،ابراهيم:۷)

"या'नी अगर तुम शुक्र अदा करते रहोगे तो मैं ज़ियादा से ज़ियादा ने'मतें देता रहूंगा। और अगर तुम ने नाशुक्री की तो मेरा अ़ज़ाब बहुत ही सख़्त है।"

इस आयत ने ए'लान कर दिया कि शुक्र अदा करने से खुदा की ने'मतें बढ़ती हैं और नाशुक्री करने से खुदा का अ़ज़ाब उतर पड़ता है।

﴾14﴿ झगड़ा-तकरार :- बात बात पर सास सुसर बहु या शोहर या आ़म मुसलमान मर्दों और औ़रतों से झगड़ा तकरार कर लेना येह भी बहुत बुरी आ़दत है और गुनाह का काम है। ह़दीष शरीफ़ में है कि झगड़ालू आदमी खुदा को बेह़द ना पसन्द है।

(جامع الترمذی، کتاب تفسیر القرآن، باب ۲۳، الحدیث ۲۹۸۷، ج ٤، ص ٤٥٦)

इस लिये अगर किसी से कोई इख़्तिलाफ़ हो जाए या मिज़ाज के ख़िलाफ़ कोई बात हो जाए तो सहूलत और मा'कूल गुफ़्त्गू से मुआ़मलात को तै़ कर लेना निहायत ही उ़म्दा और बेहतरीन आ़दत है झगड़े तकरार की आ़दत कमीनों और बद तहज़ीब लोगों का त़रीक़ा है और येह आ़दत इन्सान के लिये एक बहुत ही बड़ी मुसीबत है क्यूंकि झगड़ालू आदमी का कोई भी दोस्त नहीं होता बल्कि वोह हर शख़्स की निगाहों में क़ाबिले नफ़रत हो जाता है और लोग इस के झगड़े के डर से इस को मुंह नहीं लगाते इस से बात नहीं करते।

﴾15﴿ **काहिली :-** येह ऐसी मुन्हूस आ़दत है कि इस की वजह से सेंकड़ों दूसरी ख़राब आ़दतें पैदा हो जाती हैं । ज़ाहिर है कि मकान, सामान, कपड़ों और बदन की गन्दगी, बरतनों सामानों की बे तरतीबी, वक़्त पर खाने पीने से मह़रूमी, शोहर और सुसराल वालों से नाराज़ी, बच्चों का फोहड़ पन, त़रह़ त़रह़ की बीमारियां वग़ैरा वग़ैरा येह सारी बलाएं और मुसीबतें इसी काहिली के सब अन्डे बच्चे हैं । इसी लिये इस आ़दत को हरगिज़ हरगिज़ अपने क़रीब नहीं आने देना चाहिये बल्कि दीनो दुन्यावी कामों में हर वक़्त चाक़ो चौबन्द हो कर लगे रहना चाहिये । ख़ूब याद रखो ! कि मेहनती आदमी हर शख़्स का प्यारा होता है और काहिल आदमी हर एक दर से फिटकारा जाता है और हर काम में मार पड़ती है । काहिल आदमी न दुन्या का काम कर सकता है न दीन का इसी लिये रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم येह दुआ़ मांगा करते थे कि

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْكَسَلِ ۔

(جامع الترمذی، کتاب الدعوات ، باب ۷۱،رقم ۳٤۹٦،ج٥،ص ۲۹٤)

या'नी ऐ **अल्लाह** ! मैं काहिली से तेरी पनाह मांगता हूं ।

﴾16﴿ **ज़िद :-** अपनी किसी बात पर इस त़रह़ अड़ जाना कि कोई लाख समझाए मगर किसी की बात और सिफ़ारिश क़बूल न करे । इस बुरी ख़स्लत का नाम "ज़िद" है येह इस क़दर ख़राब और मन्हूस आ़दत है कि आदमी की दुन्या व आख़िरत को तबाहो बरबाद कर डालती है ऐसे आदमी को दुन्या में सब लोग "**ज़िद्दी**" और "**हट धर्म**" कहने लगते हैं और कोई भी इस को मुंह लगाने और इस से बात करने के लिये तय्यार नहीं होता । येही वोह ख़बीष आ़दत थी जिस ने अबू जहल को जहन्नम में धकेल दिया कि हमारे पैग़म्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और मोमिनों ने इस को लाखों मरतबा समझाया और इस ने शक़्क़ुल क़मर और कंकरियों के कलिमा पढ़ने का मो'जिज़ा भी देख लिया मगर फिर भी अपनी ज़िद पर अड़ा रहा और ईमान न लाया । क़ुरआनो ह़दीष में येह हुक्म है कि हर

मुसलमान मर्द व औरत पर लाज़िम है कि अपने बुज़ुर्गों और मुख़्लिस दोस्तों का मश्वरा ज़रूर मान ले और मुसलमानों की जाइज़ सिफ़ारिश को क़बूल कर के अपनी राए और अपनी बात को छोड़ दे और हक़ ज़ाहिर हो जाने के बा'द हरगिज़ हरगिज़ अपनी राए और अपनी बात पर ज़िद कर के अड़ा न रहे। बहुत से आदमी ख़ास तौर से औरतें इस बुरी आदत में मुब्तला हैं। खुदा के लिये इन सब को चाहिये कि इस बुरी आदत को छोड़ कर दोनों जहान की सआदतों से सरफ़राज़ हों।

﴾17﴿ **बद गुमानी :-** बहुत से मर्दों और औरतों की येह आदत होती है कि जहां इन्हों ने दो आदमियों को अलग हो कर चुपके चुपके बातें करते हुए देखा तो फ़ौरन इन को येह बद गुमानी हो जाती है कि येह मेरे ही मुतअ़ल्लिक़ कुछ बातें हो रही हैं और मेरे ही ख़िलाफ़ कोई साज़िश हो रही है इसी तरह औरतें अगर अपने शोहरों को अच्छा लिबास पहन कर कहीं जाते हुए देखती हैं या शोहरों को किसी औरत के बारे में कुछ कहते हुए सुन लेती हैं तो इन को फ़ौरन अपने शोहरों के बारे में येह बद गुमानी हो जाती है कि ज़रूर मेरे शोहर की फ़ुलानी औरत से कुछ साज़ बाज़ है इसी तरह शोहरों का हाल है कि अगर इन की बीवियां मैके में ज़ियादा ठहर गईं या मैके के रिश्तेदारों से बात या इन की ख़ातिर व मदारात करने लगें तो शोहरों को येह बद गुमानी हो जाती है कि मेरी बीवी फ़ुलां फ़ुलां मर्दों से महब्बत करती है कहीं कोई बात तो नहीं है ! बस इस बद गुमानी में तरह तरह की जुस्त्जू और टोह लगाने की फ़िक्र में मुब्तला हो कर दिन रात दिमाग़ में अलम ग़लम क़िस्म के ख़यालात की खिचड़ी पकाने लगते हैं और कभी कभी राई का पहाड़ और फांस का बांस बना डालते हैं।

प्यारी बहनो और भाइयो ! याद रखो कि बद गुमानियों की येह आ़दत बहुत बुरी बला और बहुत बड़ा गुनाह है।

कुरआने मजीद में **अल्लाह** तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया कि

اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ ۔ (پ۲٦،الحجرات:۱۲)

या'नी बा'ज़ गुमान गुनाह हैं

लिहाज़ा जब तक खुली हुई दलील से तुम को किसी बात का यक़ीन न हो जाए हरगिज़ हरगिज़ मह्ज़ बे बुन्याद गुमानों से कोई राए क़ाइम न कर लिया करो।

﴾15﴿ **कान का कच्चा :-** बहुत से मर्दों और औ़रतों में येह ख़राब आ़दत हुवा करती है कि अच्छा बुरा या सच्चा झूटा जो आदमी भी कोई बात कह दे इस पर यक़ीन कर लेते हैं और बिला छान बीन और तह्क़ीक़ात के इस बात को मान कर इस पर त़रह़ त़रह़ के ख़यालात व नज़रिय्यात का मह्ल ता'मीर करने लगते हैं येह वोह आ़दते बद है जो आदमी को शुकूक व शुब्हात के दल दल में फंसा देती है और ख़्वाह म ख़्वाह आदमी अपने मुख़्लिस दोस्तों को दुश्मन बना लेता है और खुद ग़रज़ व फ़ितना परवर लोग अपनी चालों में काम्याब हो जाते हैं। इस लिये खुदावन्दे कुद्दूस ने कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया कि

اِنْ جَآءَ كُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْا (پ۲٦،الحجرات:٦)

"या'नी जब कोई फ़ासिक़ आदमी तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तुम ख़ूब अच्छी त़रह़ जांच पड़ताल कर लो।"

मत़लब येह है कि हर शख़्स की ख़बर पर भरोसा कर के तुम यक़ीन मत कर लिया करो बल्कि ख़ूब अच्छी त़रह़ तह्क़ीक़ात और छान बीन कर के ख़बरों पर ए'तिमाद करो। वरना तुम से बड़ी बड़ी ग़लतियां होती रहेंगी। लिहाज़ा ख़बरदार ! ख़बरदार ! कान के कच्चे मत बनो और हर आदमी की बात सुन कर बिला तह्क़ीक़ात किये न मान लिया करो।

﴾19﴿ रियाकारी :- कुछ मर्दों और औ़रतों की येह ख़राब आ़दत होती है कि वोह दीन या दुन्या का जो काम भी करते हैं वोह शोहरत व नामवरी और दिखावे के लिये करते हैं। इस ख़राब आ़दत का नाम "रियाकारी" है और येह सख़्त गुनाह है ह़दीष शरीफ़ में है कि रियाकारी करने वालों को क़ियामत के दिन खुदा का मुनादी इस त़रह़ मैदाने मेह़शर में पुकारेगा कि ऐ बदकार। ऐ बद अ़हद। ऐ रियाकार ! तेरा अ़मल ग़ारत हो गया और तेरा षवाब बरबाद हो गया। तू खुदा के दरबार से निकल जा और उस शख़्स से अपना षवाब त़लब कर जिस के लिये तूने अ़मल किया था।

(سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب الرياء والسمعة، رقم ۴۲۰۳، ج۴، ص ۴۷۰)

इसी त़रह़ एक दूसरी ह़दीष में है कि जिस अ़मल में ज़र्रा भर भी रियाकारी का शाइबा हो उस अ़मल को **अल्लाह** तआ़ला क़बूल नहीं फ़रमाता है। (الترغيب والترهيب، الترهيب من الرياء...الخ، رقم ۲۷، ج۱، ص ۳۶)

और येह भी ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जहन्नम में एक ऐसी वादी है जिस को **अल्लाह** तआ़ला ने रियाकारी करने वाले क़ारियों के लिये तय्यार फ़रमाया है।

(جامع الترمذي، كتاب الزهد، باب ماجاء في الرياء، رقم ۲۳۹۰، ج۴، ص ۱۷۰)

﴾20﴿ ता'रीफ़ पसन्दी :- कुछ मर्द व औ़रतें इस ख़राब आ़दत में मुब्तला हैं कि जो शख़्स उन के मुंह पर उन की ता'रीफ़ कर दे वोह इस से खुश हो जाते हैं और जो शख़्स उन के ऐ़बों की निशान देही कर दे इस पर मारे गुस्से के आग बगूला हो जाते हैं। आदमी की येह ख़स्लत भी निहायत नाक़िस और बहुत बुरी आ़दत है। अपनी ता'रीफ़ को पसन्द करना और अपनी तन्क़ीद पर नाराज़ हो जाना येह बड़ी बड़ी गुमराहियों और गुनाहों का सर चश्मा है इस लिये अगर कोई शख़्स तुम्हारी ता'रीफ़ करे तो तुम अपने दिल में सोचो अगर वाक़ेई वोह ख़ूबी तुम्हारे अन्दर मौजूद हो तो तुम इस पर खुदा का शुक्र अदा करो कि उस ने तुम को इस की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाई और हरगिज़ अपनी इस ख़ूबी पर अकड़ कर

इतरा कर खुश न हो जाओ। और अगर कोई शख़्स तुम्हारे सामने तुम्हारी ख़ामियों को बयान करे तो हरगिज़ हरगिज़ इस पर नाराज़ी का इज़्हार न करो। बल्कि उस को अपना मुख़्लिस दोस्त समझ कर उस की क़द्र करो और अपनी ख़ामियों की इस्लाह़ कर लो और इस बात को अच्छी त़रह़ ज़ेह्न नशीन कर लो कि हर ता'रीफ़ करने वाला दोस्त नहीं हुवा करता और हर तन्क़ीद करने वाला दुश्मन नहीं हुवा करता। क़ुरआनो ह़दीष की मुक़द्दस ता'लीम से पता चलता है कि अपनी ता'रीफ़ पर खुश हो कर फूल जाने वाला आदमी **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बेह़द ना पसन्द है और इस क़िस्म के मर्दों और औ़रतों के इर्द गिर्द अकषर चापलूसी करने वालों का मजमअ़ इकठ्ठा हो जाया करता है और येह खुद ग़रज़ लोग ता'रीफ़ों का पुल बांध कर आदमी को बे वुक़ूफ़ बनाया करते हैं। और झूटी ता'रीफ़ों से आदमी को उल्लू बना कर अपना मत़लब निकाल लिया करते हैं। और फिर लोगों से अपनी मत़लब बरआरी और बे वुक़ूफ़ बनाने की दास्तान बयान कर के लोगों को खुश त़बई और हंसने हंसाने का सामान फ़राहम करते रहते हैं। लिहाज़ा हर मर्द व औ़रत को चापलूसी करने वालों और मुंह पर ता'रीफ़ करने वालों की अ़य्याराना चालों से होशियार रहना चाहिये और हरगिज़ हरगिज़ अपनी ता'रीफ़ सुन कर खुश न होना चाहिये।

चन्द अच्छी आ़दतें

﴾1﴿ **ह़िल्म :-** गुस्से को बरदाश्त कर लेना और गुस्सा दिलाने वाली बातों पर गुस्सा न करना इस को ह़िल्म और बुर्दबारी कहते हैं येह मुसलमान की बहुत ही बुलन्द मर्तबा आ़दत है और इस आ़दत वाले को खुदावन्दे क़ुद्दूस दुन्या व आख़िरत में बड़े बड़े मरातिब व दर्जात अ़त़ा फ़रमाता है चुनान्चे क़ुरआने मजीद में रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُهٗ ने फ़रमाया कि

وَالْكَاظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ .(پ ٤، آل عمران : ١٣٤)

"या'नी गुस्सा पी जाने वालों, और लोगों को मुआ़फ़ कर देने वालों (और इस क़िस्म के अच्छे अच्छे काम करने वालों) को अल्लाह तआ़ला अपना मह़बूब बना लेता है।"

अल्लाह अक्बर ! गुस्से को ज़ब्त और बरदाश्त करने वालों को खुदावन्दे क़ुद्दूस अपना मह़बूब बना लेता है। سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ कोई बन्दा या बन्दी अल्लाह तआ़ला का महबूब और प्यारा बन जाए इस से बढ़ कर और कौन सी दूसरी ने'मत हो सकती है ?

लिहाज़ा प्यारी बहनो और भाइयो ! तुम अपनी येह आ़दत बना लो कि कोई कितनी ही सख़्त बात तुम को कह दे मगर तुम इस को ख़न्दा पेशानी के साथ बरदाश्त कर लो और गुस्सा आ जाए तो गुस्से को पी जाओ और हरगिज़ हरगिज़ अपने गुस्से का इज़हार न करो। न कोई इन्तिक़ाम लो। अगर तुम ने येह आ़दत डाली तो फिर यक़ीन कर लो कि तुम खुदा और उस की तमाम मख़्लूक़ के प्यारे बन जाओगे और खुदावन्दे करीम बड़े बड़े दर्जात व मरातिब का तुम को ताज पहना कर नेक बख़्ती और खुश नसीबी का ताजदार बना देगा।

(2) तवाज़ोअ़ व इन्किसारी :- अपने को दूसरों से छोटा और कमतर समझ कर दूसरों की ता'ज़ीम व तकरीम के साथ ख़ातिर व मदारत करना इस आ़दत को तवज़ोअ़ और इन्किसारी कहते हैं। येह नेक आ़दत दर ह़क़ीक़त जोहरे नायाब है कि अल्लाह तआ़ला जिस को इस आ़दत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा देता है गोया उस को ख़ैरे कषीर का ख़ज़ाना अ़ता फ़रमा देता है जो शख़्स हर एक को अपने से बेहतर और अपने को सब से कमतर समझेगा वोह हमेशा घमन्ड और तकब्बुर की शैत़ानी ख़स्लत से बचा रहेगा और अल्लाह तआ़ला उस को दोनों जहान में सर बुलन्दी और अ़ज़मत का बादशाह बल्कि शहनशाह बना देगा।

ह़दीष शरीफ़ में है कि जो शख़्स अल्लाह की रिज़ाजोई के लिये तवाज़ोअ़ और इन्किसारी की ख़स्लत इख़्तियार करेगा अल्लाह तआ़ला उस को सर बुलन्दी अ़ता फ़रमाएगा।

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب وغیرہ، الترغیب فی التواضع والترھیب من الکبر والعجب والافتخار، رقم ٦، ج٣، ص ٣٥١)

हज़रते शैख़ सा'दी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया कि

مرا پیر دانائی روشن شہاب
دو اندرز فرمود بر روئی آب
یکی آنکہ برخویش خود بین مباش
دگر آنکہ بر غیر بدبین مباش

या'नी मुझ को मेरे पीर आ़रिफ़े ख़ुदा और रोशन दिल शैख़ शहाबुद्दीन सोहरवर्दी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दरियाई सफ़र में किश्ती पर येह दो नसीह़त फ़रमाई हैं एक येह कि अपने को अच्छा और बड़ा न समझो। और दूसरी येह कि दूसरों को बुरा और कमतर न समझो बल्कि सब को अपने से बेहतर और अपने को सब से कमतर समझ कर दूसरों के सामने तवाज़ोअ़ और इन्किसारी का मुज़ाहिरा करते रहो और ख़बरदार हरगिज़ हरगिज़ कभी भी तकब्बुर और घमन्ड की शैत़ानी डगर पर चल कर दूसरों को अपने से ह़क़ीर न समझो।

याद रखो कि तवाज़ोअ़ और आ़जिज़ी व इन्किसारी की आ़दत रखने वाला आदमी हर शख़्स की नज़रों में अ़ज़ीज़ हो जाता है। और मुतकब्बिर आदमी से हर शख़्स नफ़रत करने लगता है। इस लिये हर मर्द व औ़रत को लाज़िम है कि तवाज़ोअ़ की आ़दत इख़्तियार करे और कभी भी तकब्बुर और घमन्ड न करे।

﴾3﴿ अ़फ़्वो दर गुज़र :- हरगिज़ अगर कोई शख़्स तुम्हारे साथ ज़ुल्म व ज़ियादती कर बैठे या ईज़ा पहुंचाए या किसी से ख़त़ा या क़ुसूर हो जाए या तुम्हें किसी त़रह़ का नुक़्सान पहुंचाए तो बदला व इन्तिक़ाम लेने की बजाए उस को मुआ़फ़ कर देना येह बहुत ही बेहतरीन ख़स्लत और निहायत ही नफ़ीस आ़दत है। लोगों की ख़त़ाओं को मुआ़फ़ कर देना येह क़ुरआने मजीद का मुक़द्दस हुक्म और रसूलों का मुबारक त़रीक़ा है। ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने क़ुरआने मजीद में फ़रमाया कि

فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا (پ۱،البقرۃ:۱۰۹)

"या'नी लोगों की ख़त़ाओं को मुआ़फ़ कर दो और दर गुज़र की ख़स्लत इख़्तियार करो।" हमारे रसूल صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मक्का के उन मुजरिमों और ख़त़ाकारों को जिन्हों ने बरसों तक आप पर त़रह़ त़रह़ के ज़ुल्म किये थे। फ़त्ह़े मक्का के दिन जब येह सब मुजरिमीन आप के सामने लरज़ते और कांपते हुए आए तो आप ने इन सब मुजरिमों की ख़त़ाओं को मुआ़फ़ फ़रमा दिया और किसी से भी कोई इन्तिक़ाम और बदला नहीं लिया। जिस का येह अषर हुवा कि तमाम कुफ़्फ़ारे मक्का ने इस अख़्लाक़े मुह़म्मदी صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मुतअष्षिर हो कर कलिमा पढ़ लिया।

अ़ज़ीज़ भाइयो और प्यारी बहनो ! तुम भी अपनी येही आ़दत बना लो कि घर में या घर के बाहर हर जगह लोगों के क़ुसूर मुआ़फ़ कर दिया करो। इस से लोगों की नज़रों में तुम्हारा वक़ार बढ़ जाएगा और ख़ुदावन्दे करीम भी तुम पर मेहरबान हो कर तुम्हारी ख़त़ाओं को बख़्श देगा।

﴾4﴿ सब्रो शुक्र :- मुसीबतों और जिस्मानी व रूह़ानी तक्लीफ़ों पर अपने नफ़्स को इस त़रह़ क़ाबू में रखना कि न ज़बान से कोई बुरा अल्फ़ाज़ निकले न घबरा घबरा कर और परेशान ह़ाल हो कर इधर उधर भटकता और भागता फिरे बल्कि बड़ी से बड़ी आफ़तों और मुसीबतों के सामने अ़ज़्मो इस्तिक़्लाल के साथ जम कर डटे रहना। इस का नाम सब्र है। सब्र का कितना बड़ा षवाब और अज्र है। इस को बच्चा बच्चा जानता है। क़ुरआने मजीद में **अल्लाह** तआ़ला का फ़रमान है कि

اِنَّ اللّٰہَ مَعَ الصّٰبِرِیْنَ (پ۱، البقرۃ:۱۵۳)

"या'नी सब्र करने वाले के साथ **अल्लाह** तआ़ला की मदद हुवा करती है।"

और ख़ुदावन्दे करीम ने अपने ह़बीब صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से येह इरशाद फ़रमाया कि

فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ (پ۲۶، الاحقاف:۳۵)

या'नी ऐ महबूब ! आप इसी त़रह़ सब्र करें जिस त़रह़ तमाम हिम्मत वाले रसूलों ने सब्र किया है।

इस दुन्या में रंजो राहृत और गृम व ख़ुशी का चोली दामन का साथ है हर शख़्स को इस दुन्यावी ज़िन्दगी में तक्लीफ़ और आराम दोनों से पाला पड़ना ज़रूरी है इस लिये हर इन्सान पर लाज़िम है कि कोई ने'मत व राह़त मिले तो इस पर ख़ुदा का शुक्र अदा करे और कोई तक्लीफ़ व रंज पहुंचे तो इस पर सब्र करे। ग़रज़ सब्र की आ़दत एक निहायत ही बेहतरीन आ़दत है और मषल मश्हूर है कि सब्र का फल मीठा हुवा करता है। इस लिये हर मर्द व औ़रत को चाहिये कि सब्र का दामन कभी हाथ से न छोड़े।

﴾5﴿ **क़नाअ़त :-** इन्सान को जो कुछ ख़ुदा की त़रफ़ से मिल जाए इस पर राज़ी हो कर ज़िन्दगी बसर करते हुए ह़िर्स और लालच को छोड़ देना इस को "क़नाअ़त" कहते हैं। क़नाअ़त की आ़दत इन्सान के लिये ख़ुदा की बहुत बड़ी ने'मत है। क़नाअ़त पसन्द इन्सान सुकून व इत़्मीनान की दौलत से माला माल रहता है और ह़रीस और लालची हमेशा परेशान रहता है किसी ने क्या ख़ूब कहा है

اے قناعت تو نگرم گردان
کہ ورائے تو ہیچ نعمت نیست

या'नी ऐ क़नाअ़त की आ़दत तू मुझ को तवंगर और मालदार बना दे। क्यूंकि तुझ से बढ़ कर दुन्या में कोई ने'मत नहीं है। हर इन्सान ख़ुसूसन औ़रतों को चाहिये कि इन को बेटे शोहरों की त़रफ़ से जो कुछ मिल जाए इस पर राज़ी रह कर क़नाअ़त करें। और दूसरी औ़रतों की देखा देखी ह़िर्स और लालच की आ़दत से हमेशा दूर रहें तो اِنْ شَآءَ اللّٰه تعالٰی

इन की ज़िन्दगी निहायत ही सुकून व इत्मीनान के साथ बसर होगी और न वोह खुद परेशान हाल रहेंगी। न अपने शोहर को परेशानी में डालेंगी।

﴾6﴿ रह्म व शफ़्क़त :– खुदा की हर मख़्लूक़, इन्सान हो या जानवर अगर वोह रह्म के क़ाबिल हों तो उन पर रह्म करना और उन के साथ मेहरबानी व शफ़्क़त का सुलूक और बरताव करना येह इन्सान की बेहतरीन ख़स्लत और आ'ला दर्जे की क़ाबिले ता'रीफ़ आदत है और दुन्या व आख़िरत में इस पर बेहद षवाब मिलता है। हदीष शरीफ़ में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि

रह्म करने वालों पर रह्मान रह्म फ़रमाता है। ऐ लोगो ! तुम ज़मीन वालों पर रह्म करो तो आस्मान वाला तुम पर रह्म फ़रमाएगा।

(جامع الترمذی، کتاب البر و الصلة، باب ماجاء فی رحمة المسلمین، رقم ۱۹۳۱، ج۳، ص ۳۷۱)

करो मेहरबानी तुम अहले ज़मीं पर
खुदा मेहरबां होगा अ़र्शे बरीं पर

नर्म खूई, मेहरबानी और रह्मो करम की आदत खुदावन्दे करीम की बहुत ही बड़ी ने'मत है। हदीष शरीफ़ में है कि जिस को रफ़्क़ और नर्म दिली की आदत खुदावन्दे करीम की तरफ़ से अता कर दी गई उस को दुन्या व आख़िरत की भलाइयों का बहुत बड़ा हिस्सा मिल गया। और जो नर्म दिली और रह्म व मेहरबानी की ख़स्लत से महरूम कर दिया गया। वोह दुन्या व आख़िरत की भलाइयों से महरूम हो गया।

(شرح السنة، کتاب البر والصلة، باب الرفق، رقم ۳۳۸۵، ج٦، ص ٤٧٢)

﴾7﴿ खुश अख़्लाक़ी :– हर एक के साथ खुश रूई और खुश अख़्लाक़ी के साथ पेश आना येह वोह पैग़म्बराना ख़स्लत है जिस के बारे में हुज़ूरे

अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया है कि यक़ीनन तुम सब मुसलमानों में सब से ज़ियादा मुझे वोह शख़्स मह़बूब है जिस के अख़्लाक़ अच्छे हों। (صحيح البخاري، كتاب المناقب، باب صفة النبي صلى الله عليه وسلم، رقم ٣٥٥٩، ج٢، ص٤٨٩)

एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सब से बेहतरीन चीज़ जो **अल्लाह** तआ़ला ने इन्सान को अ़ता फ़रमाई है वोह क्या चीज़ है? तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि "अच्छे अख़्लाक़"

(شعب الايمان، باب في تعظيم النبي صلى الله عليه وسلم، رقم ١٥٢٩، ج٢، ص٢٠٠)

और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह भी इरशाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन मोमिन के मीज़ाने अ़मल में सब से ज़ियादा वज़्नदार नेकी अच्छे अख़्लाक़ होंगे। (جامع الترمذي، كتاب البر والصلة، باب ماجاء في حسن الخلق، رقم ٢٠١٠، ج٣، ص٤٠٤)

हर मर्द व औ़रत को लाज़िम है कि अपने घर वालों और पड़ोसियों बल्कि हर मिलने जुलने वाले के साथ खुश अख़्लाक़ी के साथ पेश आए। खुशी का इज़्हार करते हुए और मुस्कुराते हुए लोगों से मिलना जुलना बहुत बड़ी सआ़दत और खुश नसीबी की आ़दत और षवाब का काम है जो लोग हर वक़्त गाल फुलाए, मुंह लटकाए और पेशानी पर बल डाले हुए तेवरी चढ़ाए हुए हर आदमी से बद अख़्लाक़ी के साथ पेश आते हैं वोह बहुत ही मन्ह़ूस व मग़रूर हैं और वोह दुन्या व आख़िरत की सआ़दतों और खुश नसीबियों से मह़रूम हैं। न इन को कभी खुशी नसीब होती है। न इन से मिल कर दूसरों का दिल खुश होता है बल्कि ऐसे मर्दों और औ़रतों के चेहरों पर हर वक़्त ऐसी रऊ़नत और नुहूसत बरसती रहती है कि इन का चेहरा देख के ऐसा मा'लूम होता है कि येह अभी अभी सो कर उठे हैं और अभी मुंह भी नहीं धोया है।

﴾8﴿ **ह़या :-** हर आदमी ख़ुसूसन औ़रतों के ह़क़ में ह़या की आ़दत वोह अनमोल ज़ेवर है जो औ़रत की इफ़्फ़त व पाक दामनी का दारो मदार और निस्वानिय्यत के हुस्नो जमाल की जान है जिस मर्द या औ़रत में ह़या का जोहर होगा वोह तमाम ऐ़ब लगाने वाले और बुरे कामों से फ़ित़्री त़ौर पर रुक जाएगा और तमाम रज़ाइल से पाक साफ़ रह रह कर अच्छे अच्छे कामों और फ़ज़ाइल व मह़ासिन के ज़ेवरात से आरास्ता हो जाएगा। चुनान्चे रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि اَلحیاء شعبۃ من الایمان या'नी ह़या दरख़्ते ईमान की एक बहुत बड़ी शाख़ है। (صحیح البخاری، کتاب الایمان ، باب امور الایمان، رقم ۹، ج۱، ص۱۵)

﴾9﴿ **सफ़ाई सुथराई :-** येह मुबारक आ़दत भी मर्दों और औ़रतों के लिये निहायत ही बेहतरीन ख़स्लत है जो इन्सानिय्यत के सर का एक बहुत ही क़ीमती ताज है। अमीरी हो या फ़क़ीरी हर ह़ाल में सफ़ाई व सुथराई इन्सान के वक़ार व शरफ़ का आईना दार, और मह़बूबे परवर दगार है। इस लिये हर मुसलमान का येह इस्लामी निशान है कि वोह अपने बदन, अपने मकान व सामान, अपने दरवाज़े और सह़न वग़ैरा हर हर चीज़ की पाकी और सफ़ाई सुथराई का हर वक़्त ध्यान रखे। गन्दगी और फोहड़ पन इन्सान की इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत के बदतरीन दुश्मन हैं इस लिये हर मर्द व औ़रत को हमेशा सफ़ाई सुथराई की आ़दत डालनी चाहिये। सफ़ाई सुथराई से सिह़ह़त व तन्दुरुस्ती बढ़ती रहती है और सेंकड़ों बल्कि हज़ारों बीमारियां दूर हो जाती हैं। ह़दीष शरीफ़ में है कि **अल्लाह** तआ़ला पाक है और पाकीज़गी को पसन्द फ़रमाता है।

(مشکوٰۃ المصابیح ، کتاب اللباس ، الفصل الثالث ، رقم ۴۴۸۷، ج۲، ص۴۹۷)

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को फोहड़ और मैले कुचैले रहने वाले लोगों से बेह़द नफ़रत थी। चुनान्चे आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने सह़ाबए किराम عَلَیْھِمُ الرِّضْوَان को हमेशा सफ़ाई सुथराई का हुक्म देते रहते और इस की ताकीद फ़रमाते रहते थे।

फोहड़ औ़रतें जो सफ़ाई सुथराई का ख़याल नहीं रखती हैं वोह हमेशा शोहरों की नज़रों में ज़लीलो ख़्वार रहती हैं बल्कि बहुत सी औ़रतों को उन के फोहड़ पन की वजह से त़लाक़ मिल जाती है इस लिये औ़रतों को सफ़ाई सुथराई का ख़ास त़ौर पर ख़याल रखना चाहिये।

﴾10﴿ **सादगी :-** ख़ोराक, पोशाक, सामाने ज़िन्दगी, रहन सहन हर चीज़ में बे जा तकल्लुफ़ात से बचना और ज़िन्दगी के हर शो'बे में सादगी रखना येह बहुत ही प्यारी आ़दत और निहायत ही नफ़ीस ख़स्लत है। सादा त़र्ज़े ज़िन्दगी में अमीरी हो या फ़क़ीरी, हर जगह हर ह़ाल में राह़त ही राह़त है इस आ़दत वाला आदमी न किसी पर बोझ बनता है न खुद क़िस्म क़िस्म के बोझों से ज़ेरे बार होता है। ज़िन्दगी के हर शो'बे में सादगी ही रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और आप की मुक़द्दस बीवियों का वोह मुबारक त़रीक़ा है जो तमाम दुन्या के मर्दों और औ़रतों के लिये मशअ़ले राह है। हर मुसलमान मर्द और औ़रत को चाहिये कि सादगी की ज़िन्दगी बसर कर के रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इस सुन्नते करीमा पर अ़मल करे और दुन्या व आख़िरत की राह़तों और सआ़दतों से सरफ़राज़ हो।

﴾11﴿ **सख़ावत :-** अपनी त़ाक़त और हैषिय्यत के लिह़ाज़ से सख़ावत की आ़दत एक निहायत ही नफ़ीस ख़स्लत है। चुनान्चे कन्जूसी के बयान में सख़ावत की फ़ज़ीलत और इस के बारे में ह़दीष शरीफ़ हम तह़रीर कर चुके हैं।

﴾12﴿ **शीरीं कलाम :-** हर आदमी से बात चीत करने में नर्म लहजा और शीरीं ज़बानी के साथ गुफ़्त्गू की आ़दत येह इन्सानी ख़साइल में से बेहतरीन आ़दत है। इस से हर आदमी का दिल जीता जा सकता है गुफ़्त्गू में कड़वा लहजा, चीख़ना चिल्लाना, डांट फिटकार मुंह बिगाड़ कर जवाब देना येह इतनी मर्दूद आ़दतें हैं कि इस से आदमी हर एक की नज़र में क़ाबिले नफ़रत हो जाता है।

गुनाहों का बयान

गुनाहों की दो क़िस्में हैं। गुनाहे सग़ीरा (छोटे छोटे गुनाह) गुनाहे कबीरा (बड़े बड़े गुनाह)। गुनाहे सग़ीरा नेकियों और इबादतों की बरकत से मुआ़फ़ हो जाते हैं लेकिन गुनाहे कबीरा उस वक़्त तक मुआ़फ़ नहीं होते जब तक कि आदमी सच्ची तौबा कर के अहले हुक़ूक़ से उन के हुक़ूक़ को मुआ़फ़ न करा ले।

गुनाहे कबीरा किस को कहते हैं ? :- गुनाहे कबीरा उस गुनाह को कहते हैं जिस से बचने पर ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने मग़्फ़िरत का वा'दा फ़रमाया है। (کتاب الکبائر،ص۷)

और बा'ज़ उ़-लमाए किराम ने फ़रमाया कि हर वोह गुनाह जिस के करने वाले पर अल्लाह عزوجل व रसूल صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم ने वईद सुनाई या ला'नत फ़रमाई या अ़ज़ाब व ग़ज़ब का ज़िक्र फ़रमाया वोह गुनाहे कबीरा है। (کتاب الکبائر،ص۸)

गुनाहे कबीरा कौन कौन से हैं ? :- गुनाहे कबीरा की ता'दाद बहुत ज़ियादा है मगर इन में से चन्द मशहूर कबीरा गुनाहों का हम यहां ज़िक्र करते हैं जो येह हैं।

﴾1﴿ शिर्क करना। ﴾2﴿ जादू करना। ﴾3﴿ ख़ूने नाहक़ करना। ﴾4﴿ सूद खाना। ﴾5﴿ यतीम का माल खाना। ﴾6﴿ जिहादे कुफ़्फ़ार से भाग जाना। ﴾7﴿ पाक दामन मोमिन मर्दों और औरतों पर ज़िना की तोहमत लगाना। ﴾8﴿ ज़िना करना। ﴾9﴿ इग़लाम बाज़ी करना। ﴾10﴿ चोरी करना। ﴾11﴿ शराब पीना। ﴾12﴿ झूट बोलना और झूटी गवाही देना। ﴾13﴿ ज़ुल्म करना। ﴾14﴿ डाका डालना। ﴾15﴿ मां-बाप को तक्लीफ़ देना ﴾16﴿ हैज़ व निफ़ास की ह़ालत में बीवी से सोह़बत करना। ﴾17﴿ जूआ खेलना। ﴾18﴿ सग़ीरा गुनाहों पर इसरार करना।

﴾19﴿ अल्लाह عزوجل की रह़मत से ना उम्मीद हो जाना। ﴾20﴿ अल्लाह عزوجل के अ़ज़ाब से बे ख़ौफ़ हो जाना। ﴾21﴿ नाच देखना। ﴾22﴿ औ़रतों का बे पर्दा हो कर फिरना। ﴾23﴿ नाप तोल में कमी करना। ﴾24﴿ चुग़ली खाना। ﴾25﴿ ग़ीबत करना। ﴾26﴿ दो मुसलमानों को आपस में लड़ा देना। ﴾27﴿ अमानत में ख़ियानत करना। ﴾28﴿ किसी का माल या ज़मीन व सामान वग़ैरा ग़सब कर लेना। ﴾29﴿ नमाज़ रोज़ा और ह़ज व ज़कात वग़ैरा फ़राइज़ को छोड़ देना ﴾30﴿ मुसलमानों को गाली देना।

(فیوض الباری شرح بخاری ، کتاب الایمان ، ج ۱، ص ۱۶۰ـ۱۶۱)

इन से ना ह़क़ तौ़र पर मार पीट करना वग़ैरा वग़ैरा सेंकड़ों गुनाहे कबीरा हैं। जिन से बचना हर मुसलमान मर्द और औ़रत पर फ़र्ज़ है और साथ ही दूसरों को भी इन गुनाहों से रोकना लाज़िम और ज़रूरी है।

ह़दीष शरीफ़ में है कि अगर किसी मुसलमान को कोई गुनाह करते देखे तो इस पर लाज़िम है कि अपना हाथ बढ़ा कर उस को गुनाह करने से रोक दे। और अगर हाथ से उस को रोकने की त़ाक़त नहीं रखता तो ज़बान से मन्अ़ कर दे और अगर इस की भी त़ाक़त न हो तो कम से कम अपने दिल से उस गुनाह को बुरा समझ कर उस से बेज़ारी ज़ाहिर कर दे और येह ईमान का निहायत ही कमज़ोर दर्जा है।

(صحیح مسلم، کتاب الایمان ، باب بیان کون النھی عن المنکر من الایمان ــــ الخ، رقم ۴۹، ص ۴۴)

एक और ह़दीष में येह भी आया है कि कोई आदमी किसी क़ौम में रह कर गुनाह का काम करे और वोह क़ौम कुव्वत रखते हुए भी उस आदमी को गुनाह करने से न रोके तो अल्लाह तआ़ला उस एक आदमी के गुनाह के सबब पूरी क़ौम को उन के मरने से पहले अ़ज़ाब में मुब्तला फ़रमाएगा। (الترغیب والترھیب، کتاب الحدود، الترغیب فی الامر بالمعروف والنھی عن المنکر ، والترھیب من ترکھما والمداھنة فیھما ، رقم ۱۸، ج ۳، ص ۱۶۱)

गुनाहों से दुन्यावी नुक़्सान

गुनाहों से आख़िरत का नुक़्सान और अ़ज़ाबे जहन्नम की सज़ाओं और क़ब्र में क़िस्म क़िस्म के अ़ज़ाबों में मुब्तला होना। इस को तो हर शख़्स जानता है मगर याद रखो कि गुनाहों की नुहूसत से आदमी को दुन्या में भी त़रह़ त़रह़ के नुक़्सान पहुंचते रहते हैं जिन में से चन्द येह हैं। ﴾1﴿ रोज़ी कम हो जाना। ﴾2﴿ बलाओं का हुजूम। ﴾3﴿ उ़म्र घट जाना। ﴾4﴿ दिल में और बा'ज़ मरतबा तमाम बदन में अचानक कमज़ोरी पैदा हो कर सिह़्ह़त ख़राब हो जाना। ﴾5﴿ इ़बादतों से मह़रूम हो जाना। ﴾6﴿ अ़क़्ल में फ़ुतूर पैदा हो जाना। ﴾7﴿ लोगों की नज़रों में ज़लीलो ख़्वार हो जाना। ﴾8﴿ खेतों और बाग़ों की पैदावार में कमी हो जाना। ﴾9﴿ ने'मतों का छिन जाना। ﴾10﴿ हर वक़्त दिल का परेशान रहना। ﴾11﴿ अचानक ला इ़लाज बीमारियों में मुब्तला हो जाना। ﴾12﴿ **अल्लाह** तआ़ला और उस के फ़िरिश्तों और उस के नबियों और उस के नेक बन्दों की ला'नतों में गिरिफ़्तार हो जाना। ﴾13﴿ चेहरे से ईमान का नूर निकल जाने से चेहरे का बे रोनक़ हो जाना। ﴾14﴿ शर्म व ग़ैरत का जाता रहना। ﴾15﴿ हर त़रफ़ से ज़िल्लतों, रुस्वाइयों और ना कामियों का हुजूम हो जाना। ﴾16﴿ मरते वक़्त मुंह से कलिमा न निकलना वग़ैरा वग़ैरा गुनाहों की नुहूसत से बड़े बड़े नुक़्सान हुवा करते हैं।

इ़बादतों के दुन्यावी फ़वाइद

इ़बादतों से आख़िरत के फ़वाइद तो हर शख़्स को मा'लूम हैं कि **अल्लाह** तआ़ला अपने इ़बादत गुज़ार बन्दों को आख़िरत में जन्नत की बे शुमार ने'मतें अ़ता फ़रमाएगा। लेकिन इस से ग़ाफ़िल न रहो कि इ़बादत से आख़िरत के फ़ाइदों के इ़लावा इ़बादत की बरकत से बहुत से दुन्यावी फ़वाइद भी ह़ासिल होते हैं मषलन :–

﴾1﴿ रोज़ी बढ़ना ﴾2﴿ माल व सामान व अवलाद हर चीज़ में बरकत होना ﴾3﴿ बहुत सी दुन्यावी तक्लीफ़ों और परेशानियों का रफ़्अ़ हो जाना ﴾4﴿ बहुत सी बलाओं का टल जाना ﴾5﴿ सब के दिलों में इस की महब्बत पैदा हो जाना ﴾6﴿ नूरे ईमान की वजह से चेहरे का बा रोनक़ हो जाना ﴾7﴿ उ़म्र का बढ़ जाना ﴾8﴿ पैदावार में ख़ैरो बरकत हो जाना ﴾9﴿ बारिश होना ﴾10﴿ हर जगह इ़ज़्ज़त व आबरू मिलना ﴾11﴿ फ़ाक़ा से बचा रहना ﴾12﴿ दिन ब दिन ने'मतों में तरक़्क़ी होना ﴾13﴿ बहुत सी बीमारियों से शिफ़ा पा जाना ﴾14﴿ आयन्दा आने वाली नस्लों को फ़ाइदा पहुंचना ﴾15﴿ शादमानी व मसर्रत और इत़्मीनाने क़ल्ब की ज़िन्दगी नसीब होना। इन के इ़लावा और भी बहुत से दुन्यावी फ़ाइदे हैं जो इ़बादत की बरकत से ह़ासिल होते हैं।

इ़बादत की शान

रह़मते किब्रिया इ़बादत है
राह़ते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इ़बादत है
हुस्ने नूरे ख़ुदा इ़बादत है
त़लअ़ते जां फ़िज़ा इ़बादत है
ह़ासिल ज़ीस्त मा' रेफ़त ह़क़ की
ख़ल्क़ का मुद्दआ़ इ़बादत है
दोनों आ़लम का है भला इस से
दौलते बे बहा इ़बादत है
येह ख़ुदा से तुझे मिलाएगी
क़िब्लए ह़क़ नुमा इ़बादत है

रोशनी मा'रिफ़त की गर चाहो
चश्मे दिल की ज़िया इबादत है
रूह को मिलती है तुवानाई
हर मरज़ की दवा इबादत है
आ'ज़मी कर इलाज इसयां का
मा'सिय्यत की शिफ़ा इबादत है

﴾3﴿ रुसूमात

महब्बत खुसूमात में खो गई

येह उम्मत रुसूमात में खो गई

मुसलमानों की रस्मों का बयान

जब तक इस्लाम अ़रब की ज़मीन तक महदूद रहा। उस वक़्त तक मुसलमानों का मुआ़शरा और इन का त़र्ज़े ज़िन्दगी बिल्कुल ही सीधा सादा और हर क़िस्म की रुसूमात और बिदआ़त व खुराफ़ात से पाक साफ़ रहा। लेकिन जब इस्लाम अ़रब से बाहर दूसरे मुल्कों में पहुंचा तो दूसरी क़ौमों और दूसरे मज़्हब वालों के मेल जोल और उन के माहोल का इस्लामी मुआ़शरे और मुसलमानों के त़रीक़ए ज़िन्दगी पर बहुत ज़ियादा असर पड़ा और कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन और यहूदो नसारा की बहुत सी ग़लत़ सलत़ और मन घड़त रस्मों का मुसलमानों पर ऐसा जारिह़ाना ह़म्ला हुवा और मुसलमान इन मुशरिकाना रस्मों में इस क़दर मुलव्विष हो गए कि इस्लामी मुआ़शरे का चेहरा मस्ख़ हो गया और मुसलमान रस्मो रवाज की बलाओं में गिरिफ़्तार हो कर ख़ैरुल क़रून की सीधी सादी इस्लामी त़र्ज़े ज़िन्दगी से बहुत दूर हो गए। चुनान्चे ख़ुशी ग़मी, पैदाइश व मौत, ख़तना, शादी बियाह, वग़ैरा मुसलमानों की जुम्ला तक़्रीबात बल्कि मुसलमानों की ज़िन्दगी व मौत के हर मरह़ले और मोड़ पर क़िस्म क़िस्म की रस्मों की फ़ौजों का इस त़रह अ़मल दख़्ल हो गया है कि मुसलमान अपनी तक़्रीबात को बाप दादाओं की इन रिवायती रस्मों से अलग कर ही नहीं सकते और येह ह़ाल हो गया है कि

येह उम्मत रिवायात में खो गई

ह़क़ीक़त खुराफ़ात में खो गई

हमारे यहां मुसलमानों की तक़रीबात में जिन रस्मों का रवाज पड़ गया है इन के बारे में तीन क़िस्म के मकतबे ख़ियाल के लोग हैं जो अपने अपने मस्लक का ए'लान करते रहते हैं।

अव्वल लाल, पीले, हरे रंग के लिबासों वाले गेसू दराज़ क़िस्म के रंगीन मिज़ाज बाबाओं का गुरौह वोह जो तसव्वुफ़ का लुबादा ओढ़े हुए सूफ़ी बने फिरते हैं इन ह़क़ीक़त व मा'रिफ़त के ठेकेदारों ने तो तमाम ख़ुराफ़ात और ख़िलाफ़े शरीअ़त रुसूमात को जाइज़ ठहरा रखा है। यहां तक कि ढोलक और त़बला की थाप और हारमोनियम और सारंगी के राग पर इन लोगों को मा'रिफ़त की मे'राज ह़ासिल होती है। इन लोगों ने अपनी जहालत से मुस्लिम मुआ़शरे को तहस नहस और इस्लाम के मुक़द्दस चेहरे को ख़ुराफ़ात व बिदआ़त और ख़िलाफ़े शरीअ़त रुसूमात के दाग़ धब्बों से मस्ख़ कर डाला है। येह लोग बिला शुबा ख़त़ाकार हैं। लिहाज़ा मुसलमानों पर लाज़िम है कि इन लोगों की सोह़बत और इन लोगों की पैरवी से हमेशा बचते रहें।

दुवुम वहाबियों देवबन्दियों का फ़िर्क़ा है जिन्हों ने इस्लाह़ के नाम से इस्लामी मुआ़शरा और दीने इस्लाम की ह़जामत बना डाली है। इन लोगों ने येह ज़ुल्म किया है कि मुस्लिम मुआ़शरे की जाइज़ व नाजाइज़ तमाम रुसूमात को ह़राम व बिदअ़त बल्कि कुफ़्रो शिर्क ठहरा दिया है। और येह लोग यहां तक ह़द से बढ़ गए कि दुल्हा के सर पर सहरा बांधने को कुफ़्रो शिर्क लिख दिया है और ज़ैबो ज़ीनत के लिये दिवारों पर दीवारगीरी और छतों में छतगीरी लगाने को बिदअ़त और ह़राम लिख मारा। और दूसरी बहुत सी जाइज़ चीज़ों मषलन क़ब्रों पर चादर डालने, **बुज़ुर्गों** की नियाज़ व फ़ातिह़ा दिलाने, मुर्दों का तीजा, चालीसवां करने को बिदअ़त व ह़राम क़रार दे दिया। मीलाद शरीफ़ की मजलिसों को ह़राम व बिदअ़त बल्कि कनैया के जनम से बदतर लिख दिया। क़ियाम व सलाम को नाजाइज़ व ममनूअ़ क़रार दिया। बुज़ुर्गाने

दीन के उ़र्सों को नाजाइज़ व ह़राम लिखा। मुह़र्रम में ज़िक्रे शहादत और सबीलों से मन्अ़ किया। और लुत़्फ़ येह है कि इन लोगों से जब इन रुसूमात के कुफ़्रो शिर्क और बिदअ़त व ह़राम होने पर दलील त़लब की जाती है तो येह कह देते हैं कि हम लोगों ने एह़तियातन इन चीज़ों को कुफ़्रो शिर्क और ह़राम व बिदअ़त लिख दिया है ताकि लोग डर कर इन चीज़ों को छोड़ दें। खु़दा के लिये कोई इन से पूछे कि **अल्लाह** तआ़ला की ह़लाल की हुई चीज़ों को कुफ़्रो शिर्क और ह़राम व नाजाइज़ ठहराना येह एह़तियात़ है या आ'ला दर्जे की बे एह़तियात़ी है ? **अल्लाह** तआ़ला ने जिन चीज़ों को ह़लाल बताया है इन को कुफ़्रो शिर्क और ह़राम बताना येह **अल्लाह** तआ़ला पर इफ़्तरा व तोहमत है और कुरआने मजीद में **अल्लाह** तआ़ला का इरशाद है कि

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ ۔(پ۲٤،الزمر:۳۲)

या'नी इस से ज़ियादा ज़ालिम और कौन होगा ? जो **अल्लाह** तआ़ला पर झूटी तोहमत लगाए।

बहर ह़ाल खुलासए कलाम येह है कि जिन रस्मों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़राम नहीं बताया। इन को ख़्वाह म ख़्वाह खींच तान कर ह़राम ठहराना येह खुद बहुत बड़ा गुनाह है। लिहाज़ा मुसलमानों पर लाज़िम है कि इन लोगों से भी अलग थलग रहें। और हरगिज़ हरगिज़ इन लोगों की पैरवी न करें।

सिवुम हम सब अहले सुन्नत व जमाअ़त का मुक़द्दस त़बक़ा हैं। जिस के बड़े बड़े अ़लम बरदारों में ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिष देहलवी व मौलाना शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिषे देहलवी व मौलाना फ़ज़्ले रसूल बदायूनी, व मौलाना फ़ज़्ले ह़क़ ख़ैराबादी व मौलाना बहरुल उ़लूम लखनवी व आ'ला ह़ज़रत मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान साह़िब बरेलवी वग़ैरा बुज़ुर्गाने दीन हैं। अहले सुन्नत व जमाअ़त के इन मुक़द्दस बुज़ुर्गों का मुसलमानों की रस्मों के बारे में येह फ़तवा है कि मुसलमानों की वोह रस्में जिन को शरीअ़त ने मन्अ़ किया है वोह यक़ीनन ह़राम व

नाजाइज़ हैं। मषलन नाच गाना, बाजा बजाना, आतश बाज़ी, दूल्हा को चांदी सोने के ज़ेवरात पहनाना। तक़रीबात में औ़रतों मर्दों का बे पर्दगी के साथ जम्अ़ होना। घर के अन्दर औ़रतों के दरमियान दुल्हा को बुलाना और औ़रतों का बे पर्दा उन के सामने आना। और सालियों वग़ैरा का हंसी मज़ाक़ करना। दुल्हा के जूतों को चुरा लेना फिर ज़बरदस्ती दुल्हा से इन्आ़म वुसूल करना वग़ैरा वग़ैरा लेकिन शरीअ़त ने जिन रस्मों को जाइज़ बताया या वोह रस्में जिन के बारे में शरीअ़त ख़ामोश है इन को हरगिज़ हरगिज़ नाजाइज़ और ह़राम नहीं कहा जा सकता। ख़ुलासा येह है कि जब तक किसी रस्म की मुमानअ़त शरीअ़त से न षाबित हो। उस वक़्त तक इसे ह़राम व ना जाइज़ नहीं कह सकते। ख़्वाह म ख़्वाह मुसलमानों की तमाम रस्मों को खींच तान कर ममनूअ़ और ह़राम क़रार देना और बिला वजह मुसलमानों को बिदअ़ती और ह़राम का मुर्तकिब कहना येह बहुत बड़ी ज़ियादती और दीन में ह़द से बढ़ जाना है। क्यूंकि हर शख़्स येह जानता है कि मुसलमानों की रस्मों और रवाजों की बुन्याद उ़र्फ़ पर है। येह कोई मुसलमान भी नहीं समझता कि येह सब रस्में शरअ़न वाजिब या सुन्नत या मुस्तह़ब हैं। बा'ज़ मौलवियों का येह कहना कि चूंकि फ़ुलां रस्म को लोग फ़र्ज़ समझने लगे हैं और इस को कभी तर्क नहीं करते हैं इस लिये लोगों को हम इस रस्म से रोकते हैं कि लोग एक ग़ैर फ़र्ज़ को फ़र्ज़ समझने लगे हैं। मुसलमानो ! ख़ूब समझ लो कि येह एक बहुत बड़ा धोका है। और दर ह़क़ीक़त येह लोग ख़ुद भी धोके में हैं। और दूसरों को भी धोका दे रहे हैं। याद रखो कि किसी चीज़ को हमेशा करते रहने से येह लाज़िम नहीं आता कि इस का करने वाला इस को फ़र्ज़ समझता है किसी चीज़ को हमेशा करते रहना येह और बात है और इस को फ़र्ज़ समझ लेना और बात है। देखो वुज़ू करने वाला हमेशा वुज़ू में कानों और गर्दन का मस्ह़ ज़रूर करता है कभी भी गर्दन और कानों के मस्ह़ को नहीं छोड़ता। तो क्या कोई भी इस पर येह इल्ज़ाम लगा सकता है कि वोह सर के मस्ह़ की त़रह़ गर्दन और कानों के मस्ह़ को भी फ़र्ज़ समझता है। ह़ालांकि कानों और गर्दन का मस्ह़ सुन्नत

व मुस्तहब है। क्या कोई भी इस की जुरअत कर सकता है कि लोगों को कानों और गर्दन के मस्ह से मन्अ कर दे कि लोग एक गैर फ़र्ज़ को फ़र्ज़ समझने लगे हैं।

बस इसी तरह समझ लो कि लोग हमेशा ईद के दिन सेवय्या और शबे बराअत को हलवा पकाते हैं और मीलाद शरीफ़ में हमेशा शीरीनी बांटते हैं और कभी भी इस को तर्क नहीं करते मगर इस को हमेशा करने से येह इलज़ाम नहीं आता कि लोग इन कामों को फ़र्ज़ समझने लगे हैं। जिस तरह गर्दन और कानों पर हमेशा मस्ह करने वाला हमेशा करने के बा वुजूद येही अक़ीदा रखता है कि कानों और गर्दन का मस्ह फ़र्ज़ नहीं है बल्कि सुन्नत व मुस्तहब है। इसी तरह हमेशा ईद को सेवय्यां और शबे बराअत को हलवा पकाने वाला येही अक़ीदा रखता है कि येह फ़र्ज़ नहीं हैं बल्कि जाइज़ व मुबाह हैं। कौन नहीं जानता कि किसी चीज़ को फ़र्ज़ समझना या फ़र्ज़ न समझना इस का तअल्लुक़ अक़ीदे से है न कि अमल से। कहां अमल ? और कहां अक़ीदा ? अमल और चीज़ है और अक़ीदा और चीज़। दोनों में बड़ा फ़र्क़ है !

बहर हाल खुलासा येह है कि मुसलमानों में रवाज पा जाने वाली तमाम रुसूमात हराम व नाजाइज़ नहीं। बल्कि कुछ रस्में जाइज़ और कुछ ना जाइज़ हैं। और जाइज़ रस्मों को करने में कोई हरज नहीं। हां येह ज़रूर है कि जाइज़ रस्मों की पाबन्दी इसी हद तक कर सकता है कि किसी फ़े'ले हराम में मुब्तला न हो।

चन्द बुरी रस्में :- अकषर जाहिलों में रवाज है कि बच्चों की पैदाइश या अक़ीक़ा या ख़तना या शादी बियाह के मौक़ओं पर महल्ला या रिश्ते की औरतें जम्अ होती हैं और गाती बजाती हैं। येह ना जाइज़ व हराम है कि अव्वलन ढोल बजाना ही हराम। फिर औरतों का गाना और ज़ियादा बुरा। औरत की आवाज़ ना महरमों को पहुंचाना और वोह भी गाने की। और वोह भी इश्क़ और हिजरों विसाल के अश्आर और गीत ज़ाहिर है कि येह कितने फ़ितनों का सर चश्मा है। इसी तरह औरतों का रतजगा भी

है कि रात भर औ़रतें गाती बजाती रहती हैं और गुल गुले पकते रहते हैं फिर सुब्ह़ को गाती बजाती हुई मस्जिद में त़ाक़ भरने के लिये जाती हैं। इस में बहुत सी ख़ुराफ़ात पाई जाती हैं। नियाज़ घर में भी हो सकती है और अगर मस्जिद में हो तो मर्द ले जा सकते हैं। औ़रतों को जाने की क्या ज़रूरत है? इन औ़रतों के हाथ में एक आटे का बना हुवा चार बत्तियों वाला चराग़ भी होता है जो घी से जलाया जाता है ग़ौर कीजिये कि जब सुब्ह़ हो गई तो चराग़ कि क्या ज़रूरत? और अगर चराग़ की ह़ाजत है तो मिट्टी का चराग़ काफ़ी है। आटे का चराग़ बनाना और तेल की जगह घी जलाना बिल्कुल ही इसराफ़ और फ़ुज़ूल खर्ची और माल को बरबाद करना है जो शरअ़न ह़राम है। दुल्हा दुल्हन को उबटन मलवाना। माइयों बिठाना जाइज़ है लेकिन दुल्हा के हाथ पाऊं में ज़ीनत के लिये मेहंदी लगाना जाइज़ नहीं है। यू हीं दुल्हा को रेशमी पोशाक या ज़ेवरात पहनना पहनाना ह़राम है। ख़ालिस फूलों का सहरा जाइज़ है। बिला वजह इस को ममनूअ़ नहीं कहा जा सकता। हां सोने चांदी के तारों, गोटों, लच्छों और कला बत्तू वग़ैरा का बना हुवा हार या सहरा दुल्हा के लिये ह़राम और दुल्हन के लिये जाइज़ है। नाच बाजा, आतश बाज़ी ह़राम हैं।

शादियों में दो क़िस्म के नाच कराए जाते हैं। एक रन्डियों का नाच जो मर्दों की मह़फ़िल में होता है। दूसरा वोह नाच जो ख़ास औ़रतों की मह़फ़िल में होता है कि कोई डूमिनी या मिराषन नाचती है और कमर कुल्हे मटका मटका कर और हाथों से चिमका चिमका कर तमाशा करती है। येह दोनों क़िस्म के नाच नाजाइज़ व ह़राम हैं। रन्डी के नाच में जो गुनाह और ख़राबियां हैं इन को सब जानते हैं कि एक ना मह़रम औ़रत को सब मर्द बे पर्दा देखते हैं येह आंखों का ज़िना है। इस की शहवत अंगेज़ आवाज़ को सुनते हैं येह कानों का ज़िना है। इस से बातें करते हैं येह ज़बान का ज़िना है। बा'ज़ इस की त़रफ़ हाथ बढ़ाते हैं येह हाथों का ज़िना है। बा'ज़ इस की त़रफ़ चल कर दाद देते हैं और इन्आ़म का रूपिया देते हैं येह पाऊं का ज़िना है। बा'ज़ बदकारी भी कर लेते हैं। येह अस्ल ज़िना है।

आतश बाज़ी ख़्वाह शबे बराअत में हो या शादी बियाह में हर जगह हर ह़ाल में ह़राम है। और इस में कई गुनाह हैं। येह अपने माल को फ़ुज़ूल बरबाद करना है कुरआने मजीद में फ़ुज़ूल माल ख़र्च करने वाले को शैत़ान का भाई फ़रमाया गया है और इन लोगों से **अल्लाह** عزوجل व रसूल صلى الله تعالى عليه و اله وسلم बेज़ार हैं। फिर इस में हाथ पाऊं के जलने का अन्देशा या मकान में आग लग जाने का ख़ौफ़ है और बिला वजह जान या माल को हलाकत और ख़त़रे में डालना शरीअ़त में ह़राम है।

इसी त़रह़ शादी बियाह में दुल्हा को मकान के अन्दर बुलाना और औ़रतों का सामने आ कर या ताक झांक कर इस को देखना, इस से मज़ाक़ करना, इस के साथ चौथी खेलना येह सब रस्में ह़राम व नाजाइज़ हैं शादी या दूसरे मौक़ओं पर खासदान, इत्रदान, सुर्मादानी सलाई वग़ैरा चांदी सोने का इस्ति'माल करना, बहुत बारीक कपड़े पहनना या बजते हुए ज़ेवर पहनना येह सब रस्में नाजाइज़ हैं।

अ़क़ीक़ा बस इसी क़दर सुन्नत है कि लड़के के अ़क़ीक़े में दो बकरे और लड़की के अ़क़ीक़े में एक बकरी ज़ब्ह़ करना और इस का गोश्त कच्चा या पका कर तक़्सीम कर देना और बच्चे के बालों के वज़्न के बराबर चांदी ख़ैरात कर देना और बच्चे के सर में ज़ा'फ़रान लगा देना। येह सब काम तो षवाब के हैं बाक़ी इस के इलावा जो रस्में होती हैं कि नाई सर मूंडने के बा'द सब कुम्बे व बरादरी के सामने कटोरी हाथ में ले कर अपना ह़क़ मांगता है और लोग इस कटोरी में पैसे डालते हैं। और बरादरी के लोग जो कुछ नाई की कटोरी में डालते हैं वोह घर वाले के ज़िम्मे एक क़र्ज़ होता है कि जब इन देने वालों के यहां अ़क़ीक़ा होगा तो येह लोग इतनी ही रक़म इन के नाई की कटोरी में डालेंगे। इसी त़रह़ सूप में कच्चा अनाज रख कर नाई के सामने रखा जाता है। इसी त़रह़ अ़क़ीक़ा

में लोगों ने येह रस्म मुक़र्रर कर ली है कि जिस वक़्त बच्चे के सर पर उस्तरा रखा जाए फ़ौरन उसी वक़्त बकरा भी ज़ब्ह़ किया जाए। येह सब रस्में बिल्कुल ही लग़्व हैं। शरीअ़त में फ़क़त़ इतनी बात है कि नाई को सर मुंडने की उजरत दे दी जाए और बकरा ख़्वाह सर मुंडने से पहले ज़ब्ह़ करें ख़्वाह बा'द में सब जाइज़ व दुरुस्त है। इसी त़रह़ ख़तना में बा'ज़ जगह इस रस्म की बेह़द पाबन्दी की जाती है बच्चे का लिबास, बिस्तर, चादर सब कुछ सुर्ख़ रंग का तय्यार किया जाता है और चोबीस घन्टें बच्चे के हाथ में चाक़ू या छुरी का रखना लाज़िम समझा जाता है। येह सब रस्में मन घड़त ख़ुराफ़ात हैं शरीअ़त से इन बातों का कोई षुबूत नहीं है।

जहेज़ :- मां-बाप कुछ कपड़े, कुछ जे़वरात, कुछ सामान, बरतन, पलंग, बिस्तर, मेज़ कुरसी, तख़्त, जाए नमाज़ क़ुरआने मजीद, दीनी किताबें वग़ैरा लड़की को दे कर इस को सुसराल भेजते हैं येह लड़की का जहेज़ कहलाता है। बिला शुबा येह जाइज़ बल्कि सुन्नत है क्यूंकि हमारे हुज़ूर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी अपनी प्यारी बेटी ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को जहेज़ में कुछ सामान दे कर रुख़्सत फ़रमाया था लेकिन याद रखो कि जहेज़ में सामान का देना येह मां-बाप की मह़ब्बत व शफ़क़त की निशानी है और इन की ख़ुशी की बात है। मां-बाप पर लड़की को जहेज़ देना येह फ़र्ज़ व वाजिब नहीं है। लड़की और दामाद के लिये हरगिज़ हरगिज़ येह जाइज़ नहीं है कि वोह ज़बरदस्ती मां-बाप को मजबूर कर के अपनी पसन्द का सामान जहेज़ में वुसूल करें मां-बाप की हैषिय्यत इस क़ाबिल हो या न हो मगर जहेज़ में अपनी पसन्द की चीज़ों का तक़ाज़ा करना और इन को मजबूर करना कि वोह क़र्ज़ ले कर बेटी दामाद की ख़्वाहिश पूरी करें। येह ख़िलाफ़े शरीअ़त बात है बल्कि आज कल हिन्दूओं के तिलक जैसी रस्म मुसलमानों में भी चल पड़ी है कि शादी त़ै करते वक़्त ही येह शर्त़ लगा देते हैं कि जहेज़

में फुलां फुलां सामान और इतनी इतनी रक़म देनी पड़ेगी चुनान्चे बहुत से ग़रीबों की लड़कियां इसी लिये बियाही नहीं जा रही हैं कि इन के मां-बाप लड़की के जहेज़ की मांग पूरी करने की ताक़त नहीं रखते येह रस्म यक़ीनन ख़िलाफ़े शरीअ़त है और जबरन क़हरन मां-बाप को मजबूर कर के ज़बरदस्ती जहेज़ लेना येह ना जाइज़ है। लिहाज़ा मुसलमानों पर लाज़िम है कि इस बुरी रस्म को ख़त्म कर दें।

तहवारों की रस्में :- मुसलमानों में येह रवाज है कि ईद के दिन सेवय्या पकाते हैं। बक़र ईद के दिन गोश्त भरी पूरिया क़िस्म क़िस्म के कबाब तय्यार करते हैं। शबे बराअत में ह़ल्वा पकाते हैं। मुह़र्रम में खिचड़ा पकाते हैं शरबत बनाते हैं रजब के महीने में तबारक की रोटियां पकाते हैं और बुज़ुर्गों की फ़ातिह़ा दिलाते हैं। आपस में मिल जुल कर खाते खिलाते हैं। अ़ज़ीज़ों और रिश्तेदारों के यहां तोह़्फ़ा भेजते हैं। एक दूसरे के बच्चों को तेहवारियां देते हैं इन सब रस्मों में चूंकि शरीअ़त के ख़िलाफ़ कोई बात नहीं है इस लिये येह सब रस्में जाइज़ हैं बा'ज़ फ़िर्क़ों वाले इन चीज़ों को ना जाइज़ बताते हैं। और नियाज़ व फ़ातिह़ा के खानों को ह़राम ठहराते हैं और ख़्वाह म ख़्वाह मुसलमानों के सर पर येह इल्ज़ाम थोपते हैं कि मुसलमान इन रस्मों को फ़र्ज़ व वाजिब समझते हैं और त़रह़ त़रह़ से खींच तान कर इन जाइज़ रस्मों को ममनूअ़ व ह़राम बताते हैं। येह उन लोगों का ज़ुल्म और ज़ियादती है कि ख़ुदा की ह़लाल की हुई चीज़ों को बिला किसी शरई दलील के ह़राम ठहराते हैं। इन रस्मों को हरगिज़ हरगिज़ कोई मुसलमान फ़र्ज़ व वाजिब नहीं समझता बल्कि हर मुसलमान इन बातों को एक जाइज़ रस्मो रवाज ही समझ कर किया करता है और यक़ीनन येह सब बातें जाइज़ हैं बल्कि अगर अच्छी निय्यत से हों तो मुस्तह़ब और कारे षवाब भी हैं। (واللّٰه تعالٰی أعلم)

महीनों और दिनों की नुहूसत :- जाहिल औ़रतों में येह रस्मो रवाज है कि वोह ज़ुल क़ा'दा के महीने को "ख़ाली का चांद" और सफ़र के महीने को "तेरा तेज़ी" कहते हैं और इन दोनों महीनों को मन्हूस समझती हैं और इन दोनों महीनों में शादी बियाह और ख़तना वग़ैरा को ना मुबारक जानती हैं। इसी त़रह़ हर महीने की 3, 13, 23 तारीख़ों और 8, 18, 28 तारीखों को मन्हूस समझ कर इन तारीख़ो में शादी बियाह और दूसरी तमाम तक़रीबात करने को बहुत ही बुरा और नुहूसत वाला काम समझती हैं कुछ जाहिल मर्द और औ़रतें क़मर व अ़क़रब में शादी बियाह करने को मन्हूस और ना मुबारक मानते हैं। इसी त़रह़ बुध के दिन को मन्हूस समझ कर कुछ लोग इस दिन सफ़र नहीं करते। कुछ औ़रतें इन महीनों और तारीख़ों की नुहूसत से बचने के लिये त़रह़ त़रह़ के टोटके करती कराती हैं। कहीं कहीं रवाज है कि हर तेरहवीं को कुछ घोंगनियां पका कर तक़्सीम करते हैं ताकि इस तारीख़ की मन्हूसिय्यत से ह़िफ़ाज़त रहे। कान खोल कर सुन लो और याद रखो कि इस क़िस्म के ए'तिक़ादात सरा सर शरीअ़त के ख़िलाफ़ हैं। और गुनाह की बातें हैं इस लिये इन ए'तिक़ादों से तौबा करना चाहिये। इस्लाम में हरगिज़ हरगिज़ न कोई महीना मन्हूस है न कोई तारीख़ न कोई दिन। हर महीना हर तारीख़ हर दिन अल्लाह तआ़ला का पैदा किया हुवा है और अल्लाह तआ़ला ने इन में से किसी को न मन्हूस बनाया है न ना मुबारक। येह सब ए'तिक़ाद मुशरिकों, नजूमियों और राफ़ज़ियों के मन घड़त अ़क़ीदों की पैदावार हैं जो जाहिल औ़रतों में चल पड़े हैं। इन रस्मों को मिटाना बहुत ज़रूरी है इस लिये अ़ज़ीज़ बहनो! तुम ख़ुद भी इन ए'तिक़ादों से बचो और दूसरों को भी बचाओ। अल्लाह तआ़ला इस जिहाद का तुम को बहुत बड़ा षवाब देगा।

मुह़र्रम की रस्में :- मुह़र्रम के महीने में सिर्फ़ इतनी बात है कि ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और शुहदाए करबला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के मुक़द्दस रौज़ों की तस्वीर नक़्शा बना कर रखना और इन को देखना येह

तो जाइज़ है। क्यूंकि येह एक गै़र जानदार चीज़ की तस्वीर या नक़्शा है लिहाज़ा जिस त़रह़ का'बा, बैतुल मुक़द्दस, ना'लैन शरीफै़न वगै़रा की तस्वीरें और इन के नक़्शे बना कर रखने को शरीअ़त ने जाइज़ ठहराया है। इसी त़रह़ शुहदाए करबला के रौज़ों की तस्वीरें और नक़्शे भी यक़ीनन जाइज़ ही रहेंगे। लेकिन इस के साथ साथ मुह़र्रम के महीने में जो बहुत सी बिदअ़तें और ख़ुराफ़ाती रस्में चल पड़ी हैं। वोह यक़ीनन नाजाइज़ और गुनाह के काम हैं। मषलन हर साल सेंकड़ों हज़ारों रूपे के ख़र्च से रौज़ए करबला का नक़्शा बना कर इस को पानी में डुबो देना या ज़मीन में दफ़्न कर देना। या जंगलों में फैंक देना येह यक़ीनन ह़राम व नाजाइज़ है। क्यूंकि येह अपने माल को बरबाद करना है और हर मुसलमान जानता है कि माल को ज़ाएअ़ और बरबाद करना ह़राम व नाजाइज़ है। इसी त़रह़ की दूसरी बहुत सी ख़ुराफ़ात व लग़्विय्यात मषलन ढोल ताशा बजाना, ता'ज़ियों को मातम करते हुवे गली गली फिराना, सीने को हाथों या ज़न्जीरों और छूरियों से पीट पीट कर और मार मार कर उछलते कुदते हुवे मातम करना, ता'ज़ियों के नीचे अपने बच्चों को लैटाना, ता'ज़ियों की ता'ज़ीम के लिये ता'ज़ियों के सामने सजदा करना, ता'ज़ियों के नीचे की धूल उठा उठा कर बत़ौरे तबर्रुक चेहरों, सरों और सीनों पर मलना। अपने बच्चों को मुह़र्रम का फ़क़ीर बना कर मुह़र्रम की नियाज़ के लिये भीक मंगवाना। बच्चों को करबला का पैक और क़ासिद बना कर और एक ख़ास क़िस्म का लिबास पहना कर इधर उधर दौड़ाते रहना, सोग मनाने के लिये ख़ास क़िस्म के काले कपड़े पहन कर नंगे सर नंगे पाऊं गिरेबान खोले हुवे या गिरेबान फाड़ कर गली गली भागे भागे फिरना वगै़रा वगै़रा क़िस्म की लग़्विय्यात व ख़ुराफ़ात की रस्में जो मुसलमानों में फैली हुई हैं। येह सब ममनूअ़ व नाजाइज़ हैं और येह सब ज़मानए जाहिलिय्यत और राफ़ज़ियों की निकाली हुई रस्में हैं जिन से तौबा कर के ख़ुद भी इन ह़राम रस्मों से बचना और दूसरों को बचाना हर मुसलमान

पर लाज़िम है इसी त़रह़ ता'ज़ियों का जुलूस देखने के लिये औ़रतों का बे पर्दा घरों से निकलना और मर्दों के मजमूओं में जाना और ता'ज़ियों को झुक झुक कर सलाम करना। येह सब काम भी शरीअ़त में मन्अ़ और गुनाह हैं।

मुह़र्रम में क्या करना चाहिये ?

मुह़र्रम की दसवीं तारीख़ जिस का नाम "रोज़े आ़शूरा" है। दुन्या में येह बड़ा ही अ़ज़्मत व फ़ज़ीलत वाला दिन है। येही वोह दिन है कि इस में ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तौबा क़बूल हुई। इसी दिन ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام की किश्ती तूफ़ान में सलामती के साथ "जूदी पहाड़" पर पहुंची। इसी दिन ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام पैदा हुए और इसी दिन आप को "ख़लीलुल्लाह" का लक़ब मिला। और इसी दिन आप ने नमरूद की आग से नजात पाई येही वोह दिन है कि ह़ज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام की बलाएं ख़त्म हुईं। येही वोह दिन है कि ह़ज़रते इदरीस व ह़ज़रते ईसा عليهما السلام आस्मानों पर उठाए गए। येही वोह दिन है कि बनी इसराईल के लिये दरिया फट गया। और फ़िरऔ़न लश्कर समेत दरिया में ग़र्क़ हो गया। और ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को फ़िरऔ़न से नजात मिली। इसी दिन ह़ज़रते यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام मछली के पेट से ज़िन्दा व सलामत बाहर तशरीफ़ लाए। इसी दिन ह़ज़रते इमामे हुसैन और इन के रुफ़क़ा ने मैदाने करबला में जामे शहादत नोश फ़रमा कर ह़क़ के परचम को सर बुलन्द फ़रमाया। (ماثبت من السنة (مترجم)ص ١٧،غنية الطالبين،ص ٨٧)

शबे आ़शूरा की नफ़्ल नमाज़ :- आ़शूरा की रात में चार रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल इस तरकीब से पढ़े कि हर रक्अ़त में اَلْحَمْد के बा'द आयतुल कुरसी एक बार और सूरए इख़्लास (قل هو الله) तीन तीन बार पढ़े और नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर एक सो मरतबा قل هو الله की सूरह पढ़े। गुनाहों से पाक होगा और बहिश्त में बे इन्तिहा ने'मतें मिलेंगी।

आ़शूरा का रोज़ा :- नववीं और दसवीं मुह़र्रम दोनों का रोज़ा रखना चाहिये और अगर न हो सके तो आ़शूरा ही के दिन रोज़ा रखे। इस रोज़े का षवाब बहुत बड़ा है।

आ़शूरा के दिन दस चीज़ों को उ़-लमा ने मुस्तह़ब लिखा है बा'ज़ आ़लिमों ने इन को इरशादे नबवी कहा है और बा'ज़ ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़ौल बताया है। बहर ह़ाल येह सब अच्छे आ'माल हैं लिहाज़ा इन को करना चाहिये।

﴾1﴿ रोज़ा रखना। ﴾2﴿ सदक़ा करना। ﴾3﴿ नमाज़े नफ़्ल पढ़ना। ﴾4﴿ एक हज़ार मरतबा (قل ھو اللہ) पढ़ना। ﴾5﴿ उ़-लमा की ज़ियारत। ﴾6﴿ यतीम के सर पर हाथ फैरना। ﴾7﴿ अपने अहलो इ़याल के रिज़्क़ में वुस्अ़त करना। ﴾8﴿ ग़ुस्ल करना। ﴾9﴿ सुर्मा लगाना। ﴾10﴿ नाख़ुन तराशना।

और बा'ज़ किताबों में लिखा है कि इन दस चीज़ों के इ़लावा तीन चीज़ें और भी मुस्तह़ब हैं।

﴾1﴿ मरीज़ों की बीमार पुरसी करना। ﴾2﴿ दुश्मनों से मिलाप करना। ﴾3﴿ दुआ़ए आ़शूरा पढ़ना।

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जो शख़्स आ़शूरा के दिन अपने बाल बच्चों के खाने पीने में ख़ूब ज़ियादा फ़राख़ी और कुशादगी करेगा या'नी ज़ियादा खाना तय्यार करा कर ख़ूब पेट भर के खिलाएगा **अल्लाह** तआ़ला साल भर तक उस के रिज़्क़ में वुस्अ़त और ख़ैरो बरकत अ़ता फ़रमाएगा। (ماثبت من السنۃ(مترجم)ص۱۷)

मजालिसे मुह़र्रम :- अ़शरए मुह़र्रम बिल ख़ुसूस दसवीं मुह़र्रम आ़शूरा के दिन मजलिसे मुनअ़क़िद करना और सह़ीह़ रिवायतों के साथ शुहदाए करबला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के फ़ज़ाइल व वाक़िआ़ते करबला को बयान करना जाइज़ और बाइ़षे षवाब है और ह़दीष शरीफ़ में है कि जिन मजालिस में सालेह़ीन का ज़िक्र हो, वहां रह़मत नाज़िल होती है। फिर चूंकि इन वाक़िआ़त में सब्रो तह़म्मुल और तस्लीमो रिज़ा और पाबन्दिये

शरीअ़त का बे मिषाल अ़मली नुमूना भी है। इस लिये करबला के वाक़िआ़त को बार बार बयान करने से मुसलमानों को दीन पर इस्तिक़ामत ह़ासिल होगी जो इस्लाम का इ़त्र और ईमान की रूह़ है मगर हां इस का ख़्याल रहे कि इन मजलिसों में सह़ाबए किराम رضی اللہ تعالٰی عنہم का भी ज़िक्रे ख़ैर हो जाना चाहिये। ताकि अहले सुन्नत और शीओं की मजलिसों में फ़र्क़ व इम्तियाज़ रहे। मीलाद शरीफ़ और ग्यारहवीं शरीफ़ की मह़फ़िलों का भी येही मस्अला है कि येह सब जाइज़ व दुरुस्त और बहुत ही बा बरकत मह़फ़िलें हैं और यक़ीनन बाइ़षे षवाब और मुस्तह़ब हैं। इस लिये इन को निहायत इख़्लास व मह़ब्बत से करना चाहिये और इन मह़फ़िलों और मजलिसों में निहायत ही मह़ब्बत व अ़क़ीदत के साथ ह़ाज़िरी देना चाहिये। इन मह़फ़िलों से लोगों को रोकना येह वहाबियों का त़रीक़ा है। हरगिज़ इन लोगों की बात नहीं माननी चाहिये। क्यूंकि येह लोग गुमराह हैं।

फ़ातिह़ा :- मुह़र्रम के दस दिनों तक ख़ुसूसन आ़शूरा के दिन शरबत पिला कर, खाना खिला कर, शीरीनी पर या खिचड़ा पका कर शुहदाए करबला की फ़ातिह़ा दिलाना और इन की रूहों को षवाब पहुंचाना येह सब जाइज़ और षवाब के काम हैं। और इन सब चीज़ों का षवाब यक़ीनन शुहदाए करबला की रूहों को पहुंचता है और इस फ़ातिह़ा व ईसाले षवाब के मस्अले में ह़नफ़ी, शाफ़ेई, मालिकी, ह़म्बली अहले सुन्नत के चारों इमामों का इत्तिफ़ाक़ है। (شرح العقائد النسفیۃ، مبحث دعاء الاحیاء للاموات، ص۱۷۲)

पहले ज़मानों में फ़िर्क़ए मो'तज़िला और इस ज़माने में फ़िर्क़ए वहाबिया इस मस्अले में अहले सुन्नत के ख़िलाफ़ हैं और फ़ातिह़ा व ईसाले षवाब से मन्अ़ करते रहते हैं। तुम मुसलमानाने अहले सुन्नत को लाज़िम है कि हरगिज़ हरगिज़ न इन की बातें सुनो, न इन लोगों से मेल जोल रखो वरना तुम ख़ुद भी गुमराह हो जाओगे और दूसरों को भी गुमराह करोगे।

दसवीं मुह़र्रम को दुआ़ए आ़शूरा पढ़ने से उ़म्र में ख़ैरो बरकत और ज़िन्दगी में फ़लाह़ व ने'मतें ह़ासिल होती है। हमारी किताब "मौसिमे रह़मत" में पूरी और मुकम्मल दुआ़ए आ़शूरा लिखी हुई है इस किताब को ज़रूर पढ़ो।

मुहर्रम का खिचड़ा :- आशूरा के दिन खिचड़ा पकाना फ़र्ज़ या वाजिब नहीं है लेकिन इस के ह़राम व नाजाइज़ होने की भी कोई दलीले शरई नहीं है बल्कि एक रिवायत है कि ख़ास आशूरे के दिन खिचड़ा पकाना ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام की सुन्नत है। चुनान्चे मन्क़ूल है कि जब तूफ़ान से नजात पा कर ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام की किश्ती जूदी पहाड़ पर ठहरी तो आशूरे का दिन था। आप ने किश्ती में से तमाम अनाजों को बाहर निकाला तो फूल (बड़ी मटर) गेहूं, जव, मसूर, चना, चावल, पियाज़, सात क़िस्म के ग़ल्ले मौजूद थे आप ने इन सातों अनाजों को एक ही हांडी में मिला कर पकाया। चुनान्चे अ़ल्लामा शहाबुद्दीन क़लियूबी ने फ़रमाया कि मिस्र में जव खाना आशूरा के दिन "त़बीखुल ह़बूब" (खिचड़ा) के नाम से पकाया जाता है। इस की अस्ल दलील येह ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام का अ़मल है। (كتاب القليوبي، فائدة في يوم عاشوراء، ص١٣٦)

शबे बराअत का ह़ल्वा :- शबे बराअत का ह़ल्वा पकाना न तो फ़र्ज़ व सुन्नत है न ह़राम व नाजाइज़ बल्कि ह़क़ बात येह है कि शबे बराअत में दूसरे तमाम खानों की त़रह़ ह़ल्वा पकाना भी एक मुबाह़ और जाइज़ काम है और अगर इस नेक निय्यती के साथ हो कि एक उ़म्दा और लज़ीज़ खाना फ़ुक़रा व मसाकीन और अपने अहलो इ़याल को खिला कर षवाब ह़ासिल करे तो येह षवाब का काम भी है।

दर ह़क़ीक़त इस रात में ह़ल्वे का दस्तूर यूं निकल पड़ा कि येह मुबारक रात सदक़ा व ख़ैरात और ईसाले षवाब व सिलए रेह़मी की ख़ास रात है। लिहाज़ा इन्सानी फ़ित़रत का तक़ाज़ा है कि इस रात में कोई मरग़ूब और लज़ीज़ खाना पकाया जाए। बा'ज़ आ़लिमों की नज़र बुख़ारी शरीफ़ की इस ह़दीष पर पड़ी कि

كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يحب الحلواء والعسل۔

(صحيح البخاری، كتاب الاطعمة، باب الحلواء والعسل، رقم ٥٤٣١، ج٣، ص٥٣٦)

या'नी "रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ल्वा (शीरीनी) और शहद को पसन्द फ़रमाते थे।"

लिहाज़ा इन उ़–लमाए किराम ने इस ह़दीष पर अ़मल करते हुए इस रात में ह़ल्वा पकाया। फिर रफ़्ता रफ़्ता अ़वाम में भी इस का चर्चा और रवाज हो गया। चुनान्चे ह़ज़रते शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ साह़िब क़िब्ला मुह़द्दिषे देहल्वी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मल्फ़ूज़ात में है कि हिन्दूस्तान में शबे बराअत को रोटी और ह़ल्वा पर फ़ातिह़ा दिलाने का दस्तूर है। और समरक़न्द व बुख़ारा में "क़तलमा" पर जो एक मीठा खाना है।

अल ग़रज़ शबे बराअत का ह़ल्वा हो या ई़द की सेवय्यां, मुह़र्रम का खिचड़ा हो या मलीदा, मह़ज़ एक रस्मो रवाज के त़रीक़े पर लोग पकाते खाते और खिलाते हैं। कोई भी येह अ़क़ीदा नहीं रखता कि येह फ़र्ज़ या सुन्नत हैं। इस लिये इस को नाजाइज़ कहना दुरुस्त नहीं। याद रखो किसी ह़लाल को ह़राम ठहराना **अल्लाह** पर झूटी तोहमत लगाना है जो एक बदतरीन गुनाह है। क़ुरआने मजीद में है :

قُلْ اَرَءَیْتُمْ مَّاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا
وَّحَلٰلًا ؕ قُلْ آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ۝ (پ۱۱، یونس:۵۹)

या'नी कह दो भला बताओ तो वोह जो **अल्लाह** ने तुम्हारे लिये रिज़्क़ उतारा। इस में तुम ने अपनी त़रफ़ से कुछ ह़राम कुछ ह़लाल ठहरा लिया। (ऐ पैग़म्बर) फ़रमा दो क्या **अल्लाह** ने इस का तुम्हें हुक्म दिया है, या **अल्लाह** पर तुम लोग तोहमत लगाते हो ?

﴾4﴿

ईमानिय्यात

गुलामी में न काम आती हैं तदबीरें न शमशीरें
जो हो ज़ौक़े यक़ीं पैदा तो कट जाती हैं ज़न्जीरें

जानना चाहिये कि मसाइले शरीअ़त चार क़िस्म के हैं पहली क़िस्म वोह मसाइल हैं जिन का तअ़ल्लुक़ ईमान व अ़क़ीदे से हैं जैसे तौह़ीद, रिसालत, क़ियामत वग़ैरा का बयान। दूसरी क़िस्म वोह चीजें हैं जो बदनी व माली इबादतों से तअ़ल्लुक़ रखती हैं जैसे नमाज़ रोज़ा और ह़ज व ज़कात वग़ैरा। तीसरी क़िस्म दो बातें हैं जिन का तअ़ल्लुक़ एक दूसरे के साथ लैन दैन और मुआ़मलात से है। जैसे ख़रीदो फ़रोख़्त, निकाह़ व त़लाक़, हुकूमत व सियासत वग़ैरा। चौथी क़िस्म उन औसाफ़ का बयान जो इन्सान के अख़्लाक़ व आ़दात और नफ़्सानी जज़्बात से तअ़ल्लुक़ रखने वाले हैं। जैसे शुजाअ़त, सख़ावत, सब्रो शुक्र वग़ैरा।

मसाइले शरीअ़त की येह चारों क़िस्में इन्सान की सलाह़ व फ़लाहे़ दारैन के लिये इन्तिहाई ज़रूरी हैं लेकिन वाज़ेह़ रहें कि जब तक अ़क़ीदे सह़ीह़ और दुरुस्त नहीं होंगे उस वक़्त तक कोई अ़मल मक़बूल नहीं हो सकता। इस लिये ज़रूरी है कि पहले इस्लाम के अ़क़ीदों को अच्छी त़रह़ जान कर इस पर ईमान लाएं और सच्चे दिल से इन को मान कर ज़बान से इक़रार भी करें। यूं समझो कि अ़क़ाइद जड़ हैं और आ'माल शाख़ें हैं अगर दरख़्त की जड़ ही कट जाएगी तो शाख़ें कभी हरी भरी नहीं रह सकतीं। इस लिये पहले हम अ़क़ाइदे इस्लाम को बयान करते हैं। इस के बा'द إِنْ شَاءَ اللّٰه تعالٰی नमाज़ रोज़ा और ज़कात व ह़ज

वग़ैरा आ'माले इस्लाम का बयान भी हम लिखेंगे और इन फ़राइज़ के इलावा दूसरे इस्लामी मसाइल को भी हम बयान करेंगे । **अल्लाह** तआ़ला हर मुसलमान के अ़क़ीदों को दुरुस्त फ़रमाए और इल्म की तौफ़ीक़ दे । (आमीन)

छे कलिमे

अव्वल कलिमा त़य्यिब :- لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ (صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم)

अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं ।

मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *के बरगुज़ीदा रसूल हैं ।*

दुवुम कलिमा शहादत :-

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

मैं गवाही देता हूं कि ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह एक है उस का कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुह़म्मद* صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم *उस के ख़ास बन्दे और रसूल हैं ।*

सिवुम कलिमा तमजीद :-

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ ؕ وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ؕ

पाक है ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *और सारी ख़ूबियां* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *ही के लिये हैं ।* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *के सिवा कोई मा'बूद नहीं और* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *सब से बड़ा है और गुनाह से बाज़ रहने और नेकी की क़ुव्वत* ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *ही से है जो बुलन्द मर्तबे वाला अ़ज़मत वाला है ।*

चहारुम कलिमा तौह़ीद :-

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ؕ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ اَبَدًا اَبَدًا ؕ ذُو الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ؕ

अल्लाह عزوجل के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह तन्हा है उस का कोई शरीक नहीं । उसी की बादशाही है और उसी के लिये सारी ख़ूबियां, वोह ज़िन्दा करता और मौत देता है और वोह ज़िन्दा है कभी भी नहीं मरेगा । वोह अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाला है । उसी के हाथ में ख़ैर है । और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है ।

पन्जुम कलिमा अस्तग़्फ़ार :-

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّیْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ اَذْنَبْتُهٗ عَمَدًا اَوْ خَطَاً سِرًّا اَوْ عَلَانِيَةً وَّ اَتُوْبُ اِلَيْهِ مِنَ الذَّنْبِ الَّذِیْۤ اَعْلَمُ وَمِنَ الذَّنْبِ الَّذِیْ لَآ اَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ وَسَتَّارُ الْعُيُوْبِ وَغَفَّارُ الذُّنُوْبِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِیِّ الْعَظِيْمِ ط

मैं **अल्लाह** عزوجل से बख़्शिश मांगता हूं जो मेरा परवर दगार है हर गुनाह से जो मैं ने किया, ख़्वाह जान कर या बे जाने, छुप कर, ख़्वाह खुल्लम खुल्ला और मैं इस की त़रफ़ तौबा करता हूं उस गुनाह से जिसे मैं जानता हूं और उस गुनाह से भी जो मैं नही जानता, यक़ीनन तू ही हर ग़ैब को ख़ूब जानने वाला है और तू ही ऐबों को छुपाने वाला और गुनाहों को बख़्शने वाला है और गुनाह से बाज़ रहने और नेकी की क़ुव्वत **अल्लाह** عزوجل ही से है जो बुलन्द मर्तबे वाला अ़ज़मत वाला है ।

शशुम कलिमा रद्दे कुफ़्र :-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ شَيْئًا وَّاَنَا اَعْلَمُ بِهٖ وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَآ اَعْلَمُ بِهٖ تُبْتُ عَنْهُ وَتَبَرَّاْتُ مِنَ الْكُفْرِ وَالشِّرْكِ وَالْكِذْبِ وَالْغِيْبَةِ وَالْبِدْعَةِ وَالنَّمِيْمَةِ وَالْفَوَاحِشِ وَالْبُهْتَانِ وَالْمَعَاصِیْ كُلِّهَا وَ اَسْلَمْتُ وَاَقُوْلُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ط

ऐ **अल्लाह** عزوجل मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस बात से कि मैं तेरे साथ किसी को शरीक करूं और वोह मेरे इल्म में हो और मैं तुझ से बख़्शिश मांगता हूं उस गुनाह से जिस का मुझे इल्म नहीं मैं ने इस से

तौबा की और मैं बेज़ार हुवा कुफ़्र से और शिर्क और झूट और ग़ीबत से और बूरी नव ईजादात से और चुग़ली से और बे हयाई के कामों से और किसी पर बोहतान बांधने से और हर क़िस्म की ना फ़रमानी से और मैं इस्लाम लाया और मैं कहता हूं सिवाए ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *के कोई मा'बूद नहीं मुहम्मद* صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *के बर गुज़ीदा रसूल हैं।*

ईमाने मुजमल :-

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ كَمَا هُوَ بِاَسْمَآئِهٖ وَصِفَاتِهٖ وَقَبِلْتُ جَمِيْعَ اَحْكَامِهٖ اِقْرَارٌ بِاللِّسَانِ وَتَصْدِيْقٌ بِالْقَلْبِ

मैं ईमान लाया ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *पर जैसा कि वोह अपने नामों और अपनी सिफ़तों के साथ है और मैं ने क़बूल किये उस के तमाम अह़काम मुझे इस का ज़बान से इक़रार है और दिल से यक़ीन।*

ईमाने मुफ़स्सल :-

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى وَالْبَعْثِ بَعْدَالْمَوْتِ ط

मैं ईमान लाया ***अल्लाह*** عَزَّوَجَلَّ *पर और उस के फ़िरिश्तों पर और उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर और क़ियामत के दिन पर और इस पर कि हर भलाई और बुराई* ***अल्लाह*** *तआ़ला ने मुक़द्दर फ़रमा दी है और मरने के बा'द दोबारा ज़िन्दा होना है।*

तम्बीह :- इन छे कलिमों और ईमाने मुजमल व ईमाने मुफ़स्सल को ज़बानी याद कर लो। और मा'नों को ख़ूब समझ कर सच्चे दिल से यक़ीन के साथ इन पर ईमान लाओ। क्यूंकि येही वोह कलिमे हैं जिन पर इस्लाम की बुन्याद है। जब तक इन कलिमों पर ईमान न लाए कोई मुसलमान नहीं हो सकता।

येह मुसलमानों की बहुत बड़ी कम नसीबी है कि हज़ारों लाखों मुसलमान इन कलिमों से नावाक़िफ़ या ग़ाफ़िल हैं। हालांकि हर मुसलमान मां–बाप पर लाज़िम है कि वोह अपने बच्चों और बच्चियों को येह इस्लामी कलिमे ज़बानी याद करा दें। और इन कलिमों के मा'ना बच्चों को बता कर ज़ेहन नशीन करा दें। ताकि येह इस्लामी अ़कीदे बचपन ही से दिलों में जम जाएं और ज़िन्दगी की आख़िरी सांस तक हर मुसलमान मर्द व औ़रत इन अ़क़ीदों पर पहाड़ की त़रह़ मज़बूत़ी के साथ क़ाइम रहे और दुन्या की कोई त़ाक़त इन को इस्लाम से बर गश्ता न कर सके और जिन बालिग़ मर्दों और औ़रतों को येह कलिमा न याद हों उन पर भी लाज़िम है कि वोह जल्द से जल्द इन कलिमों को याद कर लें और इन के मा'नों को समझ कर सच्चे दिल से इन को जान पहचान कर और मान कर इन पर ईमान रखें और हर वक़्त इन अ़क़ीदों का ध्यान रखें। क्यूंकि येही अ़क़ीदे इस्लाम की पूरी इ़मारत की बुन्याद हैं। जिस त़रह़ किसी इ़मारत की बुन्याद हिल जाए या कमज़ोर हो जाए तो वोह इ़मारत क़ाइम नहीं रह सकती। ठीक इसी त़रह़ अगर इस्लाम के इन अ़क़ीदों में कोई शक्को शुबा पैदा हो जाए तो इस्लाम की इ़मारत बिल्कुल ही तहस नहस और बरबाद हो जाएगी।

अल्लाह तआ़ला

अ़क़ीदा : 1 तमाम आ़लम ज़मीनो आस्मान वग़ैरा सारा जहान पहले बिल्कुल नापैद था। कोई चीज़ भी नहीं थी फिर **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी क़ुदरत से सब को पैदा किया तो येह सब कुछ मौजूद हुवा।

(شرح العقائد النسفية ، مبحث العالم بجميع اجزائه محدث ، ص٢٤/ پ٧،الانعام:١٠١)

अ़क़ीदा : 2 जिस ने तमाम आ़लम और दूसरे जहान को पैदा किया उसी पाक ज़ात का नाम **अल्लाह** عزوجل है।

(پ١،البقرة:٢٩/ پ٧،الانعام:١ /پ٢٤،المؤمنون:٦٢/ المسامرة بشرح المسايرة،

الاصل العاشر العلم بانه تعالیٰ واحدلاشريك له،ص٤٤)

अ़क़ीदा : 3 अल्लाह तआ़ला एक है। कोई उस का शरीक नहीं।

(پ۲٦،محمد:۱۹/پ۱۵،الکھف:۲٦)

वोह हमेशा से है और हमेशा रहेगा।

(المسامرۃ بشرح المسایرۃ ، الاصل الثانی : اللہ قدیم ، ص۲۲ـ۲۵)

वोह बे परवाह है। किसी का मोह़ताज नहीं। सारा आ़लम उस का मोह़ताज है।

(شرح الملا علی القاری علی الفقہ الاکبر ، لایشبہ اللّٰہ شیء من خلقہ، ص۱۵/ پ۲٦ ، محمد:۳۸)

कोई चीज़ उस के मिष्ल नहीं वोह सब से यकता और निराला है।

(پ۲۵،الشوریٰ:۱۱/پ۳۰،الاخلاص:۱ـ٤)

और वोही सब का ख़ालिक़ व मालिक है। (پ۷،المائدۃ:۱۲۰/پ۷،الانعام:۱۰۲)

अ़क़ीदा : 4 वोह ज़िन्दा है। (پ۳،البقرۃ:۲۵۵)

वोह क़ुदरत वाला है वोह हर चीज़ को जानता है। (پ۲۲،فاطر:٤٤)

सब कुछ देखता है सब कुछ सुनता है। (پ۲۵،الشوریٰ:۱۱)

सब की ज़िन्दगी और मौत का मालिक है जिस को जब तक चाहे ज़िन्दा रखे और जब चाहे मौत दे। वोही सब को जिलाता और मारता है।

(پ۱۱،التوبۃ:۱۱٦)

वोही सब को रोज़ी देता है जिस को चाहे इ़ज़्ज़त और ज़िल्लत देता है।

(پ۳،آل عمران:۲٦،۲۷)

और वोह जो कुछ चाहे करता है। (پ۱۷،الحج:۱۸)

वोही इ़बादत के लाइक़ है। (پ۳،البقرۃ:۲۵۵)

कोई उस का मिष्ल और मुक़ाबिल नहीं। (پ۲۵،الشوریٰ:۱۱)

न उस ने किसी को जना न वोह किसी से जना गया। (پ۳۰،الاخلاص:۳)

न वोह बीवी बच्चों वाला है। (پ۲۹،الجن:۳)

अ़क़ीदा : 5 वोह कलाम फ़रमाता है। (پ۳،البقرۃ:۲۵۳)

लेकिन उस का कलाम हम लोगों के कलाम की त़रह़ का नहीं है। वोह ज़बान, आंख, कान वग़ैरा आ'ज़ा से और हर ऐ़ब और नुक़्सान से पाक है हर कमाल उस की ज़ात में मौजूद है।

(المسامرہ بشرح المسایرۃ ،ختم المصنف ، کتاب بیان عقیدۃ اھل السنۃ ، ص۳۹۲۔۳۹۳)

अ़क़ीदा : 6 उस की सब सिफ़तें हमेशा से हैं और हमेशा रहेंगी। कोई सिफ़त उस की कभी न ख़त्म हो सकती है न घट बढ़ सकती है।

(المعتقد المنتقد مع المستند المعتمد ، مسئلۃ صفاتہ تعالٰی غیر محدثۃ ولا مخلوقۃ ، ص۴۹/شرح العقائد النسفیۃ ، مبحث اثبات الصفات ، ص۴۵۔۴۷)

अ़क़ीदा : 7 वोह अपनी पैदा की हुई हर चीज़ पर बड़ा मेहरबान है। वोही सब को पालता है। (پ۱،الفاتحۃ:۱۔۲)

वोह बड़ाई वाला और बड़ी इ़ज़्ज़त वाला है। (پ۲۸،الحشر:۲۳)

सब कुछ उसी के क़ब्ज़े और इख़्तियार में है जिस को चाहे पस्त कर दे। जिस को चाहे बुलन्द कर दे। (پ۳،اٰل عمران:۲۶)

जिस की चाहे रोज़ी कम कर दे जिस की चाहे ज़ियादा कर दे। (پ۲۱،العنکبوت:۶۲)

वोह इन्साफ़ वाला है।

(شعب الایمان ، باب فی الایمان باللہ ، فصل فی معرفۃ اسماء اللہ وصفاتہ ،رقم ۱۰۲،ج۱،ص۱۱۴)

किसी पर ज़ुल्म नहीं करता। (پ۵،النساء:۴۰ / پ۱۵، الکھف:۴۹)

वोह बड़े तह़म्मुल और बरदाश्त वाला है।

(شعب الایمان ، باب فی الایمان باللہ ، فصل فی معرفۃ اسماء اللہ وصفاتہ ،رقم ۱۰۲ ،ج۱،ص ۱۱٤)

वोह गुनाहों का बख़्शने वाला। (پ ٢٤،الزمر:٥٣)

और बन्दों की दुआ़ओं को क़बूल फ़रमाने वाला है।

(پ ٢٠ ،النمل:٦٢/پ ٢ ،البقرۃ:١٨٦)

वोह सब पर ह़ाकिम है उस पर कोई हुक्म चलाने वाला नहीं।

(پ٧،الانعام:١٨/ پ ١٢ ،ھود:٤٥/المستند المعتمدعلی المعتقد المنتقد، ص ٩٩،حاشیہ ١٣١)

न उस को उस के इरादे से कोई रोकने वाला है। (پ٢٦،ق:٢٩)

वोह सब का काम बनाने वाला है। दुन्या में जो कुछ होता है उसी के हुक्म से होता है बिग़ैर उस के हुक्म के कोई ज़र्रा हिल नहीं सकता। उस के किसी हुक्म और उस के किसी काम में किसी को रोक टोक की मजाल नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि.1. स. 8)

वोह तमाम आ़लम और सारे जहान की ह़िफ़ाज़त और इस का इन्तिज़ाम फ़रमाता है। (پ ١٣،یوسف:٦٤/ پ ٢٢،سبا:٢١)

न वोह सोता है न उंघता है। (پ٣،البقرۃ:٢٢٥)

न कभी ग़ाफ़िल होता है। (پ ٢،البقرۃ:١٤٤)

अ़क़ीदा : 8 **अल्लाह** तआ़ला पर कोई चीज़ वाजिब और लाज़िम नहीं है वोह जो कुछ करता है वोह उस का फ़ज़्ल और उस की मेहरबानी है।

(المسامرۃ بشرح المسایرۃ ، الاصل الرابع فی بیان انہ لایجب علی اللہ تعالٰی فعل شی ، ص ١٥٤
المعتقد المنتقد مع المستند المعتمد ، یستحیل وجوب شی علیہ تعالٰی ، ص ٧١)

अ़क़ीदा : 9 वोह मख़्लूक़ की तमाम सिफ़तों से पाक है। (شرح الفقہ الاکبر،ص ٣١)

वोह बड़ा ही रह़ीमो करीम है। वोह अपने बन्दों को किसी ऐसे काम का हुक्म नहीं देता जो बन्दों से न हो सके। (پ۳،البقرۃ:۲۸۶)
वोह अपने बन्दों की बद आ'मालियों और गुनाहों से नाराज़ होता है और बन्दों की नेकियों और इ़बादतों से ख़ुश होता है। इसी लिये उस ने गुनाह गारों के लिये दोज़ख़ का अ़ज़ाब और नेकोकारों के लिये जन्नत का षवाब बनाया है।

अ़क़ीदा : 10 **अल्लाह** तआ़ला जहत और मकान व ज़मान और ह़रकत व सुकून और शक्लो सूरत वग़ैरा मख़्लूक़ात की तमाम सिफ़ात व कैफ़िय्यात से पाक है।

(شرح العقائد النسفية ، الدليل على كونه تعالٰى ليس جسما ،ص۳۸۔۴۱،
المسامرة بشرح المسايرة، الاصل السابع انه تعالٰى ليس مختصا بجهة ، ص ۳۰۔۳۱)

अ़क़ीदा : 11 दुन्या की ज़िन्दगी में सर की आंखों से **अल्लाह** तआ़ला का दीदार सिर्फ़ हमारे नबी ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ह़ासिल हुवा। हां, दिल की निगाह से या ख़्वाब में **अल्लाह** तआ़ला का दीदार दूसरे अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام बल्कि बहुत से औलियाए किराम को भी नसीब हुवा। और आख़िरत में हर सुन्नी मुसलमान को **अल्लाह** तआ़ला अपना दीदार कराएगा मगर याद रखो कि **अल्लाह** तआ़ला का दीदार बिला कैफ़ है। या'नी देखेंगे मगर येह नहीं कह सकते कि कैसे ? और किस त़ौर पर देखेंगे। اِن شَاءَاللّٰهُ تَعَالٰی जब देखेंगे। उस वक़्त बता देंगे। इस में बह़ष करना जाइज़ नहीं। येह ईमान रखो कि क़ियामत में ज़रूर उस का दीदार होगा, जो आख़िरत की ने'मतों में सब से बड़ी ने'मत है।

(شرح الملا على القارى على الفقه الاكبر ، جواز رؤية البارى جل شانه فى الدنيا ،
ص۱۲۳۔۱۲۴/المعتقد المنتقد مع المستند المعتمد،منه (۱۶) انه تعالٰى مرئى بالا بصار فى
الأخرة، ص ۵۶،۵۸،شرح العقائد النسفية،مبحث رؤية الله تعالى والدليل عليها، ص ۷۴۔۷۵)

अ़क़ीदा : 12 **अल्लाह** तआ़ला के हर काम में बे शुमार हिक्मतें हैं ख़्वाह हम को मा'लूम हों या न मा'लूम हों।

(المسامرة بشرح المسايرة، لله تعالٰی فی کل فعل حکمة، ص٢١٥)

अल्लाह तआ़ला के किसी काम को बुरा समझना या इस पर ए'तिराज़ करना या नाराज़ होना येह कुफ़्र की बात है।

ख़बरदार ! ख़बरदार ! कभी हरगिज़ हरगिज़ **अल्लाह** तआ़ला के किसी काम पर न ए'तिराज़ करो न नाराज़ रहो बल्कि येही ईमान रखो कि **अल्लाह** तआ़ला जो कुछ करता है वोही अच्छा है। ख़्वाह हमारी समझ में आए या न आए क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला अ़लीमो ह़कीम या'नी बहुत ज़ियादा जानने वाला और बहुत ज़ियादा हिक्मतों वाला है और वोह अपने बन्दों पर बहुत ज़ियादा मेहरबान है।

नबी व रसूल

अ़क़ीदा : 1 **अल्लाह** तआ़ला ने अपने बन्दों की हिदायत के लिये बहुत से पैग़म्बरों को दुन्या में भेजा। येह सब पैग़म्बर तमाम गुनाहों से पाक हैं। (المسامرة بشرح المسايرة، الكلام علی العصمة، ص٢٢٧)

और **अल्लाह** तआ़ला के बहुत ही नेक बन्दे हैं। **अल्लाह** तआ़ला के सब पैग़म्बरों का येही काम है कि वोह **अल्लाह** तआ़ला के पैग़ाम और उस के अह़काम को बन्दों तक पहुंचाते हैं।

(شرح العقائد النسفية، کتاب مبحث النبوات، ص١٤٠)

अल्लाह तआ़ला ने उन पैग़म्बरों की सच्चाई ज़ाहिर करने के लिये उन के हाथों पर ऐसी ऐसी ह़ैरत और तअ़ज्जुब में डालने वाली चीज़ें ज़ाहिर फ़रमाईं जो बहुत ही मुश्किल और आ़दत के ख़िलाफ़ हैं जो दूसरे लोग नहीं कर सकते। उन चीज़ों को "मो'जिज़ा" कहते हैं।

(شرح العقائد النسفية، والنوع الثانی خبر الرسول المؤيد بالمعجزة، ص١٧، مبحث النبوات، ص١٣٥)

जैसे ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का अ़सा कि वोह अज़्दहा बन कर फ़िरऔ़न के सामने जादूगरों के सांपों को निगल गया।

(روح البيان، طٰهٰ: ٧٠، ج٥، ص٤٠٥)

और ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام का मुर्दों को ज़िन्दा करना। (پ۳،اٰل عمران:۴۹)

और हमारे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का चांद के दो टुकड़े कर देना।

(المواھب اللدنیۃ المقصد الرابع فی المعجزات ،الفصل الاول فی معجزاتہ صلی اللہ علیہ وسلم ،ج۲،ص۵۲۳)

डूबे हुए सूरज को वापस लौटा देना।

(المواھب اللدنیۃ المقصد الرابع فی معجزاتہ صلی اللہ علیہ وسلم ،ج۲،ص۵۲۸۔۵۲۹)

कंकरियों से अपना कलिमा पढ़वा लेना।

(الخصائص الکبری،باب التسبیح الحصی و الطعام،ج۲،ص۱۲۵)

उंगलियों से पानी का चश्मा जारी कर देना।

(صحیح البخاری، کتاب المناقب ، باب علامات النبوۃ فی الاسلام ،رقم ۳۵۷۶،ج۲،ص۴۹۳)

येह सब मो'जिज़ात हैं। इन पैग़म्बरों को नबी कहते हैं। और इन नबियों में से जो खुदावन्दे तआ़ला की त़रफ़ से कोई नई आस्मानी किताब और नई शरीअ़त ले कर आए वोह "रसूल" कहलाते हैं।

(النبراس، تعریف الرسول صلی اللہ علیہ وسلم ،ص۵۴/ المسامرۃ بشرح المسایرۃ ، الکلام علی العصمۃ ، ص۲۳۱)

नबी सब मर्द थे, न कोई जिन्न नबी हुवा, न कोई औ़रत।

(پ۱۴،النحل:۴۳/ تفسیر بیضاوی مع حاشیۃ محی الدین شیخ زادہ ، ج۵،ص۲۷۴)

नबी सब इन्सानों से ज़ियादा अ़क़्लमन्द होते हैं और बे ऐ़ब भी।

(المسامرۃ بشرح المسایرہ،شروط النبوۃ،ص۲۲۶)

अ़क़ीदा : 2 सब से पहले पैग़म्बर ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام हैं और सब से आख़िरी पैग़म्बर ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हैं।

(شرح العقائد النسفیۃ ، اول الانبیاء آدم علیہ السلام واخرھم محمد علیہ السلام ،ص۱۳۶)

और बाक़ी तमाम नबी व रसूल इन दोनों के दरमियान हुए। इन पैग़म्बरों में से जो बहुत मशहूर हैं। और क़ुरआने मजीद और अहादीष में जिन का बार बार ज़िक्र आया है। वोह येह हैं :-

(1) हज़रते नूह عَلَیْہِ السَّلَام (پ ١٧، الانبیآء : ٧٦)

(2) हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام (پ ١٧،الانبیاء:٦٩)

(3) हज़रते इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام (پ ١٧،الانبیاء:٨٥)

(4) हज़रते इस्हाक़ عَلَیْہِ السَّلَام (پ ١٧،الانبیاء:٧٢)

(5) हज़रते या'क़ूब عَلَیْہِ السَّلَام (پ ١٧،الانبیاء:٧٢)

(6) हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام (پ ١٢،یوسف:٤)

(7) हज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام (پ ١٧،الانبیاء:٧٩)

(8) हज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام (پ ١٧،الانبیاء:٨١)

(9) हज़रते अय्यूब عَلَیْہِ السَّلَام (پ ١٧،الانبیاء:٨٣)

(10) हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام (پ ١٧،الانبیاء:٤٨)

(11) हज़रते हारून عَلَیْہِ السَّلَام (پ ١٧،الانبیاء:٤٨)

(12) हज़रते ज़करिय्या عَلَیْہِ السَّلَام (پ ٧،الانعام:٨٥)

(13) हज़रते यह्या عَلَیْہِ السَّلَام (پ ٧،الانعام:٨٥)

(14) हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام (پ ٧،الانعام:٨٥)

(15) हज़रते इल्यास عَلَیْہِ السَّلَام (پ ٧،الانعام:٨٥)

(16) हज़रते अल यसअ़ عَلَیْہِ السَّلَام (پ ٧،الانعام:٨٦)

(17) हज़रते यूनुस عَلَیْہِ السَّلَام (پ ٧،الانعام:٨٦)

(18) ह़ज़रते लूत़ عَلَیْہِ السَّلَام (پ۷،الانعام:۸۶)

(19) ह़ज़रते इद्रीस عَلَیْہِ السَّلَام (پ۱۷،الانبیآء:۸۵)

(20) ह़ज़रते सालेह़ عَلَیْہِ السَّلَام (پ۱۹،النمل:۴۵)

(21) ह़ज़रते हूद عَلَیْہِ السَّلَام (پ۱۹،الشعرآء:۱۲۴)

(22) ह़ज़रते शुऐब عَلَیْہِ السَّلَام (پ۱۲،ھود:۸۴)

(23) ह़ज़रते मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم (پ۴،اٰل عمران:۱۴۴)

अ़क़ीदा : 3 नबियों पर **अल्लाह** तआ़ला ने जो सह़ीफ़े और आस्मानी किताबें उतारीं।

इन में से चार बहुत मशहूर हैं :

"तौरेत" ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर। (پ۶،الـمـائدۃ:۴۴)

"ज़बूर" ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर। (پ۱۵،بنی اسراء یل:۵۵)

"इन्जील" ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर। (پ۶،الـمـائدۃ:۴۶)

"क़ुरआने मजीद" जो सब से अफ़्ज़ल किताब है वोह सब से अफ़्ज़ल रसूल ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर। (پ۲۹،الدھر:۲۳)

(النبراس ، بیان الکتب المنزلۃ، ص ۲۹۰)

अ़क़ीदा : 4 ख़ुदा के नबियों की कोई ता'दाद मुअ़य्यन करनी जाइज़ नहीं है क्यूंकि इस बारे में मुख़्तलिफ़ रिवायतें आई हैं। और नबियों की किसी मुअ़य्यन ता'दाद पर ईमान लाने में येह एह़तिमाल है कि किसी नबी की नुबुव्वत का इन्कार हो जाएगा।

(شرح العقائد النسفیۃ، مبحث اول الانبیاء آدم علیہ السلام، ص۱۳۹۔۱۴۰/الفتاوی الرضویۃ الجدیدۃ، کتاب السیر ، ج۱۵، ص۲۴۸/شرح الملا علی القاری علی الفقہ الاکبر، الانبیآء منزھون عن الکبائر والصغائر، ص۵۷/الشفاء فصل فی بیان ما ھو من المقالات کفر، ص۲۴۵)

या ग़ैरे नबी को नबी मान लिया जाए और येह दोनों बातें कुफ़्र हैं। इस लिये येह ए'तिक़ाद रखना चाहिये कि **अल्लाह** तआ़ला के हर नबी पर हमारा ईमान है।

अ़क़ीदा : 5 मुसलमान के लिये जिस त़रह़ **अल्लाह** तआ़ला की ज़ात व सिफ़ात पर ईमान लाना ज़रूरी है। इसी त़रह हर नबी की नुबुव्वत पर भी ईमान लाना ज़रूरी है।

अ़क़ीदा : 6 हर नबी और फ़िरिश्ते का मा'सूम होना ज़रूरी है। नबी और फ़िरिश्ते के सिवा कोई मा'सूम नहीं।

(النبراس ، مبحث مسئله عصمة الانبياء عليهم السلام ، ص ٢٨٣ النبراس ، مبحث الملائكه عليهم السلام ، ص ٢٨٧)

इमामों को नबियों की त़रह़ मा'सूम समझना बद दीनी व गुमराही है। नबियों और फ़िरिश्तों के मा'सूम होने का येह मत़्लब है कि **अल्लाह** तआ़ला ने इन ह़ज़रात को गुनाहों से मह़फ़ूज़ रखने का वा'दा फ़रमा लिया है। इस सबब से इन ह़ज़रात का गुनाह में मुब्तला होना शरअ़न मुह़ाल है बर ख़िलाफ़ इमामों और औलिया के। **अल्लाह** तआ़ला इन्हें गुनाहों से बचाता है। लेकिन अगर कभी इन ह़ज़रात से कोई गुनाह सादिर हो जाए तो येह शरअ़न मुह़ाल नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 13)

अ़क़ीदा : 7 **अल्लाह** तआ़ला ने पैग़म्बरों पर शरीअ़त के जितने अह़काम तब्लीग़ के लिये नाज़िल फ़रमाए इन पैग़म्बरों ने उन तमाम हुक्मों को ख़ुदा के बन्दों तक पहुंचा दिया है।

(اليواقيت والجواهر ، المبحث الثاني والثلاثون في ثبوت رسالة نبينا محمد صلى الله عليه وسلم ، ج ٢ ، ص ٢٥٢)

जो शख़्स येह कहे कि किसी नबी ने किसी हुक्म को तक़िय्या या'नी ख़ौफ़ की वजह से या और किसी वजह से छुपा लिया और ख़ुदा के बन्दों तक नहीं पहुंचाया वोह काफ़िर है।

(المعتقد المنتقد مع المستند المعتمد ، منه تبليغ جميع ما امروا بتبيغه ، ص ١١٣-١١٤)

अ़क़ीदा : 8 ह़ज़राते अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام के जिस्मों का बर्स व जुज़ाम वग़ैरा ऐसे अमराज़ से जिन से नफ़रत होती है पाक होना ज़रूरी है।

(المسامرۃ بشرح المسایرۃ، شروط النبوۃ، ص ۲۲۶)

अ़क़ीदा : 9 **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबियों ख़ास कर हुज़ूर ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को बहुत सी ग़ैब की बातों का इल्म अ़ता फ़रमाया है। (پ ٤،اٰل عمران: ١٧٩/پ ٥،النسآء: ١١٣)

यहां तक कि ज़मीनो आस्मान का हर ज़र्रा हर नबी की नज़रों के सामने है। मगर ह़ज़राते अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام का येह इल्मे ग़ैब **अल्लाह** तआ़ला के अ़ता फ़रमाने से है। (پ٧،الانعام: ٥٠/پ٢٩،الجن: ٢٦-٢٧) लिहाज़ा इन का इल्म अ़ताई हुवा। और **अल्लाह** तआ़ला के इल्म का अ़ताई होना मुह़ाल है। क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला का कोई कमाल किसी का दिया हुवा नहीं हो सकता। बल्कि **अल्लाह** तआ़ला का इल्म और उस का हर कमाल ज़ाती है। (پ٧،الانعام: ٥٩/پ٢٢،سبا: ٣/پ١١،یونس: ٢٠)

अल्लाह तआ़ला और नबियों के इल्मे ग़ैब में एक बहुत बड़ा फ़र्क़ तो येही है कि नबियों का इल्मे ग़ैब अ़ताई (**अल्लाह** का दिया हुवा) है और **अल्लाह** तआ़ला का इल्मे ग़ैब ज़ाती है या'नी किसी का दिया हुवा नहीं है। कहां अ़ताई और कहां ज़ाती, दोनों में बड़ा फ़र्क़ है। जो लोग अम्बिया बल्कि ह़ज़रते सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुत़लक़ इल्मे ग़ैब का इन्कार करते हैं। वोह क़ुरआन की बा'ज़ आयतों को मानते हैं और बा'ज़ आयतों के साथ कुफ़्र करते हैं। (پ١،البقرۃ: ٨٥)

क़ुरआने मजीद में दोनों क़िस्म की आयतें हैं। बा'ज़ आयतों में येह है कि ख़ुदा के नबियों को इल्मे ग़ैब ह़ासिल है और बा'ज़ आयतों में येह है कि **अल्लाह** तआ़ला के सिवा किसी को भी इल्मे ग़ैब नहीं है। बिला शुबा येह दोनों आयतें ह़क़ हैं और इन दोनों आयतों पर ईमान लाना हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है और इन दोनों आयतों में से किसी का भी इन्कार करना कुफ़्र है। जहां जहां क़ुरआन में येह है कि नबियों को

इल्मे ग़ैब ह़ासिल है इस का येही मत़लब है कि नबियों को ख़ुदा के अ़त़ा फ़रमाने से ग़ैब का इल्म ह़ासिल है और जहां जहां क़ुरआन में येह है कि **अल्लाह** तआ़ला के सिवा किसी को भी इल्मे ग़ैब नहीं है इस का येही मत़लब है कि बिग़ैर **अल्लाह** तआ़ला के बताए हुए किसी को भी किसी चीज़ का इल्मे ग़ैब ह़ासिल नहीं है। हरगिज़ हरगिज़ इन दोनों क़िस्म की आयतों में कोई तआ़रुज़ और टकराव नहीं है ।

अ़क़ीदा : 10 ह़ज़राते अम्बियाए किराम तमाम मख़्लूक़ यहां तक कि फ़िरिश्तों के रसूलों से भी अफ़्ज़ल हैं। (बहारे शरीअ़त, हि़. 1, स. 15)

वली कितने ही बड़े मर्तबे वाला हो मगर हरगिज़ हरगिज़ किसी नबी के बराबर नहीं हो सकता। (जो किसी ग़ैरे नबी को किसी नबी से अफ़्ज़ल या बराबर बताए वोह काफ़िर है।)

(الشفاء بتعریف حقوق المصطفی ، فصل فی بیان ماھومن المقالات کفر ، ص ۲۵۱)

अ़क़ीदा : 11 ह़ज़राते अम्बिया عَلَیْہِمُ السَّلَام के मुख़्तलिफ़ दर्जे हैं। **अल्लाह** तआ़ला ने एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी है। (پ۳،البقرۃ:۲۵۳)

सब से अफ़्ज़लो आ'ला हमारे ह़ुज़ूर सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हैं।

(پ۲۲،سبا:۲۸/شرح العقائدالنسفیہ،مبحث افضل الانبیاء علیھم السلام،ص ۱۴۱)

फिर ह़ुज़ूर के बा'द सब से बड़ा मर्तबा ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام का है फिर ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام फिर ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام और ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام का दर्जा है। इन पांचों ह़ज़रात को मुर्सलीने ऊलुल अ़ज़्म कहते हैं। और येह पांचों बाक़ी तमाम अम्बिया व मुर्सलीन से अफ़्ज़ल हैं।

(حاشیۃ الصاوی علی تفسیر الجلالین، پ۲۶،الاحقاف:تحت آیت ۳۵،ج۵،ص ۱۹۴۷/
شرح الملاء علی القاری علی الفقہ الاکبر،تفضیل بعض الانبیاء علی بعض،ص ۱۱۶)

अक़ीदा : 12 हज़राते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام अपनी अपनी क़ब्रों में तमाम लवाज़िमे ह़यात के साथ ज़िन्दा हैं।

(سنن ابن ماجه، كتاب الجنائز ،باب ذكر وفاته و دفنه صلى الله عليه وسلم،رقم١٦٣٧، ج٢،ص ٢٩١)

अल्लाह तआ़ला ने इन को ज़िन्दगी अ़ता फ़रमा दी। ख़ुदा के नबियों की ह़यात शहीदों की ह़यात से कहीं बढ़ चढ़ कर अरफ़अ़ व आ'ला है।

(حاشية الصاوی علی تفسیر الجلالین ،پ٣،آل عمران:١٦٩، ج١، ص٣٢٣، وآيت:١٨٥، ج١،ص ٣٤٠)

येही वजह है कि शहीदों का तरका तक़्सीम कर दिया जाता है और इन की बीवियां इद्दत के बा'द दूसरों से निकाह़ कर सकती हैं। मगर अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام का न तरका तक़्सीम होता है।

(سنن ابن ماجه، كتاب السنة ، باب فضل العلماء والبحث على طلب العلم ، رقم ٢٢٣، ج١، ص١٤٥/صحيح مسلم، كتاب الجهاد والسير، باب قول النبي صلى الله عليه وسلم لانورث ، رقم ١٧٥٩، ص٩٦٦)

न इन की बीवियां इद्दत के बा'द दूसरों से निकाह़ कर सकती हैं।

(پ٢٢،الاحزاب:٥٣/الخصائص الكبرى ، باب اختصاصه صلى الله عليه و سلم،بتحريم النكاح ازواجه من بعده ، ج٢،ص ١٩٠ـ١٩١)

अक़ीदा : 13 हमारे आक़ा व मौला हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم "ख़ातमुन्नबिय्यीन" हैं या'नी **अल्लाह** तआ़ला ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात पर सिलसिलए नुबुव्वत को ख़त्म फ़रमा दिया। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में या इस के बा'द क़ियामत तक कोई नबी नहीं हो सकता। जो शख़्स हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में या हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द किसी को नुबुव्वत मिलने को माने या किसी नए नबी के आने को मुमकिन माने वोह शख़्स काफ़िर है।

(پ٢٢، الاحزاب:٤٠، المعتقد المنتقد مع المستند المعتمد،تكميل الباب ، ص ١٢٠)

अक़ीदा : 14 हमारे रसूल صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** तआ़ला ने जागते में जिस्म के साथ मक्कए मुकर्रमा से बैतुल मुक़द्दस तक और वहां से सातों आस्मानों के ऊपर और वहां से जहां तक **अल्लाह** तआ़ला को मन्ज़ूर हुवा रात के एक मुख़्तसर हि़स्से में पहुंचाया और आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़र्श व कुरसी और लौहे़ क़लम और ख़ुदा की बड़ी बड़ी निशानियों को देखा। और ख़ुदा के दरबार में आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم को वोह कुर्बे ख़ास ह़ासिल हुवा कि किसी नबी और फ़िरिश्ते को न कभी ह़ासिल हुवा न कभी ह़ासिल होगा। हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم के इस आस्मानी सफ़र को मे'राज कहते हैं।

(التفسیرات الاحمدیۃ، بنی اسرآءیل تحت آیت ۱: مسئلۃ المعراج، ص ۵۰۲۔۵۰۵/ النبراس، بیان المعراج، ص ۲۹۲۔۲۹۵)

मे'राज में आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने सर की आंखों से जमाले इलाही عزَّوجَلَّ का दीदार किया

(پ۲۸، النجم: ۱۳۔۱۷/فتح الباری شرح صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب المعراج، رقم ۳۸۸۸، ج۸، ص ۱۸۶)

और बिग़ैर किसी वासित़े के **अल्लाह** तआ़ला का कलाम सुना और तमाम मल्कूतुस्समावात वल अर्द़ के ज़र्रे ज़र्रे को तफ़्सील के साथ मुलाह़ज़ा फ़रमाया। (روح المعانی، پ۶، النسآء: ۱۶۴، ج۳، ص ۲۸)

अक़ीदा : 15 हमारे हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** तआ़ला ने क़ियामत के दिन शफ़ाअ़ते कुब्रा और मक़ामे मह़मूद का शरफ़ अ़ता फ़रमाया है। जब तक हमारे हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم शफ़ाअ़त का दरवाज़ा नहीं खोलेंगे किसी को भी मजाले शफ़ाअ़त न होगी बल्कि तमाम अम्बिया व मुर्सलीन हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ही के दरबार में अपनी अपनी शफ़ाअ़त पेश करेंगे। **अल्लाह** عزَّوجَلَّ के दरबार में दर ह़क़ीक़त हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ही शफ़ीए़ अव्वल व शाफ़ेए़ आ'ज़म हैं।

(روح البیان، پ۱۵، الاسراء: ۷۹، ج۵، ص ۱۹۲/ روح المعانی، پ۱۵، الاسراء: ۷۹، ج۸، ص ۲۰۲۔۲۰۴)

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त के बा'द तमाम अम्बिया व औलिया व सालिह़ा व शुहदा वग़ैरा सब शफ़ाअ़त करेंगे।

(المعتقد المنتقد مع المستند المعتمد ، تكميل الباب ، ص١٢٩)

अ़क़ीदा : 16 हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मह़ब्बत मदारे ईमान बल्कि ऐने ईमान है। जब तक हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत मां–बाप अवलाद बल्कि तमाम जहां से ज़ियादा न हो। कोई शख़्स कामिल मुसलमान नहीं हो सकता।

(پ ١٠، التوبة: ٢٤ / صحيح البخاري، كتاب الايمان، باب حب الرسول صلى الله عليه وسلم من الايمان، رقم ١٥، ج ١، ص ١٧)

अ़क़ीदा : 17 हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम व तौक़ीर हर मुसलमान पर फ़र्ज़े आ'ज़म बल्कि जाने ईमान है।

(پ ٢٦، الفتح: ٩ / الشفاء بتعريف حقوق المصطفى صلى الله عليه وسلم، الجزء الثاني، فصل واعلم ان حرمة النبي صلى الله عليه وسلم، ص ٣٢)

हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के तमाम सह़ाबा व अहले बैत और तमाम मुतअ़ल्लिक़ीन व मुतवस्सिलीन से मह़ब्बत रखे। और इन सब की ता'ज़ीम व तकरीम करे और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के तमाम दुश्मनों से अ़दावत व दुश्मनी रखे। अगर्चे वोह अपना बाप या बेटा या रिश्तेदार ही क्यूं न हो। इस लिये कि येह मुमकिन ही नहीं है कि रसूल से भी मह़ब्बत हो और इन के दुश्मनों से भी उल्फ़त हो।

(الشفاء بتعريف حقوق المصطفى صلى الله عليه وسلم، الجزء الثاني ، فصل في علامات محبته صلى الله عليه وسلم، ص ٢١ / پ ٢٨، المجادلة: ٢٢ / پ ١٠، التوبة: ٢٣)

अ़क़ीदा : 18 हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** तआ़ला के नाइबे मुत़लक़ हैं। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान **अल्लाह** तआ़ला का फ़रमान है।

और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त।

(پ ٥، النسآء: ٨٠)

और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी **अल्लाह** तआला की ना फ़रमानी है। (المعجم الاوسط ، من اسمه ابراهيم ، رقم ۲٤٠١ ، ج۲ ، ص ۳۲)

तमाम जहान को **अल्लाह** तआला ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़ेरे तसर्रुफ़ कर दिया है। और आस्मान व ज़मीन के तमाम ख़ज़ानों की कुंजियां हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस हाथों में दे कर आप को अपनी तमाम ने'मतों और अ़ताओं का क़ासिम बना दिया है।

(صحيح مسلم ، كتاب الفضائل ، باب اثبات حوض نبينا صلى الله عليه وسلم وصفاته ، رقم ۲۲۹٦ ، ص ۱۲۵۸ / المواهب اللدنية ، الفصل الثاني ، اعطى مفاتيح الخزائن ، ج۲ ، ص ٦۳۹)

चुनान्चे हर क़िस्म की अ़ताएं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ही के दरबार से तक़्सीम होती हैं।

(صحيح البخاري، كتاب العلم ، باب من يرد الله به خيرا يفقهه في الدين ، رقم ۷۱ ، ج۱ ، ص ٤۲)

रब है मो'ती, येह है क़ासिम سُبْحٰنَ اللّٰہ !

रिज़्क़ उस का है खिलाते येह हैं

अ़क़ीदा : 19 हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के किसी क़ौल व फ़े'ल व अ़मल व ह़ालत को जो ह़क़ारत की नज़र से देखे या आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शान में कोई अदना सी गुस्ताख़ी या तौहीन व बे अदबी करे या आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को झुटलाए या आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के कलाम में शक करे।

(حاشية الصاوي على تفسير الجلالين ، پ ۱۸ النور: ۶۳ ، ج ۴ ، ص ۱۴۲۱ / الشفاء بتعريف حقوق المصطفى صلى الله عليه وسلم ، الجزء الثاني ، فصل في بيان ماهو من المقالات كفر ، ص ۲۴۶)

या आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में कोई ऐ़ब निकाले या आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की किसी सुन्नत को बुरा समझे या मज़ाक़ उड़ाए वोह इस्लाम से ख़ारिज और काफ़िर है।

(البحر الرائق ، كتاب السير ، باب احكام المرتدين ، ج٥ ، ص ۲۰۳ـ۲۰٤ / الفتاوى الهندية ، كتاب السير ، الباب التاسع في احكام المرتدين مطلب موجبات الكفر انواع ، ج۲ ، ص ۲٦۳ـ۲٦٤)

सहाबी

हमारे हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जिन खुश नसीब मुसलमानों ने ईमान की हालत में देखा और ईमान ही पर उन का ख़ातिमा हुवा। उन बुज़ुर्गों को सहाबी कहते हैं।

(فتح الباری شرح صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم، باب فضائل اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم ومن صحب النبی صلی اللہ علیہ وسلم..الخ، ج۸، ص۳۔۴)

इन ह़ज़रात का दर्जा सारी उम्मत में सब से ज़ियादा बुलन्द है और **अल्लाह** तआ़ला ने इन शम्ए नुबुव्वत के परवानों को बड़ी बड़ी बुज़ुर्गियां अ़ता फ़रमाई हैं। यहां तक कि बड़े से बड़े दर्जे के औलिया भी किसी कम से कम दर्जे के सहाबी के मर्तबों तक नहीं पहुंच सकते।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि.1 स. 74)

इन सहाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में दर्जात व मरातिब के लिहाज़ से सब से बढ़ कर चार सहाबी हैं। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ। येह रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द इन के जा नशीन हुए और दीने इस्लाम की जड़ों को मज़बूत किया। इसी लिये येह ख़लीफ़ए अव्वल कहलाते हैं। नबियों के बा'द तमाम उम्मतों में येह सब से अफ़्ज़ल व आ'ला हैं। इन के बा'द ह़ज़रते उ़मर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का दर्जा है। येह हमारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दूसरे ख़लीफ़ा हैं। इन के बा'द ह़ज़रते उ़षमान رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का दर्जा है। येह हमारे पैग़म्बर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तीसरे ख़लीफ़ा हैं।

(سنن ابی داؤد، کتاب السنۃ، باب فی التفضیل، رقم ۴۶۲۸، ج۴، ص۲۷۳)

इन के बा'द ह़ज़रते अ़ली رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का मर्तबा है। येह हमारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चौथे ख़लीफ़ा हैं।

(المواھب اللدنیۃ، المقصد السابع فی وجوب صحبتہ صلی اللہ علیہ وسلم، الفصل الثالث، عثمان وعلی، ج۳، ص۳۸۹)

अ़क़ीदा :- हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की निस्बत और तअ़ल्लुक़ की वजह से तमाम सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का अदब व एह़तिराम और इन बुज़ुर्गों के साथ मह़ब्बत व अ़क़ीदत तमाम मुसलमानों पर फ़र्ज़ है इसी त़रह़ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की आल व अवलाद और बीवियां और अहले बैत और आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ानदान वाले और तमाम वोह चीज़ें जिन को आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत व तअ़ल्लुक़ हो सब लाइक़े ता'ज़ीम और वाजिबुल एह़तिराम हैं।

(المواهب اللدنية، المقصد السابع في وجوب صحبته صلى الله عليه وسلم، الفصل الثالث، حب الصحابة وعلاماته، ج٣،ص٣٩٣)

फ़िरिश्तों का बयान

अ़क़ीदा : 1 ख़ुदा की तौह़ीद और उस के रसूलों पर ईमान लाने के साथ साथ फ़िरिश्तों के वुजूद पर भी ईमान लाना ज़रूरियाते दीन में से है। फ़िरिश्तों के वुजूद का इन्कार करना कुफ़्र है ?

(फ़तावा रज़विय्या अल जदीदा, जि 29, स. 384)

अ़क़ीदा : 2 **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी कुछ मख़्लूक़ात को नूर से पैदा कर के इन को हमारी नज़रों से छुपा दिया है और इन को येह त़ाक़त दी है कि वोह जिस शक्ल में चाहें उस शक्ल में ज़ाहिर हो जाएं वोह कभी इन्सान की शक्ल इख़्तियार कर लेते हैं और कभी दूसरी शक्लों में भी ज़ाहिर होते हैं।

(اليواقيت والجواهر، المبحث التاسع والثلاثون في بيان صفة الملائكة واجنحتها وحقائقها ...الخ، الجزء الثاني، ص٢٩٥/النبراس، مبحث الملائكة عليهم السلام، ص٢٨٧)

अ़क़ीदा : 3 फ़िरिश्ते **अल्लाह** तआ़ला की मा'सूम मख़्लूक़ हैं। वोह वोही करते हैं जो ख़ुदा का हुक्म होता है वोह ख़ुदा के हुक्म के ख़िलाफ़ कभी कुछ नहीं करते। वोह हर क़िस्म के छोटे बड़े गुनाहों से पाक हैं।

(پ٢٨، التحريم:٦/ النبراس، مبحث الملائكه عليهم السلام، ص٢٨٧)

अ़क़ीदा : 4 अल्लाह तआ़ला ने इन फ़िरिश्तों को मुख़्तलिफ़ कामों में लगा दिया है और जिन जिन को जो जो काम सिपुर्द फ़रमा दिये हैं। वोह उन कामों में लगे हुए हैं। फ़िरिश्तों की ता'दाद अल्लाह तआ़ला ही जानता है जिस ने इन को पैदा फ़रमाया है और अल्लाह तआ़ला के बताने से रसूल भी जानते हैं। इन में चार फ़िरिश्ते बहुत मशहूर हैं। जो सब फ़िरिश्तों से अफ़्ज़लो आ'ला हैं। ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ह़ज़रते मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام ह़ज़रते इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام और ह़ज़रते इ़ज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام

(پ۳۰،النّٰزعٰت:۱۔۵ / التفسير الكبير، المسألة فی شرح كثرة الملائكة، ج۱،ص۳۸٦)

अ़क़ीदा : 5 किसी फ़िरिश्ते की शान में अदना सी गुस्ताख़ी करने से आदमी काफ़िर हो जाता है।

(مجمع الانهر، كتاب السير و الجهاد، باب المرتد، ثم ان الفاظ الكفر انواع، ج۲،ص۵۰۷/ البحرالرائق، كتاب السير ، باب احكام المرتدين ، ج۵،ص۲۰٤۔۲۰۵)

जिन्न का बयान

अल्लाह तआ़ला ने कुछ मख़्लूक़ को आग से पैदा फ़रमा कर इन को येह त़ाक़त दी है कि वोह जोनसी शक्ल चाहें बन जाएं। इस मख़्लूक़ का नाम "जिन्न" है येह भी हम को दिखाई नहीं देते। येह इन्सानों की त़रह़ खाते पीते, जीते मरते हैं। इन के बच्चे भी पैदा होते हैं।

(پ١٤،الحجر:۲۷/ التفسير الكبير، المسألة الثالثةفی ان ابليس هل كان من الملائكة ام لا ---ج۱،ص۴۲۹/ النبراس،مبحث الملائكة عليهم السلام،ص۲۸۷/ اليواقيت والجواهر، المبحث الثالث والعشرون فی اثبات وجودالجن---الخ، الجزء الاول،ص۱۸۳)

और इन में मुसलमान भी हैं और काफ़िर भी। नेक भी हैं और फ़ासिक़ भी।

(پ۲۹،الجن:١٤۔١٥/ تفسير روح البيان،ج۱۰،ص١٩٤،اليواقيت والجواهر،المبحث الثالث والعشرون فی اثبات وجود الجن ووجوب الايمان بهم،الجزء الاول،ص۱۸۲)

जिन्न के वुजूद का इन्कार करने वाला काफ़िर है।

(फ़तावा रज़विय्या अल जदीदा, जि. 29, स. 384)

क्यूंकि जिन्न एक मख़्लूक़ है येह कुरआने मजीद से षाबित है। लिहाज़ा जिन्न के वुजूद का इन्कार दर ह़क़ीक़त कुरआने मजीद का इन्कार है।

आस्मानी किताबें

अ़क़ीदा : 1 **अल्लाह** तआ़ला ने जितने सह़ीफ़े और किताबें आस्मान से नाज़िल फ़रमाई हैं सब ह़क़ हैं और सब **अल्लाह** तआ़ला का कलाम हैं। इन किताबों में जो कुछ इरशादे ख़ुदावन्दी हुवा सब पर ईमान लाना और इन को सच मानना ज़रूरी है।

(النبراس، بیان الکتب المنزلۃ،ص ۲۹۰)

किसी एक किताब का इन्कार करना कुफ़्र है।

(الشفاء بتعریف حقوق المصطفٰی صلی اللہ علیہ وسلم، فصل واعلم ان من استخف بالقرآن،الجزء الثانی،ص ۲۶۴)

हां, अलबत्ता येह एक ह़क़ीक़त है कि अगली किताबों की ह़िफ़ाज़त **अल्लाह** तआ़ला ने उम्मतों के सिपुर्द फ़रमाई थी मगर उम्मतों से उन किताबों की ह़िफ़ाज़त न हो सकी। बल्कि शरीर लोगों ने इन किताबों में अपनी ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ कमी बेशी कर दी। लिहाज़ा जब कोई बात इन किताबों की हमारे सामने पेश हो तो वोह अगर कुरआने मजीद के मुत़ाबिक़ हो जब तो हम उस की तस्दीक़ करेंगे और अगर वोह कुरआन के मुख़ालिफ़ हो तो हम यक़ीन कर लेंगे कि येह शरीरों की तह़रीफ़ है और हम इस बात को रद कर देंगे। और अगर मुख़ालिफ़त या मुवाफ़क़त कुछ भी मा'लूम न हो तो येह हुक्म है कि हम इस बात की न तस्दीक़ करें न तक्ज़ीब करें बल्कि येह कह दें कि **अल्लाह** तआ़ला और उस के फ़िरिश्तों और उस की किताबों और उस के रसूलों पर हमारा ईमान है।

(تفسیر روح البیان، پ ۱۴، الحجر:۹،ج ۴،ص ۴۴۳۔۴۴۴/ تفسیر الخازن، پ ۱۴، الحجر:۹،ج ۳،ص ۹۵)

अ़क़ीदा : 2 दीने इस्लाम चूंकि हमेशा रहने वाला दीन है। लिहाज़ा क़ुरआने मजीद की ह़िफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी **अल्लाह** तआ़ला ने उम्मत के सिपुर्द नहीं फ़रमाई बल्कि इस की ह़िफ़ाज़त ख़ुद **अल्लाह** तआ़ला ने अपने ज़िम्मे रखी है चुनान्चे उस ने इरशाद फ़रमाया कि

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ۝ (پ۱۴،الحجر:۹)

"या'नी बेशक हम ने क़ुरआन उतारा। और यक़ीनन हम ख़ुद इस के निगेहबान हैं।"

इस लिये क़ुरआने मजीद में कोई कमी बेशी कर दे येह मुह़ाल है।

(حاشية الجمل على الجلالين،پ۱۴،الحجر:۹،ج۴،ص۱۸۳)

और जो येह कहे कि क़ुरआन में किसी ने कुछ रद्दो बदल या कम या ज़ियादा कर दिया है। वोह काफ़िर है।

(الشفاء بتعريف حقوق المصطفى صلى الله عليه وسلم، فصل واعلم ان من استخف بالقرآن، ص۲۶۴)

अ़क़ीदा : 3 अगली किताबें सिर्फ़ नबियों ही को याद हुवा करती थीं। लेकिन येह हमारे नबी और क़ुरआन का मो'जिज़ा है कि क़ुरआने मजीद को मुसलमान का बच्चा बच्चा याद कर लेता है।

(تفسير روح البيان، پ۲۱،العنكبوت:۴۹،ج۶،ص۴۸۱/ تفسير الخازن، پ۲۷،القمر:۱۷،ج۴،ص۲۰۴)

तक़्दीर का बयान

आ़लम में जो कुछ भला, बुरा होता है। सब को **अल्लाह** तआ़ला इस के होने से पहले हमेशा से जानता है और उस ने अपने इसी इ़ल्मे अज़ली के मुवाफ़िक़ पर भलाई बुराई मुक़द्दर फ़रमा दी है "**तक़दीर**" इसी का नाम है जैसा होने वाला है और जो जैसा करने वाला था इस को पहले ही **अल्लाह** तआ़ला ने अपने इ़ल्म से जाना और इसी को लौहे मह़फ़ूज़ पर लिख दिया। तो येह न समझो कि जैसा उस ने लिख दिया मजबूरन हम को वैसा ही करना पड़ता है बल्कि वाक़ेआ़ येह है जैसा हम करने वाले थे वैसा ही उस ने बहुत पहले लिख दिया। ज़ैद के ज़िम्मे

बुराई लिखी इस लिये कि ज़ैद बुराई करने वाला था। अगर ज़ैद भलाई करने वाला होता तो वोह ज़ैद के लिये भलाई लिखता। तो **अल्लाह** तआला ने तक़दीर लिख कर किसी को भलाई या बुराई करने पर मजबूर नहीं कर दिया है।

(النبراس ،مسئلۃ القضاء والقدر،ص۱۷۴۔۱۷۵/ شرح الملاء علی القاری علی الفقہ الاکبر،لم یجبر اللّٰہ احدًا من خلقہ،ص۴۸۔۵۳)

अ़क़ीदा : 1 तक़दीर पर ईमान लाना भी ज़रूरियाते दीन में है तक़दीर के इन्कार करने वालों को नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस उम्मत का "मजूस" बताया है।

(المعتقد المنتقد مع المستند المعتمد،منہ (۱۴)الاعتقاد بقضائہ وقدرہ، ص۵۱۔۵۲)

अ़क़ीदा : 2 तक़दीर के मसाइल आ़म लोगों की समझ में नहीं आ सकते। इस लिये तक़दीर के मसाइल में ज़ियादा ग़ौरो फ़िक्र और बह़्‌ष व मुबाह़षा करना हलाकत का सबब है। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ व अमीरुल मोअमिनीन उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) तक़दीर के मस्अले में बह़्‌ष करने से मन्अ़ फ़रमा गए हैं। फिर भला हम तुम किस गिनती में हैं कि इस मस्अले में बह़्‌ष व मुबाह़षा करें। हमारे लिये येही हुक्म है कि हम तक़दीर पर ईमान लाएं और इस मुश्किल और नाज़ुक मस्अले में हरगिज़ हरगिज़ कभी बह़्‌षो मुबाह़षा और हुज्जत व तकरार न करें कि इसी में ईमान की सलामती है।

(جامع الترمذی، کتاب القدر، باب ماجاء من التشدید فی الخوض فی القدر، رقم ۲۱۴۰، ج۴، ص۵۱/
المعجم الکبیر، رقم ۱۴۲۳، ج۲، ص۹۵) واللّٰہ تعالٰی اعلم۔

आ़लमे बरज़ख़

मरने के बा'द क़ियामत से पहले दुन्या व आख़िरत के दरमियान एक और आ़लम है। जिस को "आ़लमे बरज़ख़" कहते हैं।

(پ۱۸،المؤمنون:۱۰۰/ شرح الصدور،باب مقر الأرواح،ص۲۳۶)

तमाम इन्सानों और जिन्नों को मरने के बा'द इसी आ़लम में रहना होता है। इस आ़लमे बरज़ख़ में अपने अपने आ'माल के ए'तिबार से किसी को आराम मिलता है और किसी को तक्लीफ़। (बहारे शरीअ़त, हि़. 1, स. 24)

अ़क़ीदा : 1 मरने के बा'द भी रूह़ का तअ़ल्लुक़ बदन के साथ बाक़ी रहता है। अगर्चे रूह़ बदन से जुदा हो गई है मगर बन्दे पर जो आलाम या सदमा गुज़रेगा रूह़ ज़रूर इस को मह़सूस करेगी और मुतअष्षिर होगी। जिस त़रह़ दुन्यावी ज़िन्दगी में बदन पर जो राह़त और तक्लीफ़ पड़ती है इस की लज़्ज़त और तक्लीफ़ रूह़ को पहुंचती है। इसी त़रह़ आ़लमे बरज़ख़ में भी जो इन्आ़म या अ़ज़ाब बदन पर वाक़ेअ़ होता है। उस की लज़्ज़त और तक्लीफ़ रूह़ को पहुंचती है।

(شرح العقائد النسفية، مبحث عذاب القبر،ص ۱۰۱)

अ़क़ीदा : 2 मरने के बा'द मुसलमानों की रूह़े उन के दर्जात के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ मक़ामात में रहती है। बा'ज़ की क़ब्र पर, बा'ज़ की ज़म ज़म शरीफ़ के कुंवें में, बा'ज़ की आस्मानो ज़मीन के दरमियान, बा'ज़ की आस्मानों में, बा'ज़ की अ़र्श के नीचे किन्दीलों में, बा'ज़ की आ'ला इ़ल्लिय्यीन में मगर रूह़ें कहीं भी हो अपने जिस्मों से ब दस्तूर उन को तअ़ल्लुक़ रहता है जो कोई उन की क़ब्र पर आए उस को वोह देखते पहचानते और उस की बातों को सुनते हैं।

(شرح الصدور، باب مقر الأرواح، ص۲۳۵۔۲۳۸/الفتاوی الرضوية الجديدة،ج۹،ص۶۵۸)

इसी त़रह़ काफ़िरों की रूह़ें बा'ज़ इन के मरघट या क़ब्र पर रहती हैं, बा'ज़ की यमन के एक नाले बरहूत में, बा'ज़ की सातों ज़मीन के नीचे, बा'ज़ की "सिज्जीन" में। लेकिन रूह़ें कहीं भी हों इन के जिस्मों से इन रूह़ों का तअ़ल्लुक़ बर क़रार रहता है चुनान्चे जो इन के मरघट पर गुज़रे या इन की क़ब्र पर आए उस को देखते पहचानते और उस की बातों को सुनते हैं। (شرح الصدور، باب مقر الارواح، ص۲۳۶۔۲۳۷/الفتاوی الرضوية الجديدة،ج۹،ص۶۵۸)

अ़क़ीदा : 3 येह ख़याल कि मरने के बा'द रूह़ किसी दूसरे बदन में चली जाती है ख़्वाह वोह किसी आदमी का बदन हो या किसी जानवर का जिस को फ़िलोसोफ़र "तनासुख़" और हिन्दू "आवागोन" कहते हैं येह ख़याल बिल्कुल ही बात़िल और इस का मानना कुफ़्र है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب السیر، الباب التاسع فی احکام المرتدین، ج۲،ص۲٦٤ / النبراس،باب والبعث حق،ص۲۱۳)

अ़क़ीदा : 4 जब आदमी मर जाता है तो अगर गाड़ा जाए तो गाड़ने के बा'द और अगर न गाड़ा जाए तो वोह जहां भी हो और जिस ह़ाल में भी हो उस के पास दो फ़िरिश्ते आते हैं जिन में एक का नाम "मुन्कर" और दूसरे का नाम "नकीर" है येह दोनों फ़िरिश्ते मुर्दे से सुवाल करते हैं कि तेरा रब्ब कौन है? तेरा दीन क्या है? और ह़ज़रते मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बारे में पूछते हैं कि येह कौन हैं? अगर मुर्दा ईमानदार हो तो ठीक ठीक जवाब देता है कि मेरा रब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है। मेरा दीन इस्लाम है और ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं।

(النبراس ،مبحث عذاب القبر وثوابہ،ص۲۰٦، ۲۱۰/سنن الترمذی،کتاب الجنائز،باب ماجاء فی عذاب القبر،رقم ۱۰۷۳،ج۲،ص۳۳۷)

फिर उस के लिये जन्नत की त़रफ़ एक खिड़की खोल देते हैं। जिस से ठंडी ठंडी जन्नत की हवाएं और ख़ुश्बूएं क़ब्र में आती रहती हैं। और मुर्दा आराम व चैन के मज़े में पड़ कर अपनी क़ब्र में सुख की नींद सो रहता है और अगर मुर्दा ईमानदार न हो तो सब सुवालों के जवाब में येही कहता है कि मुझे कुछ नहीं मा'लूम है। फिर उस की क़ब्र में दोज़ख़ की त़रफ़ एक खिड़की खोल दी जाती है और जहन्नम की गर्म गर्म हवाएं और बदबू क़ब्र में आती रहती हैं। और मुर्दा त़रह़ त़रह़ के सख़्त अ़ज़ाबों

में गिरिफ़्तार हो कर तड़पता और बे क़रार रहता है फ़िरिश्ते उस को गुर्ज़ों से मारते हैं और उस के बुरे आ'माल सांप बिच्छू बन कर उसे अ़ज़ाब पहुंचाते रहते हैं।

(مشکاۃ المصابیح ، کتاب الجنائز ، باب ما یقال عند من حضرہ الموت ، الفصل الثالث، رقم ۱۶۳۰، ج۱،ص۴۵۸)

अ़क़ीदा : 5 मुर्दा भी कलाम करता है मगर उस के कलाम को इन्सान और जिन्न के सिवा तमाम मख़्लूक़ात, जानवर वग़ैरा सुनते हैं। अगर कोई आदमी सुन ले तो वोह बेहोश हो जाएगा।

(صحیح البخاری، کتاب الجنائز،باب کلام المیت علی الجنازۃ، رقم ۱۳۸۰، ج۱،ص۴۶۵)

अ़क़ीदा : 6 ईमानदार और नेकों की क़ब्रें किसी की सत्तर सत्तर हाथ चौड़ी हो जाती हैं। (سنن الترمذی، کتاب الجنائز،باب ماجاء فی عذاب القبر،رقم ۱۰۷۳، ج۲،ص۳۳۷)

और किसी किसी की क़ब्रें इतनी चौड़ी हो जाती हैं कि जहां तक उस की निगाह जाती है।

(مشکاۃ المصابیح ، کتاب الجنائز ، باب ما یقال عند من حضرہ الموت، الفصل الثالث، رقم ۱۶۳۰، ج۱،ص۴۵۸)

और काफ़िरों और बा'ज़ गुनाहगारों की क़ब्र इस क़दर ज़ोर से दबाती है और इस क़दर तंग हो जाती है कि इधर की पस्लियां उधर और उधर की पस्लियां इधर हो जाती हैं।

(جامع الترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی عذاب القبر،رقم ۱۰۷۳، ج۲،ص۳۳۷)

अ़क़ीदा : 7 क़ब्र में जो कुछ अ़ज़ाब व षवाब मुर्दे को दिया जाता है और जो कुछ इस पर गुज़रती है वोह सब चीज़ें मुर्दे को मा'लूम होती हैं। ज़िन्दा लोगों को उस का कोई इ़ल्म नहीं होता। जैसे सोता हुवा आदमी ख़्वाब में आराम व तक्लीफ़ और क़िस्म क़िस्म के मनाज़िर सब कुछ देखता है। लज़्ज़त भी पाता है और तक्लीफ़ भी उठाता है। मगर इस के पास ही में जागता हुवा आदमी इन सब बातों से बे ख़बर बैठा रहता है।

क़ियामत का बयान

तौह़ीदो रिसालत की त़रह़ क़ियामत पर भी ईमान लाना ज़रूरियाते दीन में से है जो शख़्स क़ियामत का इन्कार करे वोह खुला हुवा काफ़िर है।

(المعتقد المنتقد مع المعتمد المستند، من اقر بالجنة والنار والحشر لکن اولہا۔۔۔الخ، ص ۱۸۰)

हर मुसलमान के लिये इस अ़क़ीदे पर ईमान लाना फ़र्ज़े ऐ़न है कि एक दिन येह ज़मीन आस्मान बल्कि कुल आ़लम और सारा जहान फ़ना हो जाएगा। इसी दिन का नाम "क़ियामत" है।

(پ ۲۷، الرحمن: ۲٦/ پ ۲۰، القصص: ۸۸)

क़ियामत से पहले चन्द निशानियां ज़ाहिर होंगी। जिन में से चन्द येह हैं।

《1》 दुन्या में तीन जगह आदमी ज़मीन में धंसा दिये जाएंगे। एक मशरिक़ में, दूसरा मग़रिब में, तीसरा जज़ीरए अ़रब में।

(صحیح البخاری، کتاب الفتن واشراط الساعة، باب فی الآیات التی تکون قبل الساعة، رقم ۲۹۰۱، ص ۱۵۵۱)

《2》 इल्म उठ जाएगा।

(صحیح البخاری، کتاب العلم، باب رفع العلم وظهور الجهل، رقم ۸۰، ج ۱، ص ٤۷)

《3》 जहालत की कषरत होगी

(صحیح البخاری، کتاب العلم، باب رفع العلم وظهور الجهل، رقم ۸۰، ج ۱، ص ٤۷)

《4》 अ़लानिया ज़िनाकारी ब कषरत होने लगेगी।

(صحیح المسلم، کتاب العلم، باب رفع العلم وقبضه وظهور الجهل والفتن فی آخر الزمان، رقم ۲٦۷۱، ص ۱٤۳٤)

《5》 मर्दों की ता'दाद कम हो जाएगी और औ़रतें बहुत ज़ियादा होंगी।

यहां तक कि एक मर्द की सरपरस्ती में पचास औ़रतें होंगी।

صحیح البخاری، کتاب العلم، باب رفع العلم وظهور الجهل،رقم ۸۱، ج ۱،ص ۴۷)

﴾6﴿ मुल्के अ़रब में खेती बाग़ और नहरें हो जाएंगी।

(صحیح مسلم ، کتاب الزکاۃ، باب الترغیب فی الصدقة قبل ان لایوجد من یقبلها، رقم۱۵۷،ص ۵۰۵)

﴾7﴿ दीन पर क़ाइम रहना इतना ही दुश्वार होगा जैसे मुठ्ठी में अंगारा लेना।

(جامع ترمذی، کتاب الفتن، باب ۷۳،رقم۲۲۶۷،ج ۴،ص ۱۱۵)

यहां तक कि आदमी क़ब्रिस्तान में जा कर तमन्ना करेगा कि काश मैं इस क़ब्र में होता। (صحیح مسلم، کتاب الفتن واشراط الساعة، باب لاتقوم الساعة حتی یمر الرجل بقبر الرجل فیتمنی ان یکون مکان المیت مبتلاء،رقم۱۵۷،ص ۱۵۵۵)

﴾8﴿ लोग इ़ल्मे दीन पढ़ेंगे मगर दीन के लिये नहीं।

(جامع الترمذی، کتاب الفتن ، باب ماجاء فی علامة حلول المسخ والخسف،رقم ۲۲۱۷،ج ۴،ص ۹۰)

﴾9﴿ मर्द अपनी औ़रत का फ़रमा बरदार होगा और मां–बाप की नाफ़रमानी करेगा। (جامع الترمذی، کتاب الفتن ، باب ماجاء فی علامة حلول المسخ والخسف،رقم ۲۲۱۸،ج ۴،ص ۹۰)

﴾10﴿ मस्जिदों में लोग शोर मचाएंगे।

(جامع الترمذی، کتاب الفتن ، باب ماجاء فی علامة حلول المسخ والخسف،رقم ۲۲۱۸،ج ۴،ص ۸۹)

﴾11﴿ गाने बजाने का रवाज बहुत ज़ियादा हो जाएगा।

(جامع الترمذی، کتاب الفتن ، باب ماجاء فی علامة حلول المسخ والخسف،رقم ۲۲۱۸،ج ۴،ص ۹۰)

﴾12﴿ अगले लोगों पर लोग ला'नत करेंगे और बुरा कहेंगे।

(جامع الترمذی، کتاب الفتن ، باب ماجاء فی علامۃ حلول المسخ والخسف،رقم ۲۲۱۸،ج۴،ص۹۰)

﴾13﴿ जानवर आदमियों से कलाम करेंगे।

(جامع الترمذی، کتاب الفتن ، باب ماجاء فی کلام السباع،رقم ۲۱۸۸،ج۴،ص۷۶)

﴾14﴿ ज़लील लोग जिन को तन का कपड़ा, पाऊं की जूतियां नसीब न थीं बड़े बड़े महलों में फ़ख़्र करेंगे।

(صحیح مسلم، کتاب الایمان،باب بیان الایمان والاسلام والاحسان ووجوب الایمان باثبات قدر اللّٰہ عزوجل، رقم ۸،ص۲۱۔۲۲)

﴾15﴿ वक़्त में बरकत ख़त्म हो जाएगी। यहां तक कि बरस मिष्ल महीने के और महीना मिष्ल एक हफ़्ते के और हफ़्ता मिष्ले एक दिन के गुज़र जाएगा, वग़ैरा वग़ैरा।

(شرح السنۃ، کتاب الفتن، باب الدجال لعنہ اللّٰہ ،رقم ۴۱۵۹،ج۷،ص۴۴۲)

अल ग़रज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وسَلَّم ने जितनी निशानियां क़ियामत की बतलाई हैं सब यक़ीनी ज़ाहिर हो कर रहेंगी यहां तक कि ह़ज़रते इमाम महदी का ज़ुहूर होगा।

(جامع الترمذی، کتاب الفتن، باب ۵۳ ماجاء فی المھدی، رقم۲۲۳۹، ج۴،ص۹۹)

दज्जाल निकलेगा।

(جامع الترمذی، کتاب الفتن، باب ماجاء من این یخرج الدجال، رقم۲۲۴۴، ج۴،ص۱۰۲)

और इस को क़त्ल करने के लिये

(جامع الترمذی، کتاب الفتن، باب ماجاء فی قتل عیسٰی ابن مریم الدجال، رقم۲۲۵۱، ج۴،ص۱۰۶)

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام आस्मान से उतरेंगे।

(جامع الترمذی، کتاب الفتن، باب ماجاء فی نزول عیسی ابن مریم علیہ السلام، رقم ۲۲۴۰، ج۴،ص ۱۰۰)

याजूज माजूज जो बहुत ही ज़बरदस्त लोग हैं वोह निकल कर तमाम ज़मीन पर फैल जाएंगे।

(صحیح مسلم، کتاب الفتن و اشراط الساعۃ، باب ذکر الدجال،رقم۲۱۳۷،ص ۱۵۶۹)

और बड़े बड़े फ़साद और बरबादी बरपा करेंगे। फिर खुदा के क़हर से हलाक हो जाएंगे।

(سنن ابن ماجه، کتاب الفتن، باب فتنة الدجال وخروج عیسٰی ابن مریم ۔۔۔الخ، رقم۴۰۷۹، ج۴،ص ۴۰۹ /صحیح مسلم ، کتاب الفتن، باب ذکر الدجال وصفته وما معه، رقم ۲۱۳۷،ص۱۵۶۸)

पश्चिम से आफ़्ताब निकलेगा।

(جامع الترمذی، کتاب الفتن، باب ماجاء فی طلوع الشمس من مغربها، رقم۲۱۹۳، ج۴،ص۷۸)

कुरआन के हुरूफ़ उड़ जाएंगे।

(سنن ابن ماجه، کتاب الفتن،باب ذهاب القرآن و العلم،رقم ۴۰۴۹، ج۴،ص ۳۸۴)

यहां तक कि रूए ज़मीन के तमाम मुसलमान मर जाएंगे और तमाम दुन्या काफ़िरों से भर जाएगी।

(صحیح مسلم، کتاب الفتن واشراط الساعة،باب ذکر الدجال و صفته وما معه،رقم ۲۱۳۷،ص۱۵۶۸)

इस त़रह़ जब क़ियामत की तमाम निशानियां ज़ाहिर हो चुकेंगी तो अचानक खुदा के हुक्म से हज़रते इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام सूर फूंकेंगे जिस से ज़मीन आस्मान टूट फूट कर टुकड़े टुकड़े हो जाएंगे।

(صحیح مسلم، کتاب الفتن واشراط الساعة،باب فی خروج الدجال ومکثه فی الارض...الخ،رقم ۲۹۴۰،ص ۱۵۷۲)

छोटे बड़े सब पहाड़ चूर चूर हो कर बिखर जाएंगे। तमाम दरियाओं में तूफ़ान उठ खड़ा होगा। और ज़मीन फट जाने से एक दरिया दूसरे दरियाओं से मिल जाएगा। तमाम मख़्लूक़ात मर जाएगी और सारा आ़लम नेस्तो नाबूद और पूरी दुन्या तहस नहस हो कर बरबाद हो जाएगी। फिर एक मुद्दत के बा'द जब **अल्लाह** तआ़ला को मन्ज़ूर होगा कि तमाम आ़लम फिर पैदा हो जाए तो दूसरी बार फिर ह़ज़रते इसराफ़ील عَلَیْہِ السَّلَام सूर फूकेंगे फिर सारा आ़लम दोबारा पैदा हो जाएगा और तमाम मुर्दे ज़िन्दा हो कर मैदाने मेह़शर में जम्अ़ होंगे। जहां सब के आ'माल मीज़ाने अ़मल में तोले जाएंगे। ह़िसाब किताब होगा।

(شعب الایمان،باب فی حشرالناس بعد مایبعثون من قبورھم ،رقم۳۵۳،ج۱،ص۳۱۲)

ह़ुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे।

(صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب کلام الرب عزوجل یوم القیامۃ مع الانبیاء وغیرھم، رقم ۷۵۰۹،ج٤،ص۵۷٦)

और अपनी उम्मत को ह़ौज़े कौषर का पानी पिलाएंगे।

(شعب الایمان،باب فی حشر الناس بعد مایبعثون من قبورھم،رقم ۳٦۰،ج۱،ص۳۲۱)

नेकों का नामए आ'माल दाहिने हाथों में और बदों का नामए आ'माल बाएं हाथों में दिया जाएगा। (النبراس شرح العقائد النسفیۃ، وقراءۃ الکتاب حق، ص۲۱٦)

फिर येह लोग पुल सिरात़ पर चलाए जाएंगे। जिन लोगों के आ'माल अच्छे होंगे वोह सलामती के साथ पुल से पार हो कर जन्नत में पहुंच जाएंगे और जो बद आ'माल और गुनाहगार होंगे वोह इस पुल से दोज़ख़ में गिर पड़ेंगे।

(صحیح مسلم، کتاب الایمان،باب معرفۃ طریق الرؤیۃ ، رقم ۱۸۳،ص۱۱۲)

अ़क़ीदा : 1 जहन्नम पैदा हो चुकी है।

(شرح العقائدالنسفیۃ،والحوض حق ، والجنۃ حق والنار حق،ص۱۰٦)

और इस में त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाबों के सामान मौजूद हैं। दोज़ख़ी लोगों में से जिन लोगों के दिलों में ज़र्रा भर भी ईमान होगा। वोह अपने गुनाहों की सज़ा भुगत कर पैग़म्बरों और दूसरे बुज़ुर्गों की शफ़ाअ़त से जहन्नम से निकल कर जन्नत में दाख़िल होंगे।

(صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب کلام الرب عزوجل یوم القیامۃ مع الانبیاء وغیرھم، رقم ۷۵۱۰،۷۵۰۹، ج۴، ص۵۷۶)

मुसलमान कितना ही बड़ा गुनाहगार क्यूं न हो मगर वोह हमेशा दोज़ख़ में नहीं रखा जाएगा बल्कि कुछ दिनों तक अपने गुनाहों की सज़ा पा कर वोह जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा। हां अलबत्ता कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन हमेशा हमेशा जहन्नम ही में रहेंगे और त़रह़ त़रह़ के अ़ज़ाबों में गिरिफ़्तार रहेंगे और उन को मौत भी नहीं आएगी।

(شرح العقائد النسفیۃ ، مبحث اھل الکبائر من المؤمنین لا یخلدون فی النار، ص۱۱۷۔۱۱۸)

अ़क़ीदा : 2 जन्नत भी बनाई जा चुकी है।

(شرح العقائدالنسفیۃ،والحوض حق ، والجنۃ حق والنار حق،ص۱۰۶)

और इस में त़रह़ त़रह़ की ने'मतों का सारा सामान **अल्लाह** तआ़ला ने पैदा फ़रमा रखा है। जन्नतियों को न कोई ख़ौफ़ होगा न किसी त़रह़ का कोई रंजो ग़म होगा।

(جامع الترمذی، کتاب صفۃ الجنۃ، باب ما جاء فی سوق الجنۃ، رقم۲۵۵۸، ج۴، ص۲۴۷)

इन की हर ख़्वाहिश और तमन्ना को ख़ुदावन्दे करीम पूरी फ़रमाएगा और वोह बहिश्त के बाग़ों में क़िस्म क़िस्म के मेवों और त़रह़ त़रह़ की ने'मतों से लुत़्फ़ अन्दोज़ होते रहेंगे। (बहारे शरीअ़त, हि़. 1, स. 44)

और हमेशा हमेशा जन्नत में रहेंगे न कभी वोह जन्नत से निकाले जाएंगे न मरेंगे ! (جامع الترمذی، کتاب صفۃ الجنۃ باب ماجاء فی خلود اھل الجنۃ، رقم۲۵۲۶، ج۴، ص۲۵۱)

अ़क़ीदा : 3 शिर्क और कुफ़्र के गुनाह को **अल्लाह** तआ़ला कभी मुआ़फ़ नहीं फ़रमाएगा। इन के इ़लावा दूसरे छोटे बड़े गुनाहों को जिस के लिये चाहेगा अपने फ़ज़्लो करम से मुआ़फ़ फ़रमा देगा। (پ٥، النسآء:٤٨) और जिस को चाहेगा अ़ज़ाब देगा। (پ٤، اٰل عمران:١٢٩)

अ़ज़ाबे दुन्या उस का अ़द्ल है और मुआ़फ़ कर देना उस का फ़ज़्ल है। **अल्लाह** तआ़ला हर मुसलमान पर अपना फ़ज़्ल फ़रमाए। (आमीन)

ज़रूरी हिदायत :- प्यारी बहनो और अ़ज़ीज़ भाइयो ! तुम क़ियामत की हौलनाकियों और जन्नत व दोज़ख़ की ने'मतों और अ़ज़ाबों का मुख़्तसर ह़ाल पढ़ चुके। यक़ीन करो और ईमान रखो कि हम को तुम को और सब को येह दिन देखने हैं लिहाज़ा ख़ुदा के लिये दुन्या के ऐ़शो आराम में पड़ कर आख़िरत को मत भूल जाओ। सिर्फ़ ख़ोराक, पोशाक, ज़ेवरात, मकानात और दुन्यावी राह़त व आराम के सामान ही की फ़िक्र में दिन रात मत रहा करो बल्कि आख़िरत की ज़िन्दगी का भी कुछ सामान करो और ज़ियादा से ज़ियादा अच्छे आ'माल और इ़बादतें कर के आख़िरत का सामान तय्यार करो और जहन्नम के अ़ज़ाबों से बचने और जन्नत की ने'मतों के पाने की तदबीरें करो। दुन्या आनी फ़ानी है। याद रखो कि एक दिन बिल्कुल ही ना गहां और अचानक मलकुल मौत तुम्हारे पास आ कर येह फ़रमा देंगे कि ऐ शख़्स तेरे घर में हज़ारों मन अनाज रखे हुए हैं मगर अब तू इन में से एक दाना भी नहीं खा सकता। ठंडे ठंडे मीठे मीठे पानियों के मटके भरे हुए रखे हैं मगर अब तू इन पानियों का एक क़त़रा भी नहीं पी सकता। तेरे घर में हज़ारों लाखों रूपे रखे हुए हैं मगर अब तू इन में से एक पैसा भी ख़र्च नहीं कर सकता। अब तू कुछ बोल भी नहीं सकता। उठ कर अब तू चल-फिर भी नहीं सकता। येह कह कर एक दम मलकुल मौत रूह़ क़ब्ज़ करने लगेंगे और

उस वक़्त तुम कुछ भी न कर सकोगे, सोचो कि उस वक़्त तुम्हारा क्या ह़ाल होगा ? और तुम उस वक़्त किस क़दर अफ़्सोस करोगे और पछताओगे कि हाए येह क्या हुवा ? काश मैं तन्दुरुस्ती और सलामती की ह़ालत में कुछ इ़बादतें और ख़ैर ख़ैरात कर लेता। मगर अब इस पछताने और अफ़्सोस करने से क्या फ़ाइदा ? इस लिये मेरी बहनो ! और मेरे भाइयो ! मलकुल मौत के आने से पहले जो कुछ आ'माले सालेह़ और सदक़ा व ख़ैरात कर सकते हो वोह कर के क़ब्र और दोज़ख़ के अ़ज़ाबों से बचने का सामान कर लो। और जन्नत में जाने और बहिश्त की ने'मतों के पाने के ज़रीए़ बना लो वरना बहुत अफ़्सोस करोगे और उस वक़्त मुझे याद करोगे कि हमारा आ़लिमे दीन बिल्कुल सच कहता था। काश हम उस की नसीह़तों को मान लेते तो हमारा भला हो जाता। इस लिये फिर कहता हूं और बार बार कहता हूं कि

वासिते़ ह़क़ के ऐसी राह चल
ह़श्र के दिन जिस से हो तुझ को ख़लल
नेकियों में सुस्त है बदियों में चुस्त
छोड़ इन बातों को त़ौर अपने बदल
क़ब्र में रहने की भी कुछ फ़िक्र कर
ऊंचे ऊंचे यां तू बनवाए मह़ल
रोशनी का क़ब्र में सामान कर
हैं मह़ज़ बेकार येह शम्अ़ व कंवल
आ़क़िबत बन जाए ऐसे काम कर
जल्द इन दुन्या के फन्दों से निकल

मालो दौलत सब धरे रह जाएंगे
काम आएगा वहां तेरा अ़मल
हाए तू बोता है कांटे हर त़रफ़
किस त़रह़ पाएगा तू जन्नत के फल
सो बरस जीने की तुझ को आस है
है खड़ी सर पर तेरे तेरी अजल
उ़म्र घटती है गुनाहों में तेरी
ग़ार में गिरता है तू जल्दी संभल

कुफ़्र की बातें

इस ज़माने में जहालत की वजह से कुछ मर्द और औ़रतें इस क़दर बे लगाम हैं कि जो उन के मुंह में आता है बोल दिया करते हैं। चुनान्चे बा'ज़ कुफ़्र के अल्फ़ाज़ भी लोगों की ज़बानों से निकल जाते हैं और लोग काफ़िर हो जाते हैं और उन का निकाह़ टूट जाता है मगर उन्हें ख़बर भी नहीं होती कि वोह काफ़िर हो गए और उन का निकाह़ टूट गया। इस लिये हम यहां चन्द कुफ़्र की बोलियों का ज़िक्र करते हैं। ताकि लोगों को इन कुफ़्रिय्यात का इ़ल्म हो जाए और लोग इन बातों को बोलने से हमेशा ज़बान रोके रहें। और अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता येह कुफ़्र के अल्फ़ाज़ उन के मुंह से निकल गए हों तो फ़ौरन तौबा कर के नए सिरे से कलिमा पढ़ कर मुसलमान बनें और दोबारा निकाह़ करें।

﴾1﴿ ख़ुदा के लिये मकान और जगह षाबित करना कुफ़्र है बा'ज़ लोग येह कह दिया करते हैं कि ऊपर **अल्लाह** नीचे पंच या ऊपर **अल्लाह** नीचे तुम येह कहना कुफ़्र है।

(الفتاوی الھندیۃ ، کتاب السیر، الباب التاسع فی احکام المرتدین، مطلب موجبات الکفرانواع، ج۲،ص۲۵۹ / الفتاوی القاضی خان ، کتاب السیر، باب مایکون کفرًا من المسلم، ج٤،ص٤٧٠)

﴾2﴿ किसी से कहा गुनाह न करो वरना ख़ुदा जहन्नम में डाल देगा। उस ने कहा ''मैं जहन्नम से नहीं डरता'' या येह कहा ''मुझे ख़ुदा के अ़ज़ाब की कोई परवा नहीं'' या एक ने दूसरे से कहा कि क्या तू ख़ुदा से नहीं डरता ? उस ने गुस्से में कह दिया कि ''मैं ख़ुदा से नहीं डरता'' या येह कह दिया कि ''ख़ुदा कहां है'' येह सब कुफ़्र की बोलियां हैं।

(الفتاوی الھندیة ، کتاب السیر ، الباب التاسع فی احکام المرتدین مطلب موجبات الکفر انواع، ج۲،ص۲٦۰۔۲٦۲)

﴾3﴿ किसी से कहा कि اِنْ شَآءَاللهُ तुम इस काम को करोंगे उस ने कह दिया कि ''अजी मैं बिग़ैर اِنْ شَآءَاللهُ के करूंगा।'' काफ़िर हो गया।

(الفتاوی الھندیة ، کتاب السیر ، الباب التاسع فی احکام المرتدین مطلب موجبات الکفر انواع، ج۲،ص۲٦۱)

﴾4﴿ किसी मालदार को देख कर येह कह दिया कि ''आख़िर येह कैसा इन्साफ़ है कि इस को मालदार बना दिया मुझे ग़रीब बना दिया।'' येह कहना कुफ़्र है। (الفتاوی الھندیة ، کتاب السیر ، الباب التاسع فی احکام المرتدین مطلب موجبات الکفر انواع، ج۲،ص۲٦۲)

﴾5﴿ अवलाद वग़ैरा के मरने पर रंज और गुस्से में इस क़िस्म की बोलियां बोलने लगे कि ख़ुदा को बस मेरा बेटा ही मारने के लिये मिला था। दुन्या भर में मारने के लिये मेरे बेटे के सिवा ख़ुदा को दूसरा कोई मिलता ही नहीं था। ख़ुदा को ऐसा ज़ुल्म नहीं करना चाहिये था। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बहुत बुरा किया कि मेरे एक लौते बेटे को मार कर मेरा घर बे चराग़ कर दिया। इस क़िस्म की बोलियां बोल देने से आदमी काफ़िर हो जाता है।

﴾6﴿ ख़ुदा के किसी काम को बुरा कहना या ख़ुदा के कामों में ऐ़ब निकालना या ख़ुदा का मज़ाक़ उड़ाना या ख़ुदा की बे अदबी करना या ख़ुदा की शान में कोई फोहड़ लफ़्ज़ बोलना या ख़ुदा को ऐसे लफ़्ज़ों से याद करना जो उस की शान के लाइक़ नहीं हैं। येह सब कुफ़्र की बातें हैं।

《7》 किसी नबी या फ़िरिश्ते की ह़क़ारत करना या इन की जनाब में गुस्ताख़ी करना या इन को ऐब लगाना या इन का मज़ाक़ उड़ाना या इन पर त़ा'ना मारना या इन के किसी काम को बे ह़याई बताना या बे अदबी के साथ इन का नाम लेना कुफ़्र है।

(البحر الرائق، کتاب السیر،باب احکام المرتدین،ج٥،ص٢٠٣ـ٢٠٥)

《8》 जो शख़्स हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को आख़िरी नबी न माने (الشفاء بتعریف حقوق المصطفٰی صلی اللہ علیہ وسلم، فصل فی بیان ما ھو من المقالات کفر، ص٢٤٦ـ٢٤٧) या हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की किसी चीज़ या किसी बात की तौहीन करे या ह़क़ीर जाने या ऐब लगाए या आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस बाल या नाख़ुन की बे अदबी करे या आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लिबास मुबारक को गन्दा और मैला बताए या हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की किसी सुन्नत की तह़क़ीर करे मषलन दाढ़ी बढ़ाना, मूंछे कम करना,

(البحر الرائق، کتاب السیر، باب احکام المرتدین، ج٥،ص٢٠٤/الفتاوی التاتارخانیة، کتاب احکام المرتدین، فصل فیما یعود الی الانبیاء علیھم السلام، ج٥، ص٤٨١ـ٤٨٢/ الفتاوی الھندیة، کتاب السیر، الباب التاسع فی احکام المرتدین، مطلب موجبات الکفر انواع،ج٢،ص٢٦٣ـ٢٦٥)

इमामा का शिम्ला लटकाना

(مجمع الانھر، کتاب السیروالجھاد،باب ثم ان الفاظ الکفر انواع، ج٢،ص٥١٠)

खाने के बा'द उंगलियों को चाट लेना या हुज़ूर की किसी सुन्नत का मज़ाक़ उड़ाए या इस को बुरा समझे तो वोह काफ़िर हो जाएगा।

(الفتاوی التاتارخانیة، کتاب احکام المرتدین، فصل فیما یعود الی الانبیاء علیھم السلام، ج٥، ص٤٨٢)

《9》 जो शख़्स किसी क़ातिल या ख़ूनी डाकू को देख कर तौहीन की निय्यत से कह दे कि 'मलकुल मौत' आ गए तो वोह काफ़िर हो जाएगा।

(الفتاوی الھندیة، کتاب السیر،الباب التاسع فی احکام المرتدین مطلب موجبات الکفر انواع،ج٢،ص٢٦٦)

﴾10﴿ कुरआन की किसी आयत के साथ मस्ख़रा पन करना कुफ़्र है।

(البحرالرائق، کتاب السیر، باب احکام المرتدین، ج٥،ص٢٠٥)

जैसे बा'ज़ दाढ़ी मुंडे कह दिया करते हैं कि कुरआन में كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ आया है और मा'ना येह बताते हैं कि कल्ला साफ़ कराते रहो।

(बहारे शरीअत, हि. 9, स. 171)

या अकेले नमाज़ पढ़ने वाले कह दिया करते हैं कि اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰی और मा'ना येह बताते हैं कि नमाज़ तन्हा पढ़ा करो। इन बातों के बोल देने से आदमी काफ़िर हो जाएगा क्यूंकि येह कुरआन के साथ मस्ख़रा पन भी है और कुरआन के मा'ना को बदल डालना भी है और येह दोनों बातें कुफ़्र हैं।

(شرح الملاء علی القاری علی الفقه الاکبر، فصل من ذالك فیما یتعلق بالقرآن والصلاۃ،ص١٦٨/الفتاوی الھندیة، کتاب السیر،باب احکام المرتدین، ج٢، ص٢٦٦ـ٢٦٧)

﴾11﴿ इस्लाम में शक करना और येह कहना कि मा'लूम नहीं मैं मुसलमान हूं या काफ़िर या अपने इस्लाम पर अफ़्सोस करना मषलन येह कहना कि "मैं मुसलमान हो गया येह अच्छा नहीं हुवा काश मैं हिन्दू होता या ईसाई होता तो बहुत अच्छा होता" तो यूं कुफ़्फ़ार के दीन को अच्छा बताना या किसी कुफ़्र की बात को अच्छा समझना या किसी को कुफ़्र की बात सिखाना या येह कहना कि न मैं हिन्दू हूं न मुसलमान, मैं तो इन्सान हूं या येह कहना कि मैं न मस्जिद से तअ़ल्लुक़ रखता हूं न मन्दर से या येह कहना कि मस्जिद और मन्दर दोनों ढोंग हैं मैं किसी को नहीं मानता या येह कहना कि का'बा तो मा'मूली पथ्थरों का एक पुराना घर है इस में क्या धरा है कि मैं इस की ता'ज़ीम करूं या येह कहना कि नमाज़ पढ़ना बेकार आदमियों का काम है। हम को नमाज़ की कहां फ़ुर्सत है? या येह कहना कि रोज़ा वोह रखे जिस को खाना न मिले या येह कहना कि जब खुदा ने खाने को दिया है तो रोज़ा रख कर भूके क्यूं मरें? या अज़ान की

आवाज़ सुन कर येह कहना कि क्या ख़्वाह मख़्वाह का शोर मचा रखा है या येह कहना कि नमाज़ पढ़ने का कुछ नतीजा नहीं बहुत पढ़ ली क्या फ़ाइदा हुवा ? या येह कहना कि नमाज़ पढ़ना न पढ़ना दोनों बराबर हैं या येह कहना कि मैं तो सिर्फ़ रमज़ान में नमाज़ पढ़ता हूं बाक़ी दिनों में न कभी पढ़ी न पढ़ूंगा या येह कहना कि नमाज़ मुझे मुवाफ़िक़ नहीं आती। मैं जब नमाज़ पढ़ता हूं तो कोई न कोई नुक़्सान ज़रूर उठाता हूं या येह कहना कि ज़कात ख़ुदाई टेक्स है जो मुल्ला लोगों ने मालदारों पर लगा रखा है या येह कहना कि ह़ज तो एक तफ़्रीही सफ़र है। या ब्लेक मार्केट का धन्दा है। मैं ऐसा काम क्यूं करूं ? वग़ैरा वग़ैरा इस क़िस्म की तमाम बकवासें खुला हुवा कुफ़्र हैं। इन सब बोलियों से आदमी काफ़िर हो जाएगा।

﴾12﴿ येह कहना कि राम व रह़ीम दोनों एक ही हैं और वैद व क़ुरआन में कुछ फ़र्क़ नहीं या येह कहना कि मस्जिद और मन्दर दोनों ख़ुदा के घर हैं। दोनों जगह ख़ुदा मिलता है, कुफ़्र है।

﴾13﴿ बुत या चांद सूरज को सज्दा करना।

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الجهاد، باب المرتد، ج٦، ص٣٤٣)

या ज़ुन्नार (जनेव) बांधना या सर पर चुटया रखना या क़श्क़ा लगाना

(الفتاوی الهندیة، کتاب السیر، الباب التاسع فی احکام المرتدین، مطلب موجبات الکفر انواع، ج٢، ص٢٧٦، ٢٧٧)

या होली दीवाली पूजना या रामलीला, जन्माष्टमी, रामनवमी वग़ैरा के जुलूसों और मेलों में कुफ़्र की शानो शौकत बढ़ाने या काफ़िरों को ख़ुश करने के लिये शरीक होना, या इन कुफ़्री तहवारों की ता'ज़ीम करना या कोई चीज़ इन तहवारों के दिन मुशरिकीन के घर बत़ौरे तोह़्फ़ा और हदिय्या के भेजना जब कि मक़्सूद इस दिन की ता'ज़ीम हो तो येह कुफ़्र है।

﴾14﴿ जो शख़्स येह कह दे कि मैं शरीअ़त को नहीं मानता

(फ़तावा रज़विय्या (जदीदा), जि 14, स. 691)

या शरीअ़त का कोई हुक्म या फ़तवा सुन कर येह कह दे कि येह सब हवाई बातें हैं। या येह कह दे कि शरीअ़त के हुक्म और फ़तवा को चूलहे भाड़ में डाल दो या कह दे कि मैं शरअ़ वरअ़ को नहीं जानता

(مجمع الانھر، کتاب السیر والجہاد، باب ثم ان الفاظ الکفرانواع، ج۲، ص۵۱۰)

या येह कह दे कि हम शरीअ़त पर अ़मल नहीं करेंगे हम तो बरादरी की रस्मों की पाबन्दी करेंगे।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب السیر، الباب التاسع فی أحکام المرتدین، ج۲، ص۲۷۲)

या येह कह दे कि بِسْمِ الله और سُبْحٰنَ الله रोटी की जगह काम न देगा। हमें रोटी चाहिये بِسْمِ الله और سُبْحٰنَ الله नहीं चाहिये तो वोह शख़्स काफ़िर हो जाएगा।

﴾15﴿ शराब पीते वक़्त या ज़िना करते वक़्त या जुवा खेलते वक़्त "بِسْمِ الله" कहना कुफ़्र है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب السیر، الباب التاسع فی احکام المرتدین مطلب موجبات الکفرانواع، ج۲، ص۲۷۳)

﴾16﴿ मुसलमान को मुसलमान जानना और काफ़िर को काफ़िर जानना ज़रूरियाते दीन में से है। किसी मुसलमान को काफ़िर कहना या किसी काफ़िर को मुसलमान कहना कुफ़्र है।

﴾17﴿ जो किसी काफ़िर के लिये उस के मरने के बा'द मग़फ़िरत की दुआ़ मांगे या किसी मुर्दा काफ़िर व मुर्तद्द को मर्हूम व मग़फ़ूर कहे या किसी मुर्दा हिन्दू को "बैकुंठ बाशी" कहे वोह खुद काफ़िर है।

﴾18﴿ खुदा की ह़राम की हुई चीज़ों को ह़लाल कहना या खुदा की ह़लाल की हुई चीज़ों को ह़राम कहना।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب السیر، الباب التاسع فی احکام المرتدین مطلب موجبات الکفر انواع، ج۲، ص۲۷۲)

या खुदा की फ़र्ज़ की हुई चीज़ों में से किसी चीज़ का इन्कार करना येह सब कुफ़्र हैं।

﴾19﴿ ज़रूरियाते दीन में से किसी चीज़ का इन्कार करना मषलन तौह़ीद, रिसालत, क़ियामत, मलाइका, जन्नत, दोज़ख़, आस्मानी किताबें इन में से किसी चीज़ का भी इन्कार करना कुफ़्र है। (المسامرة،ص ٣٤٢)

﴾20﴿ क़ुरआने मजीद को नाक़िस बताना और येह कहना कि इस में से कुछ आयतें निकाल दी गई हैं या क़ुरआने मजीद की किसी आयत का इन्कार करना या क़ुरआन में कोई ऐ़ब बताना, क़ुरआने मजीद की बे अदबी करना, येह सब कुफ़्र हैं।

बहनो और भाइयो ! ग़ौर करो येह सब अल्फ़ाज़ और इन के इ़लावा दूसरे बहुत से अल्फ़ाज़ हैं जिन के बोलने से आदमी काफ़िर हो जाता है लिहाज़ा बोल चाल में ख़ास तौर पर ध्यान रखो। ज़ियादा शैख़ी मत बघारो। और अपनी ज़बान को क़ाबू में रखो। और ख़बरदार बे लगाम बन कर क़ैंची की त़रह़ ज़बान चला चला कर जो मुंह में आए ऊल फ़ूल न बकते रहो। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त करो। और इस को क़ाबू में रखो। क्यूंकि बहुत सी ज़बान से निकली हुई बातें आदमी को जहन्नम में दाख़िल कर देती हैं। तौबा तौबा نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ **अल्लाह** तआ़ला मुसलमान को कुफ़्री कलामों और कुफ़्रिय्यात के कामों से बचाए रखे। "आमीन"।

विलायत का बयान

विलायत दरबारे ख़ुदावन्दी में एक ख़ास क़ुर्ब का नाम है जो **अल्लाह** तआ़ला अपने फ़ज़्लो करम से अपने ख़ास बन्दों को अ़त़ा फ़रमाता है।

अ़क़ीदा : 1 तमाम उम्मतों के औलिया में हमारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत के औलिया सब से अफ़्ज़ल हैं। और इस उम्मत के औलिया में सब से अफ़्ज़ल व आ'ला ह़ज़राते ख़ुलफ़ाए राशिदीन या'नी ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ व ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ व ह़ज़रते उ़षमान व ह़ज़रते

अ़ली मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم हैं और इन में जो ख़िलाफ़त की तरतीब है वोही अफ़्ज़लिय्यत की भी तरतीब है। या'नी सब से अफ़्ज़ल ह़ज़रते सिद्दीक़े अक्बर हैं फिर फ़ारूक़े आ'ज़म फिर उ़षमाने गनी फिर अ़ली मुर्तज़ा ! (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم)

(شرح العقائد النسفی، مبحث افضل البشر بعد نبیناصلی اللہ علیہ وسلم،ص۱۴۹۔۱۵۰)

अ़क़ीदा : 2 औलियाए किराम ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सच्चे नाइब हैं। **अल्लाह** तआ़ला ने औलियाए किराम को बहुत बड़ी त़ाक़त और आ़लम में इन को तसर्रुफ़ात के इख़्तियारात अ़त़ा फ़रमाए हैं। और बहुत से ग़ैब के उ़लूम इन पर मुन्कशिफ़ होते हैं। यहां तक कि बा'ज़ औलिया को **अल्लाह** तआ़ला लौह़े मह़फ़ूज़ के उ़लूम पर भी मुत़्त़लअ़ फ़रमा देता है । लेकिन औलिया को येह सारे कमालात ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के वासित़े से ह़ासिल होते हैं।

अ़क़ीदा : 3 औलिया की करामत ह़क़ है। इस का मुन्किर गुमराह है। करामत की बहुत सी क़िस्में हैं। मषलन मुर्दों को ज़िन्दा करना। अन्धों और कोढ़ियों को शिफ़ा देना, लम्बी मसाफ़तों को मिनट दो मिनट में त़ै कर लेना। पानी पर चलना। हवाओं में उड़ना। दूर दूर की चीज़ों को देख लेना। मुफ़स्सल बयान के लिये पढ़ो हमारी किताब "करामाते सह़ाबा" (عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان)

(شرح العقائدالنسفی، مبحث کرامات الاولیاء حق ،ص۱۴۵۔۱۴۷)

अ़क़ीदा : 4 औलियाए किराम को दूरो नज़्दीक से पुकारना जाइज़ और सल्फ़े सालेह़ीन का त़रीक़ा है।

अ़क़ीदा : 5 औलियाए किराम अपनी अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं और इन का इ़ल्म और इन का देखना इन का सुनना दुन्यावी ज़िन्दगी से ज़ियादा क़वी होता है।

अ़क़ीदा : 6 औलियाए किराम के मज़ारात पर ह़ाज़िरी मुसलमानों के लिये बाइ़षे सआ़दत व बरकत है और इन की नियाज़ व फ़ातिह़ा और ईसाले षवाब मुस्तह़ब और ख़ैरो बरकत का बहुत बड़ा ज़रीआ़ है।

औलियाए किराम का उ़र्स करना या'नी लोगों का इन के मज़ारों पर जम्अ़ हो कर क़ुरआन ख़्वानी व फ़ातिह़ा ख़्वानी व ना'त ख़्वानी व वा'ज़ व ईसाले षवाब येह सब अच्छे और षवाब के काम हैं। हां अलबत्ता उ़र्सों में जो ख़िलाफ़े शरीअ़त काम होने लगे हैं। मषलन क़ब्रों को सजदा करना, औ़रतों का बे पर्दा हो कर मर्दों के मज्मअ़ में घूमते फिरना, औ़रतों का नंगे सर मज़ारों के पास झूमना, चिल्लाना और सर पटक पटक कर खेलना कूदना। और मर्दों का तमाशा देखना, बाजा बजाना, नाच कराना येह सब ख़ुराफ़ात हर ह़ालत में मज़्मूम व ममनूअ़ हैं और हर जगह ममनूअ़ है और बुज़ुर्गों के मज़ारों के पास और ज़ियादा मज़्मूम हैं लेकिन इन ख़ुराफ़ात व ममनूआ़त की वजह से येह नहीं कहा जा सकता कि बुज़ुर्गों का उ़र्स ह़राम है जो ह़राम और ममनूअ़ काम हैं इन को रोकना लाज़िम है। नाक पर अगर मख्खी बैठ गई है तो मख्खी को उड़ा देना चाहिये नाक काट कर नहीं फैंक देना चाहिये। इसी त़रह़ अगर जाहिलों और फ़ासिक़ों ने उ़र्स में कुछ ह़राम काम और ममनूअ़ कामों को शामिल कर दिया है तो इन ह़राम व ममनूअ़ कामों को रोका जाए उ़र्स ही को ह़राम नहीं कह दिया जाएगा।

पीरी मुरीदी :- उ़–लमा और मशाइख़ से मुरीद होना और इन के हाथों पर तौबा कर के नेक आ'माल करने का अ़हद करना जाइज़ और षवाब का काम है मगर मुरीद होने से पहले पीर के बारे में ख़ूब अच्छी त़रह़ जांच पड़ताल कर लें वरना अगर पीर बद अ़क़ीदा और बद मज़हब हुवा तो ईमान से भी हाथ धो बैठेंगे। आज कल बहुत से ईमान के डाकू पीरों के लिबास में फिरते रहते हैं। लिहाज़ा मुरीद बनने में बहुत होशियार रहने की ज़रूरत है। यूं तो पीर बनने के लिये बहुत सी शर्तों की ज़रूरत है मगर

कम से कम चार शर्तों का पीर में होना तो बेहद ज़रूरी है। **अव्वल** सुन्नी सहीहुल अ़क़ीदा हो, **दुवुम** इतना इ़ल्म रखता हो कि अपनी ज़रूरत के मसाइल किताबों से निकाल सके। **सिवुम** फ़ासिक़े मो'लिन न हो। **चहारुम** उस का सिलसिला और शजरए त़रीक़त रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तक मुत्तसिल हो वरना ऊपर से फ़ैज़ न होगा।

लिहाज़ा ख़ूब समझ लो और याद रखो कि बद मज़हब मषलन राफ़ज़ी, ख़ारिजी, वहाबी वग़ैरा से मुरीद होना ह़राम और गुनाह है इसी त़रह़ बिल्कुल ही जाहिल जो ह़लाल व ह़राम और फ़र्ज़ व वाजिब और ज़रूरियाते दीन का इ़ल्म न रखता हो उस से मुरीद होना भी ना जाइज़ है। यूंही नमाज़ व रोज़ा छोड़ने वाला। दाढ़ी मुंडाने वाला या ह़द्दे शरीअ़त से कम दाढ़ी रखने वाला या गुनाहे कबीरा और ख़िलाफ़े शरीअ़त आ'माल करने वाला भी पीर बनाने के लाइक़ नहीं। और ऐसे फ़ासिक़ से मुरीद होना भी दुरुस्त नहीं बल्कि गुनाह है। ऐसे ही वोह शख़्स जिस का सिलसिला और शजरए बैअ़त दरमियान में कहीं से भी कटा हुवा हो। मषलन उस को ख़ुद ही ख़िलाफ़त व इजाज़त किसी बुज़ुर्ग से न ह़ासिल हो या उस के शजरे के पीरों में से कोई बिला ख़िलाफ़त व इजाज़त वाला हो या गुमराह हो तो ऐसे शख़्स से बैअ़त होना भी दुरुस्त नहीं है।

5

इबादात

वोह सजदा रूहे ज़मीं जिस से कांप उठती थी
इसी को आज तरसते हैं मिम्बरो मेह्राब

मसाइल की चन्द इस्तिलाहें

येह वोह इस्तिलाही बोलियां हैं कि इन को जान लेने से इस किताब के समझने में मदद मिलेगी और मसाइल के समझने में हर जगह बहुत ही सहूलत और आसानी हो जाएगी। इस लिये मस्अलों को पढ़ने से पहले इन इस्तिलाहों को ख़ूब समझ कर अच्छी तरह याद कर लो !

फ़र्ज़ :- वोह है जो शरीअत की यक़ीनी दलील से षाबित हो इस का करना ज़रूरी और बिला किसी उज़्र के इस को छोड़ने वाला फ़ासिक़ और जहन्नमी और इस का इन्कार करने वाला काफ़िर है। जैसे नमाज़ व रोज़ा और हज व ज़कात वग़ैरा।

फिर फ़र्ज़ की दो क़िस्में हैं एक फ़र्ज़े ऐन, दूसरे फ़र्ज़े किफ़ाया। फ़र्ज़े ऐन वोह है जिस का अदा करना हर आक़िल व बालिग़ मुसलमान पर ज़रूरी है जैसे नमाज़े पन्जगाना वग़ैरा। और फ़र्ज़े किफ़ाया वोह है जिस का करना हर एक पर ज़रूरी नहीं बल्कि बा'ज़ लोगों के अदा कर लेने से सब की तरफ़ से अदा हो जाएगा और अगर कोई भी अदा न करे तो सब गुनाहगार होंगे जैसे नमाज़े जनाज़ा वग़ैरा।

(बहारे शरीअत, जि. 1 हि. 2, स. 7)

वाजिब :- वोह है जो शरीअत की ज़न्नी दलील से षाबित हो इस का करना ज़रूरी है और इस को बिला किसी तावील और बिग़ैर किसी उज़्र के छोड़ देने वाला फ़ासिक़ और अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ है लेकिन इस का इन्कार करने वाला काफ़िर नहीं बल्कि गुमराह और बद मज़हब है।

(बहारे शरीअत, जि. 1 हि. 2, स. 8)

सुन्नते मुअक्कदा :- वोह है जिस को हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم ने हमेशा किया हो। अलबत्ता बयाने जवाज़ के लिये कभी छोड़ भी दिया हो इस को अदा करने में बहुत बड़ा षवाब और इस को कभी इत्तिफ़ाक़िया तौर पर छोड़ देने से अल्लाह عزوجل व रसूल صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم का इताब और इस को छोड़ देने की आ़दत डालने वाले पर जहन्नम का अ़ज़ाब होगा। जैसे नमाज़े फ़ज्र की दो रक्अ़त सुन्नत और नमाज़े ज़ोहर की चार रक्अ़त फ़र्ज़ से पहले और दो रक्अ़त फ़र्ज़ के बा'द सुन्नतें। और नमाज़े मग़रिब की दो रक्अ़त सुन्नत और नमाज़े इशा की दो रक्अ़त सुन्नत, येह नमाज़े पन्जगाना की बारह रक्अ़त सुन्नतें येह सब सुन्नते मुअक्कदा हैं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि. 2, स. 8)

सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा :- वोह है जिस को हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم ने किया हो और बिग़ैर किसी उ़ज़्र के कभी कभी इस को छोड़ भी दिया हो। इस को अदा करने वाला षवाब पाएगा और इस को छोड़ देने वाला अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ नहीं। जैसे अ़स्र के पहले की चार रक्अ़त सुन्नत और इ़शा से पहले की चार रक्अ़त सुन्नत कि येह सब सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा हैं। सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा को सुन्नते ज़ाइदा भी कहते हैं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि. 2, स. 8)

मुस्तह़ब :- हर वोह काम है जो शरीअ़त की नज़र में पसन्दीदा हो और इस को छोड़ देना शरीअ़त की नज़र में बुरा भी न हो। ख़्वाह इस काम को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم ने किया हो या इस की तरग़ीब दी हो। या उ़-लमाए सालिह़ीन ने इसे पसन्द फ़रमाया अगर्चे अह़ादीष में इस का ज़िक्र न आया हो। येह सब मुस्तह़ब हैं। मुस्तह़ब को करना षवाब और इस को छोड़ देने पर न कोई अ़ज़ाब है न कोई इताब। जैसे वुज़ू करने में क़िब्ला रू हो कर बैठना, नमाज़ में ब ह़ालते क़ियाम

सजदागाह पर नज़र रखना, खुत्बे में खुलफ़ाए राशिदीन वग़ैरा का ज़िक्र, मीलाद शरीफ़, पीराने किबार के वज़ाइफ़ वग़ैरा, मुस्तहृब को मनदूब भी कहते हैं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि. 2, स. 8)

मुबाह़ :- वोह जिस का करना और छोड़ देना दोनों बराबर हो। जिस के करने में न कोई षवाब हो और छोड़ देने में न कोई अ़ज़ाब हो। जैसे लज़ीज़ गि़ज़ाओं का खाना और नफ़ीस कपड़ों का पहनना वग़ैरा।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि. 2, स. 9)

ह़राम :- वोह है जिस का षुबूत यक़ीनी शरई दलील से हो। इस का छोड़ना ज़रूरी और बाइ़षे षवाब है और इस का एक मरतबा भी क़स्दन करने वाला फ़ासिक़ व जहन्नमी और गुनाहे कबीरा का मुर्तकिब है और इस का इन्कार करने वाला काफ़िर है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि. 2, स. 9)

खूब समझ लो कि ह़राम फ़र्ज़ का मुक़ाबिल है या'नी फ़र्ज़ का करना ज़रूरी है और ह़राम का छोड़ देना ज़रूरी है।

मकरूहे तह़रीमी :- वोह है जो शरीअ़त की ज़न्नी दलील से षाबित हो। इस का छोड़ना लाज़िम और बाइ़षे षवाब है और इस का एक मरतबा भी क़स्दन करने वाला फ़ासिक़ व जहन्नमी और गुनाहे कबीरा, ह़राम के करने से कम है। मगर चन्द बार इस को कर लेना गुनाहे कबीरा है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि. 2, स. 9)

अच्छी त़रह़ ज़ेह्न नशीन कर लो कि येह वाजिब का मुक़ाबिल है या'नी वाजिब को करना लाज़िम है और मकरूहे तह़रीमी को छोड़ना लाज़िम है।

इसाअत :– वोह है जिस का करना बुरा और कभी इत्तिफ़ाक़िया कर लेने वाला लाइके़ इ़ताब और इस को करने की आ़दत बना लेने वाला मुस्तहि़क़े अ़ज़ाब है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि़. 2, स. 9)

वाज़ेह़ रहे कि येह सुन्नते मुअक्कदा का मुक़ाबिल है या'नी सुन्नते मुअक्कदा को करना षवाब और छोड़ना बुरा है और इसाअत को छोड़ना षवाब और करना बुरा है।

मकरूहे तन्ज़ीही :– वोह है जिस का करना शरीअ़त को पसन्द नहीं मगर इस के करने वाले पर अ़ज़ाब नहीं होगा। येह सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा का मुक़ाबिल है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि़. 2, स. 9)

ख़िलाफ़े औला :– वोह है कि इस को छोड़ देना बेहतर था लेकिन अगर कर लिया तो कोई मुज़ाइक़ा नहीं। येह मुस्तह़ब का मुक़ाबिल है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि़. 2, स. 9)

नमाज़

हर मुसलमान मर्द और औ़रत को येह जान लेना चाहिये कि ईमान और अ़क़ीदों को सह़ीह़ कर लेने के बा'द सब फ़र्ज़ों में सब से बड़ा फ़र्ज़ नमाज़ है। क्यूंकि कु़रआने मजीद और अह़ादीष में बहुत ज़ियादा बार बार इस की ताकीद आई है। याद रखो कि जो नमाज़ को फ़र्ज़ न माने या नमाज़ की तौहीन करे या नमाज़ को एक हल्की और बे क़द्र चीज़ समझ कर इस की त़रफ़ बे तवज्जोगी बरते वोह काफ़िर और इस्लाम से ख़ारिज है और जो शख़्स नमाज़ न पढ़े वोह बहुत बड़ा गुनाहगार, क़ह्रे क़ह्हार और ग़ज़बे जब्बार में गिरिफ़्तार और अ़ज़ाबे जहन्नम का ह़क़दार है और वोह इस लाइक़ है कि बादशाहे इस्लाम पहले उस को तम्बीह व सज़ा दे। फिर भी वोह नमाज़ न पढ़े तो उस को क़ैद कर दे। यहां तक कि तौबा करे और नमाज़ पढ़ने लगे बल्कि इमामे मालिक व शाफ़ेई व अह़मद (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم) के नज़दीक बादशाहे इस्लाम को उस के क़त्ल का हुक्म है। (درمختار، کتاب الصلاۃ، ج۲، ص۸)

शरीअ़त का येह मस्अला है कि बच्चा जब सात बरस का हो जाए तो उस को नमाज़ सिखा कर नमाज़ पढ़ने का हुक्म दें और जब बच्चे की उ़म्र दस बरस की हो जाए तो मार मार कर उस से नमाज़ पढ़वाएं। (شعب الایمان للبیهقی،باب فی حقوق الاولاد والاهلین،رقم ۸٦٥۰،ج٦،ص۳۹۸)

मस्अला :- नमाज़ ख़ालिस बदनी इ़बादत है। इस में नियाबत जारी नहीं हो सकती। या'नी एक की त़रफ़ से दूसरा नहीं पढ़ सकता। न येह हो सकता है कि ज़िन्दगी में नमाज़ के बदले कुछ माल बत़ौरे फ़िदया अदा कर के नमाज़ से छुटकारा ह़ासिल कर ले। हां अलबत्ता अगर किसी पर कुछ नमाज़ें रह गई हैं और इनतिक़ाल कर गया और वसिय्यत कर गया कि उस की नमाज़ों का फ़िदया अदा किया जाए तो उम्मीद है कि اِنْ شَآءَاللّٰهعزّوجلّ येह क़बूल हो। और येह वसिय्यत भी वारिषों को उस की त़रफ़ से पूरी करनी चाहिये कि क़बूल व अ़फ़्व की उम्मीद है।

(درمختارو ردالمحتار، کتاب الصلاۃ،مطلب فیما یعیر الکافر به مسلمامن الافعال،ج۲،ص۱۲۔۱۳)

शराइत़े नमाज़ :- इस से पहले कि हम नमाज़ का त़रीक़ा बताएं उन छे चीज़ों को बता देना ज़रूरी है जिन के बिग़ैर नमाज़ शुरूअ़ नहीं हो सकती। उन छे चीज़ों को "शराइत़े नमाज़" कहते हैं और वोह येह हैं।

पहली पाकी, दूसरी शर्मगाह को छुपाना, तीसरी नमाज़ का वक़्त, चौथी क़िब्ला की त़रफ़ मुंह करना, पांचवीं निय्यत, छटी तक्बीरे तह़रीमा।

(الدرالمختارو ردالمحتار، کتاب الصلاۃ،باب شروط الصلاۃ،مطلب فی استقبال القبلة،ج۲،ص۹۰۔۱۳۳)

पहली शर्त़ या'नी "पाकी" का मत़लब है कि नमाज़ी का बदन, इस के कपड़े, नमाज़ की जगह सब पाक हों और कोई नजासत जैसे पेशाब, पाख़ाना, ख़ून, लीद, गोबर, मुर्ग़ी की बीट वग़ैरा न लगी हो। और नमाज़ी बे ग़ुस्ल और बे वुज़ू भी न हो।

दूसरी शर्त् या'नी "शर्मगाह छुपाने" का येह मत्लब है कि मर्द का बदन नाफ़ से ले कर घुटनों के नीचे तक शर्मगाह है इस लिये नमाज़ की ह़ालत में कम से कम नाफ़ से ले कर घुटनों के नीचे तक छुपा रहना ज़रूरी है और औ़रत का पूरा बदन शर्मगाह है इस लिये नमाज़ की ह़ालत में औ़रत के तमाम बदन का ढका रहना ज़रूरी है। सिर्फ़ चेहरा और हथेली और टख़नों के नीचे क़दम के खुले रहने की इजाज़त है। टख़ने को भी छुपा रहना चाहिये।

तीसरी शर्त् या'नी "वक़्त" का येह मत्लब है कि जिस नमाज़ के लिये जो वक़्त मुक़र्रर है वोह नमाज़ उसी वक़्त में पढ़ी जाए।

चौथी शर्त् या'नी "क़िब्ला को मुंह करना" इस का मत्लब ज़ाहिर है कि नमाज़ में ख़ानए का'बा की त़रफ़ अपना चेहरा करना।

पांचवीं शर्त् या'नी "निय्यत" का येह मत्लब है कि जिस वक़्त की जो नमाज़ फ़र्ज़ या वाजिब या सुन्नत या नफ़्ल या क़ज़ा पढ़ता हो। दिल में इस का पक्का इरादा करना कि मैं फ़ुलां नमाज़ पढ़ रहा हूं और अगर दिल में इरादे के साथ ज़बान से भी कह ले तो बेहतर है।

छटी शर्त् "तक्बीरे तह़रीमा" या'नी **अल्लाहु अक्बर** कहना। येह नमाज़ की आख़िरी शर्त् है कि इस के कहते ही नमाज़ शुरूअ़ हो गई। अब अगर नमाज़ के सिवा दूसरा कोई काम किया या कुछ बोला तो नमाज़ टूट गई। पहली पांचों शर्तों का तक्बीरे तह़रीमा से पहले और नमाज़ ख़त्म होने तक मौजूद रहना ज़रूरी है अगर एक शर्त् भी न पाई गई तो नमाज़ नहीं होगी।

पाकी के मसाइल का बयान

वुज़ू का त़रीक़ा

वुज़ू करने वाले को चाहिये कि अपने दिल में वुज़ू का पक्का इरादा कर के क़िब्ला की त़रफ़ मुंह कर के किसी ऊंची जगह बैठे और بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ़ कर पहले दोनों हाथ तीन मरतबा गिट्टों तक धोए। फिर मिस्वाक करे। अगर मिस्वाक न हो तो उंगली से अपने दांतों और मसूढ़ों को मल कर साफ़ करे और अगर दांतों या तालू में कोई चीज़ अटकी या चिपकी हो तो उस को उंगली या मिस्वाक या ख़िलाल से निकाले और छुड़ाए। फिर तीन मरतबा कुल्ली करे और अगर रोज़ादार न हो तो ग़र-ग़रा भी करे लेकिन अगर रोज़ादार हो तो ग़रग़रा न करे कि ह़ल्क़ के अन्दर पानी चले जाने का ख़त़रा है फिर दाहिने हाथ से तीन दफ़अ़ नाक में पानी चढ़ाए और बाएं हाथ से नाक साफ़ करे फिर दोनों हाथों में पानी ले कर तीन मरतबा इस त़रह़ चेहरा धोए कि माथे पर बाल जमने की जगह से ले कर थोड़ी के नीचे तक और दाहिने कान की लौ से बाएं कान की लौ तक सब जगह पानी बह जाए और कहीं ज़रा भी पानी बहने से न रह जाए। अगर दाढ़ी हो तो इसे भी धोए और दाढ़ी में उंगलियों से ख़िलाल भी करे लेकिन अगर एह़राम बांधे हो तो ख़िलाल न करे। फिर तीन मरतबा कोहनी समेत या'नी कोहनी से कुछ ऊपर दाहिना हाथ धोए फिर इसी त़रह़ तीन मरतबा बायां हाथ धोए। अगर उंगली में तंग अंगूठी या छल्ला हो या कलाइयों में तंग चूड़ियां हों तो इन सभों को हिला कर धोए ताकि सब जगह पानी बह जाए फिर एक बार पूरे सर का मस्ह़ करे। इस का त़रीक़ा येह है कि दोनों हाथों को पानी से तर कर के अंगूठे और कलिमे की उंगली छोड़ कर दोनों हाथों की तीन तीन उंगलियों की नोक को एक दूसरे से मिलाए और इन छेओं उंगलियों का पेट अपने माथे पर रख कर पीछे की त़रफ़ सर के आख़िरी हिस्से तक ले जाए और वोह इस त़रह़ कि कलिमे की दोनों उंगलियां और दोनों उंगूठे और दोनों

हथेलियां सर से न लगने पाएं। फिर सर के पिछले हिस्से से हाथ माथे की त़रफ़ इस त़रह़ लाए कि दोनों हथेलियां सर के दाएं बाएं हिस्से पर होती हुई माथे तक वापस आ जाएं। फिर कलिमे की उंगली के पेट से कानों के अन्दर के हिस्सों का और अंगूठे के पेट से कान के ऊपर का मस्ह़ करे और उंगलियों की पीठ से गर्दन का मस्ह़ करे। फिर तीन बार दाहिना पाऊं टख़्ने समेत या'नी टख़्ने से कुछ ऊपर तक धोए फिर बायां पाऊं इसी त़रह़ तीन दफ़्अ़ धोए। फिर बाएं हाथ की छुंगलिया से दोनों पैरों की उंगिलयों का इस त़रह़ ख़िलाल करे कि पैर की दाहिनी छुंगलिया से शुरूअ़ करे और बाईं छुंगलिया पर ख़त्म करे। वुज़ू कर लेने के बा'द एक मरतबा येह दुआ़ पढ़े : اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِیْ مِنَ التَّوَّابِیْنَ وَاجْعَلْنِیْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِیْنَ और खड़े हो कर वुज़ू का बचा हुवा पानी थोड़ा सा पी ले कि येह बीमारियों से शिफ़ा है। बेहतर येह है कि वुज़ू में हर उ़ज़्व को धोते हुए بِسْمِ اللّٰه पढ़ लिया करे और दुरूद शरीफ़ व कलिमए शहादत भी पढ़ता रहे और येह भी बहुत बेहतर है कि वुज़ू पूरा कर लेने के बा'द आस्मान की त़रफ़ मुंह कर के سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَ بِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ)

(درمختار مع ردالمحتار، کتاب الطهارة، مطلب فی بیان ارتقاء الحدیث الضعیف ۔۔۔ الخ، ج۱، ص۲۷۵)

और **सूरए इन्ना अन ज़लना** पढ़े मगर इन दुआ़ओं का पढ़ना ज़रूरी नहीं। पढ़ ले तो अच्छा और षवाब है, न पढ़े तो कोई ह़रज नहीं।

ऊपर जो कुछ बयान हुवा है येह वुज़ू करने का त़रीक़ा है लेकिन याद रखो कि वुज़ू में कुछ चीजें ऐसी हैं कि जिन के छूटने या इन में कुछ कमी हो जाने से वुज़ू न होगा और कुछ बातें सुन्नत हैं कि जिन को अगर छोड़ दिया जाए तो गुनाह होगा। और कुछ चीज़ें मुस्तह़ब हैं कि इन के छोड़ देने से वुज़ू का षवाब कम हो जाता है। चुनान्चे नीचे हम इन चीज़ों का बयान लिखते हैं। इन को पढ़ कर ख़ूब याद कर लो।

वुज़ू के फ़राइज़ :- वुज़ू में चार चीजे़ं फ़र्ज़ हैं।
﴾1﴿ पूरे चेहरे का एक बार धोना। ﴾2﴿ एक एक बार दोनों हाथों का कोहनियों समेत धोना। ﴾3﴿ एक एक बार चौथाई सर का मस्ह़ करना या'नी गीला हाथ सर पर फैर लेना। ﴾4﴿ एक बार टख़्नों समेत दोनों पेरों को धोना।

(پ٦،المائدۃ:٦،الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب الاول فی الوضوء،الفصل الاول فی فرائض الوضوء، ج١،ص٥٣)

मस्अला :- वुज़ू या ग़ुस्ल में किसी उ़ज़्व को धोने का मत़लब येह है कि जिस उ़ज़्व को धोओ उस के हर हिस्से पर कम से कम दो बूंद पानी बह जाए अगर कोई हिस्सा भीग तो गया मगर उस पर पानी नहीं बहा तो वुज़ू या ग़ुस्ल नहीं होगा। बहुत से लोग बदन पर पानी डाल कर हाथ फिरा कर बदन पर पानी चुपड़ लेते हैं और समझ लेते हैं कि बदन धुल गया। येह ग़लत़ त़रीक़ा है। बदन पर हर जगह पानी का कम से कम दो बूंद बह जाना ज़रूरी है।

(درمختار،مع ردالمحتار،کتاب الطھارۃ، باب ارکان الوضوء الاربعۃ،مطلب فی الفرض القطعی والظنی، ج١،ص٢١٧۔٢١٨)

और मस्ह़ करने का येह मत़लब है कि गीला हाथ फैर लिया जाए। सर के मस्ह़ में बा'ज़ जाहिलों का येह त़रीक़ा है कि मस्ह़ के लिये हाथों में पानी ले कर इस को चूमते हैं। फिर मस्ह़ करते हैं। येह एक लग़्व काम है मस्ह़ में गीला हाथ सर पर फैर लेना चाहिये।

(ردالمحتار، کتاب الطھارۃ،مطلب فی معنی الاشتقاق و تقسیمہ الی ثلثۃ اقسام...الخ، ج١،ص٢٢٢)

वुज़ू की सुन्नतें :- वुज़ू में सोलह चीजे़ं सुन्नत हैं। ﴾1﴿ वुज़ू की निय्यत करना ﴾2﴿ بِسْمِ اللّٰہ पढ़ना ﴾3﴿ पहले दोनों हाथों को तीन दफ़्अ़ा धोना ﴾4﴿ मिस्वाक करना ﴾5﴿ दाहिने हाथ से तीन मरतबा कुल्ली करना। ﴾6﴿ दाहिने हाथ से तीन मरतबा नाक में पानी चढ़ाना। ﴾7﴿ बाएं हाथ से नाक साफ़ करना ﴾8﴿ दाढ़ी का उंगलियों से ख़िलाल करना ﴾9﴿ हाथ पाऊं की उंगलियों का ख़िलाल करना ﴾10﴿ हर उ़ज़्व को तीन तीन बार

धोना ﴾11﴿ पूरे सर का एक बार मस्ह़ करना ﴾12﴿ तरतीब से वुज़ू करना ﴾13﴿ दाढ़ी के जो बाल मुंह के दाइरे के नीचे हैं इन पर गीला हाथ फिरा लेना ﴾14﴿ आ'ज़ा को लगातार धोना कि एक उ़ज़्व सूखने से पहले ही दूसरे उ़ज़्व को धो ले ﴾15﴿ कानों का मस्ह़ करना ﴾16﴿ हर मकरूह बात से बचना। (الفتاوی الهندیۃ، کتاب الطھارۃ، الفصل الثانی فی سنن الوضوء، ج۱،ص۶۔۸)

वुज़ू के मुस्तह़ब्बात :- वुज़ू में जो चीजें मुस्तह़ब हैं इन की ता'दाद बहुत ज़ियादा है जिन में से कुछ ज़िमनन वुज़ू के त़रीक़े में ज़िक्र हो चुकीं। बाक़ी को अगर तफ़्सील के साथ जानना हो तो बड़ी किताबों मषलन हमारे उस्ताद ह़ज़रते सदरुश्शरीअ़ा मौलाना अमजद अ़ली साहि़ब क़िब्ला رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की किताब "बहारे शरीअ़त" का मुत़ालअ़ा कीजिये।

बहर ह़ाल चन्द मुस्तह़ब्बात येह है ﴾1﴿ जो आ'ज़ा जोड़े हैं मषलन दोनों हाथ दोनों पाऊं तो इन में दाहिने से धोने की इब्तिदा करें मगर दोनों रुख़्सारे कि इन दोनों को एक ही साथ धोना चाहिये। यूं ही दोनों कानों का एक ही साथ मस्ह़ होना चाहिये ﴾2﴿ उंगलियों की पीठ से गर्दन का मस्ह़ करना ﴾3﴿ ऊंची जगह बैठ कर वुज़ू करना ﴾4﴿ वुज़ू का पानी पाक जगह गिराना ﴾5﴿ अपने हाथ से वुज़ू का पानी भरना ﴾6﴿ दूसरे वक़्त के लिये पानी भर कर रख देना ﴾7﴿ बिला ज़रूरत वुज़ू करने में दूसरे से मदद न लेना ﴾8﴿ ढीली अंगूठी को भी फिरा लेना ﴾9﴿ साहि़बे उ़ज़्र न हो तो वक़्त से पहले वुज़ू कर लेना ﴾10﴿ इत़्मीनान से वुज़ू करना ﴾11﴿ कानों के मस्ह़ के वक़्त उंगलियां कान के सूराख़ों में दाख़िल करना ﴾12﴿ कपड़ों को टपकते हुए क़त़रात से बचाना ﴾13﴿ वुज़ू का बरतन मिट्टी का हो ﴾14﴿ अगर तांबे वग़ैरा का हो तो क़ल्लई किया हुवा हो ﴾15﴿ अगर वुज़ू का बरतन लोटा हो तो बाईं त़रफ़ रखें

﴾16﴿ अगर लोटे में दस्ता लगा हुवा हो तो दस्ते को तीन बार धो लें और ﴾17﴿ हाथ दस्ते पर रखें लोटे के मुंह पर हाथ न रखें ﴾18﴿ हर उ़ज़्व को धो कर इस पर हाथ फैर देना ताकि क़त्ऱे बदन या कपड़े पर न टपकें ﴾19﴿हर उ़ज़्व को धोते हुए दिल में वुज़ू की निय्यत का ह़ाज़िर रहना ﴾20﴿हर उ़ज़्व को धोते वक़्त بِسْمِ اللّٰه और दुरूद शरीफ़ व कलिमए शहादत पढ़ना ﴾21﴿ हर उ़ज़्व को धोते वक़्त अलग अलग उ़ज़्व के धोने की दुआ़ओं को पढ़ते रहना ﴾22﴿आ'ज़ाए वुज़ू को बिला ज़रूरत पौंछ कर खुश्क न करे और अगर पौंछे तो कुछ नमी बाक़ी रहने दे ﴾23﴿ वुज़ू कर के हाथ न झटके कि येह शैत़ान का पंखा है ﴾24﴿ वुज़ू के बा'द अगर मकरूह वक़्त न हो तो दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ ले इस को तह़िय्यतुल वुज़ू कहते हैं । (الفتاوی الهندیة، کتاب الطهارة،الفصل الثالث فی المستحبات الوضوء، ج ۱،ص ۸-۹)

वुज़ू के मकरूहात :- वुज़ू में इक्कीस बातें मकरूह हैं । या'नी येह चीज़ें वुज़ू में न होनी चाहियें । ﴾1﴿ औ़रत के वुज़ू या ग़ुस्ल के बचे हुए पानी से वुज़ू करना ﴾2﴿ वुज़ू के लिये नजिस जगह पर बैठना ﴾3﴿ नजिस जगह वुज़ू का पानी गिराना ﴾4﴿ मस्जिद के अन्दर वुज़ू करना ﴾5﴿ वुज़ू के आ'ज़ा से वुज़ू के बरतन में क़त्ऱे टपकाना ﴾6﴿ पानी में खंकार या थूक डालना ﴾7﴿ क़िब्ला की त़रफ़ थूकना या खंकार डालना ﴾8﴿ बिला ज़रूरत दुन्या की बात करना ﴾9﴿ ज़रूरत से ज़ियादा पानी ख़र्च करना ﴾10﴿ इस क़दर कम पानी ख़र्च करना कि सुन्नत अदा न हो ﴾11﴿ मुंह पर पानी मारना ﴾12﴿ मुंह पर पानी डालते वक़्त फूंकना ﴾13﴿ सिर्फ़ एक हाथ से मुंह धोना ﴾14﴿ होंट या आंखों को ज़ोर से बन्द कर के मुंह धोना ﴾15﴿ ह़ल्क़ और गले का मस्ह़ करना ﴾16﴿ दाएं हाथ से कुल्ली करना या नाक में पानी डालना ﴾17﴿ दाहिने हाथ से नाक साफ़ करना ﴾18﴿ अपने लिये कोई वुज़ू का बरतन मख़्सूस कर लेना ﴾19﴿ तीन नए

नए पानियों से तीन दफ़्अ़ा सर का मस्ह़ करना ﴾20﴿ जिस कपड़े पर इस्तिन्जा का पानी ख़ुश्क किया हो उस से वुज़ू के आ'ज़ा पोंछना ﴾21﴿ धूप में गर्म होने वाले पानी से वुज़ू करना इन के इ़लावा हर सुन्नत को छोड़ना मकरूह है।

मस्अला :- वुज़ू न हो तो नमाज़ व सजदए तिलावत और क़ुरआन शरीफ़ छूने के लिये वुज़ू करना फ़र्ज़ है और ख़ानए का'बा के त़वाफ़ के लिये वुज़ू वाजिब है। (الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ،الفصل الثالث فی المستحبات الوضوء، ج۱،ص۹)

मस्अला :- जुनुब को खाने पीने सोने के लिये वुज़ू कर लेना सुन्नत है इसी त़रह़ अज़ान व इक़ामत व ख़ुत़बए जुमुआ़ व ई़दैन और रौज़ए मुबारके रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم की ज़ियारत के वक़्त, वुक़ूफ़े अ़रफ़ा और सफ़ा व मरवा के दरमियान सअ़्य के लिये वुज़ू कर लेना सुन्नत है।

(ردالمحتار،کتاب الطھارۃ، مطلب فی اعتبارات المرکب التام، ج۱،ص۲۰٦)

मस्अला :- सोने के लिये, सोने के बा'द, मय्यित को नहलाने या उठाने के बा'द, जिमाअ़ से पहले, ग़ुस्सा आ जाने के वक़्त, ज़बानी क़ुरआन शरीफ़ पढ़ने, इ़ल्मे ह़दीष और दूसरे दीनी उ़लूम पढ़ने पढ़ाने के लिये या दीनी किताबें छूने के लिये, शर्मगाह छूने या काफ़िर के बदन छू जाने या सलीब या बुत छू जाने के बा'द, झूट बोलने, ग़ीबत करने और हर गुनाह के बा'द तौबा करते वक़्त, किसी औ़रत के बदन से अपना बदन बे पर्दा छू जाने से या कोढ़ी और बरस वाले का बदन छू जाने से, बग़ल खुजाने और ऊंट का गोश्त खाने के बा'द, इन सब सूरतों में वुज़ू कर लेना मुस्तह़ब है। (ردالمحتار،کتاب الطھارۃ، مطلب فی اعتبارات المرکب التام، ج۱،ص۲۰٦)

वुज़ू तोड़ने वाली चीज़ें :- ﴾1﴿ पेशाब या पाख़ाना करना ﴾2﴿ पेशाब या पाख़ाना के रास्तों से किसी भी चीज़ या पाख़ाना के रास्ते से हवा का निकलना ﴾3﴿ बदन के किसी ह़िस्से या किसी मक़ाम से ख़ून या पीप

निकल कर ऐसी जगह बहना कि जिस का वुज़ू या गुस्ल में धोना फ़र्ज़ है ﴾4﴿ खाना पानी या ख़ून या पित की मुंह भर कर कै़ हो जाना ﴾5﴿ इस त़रह़ सो जाना के बदन के जोड़ ढीले पड़ जाएं ﴾6﴿ बे होश हो जाना ﴾7﴿ ग़शी त़ारी हो जाना ﴾8﴿ किसी चीज़ का इस ह़द तक नशा चढ़ जाना कि चलने में क़दम लड़ खड़ाएं ﴾9﴿ दुखती हुई आंख से पानी का कीचड़ निकलना ﴾10﴿ रुकूअ़ व सजदे वाली नमाज़ में क़ह्क़हा लगा कर हंसना। (الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ،الفصل الخامس فی نواقض الوضوء، ج۱، ص۹۔۱۳/ بہارشریعت،ج۱،ح۲،ص۲٤)

मस्अला :- वुज़ू के बा'द किसी का सित्र देख लिया या अपना सित्र खुल गया या खुद बिल्कुल नंगे हो कर वुज़ू किया या नहाने के वक़्त नंगे ही नंगे वुज़ू किया तो वुज़ू नहीं टूटा। येह जो जाहिलों में मशहूर है कि अपना सित्र खुल जाने या दूसरे का सित्र देख लेने से वुज़ू टूट जाता है। येह बिल्कुल ग़लत़ है हां अलबत्ता येह वुज़ू के आदाब में से है कि नाफ़ से ज़ानू के नीचे तक सब सित्र छुपा हुवा हो बल्कि इस्तिन्जा के बा'द फ़ौरन ही छुपा लेना चाहिये क्यूंकि बिग़ैर ज़रूरत सित्र खुला रहना मन्अ़ है और दूसरे के सामने सित्र खोलना ह़राम है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ،الباب الاول،الفصل الخامس فی نواقض الوضوء، ج۱، ص۱۳)

मस्अला :- अगर नाक साफ़ की उस में से जमा हुवा ख़ून निकला तो वुज़ू नहीं टूटा और अगर बहता हुवा ख़ून निकला तो वुज़ू टूट गया।

(ردالمحتار،کتاب الطھارۃ،مطلب نواقض الوضوء،ج۱،ص۲۹۲)

मस्अला :- छाला नोच डाला अगर इस में का पानी बह गया तो वुज़ू टूट गया और अगर पानी नहीं बहा तो वुज़ू नहीं टूटता।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ،الفصل الخامس فی نواقض الوضوء، ج۱، ص۱۱)

मस्अला :- कान में तेल डाला था और एक दिन बा'द वोह तेल कान या नाक से निकला तो वुज़ू नहीं टूटा।

मस्अला :- ज़ख़्म पर गढ़ा पड़ गया और इस में से कुछ तरी चमकी मगर बही नहीं तो वुज़ू नहीं टूटा।

(الفتاوی الهندیة ، کتاب الطهارة،الفصل الخامس في نواقض الوضوء، ج١، ص١٠)

मस्अला :- खटमल, मच्छर, मख्खी, पिस्सू ने ख़ून चूसा तो वुज़ू नहीं टूटा। (الفتاوی الهندیة ، کتاب الطهارة،الفصل الخامس في نواقض الوضوء، ج١، ص١١)

मस्अला :- क़ै में सिर्फ़ कैचवा गिरा तो वुज़ू नहीं टूटा।

(درمختار،کتاب الطهارة،باب ارکان الوضو اربعة، ج١،ص٢٨٨)

और अगर इस के साथ कुछ पानी वग़ैरा भी निकला तो देखेंगे मुंह भर है या नहीं अगर मुंह भर हो तो वुज़ू टूट जाएगा और अगर भर मुंह से कम हो तो वुज़ू नहीं टूटेगा।

(الفتاوی الهندية، کتاب الطهارة،الباب الاول،الفصل الثاني، ج١،ص١١)

मस्अला :- वुज़ू करने के दरमियान अगर वुज़ू टूट गया तो फिर शुरूअ़ से वुज़ू करे यहां तक कि अगर चुल्लू में पानी लिया और हवा ख़ारिज हो गई तो येह चुल्लू का पानी बेकार हो गया। इस पानी से कोई उ़ज़्व न धोए। बल्कि दूसरे पानी से फिर से वुज़ू करे। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 1 स. 255-256)

मस्अला :- दुखती हुई आंख, दुखती हुई छाती, दुखते हुए कान से जो पानी निकले वोह नजिस है और इस से वुज़ू टूट जाता है।

(درمختار، کتاب الطهارة،مطلب في ندب مراعاة الخلاف اذا لم يرتكب مكروه مذهبه، ج١،ص٣٠٥)

मस्अला :- किसी के थूक में ख़ून नज़र आया तो अगर थूक का रंग ज़र्दी माइल है तो वुज़ू नहीं टूटा। अगर थूक सुर्ख़ी माइल हो गया तो वुज़ू टूट गया। (درمختار، کتاب الطهارة،مطلب نواقض الوضوء، ج١،ص٢٩١-٢٩٢)

मस्अला :- वुज़ू के बा'द नाखुन या बाल कटाया तो वुज़ू नहीं टूटा न वुज़ू को दोहराने की ज़रूरत है। न नाखुन को धोने और न सर को मस्ह करने की ज़रूरत है। (الفتاوی الهندیة، کتاب الطهارة، الباب الاول، الفصل الاول، ج١، ص٤)

मस्अला :- अगर वुज़ू करने की हालत में किसी उ़ज़्व के धोने में शक हुवा हो और येह ज़िन्दगी का पहला वाक़िआ़ है तो उस उ़ज़्व को धो ले और अगर इस क़िस्म का शक पड़ा करता है तो इस की त़रफ़ कोई तवज्जोह न करे। यूं ही अगर वुज़ू पूरा हो जाने के बा'द शक पड़ जाए तो इस का कुछ ख़याल न करे।

(الدرالمختار، کتاب الطهارة، مطلب فی ندب مراعاة الخلاف...الخ، ج١، ص٣٠٩۔٣١٠)

मस्अला :- जो बा वुज़ू था अब उसे शक है कि वुज़ू है या टूट गया तो उस को वुज़ू करने की ज़रूरत नहीं। हां वुज़ू कर लेना बेहतर है जब कि येह शुबा बतौ़रे वस्वसा न हुवा करता हो और अगर वस्वसे से ऐसा शुबा हो जाया करता हो तो इस शुबे को हरगिज़ न माने। इस सूरत में एह़तियात़ समझ कर वुज़ू करना एह़तियात़ नहीं बल्कि वस्वसे की इत़ाअ़त है।

(الدرالمختار، کتاب الطهارة، مطلب فی ندب مراعاة الخلاف...الخ، ج١، ص٣٠٩۔٣١٠)

मस्अला :- अगर बे वुज़ू था। अब उसे शक है कि मैं ने वुज़ू किया या नहीं तो वोह यक़ीनन बिला वुज़ू है। उस को वुज़ू करना ज़रूरी है।

(الدرالمختار، کتاب الطهارة، مطلب فی ندب مراعاة الخلاف...الخ، ج١، ص٣١٠)

मस्अला :- येह याद है कि वुज़ू में कोई उ़ज़्व धोने से रह गया मगर मा'लूम नहीं कि वोह कौन सा उ़ज़्व था तो बायां पाऊं धो ले।

(ردالمحتار، کتاب الطهارة، باب ارکان الوضوء اربعة، ج١، ص٣١٠)

मस्अला :- शीर ख़्वार बच्चे ने क़ै की और दूध डाल दिया अगर वोह मुंह भर क़ै है तो नजिस है, दिरहम से ज़ियादा जगह में जिस चीज़ को लग जाए नापाक कर देगा लेकिन अगर येह दूध मे'दे से नहीं आया बल्कि सीने तक पहुंच कर पलट आया है तो पाक है।

(ردالمحتار مع درمختار، کتاب الطہارۃ،مطلب نواقض الوضوء،ج ۱،ص ۲۹۰)

मस्अला :- सोते में जो राल मुंह से गिरे अगर्चे पेट से आए, अगर्चे वोह बदबू दार हो पाक है। (درمختار، کتاب الطہارۃ،مطلب نواقض الوضوء،ج ۱،ص ۲۹۰)

मस्अला :- मुर्दे के मुंह से जो पानी बहे नापाक है।

(درمختار، کتاب الطہارۃ،مطلب نواقض الوضوء،ج ۱،ص ۲۹۰)

मस्अला :- मुंह से इतना ख़ून निकला कि थूक सुर्ख़ हो गया। अगर लोटे या कटोरे को मुंह लगा कर कुल्ली को पानी लिया। तो लोटा, कटोरा और कुल पानी नजिस हो जाएगा चूल्लू से पानी ले कर कुल्ली करे और फिर हाथ धो कर कुल्ली के लिये पानी ले।

(درمختاروردالمحتار، کتاب الطہارۃ،مطلب نواقض الوضوء،ج ۱،ص ۲۹۱)

ग़ुस्ल के मसाइल

गुस्ल में तीन चीज़ें फ़र्ज़ है। अगर इन में से किसी एक को छोड़ दिया या इन में से किसी में कोई कमी कर दी तो ग़ुस्ल नहीं होगा।

(درمختاروردالمحتار، کتاب الطہارۃ،مطلب فی ابحاث الغسل ،ج ۱،ص ۳۱۱)

《1》 **कुल्ली :-** कि मुंह के पुर्ज़े पुर्ज़े में पानी पहुंच जाए फ़र्ज़ है या'नी होंट से हल्क़ की जड़ तक पूरे तालू, दांतों की जड़, ज़बान के नीचे, ज़बान की करवटें ग़रज़ मुंह के अन्दर के पुर्ज़े पुर्ज़े के ज़र्रे ज़र्रे में पानी पहुंच कर बह जाए। अकषर लोग येह जानते हैं कि थोड़ा सा पानी मुंह में डाल कर उगल देने को कुल्ली कहते हैं। याद रखो कि ग़ुस्ल में इस त़रह़ कुल्ली कर लेने से ग़ुस्ल नहीं होगा बल्कि ग़ुस्ल में फ़र्ज़ है कि

भरमुंह पानी ले कर ख़ूब ज़ियादा मुंह को ह़रकत दें ताकि मुंह के अन्दर हर हर ह़िस्से में पानी पहुंच जाए। अगर रोज़ादार न हो तो ग़ुस्ल की कुल्ली में ग़र-ग़रा भी करे हां रोज़े की ह़ालत में ग़र-ग़रा न करे कि ह़ल्क़ के अन्दर पानी चले जाने का ख़त़रा है।

(درمختارو ردالمحتار، کتاب الطهارة،مطلب في ابحاث الغسل ،ج ۱،ص ۳۱۲)

﴾2﴿ **नाक में पानी चढ़ाना :-** ग़ुस्ल में इस त़रह़ नाक में पानी चढ़ाना फ़र्ज़ है कि सांस ऊपर को खींच कर नाक के नथनों में जहां तक नर्म ह़िस्सा है उस के अन्दर पानी चढ़ाए कि नथनों के अन्दर हर जगह और हर त़रफ़ पानी पहुंच कर बह जाए और नाक के अन्दर की खाल या एक बाल भी सूखा न रह जाए वरना ग़ुस्ल नहीं होगा।

(درمختارو ردالمحتار، کتاب الطهارة،مطلب في ابحاث الغسل ،ج ۱،ص ۳۱۲)

﴾3﴿ **तमाम बदन पर पानी बहाना :-** या'नी सर के बालों से पाऊं के तलवों तक बदन के आगे पीछे दाएं बाएं, ऊपर नीचे, हर हर ज़र्रे, हर हर रोंगटे और हर एक बाल के पूरे पूरे ह़िस्से पर पानी बहाना ग़ुस्ल में फ़र्ज़ है। बा'ज़ लोग सर पर पानी डाल कर बदन पर इधर उधर हाथ फिरा लेते हैं और पानी बदन पर पोत लेते हैं और समझते हैं कि ग़ुस्ल हो गया। ह़ालांकि बदन के बहुत से ऐसे ह़िस्से हैं कि अगर एह़तियात़ के साथ ग़ुस्ल में इन का ध्यान न रखा जाए तो वहां पानी नहीं पहुंचता और वोह सूखा ही रह जाता है। याद रखो कि इस त़रह़ नहाने से ग़ुस्ल नहीं होगा और आदमी नमाज़ पढ़ने के क़ाबिल नहीं होगा। लिहाज़ा ज़रूरी है कि ग़ुस्ल करते वक़्त ख़ास त़ौर पर इन चन्द जगहों पर पानी पहुंचाने का ध्यान रखें। सर और दाढ़ी मूंछ भऊं के एक एक बाल और बदन के हर हर रोंगटे की जड़ से नोक तक धुल जाने का ख़याल रखें। इसी त़रह़ कान

का जो हि़स्सा नज़र आता है इस की गिरारियों और सूराख़। इसी त़रह़ ठोड़ी और गले का जोड़, पेट की बल्टें, बग़लें, नाफ़ के ग़ार, रान और पेडू का जोड़, जंगासा, दोनों सुरीनों के मिलने की जगह, ज़कर और ख़ुसियों के मिलने की जगह, ख़ुसियों के नीचे की जगह, औ़रत के ढलके हुए पिस्तान के नीचे का हि़स्सा, औ़रत की शर्मगाह का हर हि़स्सा इन सब को ख़याल से पानी बहा बहा कर धोएं ताकि हर जगह पानी पहुंच कर बह जाए।

(درمختار وردالمحتار، کتاب الطہارۃ،مطلب فی ابحاث الغسل، ج۱،ص ۳۱۲/ بہار شریعت، ج۱، ح۲،ص ۳۵)

ग़ुस्ल का त़रीक़ा :- ग़ुस्ल करने का त़रीक़ा येह है कि निय्यत या'नी दिल में नहाने का इरादा कर के पहले गिट्टों तक दोनों हाथों को तीन मरतबा धोए फिर इस्तिन्जा की जगह को धोए ख़्वाह नजासत लगी हो या न हो। फिर बदन पर अगर कहीं नजासत लगी हो तो इस को भी धोए। इस के बा'द वुज़ू करे। कुल्ली करने और नाक में पानी चढ़ाने में ख़ूब मुबालग़ा करे। फिर हाथ से पानी ले ले कर सारे बदन पर हाथ फिरा फिरा कर बदन को मले। ख़ुसूसन जाड़ों में ताकि बदन का कोई हि़स्सा पानी बहने से न रह जाए फिर दाहिने कन्धे पर तीन बार पानी बहाए फिर तीन बार बाएं कन्धे पर पानी बहाए फिर सर पर और पूरे बदन पर तीन बार पानी बहाए और तमाम बदन के हर हर हि़स्से को ख़ूब मल मल कर धोए और अच्छी त़रह़ ध्यान रखे कि कहीं ज़र्रा बराबर बदन की खाल या कोई रोंगटा और बाल पानी बहने से न रह जाए।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 1 स. 448-450)

ज़रूरी तम्बीह :- बहुत से लोग ऐसा करते हैं कि नजिस तहबन्द बांध कर ग़ुस्ल करते हैं और येह ख़याल करते हैं कि नहाने में नापाक तहबन्द और बदन सब पाक हो जाएगा हांलाकि ऐसा नहीं बल्कि पानी डाल कर

तहबन्द और बदन पर हाथ फैरने से तहबन्द की नजासत और ज़ियादा फैलती है और सारे बदन बल्कि नहाने के बरतन तक को नजिस कर देती है इस लिये नहाने में लाज़िम है कि पहले बदन को और उस कपड़े को जिस को पहन कर नहाते हैं धो कर पाक कर लें वरना ग़ुस्ल तो क्या होगा इस तर हाथ से जिन चीज़ों को छूएंगे वोह भी नापाक हो जाएंगी। और सारा बदन और तहबन्द भी नापाक ही रह जाएगा।

मस्अला :- ग़ुस्ल में सर के बाल गुंधे हुए न हों तो हर बाल पर जड़ से नोक तक पानी बहाना ज़रूरी है और अगर गुंधे हुए हों तो मर्द पर फ़र्ज़ है कि इन को खोल कर जड़ से नोक तक हर बाल पर पानी बहाए और औरत पर सिर्फ़ बाल की जड़ों को तर कर लेना ज़रूरी है गुंधे हुए बालों को खोलना ज़रूरी नहीं। हां अगर चोटी इतनी सख़्त गुंधी हुई हो कि बे खोले जड़ें तर न होंगी तो चोटी को खोलना ज़रूरी है।

(درمختار وردالمحتار، کتاب الطھارۃ،مطلب فی ابحاث الغسل، ج ۱،ص ۳۱۵_۳۱۶)

मस्अला :- ग़ुस्ल में कानों की बालियों और नाक की कील के सूराख़ों में बालियों और कील को फिरा कर पानी पहुंचाना ज़रूरी है।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 1 स. 448)

किन किन चीज़ों से ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो जाता है :-

जिन चीज़ों से ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो जाता है वोह पांच हैं।

《1》 मनी का अपनी जगह से शहवत के साथ जुदा हो कर निकलना। 《2》 एह्तिलाम या'नी सोते में मनी निकल जाना 《3》 ज़कर के सर का औरत के आगे या पीछे या मर्द के पीछे दाख़िल होना दोनों पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ कर देता है 《4》 हैज़ का ख़त्म हो जाना 《5》 निफ़ास से फ़ारिग़ होना।

(الفتاوی الھندیۃ،کتاب الطھارۃ،الباب الثانی فی الغسل، الفصل الثالث فی المعانی الموجبۃ للغسل وھی ثلاثۃ،ج ۱،ص ۱۴_۱۶)

मस्अला :– जुमुआ, ईद, बक़र ईद, अ़रफ़े के दिन और एह़राम बांधते वक़्त ग़ुस्ल कर लेना सुन्नत है।

(الفتاوی الهندیة کتاب الطهارة، الباب الثانی فی الغسل، الفصل الثالث فی المعانی الموجبة للغسل، ج۱، ص۱٦)

मस्अला :– मैदाने अ़रफ़ात और मुज़्दलिफ़ा में ठहरने, ह़रमे का'बा और रौज़ए मुनव्वर की ह़ाज़िरी, त़वाफ़े का'बा, मिना में दाख़िल होने, जमरों को कंकरियां मारने के लिये ग़ुस्ल कर लेना मुस्तह़ब है। इसी त़रह़ शबे क़द्र, शबे बराअत, अ़रफ़े की रात में, मुर्दा नहलाने के बा'द, जुनून और ग़शी से होश में आने के बा'द, गुनाह से तौबा करने के लिये, नमाज़े इस्तिस्क़ा के लिये, ग्रहन के वक़्त नमाज़ के लिये, ख़ौफ़, तारीकी, आंधी के वक़्त इन सब सूरतों में ग़ुस्ल कर लेना मुस्तह़ब है।

(درمختار و ردالمحتار، کتاب الطهارة، مطلب یوم عرفة افضل من یوم الجمعة، ج۱ ص۳٤۱۔۳٤۲)

मस्अला :– जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो उस को बिग़ैर नहाए ﴾1﴿ मस्जिद में जाना ﴾2﴿ त़वाफ़ करना ﴾3﴿ क़ुरआने मजीद का छूना ﴾4﴿ क़ुरआन शरीफ़ का पढ़ना ﴾5﴿ किसी आयत को लिखना ह़राम है और फ़िक़्ह व ह़दीष और दूसरी दीनी किताबों का छूना मकरूह है मगर आयत की जगहों पर इन किताबों में भी हाथ लगाना ह़राम है।

(درمختار و ردالمحتار، کتاب الطهارة، مطلب یطلق الدعاء علی مایشمل الثناء، ج۱ ص۳٤٦۔۳٥٦)

मस्अला :– दुरूद शरीफ़ और दुआ़ओं के पढ़ने में कोई ह़रज नहीं मगर बेहतर है कि वुज़ू या कुल्ली कर ले। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि. 2, स. 43)

मस्अला :– ग़ुस्ल ख़ाने के अन्दर अगर्चे छत न हो नंगे बदन नहाने में कोई ह़रज नहीं। हां, औ़रतों को बहुत एह़तियात़ की ज़रूरत है मगर नंगे नहाए तो क़िब्ले की त़रफ़ मुंह न करे और अगर तहबन्द बांधे हुए हो तो नहाते वक़्त क़िब्ला की त़रफ़ मुंह करने में कोई ह़रज नहीं।

(مراقی الفلاح، کتاب الطهارة، فصل آداب الغسل، ص۲٥)

मस्अला :- औ़रतों को बैठ कर नहाना बेहतर है । मर्द खडे हो कर नहाए या बैठ कर दोनों में कोई ह़रज नहीं ।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि़. 2, स. 37)

मस्अला :- ग़ुस्ल के बा'द फ़ौरन कपड़े पहन ले । देर तक नंगे बदन न रहे । (बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि़. 2, स. 37)

मस्अला :- जिस त़रह़ मर्दों को मर्दों के सामने सित्र खोल कर नहाना ह़राम है इसी त़रह़ औ़रतों को भी औ़रतों के सामने सित्र खोल कर नहाना जाइज़ नहीं क्यूंकि दूसरों के सामने बिला ज़रूरत सित्र खोलना ह़राम है ।

(ردالمحتار، کتاب الطہارۃ،مطلب فی ابحاث الغسل،ج۱،ص۳۱۸/بہارِشریعت،ج۱،ح۲،ص۳۸)

मस्अला :- जिस पर ग़ुस्ल वाजिब है उसे चाहिये कि नहाने में ताख़ीर न करे बल्कि जल्द से जल्द ग़ुस्ल करे क्यूंकि ह़दीष शरीफ़ में है जिस घर में जुनुब या'नी ऐसा आदमी हो जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ है उस घर में रह़मत के फ़िरिश्ते नहीं आते और अगर ग़ुस्ल करने में इतनी देर कर चुका कि नमाज़ का आख़िर वक़्त आ गया तो अब फ़ौरन नहाना फ़र्ज़ है । अब ताख़ीर करेगा तो गुनाहगार होगा । (बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि़. 2, स. 42)

मस्अला :- जिस शख़्स पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ है अगर वोह खाना खाना चाहता है या औ़रत से जिमाअ़ करना चाहता है तो उस को चाहिये कि वुज़ू कर ले या कम से कम हाथ मुंह धो ले और कुल्ली करे और अगर वैसे ही खा पी लिया तो गुनाह नहीं मगर मकरूह है और मोह़ताजी लाता है और बे नहाए या बे वुज़ू किये जिमाअ़ कर लिया तो भी कुछ गुनाह नहीं मगर जिस शख़्स को एह़तिलाम हुवा हो उस को बे नहाए औ़रत के पास नहीं जाना चाहिये ।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطہارۃ،الباب الثانی فی الغسل، الفصل الثالث فی المعانی الموجبۃ۔۔۔الخ،ج۱،ص۱٦)

तयम्मुम का बयान

अगर किसी वजह से पानी के इस्ति'माल पर क़ुदरत न हो तो वुज़ू और ग़ुस्ल दोनों के लिये तयम्मुम कर लेना जाइज़ है। मषलन ऐसी जगह हो कि वहां चारों त़रफ़ एक मील तक पानी का पता न हो या पानी तो क़रीब ही में हो मगर दुश्मन या दरिन्दा जानवर के ख़ौफ़ या किसी दूसरी वजह से पानी न ले सकता हो। पानी के इस्ति'माल से बीमारी बढ़ जाने का अन्देशा और गुमाने ग़ालिब हो तो इन सूरतों में बजाए वुज़ू और ग़ुस्ल के तयम्मुम करने का एक ही त़रीक़ा है।

(الفتاوی الہندیۃ، کتاب الطہارۃ،الباب الرابع فی التیمم،الفصل الاول،ج ۱،ص ۲۷_۲۸)

तयम्मुम का त़रीक़ा :– तयम्मुम का त़रीक़ा येह है कि بِسْمِ اللّٰہِ पढ़ कर पहले दिल में तयम्मुम की निय्यत करे और ज़बान से येह भी कह दे कि نَوَیْتُ اَنْ اَتَیَمَّمَ تَقَرُّبًا اِلَی اللّٰہِ تَعَالٰی फिर दोनों हाथों की उंगलियों को कुशादा कर के ज़मीन या दीवार पर दोनों हाथों को मारे फिर दोनों हाथों को पूरे चेहरे पर इस त़रह़ फिराए कि जहां तक वुज़ू में चेहरा धोना फ़र्ज़ है पूरे चेहरे पर हर जगह हाथ फिर जाए। अगर बुलाक़ या नथ पहने हो तो इस को हटा कर इस के नीचे की खाल पर हाथ फिराए फिर दोबारा दोनों हाथों को ज़मीन या दीवार पर मार कर अपने दाहिने हाथ को बाएं हाथ पर और बाएं हाथ को अपने दाएं हाथ पर रख कर दोनों हाथों पर कोहनियों समेत हाथ फिराए और जहां तक वुज़ू में दोनों हाथों का धोना फ़र्ज़ है वहां तक हाथ के हर हिस्से पर हाथ फिर जाए। अगर हाथों में चूड़ियां या कोई ज़ेवर पहने हुए हो तो ज़ेवर को हटा कर इस के नीचे की खाल पर हाथ फिराए। अगर चेहरा और दोनों हाथ पर बाल बराबर जगह पर भी हाथ नहीं फिराया तो तयम्मुम नहीं होगा इस लिये ख़ास तौर पर इस का ध्यान रखना चाहिये कि चेहरे और दोनों हाथों पर हर जगह हाथ फिराए।

(الفتاوی الہندیۃ، کتاب الطہارۃ الباب الرابع فی التیمم، الفصل الاول فی امور لابدمنہا فی التیمم، ج ۱،ص ۲۵_۲۶)

तयम्मुम के फ़राइज़ :- तयम्मुम में तीन चीज़ें फ़र्ज़ हैं ।
﴾1﴿ तयम्मुम की निय्यत ﴾2﴿ पूरे चेहरे पर हाथ फिराना ﴾3﴿ कोहनियों समेत दोनों हाथों पर हाथ फिराना ।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الطهارة الباب الرابع فی التیمم، الفصل الاول فی امور لا بدمنها ...الخ،الاستنجاء،ج ۱،ص ۲۵-۲۶)

तयम्मुम की सुन्नतें :- दस चीज़ें तयम्मुम में सुन्नत हैं ।
﴾1﴿ بِسْمِ اللّٰہ पढ़ना ﴾2﴿ हाथों का ज़मीन पर मारना ﴾3﴿ हाथों को ज़मीन पर मार कर अगर ग़ुबार ज़ियादा लग गया हो तो झाड़ना ﴾4﴿ ज़मीन पर हाथ मार कर हाथों को लौट देना ﴾5﴿ पहले मुंह पर हाथ फिराना ﴾6﴿ फिर हाथों पर हाथ फिराना ﴾7﴿ चेहरा और हाथों पर लगातार हाथ फिराना । ऐसा न हो कि चेहरे पर हाथ फिरा कर फिर देर के बा'द हाथों पर हाथ फिराए ﴾8﴿ पहले दाएं फिर बाएं हाथों पर हाथ फिराना ﴾9﴿ उंगलियों से दाढ़ी का ख़िलाल करना ﴾10﴿ उंगलियों का ख़िलाल करना जब कि इन में ग़ुबार भर गया हो । (درمختار مع ردالمحتار، کتاب الطهارة، باب التیمم، ج ۱،ص ۴۳۷-۴۳۹)

मस्अला :- मिट्टी, रैत, पथ्थर, गैरू वग़ैरा हर उस चीज़ से तयम्मुम हो सकता है, जो ज़मीन की जिन्स से हो । लोहा, पीतल, कपड़ा, रांगा, तांबा, लकड़ी वग़ैरा से तयम्मुम नहीं हो सकता जो ज़मीन की जिन्स से नहीं हैं । याद रखो कि जो चीज़ आग से जल कर न राख होती है न पिघलती है वोह ज़मीन की जिन्स है, जैसे मिट्टी वग़ैरा और जो चीज़ आग से जल कर राख हो जाए या पिघल जाए वोह ज़मीन की जिन्स से नहीं, जैसे लकड़ी और सब धातें ।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الطهارة، الباب الرابع فی التیمم، الفصل الاول فی امور لا بد...الخ، ج ۱ ،ص ۲۶)

मस्अला :- राख से तयम्मुम जाइज़ नहीं ।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الطهارة، الباب الرابع فی التیمم، الفصل الاول فی امور لا بد...الخ، ج ۱ ،ص ۲۷)

मस्अला :- गच की दीवार और पक्की ईंट से तयम्मुम जाइज़ है अगर्चे इन पर ग़ुबार न हो इसी त़रह़ मिट्टी पथ्थर वग़ैरा पर भी ग़ुबार हो या न हो बहर ह़ाल तयम्मुम जाइज़ है ।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الطهارة، الباب الرابع فی التیمم، الفصل الاول ،ج ۱ ،ص ۲۶-۲۷)

मस्अला :- मस्जिद में सोया था और नहाने की ह़ाजत हो गई तो फ़ौरन ही तयम्मुम कर के जल्द मस्जिद से निकल जाए।

(ردالمحتار، کتاب الطہارۃ، باب التیمم، ج۱،ص۴۵۸)

मस्अला :- किसी वजह से नमाज़ का वक़्त इतना तंग हो गया कि अगर वुज़ू करे तो नमाज़ क़ज़ा हो जाएगी तो चाहिये कि तयम्मुम कर के नमाज़ पढ़ ले। फिर लाज़िम है कि वुज़ू कर के इस नमाज़ को दोहराए।

(ردالمحتار، کتاب الطہارۃ، باب التیمم، ج۱،ص ۴۶۱۔۴۶۲)

मस्अला :- अगर पानी मौजूद हो तो क़ुरआने मजीद को छूने या सजदए तिलावत के लिये तयम्मुम करना जाइज़ नहीं बल्कि वुज़ू करना ज़रूरी है।

(درمختارو ردالمحتار،کتاب الطہارۃ،باب التیمم، ج۱،ص۴۵۸)

मस्अला :- जिस जगह से एक शख़्स ने तयम्मुम किया उसी जगह से दूसरा भी तयम्मुम कर सकता है।

(الفتاوی الھندیۃ،کتاب الطہارۃ ، الباب الرابع فی التیمم، الفصل الثالث فی المتفرقات، ج۱،ص۳۱)

मस्अला :- अ़वाम में जो येह मशहूर है कि मस्जिद की दीवार या ज़मीन से तयम्मुम नाजाइज़ या मकरूह है येह ग़लत़ है मस्जिद की दीवार और ज़मीन पर भी तयम्मुम बिला कराहत जाइज़ है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि. 2, बयाने तयम्मुम, स. 70)

मस्अला :- तयम्मुम के लिये हाथ ज़मीन पर मारा और चेहरा और हाथों पर हाथ फिराने से पहले ही तयम्मुम टुटने का कोई सबब पाया गया तो इस से तयम्मुम नहीं कर सकता बल्कि इस को लाज़िम है कि दोबारा हाथ ज़मीन पर मारे।

(الفتاوی الھندیۃ،کتاب الطہارۃ، الباب الرابع فی التیمم، الفصل الاول، ج۱،ص۲۶)

मस्अला :- जिन चीज़ों से वुज़ू टूटता है या ग़ुस्ल वाजिब होता है इन से तयम्मुम भी जाता रहेगा। और इन के इ़लावा पानी के इस्ति'माल पर क़ादिर हो जाने से भी तयम्मुम टूट जाएगा।

(الفتاوی الھندیۃ،کتاب الطہارۃ، الباب الرابع فی التیمم، الفصل الثانی،ج۱،ص۲۹)

इस्तिन्जा का बयान

जब इस्तिन्जा ख़ाने में दाख़िल होना चाहे तो

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَآئِثِ

(صحیح مسلم، کتاب الطهارة، ٣٢،باب ما یقول اذا اراد دخول الخلاء،رقم٣٧٥،ص١٩٩)

पढ़ कर पहले बायां क़दम रखे और निकलते वक़्त पहले दाहिना पाऊं निकाले और غُفْرَانَكَ पढ़े।

(سنن الترمذی، کتاب الطهارة،مایقول اذا خرج من الخلاء،رقم٧، ج١، ص٨٧)

पेशाब के बा'द इस्तिन्जा का येह त़रीक़ा है कि पहले पाक मिट्टी या पथ्थर या फटे पुराने कपड़े ले कर पेशाब की जगह को सुखा ले और अगर क़त़रा आने का शुबा हो तो कुछ टहल ले या खांस कर या पाऊं ज़मीन पर मार कर कोशिश करें कि रुका हुवा क़त़रा बाहर निकल पड़े फिर पानी से पेशाब की जगह धो डाले और पाख़ाने के बा'द इस्तिन्जा करने का येह त़रीक़ा है कि पहले चन्द ढेलों या पथ्थरों से पाख़ाना की जगह को पौंछ कर साफ़ करे फिर पानी से अच्छी त़रह़ धो ले।

मस्अला :- ढेला और पानी दोनों बाएं हाथ से इस्ति'माल करे। दाहिने हाथ से इस्तिन्जा न करे।

(الفتاوی الھندیة، کتاب الطهارة، الباب السابع فی النجاسة واحکامها، الفصل الثالث فی الاستنجاء، ج١، ص٤٨۔٤٩)

मस्अला :- ढेला इस्ति'माल करने के बा'द पानी से भी धो लेना येह इस्तिन्जा का मुस्तह़ब त़रीक़ा है वरना सिर्फ़ ढेला और सिर्फ़ पानी से भी इस्तिन्जा कर लेना जाइज़ है।

(الفتاوی الھندیة، کتاب الطهارة، الباب السابع فی النجاسة واحکامها، الفصل الثالث فی الاستنجاء، ج١، ص٤٨)

मस्अला :- खाने की चीज़ें, काग़ज़, हड्डी, गोबर, कोइला और जानवरों के चारे से इस्तिन्जा करना मन्अ़ है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب السابع فی النجاسۃ، الفصل الثالث، ج ۱، ص ۵۰)

मस्अला :- पेशाब पाख़ाना करते वक़्त क़िब्ला की त़रफ़ मुंह या पीठ करना जाइज़ नहीं है। हमारे मुल्क में उत्तर या दख्खन की जानिब मुंह करना चाहिये। (الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب السابع فی النجاسۃ، الفصل الثالث، ج ۱، ص ۵۰)

मस्अला :- तालाब या नदी के घाट पर, कुंवें या हौज़ के कनारे, पानी में अगर्चे बहता हुवा पानी हो, फल वाले या सायादार दरख़्त के नीचे, ऐसे खेत में जिस में खेती मौजूद हो, क़ब्रिस्तान में, बीच सड़क और रास्तों पर, जानवरों के बांधने या बैठने की जगहों पर और जहां लोग वुज़ू या ग़ुस्ल करते हों और जिस जगह पर लोग उठते बैठते हों। इन सब जगहों पर पेशाब पाख़ाना करना मन्अ़ है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب السابع فی النجاسۃ واحکامھا، الفصل الثالث فی الاستنجاء، ج ۱، ص ۵۰)

मस्अला :- पेशाब पाख़ाना लोगों की निगाहों से छुप कर या किसी चीज़ की आड़ में बैठ कर करना चाहिये। जहां लोगों की नज़र सित्र पर पड़े पेशाब, पाख़ाना करना मन्अ़ है।

मस्अला :- वुज़ू के बचे हुए पानी से इस्तिन्जा नहीं करना चाहिये।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि. 2, स. 115)

मस्अला :- बच्चे को पाख़ाना, पेशाब फिराने वाले को मकरूह है कि उस बच्चे का मुंह या पीठ क़िब्ला की त़रफ़ कर दे। औ़रतें इस त़रफ़ तवज्जोह नहीं करतीं। इन्हें लाज़िम है कि इस का ख़याल रखें।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب السابع فی النجاسۃ واحکامھا، الفصل الثالث فی الاستنجاء، ج ۱، ص ۵۰)

मस्अला :- खड़े हो कर या लैट कर या नंगे हो कर पेशाब करना मकरूह है। (الفتاوی الهندیة، کتاب الطهارة، الباب السابع فی النجاسة واحکامها، الفصل الثالث فی الاستنجاء، ج۱، ص ۵۰)

यूंही नंगे सर पेशाब, पाख़ाना को जाना या अपने हमराह ऐसी चीज़ ले जाना जिस पर कोई दुआ या अल्लाह व रसूल या किसी बुज़ुर्ग का नाम लिखा हो ममनूअ़ है इसी त़रह़ पेशाब पाख़ाना करते हुए बात चीत करना भी मकरूह है। (बहारे शरीअ़त, जि.1 हि. 2, स. 112)

(الفتاوی الهندیة، کتاب الطهارة، الباب السابع فی النجاسة واحکامها، الفصل الثالث فی الاستنجاء، ج۱، ص ۵۰)

मस्अला :- पेशाब पाख़ाना करते वक़्त अज़ान होने लगे तो ज़बान से अज़ान का जवाब न दे। इसी त़रह़ अगर ख़ुद छींके तो ज़बान से اَلْحَمْدُ لِله न कहे दिल में कह ले। इसी त़रह़ किसी ने छींक कर اَلْحَمْدُ لِله कहा तो ज़बान से يرحمك الله कह कर छींक का जवाब न दे बल्कि दिल ही दिल में يرحمك الله कह दे। (الفتاوی الهندیة، کتاب الطهارة، الباب السابع، الفصل الثالث، ج۱، ص ۵۰)

पानी का बयान

जिन जिन पानियों से वुज़ू जाइज़ है उन से ग़ुस्ल भी जाइज़ है और जिन जिन पानियों से वुज़ू नाजाइज़ है उन से ग़ुस्ल भी नाजाइज़ है।

किन किन पानियों से वुज़ू जाइज़ है ? :- बारिश, नदी, नाले, चश्मे, कुंवें, तालाब, समुन्दर, बर्फ़, ओले, के पानियों से वुज़ू और ग़ुस्ल जाइज़ है। बशर्ते़ कि येह सब पानी पाक हों।

(درمختار، کتاب الطهارة، باب المیاه، ج۱، ص ۳۵۷۔۳۵۸)

किन पानियों से वुज़ू जाइज़ नहीं ? :- फलों और दरख़्तों का निचोड़ा हुवा पानी या वोह पानी जिस में कोई पाक चीज़ मिल गई और पानी का नाम बदल गया जैसे पानी में शकर मिल गई और वोह शरबत कहलाने

लगा या पानी में चन्द मसाले मिल गए और वोह शोरबा कहलाने लगा। या बड़े हौज़ और तालाब में कोई नापाक चीज़ इस क़दर ज़ियादा पड़ गई कि पानी का रंग या बू या मज़ा बदल गया या छोटे हौज़ या बालटी या घड़े में कोई नापाक चीज़ पड़ गई या कोई ऐसा जानवर गिर कर मर गया जिस के बदन में बहता हुवा ख़ून होता है। अगर्चे पानी का रंग या बू या मज़ा न बदला हो या वोह पानी जो वुज़ू या ग़ुस्ल का धोवन हो इन सब पानियों से वुज़ू और ग़ुस्ल करना जाइज़ नहीं।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب الثالث فی المیاہ، الفصل الثانی فی مالایجوز بہ الوضوء، ج۱ ص۲۱)

मस्अला :- पानी में अगर कोई ऐसा जानवर मर गया हो जिस में बहता हुवा ख़ून नहीं होता जैसे मख्खी, मच्छर, भेड़, शहद की मख्खी, बिच्छू, बरसाती कीड़े मकोड़े तो इन जानवरों के मरने से पानी नापाक नहीं होता और इस पानी से वुज़ू और ग़ुस्ल करना जाइज़ है।

(درمختار وردالمحتار، کتاب الطھارۃ، مطلب فی مسألۃ الوضوء من الفساقی، ج۱، ص۳٦٥ / الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب الثالث فی المیاہ، الفصل الثانی فی مالایجوز بہ الوضوء، ج۱، ص۲٤)

मस्अला :- अगर पानी में थोड़ा सा साबून मिल गया जिस से पानी का रंग बदल गया तो इस पानी से वुज़ू और ग़ुस्ल जाइज़ है लेकिन अगर इस क़दर ज़ियादा साबून पानी में घोल दिया गया कि पानी सत्तू की त़रह़ गाढ़ा हो गया तो इस पानी से वुज़ू और ग़ुस्ल करना जाइज़ नहीं होगा।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب الثالث فی المیاہ، الفصل الثانی، ج۱، ص۲۱)

मस्अला :- जो जानवर पानी ही में पैदा होते हैं और पानी ही में ज़िन्दगी बसर करते हैं जैसे मछलियां और पानी के मेंडक वग़ैरा इन के पानी में मर जाने से पानी नापाक नहीं होता बल्कि इस से वुज़ू और ग़ुस्ल जाइज़ है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب الثالث فی المیاہ، الفصل الثانی، ج۱، ص۲٤)

मस्अला :- दस हाथ लम्बा चोड़ा जो हौज़ हो उसे दह दर दह और **बड़ा हौज़** कहते हैं यूं ही बीस हाथ लम्बा पांच हाथ अ़र्ज़ (कुल लम्बाई चौड़ाई सो हाथ हो) और अगर गोल हो तो उस की गोलाई साढ़े पेंतीस हाथ हो। और अगर लम्बाई चौड़ाई सो हाथ न हो तो इस को छोटा हौज़ कहते हैं अगर्चे कितना ही गहरा हो बड़े हौज़ में अगर नजासत पड़ गई तो उस वक़्त तक पाक माना जाएगा जब तक इस नजासत के अषर से उस के पानी का रंग व बू या मज़ा न बदल जाए और छोटा हौज़ एक क़त़रा नजासत पड़ जाने से भी नापाक हो जाएगा।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा 2, स. 46-47)

मस्अला :- जो पानी वुज़ू या ग़ुस्ल करने में बदन से गिरा वोह पाक है मगर इस से वुज़ू और ग़ुस्ल जाइज़ नहीं। यूं ही अगर बे वुज़ू शख़्स का हाथ या उंगली या पोरा या नाखुन या बदन का कोई टुकड़ा जो वुज़ू में धोया जाता हो ब क़स्द या बिला क़स्द दह दर दह से कम पानी में बे धोए पड़ जाए तो वोह पानी वुज़ू और ग़ुस्ल के लाइक़ न रहा इसी त़रह़ जिस शख़्स पर नहाना फ़र्ज़ है उस के जिस्म का कोई बे धुला हुवा हिस्सा पानी से छू जाए तो पानी वुज़ू और ग़ुस्ल के काम का न रहा अगर धुला हुवा हाथ या बदन का कोई हिस्सा पानी में पड़ जाए तो कोई ह़रज नहीं।

(الفتاوی الهندية، كتاب الطهارة، الباب الثالث فی المياه، الفصل الثانی ، ج ١، ص ٢٢-٢٣)

मस्अला :- अगर हाथ धुला हुवा है। मगर फिर धोने की निय्यत से पानी में हाथ डाला और येह धोना षवाब का काम हो जैसे खाने के लिये या वुज़ू के लिये तो येह पानी मुस्ता'मल हो गया या'नी वुज़ू के क़ाबिल न रहा और इस का पीना भी मकरूह है।

(الفتاوی الهندية، كتاب الطهارة، الباب الثالث فی المياه، الفصل الثانی ، ج ١، ص ٢٣-٢٥ / بهارِ شريعت، ج ١، ح ٢، ص ٤٧)

इस मस्अले का ख़ास तौर पर ध्यान रखना चाहिये अ़वाम तो अ़वाम बा'ज़ ख़वास भी इस मस्अले से ग़ाफ़िल हैं।

मस्अला :- इतने ज़ोर से बहता हुवा पानी कि अगर उस में तिन्का डाला जाए तो इस को बहा ले जाए नजासत के पड़ने से नापाक नहीं होगा लेकिन इतनी ज़ियादा नजासत पड़ जाए कि वोह नजासत पानी के रंग या बू या मज़ा बदल दे तो इस सूरत में बहता हुवा पानी भी नापाक हो जाएगा और येह पानी उस वक़्त पाक होगा कि पानी का बहाव सारी नजासत को बहा ले जाए और पानी का रंग और बू, मज़ा ठीक हो जाए।

(الفتاوی الهندية، كتاب الطهارة، الباب الثالث في المياه، الفصل الثاني، ج١، ص١٧-١٨)

मस्अला :- तालाब और दस हाथ लम्बा दस हाथ चौड़ा हौज़ भी बहते हुए पानी के हुक्म में है कि येह भी थोड़ी सी नजासत पड़ जाने से नापाक नहीं होगा लेकिन जब इस में इतनी नजासत पड़ जाए कि पानी का रंग या बू या मज़ा बदल जाए तो नापाक हो जाएगा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि. 2, स. 47)

मस्अला :- नापाक पानी को खुद भी इस्ति'माल करना ह़राम है और जानवरों को भी पिलाना नाजाइज़ है हां गारे वग़ैरा के काम में ला सकते हैं मगर इस गारे मिट्टी को मस्जिद में लगाना जाइज़ नहीं।

मस्अला :- नापाक पानी बदन या कपड़े या जिस चीज़ में भी लग जाए वोह नापाक हो जाएगा। इस को जब तक पाक पानी से धो कर पाक न कर लें, पाक नहीं होगा।

मस्अला :- पानी में बिला धुला हुवा हाथ पड़ गया और किसी त़रह मुस्ता'मल हो गया और येह चाहें कि येह काम का हो जाए तो अच्छा पानी इस से ज़ियादा इस में मिला दें नीज़ इस का एक और त़रीक़ा येह भी है कि एक त़रफ़ से पानी डालें कि दूसरी त़रफ़ से बह जाए। सब काम का हो जाएगा यूं ही नापाक पानी को भी पाक कर सकते हैं।

(الفتاوی الهندية، كتاب الطهارة، الباب الثالث في المياه، الفصل الثاني، ج١، ص١٧)

मस्अला :– ना बालिग़ का भरा हुवा पानी कि शरअ़न उस की मिल्क हो जाए उसे पीना या वुज़ू या ग़ुस्ल या किसी काम में लाना उस के मां–बाप या जिस का वोह नोकर है उस के सिवा किसी को जाइज़ नहीं अगर्चे वोह इजाज़त भी दे दे। अगर इस से वुज़ू कर लिया तो वुज़ू हो जाएगा और गुनहगार होगा। यहां से मुअ़ल्लिमीन को सबक़ लेना चाहिये कि वोह अकषर नाबालिग़ बच्चों से पानी भरवा कर अपने काम में लाया करते हैं। याद रखना चाहिये कि नाबालिग़ का हिबा सह़ीह़ नहीं है। इसी त़रह़ किसी बालिग़ का भरा हुवा पानी भी बिग़ैर उस की इजाज़त के ख़र्च करना ह़राम है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि़. 2, स. 50/ फ़तावा रज़विय्या, जि. 2 स. 494)

जानवरों के जूठे का बयान

आदमी और जिन जानवरों का गोश्त ह़लाल है उन का जूठा पाक है जैसे भेड़, बकरी, गाए, भैंस, कबूतर, फ़ाख़ता वग़ैरा।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطہارۃ، الباب الثالث فی المیاہ، الفصل الثانی ،ج ۱،ص ۲۳)

जिन जानवरों का गोश्त नहीं खाया जाता जैसे सुवर, कुत्ता, शेर, चीता, भेड़िया, गीदड, हाथी, बन्दर और तमाम शिकारी चोपाए इन सभों का झूटा नापाक है। (درمختار مع ردالمحتار، کتاب الطہارۃ،مطلب فی السؤر،ج ۱،ص ۴۲۵)

घरों और बिलों मे रहने वाले जानवर मषलन बिल्ली, नेवला, चूहा, सांप, छिपकली, और शिकारी परन्दे जैसे चील, कव्वा, शकरा, बाज़ वग़ैरा और वोह मुर्ग़ी जो इधर उधर फिरती और नजासतों पर मुंह डालती हो और गाए भैंस जो ग़लीज़ खाती हो इन सब का झूटा मकरूह है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطہارۃ، الباب الثالث فی المیاہ، الفصل الثانی ،ج ۱،ص ۲۳.۲۴)

गधे और ख़च्चर का झूटा मश्कूक है या'नी इस के क़ाबिले वुज़ू होने में शक है लिहाज़ा इस से वुज़ू और ग़ुस्ल नहीं हो सकता। लेकिन अगर गधे ख़च्चर के झूटे के सिवा कोई दूसरा पानी मौजूद ही न हो और

नमाज़ का वक़्त आ गया तो चाहिये कि इसी पानी से वुज़ू करे और फिर तयम्मुम कर के नमाज़ पढ़ ले अगर सिर्फ़ वुज़ू किया और तयम्मुम नहीं किया या सिर्फ़ तयम्मुम किया और वुज़ू नहीं किया तो नमाज़ न होगी घोड़े का झूटा पाक है। इस से वुज़ू और ग़ुस्ल जाइज़ है।

(الفتاوی الهندية، کتاب الطهارة، الباب الثالث فی المیاه، الفصل الثانی ،ج ١،ص ٢٣.٢٤)

मस्अला :- जिस जानवर का झूटा नापाक है उस का पसीना और लुआ़ब भी नापाक है और जिस जानवर का झूटा मकरूह है उस का पसीना और लुआ़ब भी मकरूह है और जिस का झूटा पाक है उस का पसीना और लुआ़ब भी पाक है।

(ردالمحتار، کتاب الطهارة، مطلب ست تورث النسیان، ج ١، ص ٤٣٢)

मस्अला :- गधे और ख़च्चर का पसीना अगर कपड़े में लग जाए तो कपड़ा पाक है चाहे कितना ही ज़ियादा लगा हो।

(ردالمحتار، کتاب الطهارة، مطلب ست تورث النسیان، ج ١، ص ٤٣٣)

मस्अला :- पानी में रहने वाले तमाम जानवरों का झूटा पाक है ख़्वाह इन की पैदाइश पानी में हो जैसे मछली वग़ैरा या ख़ुश्की में हो जैसे कछवा, केकड़ा वग़ैरा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि़. 2, स. 99)

मस्अला :- किसी के मुंह से इतना ख़ून निकला कि थूक में सुर्ख़ी आ गई और उस ने फ़ौरन पानी पिया तो येह झूटा पानी और बरतन दोनों नापाक हो गए। यूं ही किसी ने शराब पी कर फ़ौरन पानी पिया तो उस का झूटा पानी नजिस हो गया और बरतन भी नापाक हो गया।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि़. 2, स. 55)

मस्अला :- शराबी की मूंछें अगर बड़ी हों कि शराब मूंछों में लगी हो तो जब तक वोह मूंछों को पाक न करे जो पानी पियेगा वोह पानी और बरतन दोनों नापाक हो जाएंगे।

(الفتاوی الهندية، کتاب الطهارة، الباب الثالث فی المیاه، الفصل الثانی، ج ١، ص ٢٣)

कुंवें के मसाइल

कुंवें में किसी आदमी या जानवर का पाख़ाना, पेशाब या मुर्ग़ी या बत्ख़ की बीट या ख़ून या ताड़ी शराब वग़ैरा किसी नजासत का एक क़त्रा भी गिर पड़े या कोई भी नापाक चीज़ कुंवें में पड़ जाए तो कुंवां नापाक हो जाएगा उस का कुल पानी निकाला जाएगा।

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الطهارة، فصل فی البئر، ج١، ص٤٠٧۔٤٠٩)

मस्अला :- अगर कुंवें में आदमी, गाए, भैंस, बकरी या इतना ही बड़ा कोई जानवर गिर कर मर जाए या छोटे से छोटा बहने वाले ख़ून वाला जानवर कुंवें में मर कर फूल फट जाए या ऐसा जानवर जिस का झूटा नापाक है कुंवें में गिर पड़े अगर्चे ज़िन्दा निकल आए जैसे सुवर, कुत्ता तो इन सब सूरतों में कुंवां नापाक हो जाएगा और कुल पानी निकाला जाएगा।

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الطهارة، فصل فی البئر، ج١، ص٤٠٧۔٤١٠ والفتاوی القاضی خان، کتاب الطهارة، فصل فی مايقع فی البئر، ج١، ص٥)

मस्अला :- अगर बिल्ली या मुर्ग़ी या इतना ही जानवर कुंवें में गिर कर मर जाए और फूलने फटने से पहले निकाल लिया जाए तो चालीस डोल पानी निकालना वाजिब और साठ डोल पानी निकाल देना मुस्तहब है। इतना पानी निकाल देने से कुंवां पाक हो जाएगा।

(الفتاوی الهندية، کتاب الطهارة، الباب الثالث، الفصل الاول، النوع الثالث ماء الآبار، ج١، ص١٩)

मस्अला :- अगर चूहा, छिपकली, गिरगिट या इन के बराबर या इन से छोटा जानवर कुंवें में गिर कर मर जाए और फूलने फटने से पहले निकाल लिया जाए तो बीस डोल पानी निकालना वाजिब और तीस डोल पानी निकाल देना मुस्तहब है इस के बा'द कुंवां पाक हो जाएगा।

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الطهارة، فصل فی البئر، ج١، ص٤١١)

मस्अला :- जिन जानवरों का झूटा पाक है जैसे बकरी, गाए, भैंस वग़ैरा इन में से अगर कोई कुंवें में गिर पड़े और ज़िन्दा निकल आए और इन के जिस्म पर किसी नजासत का लगा होना मा'लूम न हो तो कुंवां पाक है लेकिन एह़तियात़न बीस डोल पानी निकाल डालें।

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الطھارۃ، فصل فی البئر، ج ۱، ص ۴۱۰)

मस्अला :- ह़लाल परन्दे जैसे कबूतर और गोरिया, मैना, मुर्ग़ाबी वग़ैरा ऊंचे उड़ने वाले परन्दों की बीट कुंवें में गिर जाए तो कुंवां नापाक नहीं होगा यूं ही चमगादड के पेशाब से भी कुंवां नापाक न होगा।

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الطھارۃ، فصل فی البئر،مطلب مھمٌّ: فی تعریف الاستحسان، ج ۱، ص ۴۲۱/ الفتاوی القاضی خان، کتاب الطھارۃ، فصل فی ما یقع فی البئر، ج ۱، ص ۶)

मस्अला :- येह जो हुक्म दिया गया है कि फ़ुलां फ़ुलां सूरत में इतना इतना पानी निकाला जाए तो इस का येह मत़लब है कि जो चीज़ कुंवें में गिरी है पहले उस को कुंवें में से निकाल लें फिर इतना पानी निकालें। अगर वोह चीज़ कुंवें ही में पड़ी रही तो कितना ही पानी निकालें बेकार है।

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الطھارۃ، فصل فی البئر، ج ۱، ص ۴۰۹)

मस्अला :- जहां इतने इतने डोल पानी निकालने का ज़िक्र आया है वहां डोल की गिनती उस डोल से की जाएगी जो डोल उस कुंवें पर इस्ति'माल होता रहा है और अगर उस कुंवें का कोई ख़ास डोल न हो तो इतना बड़ा डोल होना चाहिये कि जिस में सवा पांच किलो पानी आ जाए।

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الطھارۃ، فصل فی البئر، ج ۱، ص ۴۱۶)

मस्अला :- सालन, पानी या शरबत में अगर मख्खी गिर पड़े तो इस को ग़ोत़ा दे कर बाहर फैंक दें और सालन, पानी, शरबत को खा पी लें। ह़दीष शरीफ़ में है कि अगर खाने में मख्खी गिर पड़े तो इस को खाने में ग़ोत़ा दे कर मख्खी को फैंक दें फिर उस खाने को खाएं क्यूंकि मख्खी के

दो परों में से एक में बीमारी और दूसरे में उस की शिफ़ा है और मख्खी उस पर को खाने में पहले डालती है जिस में बीमारी होती है इस लिये ग़ोता दे कर दूसरा शिफ़ा वाला पर भी खाने में पहुंचा दे।

(مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الصید والذبائح، باب مایحل اکلہ وما یحرم، الفصل الثانی، رقم ۴۱۴۳۔۴۱۴۴، ج۲، ص۴۳۸)

मस्अला :- नापाक कुंवें में जिस सूरत में जितने पानी निकालने का हुक्म है जब इतना पानी निकाल लिया गया तो अब वोह डोल और रस्सी और कुंवें की दीवारें सब खुद ब खुद पाक हो गईं। किसी को धो कर पाक करने की ज़रूरत नहीं। (الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الطھارۃ، فصل فی البئر، ج۱، ص۴۰۹)

नजासतों का बयान

नजासत की दो क़िस्में है एक ग़लीज़ा (भारी नजासत) दूसरे ख़फ़ीफ़ा (हल्की नजासत) (الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب السابع، الفصل الثانی، ج۱، ص۴۵۔۴۶)

नजासते ग़लीज़ा :- जैसे पेशाब, पाख़ाना, बहता हुवा ख़ून, पीप, मुंह भर क़ै, दुखती हुई आंख की कीचड़ का पानी, दूध पीने वाले लड़के या लड़की का पेशाब, बच्चे ने जो मुंह भर कर क़ै की, मर्द या औ़रत की मनी, ह़राम जानवरों जैसे कुत्ता, शेर, सुवर वग़ैरा का पेशाब, पाख़ाना और घोड़े, गधे, ख़च्चर की लीद और ह़लाल जानवरों का पाख़ाना जैसे गाए, भैंस वग़ैरा का गोबर और ऊंट की मेंगनी मुर्ग़ी और बत़ख़ की बीट, हाथी के सूंड का पानी, दरिन्दा जानवरों का थूक, शराब, नशा दिलाने वाली ताड़ी, सांप का पाख़ाना, मुर्दार का गोश्त येह सब नजासते ग़लीज़ा हैं।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب السابع، الفصل الثانی، ج۱، ص۴۶)

नजासते ख़फ़ीफ़ा :- जैसे गाए, भैंस, भेड़, बकरी वग़ैरा ह़लाल जानवरों का पेशाब यूं ही घोड़े का पेशाब और ह़राम परन्दों की बीट येह सब नजासते ख़फ़ीफ़ा हैं।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الفصل الثانی فی الاعیان النجسۃ، ج۱، ص۴۵۔۴۶)

मस्अला :- नजासते ग़लीज़ा का हुक्म येह है कि अगर कपड़े या बदन में एक दिरहम से ज़ियादा लग जाए तो इस का पाक करना फ़र्ज़ है। बे पाक किये अगर नमाज़ पढ़ ली तो होगी ही नहीं और क़स्दन पढ़ी तो गुनाह भी हुवा। और अगर नमाज़ को ह़क़ीर चीज़ समझते हुए ऐसा किया तो कुफ़्र हुवा। और अगर दिरहम के बराबर है तो पाक करना वाजिब है कि बे पाक किये नमाज़ पढ़ी तो नमाज़ मकरूहे तह़रीमी हुई या'नी ऐसी नमाज़ को दोहरा लेना वाजिब है और क़स्दन पढ़ी तो गुनाहगार भी हुवा। और अगर दिरहम से कम है तो पाक करना सुन्नत है कि बे पाक किये नमाज़ हो गई मगर ख़िलाफ़े सुन्नत हुई। और इस नमाज़ को दोहरा लेना बेहतर है। (ردالمحتار، کتاب الطھارۃ، باب الانجاس، ج۱،ص ۵۷۱)

मस्अला :- नजासते ग़लीज़ा अगर गाढ़ी हो जैसे पाख़ाना, लीद, गोबर तो दिरहम के बराबर या कम ज़ियादा होने के मा'ना येह है कि वज़्न में दिरहम के बराबर या कम या ज़ियादा हो दिरहम का वज़्न साढ़े चार माशा है और अगर नजासते ग़लीज़ा पतली हो जैसे पेशाब और शराब वग़ैरा तो दिरहम से मुराद इस की लम्बाई चौड़ाई है और शरीअ़त ने दिरहम की लम्बाई चौड़ाई की मिक़दार हथेली की गहराई के बराबर बताई है। या'नी हथेली ख़ूब फैला कर हमवार रखें और इस पर आहिस्ता आहिस्ता इतना पानी डालें कि इस से ज़ियादा पानी रुक न सके। अब जितना पानी का फैलाव है। इतनी बड़ी दिरहम की लम्बाई चौड़ाई होती है। या'नी रूपे की लम्बाई चोड़ाई के बराबर।

(الدرالمختار و ردالمحتار، کتاب الطھارۃ، باب الانجاس، ج۱،ص ۵۷۳۔۵۷۴)

मस्अला :- नजासते ख़फ़ीफ़ा का हुक्म येह है कि कपड़े या बदन के जिस हिस्से में लगी है अगर उस की चौथाई से कम है मषलन आस्तीन में लगी है तो उस की चौथाई से कम में लगी। हाथ में हाथ की चौथाई

से कम लगी है तो मुआ़फ़ है (कि इस से नमाज़ हो जाएगी) और अगर पूरी चौथाई में लगी हो तो बिग़ैर धो कर पाक किये नमाज़ न होगी।

(الدرالمختار، کتاب الطھارۃ، باب الانجاس، ج۱، ص۵۷۸)

मस्अला :- जो नजासत कपड़े या बदन में लगी है उस को पाक करने का त़रीक़ा येह है कि अगर नजासत दल वाली हो। जैसे लीद, गोबर, पाख़ाना तो उस के धोने में कोई गिनती मुक़र्रर नहीं बल्कि इस नजासत को दूर करना ज़रूरी है अगर एक बार धोने से दूर हो जाए तो एक ही मरतबा धोने से बदन या कपड़ा पाक हो जाएगा और अगर चार पांच मरतबा धोने से दूर हो तो चार पांच मरतबा धोना पड़ेगा। हां अगर तीन मरतबा से कम में नजासत दूर हो जाए तो तीन बार धो लेना बेहतर है और अगर नजासत दलदार न हो बल्कि पतली हो, जैसे पेशाब वग़ैरा तो तीन मरतबा धोए और तीनों मरतबा क़ुव्वत के साथ निचोड़ने से कपड़ा पाक हो जाएगा। (الدرالمختار، کتاب الطھارۃ، باب الانجاس، ج۱، ص۵۹۳۔۵۹۴)

मस्अला :- नजासते ग़लीज़ा और ख़फ़ीफ़ा के जो अलग अलग हुक्म बताए गए हैं येह उसी वक़्त हैं कि बदन और कपड़े में नजासत लगी हो और अगर किसी पतली चीज़ दूध या सिरका या पानी में नजासत पड़ जाए तो चाहे नजासते ग़लीज़ा हो या ख़फ़ीफ़ा बहर ह़ाल पतली चीज़ नापाक हो जाएगी। अगर्चे एक ही क़त़रा नजासत पड़ गई।

(الدرالمختارمع ردالمحتار، کتاب الطھارۃ، باب فی الانجاس، مبحث: فی بول الفارۃ وبعرھا...الخ، ج۱، ص۵۷۹)

मस्अला :- नजासते ख़फ़ीफ़ा नजासते ग़लीज़ा में मिल जाए तो कुल नजासते ग़लीज़ा हो जाएगी। (الدرالمختار، کتاب الطھارۃ، باب الانجاس، ج۱، ص۵۷۷)

मस्अला :- ह़राम जानवरों का दूध नजिस है अलबत्ता घोड़ी का दूध पाक है मगर खाना जाइज़ नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि़. 2, स. 99)

मस्अला :- चूहे की मेंगनी गेहूं में मिल कर पिस गई या तेल में पड़ गई तो आटा और तेल पाक है हां अलबत्ता अगर इस क़दर ज़ियादा मेंगनियां पड़ गईं कि आटा और तेल का मज़ा बदल गया तो आटा तेल नापाक हो जाएगा। और इस का खाना जाइज़ नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि. 2, स. 100)

मस्अला :- आदमी का चमड़ा नाख़ुन के बराबर अगर थोड़े पानी (या'नी दह दर दह से कम) में पड़ जाए तो वोह पानी नापाक हो जाएगा और अगर आदमी का कटा हुवा नाख़ुन या बाल पानी में पड़ गया तो पानी नापाक नहीं होगा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि. 2, स. 101)

मस्अला :- नजिस जानवर नमक की कान में गिर कर नमक हो गया तो वोह नमक पाक व ह़लाल है।

(الدرالمختارمع ردالمحتار، كتاب الطهارة، مطلب العرقي الذى يستقطر من دردى الخمر...الخ،ج ١،ص٥٨٦)

मस्अला :- उपले की राख पाक है और अगर राख होने से क़ब्ल बुझ गया तो नापाक है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि. 2, स. 102)

मस्अला :- नापाक ज़मीन अगर सूख जाए और नजासत का अषर या'नी रंग व बू जाती रहे पाक हो गई ख़्वाह वोह हवा से सूखी हो या धूप या आग से उस ज़मीन पर नमाज़ पढ़ सकते हैं मगर उस ज़मीन से तयम्मुम नहीं कर सकते क्यूंकि तयम्मुम ऐसी ज़मीन से करना जाइज़ है जिस पर कभी भी नजासत न पड़ी हो।

(الدرالمختار، كتاب الطهارة، باب الانجاس، ج ١، ص ٥٦٣)

मस्अला :- नापाक मिट्टी से बरतन बनाए तो जब तक कच्चे हैं नापाक हैं। बा'द पुख़्ता कर लेने के पाक हो गए।

(الدرالمختار، كتاب الطهارة، باب الانجاس، ج ١، ص ٥٧١)

मस्अला :- जो चीज़ सूखने या रगड़ने से पाक हो गई इस के बा'द भीग गई तो नापाक न होगी। मषलन ज़मीन पर पेशाब पड़ गया फिर

ज़मीन सूख गई और नजासत का अषर ज़ाइल हो गया और वोह ज़मीन पाक हो गई। अब अगर वोह ज़मीन भीग गई तो नापाक नहीं होगी। यूंही अगर छुरी ख़ून लगने से नापाक हो गई और छुरी को ज़मीन पर ख़ूब रगड़ रगड़ कर ख़ून का अषर ज़ाइल कर दिया तो छुरी पाक हो गई अब अगर वोह छुरी भीग गई तो नापाक नहीं होगी। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि. 2, स. 107)

मस्अला :- जो ज़मीन गोबर से लीपी गई अगर्चे सूख गई हो उस पर नमाज़ जाइज़ नहीं। हां अगर वोह सूख गई और उस पर कोई मोटा कपड़ा बिछाया तो इस कपड़े पर नमाज़ पढ़ सकते हैं अगर्चे कपड़े में तरी हो मगर इतनी तरी न हो कि ज़मीन भीग कर इस को तर कर दे कि इस सूरत में येह कपड़ा नजिस हो जाएगा और नमाज़ न होगी।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि. 2, स. 109)

हैज़ व निफ़ास व जनाबत का बयान

बालिग़ा औ़रत के आगे के मक़ाम से जो ख़ून आ़दत के तौ़र पर निकलता है और बीमारी और बच्चा पैदा होने के सबब से न हो उस को हैज़ कहते हैं, और जो ख़ून बीमारी की वजह से आए, उस को इस्तिहाज़ा कहते हैं। और बच्चा होने के बा'द जो ख़ून आता है वो निफ़ास कहलाता है।

(نور الایضاح، کتاب الطهارت، باب الحیض والنفاس---الخ، ص ٤١)

मस्अला :- हैज़ की मुद्दत कम से कम तीन दिन और तीन रातें या'नी पूरे बहत्तर घन्टे है जो ख़ून इस से कम मुद्दत में बन्द हो गया वोह हैज़ नहीं बल्कि इस्तिहाज़ा है और हैज़ की मुद्दत ज़ियादा से ज़ियादा दस दिन और दस रातें हैं अगर दस दिन और दस रात से ज़ियादा ख़ून आया तो अगर येह हैज़ पहली मरतबा इसे आया है तो दस दिन तक हैज़ माना जाएगा इस के बा'द इस्तिहाज़ा है और अगर पहले इस औ़रत को हैज़ आ चुके हैं और इस की आ़दत दस दिन से कम थी तो आ़दत से जितना ज़ियादा हुवा वोह इस्तिहाज़ा है मिषाल के तौ़र पर येह समझो कि इस को हर

महीने में पांच दिन हैज़ आने की आ़दत थी अब की मरतबा दस दिन आया तो दस दिन हैज़ है और अगर बारह दिन ख़ून आया तो आ़दत वाले पांच दिन हैज़ के माने जाएंगे और सात दिन इस्तिह़ाज़ा के और अगर एक ह़ालत मुक़र्रर न थी बल्कि कभी चार दिन कभी पांच दिन हैज़ आया करता था तो पिछली मरतबा जितने दिन हैज़ के थे वोही अब भी हैज़ के माने जाएंगे। और बाक़ी इस्तिह़ाज़ा माना जाएगा।

(الدرالمختار، کتاب الطھارۃ، باب فی الحیض، ج۱، ص۵۲۳)

मस्अला :- कम से कम नव बरस की उ़म्र से औ़रत को हैज़ शुरूअ़ होगा। और हैज़ आने की इन्तिहाई उ़म्र पचपन साल है। इस उ़म्र वाली औ़रत को आइसा (हैज़ व अवलाद से नाउम्मीद होने वाली) कहते हैं। नव बरस की उ़म्र से पहले जो ख़ून आएगा वोह हैज़ नहीं बल्कि इस्तिह़ाज़ा है यूं ही पचपन बरस की उ़म्र के बा'द जो ख़ून आएगा वोह भी इस्तिह़ाज़ा है। लेकिन अगर किसी औ़रत को पचपन बरस की उ़म्र के बा'द भी ख़ालिस ख़ून बिल्कुल ऐसे ही रंग का आया जैसा कि हैज़ के ज़माने में आया करता था तो इस को हैज़ मान लिया जाएगा।

(الدرالمختار، کتاب الطھارۃ، باب فی الحیض، ج۱، ص۵۲٤)

मस्अला :- ह़म्ल वाली औ़रत को जो ख़ून आया वोह इस्तिह़ाज़ा है।

(الدرالمختار، کتاب الطھارۃ، باب فی الحیض، ج۱، ص۵۲٤)

मस्अला :- दो हैज़ों के दरमियान कम से कम पूरे पन्दरह दिन का फ़ासिला ज़रूरी है यूंही निफ़ास और हैज़ के दरमियान भी पन्दरह दिन का फ़ासिला ज़रूरी है तो अगर निफ़ास ख़त्म होने के बा'द पन्दरह दिन पूरे न हुए थे कि ख़ून आ गया तो येह हैज़ नहीं बल्कि इस्तिह़ाज़ा है।

(الدرالمختار، کتاب الطھارۃ، باب فی الحیض، ج۱، ص۵۲٤)

मस्अला :- हैज़ के छे रंग हैं। ﴾1﴿ सियाह ﴾2﴿ सुर्ख़ ﴾3﴿ सब्ज़ ﴾4﴿ ज़र्द ﴾5﴿ गदला ﴾6﴿ मटियाला, ख़ालिस सफ़ेद रंग की रुतूबत हैज़ नहीं।

(ردالمحتار، کتاب الطھارۃ، باب فی الحیض، ج۱، ص۵۳۰)

मस्अला :- निफ़ास की कम से कम कोई मुद्दत मुक़र्रर नहीं है बच्चा पैदा होने के बा'द आधा घन्टे बा'द भी ख़ून आया तो वोह निफ़ास है और निफ़ास की ज़ियादा से ज़ियादा मुद्दत चालीस दिन रात है।

(الفتاوی الھندیۃ،کتاب الطھارۃ،الفصل الثانی فی النفاس ، ج ۱،ص ۳۷ وفتح القدیر، کتاب الطھارۃ، باب فصل فی النفاس، ج ۱،ص ۱۸۸۔ ۱۹۰)

मस्अला :- किसी औ़रत को चालीस दिन से ज़ियादा ख़ून आया तो अगर औ़रत के पहली ही बार बच्चा पैदा हुवा है, या येह याद नहीं कि इस से पहले बच्चा पैदा होने में कितने दिन ख़ून आया था तो चालीस दिन रात निफ़ास है। बाक़ी इस्तिह़ाज़ा और जो पहली आ़दत मा'लूम हो तो आ़दत के दिनों में निफ़ास है और जो इस से ज़ियादा है वोह इस्तिह़ाज़ा है जैसे तीस दिन निफ़ास का ख़ून आने की आ़दत थी अगर अब की मरतबा पेंतालीस दिन ख़ून आया तो तीस दिन निफ़ास के माने जाएंगे और पन्दरह दिन इस्तिह़ाज़ा के होंगे।

(الفتاوی الھندیۃ،کتاب الطھارۃ،الفصل الثانی فی النفاس ، ج ۱،ص ۳۷)

ह़ैज़ व निफ़ास के अह़काम :- ह़ैज़ व निफ़ास की ह़ालत में नमाज़ पढ़ना और रोज़ा रखना ह़राम है। इन दिनों में नमाज़ें मुआ़फ़ हैं इन की क़ज़ा भी नहीं। अलबत्ता रोज़ों की क़ज़ा दूसरे दिनों में रखना फ़र्ज़ है और ह़ैज़ व निफ़ास वाली औ़रत को क़ुरआने मजीद पढ़ना ह़राम है ख़्वाह देख कर पढ़े या ज़बानी पढ़े। यूंही क़ुरआने मजीद का छूना भी ह़राम है। हां अगर जुज़्दान में क़ुरआने मजीद हो तो उस जुज़्दान को छूने में कोई ह़रज नहीं।

(الفتاوی الھندیۃ،کتاب الطھارۃ،الفصل الرابع فی احکام الحیض والنفاس والاستحاضۃ، ج ۱،ص ۳۸)

मस्अला :- क़ुरआने मजीद पढ़ने के इलावा दूसरे तमाम वज़ाइफ़ कलिमा शरीफ़ दुरूद शरीफ़ वग़ैरा ह़ैज़ व निफ़ास की ह़ालत में औ़रत बिला कराहत पढ़ सकती है बल्कि मुस्तह़ब है कि नमाज़ों के अवक़ात में

वुज़ू कर के इतनी देर तक दुरूद शरीफ़ और दूसरे वज़ाइफ़ पढ़ लिया करे जितनी देर में नमाज़ पढ़ सकती थी ताकि आ़दत बाक़ी रहे।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الفصل الرابع فی احکام الحیض و النفاس و الاستحاضۃ، ج۱، ص۳۸)

मस्अला :- है़ज़ व निफ़ास की हा़लत में हमबिस्तरी या'नी जिमाअ़ ह़राम है। बल्कि इस हा़लत में नाफ़ से घुटने तक औ़रत के बदन को मर्द अपने किसी उ़ज़्व से न छूए कि येह भी ह़राम है हां अलबत्ता नाफ़ से ऊपर और घुटने के नीचे इस हा़लत में औ़रत के बदन को बोसा देना जाइज़ है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الفصل الرابع فی احکام الحیض و النفاس و الاستحاضۃ، ج۱، ص۳۹)

मस्अला :- है़ज़ व निफ़ास की हा़लत में औ़रत को मस्जिद में जाना ह़राम है। हां अगर चोर या दरिन्दे से डर कर या किसी भी शदीद मजबूरी से मजबूर हो कर मस्जिद में चली जाए तो जाइज़ है मगर उस को चाहिये की तयम्मुम कर के मस्जिद में जाए।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الفصل الرابع فی احکام الحیض و النفاس و الاستحاضۃ، ج۱، ص۳۸)

मस्अला :- है़ज़ व निफ़ास वाली औ़रत अगर ईदगाह में दाखि़ल हो जाए तो कोई ह़रज नहीं।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الفصل الرابع فی احکام الحیض و النفاس و الاستحاضۃ، ج۱، ص۳۸)

मस्अला :- है़ज़ व निफ़ास की हा़लत में अगर मस्जिद के बाहर रह कर और हाथ बढ़ा कर मस्जिद से कोई चीज़ उठा ले या मस्जिद में कोई चीज़ रख दे तो जाइज़ है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि़. 2, स. 89)

मस्अला :- है़ज़ व निफ़ास वाली को ख़ानए का'बा के अन्दर जाना और इस का त़वाफ़ करना अगर्चे मस्जिदे ह़राम के बाहर से हो ह़राम है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الفصل الرابع فی احکام الحیض و النفاس و الاستحاضۃ، ج۱، ص۳۸)

मस्अला :- हैज़ व निफ़ास की ह़ालत में बीवी को अपने बिस्तर पर सुलाने में ग़लबए शहवत या अपने को क़ाबू में न रखने का अन्देशा हो तो शोहर के लिये लाज़िम है कि बीवी को अपने बिस्तर पर न सुलाए बल्कि अगर गुमाने ग़ालिब हो कि शहवत पर क़ाबू न रख सकेगा तो शोहर को ऐसी ह़ालत में बीवी को अपने साथ सुलाना ह़राम और गुनाह है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि. 2, स. 91)

मस्अला :- हैज़ व निफ़ास की ह़ालत में बीवी के साथ हमबिस्तरी को ह़लाल समझना कुफ़्र है और ह़राम समझते हुए कर लिया तो सख़्त गुनाहगार हुवा। उस पर तौबा फ़र्ज़ है। और अगर शुरूअ़ हैज़ व निफ़ास में ऐसा कर लिया तो एक दीनार और अगर क़रीब ख़त्म के किया तो निस्फ़ दीनार ख़ैरात करना मुस्तह़ब है ताकि ख़ुदा के ग़ज़ब से अमान पाए।

(الدرالمختار مع ردالمحتار، کتاب الطهارة، باب في الحيض، مطلب :لو افتى مفت بشئ من هذه الاقوال في مواضع الضرورة، ج ١، ص ٥٤٢ـ٥٤٣)

मस्अला :- रोज़े की ह़ालत में अगर हैज़ व निफ़ास शुरूअ़ हो गया तो वोह रोज़ा जाता रहा इस की क़ज़ा रखे। फ़र्ज़ था तो क़ज़ा फ़र्ज़ है और नफ़्ल था तो क़ज़ा वाजिब है।

(الفتاوى الهندية، کتاب الطهارة، الفصل الرابع فى احكام الحيض والنفاس والاستحاضة، ج ١، ص ٣٨)

मस्अला :- निफ़ास की ह़ालत में औ़रत को ज़च्चा ख़ाने से निकलना जाइज़ है यूंही हैज़ व निफ़ास वाली औ़रत को साथ खिलाने और उस का झूटा खाने में कोई ह़रज नहीं। पाकिस्तान में बा'ज़ जगह जाहिल औ़रतें हैज़ व निफ़ास वाली औ़रतों के बरतन अलग कर देती हैं बल्कि इन बरतनों और हैज़ व निफ़ास वाली औ़रतों को नजिस जानती हैं। याद रखो कि येह सब हिन्दूओं की रस्में हैं। ऐसी बेहूदा रस्मों से मुसलमान औ़रतों मर्दों को बचना लाज़िम है। अकषर औ़रतों में रवाज है कि जब तक चिल्ला पूरा न हो जाए अगर्चे निफ़ास का ख़ून बन्द हो चुका हो वोह न नमाज़ पढ़ती हैं न अपने को नमाज़ के क़ाबिल समझती हैं। येह भी

मह्ज़ जहालत है। शरीअ़त का हुक्म येह है कि जैसे ही निफ़ास का ख़ून बन्द हो उस वक़्त से नहा कर नमाज़ शुरूअ़ कर दें अगर नहाने से बीमारी का अन्देशा हो तो तयम्मुम कर के नमाज़ पढ़ें। नमाज़ हरगिज़ हरगिज़ न छोड़ें। (ردالمحتار، کتاب الطھارۃ، مطلب :لو افتی مفت ـــ الخ، ج ۱،ص ٥٣٤)

मस्अला :- हैज़ अगर पूरे दस दिन पर ख़त्म हुवा तो पाक होते ही उस से जिमाअ़ करना जाइज़ है अगर्चे अब तक ग़ुस्ल न किया हो लेकिन मुस्तह़ब येह है कि नहाने के बा'द सोह़बत करे।

(الفتاوی الھندیۃ،کتاب الطھارۃ،الفصل الرابع فی احکام الحیض والنفاس والاستحاضۃ، ج ۱،ص ۳۹)

मस्अला :- अगर दस दिन से कम में हैज़ बन्द हो गया तो ता वक़्ते कि ग़ुस्ल न करे या वोह वक़्ते नमाज़ जिस में पाक हुई न गुज़र जाए सोह़बत करना जाइज़ नहीं।

(الفتاوی الھندیۃ،کتاب الطھارۃ،الفصل الرابع فی احکام الحیض والنفاس والاستحاضۃ، ج ۱،ص ۳۹)

मस्अला :- हैज़ व निफ़ास की ह़ालत में सजदए तिलावत भी ह़राम है और सजदे की आयत सुनने से उस पर सजदा वाजिब नहीं।

(ردالمحتارمع الدرالمختار، کتاب الطھارۃ، باب فی الحیض،مطلب:لوافتی...الخ،ج ۱،ص ٥٣٢)

मस्अला :- रात को सोते वक़्त औ़रत पाक थी और सुब्ह़ को सो कर उठी तो हैज़ का अषर देखा तो उसी वक़्त से हैज़ का हुक्म दिया जाएगा। रात से ह़ाइज़ा नहीं मानी जाएगी।

(الدرالمختاروردالمحتار،کتاب الطھارۃ،باب فی الحیض، ج ۱،ص ٥٣٣)

मस्अला :- हैज़ वाली सुब्ह़ को सो कर उठी और गद्दी पर कोई निशान हैज़ का नहीं तो रात ही से पाक मानी जाएगी।

(الدرالمختاروردالمحتار،کتاب الطھارۃ،باب فی الحیض، ج ۱،ص ٥٣٣)

इस्तिह़ाज़ा के अह़काम :- इस्तिह़ाज़ा में न नमाज़ मुआ़फ़ है न रोज़ा। न ऐसी औ़रत से सोह़बत ह़राम। इस्तिह़ाज़ा वाली औ़रत नमाज़ भी पढ़ेगी। रोज़ा भी रखेगी। का'बा में भी दाख़िल होगी। त़वाफ़े का'बा भी

करेगी। कुरआन शरीफ़ की तिलावत भी कर सकेगी वुज़ू कर के कुरआन शरीफ़ को हाथ भी लगा सकेगी और इसी हालत में शोहर उस से हमबिस्तरी भी कर सकेगा।

(الدرالمختار، کتاب الطھارۃ ،باب فی الحیض، ج ۱ ،ص ۵٤٤)

जुनुब के अह़काम :- ऐसे मर्द और औ़रत को जिन पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो गया "जुनुब" कहते हैं और इस नापाकी की ह़ालत को "जनाबत" कहते हैं। जुनुब ख़्वाह मर्द हो या औ़रत जब तक ग़ुस्ल न करे वोह मस्जिद में दाखि़ल नहीं हो सकता। न कुरआन शरीफ़ पढ़ सकता है। न कुरआन देख कर तिलावत कर सकता है। न ज़बानी पढ़ सकता है। न कुरआने मजीद को छू सकता है न का'बा में दाखि़ल हो सकता है। न का'बा का त़वाफ़ कर सकता है।

(ردالمحتار مع الدرالمختار، کتاب الطھارۃ،مطلب یوم عرفۃ افضل، ج ۱، ص ۳٤۵۔۳٤٦)

मस्अला :- जुनुब को साथ खिलाने इस का झूटा खाने इस के साथ सलाम व मुसाफ़ह़ा और मुआ़नक़ा करने में कोई ह़रज नहीं।

मस्अला :- जुनुब को चाहिये कि जल्द से जल्द ग़ुस्ल करे क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि रह़मत के फ़िरिश्ते उस घर में नहीं जाते जिस घर में तस्वीर और कुत्ता और जुनुब हो।

(کنزالعمال، کتاب المعیشۃ والعادات، باب فرع فی محظورات البیت والبناء، رقم۷ ۱۵۵ ٤، ج۱۵، ص ۱۷۱)

इसी त़रह़ एक ह़दीष में येह भी आया है कि फ़िरिश्ते तीन शख़्सों से क़रीब नहीं होते। एक काफ़िर का मुर्दा, दूसरे ख़ुलूक़ (औ़रतों की रंगीन ख़ुश्बू) इस्ति'माल करने वाला, तीसरे जुनुब आदमी मगर येह की वुज़ू करे।

(سنن ابی داؤد، کتاب الترجل ،باب فی الخلوق للرجال،رقم ۴۱۸۰، ج٤، ص ۱۰۹)

मस्अला :– हैज़ व निफ़ास वाली औ़रत या ऐसे मर्द व औ़रत जिन पर गुस्ल फ़र्ज़ है अगर येह लोग कुरआन शरीफ़ की ता'लीम दें तो इन को लाज़िम है कि कुरआने मजीद के एक एक लफ़्ज़ पर सांस तोड़ तोड़ कर पढ़ाएं। मषलन इस त़रह़ पढ़ाए कि اَلْحَمْدُ पढ़ कर सांस तोड़ें फिर لِلّٰهِ पढ़ कर सांस तोड़ दें फिर رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ पढ़ें। एक सांस में पूरी आयत लगातार न पढ़ें और कुरआन शरीफ़ के अल्फ़ाज़ को हिज्जे कराने में भी कोई ह़रज नहीं।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الفصل الرابع فی احکام الحیض والنفاس والاستحاضۃ، ج۱،ص۳۸)

मस्अला :– कुरआने मजीद के इ़लावा और दूसरे वज़ीफ़े कलिमा शरीफ़ दुरूद शरीफ़ वग़ैरा को पढ़ना जुनुब के लिये बिला कराहत जाइज़ बल्कि मुस्तह़ब है। जैसे कि हैज़ व निफ़ास वाली औ़रत के लिये कुरआन शरीफ़ के इ़लावा दूसरे तमाम अज़्कार व वज़ाइफ़ पढ़ना जाइज़ व दुरुस्त बल्कि मुस्तह़ब है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الفصل الرابع فی احکام الحیض والنفاس، ج۱،ص۳۸)

मा'ज़ूर का बयान :– जिस शख़्स को कोई ऐसी बीमारी हो जैसे पेशाब के क़त़रे टपकने या दस्त आने। या इस्तिह़ाज़ा का ख़ून आने के अमराज़ कि एक नमाज़ का पूरा वक़्त गुज़र गया। और वोह वुज़ू के साथ नमाज़े फ़र्ज़ अदा न कर सका। तो ऐसे शख़्स को शरीअ़त में मा'ज़ूर कहते हैं। ऐसे लोगों के लिये शरीअ़त का येह हुक्म है कि जब किसी नमाज़ का वक़्त आ जाए तो मा'ज़ूर लोग वुज़ू करें और इसी वुज़ू से जितनी नमाज़ें चाहें पढते रहें। इस दरमियान में अगर्चे बारबार क़त़रा वग़ैरा आता है। मगर इन लोगों का वुज़ू उस वक़्त तक नहीं टूटेगा जब तक कि इस नमाज़ का वक़्त बाक़ी रहे। और जैसे ही नमाज़ का वक़्त ख़त्म हो गया इन लोगों का वुज़ू टूट जाएगा और दूसरी नमाज़ के लिये फिर दूसरा वुज़ू करना पड़ेगा।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب السادس، ومما یتصل بذلک احکام المعذور، ج۱،ص۴۰۔۴۱)

मस्अला :- जब कोई शख़्स शरीअ़त में मा'ज़ूर मान लिया गया तो जब तक हर नमाज़ के वक़्त एक बार भी उस का उ़ज़्र पाया जाता रहेगा वोह मा'ज़ूर ही रहेगा जब उस को इतनी शिफ़ा ह़ासिल हो जाए कि एक नमाज़ का पूरा वक़्त गुज़र जाए और उस को एक मरतबा भी क़त़रा वग़ैरा न आए तो अब येह शख़्स मा'ज़ूर नहीं माना जाएगा।

(الفتاوی الهندية، كتاب الطهارة، الباب السادس، ومما يتصل بذلك احكام المعذور، ج ۱، ص ٤١)

मस्अला :- मा'ज़ूर का वुज़ू उस चीज़ से नहीं जाता जिस के सबब से मा'ज़ूर है लेकिन अगर कोई वुज़ू तोड़ने वाली दूसरी चीज़ पाई गई तो उस का वुज़ू जाता रहेगा। जैसे किसी को क़त़रे का मरज़ है और वोह मा'ज़ूर मान लिया गया। तो नमाज़ के पूरे वक़्त में क़त़रा आने से तो उस का वुज़ू नहीं टूटेगा। लेकिन हवा निकलने से उस का वुज़ू टूट जाएगा।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि. 2, स. 94)

मस्अला :- अगर खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने में क़त़रा आ जाता है और बैठ कर नमाज़ पढ़ने में क़त़रा नहीं आता तो उस पर फ़र्ज़ है कि नमाज़ बैठ कर पढ़ा करे और वोह मा'ज़ूर नहीं शुमार किया जाएगा।

(الفتاوی الهندية، كتاب الطهارة، الباب السادس، ومما يتصل بذلك احكام المعذور، ج ۱، ص ٤١)

नमाज़ के वक़्तों का बयान

दिन रात में कुल पांच नमाज़ें हैं। फ़ज्र, ज़ोहर, अ़स्र, मग़रिब, इशा। इन पांचों नमाज़ों का **अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ से वक़्त मुक़र्रर है। और जिस नमाज़ का जो वक़्त मुक़र्रर है उस नमाज़ को वक़्त में पढ़ना फ़र्ज़ है। वक़्त निकल जाने के बा'द नमाज़ क़ज़ा हो जाती है।

अब हम नमाज़ों के वक़्तों का बयान करते हैं कि किस नमाज़ का वक़्त कब से शुरूअ़ होता है और कब ख़त्म हो जाता है।

फ़ज्र का वक़्त :- सुब्हे सादिक़ से शुरूअ़ हो कर सूरज निकलने तक है इस दरमियान जब चाहें फ़ज्र की नमाज़ पढ़ लें। लेकिन मुस्तह़ब येह है कि फ़ज्र की नमाज़ इतना उजाला हो जाने के बा'द पढ़ें कि मस्जिद के नमाज़ी एक दूसरे को देख कर पहचान लें। सुब्हे सादिक़ एक रोशनी है जो सूरज निकलने से पहले आस्मान के पूरबी किनारों में ज़ाहिर होती हैं। यहां तक कि रफ़्ता रफ़्ता येह रोशनी पूरे आस्मान पर फैल जाती है और उजाला हो जाता है। सुब्हे सादिक़ की रोशनी ज़ाहिर होते ही सह़री का वक़्त ख़त्म नमाज़े फ़ज्र का वक़्त शुरूअ़ हो जाता है। सुब्हे सादिक़ जाड़ों में तक़रीबन सवा घन्टा और गर्मियों में लग भग डेढ़ घन्टा सूरज निकलने से पहले ज़ाहिर होती है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصلوۃ، الباب الاول،الفصل الاول فی اوقات الصلوۃ، ج۱،ص۵۱)

ज़ोहर का वक़्त :- सूरज ढलने के बा'द शुरूअ़ होता है और ठीक दोपहर के वक़्त किसी चीज़ का जितना साया होता है इस साये के इलावा उस चीज़ का साया दूगना हो जाए तो ज़ोहर का वक़्त ख़त्म हो जाता है। ज़ोहर के वक़्त में मुस्तह़ब येह है कि जाड़ों में अव्वल वक़्त और गर्मियों में देर कर के नमाज़े ज़ोहर पढ़ें।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصلوۃ، الباب الاول،الفصل الاول فی اوقات الصلوۃ، ج۱،ص۵۱)

फ़ाइदा :- सूरज ढलने और दोपहर के साये के इलावा साया दूगना होने की पहचान येह है कि बराबर ज़मीन पर एक हमवार लकड़ी बिल्कुल सीधी गाड़ दें कि पूरब-पश्चिम या उत्तर-दख्खन को ज़रा भी झुकी न हो। अब ख़याल रखो कि जितना सूरज ऊंचा होता जाए उस लकड़ी का साया कम और छोटा होता जाएगा। जब साया कम होना रुक जाए तो समझ लो कि ठीक दोपहर हो गई और इस वक़्त में उस लकड़ी का जितना बड़ा साया हो उस को नाप कर ध्यान में रखो। इस के बा'द जूंही

साया बढ़ने लगे तो समझ लो कि सूरज ढल गया और ज़ोहर का वक़्त शुरूअ़ हो गया और जब साया बढ़ते बढ़ते इतना बड़ा हो जाए कि दोपहर वाले साये को निकाल कर उस लकड़ी का साया उस लकड़ी से दूगना बड़ा हो जाए तो समझ लो कि ज़ोहर का वक़्त निकल गया और अ़स्र का वक़्त शुरूअ़ हो गया।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصلوۃ، الباب الاول،الفصل الاول فی اوقات الصلوٰۃ، ج۱،ص۵۱)

जुमुआ़ का वक़्त वोही है जो ज़ोहर का वक़्त है।

(البحر الرائق، کتاب الصلاۃ،باب صلاۃ الجمعۃ،ج۲،ص۲۵۶)

अ़स्र का वक़्त :- ज़ोहर का वक़्त ख़त्म होते ही अ़स्र का वक़्त शुरूअ़ हो जाता है और सूरज डूबने तक रहता है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصلوۃ، الباب الاول،الفصل الاول فی اوقات الصلوٰۃ، ج۱،ص۵۱)

जाड़ों में अ़स्र का वक़्त तक़्रीबन डेढ़ घन्टे लम्बा रहता है और गर्मियों में क़रीब क़रीब दो घन्टे (कुछ कम ज़ियादा मुख़्तलिफ़ तारीखों में) रहता है, अ़स्र की नमाज़ में हमेशा ताख़ीर मुस्तह़ब है। लेकिन न इतनी ताख़ीर कि सूरज की टिकिया में ज़र्दी आ जाए।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصلوۃ،الباب الاول،الفصل الثانی، ج۱،ص۵۲)

मग़रिब का वक़्त :- सुरज डूबने के बा'द से मग़रिब का वक़्त शुरूअ़ हो जाता है और शफ़क़ ग़ाइब होने तक रहता है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصلوۃ، الباب الاول،الفصل الاول فی اوقات الصلوٰۃ، ج۱،ص۵۱)

शफ़क़ से मुराद वोह सपेदी है जो सूरज डूबने की सुर्ख़ी के बा'द पश्चिम में सुब्हे़ सादिक़ की सपेदी की त़रह़ उत्तर दख्खिन में फैली रहती है मग़रिब के वक़्त की लम्बाई हमारे दियार में कम से कम सवा घन्टा और ज़ियादा से ज़ियादा ढेड़ घन्टा तक़्रीबन हुवा करती है। और हर रोज़ जितना लम्बा फ़ज्र का वक़्त होता है उतना ही लम्बा मग़रिब का वक़्त भी होता है।

(شرح وقایہ، کتاب الصلوۃ،باب اوقات الصلوات الخمس، ج۱،ص۱۴۷)

इशा का वक़्त :- शफ़क़ की सपेदी ग़ाइब होने के बा'द से सुब्हे सादिक़ की सपेदी ज़ाहिर होने तक है लेकिन इशा में तिहाई रात तक ताख़ीर करनी मुस्तहब है और आधी रात तक मुबाह़ है। और आधी रात के बा'द इशा की नमाज़ पढ़नी मकरूह है। (البحر الرائق، کتاب الصلوۃ، ج ۱، ص ۴۳۰)

नमाज़े वित्र का वक़्त :- वोही है जो नमाज़े इशा का वक़्त है लेकिन इशा पढ़ने से पहले वित्र नहीं पढ़े जा सकते क्यूंकि इशा और वित्र में तरतीब फ़र्ज़ है या'नी ज़रूरी है कि पहले इशा पढ़ ली जाए इस के बा'द वित्र पढ़ी जाएं। अगर किसी ने क़स्दन इशा की नमाज़ से पहले वित्र पढ़ लिये तो वित्र अदा नहीं होंगे। बल्कि इशा पढ़ने के बा'द फिर वित्र पढ़ने पड़ेंगे। हां अगर भूल कर वित्र इशा से पहले पढ़ लिये। या बा'द को मा'लूम हुवा कि इशा बिग़ैर वुज़ू के पढ़ी थी और वित्र वुज़ू के साथ पढ़े तो वोह वुज़ू कर के इशा की नमाज़ पढ़े। लेकिन वित्र जो पहले पढ़ लिये हैं वोह अदा हो गए इस को दोहराना ज़रूरी नहीं।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصلوۃ، الباب الاول، الفصل الاول فی اوقات الصلوۃ، ج ۱، ص ۵۱-۵۳)

मकरूह वक़्तों का बयान

मस्अला :- सूरज निकलते वक़्त, सूरज डूबते वक़्त और ठीक दोपहर के वक़्त कोई नमाज़ पढ़नी जाइज़ नहीं। लेकिन उस दिन की अ़स्र अगर नहीं पढ़ी है तो सूरज डूबने के वक़्त पढ़ ले। मगर अ़स्र में इतनी देर कर के नमाज़ पढ़नी सख़्त गुनाह है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصلوۃ، الباب الاول، الفصل الثالث فی بیان الاوقات لاتجوز فیھا الصلاۃ وتکرہ فیھا، ج ۱، ص ۵۲)

मस्अला :- इन तीनों वक़्तों में क़ुरआने मजीद की तिलावत बेहतर नहीं है। अच्छा येह है कि इन तीनों वक़्तों में कलिमा या तस्बीह़ या दुरूद शरीफ़ वग़ैरा पढ़ने में मश्ग़ूल रहे।

(الدرالمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلوۃ، مطلب بشرط العلم بدخول الوقت، ج ۲، ص ۴۴)

मस्अला :- अगर इन तीनों वक़्तों में जनाज़ा लाया गया तो उसी वक़्त पढ़ें कोई कराहत नहीं। कराहत इस सूरत में है कि जनाज़ा इन वक़्तों से पहले लाया गया मगर नमाज़े जनाज़ा पढ़ने में इतनी देर कर दी कि मकरूह वक़्त आ गया।

(الفتاوی الہندیۃ، کتاب الصلوۃ، الباب الاول،الفصل الثالث فی بیان الاوقات لاتجوز فیھا الصلاۃ وتکرہ فیھا، ج۱،ص۵۲)

मस्अला :- जब सूरज का कनारा ज़ाहिर हो उस वक़्त से ले कर तक़रीबन बीस मिनट तक कोई नमाज़ जाइज़ नहीं। सूरज निकलने के बीस मिनट बा'द जब सूरज एक लाठी के बराबर ऊंचा हो जाए इस के बा'द हर नमाज़ चाहे नफ़्ल हो या क़ज़ा या कोई दूसरी पढ़नी चाहिये।

(الفتاوی الہندیۃ، کتاب الصلوۃ، الباب الاول،الفصل الثالث فی بیان الاوقات لاتجوز فیھا الصلاۃ وتکرہ فیھا، ج۱،ص۵۲)

मस्अला :- जब सूरज डूबने से पहले पीला पड़ जाए तो उस वक़्त से सूरज डूबने तक कोई नमाज़ जाइज़ नहीं। हां अगर इस दिन की अ़स्र अभी तक नहीं पढ़ी तो इस को पढ़ ले। नमाज़े अ़स्र अदा हो जाएगी अगर्चे मकरूह होगी।

(الفتاوی الہندیۃ، کتاب الصلوۃ، الباب الاول،الفصل الثالث فی بیان الاوقات لاتجوز فیھا الصلاۃ وتکرہ فیھا، ج۱،ص۵۲)

मस्अला :- ठीक दोपहर में कोई नमाज़ जाइज़ नहीं।

(الفتاوی الہندیۃ، کتاب الصلوۃ، الباب الاول،الفصل الثالث، ج۱،ص۵۲)

मस्अला :- बारह वक़्तों में नफ़्ल और सुन्नत नमाज़ें पढ़ने की मुमानअ़त है वोह बारह वक़्त येह हैं।

《1》 सुब्हे सादिक़ से सूरज निकलने तक फ़ज्र की दो रक्अ़त सुन्नत और दो रक्अ़त फ़र्ज़ के सिवा दूसरी कोई नमाज़ पढ़नी मन्अ़ है।

(بہار شریعت،ج۱،ح۳،ص۲۲، والفتاوی الہندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الاول، الفصل الثالث، ج۱، ص۵۲)

﴾2﴿ इक़ामत शुरूअ़ होने से जमाअ़त ख़त्म होने तक कोई सुन्नत व नफ़्ल पढ़नी मकरूहे तह़रीमी है। हां अलबत्ता अगर नमाज़े फ़ज्र की इक़ामत होने लगी और इस को मा'लूम है कि सुन्नत पढ़ेगा। जब भी जमाअ़त मिल जाएगी। (الفتاوی الهندية، كتاب الصلاة، الباب الاول، الفصل الثالث، ج۱، ص۵۳)

अगर्चे क़ा'दा ही सही तो इस को चाहिये कि सफ़ों से कुछ दूर हट कर फ़ज्र की सुन्नत पढ़ ले। और फिर जमाअ़त में शामिल हो जाए और अगर वोह येह जानता है कि सुन्नत पढ़ेगा तो जमाअ़त नहीं मिलेगी तो इस को सुन्नत पढ़ने की इजाज़त नहीं बल्कि इस को चाहिये कि बिग़ैर सुन्नत पढ़े जमाअ़त में शामिल हो जाए। फ़ज्र की नमाज़ के इलावा दूसरी नमाज़ों में इक़ामत हो जाने के बा'द अगर्चे येह जान ले कि सुन्नत पढ़ने के बा'द भी जमाअ़त मिल जाएगी फिर भी सुन्नत पढ़ने की इजाज़त नहीं बल्कि सुन्नत पढ़े बिग़ैर फ़ौरन ही जमाअ़त में शामिल हो जाना ज़रूरी है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 ह़ि. 4, स. 13)

﴾3﴿ नमाज़े अ़स्र पढ़ लेने के बा'द सूरज डूबने तक कोई नफ़्ल नमाज़ पढ़नी मकरूह है। क़ज़ा नमाज़ें सूरज डूबने से बीस मिनट पहले तक पढ़ सकता है। (الفتاوی الهندية، كتاب الصلاة، الباب الاول، الفصل الثالث، ج۱، ص۵۳)

﴾4﴿ सूरज डूबने के बा'द और मग़रिब के फ़र्ज़ पढ़ने से पहले कोई नफ़्ल जाइज़ नहीं। (الفتاوی الهندية، كتاب الصلاة، الباب الاول، الفصل الثالث، ج۱، ص۵۳)

﴾5﴿ जिस वक़्त इमाम अपनी जगह से जुमुआ़ के ख़ुत्बे के लिये खड़ा हुवा उस वक़्त से ले कर नमाज़े जुमुआ़ ख़त्म होने तक कोई नमाज़ सुन्नत व नफ़्ल वग़ैरा जाइज़ नहीं।

(الفتاوی الهندية، كتاب الصلاة، الباب الاول، الفصل الثالث، ج۱، ص۵۳)

﴾6﴿ ऐन खुत्बे के दरमियान कोई नमाज़ सुन्नत व नफ़्ल वग़ैरा जाइज़ नहीं। चाहे जुमुआ़ का खुत्बा हो या ईदैन का या ग्रहन की नमाज़ का या नमाज़े इस्तिस्क़ा का या निकाह़ का। लेकिन हां साहिबे तरतीब के लिये जुमुआ़ के खुत्बे के दौरान भी क़ज़ा नमाज़ पढ़ लेना लाज़िम है।

﴾7﴿ ईद की नमाज़ से पहले नफ़्ल नमाज़ मकरूह है चाहे घर में पढ़े, या मस्जिद में या ईदगाह में।

﴾8﴿ ईदैन की नमाज़ के बा'द भी ईदगाह या मस्जिद में नमाज़े नफ़्ल पढ़नी मकरूह है। हां अगर घर में नफ़्ल पढ़े तो येह मकरूह नहीं।

﴾9﴿ मैदाने अ़रफ़ात में ज़ोहर व अ़स्र एक साथ पढ़ते हैं इन दोनों नमाज़ों के दरमियान में और बा'द में नफ़्ल व सुन्नत मकरूह है।

﴾10﴿ मुज़्-दलफ़ा में जो मग़रिब व इशा एक साथ पढ़ते हैं इन दोनों नमाज़ों के बीच में नफ़्ल व सुन्नत पढ़नी मकरूह है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الاول، الفصل الثالث،ج۱،ص۵۳)

दोनों नमाजों के बा'द अगर नफ़्ल व सुन्नत पढ़े तो मकरूह नहीं है।

﴾11﴿ नमाज़े फ़र्ज़ का वक़्त अगर तंग हो गया हो तो हर नमाज़ यहां तक कि फ़ज्र व ज़ोहर की सुन्नतें पढ़नी भी मकरूह हैं। जल्दी जल्दी फ़र्ज़ पढ़ ले ताकि नमाज़ क़ज़ा न होने पाए।

﴾12﴿ जिस बात से दिल बटे और उस को दूर कर सकता हो तो उसे दूर किये बिग़ैर हर नमाज़ मकरूह है मषलन पाख़ाना, पेशाब या रीह़ का ग़लबा हो तो ऐसी ह़ालत में नमाज़ मकरूह है यूंही खाना सामने आ गया और भूक लगी हो। या दूसरी कोई बात ऐसी हो जिस से दिल को इत़्मीनान न हो तो ऐसी सूरत में नमाज़ पढ़नी मकरूह है। अलबत्ता अगर वक़्त जा रहा हो तो ऐसी ह़ालत में भी नमाज़ पढ़ ले ताकि क़ज़ा न हो जाए लेकिन फिर इस नमाज़ को दोहरा ले।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الاول، الفصل الثالث،ج۱،ص۵۳)

अज़ान का बयान

अज़ान के फ़ज़ाइल और इस के षवाब के बयान में बहुत सी ह़दीषें आई हैं। तिरमिज़ी व अबू दावूद व इब्ने माजा की ह़दीष है कि जो शख़्स सात बरस तक षवाब की निय्यत से अज़ान पढ़ेगा उस के लिये जहन्नम से नजात लिख दी जाएगी।

(جامع الترمذی، ابواب الصلوۃ، باب ماجاء فی فضل الاذان، رقم ۲۰٦، ج۱، ص۲٤۸)

अज़ान इस्लाम का निशान है अगर किसी शहर या गाऊं के लोग अज़ान पढ़ना छोड़ दें, तो बादशाहे इस्लाम उन को मजबूर कर के अज़ान पढ़वाए और इस पर भी लोग न मानें तो उन से जिहाद करे।

(الفتاوی القاضی خان، کتاب الصلوۃ، باب الاذان، ج۱، ص۳٤)

पांचों नमाज़ों और जुमुआ़ को मस्जिद में जमाअ़त के साथ अदा करने के लिये अज़ान पढ़ना सुन्नते मुअक्कदा है और इस का हुक्म मिष्ले वाजिब के है। या'नी अगर अज़ान न पढ़ी गई हो तो वहां के सब लोग गुनहगार होंगे।

(الفتاوی الھندیة، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی، الفصل الاول فی صفته واحوال المؤذن، ج۱، ص۵۳)

मस्अला :- मस्जिद में बिला अज़ान व इक़ामत के जमाअ़त से नमाज़ पढ़नी मकरूह है।

(الفتاوی الھندیة، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی، الفصل الاول فی صفته واحوال المؤذن، ج۱، ص۵٤)

मस्अला :- कोई शख़्स घर में नमाज़ पढ़े और अज़ान न पढ़े तो कोई ह़रज नहीं कि वहां की मस्जिद की अज़ान उस के लिये काफ़ी है।

(الفتاوی الھندیة، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی، الفصل الاول فی صفته واحوال المؤذن، ج۱، ص۵٤)

मस्अला :- वक़्त होने के बा'द अज़ान पढ़ी जाए। अगर वक़्त से पहले अज़ान हो गई तो वक़्त होने पर दोबारा अज़ान पढ़ी जाए।

(الفتاوی الھندیة، کتاب الصلاۃ، الباب الثانی، الفصل الاول فی صفته واحوال المؤذن، ج۱، ص۵۳)

मस्अला :- अज़ान के दरमियान बात चीत मन्अ़ है। अगर मुअज़्ज़िन ने अज़ान के बीच में कोई बात कर ली तो फिर से अज़ान कहे।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الصلاة، الباب الثانی، الفصل الاول فی صفته واحوال المؤذن، ج۱، ص۵۵)

मस्अला :- हर अज़ान यहां तक कि ख़ुत्बए जुमुआ़ की अज़ान भी मस्जिद के बाहर कही जाए। मस्जिद के अन्दर अज़ान न पढ़ी जाए।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الصلاة، الباب الثانی، الفصل الثانی فی کلمات الاذان والاقامة و کیفیتهما، ج۱، ص۵۵)

मस्अला :- जब अज़ान हो तो इतनी देर के लिये सलाम, कलाम और सलाम का जवाब और हर काम मौक़ूफ़ कर दे। यहां तक कि क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत में अज़ान की आवाज़ आए तो तिलावत रोक दे और अज़ान को ग़ौर से सुने और जवाब दे और येही इक़ामत में भी करे।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الصلاة، الباب الثانی، الفصل الثانی وممّا یتصل بذالک اجابة المؤذن، ج۱، ص۵۷)

मस्अला :- जो शख़्स अज़ान के वक़्त बातों में मश्ग़ूल रह। उस पर معاذالله ख़ातिमा बुरा होने का ख़ौफ़ है। (बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि. 1, स. 36)

मस्अला :- फ़र्ज़ नमाज़ों और जुमुआ़ की जमाअ़तों के इलावा दूसरे मौक़ओं पर भी अज़ान कही जा सकती है। जैसा पैदा होने वाले बच्चे के दाहिने कान में अज़ान और बाएं कान में इक़ामत। इसी त़रह़ मग़मूम के कान में, मिर्गी वाले और ग़ज़बनाक और बद मिज़ाज आदमी और जानवर के कान में, जंग और आग लगने के वक़्त, जिन्नों और शैत़ानों की सरकशी के वक़्त, जंगल में रास्ता न मिलने के वक़्त, मय्यित के दफ़्न करने के बा'द इन सूरतों में अज़ान पढ़ना मुस्तह़ब है।

(ردالمحتار مع الدرالمختار، کتاب الصلوٰة، مطلب: فی مواضع التی یندب لها الاذان، ص۶۲۔۶۳)

अज़ान का त़रीक़ा :- मस्जिद से ख़ारिज हिस्से में किसी ऊंची जगह पर क़िब्ला की त़रफ़ मुंह कर के खड़ा हो, और कानों के सूराख़ों में कलिमे की उंगलियां डाल कर बुलन्द आवाज़ से اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहे फिर ज़रा ठहर कर اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहे। फिर ज़रा ठहर कर दो मरतबा اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहे फिर दो मरतबा ठहर ठहर कर اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ कहे फिर दाहिनी त़रफ़ मुंह फैर कर दो मरतबा حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ कहे फिर बाईं त़रफ़ मुंह कर के दो मरतबा حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ कहे। फिर क़िब्ला की त़रफ़ को मुंह करे और اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहे फिर एक मरतबा لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहे।

(الفتاوی الھندیة، کتاب الصلاۃ،الباب الثانی، الفصل الثانی فی کلمات الاذان والاقامة وکیفیتھا،ج۱،ص۵۵۔۵۶)

मस्अला :- फ़ज्र की अज़ान में حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ कहने के बा'द दो मरतबा اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ भी कहना मुस्तह़ब है।

(الفتاوی الھندیة، کتاب الصلاۃ،الباب الثانی، الفصل الثانی فی کلمات الاذان والاقامة وکیفیتھا،ج۱،ص۵۵)

अज़ान के बा'द पहले दुरूद शरीफ़ पढ़े। फिर अज़ान पढ़ने वाला और अज़ान सुनने वाले सब दुआ पढ़ें।

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّآمَّةِ وَ الصَّلٰوةِ الْقَآئِمَةِ اٰتِ سَيِّدَنَا مُحَمَّدَ نِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَالدَّرَجَةَ الرَّفِيْعَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَا نِ الَّذِىْ وَعَدْتَّهٗ وَارْزُقْنَا شَفَاعَتَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ O

(السنن الکبری للبیھقی، کتاب الصلاۃ، باب مایقول اذا فرغ من ذالك،رقم۱۹۳۳،ج۱،ص۶۰۳)

अज़ान का जवाब :- जब अज़ान सुने तो अज़ान का जवाब देने का हुक्म है। और अज़ान के जवाब का त़रीक़ा येह है कि अज़ान कहने वाला

जो कलिमा कहे सुनने वाला भी वोही कलिमा कहे मगर حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃِ ط और حَیَّ عَلَی الْفَلَاحِ ط के जवाब में لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ कहे। और बेहतर येह है कि दोनों कहे और फ़ज्र की अज़ान में اَلصَّلٰوۃُ خَیْرٌ مِّنَ النَّوْمِ के जवाब में صَدَقْتَ وَبَرَرْتَ وَ بِالْحَقِّ نَطَقْتَ कहे।

(الفتاوی الهندية ، كتاب الصلاة،الباب الثانی، الفصل الثانی ومما يتصل بذالك اجابة المؤذن، ج١،ص٥٧)

मस्अला :- जब मुअज़्ज़िन कहे اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہِ ط तो सुनने वाला दुरूद शरीफ़ भी पढ़े और मुस्तह़ब है कि अंगूठों को बोसा दे कर आंखों से लगाए और कहे।

قُرَّةُ عَيْنِي بِكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ مَتِّعْنِي بِالسَّمْعِ وَالْبَصَرِ۔

(ردالمحتارمع الدرالمختار، كتاب الصلوٰة،مطلب فی كراهية تكرارالجماعة فی المسجد، ج٢،ص٨٤)

मस्अला :- ख़ुत़्बे की अज़ान का जवाब ज़बान से देना मुक़्तदियों को जाइज़ नहीं। (الدرالمختار، كتاب الصلوٰة، باب الاذان، ج٢،ص٨١)

मस्अला :- जुनुब भी अज़ान का जवाब दे।

(الدرالمختار، كتاب الصلوٰة، باب الاذان، ج٢،ص٨١)

मस्अला :- हैज़ व निफ़ास वाली औ़रत और जिमाअ़ में मश्ग़ूल होने वाले पर और पेशाब पाख़ाना करने वाले पर अज़ान का जवाब नहीं।

(الدرالمختار، كتاب الصلوٰة، باب الاذان، ج٢،ص٨١)

सलात पढ़ना :- अज़ान व इक़ामत के दरमियान اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ या इस क़िस्म के दूसरे कलिमात नमाज़ के ए'लाने षानी के त़ौर पर बुलन्द आवाज़ से पुकारना मुस्तह़ब है। इस को शरीअ़त की इस्त़िलाह़ में तषवीब कहते हैं और तषवीब मग़रिब के इ़लावा बाक़ी नमाज़ों में मुस्तह़ब है तषवीब के लिये कोई ख़ास कलिमात शरीअ़त में मुक़र्रर नहीं

हैं। बल्कि उस शहर में जिन लफ़्ज़ों के साथ तषवीब कहते हों उन लफ़्ज़ों से तषवीब कहना मुस्तहब है।

(الفتاوی الهندية، كتاب الصلوة، الباب الثانی، الفصل الثانی فی كلمات الاذان والاقامة وكيفيتها، ج١،ص٥٦)

इक़ामत :- इक़ामत अज़ान ही के मिष्ल है। मगर चन्द बातों में फ़र्क़ है। अज़ान के कलिमात ठहर ठहर कर कहे जाते हैं। और इक़ामत के कलिमात को जल्द जल्द कहें। दरमियान में सक्ता न करें। इक़ामत में حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ के बा'द दो मरतबा قَدْقَامَتِ الصَّلٰوةُ भी कहें। अज़ान में आवाज़ बुलन्द करने का हुक्म है। मगर इक़ामत में आवाज़ बस इतनी ही ऊंची हो कि सब हाज़िरीने मस्जिद तक आवाज़ पहुंच जाए। इक़ामत में कानों के अन्दर उंगलियां नहीं डाली जाएंगी। अज़ान मस्जिद के बाहर पढ़ने का हुक्म है और इक़ामत मस्जिद के अन्दर पढ़ी जाएगी।

(الدرالمختار، كتاب الصلوٰة، مطلب فی اول من بنی المنائر، ج٢،ص٦٨)

मस्अला :- अगर इमाम ने इक़ामत कही قَدْقَامَتِ الصَّلٰوةُ के वक़्त आगे बढ़ कर मुसल्ला पर चला जाए।

(الفتاوی الهندية، كتاب الصلوة،باب الثانی،الفصل الثانی، ج١،ص٥٧)

मस्अला :- इक़ामत में भी حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ और حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ के वक़्त दाहिने बाएं मुंह फेरे। (الدرالمختار، كتاب الصلوٰة، باب الاذان، ج٢،ص٦٦)

मस्अला :- इक़ामत होते वक़्त कोई शख़्स आया तो उसे खड़े हो कर इन्तिज़ार करना मकरूह है बल्कि उस को चाहिये की बैठ जाए और जब حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ कहा जाए तो उस वक़्त खड़ा हो। यूंही जो लोग मस्जिद में मौजूद हैं वोह भी इक़ामत के वक़्त बैठे रहें। जब حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ मुकब्बिर कहे उस वक़्त सब लोग खड़े हों। येही इमाम के लिये भी है।

(الفتاوی الهندية، كتاب الصلوة، الباب الثانی، الفصل الثانی فی كلمات الاذان والاقامة وكيفيتها، ج١،ص٥٧)

आज कल अकषर जगह येह ग़लत़ रवाज है कि इक़ामत के वक़्त बल्कि इक़ामत से पहले ही लोग खड़े हो जाते हैं। बल्कि अकषर जगह तो येह है कि जब तक इमाम खड़ा न हो जाए उस वक़्त तक इक़ामत नहीं कही जाती। येह त़रीक़ा ख़िलाफ़े सुन्नत है। इस बारे में बहुत से रिसाले और फ़तावा भी छापे गए मगर ज़िद और हट धर्मी का क्या इ़लाज? ख़ुदावन्दे करीम मुसलमानों को सुन्नत पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ बख़्शे।

मस्अला :- इक़ामत का जवाब देना मुस्तह़ब है। इक़ामत का जवाब भी अज़ान ही के जवाब की त़रह़ है। इतना फ़र्क़ है कि इक़ामत में قَدْقَامَتِ الصَّلٰوۃُ के जवाब में اَقَامَہَا اللّٰہُ وَاَدَامَہَا مَادَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ कहे।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصلوۃ، الباب الثانی، الفصل الثانی، ج۱، ص۵۷)

इस्तिक़्बाले क़िब्ला के चन्द मसाइल

पूरी नमाज़ में ख़ानए का'बा की त़रफ़ मुंह करना नमाज़ की शर्त़ और ज़रूरी हुक्म है। लेकिन चन्द सूरतों में अगर क़िब्ला की त़रफ़ मुंह न करे फिर भी नमाज़ जाइज़ है। मषलन

मस्अला :- जो शख़्स दरिया में किसी तख़्ते पर बहा जा रहा हो और उसे सह़ीह़ अन्देशा हो कि मुंह फैरने से डूब जाएगा इस त़रह़ की मजबूरी से वोह क़िब्ला की त़रफ़ मुंह नहीं कर सकता। तो उस को चाहिये कि वोह जिस रुख़ भी नमाज़ पढ़ सकता है पढ़ ले। उस की नमाज़ हो जाएगी। और बा'द में इस नमाज़ को दोहराने की भी ज़रूरत नहीं।

(الفتاوی الھندیۃ، الباب الثالث، الفصل الثالث فی استقبال القبلۃ، ج۱، ص۶۳)

मस्अला :- बीमार में इतनी त़ाक़त नहीं कि वोह क़िब्ला की त़रफ़ मुंह कर सके और वहां दूसरा ऐसा कोई आदमी भी नहीं है जो का'बा की त़रफ़ उस का मुंह कर दे तो इस मजबूरी की ह़ालत में जिस त़रफ़ भी मुंह कर के नमाज़ पढ़ लेगा उस की नमाज़ हो जाएगी और इस नमाज़ को बा'द में दोहराने की भी ज़रूरत नहीं।

(الفتاوی الھندیۃ، الباب الثالث، الفصل الثالث فی استقبال القبلۃ، ج۱، ص۶۳)

मस्अला :- चलती हुई किश्ती में अगर नमाज़ पढ़े तो तकबीरे तह़रीमा के वक़्त क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ शुरूअ़ कर दे और जैसे जैसे किश्ती घूमती जाए ख़ुद भी क़िब्ला की त़रफ़ मुंह फैरता रहे अगर्चे फ़र्ज़ नमाज़ हो या नफ़्ल। (غنية المستملی،فروع فی شرح الطحاوی،ص ۲۲۵)

मस्अला :- अगर येह न मा'लूम हो कि क़िब्ला किधर है और वहां कोई बताने वाला भी न हो तो नमाज़ी को चाहिये कि अपने दिल में सोचे और जिधर क़िब्ला होने पर दिल जम जाए उसी त़रफ़ मुंह कर के नमाज़ पढ़ ले उस के ह़क़ में वोही क़िब्ला है।

(الفتاوی الهندية ، الباب الثالث، الفصل الثالث فی استقبال القبلة، ج۱،ص ٦٤)

मस्अला :- जिस त़रफ़ दिल जम गया था उधर मुंह कर के नमाज़ पढ़ रहा था फिर नमाज़ के दरमियान ही में उस की येह राय बदल गई कि क़िब्ला दूसरी त़रफ़ है या उस को अपनी ग़लती मा'लूम हो गई तो उस पर फ़र्ज़ है कि फ़ौरन ही उस त़रफ़ घूम जाए और पहले जितनी रक्अ़तें पढ़ चुका है इस में कोई ख़राबी नहीं आएगी इसी त़रह़ अगर नमाज़ में उस को चारों त़रफ़ घूमना पड़ा फिर भी उस की नमाज़ हो जाएगी और अगर राय बदलते ही या ग़लती ज़ाहिर होते ही दूसरी त़रफ़ नहीं घूमा और तीन मरतबा سُبْحٰنَ اللّٰه कहने के बराबर देर लगा दी तो उस की नमाज़ न होगी।

(ردالمحتار مع الدرالمختار، کتاب الصلاة، مطلب مسائل التحری فی القبلة،ج۲،ص ۱٤٤)

मस्अला :- नमाज़ी ने अगर बिला उ़ज़्र क़स्दन जान बूझ कर क़िब्ला से सीना फैर दिया तो अगर्चे फ़ौरन ही उस ने क़िब्ले की त़रफ़ सीना फिरा लिया फिर भी उस की नमाज़ टूट गई और वोह फिर से नमाज़ पढ़े।

(صغیری شرح منية المصلی،شرائط الصلاة، الشرط الرابع،ص ۱۲۵)

और अगर नमाज़ में बिला क़स्द व इरादा क़िब्ला से सीना फिर गया और फ़ौरन ही उस ने क़िब्ला की त़रफ़ सीना कर लिया तो उस की नमाज़ हो गई। (البحرالرائق، کتاب الصلوۃ،باب شروط الصلوۃ،ج ۱،ص۴۹۷)

मस्अला :- अगर सिर्फ़ मुंह क़िब्ला से फैर लिया और सीना क़िब्ला से नहीं फिरा तो उस पर वाजिब है कि फ़ौरन ही वोह क़िब्ले की त़रफ़ मुंह करे। उस की नमाज़ हो जाएगी मगर बिला उ़ज़्र एक सेकन्ड के लिये भी क़िब्ला से चेहरा फैर लेना मकरूह है।

(صغیری شرح منیۃ المصلی،شرائط الصلاۃ، الشرط الرابع،ص ۱۲۶)

मस्अला :- अगर नमाज़ी ने क़िब्ले से सीना फैरा न चेहरा फैरा बल्कि सिर्फ़ आंखों को फिरा फिरा कर इधर उधर देख लिया तो उस की नमाज़ हो जाएगी मगर ऐसा करना मकरूह है। (बहारे शरीअ़त, हि़. 3, स. 52)

रक्अ़तों की ता'दाद और निय्यत करने का त़रीक़ा

निय्यत से मुराद दिल में पक्का इरादा करना है ख़ाली ख़याल काफ़ी नहीं जब तक कि इरादा न हो।

मस्अला :- अगर ज़बान से भी कह दे तो अच्छा है। मषलन यूं कहे कि निय्यत की मैं ने दो रक्अ़त फ़र्ज़ फ़ज्र की, वासिते़ **अल्लाह** तआ़ला के, मुंह मेरा त़रफ़ का'बा शरीफ़ के اَللّٰہُ اَکْبَرُ

(الفتاوی الھندیۃ، الباب الثالث، الفصل الرابع فی النیۃ، ج ۱،ص ۶۵)

मस्अला :- मुक़्तदी हो तो निय्यत में उस को इतना और कहना चाहिये कि पीछे इस इमाम के। (الفتاوی الھندیۃ، الباب الثالث، الفصل الرابع فی النیۃ، ج ۱،ص ۶۶)

मस्अला :- इमाम ने इमाम होने की निय्यत नहीं की जब भी मुक़्तदियों की नमाज़ उस के पीछे हो जाएगी लेकिन जमाअ़त का षवाब न पाएगा।

(الفتاوی الھندیۃ، الباب الثالث، الفصل الرابع فی النیۃ، ج ۱،ص ۶۶)

अब तमाम नमाज़ों की रक्अ़तों और उन की निय्यतों के त़रीक़ों का अलग अलग सुवाल व जवाब की सूरत में बयान करते हैं इन को ख़ूब अच्छी त़रह़ याद कर लो।

सुवाल ﴾ फ़ज्र के वक़्त कितनी रक्अ़त नमाज़ पढ़ी जाती है ?

जवाब ﴾ कुल चार रक्अ़त। पहले दो रक्अ़त सुन्नते मुअक्कदा फिर दो रक्अ़त फ़र्ज़।

सुवाल ﴾ दो रक्अ़त सुन्नत की निय्यत किस त़रह़ की जाएगी ?

जवाब ﴾ निय्यत की मैं ने दो रक्अ़त नमाज़ सुन्नत फ़ज्र की **अल्लाह** तआ़ला के लिये सुन्नत रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मुंह मेरा का'बा शरीफ़ की त़रफ़ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

सुवाल ﴾ दो रक्अ़त फ़र्ज़ की निय्यत किस त़रह़ की जाएगी ?

जवाब ﴾ निय्यत की मैं ने दो रक्अ़त नमाज़ फ़ज्र की **अल्लाह** तआ़ला के लिये (मुक़्तदी इतना और कहे : पीछे इस इमाम के) मुंह मेरा का'बा शरीफ़ की त़रफ़ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

सुवाल ﴾ ज़ोहर के वक़्त कुल कितनी रक्अ़ते नमाज़ पढ़ी जाती है ?

जवाब ﴾ बारह रक्अ़त। पहले चार रक्अ़त सुन्नते मुअक्कदा, फिर चार रक्अ़त फ़र्ज़, फिर दो रक्अ़त सुन्नते मुअक्कदा, फिर दो रक्अ़त नफ़्ल।

सुवाल ﴾ चार रक्अ़त सुन्नत की निय्यत किस त़रह़ की जाएगी ?

जवाब ﴾ निय्यत की मैं ने चार रक्अ़त नमाज़ सुन्नत ज़ोहर की, **अल्लाह** तआ़ला के लिये सुन्नत रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की, मुंह मेरा त़रफ़ का'बा शरीफ़ के اَللّٰهُ اَكْبَرُ

सुवाल ﴾ चार रक्अ़त फ़र्ज़ की निय्यत किस त़रह़ की जाएगी ?

जवाब ﴾ निय्यत की मैं ने चार रक्अ़त नमाज़ फ़र्ज़ ज़ोहर की **अल्लाह** तआ़ला के लिये (मुक़्तदी इतना और कहे : पीछे इस इमाम के) मुंह मेरा त़रफ़ का'बा शरीफ़ के اَللّٰهُ اَكْبَرُ

सुवाल ﴾ और दो रक्अ़त सुन्नत की निय्यत किस त़रह़ की जाएगी ?

जवाब ﴾ निय्यत की मैं ने दो रक्अ़त नमाज़ सुन्नत ज़ोहर की **अल्लाह** तआ़ला के लिये सुन्नत रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की, मुंह मेरा त़रफ़ का'बा शरीफ़ के اَللّٰهُ اَكْبَرُ

सुवाल फिर दो रक्अ़त नफ़्ल की निय्यत कैसे करे ?

जवाब निय्यत की मैं ने दो रक्अ़त नमाज़े नफ़्ल की **अल्लाह** तआ़ला के लिये मुंह मेरा त़रफ़ का'बा शरीफ़ के اَللّٰہُ اَکْبَرُ

फ़ाइदा :- नफ़्ल नमाज़ बैठ कर पढ़ना भी जाइज़ है लेकिन खड़े हो कर नफ़्ल पढ़ने में दो गुना षवाब मिलता है और बैठ कर पढ़ने में आधा षवाब मिलता है।

सुवाल अ़स्र के वक़्त कुल कितनी रक्अ़त नमाज़ पढ़ी जाती है ?

जवाब आठ रक्अ़त। पहले चार रक्अ़त सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा फिर चार रक्अ़त फ़र्ज़।

सुवाल चार रक्अ़त सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा की निय्यत किस त़रह़ की जाएगी ?

जवाब निय्यत की मैं ने चार रक्अ़त नमाज़ सुन्नत अ़स्र की, **अल्लाह** तआ़ला के लिये, सुन्नत रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की, मुंह मेरा त़रफ़ का'बा शरीफ़ के اَللّٰہُ اَکْبَرُ

सुवाल फिर चार रक्अ़त फ़र्ज़ की निय्यत कैसे करे ?

जवाब निय्यत की मैं ने चार रक्अ़त नमाज़ फ़र्ज़ अ़स्र की **अल्लाह** तआ़ला के लिये (मुक़्तदी इतना और कहे : पीछे इस इमाम के) मुंह मेरा त़रफ़ का'बा शरीफ़ के اَللّٰہُ اَکْبَرُ

सुवाल मग़रिब के वक़्त कुल कितनी रक्अ़त नमाज़ पढ़ी जाती है ?

जवाब सात रक्अ़त। पहले तीन रक्अ़त फ़र्ज़, फिर दो रक्अ़त सुन्नते मुअक्कदा, फिर दो रक्अ़त नफ़्ल।

सुवाल तीन रक्अ़त फ़र्ज़ की निय्यत किस त़रह़ की जाए ?

जवाब निय्यत की मैं ने तीन रक्अ़त नमाज़ फ़र्ज़ मग़रिब **अल्लाह** तआ़ला के लिये (मुक़्तदी इतना और कहे : पीछे इस इमाम के) मुंह मेरा त़रफ़ का'बा शरीफ़ के اَللّٰہُ اَکْبَرُ

सुवाल ﴾ और दो रक्अ़त सुन्नते मुअक्कदा की निय्यत कैसे करे ?

जवाब ﴾ निय्यत की मैं ने दो रक्अ़त नमाज़ सुन्नते मग़रिब, **अल्लाह** तआ़ला के लिये, सुन्नत रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की, मुंह मेरा त़रफ़ का'बा शरीफ़ के اَللّٰہُ اَکْبَر

सुवाल ﴾ फिर दो रक्अ़त नफ़्ल की निय्यत कैसे करे ?

जवाब ﴾ निय्यत की मैं ने दो रक्अ़त नमाज़े नफ़्ल, **अल्लाह** तआ़ला के लिये, मुंह मेरा त़रफ़ का'बा शरीफ़ के اَللّٰہُ اَکْبَر

सुवाल ﴾ इशा के वक़्त कुल कितनी रक्अ़त नमाज़ पढ़ी जाती है ?

जवाब ﴾ सतरह रक्अ़त। पहले चार रक्अ़त सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा, फिर चार रक्अ़त फ़र्ज़, फिर दो रक्अ़त सुन्नते मुअक्कदा, फिर दो रक्अ़त नफ़्ल फिर तीन वित्रे वाजिब फिर दो रक्अ़त नफ़्ल।

सुवाल ﴾ चार रक्अ़त सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा की निय्यत किस त़रह़ की जाए ?

जवाब ﴾ निय्यत की मैं ने चार रक्अ़त नमाज़ सुन्नत इशा की, **अल्लाह** तआ़ला के लिये, सुन्नत रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की, मुंह मेरा त़रफ़ का'बा शरीफ़ के اَللّٰہُ اَکْبَر

सुवाल ﴾ फिर चार रक्अ़त फ़र्ज़ की निय्यत कैसे करे ?

जवाब ﴾ निय्यत की मैं ने चार रक्अ़त नमाज़ फ़र्ज़ इशा की, **अल्लाह** तआ़ला के लिये (मुक़्तदी इतना और कहे : पीछे इस इमाम के) मुंह मेरा त़रफ़ का'बा शरीफ़ के اَللّٰہُ اَکْبَر

सुवाल ﴾ फिर दो रक्अ़त सुन्नते मुअक्कदा की निय्यत किस त़रह़ की जाएगी ?

जवाब ﴾ निय्यत की मैं ने दो रक्अ़त नमाज़ सुन्नत इशा की, **अल्लाह** तआ़ला के लिये। सुन्नत रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की, मुंह मेरा त़रफ़ का'बा शरीफ़ के اَللّٰہُ اَکْبَر

सुवाल ❁ फिर दो रक्अ़त नफ़्ल की निय्यत किस त़रह़ की जाए ?

जवाब ❁ निय्यत की मैं ने दो रक्अ़त नमाज़े नफ़्ल, **अल्लाह** तआ़ला के लिये, मुंह मेरा त़रफ़ का'बा शरीफ़ के اَللّٰهُ اَكْبَرُ

सुवाल ❁ फिर वित्र की निय्यत किस त़रह़ की जाए ?

जवाब ❁ निय्यत की मैं ने तीन रक्अ़त नमाज़ वाजिब वित्र की, **अल्लाह** तआ़ला के लिये मुंह मेरा त़रफ़ का'बा शरीफ़ के اَللّٰهُ اَكْبَرُ

सुवाल ❁ फिर दो रक्अ़त नफ़्ल की निय्यत किस त़रह़ की जाए ?

जवाब ❁ निय्यत की मैं ने दो रक्अ़त नमाज़े नफ़्ल, **अल्लाह** तआ़ला के लिये, मुंह मेरा त़रफ़ का'बा शरीफ़ के اَللّٰهُ اَكْبَرُ

सुवाल ❁ अगर निय्यत के अल्फ़ाज़ भूल कर कुछ के कुछ ज़बान से निकल गए तो नमाज़ होगी या नहीं ?

जवाब ❁ निय्यत दिल के पक्के इरादे को कहते हैं या'नी निय्यत में ज़बान का ए'तिबार नहीं तो अगर दिल में मषलन ज़ोहर का पक्का इरादा किया और ज़बान से ज़ोहर की जगह अ़स्र का लफ़्ज़ निकल गया, तो ज़ोहर की नमाज़ हो जाएगी ।

सुवाल ❁ क़ज़ा नमाज़ की निय्यत किस त़रह़ करनी चाहिये ?

जवाब ❁ जिस रोज़ और जिस वक़्त की नमाज़ क़ज़ा हो उस रोज़ और उस वक़्त की निय्यते क़ज़ा ज़रूरी है मषलन अगर जुमुआ़ के रोज़ फ़ज्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई तो इस त़रह़ निय्यत करे कि निय्यत की मैं ने दो रक्अ़त नमाज़ क़ज़ा जुमुआ़ के रोज़ की फ़र्ज़ फ़ज्र की **अल्लाह** तआ़ला के लिये, मुंह मेरा त़रफ़ का'बा शरीफ़ के اَللّٰهُ اَكْبَرُ

सुवाल ❁ अगर कई साल की नमाज़ें क़ज़ा हों तो निय्यत कैसे करे ?

जवाब ऐसी सूरत में जो नमाज़ मषलन ज़ोहर की क़ज़ा पढ़नी है तो इस त़रह़ निय्यत करे कि निय्यत की मैं ने चार रक्अ़त नमाज़ क़ज़ा जो मेरे ज़िम्मे बाक़ी है इन में से पहले फ़र्ज़ ज़ोहर की, **अल्लाह** तआ़ला के लिये मुंह मेरा त़रफ़ का'बा शरीफ़ के اَللّٰهُ اَكْبَرُ

इसी त़रीक़े से दूसरी क़ज़ा नमाज़ों की निय्यतों को क़ियास कर लेना चाहिये।

सुवाल पांच वक़्त की नमाज़ों में कुल कितनी रक्अ़त क़ज़ा पढ़ी जाएगी ?

जवाब बीस रक्अ़त। दो रक्अ़त फ़ज्र, चार रक्अ़त ज़ोहर, चार रक्अ़त अ़स्र, तीन रक्अ़त मग़रिब, चार रक्अ़त इ़शा, तीन रक्अ़त वित्र, ख़ुलासा येह है कि फ़र्ज़ और वित्र की क़ज़ा है, सुन्नतों और नफ़्लों की क़ज़ा नहीं है।

नमाज़ पढ़ने का त़रीक़ा

नमाज़ पढ़ने का त़रीक़ा येह है कि वुज़ू कर के क़िब्ला की त़रफ़ मुंह करे और इस त़रह़ खड़ा हो कि दोनों पैरों के दरमियान चार उंगल का फ़ासिला रहे और दोनों हाथ को दोनों कानों तक उठाए कि दोनों अंगूठे दोनों कानों की लौ से छू जाएं बाक़ी उंगलियां अपने ह़ाल पर रहें। न बिल्कुल मिली हुई न बहुत फैली हुई। इस ह़ाल में कि कानों की लौ छूते हुए दोनों हथेलियां क़िब्ला की त़रफ़ हों। और निगाह सजदे की जगह पर हो। फिर निय्यत कर के اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहता हुवा हाथ नीचे ला कर नाफ़ के नीचे इस त़रह़ बांध ले कि दाहिनी हथेली की गुद्दी बाईं कलाई के सिरे पर पहुंचों के पास रहे और बीच की तीनों उंगलियां बाईं कलाई की पीठ पर और अंगूठा और छोटी उंगली कलाई के अग़ल बग़ल ह़ल्क़े की सूरत में रहें। फिर षना पढ़े या'नी سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَ بِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَ تَعَالٰى جَدُّكَ وَ لَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ फिर اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط पढ़े फिर بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़े फिर اَلْحَمْدُ पूरी पढ़े और ख़त्म पर आहिस्ता से आमीन कहे इस के बा'द कोई सूरह या तीन आयतें पढ़े। या एक लम्बी आयत जो तीन आयतों के बराबर हो

पढ़े फिर اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहता हुवा रुकूअ़ में जाए और घुटनों को हाथों से इस तृरह् पकड़े की हथेलियां दोनों घुटनों पर हों और उंगलियां ख़ूब फैली हों और पीठ बिछी हो और सर पीठ के बराबर (ऊंचा नीचा न) हो और नज़्र पैरों की पुश्त पर हो और कम से कम तीन मरतबा سُبْحَانَ رَبِّیَ الْعَظِیْم कहे फिर سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہٗ कहता हुवा सीधा खड़ा हो जाए और अकेले नमाज़ पढ़ता हो तो इस के बा'द رَبَّنَا لَکَ الْحَمْدُ भी कहे और दोनों हाथ लटकाए रहे, हाथों को बांधे नहीं फिर اَللّٰہُ اَکْبَرُ कह कर सजदे में जाए इस तृरह् कि पहले घुटने ज़मीन पर रखे फिर हाथ फिर दोनों हाथों के दरमियान सर रखे। इस तृरह् पर कि पहले नाक ज़मीन पर रखे फिर माथा और नाक की हड्डी को दबा कर ज़मीन पर जमाए। और नज़्र नाक की तृरफ़ रहे और बाज़ूओं को करवटों से और पेट को रानों से और रानों को पिन्डलियों से जुदा रखे। और पाऊं की सब उंगलियों को क़िब्ला की तृरफ़ रखे। इस तृरह् कि उंगलियों का पेट ज़मीन पर जमा रहे और हथेलियां बिछी हो। और उंगलियां क़िब्ला की तृरफ़ हो और कम से कम तीन बार سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی कहे फिर सर उठाए इस तरह कि पहले माथा फिर नाक फिर मुंह फिर हाथ और दाहिना क़दम खडा कर के इस की उंगलियां क़िब्ला रुख़ करे और बायां क़दम बिछा कर इस पर ख़ूब सीधा बैठ जाए। और हथेलियां बिछा कर रानों पर घुटनों के पास रखे। इस तौ़र पर कि दोनों हाथों की उंगलियां क़िब्ला रुख़ हों और उंगलियों का सिरा घुटनों के पास हो। फिर ज़रा ठहर के اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहता हुवा दूसरा सजदा करे। येह सजदा भी पहले की तृरह् करे। फिर सर उठाए और दोनों हाथों को दोनों घुटनों पर रख कर पन्जों के बल खड़ा हो जाए। उठते वक़्त बिला उ़ज़्र हाथ ज़मीन पर न टेके। येह एक रक्अ़त पूरी हो गई अब फिर بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم पढ़ कर اَلْحَمْدُ पूरी पढ़े और कोई सूरह पढ़े और पहले की तृरह् रुकूअ़ और सजदा करे। फिर जब सजदे से सर उठाए तो

दाहिना क़दम खड़ा कर के बायां क़दम बिछा कर बैठ जाए और येह पढ़े

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّيِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ ؕ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ ط اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ؕ

इस को तशह्हुद कहते हैं । जब اَشْهَدُ اَنْ لَّآ के क़रीब पहुंचे तो दाहिने हाथ की बीच की उंगली को हथेली से मिला दे, और लफ़्ज़ لَا पर कलिमे की उंगली उठाए मगर इधर उधर न हिलाए, और اِلَّا पर गिरा दे इसी त़रह़ सब उंगलियां फ़ौरन सीधी करे । अब अगर दो से ज़ियादा रक्अ़तें पढ़नी हैं तो उठ खड़ा हो और इसी त़रह़ पढ़े मगर फ़र्ज़ की इन रक्अ़तों में اَلْحَمْدُ के साथ सूरत मिलाना ज़रूरी नहीं अब पिछला का'दा जिस के बा'द नमाज़ ख़त्म करेगा इस में तशह्हुद के बा'द दुरूद शरीफ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيْمَ وَ عَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ط اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيْمَ وَ عَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ط

पढ़े फिर اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ تَوَالَدَ

وَلِجَمِيْعِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ الْاَحْيَآءِ مِنْهُمْ وَالْاَمْوَاتِ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مُّجِيْبُ الدَّعْوَاتِ بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ ط

या और कोई दुआ़ए माषूरा पढ़े मषलन येह दुआ़ पढ़े

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ ظُلْمًا كَثِيْرًا وَّاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ فَاغْفِرْلِيْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَ ارْحَمْنِيْ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ط

फिर दाहिने शाने की त़रफ़ मुंह कर के اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ कहे फिर बाएं शाने की त़रफ़ इसी त़रह़ । अब नमाज़ ख़त्म हो गई । इस के बा'द दोनों हाथ उठा कर कोई दुआ़ मषलन

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ وَاِلَيْكَ يَرْجِعُ السَّلَامُ فَحَيِّنَا رَبَّنَا بِالسَّلَامِ وَاَدْخِلْنَا دَارَالسَّلَامِ تَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَ تَعَالَيْتَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ ه رَبَّنَا اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ ه وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اٰمين يا رب العلمين

पढ़े और मुंह पर हाथ फैर ले।

नमाज़ का येह त़रीक़ा जो लिखा गया इमाम या तन्हा मर्द के पढ़ने का है। लेकिन अगर नमाज़ी मुक़्तदी हो या'नी जमाअ़त के साथ इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ता हो तो اَلْحَمْدُ और सूरह न पढ़े चाहे इमाम ज़ोर से क़िराअत करता हो या आहिस्ता। इमाम के पीछे किसी नमाज़ में क़िराअत जाइज़ नहीं।

नमाज़ में औ़रतों के चन्द ख़ास मसाइल

औ़रतों को चाहिये कि तक्बीरे तह़रीमा के वक़्त मर्दों की त़रह़ कानों तक हाथ न उठाए बल्कि कन्धों तक ही हाथ उठा कर बाईं हथेली सीने पर रख कर इस की पीठ पर दाहिनी हथेली रखें। रुकूअ़ में ज़ियादा न झुकें बल्कि थोड़ा झुकें या'नी सिर्फ़ इस क़दर कि हाथ घुटनों तक पहुंच जाए इसी त़रह़ औ़रतें रुकूअ़ में पीठ सीधी न करें और घुटनों पर ज़ोर न दें बिल्क मह़ज़ घुटनों पर हाथ रख दें और हाथ की उंगलियां लेटी हुई रखें और पाऊं कुछ झुका हुवा रखें। मर्दों की त़रह़ ख़ूब सीधा न कर दें। औ़रतों को बिल्कुल समेट कर सजदा करना चाहिये या'नी बाज़ूओं को करवटों से मिला दें और पेट को रान से और रान को पिन्डलियों से और पिन्डलियों को ज़मीन से मिला दें और का'दा में अत्तह़िय्यात पढ़ते वक़्त औ़रतें बाएं क़दम पर न बैठें। दोनों पाऊं दाहिनी जानिब से निकाल दें और बाईं सुरीन पर बैठें मर्दों की त़रह़ न बैठें।

औ़रतें भी खड़ी हो कर नमाज़ पढ़ें बहुत सी जाहिल औ़रतें फ़र्ज़ और वाजिब और सुन्नत व नफ़्ल सारी नमाज़ें बैठ कर पढ़ती हैं येह बिल्कुल ग़लत़ त़रीक़ा है। नफ़्ल के सिवा कोई भी नमाज़ बिला उ़ज़्र बैठ कर पढ़नी जाइज़ नहीं। येह जाहिल औ़रतें फ़र्ज़ व वाजिब जितनी नमाज़ें बिग़ैर उ़ज़्र बैठ कर पढ़ चुकी हों उन सब की क़ज़ा करें और तौबा करें।

मस्अला :- औ़रत मर्दों की इमामत करे येह नाजाइज़ है।

(الفتاوی القاضی خان، کتاب الصلوۃ،فصل فیمن یصح الاقتداء، ج ۱،ص ۴۳)

हरगिज़ औ़रतें मर्दों की इमाम नहीं बन सकती। और सिर्फ़ औ़रतों की जमाअ़त (कि औ़रत ही इमाम हो और औ़रतें ही मुक़्तदी हों) येह मकरूहे तह़रीमी और नाजाइज़ है। (बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 111)

मस्अला :- औ़रतों पर जुमुआ़ और ई़दैन की नमाज़ वाजिब नहीं।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 131)

पंज वक़्ता नमाज़ों के लिये औ़रतों का मस्जिद में जाना मन्अ़ है।

(البحر الرائق، کتاب الصلوۃ،باب الامامۃ، ج ۱،ص ۶۲۷)

अफ़्आ़ले नमाज़ की क़िस्में

नमाज़ पढ़ने का जो त़रीक़ा बयान किया गया है इस में जिन जिन कामों का ज़िक्र किया गया है इन में से बा'ज़ चीज़ें फ़र्ज़ हैं कि इन के बिग़ैर नमाज़ होगी ही नहीं। बा'ज़ वाजिब हैं कि अगर क़स्दन इन को छोड़ दिया जाए तो गुनाह भी होगा और नमाज़ को भी दोहराना पड़ेगा। और अगर भूल कर इन को छोड़ा तो सजदए सह्व करना वाजिब होगा और बा'ज़ बातें सुन्नते मुअक्कदा हैं कि इन को छोड़ने की आ़दत गुनाह है और बा'ज़ मुस्तह़ब हैं कि इन को करें तो षवाब और अगर न करें तो कोई गुनाह नहीं। अब हम इन बातों की कुछ वज़ाह़त करते हैं। इन को ग़ौर से पढ़ कर अच्छी त़रह़ याद कर लो।

फ़राइज़े नमाज़ :- सात चीज़ें नमाज़ में फ़र्ज़ हैं कि अगर इन में से किसी एक को भी छोड़ दिया तो नमाज़ होगी ही नहीं ﴾1﴿ तक्बीरे तह़रीमा ﴾2﴿ क़ियाम ﴾3﴿ क़िराअत ﴾4﴿ रुकूअ़ ﴾5﴿ सजदा ﴾6﴿ का'दए अख़ीरा ﴾7﴿ कोई काम कर के मषलन सलाम या कलाम कर के नमाज़ से निकलना। (الفتاوى الهندية، كتاب الصلاة ،الباب الرابع، الفصل الاول، ج ١،ص٦٨-٧٠)

तक्बीरे तह़रीमा का येह मत़लब है कि اَللّٰهُ اَكْبَرُ कह कर नमाज़ को शुरूअ़ करना। (الفتاوى الهندية، كتاب الصلوة،الباب الرابع،الفصل الاول،ج١،ص٦٨)

नमाज़ में बहुत मरतबा اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहा जाता है। मगर शुरूअ़ नमाज़ में पहली मरतबा जो اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहते हैं इस का नाम तक्बीरे तह़रीमा है येह फ़र्ज़ है। इस को अगर छोड़ दिया तो नमाज़ होगी ही नहीं।
(الفتاوى القاضي خان، كتاب الصلوة،باب افتتاح الصلوة،ج١،ص٣٨۔ردالمحتار، كتاب الصلوة،مطلب قد يطلق الفرض على ما يقابل...إلخ، ج٢، ص١٥٨)

मस्अला :- क़ियाम फ़र्ज़ होने का मत़लब येह है कि खड़े हो कर नमाज़ पढ़ना ज़रूरी है। तो अगर किसी मर्द या औ़रत ने बिग़ैर उ़ज़्र के बैठ कर नमाज़ पढ़ी तो उस की नमाज़ अदा नहीं हुई।

(الفتاوى الهندية، كتاب الصلوة،الباب الرابع،الفصل الاول،ج١،ص٦٨)

हां नफ़्ल नमाज़ को बिला उ़ज़्र के भी बैठ कर पढ़े तो येह जाइज़ है।

मस्अला :- क़िराअत फ़र्ज़ होने का येह मत़लब है कि फ़र्ज़ की दो रक्अ़तों में और वित्र व नवाफ़िल और सुन्नतों की हर हर रक्अ़त में कुरआन शरीफ़ पढ़ना ज़रूरी है। (مراقى الفلاح مع حاشية الطحطاوى ،ص٢٢٦)

तो अगर किसी ने इन रक्अ़तों में कुरआन नहीं पढ़ा तो उस की नमाज़ न होगी। (الفتاوى الهندية، كتاب الصلوة،الباب الرابع،الفصل الاول،ج١،ص٦٩)

मस्अला :- रुकूअ़ का अदना दरजा येह है कि इतना झुकें कि हाथ बढ़ाएं तो घुटने तक पहुंच जाएं। और पूरा रुकूअ़ येह है कि इतना झुके कि पीठ सीधी बिछा दे। (ردالمحتار، كتاب الصلوة، باب بحث الركوع والسجود ، ج٢،ص١٦٦)

मस्अला :- सजदे की ह़क़ीक़त येह है कि माथा ज़मीन पर जमा हुवा और कम से कम पाऊं की एक उंगली का पेट ज़मीन से लगा हो तो अगर किसी ने इस त़रह़ किया कि दोनों पाऊं ज़मीन से उठे रहे या सिर्फ़ उंगली की नोक ज़मीन से लगी रहे तो नमाज़ न होगी। एक उंगली के पेट का सजदे में ज़मीन से लगना तो फ़र्ज़ है मगर दोनों पाऊं की तीन तीन उंगलियों के पेट का ज़मीन से लगना वाजिब है और दोनों पाऊं की दसों उंगलियों का पेट सजदे में ज़मीन से लगा होना सुन्नत है।

मस्अला :- नमाज़ों की रक्अ़तों को पूरी कर लेने के बा'द पूरी अत्तह़िय्यात पढ़ने की मिक़्दार बैठना फ़र्ज़ है और इस का नाम क़ा'दए अख़ीरा है।

मस्अला :- क़ा'दए अख़ीरा के बा'द अपने क़स्द व इरादे और किसी अ़मल से नमाज़ को ख़त्म कर देना सलाम से हो या किसी दूसरे अ़मल से येह भी नमाज़ के फ़राइज़ में से है। लेकिन सलाम के इलावा अगर कोई दूसरा काम कर के नमाज़ को ख़त्म किया तो अगर्चे नमाज़ का फ़र्ज़ तो अदा हो गया लेकिन नमाज़ को दोबारा पढ़ना वाजिब है।

नमाज़ के वाजिबात :- नमाज़ में येह चीज़ें वाजिब हैं तक्बीरे तह़रीमा में लफ़्ज़ اَللّٰهُ اَكْبَرُ होना, اَلْحَمْدُ पढ़ना, फ़र्ज़ की पहली दो रक्अ़तों में और सुन्नत व नफ़्ल और वित्र की हर रक्अ़त में اَلْحَمْدُ के साथ कोई सूरह या तीन छोटी आयतों को मिलाना। फ़र्ज़ नमाज़ों में पहली दो रक्अ़तों में क़िराअत करना। اَلْحَمْدُ का सूरह से पहले होना, हर रक्अ़त में सूरह से पहले एक ही बार اَلْحَمْدُ पढ़ना। اَلْحَمْدُ और सूरह के दरमियान आमीन और بِسْمِ اللّٰهِ के सिवा कुछ और न पढ़ना। क़िराअत के फ़ौरन बा'द ही रुकूअ़ करना, सजदे में दोनों पाऊं की तीन तीन उंगलियों का पेट ज़मीन पर लगना, दोनों सजदों के दरमियान किसी रुक्न का फ़ासिल न होना, ता'दील या'नी रुकूअ़ व सुजूद और क़ौमा व जल्सा में कम से कम एक बार سُبْحٰنَ اللّٰهِ कहने के बराबर ठहरना, जल्सा या'नी दोनों सजदों के दरमियान बैठना। क़ौमा या'नी रुकूअ़ से सीधा खड़ा हो जाना, क़ा'दए ऊला अगर्चे नफ़्ल नमाज़ हो, हर क़ा'दा में पूरा तशह्हुद पढ़ना, लफ़्ज़ अस्सलाम दो बार कहना, वित्र में दुआ़ए क़ुनूत पढ़ना, वित्र में क़ुनूत की

तक्बीर, ईदैन की छे ज़ाइद तक्बीरें, ईदैन में दूसरी रक्अ़त के रुकूअ़ की तक्बीर और इस तक्बीर के लिये اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहना, हर जहरी नमाज़ में इमाम को बुलन्द आवाज़ से क़िराअत करना और ग़ैर जहरी नमाज़ों में आहिस्ता क़िराअत करना, हर फ़र्ज़ व वाजिब का उस की जगह पर अदा होना, हर रक्अ़त में एक ही रुकूअ़ होना और हर रक्अ़त में दो ही सजदे होना, दूसरी रक्अ़त पूरी होने से पहले क़ा'दा न करना, और चार रक्अ़त वाली नमाज़ों में तीसरी रक्अ़त पर क़ा'दा न करना, आयते सजदा पढ़ी तो सजदए तिलावत करना, सह्व हुवा तो सजदए सह्व करना, दो फ़र्ज़ या दो वाजिब या वाजिब व फ़र्ज़ के दरमियान तीन मरतबा سُبْحٰنَ اللّٰه कहने के बराबर वक़्फ़ा न होना। इमाम जब क़िराअत करे तो बुलन्द आवाज़ से हो या आहिस्ता उस वक़्त मुक़्तदी का चुप रहना, क़िराअत के सिवा तमाम वाजिबात में मुक़्तदी को इमाम की पैरवी करना।

(الفتاوى الهندية، كتاب الصلاة، الباب الرابع، الفصل الثانى فى واجبات الصلوٰة، ج۱، ص ۷۱)

नमाज़ की सुन्नतें :- नमाज़ में जो चीज़ें सुन्नत हैं इन का हुक्म येह है कि इन को क़स्दन न छोड़ा जाए और अगर ग़लती से छूट जाएं तो न सजदए सह्व की ज़रूरत है न नमाज़ दोहराने की। लेकिन अगर दोहराले तो अच्छा है। क्यूंकि नमाज़ की किसी सुन्नत को छोड़ देने से नमाज़ के षवाब में कमी हो जाती है।

नमाज़ की सुन्नतें येह हैं। तक्बीरे तह़रीमा के लिये हाथ उठाना, हाथों की उंगलियों को अपने ह़ाल पर छोड़ देना, या'नी बिल्कुल मिलाए न खुली रखे बल्कि अपने ह़ाल पर छोड़ दे, ब वक़्ते तक्बीर सर न झुकाना, हथेलियों और उंगलियों के पेट का क़िब्ला रू होना, तक्बीर कहने से पहले हाथ उठाना इसी त़रह़ क़ुनूत और ईदैन की तक्बीरों में भी, कानों तक हाथ ले जाने के बा'द तक्बीर कहना, औ़रत को सिर्फ़ मूंढों तक हाथ उठाना, इमाम का اَللّٰهُ اَكْبَرُ और سمع اللّٰه لمن حمده नीज़ सलाम बुलन्द आवाज़ से कहना, तक्बीर के बा'द हाथ लटकाए बिग़ैर बांध लेना, षना व तअ़व्वुज़ व बिस्मिल्लाह पढ़ना और आमीन कहना और इन सब का आहिस्ता होना, पहले षना फिर तअ़व्वुज़ फिर बिस्मिल्लाह और हर एक

के बा'द दूसरे को फ़ौरन पढ़ना, रुकूअ़ में तीन बार سُبْحَانَ رَبِّیَ الْعَظِیْم कहना और घुटनों को हाथों से पकड़ना और उंगलियों को ख़ूब खुली रखना, औ़रत को घुटने पर हाथ रखना और उंगलियों को कुशादा न रखना, ह़ालते रुकूअ़ में टांगें सीधी होना, रुकूअ़ के लिये اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहना, रुकूअ़ में पीठ को ख़ूब बिछी रखना, रुकूअ़ से उठने पर हाथ लटका हुवा छोड़ देना, रुकूअ़ से उठने में इमाम को سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہ कहना, मुक़्तदी को رَبَّنَا لَکَ الْحَمْدُ कहना और अकेले नमाज़ पढ़ने वालों को दोनों कहना सजदे के लिये और सजदे से उठने के लिये اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहना, सजदे में कम से कम तीन मरतबा سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی कहना, सजदा करने के लिये पहले घुटना फिर हाथ फिर नाक फिर माथा ज़मीन पर रखना और सजदे से उठने के लिये पहले माथा फिर नाक फिर हाथ फिर घुटना ज़मीन से उठाना, सजदे में बाज़ू का करवटों से और पेट का रानों से अलग रहना, सजदे की ह़ालत में कलाइयों को ज़मीन पर न बिछाना, औ़रत को सजदे में अपने बाज़ूओं को करवटों से, पेट को रान से, रान को पिन्डलियों से और पिन्डलियों को ज़मीन से मिला देना, दोनों सजदों के दरमियान मिष्ले तशह्हुद के बैठना और हाथों को रानों पर रखना, सजदे में हाथ की उंगलियों का क़िब्ला रू होना और मिली हुई होना और पाऊं की दसों उंगलियों के पेट का ज़मीन पर लगना, दूसरी रक्अ़त के लिये पंजों के बल घुटनों पर हाथ रख कर खड़ा होना, क़ा'दा में बायां पाऊं बिछा कर दोनों सुरीन इस पर रख कर बैठना, दाहिना क़दम खड़ा रखना और दाहिने क़दम की उंगलियों को क़िब्ला रुख़ करना, औ़रत को दोनों पाऊं दाहिनी जानिब निकाल कर बाईं सुरीन पर बैठना, दायां हाथ दाहिनी रान पर और बायां हाथ बाईं रान पर रखना और उंगलियों को अपनी ह़ालत पर छोड़ देना, कलिमए शहादत पर कलिमे की उंगली से इशारा करना, क़ा'दए अख़ीरा में अत्तह़िय्यात के बा'द दुरूद शरीफ़ और दुआ़ए माषूरा पढ़ना।

(الفتاوی الهندیة، الباب الرابع، الفصل الثالث فی سنن الصلوٰة و آدابها و کیفیتها، ج ۱، ص ۷۲-۷۶)

नमाज़ के मुस्तह़ब्बात :- ﴾1﴿ ह़ालते क़ियाम में सजदे की जगह पर नज़र करना ﴾2﴿ रुकूअ़ में क़दम की पुश्त पर देखना ﴾3﴿ सजदे में नाक पर नज़र रखना ﴾4﴿ क़ा'दा में सीने पर नज़र जमाना ﴾5﴿ पहले सलाम में दाहिने शाने को देखना ﴾6﴿ दूसरे सलाम में बाएं शाने पर नज़र करना ﴾7﴿ जमाई आए तो मुंह बन्द किये रहना और इस से जमाई न रुके तो होंट दांत के नीचे दबाए और इस से भी न रुके तो क़ियाम की ह़ालत में दाहिने हाथ की पुश्त से मुंह ढ़ांक ले और क़ियाम के इलावा दूसरी ह़ालतों में बाएं हाथ की पुश्त से जमाई रोकने का मुजर्रब त़रीक़ा येह है कि दिल में येह ख़याल करे कि अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को जमाई नहीं आती थी दिल में येह ख़याल आते ही जमाई का आना बन्द हो जाएगा ﴾8﴿ मर्द के लिये तक्बीरे तह़रीमा के वक़्त हाथ कपड़े से बाहर निकालना ﴾9﴿ औ़रत के लिये कपड़े के अन्दर बेहतर है ﴾10﴿ जहां तक मुमकिन हो खांसी को दफ़्अ़ करना ﴾11﴿ जब मुकब्बिर حَيَّ عَلَى الْفَلَاحْ कहे तो इमाम व मुक़्तदी सब को खड़ा हो जाना ﴾12﴿ मुकब्बिर قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوةُ कहे तो नमाज़ शुरूअ़ कर सकता है मगर बेहतर येह है कि इक़ामत पूरी हो जाने पर नमाज़ शुरूअ़ करे ﴾13﴿ दोनों पंजों के दरमियान चार उंगल का फ़ासिला होना ﴾14﴿ मुक़्तदी को इमाम के साथ शुरूअ़ करना ﴾15﴿ सजदा ज़मीन पर बिला कुछ बिछाए हुए करना।

(الفتاوی الهندیة، الباب الرابع، الفصل الثالث فی سنن الصلوٰۃ وآدابها وکیفیتها، ج۱، ص۷۲)

नमाज़ के बा'द ज़िक्रो दुआ़

नमाज़ के बा'द बहुत से अज़्कार और दुआ़ओं के पढ़ने का ह़दीषों में ज़िक्र है इन में से जिस क़दर पढ़ सके पढ़े लेकिन ज़ोहर व मग़रिब व इ़शा में तमाम वज़ाइफ़ सुन्नतों से फ़ारिग़ होने के बा'द पढ़ें। सुन्नत से पहले मुख़्तसर दुआ़ पर क़नाअ़त करना चाहिये वरना सुन्नतों का षवाब कम हो जाएगा इस का ख़याल रहे।

फ़ाइदा :- ह़दीषों में जिन दुआ़ओं के बारे में जो ता'दाद मुक़र्रर है इन से कम या ज़ियादा न करे क्यूंकि जो फ़ज़ाइल इन दुआ़ओं के हैं वोह इन्हीं अ़ददों के साथ मख़्सूस हैं इन में कमी बेशी की मिषाल येह है कि कोई ताला किसी ख़ास क़िस्म की कुंजी से खुलता है तो अगर इस कुंजी के दनदाने कुछ कम या ज़ाइद कर दें तो इस से वोह ताला न खुलेगा अलबत्ता अगर गिनती शुमार करने में शक हो तो ज़ियादा कर सकता है और येह ज़ियादा करना गिनती बढ़ाने के लिये नहीं है बल्कि गिनती को यक़ीनी त़ौर पर पूरी करने के लिये है।

एक मस्नून वज़ीफ़ा :- हर नमाज़ के बा'द तीन मरतबा इस्तिग़फ़ार और एक मरतबा आयतुल कुरसी और एक एक बार قُلْ هُوَ اللّٰه और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَق और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ पढ़े और 33 मरतबा سبحان اللّٰه 33 मरतबा اَلْحَمْدُ لِلّٰه 34 मरतबा اَللّٰهُ اَكْبَرُ और

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْئٍ قَدِيْرٌ ط

एक बार पढ़ ले तो उस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे अगर्चे समुन्दर के झाग के बराबर हों और वोह ना मुराद नहीं रहेगा।

जमाअ़त व इमामत का बयान

जमाअ़त की बहुत ताकीद है और इस का षवाब बहुत ज़ियादा है यहां तक कि बे जमाअ़त की नमाज़ से जमाअ़त वाली नमाज़ का षवाब सत्ताईस गुना है।

(صحیح مسلم ، کتاب المساجد ومواضع الصلاۃ، باب فضل صلاۃ الجماعۃوبیان التشدیدفی التخلف عنھا،رقم ٦٥٠،ص٣٢٦)

मस्अला :- मर्दों को जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ना वाजिब है बिला उ़ज़्र एक बार भी जमाअ़त छोड़ने वाला गुनाहगार और सज़ा के लाइक़ है और जमाअ़त छोड़ने की आ़दत डालने वाला फ़ासिक़ है जिस की गवाही क़बूल नहीं की जाएगी और बादशाहे इस्लाम उस को सख़्त सज़ा देगा और अगर पड़ोसियों ने सुकूत किया तो वोह भी गुनाहगार होंगे।

(الدرالمختارورد المحتار، کتاب الصلاۃ ،باب الامامۃ، مطلب شروط الامامۃ الکبری، ج٢،ص٣٤٠ـ٣٤١)

मस्अला :- जुमुआ़ व ई़दैन में जमाअ़त शर्त़ है या'नी बिग़ैर जमाअ़त येह नमाज़ें होंगी ही नहीं तरावीह़ में जमाअ़त सुन्नते किफ़ाया है या'नी मह़ल्ले के कुछ लोगों ने जमाअ़त से पढ़ी तो सब के ज़िम्मे से जमाअ़त छोड़ने की बुराई जाती रही और अगर सब ने जमाअ़त छोड़ी तो सब ने बुरा किया। रमज़ान शरीफ़ में वित्र को जमाअ़त से पढ़ना मुस्तह़ब है। सुन्नतों और नफ़्लों में जमाअ़त मकरूह है। (الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب الامامۃ، ج۲،ص۳۴۱-۳۴۲)

मस्अला :- जिन उ़ज़्रों की वजह से जमाअ़त छोड़ देने में गुनाह नहीं वोह येह हैं ﴿1﴾ ऐसी बीमारी कि मस्जिद तक जाने में मशक़्क़त और दुश्वारी हो ﴿2﴾सख़्त बारिश ﴿3﴾ बहुत ज़ियादा कीचड़ ﴿4﴾ सख़्त सर्दी ﴿5﴾ सख़्त अन्धेरी रात ﴿6﴾ आंधी ﴿7﴾ पाख़ाना पेशाब की ह़ाजत ﴿8﴾ रियाह़ का बहुत ज़ोर होना ﴿9﴾ ज़ालिम का ख़ौफ़ ﴿10﴾ क़ाफ़िला छूट जाने का ख़ौफ़ ﴿11﴾अन्धा होना ﴿12﴾ अपाहज होना ﴿13﴾ इतना बूढ़ा होना कि मस्जिद तक जाने से मजबूर हो ﴿14﴾ माल व सामान या खाना हलाक हो जाने का डर ﴿15﴾ मुफ़्लिस को क़र्ज़ ख़्वाह का डर ﴿16﴾ बीमार की देख भाल कि अगर येह चला जाएगा तो बीमार को तक्लीफ़ होगी या वोह घभराएगा। येह सब जमाअ़त छोड़ने के उ़ज़्र हैं।

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب الامامۃ، ج۲،ص۳۴۷-۳۴۹)

मस्अला :- औ़रतों को किसी नमाज़ में जमाअ़त की ह़ाज़िरी जाइज़ नहीं दिन की नमाज़ हो या रात की जुमुआ़ की हो या ई़दैन की औ़रत चाहे जवान हो या बुढ़िया। यूं भी औ़रतों को ऐसे मज्मओ़ं में जाना भी नाजाइज़ है जहां औ़रतों और मर्दों का इजतिमाअ़ हो।

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب الامامۃ، ج۲،ص۳۶۷)

मस्अला :- अकेला मुक़्तदी चाहे लड़का हो इमाम के बराबर दाहिनी त़रफ़ खड़ा हो। बाईं त़रफ़ या पीछे खड़ा होना मकरूह है दो मुक़्तदी हों

तो पीछे खड़े हों इमाम के बराबर खड़ा होना मकरूहे तन्ज़ीही है। दो से ज़ियादा का इमाम के बग़ल में खड़ा होना मकरूहे तह़रीमी है।

(الدرالمختار، كتاب الصلاة، باب الامامة، ج۲، ص۳٦۸۔۳۷۰)

मस्अला :- पहली सफ़ में और इमाम के क़रीब खड़ा होना अफ़्ज़ल है। लेकिन जनाज़े में पिछली सफ़ में होना अफ़्ज़ल है।

(الدرالمختار وردالمحتار، كتاب الصلاة، باب الامامة مطلب في الكلام على الصف الاول، ج۲، ص۳۷۲۔۳۷٤)

मस्अला :- इमाम होने का सब से ज़ियादा ह़क़दार वोह शख़्स है जो नमाज़ व त़हारत वग़ैरा के अह़काम सब से ज़ियादा जानने वाला है, फिर वोह शख़्स जो क़िराअत का इल्म ज़ियादा रखता हो। अगर कई शख़्स इन बातों में बराबर हों तो वोह शख़्स ज़ियादा ह़क़दार है जो ज़ियादा मुत्तक़ी हो। अगर इस में भी बराबर हों तो ज़ियादा उ़म्र वाला। फिर जिस के अख़्लाक़ ज़ियादा अच्छे हों। फिर ज़ियादा तहज्जुद गुज़ार। ग़रज़ कि चन्द आदमी बराबर दर्जे के हों तो इन में जो शरई ह़ैषिय्यत से फ़ौक़िय्यत रखता हो वोही ज़ियादा ह़क़दार है।

(الدرالمختار، كتاب الصلاة، باب الامامة، ج۲، ص۳٥۰۔۳٥۲)

मस्अला :- फ़ासिक़े मो'लिन जैसे शराबी, ज़िनाकार, जुवारी, सूदख़ोर, दाढ़ी मुंडाने वाला या कटा कर एक मुश्त से कम रखने वाला इन लोगों को इमाम बनाना गुनाह है और इन लोगों के पीछे नमाज़ मकरूहे तह़रीमी है और नमाज़ को दोहराना वाजिब है।

(الدرالمختار وردالمحتار، كتاب الصلاة، باب الامامة،مطلب في تكرار الجماعة في المسجد، ج۲، ص۳٥٥۔۳٦۰)

मस्अला :- राफ़ज़ी, ख़ारिजी, वहाबी और दूसरे तमाम बद मज़हबों के पीछे नमाज़ पढ़ना नाजाइज़ व गुनाह है अगर ग़लती से पढ़ ली तो फिर से पढ़े अगर दोबारा नहीं पढ़ेगा तो गुनाहगार होगा।

(ردالمحتار، كتاب الصلاة، مطلب البدعة خمسة اقسام، ج۲، ص۳٥۷۔۳٥۸)

मस्अला :- गंवार, अन्धे, ह़रामी, कोढ़ी, फ़ालिज की बीमारी वाले, बरस की बीमारी वाला, अम्रद इन लोगों को इमाम बनाना मकरूहे तन्ज़ीही है और कराहत उस वक़्त है जब कि जमाअ़त में और कोई इन लोगों से बेहतर हो और अगर येही इमामत के ह़क़दार हों तो कराहत नहीं और अन्धे की इमामत में तो ख़फ़ीफ़ कराहत है।

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب الامامۃ، ج۲،ص۳۵۵۔۳۶۰)

वित्र की नमाज़

वित्र की नमाज़ वाजिब है अगर किसी वजह से वित्र की नमाज़ वक़्त के अन्दर नहीं पढ़ी तो वित्र की क़ज़ा पढ़नी वाजिब है।

(الفتاوی الهندیۃ، کتاب الصلاۃ ، الباب الثامن فی صلاۃ الوتر،ج۱،ص ۱۱۰۔۱۱۱)

नमाज़े वित्र तीन रक्अ़तें एक सलाम से हैं दो रक्अ़त पर बैठे और सिर्फ़ अत्तहिय्यात पढ़ कर तीसरी रक्अ़त के लिये खड़ा हो जाए और तीसरी रक्अ़त में भी اَلْحَمْد और सूरह पढ़े फिर दोनों हाथ कान की लौ तक उठाए और اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर फिर हाथ बांध ले और दुआ़ए क़ुनूत पढ़े जब दुआ़ए क़ुनूत पढ़ चुके तो اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर रुकूअ़ करे और बाक़ी नमाज़ पूरी करे दुआ़ए क़ुनूत येह है।

दुआ़ए क़ुनूत :-

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِيْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَ نَشْكُرُكَ وَلَانَكْفُرُكَ وَ نَخْلَعُ وَ نَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ ط اَللّٰهُمَّ اِيَّا كَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّيْ وَ نَسْجُدُ وَ اِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ وَ نَرْجُوا رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ ط

मस्अला :- जो दुआ़ए कुनूत न पढ़ सके तो वोह येह पढ़े اَللّٰھُمَّ رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَۃً وَّفِی الْاٰخِرَۃِ حَسَنَۃً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ه और जिस से येह भी न हो सके तो तीन मरतबा اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ पढ़ ले उस की वित्र अदा हो जाएगी।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثامن فی صلاۃ الوتر، ج۱، ص ۱۱۱)

मस्अला :- दुआ़ए कुनूत वित्र में पढ़ना वाजिब है अगर भूल कर दुआ़ए कुनूत छोड़ दे तो सजदए सह्व करना ज़रूरी है और अगर क़स्दन छोड़ दिया तो वित्र को दोहराना पड़ेगा।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثامن فی صلاۃ الوتر، ج۱، ص ۱۱۱)

मस्अला :- दुआ़ए कुनूत हर शख़्स चाहे इमाम हो या मुक़्तदी या अकेला हमेशा पढ़े अदा हो या क़ज़ा रमज़ान हो या दूसरे दिनों में।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الثامن فی صلاۃ الوتر، ج۱، ص ۱۱۱)

मस्अला :- वित्र के सिवा किसी और नमाज़ में दुआ़ए कुनूत न पढ़े हां अलबत्ता अगर मुसलमानों पर कोई बड़ा ह़ादिषा वाक़ेअ़ हो तो फ़ज्र की दूसरी रक्अ़त में रुकूअ़ से पहले दुआ़ए कुनूत पढ़ सकते हैं इस को कुनूते नाज़िला कहते हैं। (الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، ج۲، ص ۵٤۱)

सजदए सह्व का बयान

जो नमाज़ में चीजें वाजिब हैं अगर इन में से कोई वाजिब भूल से छूट जाए तो इस की कमी को पूरा करने के लिये सजदए सह्व वाजिब है और इस का त़रीक़ा येह है कि नमाज़ के आख़िर में अत्तहिय्यात पढ़ने के बा'द दाहिनी त़रफ़ सलाम फैरने के बा'द दो मरतबा सजदा करे और फिर अत्तहिय्यात और दुरूद शरीफ़ और दुआ़ पढ़ कर दोनों त़रफ़ सलाम फैर दे। (الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، ج۲، ص ٦٥١-٦٥٣)

मस्अला :- अगर क़स्दन किसी वाजिब को छोड़ दिया तो सजदए सह्व काफ़ी नहीं बल्कि नमाज़ को दोहराना वाजिब है।

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السھو، ج۲، ص ٦٥٥)

मस्अला :- जो बातें नमाज़ में फ़र्ज़ हैं अगर इन में से कोई बात छूट गई तो नमाज़ होगी ही नहीं और सजदए सह्व से भी येह कमी पूरी नहीं हो सकती बल्कि फिर से इस नमाज़ को पढ़ना ज़रूरी है।

मस्अला :- एक नमाज़ में अगर भूल से कई वाजिब छूट गए तो एक मरतबा वोही दो सजदे सह्व के सब के लिये काफ़ी हैं चन्द बार सजदए सह्व की ज़रूरत नहीं।

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٥٥)

मस्अला :- पहले क़ा'दा में अत्तहिय्यात पढ़ने के बा'द तीसरी रक्अ़त के लिये खड़े होने में इतनी देर लगा दी की اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ पढ़ सके तो सजदए सह्व वाजिब है चाहे कुछ पढ़े या ख़ामोश रहे दोनों सूरतों में सजदए सह्व वाजिब है इस लिये ध्यान रखो कि पहले क़ा'दा में अत्तहिय्यात ख़त्म होते ही फ़ौरन तीसरी रक्अ़त के लिये खड़े हो जाओ।

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب سجود السهو، ج٢، ص٦٥٧)

नमाज़ फ़ासिद करने वाली चीज़ें

नमाज़ में बोलने से नमाज़ टूट जाती है चाहे जान बूझ कर बोले या भूल कर बोले, ज़ियादा बोले या एक ही बात बोले, अपनी ख़ुशी से बोले या किसी के मजबूर करने से बोले बहर सूरत नमाज़ टूट जाएगी इसी त़रह ज़बान से किसी को सलाम करे, अ़मदन हो या सहवन, नमाज़ जाती रहेगी यूहीं सलाम का जवाब देना भी नमाज़ को फ़ासिद कर देता है। किसी को छींक के जवाब में يرحمك الله कहा या ख़ुशी की ख़बर सुन कर اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहा या बुरी ख़बर सुन कर اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ कहा तो इन सूरतों में नमाज़ टूट जाएगी लेकिन अगर ख़ुद नमाज़ पढ़ने वाले को छींक आई तो हुक्म है कि वोह चुप रहे लेकिन उस ने اَلْحَمْدُ لِلّٰه कह दिया तो इस की नमाज़ फ़ासिद नहीं होगी। नमाज़ पढ़ने वाले ने अपने इमाम के ग़ैर

को लुक़्मा दे दिया तो इस की नमाज़ फ़ासिद हुई और अगर उस ने लुक़्मा ले लिया तो उस की भी नमाज़ जाती रहेगी और ग़लत़ लुक़्मा देने से लुक़्मा लेने वाले की नमाज़ जाती रहती है اَللّٰهُ اَكْبَرُ के अलिफ़ को खींच कर آللّٰهُ اَكْبَر कहना या اَكْبَر कहना या اَكْبَار कहना नमाज़ को फ़ासिद कर देता है इसी त़रह़ نَسْتَعِينُ को अलिफ़ के साथ نَسْتَاعِينُ पढ़े और اَنْعَمْتَ के تَ को पेश या ज़ेर या'नी اَنْعَمْتُ या اَنْعَمْتِ पढ़ने से भी नमाज़ जाती रहती है। आह, उह, उफ़, तुफ, दर्द या मुसीबत की वजह से कहे या आवाज़ के साथ रोए और कुछ ह़ुरूफ़ पैदा हुए तो इन सब सूरतों में नमाज़ टूट जाएगी। अगर मरीज़ की ज़बान से ह़ालते नमाज़ में बे इख़्तियार आह या उह या हाए निकल गया तो नमाज़ नहीं होगी इसी त़रह़ छींक खांसी या जमाई और डकार में जितने ह़ुरूफ़ मजबूरन ज़बान से निकल जाते हैं मुआ़फ़ हैं और इन से नमाज़ नहीं टूटती दांतों के अन्दर कोई खाने की चीज़ अटकी हुई थी नमाज़ पढ़ते हुए ज़बान चला कर इस को निकाल लिया और निगल गया तो अगर वोह चीज़ चने की मिक़्दार से कम है तो नमाज़ मकरूह हो गई और अगर चने के बराबर है तो नमाज़ टूट जाएगी नमाज़ पढ़ते हुए ज़ोर से क़हक़हा लगा कर हंस दिया तो नमाज़ भी टूट गई और वुज़ू भी टूट गया फिर से वुज़ू कर के नए सिरे से नमाज़ पढ़े। औ़रत नमाज़ पढ़ रही थी बच्चे ने उस की छाती चूसी और अगर दूध निकल आया तो नमाज़ जाती रही। नमाज़ में कुर्ता या पाजामा पहना या तहबन्द बांधा या दोनों हाथ से कमर बन्द बांधा तो नमाज़ टूट गई। एक रुक्न में तीन बार बदन खुजलाने से नमाज़ टूट जाती है। तीन मरतबा खुजलाने का येह मत़लब है कि एक मरतबा खुजलाया फिर हाथ हटा लिया, फिर खुजलाया फिर हटा लिया, फिर खुजलाया, येह तीन मरतबा हो गया और अगर एक मरतबा हाथ रख कर चन्द मरतबा हाथ को हिला कर खुजलाया मगर हाथ नहीं हटाया और बार बार खुजलाता रहा तो येह एक ही मरतबा खुजाना कहा जाएगा।

(الفتاوى الهندية، كتاب الصلاة، الباب السابع فيما يفسد الصلاة وما كره فيها، ج١، ص٩٨، ١٠٤)

नमाज़ी के आगे से गुज़रना नमाज़ को फ़ासिद नहीं करता ख़्वाह गुज़रने वाला मर्द हो या औ़रत लेकिन नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाला सख़्त गुनाहगार होता है ह़दीष में है कि नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाला अगर जानता कि इस पर क्या गुनाह है ? तो वोह ज़मीन में धंस जाने को गुज़रने से बेहतर जानता।

(الموطاالامام مالك، كتاب قصر الصلاة في السفر، باب التشديد في ان يمراحد___الخ، رقم ۳۷۱، ج۱، ص۱۵٤)

एक दूसरी ह़दीष में है कि नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाला अगर जानता कि इस में कितना बड़ा गुनाह है तो चालीस साल तक खड़े रहने को गुज़रने से बेहतर जानता। रावी का बयान है कि मैं नहीं जानता कि हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने चालीस दिन कहा या चालीस महीने या चालीस बरस। (ترمذی، کتاب الصلاۃ، باب ماجاء فی کراھیۃ المرور، رقم ۳۳٦، ج۱، ص۳٥٦)

नमाज़ के मकरूहात

नमाज़ में जो बातें मकरूह हैं वोह येह हैं : कपड़े या बदन या दाढ़ी मूंछ से खेलना, कपड़ा समेटना जैसे सजदे में जाते वक़्त आगे या पीछे से दामन या चादर या तहबन्द उठा लेना, कपड़ा लटकाना या'नी सर या कंधे पर कपड़ा चादर वग़ैरा इस त़रह़ डालना कि दोनों कनारे लटके रहें, किसी एक आस्तीन को आधी कलाई से चढ़ाना, दामन समेट कर नमाज़ पढ़ना, पेशाब पाख़ाना मा'लूम होते वक़्त या ग़लबए रियाह़ के वक़्त नमाज़ पढ़ना, मर्द का सर के बालों का जोड़ा बांध कर नमाज़ पढ़ना, उंगलियां चटख़ाना इधर उधर मुंह फैर कर देखना, आस्मान की त़रफ़ निगाह उठाना। मर्द का सजदा में कलाइयों को ज़मीन पर बिछाना, अत्तह़िय्यात में या दोनों सजदों के दरमियान दोनों हाथों को रान पर रखने की बजाए ज़मीन पर रख कर बैठना, किसी शख़्स के मुंह के सामने नमाज़ पढ़ना, चादर में इस त़रह़ लिपट कर नमाज़ पढ़ना कि बदन का कोई ह़िस्सा यहां तक कि हाथ भी बाहर न हों। पगड़ी इस त़रह़ बांधना कि बीच सर पर पगड़ी का कोई ह़िस्सा न हो, नाक और मुंह को छुपा कर नमाज़ पढ़ना, बे ज़रूरत खंखारना, क़स्दन जमाही लेना अगर ख़ुद ही

जमाही आ जाए तो ह़रज नहीं, जिस कपड़े पर जानदार की तस्वीर हो उसे पहन कर नमाज़ पढ़ना, तस्वीर का नमाज़ी के सर पर या'नी छत में होना या ऊपर लटकी हुई होना या दाएं बाएं दीवार में बनी या लगी होना या आगे पीछे तस्वीर का होना, जेब या हथेली में तस्वीर छुपी हुई हो तो नमाज़ में कराहत नहीं।

(الفتاوى الهندية، كتاب الصلاة،الباب السابع، الفصل الثاني فيما يكره في الصلاة وما لايكره، ج١،ص١٠٥، ١٠٨/ الدرالمختار،كتاب الصلاة،باب مايفسدالصلاة ويكره فيها ،ج٢،ص٤٨٨_٥٠٣، ٥١١)

सजदागाह से कंकरियां उठाना मगर जब कि पूरे तौ़र पर सजदा न हो सकता हो तो एक बार हटा देने की इजाज़त है, नमाज़ में कमर पर हाथ रखना, नमाज़ के इ़लावा भी कमर पर हाथ न रखना चाहिये, कुर्ता चादर मौजूद होते हुए सिर्फ़ पाजामा या तहबन्द पहन कर नमाज़ पढ़ना, उलटा कपड़ा पहन कर नमाज़ पढ़ना, नमाज़ में बिला उ़ज़्र पालती मार कर बैठना, कपड़े को ह़द से ज़ियादा दराज़ कर के नमाज़ पढ़ना, मषलन इ़मामा का शिम्ला इतना लम्बा रखे कि बैठने में दब जाए या आस्तीन इतनी लम्बी रखे कि उंगलियां छुप जाए, पाजामा और तहबन्द टख़्ने से नीचे होना, नमाज़ में दाएं बाएं झूमना, उल्टा क़ुरआने मजीद पढ़ना, इमाम से पहले मुक़्तदी का रुकूअ़ व सजदा में जाना या इमाम से पहले सर उठाना येह तमाम बातें मकरूहे तह़रीमी हैं अगर नमाज़ में येह मकरूहात हो जाएं तो इस नमाज़ को दोहरा लेना चाहिये।

(الفتاوى الهندية، كتاب الصلاة،الباب السابع، الفصل الثاني فيما يكره في الصلاة وما لايكره، ج١،ص١٠٦/ الدرالمختار،كتاب الصلاة،باب مايفسدالصلاة ومايكره فيها ،ج٢،ص٤٩٣، ٤٩٦)

मस्अला :- नमाज़ में टोपी गिर पड़ी तो एक हाथ से उठा कर सर पर रख लेना बेहतर है और बार बार गिर पड़ती हो तो न उठाना अच्छा है।

मस्अला :- सुस्ती से नंगे सर नमाज़ पढ़ना या'नी टोपी से बोझ मा'लूम होता है या गर्मी लगती है इस वजह से नंगे सर नमाज़ पढ़ता है तो येह मकरूहे तन्ज़ीही है और अगर नमाज़ को ह़क़ीर ख़याल कर के

नंगे सर पढ़े जैसे येह ख़याल करे कि नमाज़ कोई ऐसी शानदार चीज़ नहीं है जिस के लिये टोपी या पगड़ी का एहतिमाम किया जाए तो येह कुफ़्र है और अगर ख़ुदा के दरबार में अपनी आ़जिज़ी और इन्किसारी ज़ाहिर करने के लिये नंगे सर नमाज़ पढ़े तो इस निय्यत से नंगे सर नमाज़ पढ़ना मुस्तहब होगा ख़ुलासए कलाम येह हैं कि **निय्यत पर दारो मदार है।**

(الدر المختار ورد المحتار، كتاب الصلاة، باب مايفسد الصلاة ويكره فيها، مطلب في الخشوع، ج٢، ص٤٩١)

मस्अला :- जलती हुई आग के सामने नमाज़ पढ़ना मकरूह है लेकिन चराग़ या लालटेन के सामने नमाज़ पढ़ने में कोई कराहत नहीं।

(الدر المختار ورد المحتار، كتاب الصلاة، باب مايفسد الصلاة ويكره فيها، مطلب الكلام على اتخاذ المسبحة، ج٢، ص٥١٠)

मस्अला :- बिग़ैर उ़ज़्र हाथ से मख्खी मच्छर उड़ाना मकरूह है।

(الفتاوى الهندية، كتاب الصلاة، الباب السابع، الفصل الثاني فيمايكره في الصلاة وما لايكره، ج١، ص١٠٩)

मस्अला :- दौड़ते हुए नमाज़ को जाना मकरूह है।

मस्अला :- नमाज़ में उठते बैठते आगे पीछे पाऊं हटाना मकरूह है।

(الفتاوى الهندية، كتاب الصلاة، الباب السابع، الفصل الثاني، ج١، ص١٠٨)

नमाज़ तोड़ने के आ'ज़ार :- या'नी किन किन सूरतों में नमाज़ तोड़ देना जाइज़ है।

मस्अला :- कोई डूब रहा हो या आग से जल जाएगा या अन्धा कुंवें में गिर पड़ेगा तो इन सूरतों में नमाज़ी पर वाजिब है कि नमाज़ तोड़ कर उन लोगों को बचाए यूंही अगर कोई किसी को क़त्ल कर रहा हो और वोह फ़रियाद कर रहा हो और येह उस को बचाने की क़ुदरत रखता हो तो इस पर वाजिब है कि नमाज़ तोड़ कर उस की मदद के लिये दौड़ पड़े।

(الدر المختار ورد المحتار، كتاب الصلاة، باب ادراك الفريضة، ج٢، ص٦٠٩/ الفتاوى الهندية، كتاب الصلاة، الباب السابع، الفصل الثاني ومما يتصل بذلك مسائل، ج١، ص١٠٩)

मस्अला :- पेशाब पाख़ाना क़ाबू से बाहर मा'लूम हुवा या अपने कपड़े पर इतनी कम नजासत देखी जितनी नजासत के होते हुए नमाज़ हो सकती है या नमाज़ी को किसी अजनबी औ़रत ने छू दिया तो इन तीनों सूरतों में नमाज़ तोड़ देना मुस्तहब है।

मस्अला :- सांप वग़ैरा मारने के लिये जब कि काट लेने का सह़ीह़ डर हो तो नमाज़ तोड़ देना जाइज़ है।

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب ادراك الفريضة، ج٢، ص٦٠٨/

الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب السابع، الفصل الثانی ومما یتصل بذلك مسائل، ج١، ص١٠٩)

मस्अला :- अपने या किसी और के दिरहम के नुक़्सान का डर हो। जैसे दूध उबल जाएगा या गोश्त तरकारी के जल जाने का डर हो तो इन सूरतों में नमाज़ तोड़ देना जाइज़ है इसी त़रह़ एक दिरहम की कोई चीज़ चोर ले भागा तो नमाज़ तोड़ कर उस के पकड़ने की इजाज़त है।

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب ادراك الفريضة، ج٢، ص٦٠٩/ الفتاوی الھندیۃ،

کتاب الصلاۃ، الباب السابع، الفصل الثانی ومما یتصل بذلك مسائل، ج١، ص١٠٩)

मस्अला :- नमाज़ पढ़ रहा था कि रेल गाड़ी छूट गई और सामान रेल गाड़ी में है या रेल गाडी छूट जाने से नुक़्सान हो जाएगा तो नमाज़ तोड़ कर रेल गाड़ी पर सुवार हो जाना जाइज़ है।

मस्अला :- नफ़्ल नमाज़ में हो और मां-बाप पुकारें और उन को इस का नमाज़ में होना मा'लूम न हो तो नमाज़ तोड़ दे और जवाब दे। बा'द में इस नमाज़ की क़ज़ा पढ़ ले।

बीमार की नमाज़ का बयान

मस्अला :- अगर बीमारी की वजह से खड़े हो कर नमाज़ नहीं पढ़ सकता कि मरज़ बढ़ जाएगा या देर में अच्छा होगा या चक्कर आता है या खड़े हो कर पढ़ने से पेशाब का क़त़रा आएगा या नाक़ाबिले बरदाश्त दर्द हो जाएगा तो इन सब सूरतों में बैठ कर नमाज़ पढ़े।

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ المريض، ج٢، ص٦٨١-٦٨٢)

मस्अला :- अगर लाठी या दीवार से टेक लगा कर खड़ा हो सकता है, तो इस पर फ़र्ज़ है कि खड़े हो कर नमाज़ पढ़े। इस सूरत में अगर बैठ कर नमाज़ पढ़ेगा तो नमाज़ नहीं होगी।

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ المريض، ج٢، ص٦٨٣)

मस्अला :- अगर कुछ देर के लिये भी खड़ा हो सकता है अगर्चे इतना ही खड़ा हो कि खड़ा हो कर اَللّٰهُ اَكْبَرُ कह ले तो ज़रूरी है कि खड़ा हो कर اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहे फिर बैठे वरना नमाज़ न होगी।

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الصلاة، باب صلاة المریض، ج۲، ص۶۸۳)

मस्अला :- अगर रुकूअ़ व सुजूद न कर सकता हो तो बैठ कर नमाज़ पढ़े और रुकूअ़ व सुजूद इशारे से करे मगर रुकूअ़ के इशारे में सजदे के इशारे से सर को ज़ियादा न झुकाए।

(الدرالمختار، کتاب الصلاة، باب صلاة المریض، ج۲، ص۶۸۴۔۶۸۵)

मस्अला :- अगर बैठ कर भी नमाज़ न पढ़ सकता हो तो ऐसी सूरत में लैट कर नमाज़ पढ़े इस त़रह़ कि चित लैट कर क़िब्ला की त़रफ़ पाऊं करे। मगर पाऊं न फैलाए बल्कि घुटने खड़े रखे और सर के नीचे तकिया रख कर ज़रा सा सर को ऊंचा करे और रुकूअ़ व सुजूद सर के इशारे से करे।

(الدرالمختار، کتاب الصلاة، باب صلاة المریض، ج۲، ص۶۸۶۔۶۸۷)

मस्अला :- अगर मरीज़ सर से इशारा भी न कर सके तो नमाज़ साक़ित़ हो जाती है फिर अगर नमाज़ के छे वक़्त इसी ह़ालत में गुज़र गए तो क़ज़ा भी साक़ित़ हो जाती है।

(الدرالمختار، کتاب الصلاة، باب صلاة المریض، ج۲، ص۶۸۷)

मुसाफ़िर की नमाज़ का बयान

जो शख़्स तक़रीबन 92 किलो मीटर की दूरी का सफ़र का इरादा कर के घर से निकला और अपनी बस्ती से बाहर चला गया। तो शरीअ़त में येह शख़्स मुसाफ़िर हो गया। अब इस पर वाजिब हो गया कि क़स्र करे या'नी ज़ोहर, अ़स्र और इशा चार रक्अ़त वाली फ़र्ज़ नमाज़ों को दो ही रक्अ़त पढ़े। क्यूंकि इस के ह़क़ में दो ही रक्अ़त पूरी नमाज़ है।

(الدرالمختار، کتاب الصلاة، باب صلاة المسافر، ج۲، ص۷۲۲،۷۲۶)

मस्अला :- अगर मुसाफ़िर ने क़स्दन चार रक्अ़त पढ़ी और दो पर क़ा'दा किया तो फ़र्ज़ अदा हो गया और आख़िरी दो रक्अ़तें नफ़्ल हो गईं मगर गुनहगार हुवा अगर दो रक्अ़त पर क़ा'दा नहीं किया तो फ़र्ज़ अदा न हुवा। (الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ المسافر، ج۲، ص۷۳۳۔۷۳۴)

मस्अला :- मुसाफ़िर जब तक किसी जगह पन्दरह दिन या इस से ज़ियादा ठहरने की निय्यत न करे या अपनी बस्ती में न पहुंच जाए क़स्र करता रहेगा।

मस्अला :- मुसाफ़िर अगर मुक़ीम इमाम के पीछे नमाज़ पढ़े तो चार रक्अ़त पूरी पढ़े क़स्र न करे। (الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ المسافر، ج۲، ص۷۳۶)

मस्अला :- मुक़ीम अगर मुसाफ़िर इमाम के पीछे नमाज़ पढ़े तो इमाम मुसाफ़िर होने की वजह से दो ही रक्अ़त पर सलाम फैर देगा। अब मुक़ीम मुक़्तदियों को चाहिये कि इमाम के सलाम फैर देने के बा'द अपनी बाक़ी दो रक्अ़तें पढ़ें और इन दोनों रक्अ़तों में क़िराअत न करें बल्कि सूरए फ़ातिहा पढ़ने की मिक़्दार तक चुप चाप खड़े रहें।

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ المسافر، ج۲، ص۷۳۵)

मस्अला :- फ़ज्र व मग़रिब और वित्र में क़स्र नहीं।

मस्अला :- सुन्नतों में क़स्र नहीं है अगर मौक़अ़ हो तो पूरी पढ़े वरना मुआ़फ़ हैं। (ردالمحتار و درالمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ المسافر، ج۲، ص۷۳۷)

मस्अला :- मुसाफ़िर अपनी बस्ती से बाहर निकलते ही क़स्र शुरूअ़ कर देगा और जब तक अपनी बस्ती में दाख़िल न हो जाए या किसी बस्ती में पन्दरह दिन या इस से ज़ियादा दिन ठहरने की निय्यत न करे बराबर क़स्र ही करता रहेगा।

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ المسافر، ج۲، ص۷۲۶۔۷۲۸)

सजदए तिलावत का बयान

मस्अला :- कुरआने मजीद में चौदह आयतें ऐसी हैं कि जिन के पढ़ने या सुनने से पढ़ने वाले और सुनने वाले दोनों पर सजदा करना वाजिब हो जाता है इस को सजदए तिलावत कहते हैं।

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب سجود التلاوۃ، ج۲،ص ۶۹۴،۶۹۵)

मस्अला :- सजदए तिलावत का त़रीक़ा येह है कि क़िब्ला रुख़ खड़े हो कर اَللّٰہُ اَکۡبَرُ कहता हुवा सजदे में जाए और कम से कम तीन बार سُبۡحٰنَ رَبِّیَ الۡاَعۡلٰی कहे फिर اَللّٰہُ اَکۡبَرُ कहता हुवा खड़ा हो जाए बस, न इस में اَللّٰہُ اَکۡبَرُ कहते हुए हाथ उठाना है न इस में तशह्हुद है न सलाम।

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب سجود التلاوۃ، ج۲،ص ۶۹۹،۷۰۰)

मस्अला :- अगर आयते सजदा नमाज़ के बाहर पढ़ी है तो फ़ौरन ही सजदा कर लेना वाजिब नहीं है हां बेहतर येही है कि फ़ौरन ही कर ले और वुज़ू हो तो देर करनी मकरूहे तन्ज़ीही है।

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب سجود التلاوۃ، ج۲،ص ۷۰۳)

मस्अला :- अगर सजदे की आयत नमाज़ में पढ़ी है तो फ़ौरन ही सजदा करना वाजिब है अगर तीन आयत पढ़ने की मिक़्दार में देर लगा दी तो गुनाहगार होगा और अगर नमाज़ में सजदे की आयत पढ़ते ही फ़ौरन रुकूअ़ में चला गया और रुकूअ़ के बा'द नमाज़ के दोनों सजदों को कर लिया तो अगर्चे सजदए तिलावत की निय्यत न की हो मगर सजदए तिलावत भी अदा हो गया।

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب سجود التلاوۃ، ج۲،ص ۷۰۵)

मस्अला :- नमाज़ में आयते सजदा पढ़ी तो इस का सजदा नमाज़ ही में वाजिब है नमाज़ के बाहर येह सजदा अदा नहीं हो सकता।

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب سجود التلاوۃ، ج۲،ص ۷۰۵ /الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصلاۃ،الباب الثالث فی سجود التلاوۃ،ج ۱،ص ۱۳۴)

उर्दू ज़बान में अगर आयते सजदा का तर्जमा पढ़ दिया तब भी पढ़ने वाले और सुनने वाले दोनों पर सजदा वाजिब हो गया।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصلاۃ،الباب الثالث عشرفی سجود التلاوۃ،ج۱،ص۱۳۳)

मस्अला :- एक मजलिस में आयते सजदा पढ़ी और सजदा कर लिया फिर इसी मजलिस में दोबारा उसी आयत की तिलावत की तो दूसरा सजदा वाजिब नहीं होगा। खुलासा येह है कि एक मजलिस में अगर बार बार आयते सजदा पढ़ी तो एक ही सजदा वाजिब होगा और अगर मजलिस बदल कर वोही आयते सजदा पढ़ी तो जितनी मजलिसों में इस आयत को पढ़ेगा उतने ही सजदे इस पर वाजिब हो जाएंगे।

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ،باب سجود التلاوۃ،ج۲،ص۷۱۲)

मस्अला :- मजलिस बदलने की बहुत सी सूरतें हैं मषलन कभी तो जगह बदलने से मजलिस बदल जाती है जैसे मद्रसा एक मजलिस है और मस्जिद एक मजलिस है और कभी एक ही जगह में काम बदल जाने से मजलिस बदल जाती है जैसे एक ही जगह बैठ कर सबक़ पढ़ाया तो येह मजलिसे दर्स हुई फिर उसी जगह बैठे बैठे लोगों ने खाना शुरूअ़ कर दिया तो येह मजलिस बदल गई कि पहले मजलिसे दर्स थी अब मजलिसे त़आ़म हो गई किसी घर में एक कमरे से दूसरे कमरे में चले जाने, कमरे से सह़्न में चले जाने से मजलिस बदल जाती है किसी बड़े हॉल में एक कोने से दूसरे कोने में चले जाने से मजलिस बदल जाती है वग़ैरा वग़ैरा मजलिस के बदल जाने की बहुत सी सूरतें हैं।

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ،باب سجود التلاوۃ،ج۲،ص۷۱۲،۷۱۶/

الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصلاۃ،الباب الثالث عشرفی سجود التلاوۃ،ج۱،ص۱۳٤)

क़िराअत का बयान

क़िराअत या'नी कुरआन शरीफ़ पढ़ने में इतनी आवाज़ होनी चाहिये कि अगर बहरा न हो और शोरो गुल न हो तो ख़ुद अपनी आवाज़ सुन सके अगर इतनी आवाज़ भी न हुई तो क़िराअत नहीं हुई और नमाज़ न होगी। (الدرالمختار و ردالمحتار، کتاب الصلاۃ،فصل فی القرأۃ،ج۲،ص۳۰۸،۳۰۹)

मस्अला :- फ़ज्र में और मग़रिब व इशा की पहली दो रक्अ़तों में और जुमुआ़ व ईदैन व तरावीह़ और रमज़ान की वित्र में इमाम पर जहर के साथ क़िराअत करना वाजिब है और मग़रिब की तीसरी रक्अ़त में और इशा की तीसरी और चौथी रक्अ़त में ज़ोहर व अ़स्र की सब रक्अ़तों में आहिस्ता पढ़ना वाजिब है। (الدرالمختار، کتاب الصلاۃ،فصل فی القرأۃ،ج۲،ص۳۰٤،۳۰٦)

मस्अला :- जहर के येह मा'ना हैं कि इतनी ज़ोर से पढ़े कि कम से कम सफ़ में क़रीब के लोग सुन सकें और आहिस्ता पढ़ने के येह मा'ना हैं कि कम से कम ख़ुद सुन सके। (الدرالمختار، کتاب الصلاۃ،فصل فی القرأۃ،ج۲،ص۳۰۸)

मस्अला :- जहरी नमाज़ों में अकेले को इख़्तियार है चाहे ज़ोर से पढ़े चाहे आहिस्ता मगर ज़ोर से पढ़ना अफ़्ज़ल है।

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ،فصل فی القرأۃ،ج۲،ص۳۰٦)

मस्अला :- कुरआन शरीफ़ उल्टा पढ़ना मकरूहे तह़रीमी है मषलन येह कि पहली रक्अ़त में قُلْ هُوَاللّٰه और दूसरी रक्अ़त में تَبَّتْ يَدَا पढ़ना।

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ،فصل فی القرأۃ،ج۲،ص۳۳۰)

मस्अला :- दरमियान में एक छोटी सूरत छोड़ कर पढ़ना मकरूह है जैसे पहली रक्अ़त में قُلْ هُوَاللّٰه पढ़ी और दूसरी रक्अ़त में قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ पढ़ी और दरमियान में सिर्फ़ एक सूरह (قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ) छोड़ दी

लेकिन हां अगर दरमियान की सूरह पहले से बड़ी हो तो दरमियान में एक सूरह छोड़ कर पढ़ सकता है जैसे وَالتِّين के बा'द اِنَّآاَنْزَلْنَا पढ़ने में ह़रज नहीं और اذاجاء के बा'द قُلْ هُوَاللّٰه पढ़ना नहीं चाहिये।

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ،فصل فی القرأۃ،ج۲،ص۳۲۹، ۳۳۰)

मस्अला :- जुमुआ़ व ई़दैन में पहली रक्अ़त में सूरए जुमुआ़ और दूसरी रक्अ़त में सूरए मुनाफ़िक़ून या पहली रक्अ़त में سبح اسم ربك الاعلى और दूसरी रक्अ़त में هل اتاك حديث الغاشية पढ़ना सुन्नत है।

(ردالمحتار، کتاب الصلاۃ،مطلب السنۃ تکون سنۃ عین و سنۃ کفایۃ،ج۲،ص۳۲٤)

नमाज़ के बाहर तिलावत का बयान :- मुस्तह़ब येह है कि बा वुज़ू क़िब्ला रू अच्छे कपड़े पहन कर सह़ीह़ सह़ीह़ हुरूफ़ अदा कर के अच्छी आवाज़ से क़ुरआन शरीफ़ पढ़े लेकिन गाने के लहजे में नहीं कि गा कर क़ुरआन पढ़ना जाइज़ नहीं। तिलावत के शुरूअ़ में اَعُوْذُبِاللّٰه पढ़ना मुस्तह़ब है और सूरह के शुरूअ़ में بِسْمِ اللّٰهِ पढ़ना सुन्नत है दरमियाने तिलावत में कोई दुन्यावी कलाम या काम करे तो اَعُوْذُبِاللّٰه व بِسْمِ اللّٰهِ फिर पढ़ ले। (غنیۃ المستملی،فصل فی سجود السھو،القرأۃ خارج الصلاۃ،ص٤٩٥)

मस्अला :- ग़ुस्ल ख़ाने और नजासत की जगहों में क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना नाजाइज़ है। (غنیۃ المستملی،فصل فی سجود السھو،القرأۃ خارج الصلاۃ،ص٤٩٦)

मस्अला :- जब क़ुरआन शरीफ़ बुलन्द आवाज़ से पढ़ा जाए तो ह़ाज़िरीन पर सुनना फ़र्ज़ है जब कि वोह मजमअ़ सुनने की ग़रज़ से ह़ाज़िर हो वरना एक का सुनना काफ़ी है अगर्चे और लोग अपने अपने काम में हों। (غنیۃ المستملی،فصل فی سجود القرأۃ خارج الصلاۃ،ص٤٩٧/فتاوی رضویۃ،ج۲۳،ص۳٥۲)

मस्अला :- सब लोग मजमअ़ में ज़ोर से क़ुरआन शरीफ़ पढ़ें येह नाजाइज़ है अकसर उ़र्स व फ़ातिह़ा के मौक़ओं पर सब लोग ज़ोर ज़ोर से तिलावत करते हैं येह नाजाइज़ है अगर चन्द आदमी पढ़ने वाले हों तो सब लोग आहिस्ता पढ़ें।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الکراھیۃ،الباب الرابع فی الصلوۃ والتسبیح وقرأۃ القرآن۔۔۔الخ،ج٥،ص۳۱۷)

मस्अला :- बाज़ारों और कारख़ानों में जहां लोग काम में लगे हों ज़ोर से कुरआन शरीफ़ पढ़ना नाजाइज़ है क्यूंकि लोग अगर न सुनें तो गुनाह पढ़ने वाले पर होगा। (ردالمحتار، کتاب الصلوۃ،فصل فی القرأۃ،ص۳۲۹)

मस्अला :- कुरआन शरीफ़ बुलन्द आवाज़ से पढ़ना अफ़्ज़ल है जब कि नमाज़ी या बीमार या सोने वाले को तक्लीफ़ न पहुंचे।

(غنیۃ المتملی،فصل فی سجود السہو، القرأۃ خارج الصلوۃ،ص۴۹۷)

मस्अला :- कुरआन शरीफ़ को पीठ न की जाए न इस की त़रफ़ पाऊं फैलाएं न इस से ऊंची जगह बैठें न इस पर कोई किताब रखें अगर्चे ह़दीष व फ़िक़्ह की किताब हो।

मस्अला :- कुरआन शरीफ़ अगर बोसीदा हो कर पढ़ने के क़ाबिल नहीं रहा तो किसी पाक कपड़े में लपेट कर एह़तियात़ की जगह दफ़्न कर दें और इस के लिये लह़द बनाई जाए ताकि मिट्टी इस के ऊपर न पड़े कुरआन शरीफ़ को जलाना नहीं चाहिये बल्कि दफ़्न ही करना चाहिये।

(الفتاوی الھندیۃ،کتاب الکراھیۃ،الباب الخامس، ج۵،ص۳۲۳)

अह़कामे मस्जिद का बयान

जब मस्जिद में दाख़िल हो तो दुरूद शरीफ़ पढ़ कर اَللّٰھُمَّ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ पढ़े और जब मस्जिद से निकले तो दुरूद शरीफ़ के बा'द اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ पढ़े।

(سنن ابن ماجہ، کتاب المساجد والجماعات،باب الدعاء عند دخول المسجد، رقم۷۷۲،ج۱،ص۴۲۵)

मस्अला :- मस्जिद की छत का भी मस्जिद ही की त़रह़ अदबो एह़तिराम लाज़िम है बिला ज़रूरत मस्जिद की छत पर चढ़ना मकरूह है।

(ردالمختار، کتاب الصلاۃ،مطلب فی احکام المسجد،ج۲،ص۵۱۶)

मस्अला :– बच्चे को और पागल को जिन से गंदगी का गुमान हो मस्जिद में ले जाना ह़राम है और अगर नजासत का डर न हो तो मकरूह है।

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ،باب مایفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا ، ج۲،ص۵۱۸)

मस्अला :– मस्जिद का कूड़ा झाड़ कर ऐसी जगह डाले जहां बे अदबी न हो। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़ि. 3, स. 184)

मस्अला :– नापाक कपड़ा पहन कर या कोई भी नापाक चीज़ ले कर मस्जिद में जाना मन्अ़ है यूंही नापाक तेल मस्जिद में जलाना या नापाक गारा मस्जिद में लगाना मन्अ़ है।

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ،باب مایفسد الصلاۃ وما یکرہ فیھا ، ج۲،ص۵۱۷)

मस्अला :– वुज़ू के बा'द बदन का पानी मस्जिद में झाड़ना, मस्जिद में थूकना या नाक साफ़ करना नाजाइज़ है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصلاۃ،فصل کرہ غلق باب المسجد، ج۱،ص۱۱۰)

मस्अला :– मस्जिद में इन आदाब का ख़याल रखे ﴾1﴿ जब मस्जिद में दाख़िल हो तो सलाम करे बशर्ते कि जो लोग वहां मौजूद हों ज़िक्रो दर्स में मश्ग़ूल न हों और अगर नमाज़ में हों या मस्जिद में कोई न हो तो यूं कहे اَلسَّلَامُ عَلَیْنَا وَعَلٰی عِبَادِاللّٰہِ الصّٰلِحِیْنَ ﴾2﴿ वक़्ते मकरूह न हो तो दो रक्अ़त तह़िय्यतुल मस्जिद अदा करे ﴾3﴿ ख़रीदो फ़रोख़्त न करे ﴾4﴿ नंगी तलवार मस्जिद में न ले जाए ﴾5﴿ गुमी हुई चीज़ मस्जिद में न ढूंढे ﴾6﴿ ज़िक्र के सिवा आवाज़ बुलन्द न करे ﴾7﴿ दुन्या की बातें न करे ﴾8﴿ लोगों की गर्दनें न फलांगे ﴾9﴿ जगह के मुतअ़ल्लिक़ किसी से झगड़ा न करे बल्कि जहां ख़ाली जगह पाए वहां नमाज़ पढ़ ले और इस

तरह न बैठे कि जगह में दूसरों के लिये तंगी हो ﴾10﴿ किसी नमाज़ी के आगे से न गुज़रे ﴾11﴿ मस्जिद में थूक खंकार या कोई गंदी या घिनावनी चीज़ न डाले ﴾12﴿ उंगलियां न चटख़ाए ﴾13﴿ नजासत और बच्चों और पागलों से मस्जिद को बचाए ﴾14﴿ ज़िक्रे इलाही की कषरत करे।

(الفتاوى الهندية، كتاب الكراهية،الباب الخامس فى آداب المسجد...إلخ،ج٥،ص ٣٢١)

मस्अला :– कच्चा लहसन प्याज़ या मूली खा कर जब तक मुंह में बदबू बाक़ी रहे मस्जिद में जाना जाइज़ नहीं येही हुक्म हर उस चीज़ का है जिस में बदबू है कि इस से मस्जिद को बचाया जाए और इस को बिग़ैर दूर किये हुए मस्जिद में न जाया जाए।

(ردالمحتار، كتاب الصلاة،مطلب فى الغرس فى المسجد،ج٢،ص ٥٢٥)

मस्अला :– मस्जिद की सफ़ाई के लिये चमगादड़ों और कबूतरों और चिड़ियों के घोंसलों को नोचने में कोई ह़रज नहीं है।

(الدرالمختار، كتاب الصلاة،باب مايفسد الصلاة وما يكره فيها، ج٢،ص ٥٢٨)

मस्अला :– अपने मह़ल्ले की मस्जिद में नमाज़ पढ़ना अगर्चे जमाअ़त कम हो जामेअ़ मस्जिद से अफ़्ज़ल है बल्कि अगर मह़ल्ले की मस्जिद में जमाअ़त न हुई तो तन्हा जाए और अज़ान व इक़ामत कह कर अकेले नमाज़ पढ़े येह जामेअ़ मस्जिद की जमाअ़त से अफ़्ज़ल है।

(صغيرى ،فصل فى احكام المسجد ، ص ٣٠٢)

सुन्नतों और नफ़्लों का बयान

सुन्नत की दो क़िस्में हैं एक सुन्नते मुअक्कदा और दूसरी सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा।

मस्अला :- सुन्नते मुअक्कदा येह हैं दो रक्अ़त फ़ज्र की सुन्नत फ़र्ज़ नमाज़ से पहले, चार रक्अ़त ज़ोहर की सुन्नत फ़र्ज़ नमाज़ से पहले और दो रक्अ़त बा'द में, मग़रिब के बा'द दो रक्अ़त सुन्नत, इ़शा के बा'द दो रक्अ़त सुन्नत, जुमुआ़ से पहले चार रक्अ़त सुन्नत और जुमुआ़ के बा'द चार रक्अ़त सुन्नत। येह सब सुन्नतें मुअक्कदा हैं या'नी इन को पढ़ने की ताकीद हुई है बिला उ़ज्र एक मरतबा भी तर्क करे तो मलामत के क़ाबिल है और इस की आ़दत डाले तो फ़ासिक़ व जहन्नम के लाइक़ है और इस के लिये शफ़ाअ़त से मह़रूम हो जाने का डर है इन मुअक्कदा सुन्नतों को **"सुननुल हुदा"** भी कहते हैं।

(ردالمحتار، کتاب الصلاۃ،مطلب فی السنن والنوافل،ج۲،ص۵٤٥)

मस्अला :- सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा येह हैं चार रक्अ़त अ़स्र से पहले, चार रक्अ़त इ़शा से पहले, इसी त़रह़ इ़शा के बा'द दो रक्अ़त की बजाए चार रक्अ़त और जुमुआ़ की फ़र्ज़ नमाज़ अदा करने के बा'द बजाए चार रक्अ़त सुन्नत के छे रक्अ़त। सुन्नते मग़रिब के बा'द छे रक्अ़त "सलातुल अव्वाबीन" और दो रक्अ़त तह़िय्यतुल मस्जिद दो रक्अ़त तह़िय्यतुल वुज़ू (अगर मकरूह वक़्त न हो), दो रक्अ़त नमाज़े इशराक़, कम से कम दो रक्अ़त नमाज़े चाश्त और ज़ियादा से ज़ियादा बारह रक्अ़त, कम से कम दो रक्अ़त और ज़ियादा से ज़ियादा आठ रक्अ़त नमाज़े तहज्जुद,

सलातुत्तस्बीह़, नमाज़े इस्तिख़ारा, नमाज़े ह़ाजत वग़ैरा इन सुन्नतों को अगर पढ़े तो बहुत ज़ियादा षवाब है और अगर न पढ़े तो कोई गुनाह नहीं है। इन सुन्नतों को, "**सुननुज़्ज़वाइद**" और कभी "**सुन्नते मुस्तह़ब्बा**" भी कहते हैं।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصلاۃ،الباب التاسع فی النوافل، ج۱،ص ۱۱۲ / الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ،باب الوتر والنوافل مطلب فی السنن والنوافل، ج۲،ص ٥٤٦،٥٤٧)

मस्अला :- क़ियाम की क़ुदरत होने के बा वुजूद नफ़्ल नमाज़ बैठ कर पढ़ना जाइज़ है लेकिन जब क़ुदरत हो तो नफ़्ल को भी खड़े हो कर पढ़ना अफ़्ज़ल है और दो गुना षवाब मिलता है।

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ،باب الوتر والنوافل، مطلب مبحث المسائل الستۃ عشریۃ، ج۲، ٥٨٤)

नमाज़े तहि़य्यतुल वुज़ू

मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीष में है कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स अच्छी त़रह़ वुज़ू करे और ज़ाहिर व बात़िन के साथ मुतवज्जेह हो कर दो रक्अ़त (नमाज़ तहि़य्यतुल वुज़ू) पढ़े उस के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है।

(صحیح مسلم، کتاب الطھارۃ،باب الذکر المستحب عقب الوضوء ،رقم ٢٣٤،ص ١٤٤)

नमाज़े इश्राक़

तिरमिज़ी शरीफ़ में है कि हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स फ़ज्र की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ कर ज़िक्रे इलाही करता रहे यहां तक कि सूरज बुलन्द हो जाए फिर दो रक्अ़त (नमाज़े इश्राक़) पढ़े तो उसे पूरे एक ह़ज और एक उ़मरे का षवाब मिलेगा।

(جامع الترمذی، کتاب السفر، باب ذکر ما یستحب من الجلوس فی المسجد بعد صلاۃ الصبح حتی تطلع الشمس، ج۲،رقم٥٨٦،ص ١٠٠)

नमाज़े चाश्त

चाश्त की नमाज़ कम से कम दो रक्अ़त और ज़ियादा से ज़ियादा बारह रक्अ़त है हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स चाश्त की दो रक्अ़तों को हमेशा पढ़ता रहे उस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे अगर्चे वोह समुन्दर के झाग के बराबर हों।

(جامع الترمذی، کتاب الوتر، باب ماجاء فی صلاۃ الضحٰی ،رقم٤٧٥، ج٢، ص١٩/

الدرالمختار، کتاب الصلاہ، باب الوتر و النوافل، ج٢، ص٥٦٣)

नमाज़े तहज्जुद

नमाज़े तहज्जुद का वक़्त इशा की नमाज़ के बा'द सो कर उठे उस के बा'द से सुब्ह़े सादिक़ तुलूअ़ होने के वक़्त तक है। तहज्जुद की नमाज़ कम से कम दो रक्अ़त और ज़ियादा से ज़ियादा हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم से आठ रक्अ़त तक षाबित है ह़दीषों में इस नमाज़ की बहुत ज़ियादा फ़ज़ीलत बयान की गई है।

(ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی صلاۃ اللیل، ج٢، ص٥٦٧)

सलातुत्तस्बीह़

इस नमाज़ का बे इन्तिहा षवाब है ह़दीष शरीफ़ में है हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم ने अपने चचा ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया कि ऐ मेरे चचा अगर हो सके तो सलातुत्तस्बीह़ हर रोज़ एक बार पढ़ो और अगर रोज़ाना न हो सके तो हर जुमुआ़ को एक बार पढ़ो और येह भी न हो सके तो हर महीने में एक बार और येह भी न हो सके तो साल में एक बार और येह भी न हो सके तो उ़म्र में एक बार। इस नमाज़ की तरकीब येह है कि तक्बीरे तह़रीमा के बा'द षना पढ़े फिर पन्दरह मरतबा येह तस्बीह़ पढ़े سُبْحَانَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَآ اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ ط फिर اَعُوْذُ بِاللّٰہِ और بِسْمِ اللّٰہِ और सूरए फ़ातिह़ा और कोई सूरह पढ़ कर रुकूअ़ से पहले

दस बार ऊपर वाली तस्बीह़ पढ़े फिर रुकूअ़ करे और रुकूअ़ में سُبْحَانَ رَبِّیَ الْعَظِیْم तीन मरतबा पढ़ कर फिर दस मरतबा ऊपर वाली तस्बीह़ पढ़े फिर रुकूअ़ से सर उठाए और سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہٗ और رَبَّنَا لَکَ الْحَمْدُ पढ़ कर फिर खड़े खड़े दस मरतबा ऊपर वाली तस्बीह़ पढ़े फिर सजदे में जाए और तीन मरतबा سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی पढ़ कर फिर दस मरतबा ऊपर वाली तस्बीह़ पढ़े फिर सजदे में से सर उठाए और दोनों सजदों के दरमियान बैठ कर दस मरतबा ऊपर वाली तस्बीह़ पढ़े फिर दूसरे सजदे में जाए और سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی तीन मरतबा पढ़े फिर इस के बा'द ऊपर वाली तस्बीह़ दस मरतबा पढ़े इसी त़रह़ चार रक्अ़त पढ़े और ख़याल रहे कि खड़े होने की ह़ालत में सूरए फ़ातिह़ा से पहले पन्दरह मरतबा ऊपर वाली तस्बीह़ पढ़े बाक़ी सब जगह दस दस बार ऊपर वाली तस्बीह़ पढ़े हर रक्अ़त में पछत्तर मरतबा तस्बीह़ पढ़ी जाएगी और चार रक्अ़तों में तस्बीह़ की गिनती तीन सो मरतबा होगी। अपने ख़याल से गिनता रहे या उंगलियों के इशारों से तस्बीह़ का शुमार करता रहे।

(جامع الترمذی، کتاب الوتر، باب ماجاء فی صلاۃ التسبیح، رقم ۴۸۱۔۴۸۲، ج۲، ص ۲۴، ۲۵)

नमाज़े ह़ाजत

ह़ज़रते ह़ुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रावी हैं कि जब ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को कोई अहम मुआ़मला पेश आता तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस के लिये दो या चार रक्अ़त नमाज़ पढ़ते।

(سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب وقت قیام النبی...الخ، رقم ۱۳۱۹، ج۲، ص ۵۲)

ह़दीष शरीफ़ में है कि पहली रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा और तीन बार आयतुल कुरसी पढ़े बाक़ी तीन रक्अ़तों में सूरए फ़ातिह़ा और قل ھو اللہ، قل اعوذ برب الفلق، قل اعوذ برب الناس एक एक बार पढ़े तो येह ऐसी हैं जैसे शबे क़द्र में चार रक्अ़तें पढ़ी। मशाइख़ फ़रमाते हैं कि हम ने येह नमाज़ पढ़ी और हमारी ह़ाजतें पूरी हुई और एक ह़दीष में येह भी है कि

जब कोई ह़ाजत पेश आ जाए तो अच्छा वुज़ू कर के दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े फिर तीन मरतबा इस आयत को पढ़े।

هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَالِمُ الْغَیْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ

फिर तीन बार سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ ط وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ पढ़े फिर तीन बार कोई दुरूद शरीफ़ पढ़े फिर येह दुआ़ पढ़े

لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِیْمُ الْكَرِیْمُ ط سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ ط اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ اَسْئَلُكَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالْغَنِیْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَّالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ اِثْمٍ لَا تَدَعْ لِیْ ذَنْبًا اِلَّا غَفَرْتَهٗ وَلَا هَمًّا اِلَّا فَرَّجْتَهٗ وَلَا حَاجَةً هِیَ لَكَ رِضًا اِلَّا قَضَیْتَهَا یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ ۔

(جامع الترمذی، کتاب الوتر، باب صلاة الحاجة، رقم ٤٧٨، ج ٢، ص ٢١)

اِنْ شَآءَ اللّٰه عزوجل उस की ह़ाजत पूरी होगी इसी त़रह़ ह़ज़रते उ़षमान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ कहते हैं कि एक साहिब जो नाबीना थे बारगाहे अक़्दस में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ करने लगे कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आप दुआ़ कीजिये कि **अल्लाह** तआ़ला मुझे आ़फ़िय्यत दे। आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि अगर तुम चाहो तो सब्र करो और येह तुम्हारे ह़क़ में बेहतर है। उन्हों ने अ़र्ज़ की, कि हुज़ूर दुआ़ कर दें तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन को येह हुक्म दिया कि तुम ख़ूब अच्छी त़रह़ वुज़ू करो और दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ कर येह दुआ़ पढ़ो :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُكَ وَاَتَوَجَّهُ اِلَیْكَ بِنَبِیِّكَ مُحَمَّدٍ نَّبِیِّ الرَّحْمَةِ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اِنِّیْ تَوَجَّهْتُ بِكَ اِلٰی رَبِّیْ فِیْ حَاجَتِیْ هٰذِهٖ لِیُقْضٰی لِیْ اَللّٰهُمَّ فَشَفِّعْهُ فِیَّ

ह़ज़रते उ़षमान बिन हुनैफ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का बयान है कि ख़ुदा की क़सम हम उठने भी न पाए थे अभी बातें ही कर रहे थे कि वोह नाबीना हमारे पास अख्यारे हो कर इस शान से आए कि गोया कभी अन्धे थे ही नहीं। (جامع الترمذی، کتاب احادیث شتی، باب ١٢٧، رقم ٣٥٨٩، ج ٥، ص ٣٣٦ ـ المعجم الکبیر للطبرانی، ج ٩، رقم ٨٣١١، ص ٣٠)

“सलातुल असरार”

दुआओं की मक़्बूलिय्यत और ह़ाजतों के पूरी होने के लिये एक मुजर्रब नमाज़ सलातुल असरार भी है जिस को इमाम अबुल ह़सन नूरुद्दीन अ़ली बिन जरीर ह़मी शत़नूफ़ी ने बहजतुल असरार में और मुल्ला अ़ली क़ारी व शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिषे देहल्वी عليهم الرحمه ने ह़ज़रते ग़ौषे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत करते हुए तह़रीर फ़रमाया है इस की तरकीब येह है कि बा'द नमाज़े मग़रिब सुन्नतें पढ़ कर दो रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल पढ़े और बेहतर येह है कि اَلْحَمْدُ के बा'द हर रक्अ़त में ग्यारह ग्यारह मरतबा قُلْ هُوَاللّٰهُ पढ़े और ग्यारह मरतबा येह पढ़े يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ يَانَبِيَّ اللّٰهِ اَغِثْنِيْ وَاَمْدِدْنِيْ فِيْ قَضَاءِ حَاجَتِيْ يَا قَاضِيَ الْحَاجَاتِ फिर इराक़ की जानिब ग्यारह क़दम चले और हर क़दम पर येह पढ़े :

يَاغَوْثَ الثَّقَلَيْنِ يَا كَرِيْمَ الطَّرَفَيْنِ اَغِثْنِيْ وَاَمْدِدْنِيْ فِيْ قَضَاءِ حَاجَتِيْ يَا قَاضِيَ الْحَاجَاتِ ط

फिर हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को वसीला बना कर **अल्लाह** तआ़ला से अपनी ह़ाजत के लिये दुआ़ मांगे।

(بهجة الاسرار، ذكر فضل اصحابه و بشراهم، ص ١٩٧ ـ بهارشريعت، ج ١، حصه ٤، ص ٣١)

नमाज़े इस्तिख़ारा

ह़दीषों में आया है कि जब कोई शख़्स किसी काम का इरादा करे तो दो रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल पढ़े जिस की पहली रक्अ़त में اَلْحَمْدُ के बा'द قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ और दूसरी रक्अ़त में اَلْحَمْدُ के बा'द قُلْ هُوَاللّٰهُ पढ़े फिर येह दुआ़ पढ़ कर बा वुज़ू क़िब्ला की त़रफ़ मुंह कर के सो रहे दुआ़ के अव्वल व आख़िर सूरए फ़ातिह़ा और दुरूद शरीफ़ भी पढ़े दुआ़ येह है।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْتَخِيْرُكَ بِعِلْمِكَ وَاَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ وَاَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيْمِ فَاِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا اَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَا اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ط اَللّٰهُمَّ اِنْ

كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ خَيْرٌ لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ وَمَعِيْشَتِيْ وَ عَاقِبَةِ اَمْرِيْ وَ عَاجِلِ اَمْرِيْ وَ اٰجِلِهٖ فَاقْدُرْهُ لِيْ وَيَسِّرْهُ لِيْ ثُمَّ بَارِكْ لِيْ فِيْهِ وَاِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ شَرٌّ لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ وَمَعِيْشَتِيْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِيْ وَعَاجِلِ اَمْرِيْ وَاٰجِلِهٖ فَاصْرِفْهُ عَنِّيْ وَاصْرِفْنِيْ عَنْهُ وَاقْدُرْلِيَ الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ اَرْضِنِيْ بِهٖ

दोनों जगह **अल अम्र** की जगह अपनी ज़रूरत का नाम ले जैसे पहली जगह هٰذَا السَّفَرَ خَيْرٌ لِّيْ और दूसरी जगह में هٰذَ االسَّفَرَشَرٌّلِّيْ

(ردالمحتار، كتاب الصلاة،مطلب في ركعتي الاستخارة، ج٢،ص٥٦٩ /صحيح بخاري، كتاب التهجد،باب ماجاء في التطوع مثنى مثنى، رقم١١٦٢،ج١،ص٣٩٣بتغيرقليل)

मस्अला :- बेहतर येह है कि कम से कम सात मरतबा इस्तिख़ारा करे और फिर देखे जिस बात पर दिल जमे उसी में भलाई है बा'ज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि इस्तिख़ारा करने में अगर ख़्वाब के अन्दर सपेदी या सब्ज़ी देखे तो अच्छा है और अगर सियाही या सुर्ख़ी देखे तो बुरा है।

(ردالمحتار، كتاب الصلاة ،مطلب في ركعتي الاستخارة، ج٢،ص٥٧٠/ كنزالعمال، كتاب الصلاة،صلاة الاستخارة من الاكمال، ج٨،رقم ٢١٥٣٥،ص٣٣٦)

तरावीह़ का बयान

मस्अला :- मर्द व औ़रत सब के लिये तरावीह़ सुन्नते मुअक्कदा है इस का छोड़ना जाइज़ नहीं। औ़रतें घरों में अकेले अकेले तरावीह़ पढ़ें मस्जिदों में न जाएं। (الدرالمختار، كتاب الصلاة،باب الوتروالنوافل، ج٢،ص٥٩٧)

मस्अला :- तरावीह़ बीस रक्अ़तें दस सलाम से पढ़ी जाएं या'नी हर दो रक्अ़त पर सलाम फेरे और हर चार रक्अ़त पर इतनी देर बैठना मुस्तह़ब है जितनी देर में चार रक्अ़त पढ़ी हैं और इख़्तियार है कि इतनी देर चाहे चुपका बैठा रहे चाहे कलिमा या दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहे या कोई और भी दुआ़ पढ़ता रहे आ़म तौ़र से येह दुआ़ पढ़ी जाती है :

سُبْحَانَ ذِی الْمُلْكِ وَ الْمَلَكُوْتِ سُبْحَانَ ذِی الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ وَالْهَيْبَةِ وَالْقُدْرَةِ وَالْكِبْرِيَآءِ وَالْجَبَرُوْتِ سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْحَيِّ الَّذِیْ لَا يَنَامُ وَلَا يَمُوْتُ سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَّبُّنَا وَرَبُّ الْمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوْحِ۔

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، مطلب مبحث صلاۃ التراویح، ج۲، ص۵۹۹، ۶۰۰)

मस्अला :- मर्दों के लिये तरावीह़ जमाअ़त से पढ़ना सुन्नते किफ़ाया है या'नी अगर मस्जिद में तरावीह़ की जमाअ़त न हुई तो मह़ल्ले के सब लोग गुनहगार होंगे और अगर कुछ लोगों ने मस्जिद में जमाअ़त से तरावीह़ पढ़ ली तो सब लोग बरियुज़्ज़िम्मा हो गए।

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، ج۲، ص۵۹۸، ۵۹۹)

मस्अला :- पूरे महीने की तरावीह़ में एक बार कुरआने मजीद ख़त्म करना सुन्नते मुअक्कदा है और दो बार ख़त्म करना अफ़्ज़ल है और तीन बार ख़त्म करना इस से ज़ियादा फ़ज़ीलत रखता है बशर्त़ येह कि मुक़्तदियों को तक्लीफ़ न हो मगर एक बार ख़त्म करने में मुक़्तदियों की तक्लीफ़ का लिह़ाज़ नहीं किया जाएगा। (الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، ج۲، ص۶۰۱)

मस्अला :- जिस ने इशा की फ़र्ज़ नमाज़ नहीं पढ़ी वोह न तरावीह़ पढ़ सकता है न वित्र जब तक फ़र्ज़ न अदा करे।

मस्अला :- जिसने इशा की फ़र्ज़ नमाज़ तन्हा पढ़ी, तरावीह़ जमाअ़त से, तो वोह वित्र को तन्हा पढ़े।

(الدرالمختار وردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، مبحث صلاۃ التراويح، ج۲، ص۶۰۳)

वित्र को जमाअ़त से वोही पढ़ेगा जिस ने इशा के फ़र्ज़ को जमाअ़त के साथ पढ़ा हो।

मस्अला :- जिस की तरावीह़ की कुछ रक्अ़तें छूट गई हैं और इमाम वित्र पढ़ाने के लिये खड़ा हो जाए तो इमाम के साथ वित्र की नमाज़

जमाअ़त से पढ़ ले फिर इस के बा'द तरावीह़ की छूटी हुई रक्अ़तों को अदा करे बशर्त़ येह कि इशा के फ़र्ज़ जमाअ़त से पढ़ चुका हो और अगर छूटी हुई तरावीह़ की रक्अ़तों को अदा कर के वित्र तन्हा पढ़े तो येह भी जाइज़ है मगर पहली सूरत अफ़्ज़ल है।

(درالمختار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، ج۲، ص۵۹۸)

मस्अला :- अगर किसी वजह से तरावीह़ में ख़त्मे कुरआन न हो सके तो सूरतों से तरावीह़ पढ़ें और इस के लिये बा'ज़ों ने येह त़रीक़ा रखा है कि الم ترکیف से आख़िर तक दो बार पढ़ने में बीस रक्अ़तें हो जाएंगी।

(ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مبحث صلاۃ التراویح، ج۲، ص۶۰۲)

मस्अला :- बिला किसी उ़ज़्र के बैठ कर तरावीह़ पढ़ना मकरूह है बल्कि बा'ज़ फ़ुक़हा के नज़दीक तो होगी ही नहीं (درمختار،ج۱،ص۴۷۵) हां अगर बीमार या बहुत ज़ियादा बुढ्ढा और कमज़ोर हो तो बैठ कर तरावीह़ पढ़ने में कोई कराहत नहीं क्यूंकि येह बैठना उ़ज़्र की वजह से है।

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، ج۲، ص۶۰۳)

मस्अला :- नाबालिग़ किसी नमाज़ में इमाम नहीं बन सकता।

(الهداية و فتح القدير، كتاب الصلاة، باب الامامة، ج۱، ص۳۶۷، ۳۶۸)

इसी त़रह़ नाबालिग़ के पीछे बालिग़ों की तरावीह़ नहीं होगी। साह़िबे हिदाया व साह़िबे फ़तहुल क़दीर ने इसी क़ौल को मुख़्तार बताया है।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الصلاۃ، الباب التاسع فی النوافل، فصل فی التراویح، ج۱، ص۱۱۶، ۱۱۷)

नमाज़ों की क़ज़ा का बयान

मस्अला :- किसी इबादत को उस के मुक़र्रर वक़्त पर अदा करने को अदा कहते हैं और वक़्त गुज़र जाने के बा'द अ़मल करने को क़ज़ा कहते हैं।

(ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی ان الامر یکون ـــ الخ، ج۲، ص۶۲۹)

मस्अला :- फ़र्ज़ नमाज़ों की क़ज़ा फ़र्ज़ है वित्र की क़ज़ा वाजिब है और फ़ज्र की सुन्नत अगर फ़र्ज़ के साथ क़ज़ा हो और ज़वाल से पहले पढ़े तो फ़र्ज़ के साथ सुन्नत भी पढ़े और अगर ज़वाल के बा'द पढ़े तो सुन्नत की क़ज़ा नहीं जुमुआ और ज़ोहर की सुन्नतें (क़ब्लिया) क़ज़ा हो गईं और फ़र्ज़ पढ़ लिया अगर वक़्त ख़त्म हो गया तो इन सुन्नतों की क़ज़ा नहीं और अगर वक़्त बाक़ी है तो इन सुन्नतों को पढ़े और अफ़्ज़ल येह है कि पहले फ़र्ज़ के बा'द वाली सुन्नतों को पढ़े फिर इन छुटी हुई सुन्नतों को पढ़े। (الدرالمختار وردالمحتار، كتاب الصلاة،باب قضاء الفوائت ،ج ٢،ص ٦٣٣)

मस्अला :- जिस शख़्स की पांच नमाज़ें या इस से कम क़ज़ा हों उस को साहिबे तरतीब कहते हैं उस पर लाज़िम है कि वक़्ती नमाज़ से पहले क़ज़ा नमाज़ों को पढ़ ले अगर वक़्त में गुंजाइश होते हुए और क़ज़ा नमाज़ को याद रखते हुए वक़्ती नमाज़ को पढ़ ले तो येह नमाज़ नहीं होगी।

(الدرالمختار، كتاب الصلاة،باب قضاء الفوائت،ج٢،ص ٦٣٣_٦٣٤)

मज़ीद तफ़्सील "बहारे शरीअ़त" में देखनी चाहिये।

मस्अला :- छे नमाज़ें या इस से ज़ियादा नमाज़ें जिस की क़ज़ा हो गई हों वोह साहिबे तरतीब नहीं अब येह शख़्स वक़्त की गुंजाइश और याद होने के बा वुजूद अगर वक़्ती नमाज़ पढ़ लेगा तो इस की नमाज़ हो जाएगी और छूटी हुई नमाज़ों को पढ़ने के लिये कोई वक़्त मुक़र्रर नहीं है उ़म्र भर में जब भी पढ़ लेगा बरियुज़्ज़िम्मा हो जाएगा।

(الدرالمختار، كتاب الصلاة،باب قضاء الفوائت، ج ٢،ص ٦٣٧)

मस्अला :- जिस रोज़ और जिस वक़्त की नमाज़ क़ज़ा हो जब उस नमाज़ की क़ज़ा पढ़े तो ज़रूरी है कि उस रोज़ और उस वक़्त की क़ज़ा की निय्यत करे मषलन जुमुआ के दिन फ़ज्र की नमाज़ क़ज़ा हो गई तो इस त़रह़ निय्यत करे कि निय्यत की मैं ने दो रक्अ़त जुमुआ के दिन की नमाज़े फ़ज्र की, **अल्लाह** तआ़ला के लिये, मुंह मेरा त़रफ़ का'बा शरीफ़ के, اَللّٰهُ اَكْبَرُ

(ردالمحتار، كتاب الصلاة،مطلب اذا اسلم المرتد هل تعود حسناته ام لا ، ج ٢،ص ٦٥٠)

मस्अला :- अगर चन्द महीने या चन्द बरसों की क़ज़ा नमाज़ों को पढ़े तो निय्यत करने में जो नमाज़ पढ़नी है उस का नाम ले और इस त़रह निय्यत करे मषलन : निय्यत की मैं ने, दो रक्अ़त नमाज़ फ़ज्र की, जो मेरे ज़िम्मे बाक़ी हैं इन में से पहली फ़ज्र की, **अल्लाह** तआ़ला के लिये, मुंह मेरा त़रफ़ का'बा शरीफ़ के اَللّٰهُ اَكْبَرُ इस त़रीक़े पर दूसरी क़ज़ा नमाज़ों की निय्यतों को समझ लेना चाहिये।

(ردالمحتار، کتاب الصلاة،مطلب اذا اسلم المرتد هل تعود حسناته ام لا ، ج۲،ص ٦٥٠)

मस्अला :- जो रक्अ़तें अदा में सूरह मिला कर पढ़ी जाती हैं वोह क़ज़ा में भी सूरह मिला कर पढ़ी जाएंगी और जो रक्अ़ते अदा में बिग़ैर सूरह मिलाए पढ़ी जाती हैं क़ज़ा में भी बिग़ैर सूरह मिलाए पढ़ी जाएंगी।

(الفتاوی الھندیة، کتاب الصلاة،الباب الحادی عشر، ج ۱،ص ۱۲۱)

मस्अला :- मुसाफ़रत की ह़ालत में जब कि क़स्र करता था उस वक़्त की छुटी हुई नमाज़ों को अगर वत़न में भी क़ज़ा करेगा जब भी दो ही रक्अ़त पढ़ेगा और जो नमाज़ें मुसाफ़िर न होने के ज़माने में क़ज़ा हुई हैं अगर सफ़र में भी इन की क़ज़ा पढ़ेगा तो चार ही रक्अ़त पढ़ेगा।

(ردالمحتار، کتاب الصلاة،مطلب اذا اسلم المرتد هل تعود حسناته ام لا ، ج۲،ص ٦٥٠)

जुमुआ़ का बयान

जुमुआ़ फ़र्ज़ है और इस का फ़र्ज़ होना ज़ोहर से ज़ियादा मुअक्कदा है इस का मुन्किर काफ़िर है। (الدرالمختار، کتاب الصلاة،باب الجمعة، ج۳،ص ٥)

ह़दीष शरीफ़ में है कि जिस ने तीन जुमुए़ बराबर छोड़ दिये उस ने इस्लाम को पीठ के पीछे फैंक दिया वोह मुनाफ़िक़ है।

(مجمع الزوائد، کتاب الصلاة،باب فیمن ترك الجمعة،رقم ۳۱۷۷-۳۱۷۸،ج۲،ص ٤٢٢)

और **अल्लाह** से बे तअ़ल्लुक़ है।

मस्अला :- जुमुआ़ फ़र्ज़ होने के लिये मुन्दरिजए ज़ेल ग्यारह शर्तें हैं :- ﴾1﴿ शहर में मुक़ीम होना लिहाज़ा मुसाफ़िर पर जुमुआ़ फ़र्ज़ नहीं ﴾2﴿ आज़ाद होना लिहाज़ा ग़ुलाम पर जुमुआ़ फ़र्ज़ नहीं ﴾3﴿ तन्दुरुस्ती या'नी ऐसे मरीज़ पर जुमुआ़ फ़र्ज़ नहीं जो जामेअ़ मस्जिद तक नहीं जा सकता ﴾4﴿ मर्द होना या'नी औ़रत पर जुमुआ़ फ़र्ज़ नहीं ﴾5﴿ आ़क़िल होना या'नी पागल पर जुमुआ़ फ़र्ज़ नहीं ﴾6﴿ बालिग़ होना या'नी बच्चे पर जुमुआ़ फ़र्ज़ नहीं ﴾7﴿ अंख्यारा होना लिहाज़ा अन्धे पर जुमुआ़ फ़र्ज़ नहीं ﴾8﴿ चलने की क़ुदरत रखने वाला हो या'नी अपाहज और लुंजे पर जुमुआ़ फ़र्ज़ नहीं ﴾9﴿ क़ैद में न होना लिहाज़ा जेल ख़ाने के क़ैदियों पर जुमुआ़ फ़र्ज़ नहीं ﴾10﴿ ह़ाकिम या ज़ालिम वग़ैरा का ख़ौफ़ न होना ﴾11﴿ बारिश का आंधी का इस क़दर ज़ियादा न होना जिस से नुक़्सान का क़वी अन्देशा हो। (الدرالمختار وردالمحتار، كتاب الصلاة،باب الجمعة، مطلب في شروط وجوب الجمعة،ج٣،ص ٣٣،٣٠)

मस्अला :- जिन लोगों पर जुमुआ़ फ़र्ज़ नहीं मषलन मुसाफ़िर और अन्धे वग़ैरा अगर येह लोग जुमुआ़ पढ़ें तो इन की नमाज़े जुमुआ़ सह़ीह़ होगी या'नी ज़ोहर की नमाज़ इन लोगों के ज़िम्मे से साक़ित़ हो जाएगी। ﴾1﴿ जुमुआ़ जाइज़ होने के लिये छे शर्तें हैं या'नी इन में से एक भी अगर नहीं पाई गई तो जुमुआ़ अदा होगा ही नहीं।

पहली शर्त़ ﴿ जुमुआ़ जाइज़ होने की पहली शर्त़ शहर या शहरी ज़रूरियात से तअ़ल्लुक़ रखने वाली जगह होना है शरीअ़त में शहर से मुराद वोह आबादी है कि जिस में मुतअ़द्दद सड़कें गलियां और बाज़ार हों और वोह ज़िल्अ़ या तह़सील का शहर या क़स्बा हो कि इस के मुतअ़ल्लिक़ देहात गिने जाते हैं और अगर ज़िल्अ़ या तह़सील न हो तो ज़िल्अ़ या तह़सील जैसी बस्ती हो। जुमुआ़ जाइज़ होने के लिये ऐसी बस्ती का होना शर्त़ है लिहाज़ा छोटे छोटे गाऊं में जुमुआ़ नहीं पढ़ना चाहिये बल्कि इन लोगों को रोज़ाना की त़रह़ ज़ोहर की नमाज़ जमाअ़त से पढ़नी चाहिये लेकिन

जिन गाऊं में पहले से जुमुआ़ क़ाइम है जुमुआ़ को बन्द नहीं करना चाहिये कि अ़वाम जिस त़रह़ भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नाम लें ग़नीमत है लेकिन इन लोगों को चार रक्अ़त ज़ोहर की नमाज़ पढ़नी ज़रूरी है।

दूसरी शर्त़ दूसरी शर्त़ येह है कि बादशाहे इस्लाम या उस का नाइब जुमुआ़ क़ाइम करे और अगर वहां इस्लामी हुकूमत न हो तो सब से बड़ा सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा आ़लिमे दीन उस शहर का जुमुआ़ क़ाइम करे कि बिग़ैर उस की इजाज़त के जुमुआ़ क़ाइम नहीं हो सकता और अगर येह भी न हो तो आ़म लोग जिस को इमाम बनाएं वोह जुमुआ़ क़ाइम करे हर शख़्स को येह ह़क़ नहीं कि जब चाहे जुमुआ़ क़ाइम करे।

तीसरी शर्त़ ज़ोहर का वक़्त होना है लिहाज़ा वक़्त से पहले या बा'द में जुमुआ़ की नमाज़ पढ़ी गई तो जुमुआ़ की नमाज़ नहीं होगी और अगर जुमुआ़ की नमाज़ पढ़ते पढ़ते अ़स्र का वक़्त शुरूअ़ हो गया तो जुमुआ़ बात़िल हो गया।

चौथी शर्त़ येह है नमाज़े जुमुआ़ से पहले ख़ुत़्बा हो जाए ख़ुत़्बा अ़रबी ज़बान में होना चाहिये अ़रबी के इलावा किसी दूसरी ज़बान में पूरा ख़ुत़्बा पढ़ना या अ़रबी के साथ किसी दूसरी ज़बान को मिलाना येह ख़िलाफ़े सुन्नत और मकरूह है।

पांचवीं शर्त़ जुमुआ़ जाइज़ होने की पांचवीं शर्त़ जमाअ़त है जिस के लिये इमाम के सिवा कम से कम तीन मर्दों का होना ज़रूरी है।

छटी शर्त़ इज़्ने आ़म होना ज़रूरी है इस का मत़लब येह है कि मस्जिद का दरवाज़ा खोल दिया जाए ताकि जिस मुसलमान का जी चाहे आए किसी क़िस्म की रुकावट न हो लिहाज़ा बन्द मकान में जुमुआ़ पढ़ना जाइज़ नहीं होगा। (الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب الجمعۃ، ج۳، ص۲۹۰)

नमाज़े ईदैन का बयान

ईद व बक़र ईद की नमाज़ वाजिब है मगर सब पर नहीं बल्कि सिर्फ़ उन्हीं लोगों पर जिन लोगों पर जुमुआ़ फ़र्ज़ है बिला वजह ईदैन की नमाज़ छोड़ना सख़्त गुनाह है।

(الفتاوى الهندية ، كتاب الصلاة، الباب السابع عشر في صلاة العيدين ، ج ١ ، ص ١٥٠ / الجوهرة النيرة، كتاب الصلاة، باب صلاة العيدين،ص ١١٩)

मस्अला :- ईदैन की नमाज़ वाजिब होने और जाइज़ होने की वोही शर्तें हैं जो जुमुआ़ के लिये हैं फ़र्क़ इतना है कि जुमुआ़ का ख़ुत्बा शर्त़ है और ईदैन का ख़ुत्बा सुन्नत है दूसरा फ़र्क़ येह भी है कि जुमुआ़ का ख़ुत्बा नमाज़े जुमुआ़ से पहले है और ईदैन का ख़ुत्बा नमाज़े ईदैन के बा'द है और एक तीसरा फ़र्क़ येह भी है कि जुमुआ़ के लिये अज़ान व इक़ामत है और ईदैन के लिये न अज़ान है न इक़ामत सिर्फ़ दो बार اَلصَّلٰوةُ جَامِعَةٌ कह कर नमाज़े ईदैन के ए'लान की इजाज़त है।

(ردالمحتار، كتاب الصلاة ، باب العيدين، مطلب في الفأل والطيرة،ج٣،ص ٥٠-٥١)

मस्अला :- ईदैन की नमाज़ का वक़्त एक नेज़ा सूरज बुलन्द होने से ज़वाल के पहले तक है। (الدرالمختار، كتاب الصلاة ، باب العيدين، ج٣،ص ٦٠-٦١)

मस्अला :- ईद के दिन येह बातें मुस्तह़ब हैं :-

«1» ह़जामत बनवाना «2» नाख़ुन कटवाना «3» ग़ुस्ल करना «4» मिस्वाक करना «5» अच्छे कपड़े पहनना नए हों या पुराने «6» अंगूठी पहनना «7» ख़ुश्बू लगाना «8» सुब्ह़ की नमाज़ महल्ले की मस्जिद में पढ़ना «9» ईदगाह जल्द चले जाना «10» नमाज़ से पहले सदक़ए फ़ित्र अदा करना «11» ईदगाह को पैदल जाना «12» दूसरे रास्ते से वापस आना «13» ईदगाह को जाने से पहले चन्द खजूरें खा लेना तीन पांच सात या कम ज़ियादा मगर ताक़ हों खजूरें न हों तो कोई मीठी चीज़ खा ले «14» ख़ुशी ज़ाहिर करना «15» सदक़ा व ख़ैरात करना «16» ईदगाह को

इत्मीनान और वक़ार के साथ जाना ﴾17﴿ आपस में एक दूसरे को मुबारक बाद देना। (الدرالمختارمع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ ، باب العیدین، ج۳،ص ٥٤)

नमाज़े ईदैन का त़रीक़ा

पहले इस त़रह़ निय्यत करे कि निय्यत की मैं ने दो रक्अ़त नमाज़े ईदुल फ़ित्र या ईदुल अज़्ह़ा की छे तक्बीरों के साथ **अल्लाह** तआ़ला के लिये (मुक़्तदी इतना और कहे : पीछे इस इमाम के) मुंह मेरा त़रफ़ का'बा शरीफ़ के اَللّٰهُ اَكْبَرُ फिर कानों तक हाथ उठाए और اَللّٰهُ اَكْبَرُ कह कर हाथ बांध ले और षना पढ़े फिर कानों तक हाथ उठाए और اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहता हुवा हाथ छोड़ दे फिर कानों तक हाथ उठाए और اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहता हुवा हाथ छोड़ दे फिर कानों तक हाथ उठाए और اَللّٰهُ اَكْبَرُ कह कर हाथ बांध ले खुलासा येह है कि आग़ाज़े नमाज़ की पहली तक्बीर के बा'द भी हाथ बांध ले और चौथी तक्बीर के बा'द भी हाथ बांध ले और दूसरी और तीसरी के बा'द हाथ छोड़ दे चौथी तक्बीर के बा'द इमाम आहिस्ता से اَعُوْذُ بِاللّٰه और بِسْمِ اللّٰه पढ़ कर बुलन्द आवाज़ से اَلْحَمْد और कोई सूरह पढ़े और रुकूअ़ व सजदे से फ़ारिग़ हो कर दूसरी रक्अ़त में اَلْحَمْد और कोई सूरह पढ़े फिर तीन बार कानों तक हाथ उठा कर हर बार اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहता हुवा हाथ छोड़ दे और चौथी बार बिला हाथ उठाए तक्बीर कहता हुवा रुकूअ़ में जाए और बाक़ी नमाज़ दूसरी नमाज़ों की त़रह़ पूरी करे सलाम फैरने के बा'द इमाम दो खुत़्बे पढ़े फिर दुआ़ मांगे पहले खुत़्बे को शुरूअ़ करने से पहले इमाम नव बार और दूसरे के पहले सात बार और मिम्बर से उतरने के पहले चौदह बार اَللّٰهُ اَكْبَرُ आहिस्ता से कहे कि येह सुन्नत है।

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ ، باب العیدین، ج۳،ص ٦١۔٦٦،٦٨)

मस्अला :- अगर किसी उ़ज़्र मषलन सख़्त बारिश हो रही है या अब्र की वजह से चांद नहीं देखा गया और ज़वाल के बा'द चांद होने की शहादत मिली

और ईद की नमाज़ न हो सकी तो दूसरे दिन ईद की नमाज़ पढ़ी जाए और अगर दूसरे दिन भी न हो सकी तो तीसरे दिन ईदुल फ़ित्र की नमाज़ नहीं हो सकती। (الدرالمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب:امر الخلیفۃ لایبقی بعد موتہ، ج۳، ص٦٢)

मस्अला :- ईदुल अज़्हा (बक़र ईद) तमाम अह़काम में ईदुल फ़ित्र की त़रह़ है सिर्फ़ चन्द बातों में फ़र्क़ है ईदुल फ़ित्र में नमाज़े ईद से पहले कुछ खा लेना मुस्तह़ब है और ईदुल अज़्हा में मुस्तह़ब येह है कि नमाज़ से पहले कुछ न खाए और येह फ़र्क़ भी है कि ईदुल फ़ित्र की नमाज़ उ़ज़्र की वजह से दूसरे दिन पढ़ी जा सकती है और तीसरे दिन नहीं पढ़ी जा सकती है मगर ईदुल अज़्हा की उ़ज़्र की वजह से बारहवीं तक या'नी तीसरे दिन भी बिला कराहत पढ़ी जा सकती है।

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب العیدین، ج۳، ص٦٠۔٦٨)

तक्बीरे तशरीक़

मस्अला :- नववीं ज़ुलहिज्जा की फ़ज्र से तेरहवीं की अ़स्र तक पांचों वक़्त की हर नमाज़ के बा'द जो जमाअ़ते मुस्तह़ब्बा के साथ अदा की गई हो एक बार बुलन्द आवाज़ से तक्बीर कहना वाजिब और तीन बार कहना अफ़्ज़ल है इस को तक्बीरे तशरीक़ कहते हैं और वोह येह है :

اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ وَلِلّٰہِ الْحَمْدُ۔

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب العیدین، ج۳، ص٧١۔٧٤)

मस्अला :- कुरबानी करनी हो तो मुस्तह़ब येह है कि पहली ज़ुलहिज्जा से दसवीं ज़ुलहिज्जा तक बाल या नाख़ुन न कटाए।

(الدرالمختار، کتاب الصلاۃ، باب العیدین، ج۳، ص٧١۔٧٥)

कु़रबानी का बयान

मस्अला :- हर मालिके निसाब मर्द व औ़रत पर हर साल कुरबानी वाजिब है। येह एक माली इ़बादत है। ख़ास जानवर को ख़ास दिन में **अल्लाह** के लिये षवाब की निय्यत से ज़ब्ह़ करना इस का नाम **कुरबानी** है। (ردالمحتار، کتاب الاضحیۃ، ج۹، ص٥١٩، ٥٢٢، ٥٢٣)

मस्अला :- मालिके निसाब वोह शख़्स है जो साढ़े बावन तोला चांदी या साढ़े सात तोला सोना या इन में से किसी एक की क़ीमत के सामाने तिजारत या किसी सामान या रूपियों नोटों पैसों का मालिक हो और ममलूका चीजें हाजते असलिय्या से ज़ाइद हों ।

(الفتاوی الهندية،كتاب الاضحية، الباب الاول فی تفسیر ها ورکنها،ج٥،ص ٢٩٢)

मस्अला :- मालिके निसाब पर हर साल अपनी त़रफ़ से कुरबानी करना वाजिब है । (الفتاوی الهندية،كتاب الاضحية،الباب الاول،ج٥،ص ٢٩٢)

अगर दूसरे की त़रफ़ से भी करना चाहता है तो इस के लिये दूसरी कुरबानी का इन्तिज़ाम करे ।

मस्अला :- कुरबानी का जानवर मोटा ताज़ा अच्छा और बे ऐ़ब होना ज़रूरी है अगर थोड़ा सा ऐ़ब हो तो कुरबानी मकरूह होगी और अगर ज़ियादा ऐ़ब है तो कुरबानी होगी ही नहीं ।

(ردالمحتار، كتاب الاضحية، ج٩،ص٥٣٦)

मस्अला :- अन्धा, लंगड़ा, काना, बेहद दुबला, तिहाई से ज़ियादा कान, दुम, सींग, थन वग़ैरा कटा हुवा, पैदाइशी बे कान का, बीमार, इन सब जानवरों की कुरबानी जाइज़ नहीं ।

(الفتاوی الهندية، كتاب الاضحية،الباب الخامس،ج٥،ص ٢٩٧ـ٢٩٨)

कुरबानी का त़रीक़ा

कुरबानी का येह त़रीक़ा है कि जानवर को बाएं पहलू पर इस त़रह़ लिटाएं कि उस का मुंह क़िब्ला की त़रफ़ हो फिर येह दुआ़ पढ़ें :

اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِیْفًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ۝ اِنَّ صَلَاتِیْ وَنُسُكِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ لَاشَرِیْكَ لَهٗ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ۝

और जानवर के पहलू पर अपना दाहिना पाऊं रख कर

اَللّٰهُمَّ لَكَ وَمِنْكَ بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

पढ़ कर तेज़ छुरी से जल्द ज़ब्ह़ कर दें और ज़ब्ह़ के बा'द फिर येह दुआ़ पढ़ें

اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْ مِنِّیْ کَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ خَلِیْلِکَ اِبْرَاهِیْمَ عَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ وَحَبِیْبِکَ مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ۔

अगर दूसरे की त़रफ़ से कुरबानी करे तो مِنِّیْ के बजाए مِنْ कह कर उस का नाम ले। (बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि़. 15, स. 15)

मस्अला :- कुरबानी के गोश्त के तीन हि़स्से करे। एक हि़स्सा सदक़ा कर दे एक हि़स्सा अह़बाब में तक़्सीम कर दे और एक हि़स्सा अपने ख़र्च के लिये रख ले। (ردالمحتار، کتاب الاضحیۃ، ج۹، ص۵٤۲)

मस्अला :- कुरबानी का गोश्त काफ़िर को हरगिज़ न दे कि यहां के कुफ़्फ़ार ह़र्बी हैं। (बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि़. 15, स. 144)

मस्अला :- चमड़ा, झोल, रस्सी वग़ैरा सब को सदक़ा कर दे चमड़े को खुद अपने काम में भी ला सकता है मषलन डोल, मुसल्ला, जा नमाज़ बिछौना बना सकता है। (درمختار، کتاب الاضحیۃ، ج۹، ص۵٤۳)

मस्अला :- आज कल लोग उ़मूमन कुरबानी की खाल दीनी मदारिस में दिया करते हैं येह जाइज़ है अगर मद्रसे में देने की निय्यत से खाल बेच कर क़ीमत मद्रसे में दे दें तो येह भी जाइज़ है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الاضحیۃ، الباب السادس، ج۵، ص۳۰۱)

अ़क़ीक़े का बयान

बच्चा पैदा होने के शुक्रिया में जो जानवर ज़ब्ह़ किया जाता है उसे "अ़क़ीक़ा" कहते हैं। (बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि़. 15, स. 153)

मस्अला :- जिन जानवरों को कुरबानी में ज़ब्ह़ किया जाता है उन्ही जानवरों को अ़क़ीक़े में भी ज़ब्ह़ कर सकते हैं।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि़. 15, स. 155)

मस्अला :- लड़के के अ़क़ीक़े में दो बकरे और लड़की के अ़क़ीक़े में एक बकरी ज़ब्ह़ करना बेहतर है। अगर गाए-भैंस अ़क़ीक़े में ज़ब्ह़ करे तो दो ह़िस्से लड़के की त़रफ़ से और एक ह़िस्सा लड़की की त़रफ़ से ज़ब्ह़ करने की निय्यत करे और अगर चाहे तो पूरी गाए या भैंस लड़के या लड़की के अ़क़ीक़े में ज़ब्ह़ कर दे। (बहारे शरीअ़त, जि. 3 ह़ि. 15, स. 154)

मस्अला :- गाए-भैंस में कुरबानी के वक़्त कुछ ह़िस्सा कुरबानी की निय्यत से और कुछ ह़िस्सा अ़क़ीक़े की निय्यत से रख कर ज़ब्ह़ करे तो एक ही जानवर में कुरबानी और अ़क़ीक़ा दोनों हो जाएंगे और ऐसा करना जाइज़ है। (बहारे शरीअ़त, जि. 3 ह़ि. 15, स. 155)

मस्अला :- अ़क़ीक़े के लिये बच्चे की पैदाइश का सातवां दिन बेहतर है और सातवें दिन न कर सकें तो जब चाहें करें सुन्नत अदा हो जाएगी।

(अल फ़तावा रज़विय्या, जि. 20 स. 586)

मस्अला :- अ़क़ीक़े का गोश्त बच्चे के मां-बाप, दादा-दादी, नाना-नानी वग़ैरा सब खा सकते हैं और जाहिलों में जो येह मश्हूर है कि अ़क़ीक़े का गोश्त येह लोग नहीं खा सकते येह बात बिल्कुल ग़लत़ है।

(अल फ़तावा रज़विय्या, जि. 20 स. 590)

मस्अला :- अ़क़ीक़े के जानवर को ज़ब्ह़ करते वक़्त लड़का हो तो येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰھُمَّ ھٰذِہٖ عَقِیْقَۃُ فُلَانِ بْنِ فُلَانٍ دَمُھَا بِدَمِہٖ وَلَحْمُھَا بِلَحْمِہٖ وَعَظْمُھَا بِعَظْمِہٖ وَ جِلْدُھَا

بِجِلْدِہٖ وَشَعْرُھَا بِشَعْرِہٖ ۔ اَللّٰھُمَّ اجْعَلْھَا فِدَآءً لَّہٗ مِنَ النَّارِ ـ بِسْمِ اللّٰہِ اَللّٰہُ اَکْبَرُ ۔

दुआ़ में فُلَانِ بْنِ فُلَانٍ की जगह बच्चे और उस के बाप का नाम ले और अगर लड़की हो तो येह दुआ़ इस त़रह़ पढ़े :

اَللّٰھُمَّ ھٰذِہٖ عَقِیْقَۃُ فُلَانَۃِ بِنْتِ فُلَانٍ دَمُھَا بِدَمِھَا وَلَحْمُھَا بِلَحْمِھَا وَ عَظْمُھَا

بِعَظْمِھَا وَ جِلْدُھَا بِجِلْدِھَا وَ شَعْرُھَا بِشَعْرِھَا اَللّٰھُمَّ اجْعَلْھَا فِدَاءً لَّھَا مِنَ النَّارِ ط

दुआ فُلَانة بِنْتِ فُلَانٍ की जगह लड़की और उस के बाप का नाम ले और अगर दुआ याद न हो तो बिग़ैर दुआ पढ़े दिल में येह ख़याल कर के फ़ुलां लड़के या फ़ुलानी लड़की का अक़ीक़ा है بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ पढ़ कर ज़ब्ह़ कर दे अक़ीक़ा हो जाएगा। अक़ीक़े के लिये दुआ का पढ़ना ज़रूरी नहीं। (अल फ़तावा रज़विय्या, (अल जदीदा), जि. 20 स. 585)

गहन की नमाज़

सूरज गहन की नमाज़ सुन्नते मुअक्कदा और चांद गहन की नमाज़ मुस्तह़ब है सूरज गहन की नमाज़ जमाअ़त से मुस्तह़ब है और तन्हा तन्हा भी हो सकती है अगर जमाअ़त से पढ़ी जाए तो ख़ुत़्बे के सिवा जुमुआ़ की तमाम शर्तें हैं। वोही शख़्स इस की जमाअ़त क़ाइम कर सकता है जो जुमुआ़ की जमाअ़त क़ाइम कर सकता हो अगर वोह न हो तो लोग तन्हा तन्हा पढ़ें चाहे घर में पढ़ें या मस्जिद में।

(ردالمحتار، کتاب الصلوۃ،باب الکسوف،ج۳،ص۷۷۔۷۸)

मस्अला :- गहन की नमाज़ नफ़्ल की त़रह़ दो रक्अ़त लम्बी लम्बी सूरतों के साथ पढ़ें फिर उस वक़्त तक दुआ़ मांगते रहें कि गहन ख़त्म हो जाए।

(الدرالمختار، کتاب الصلوۃ،باب الکسوف،ج۳،ص۷۸)

मस्अला :- गहन की नमाज़ में न अज़ान है न इक़ामत, न बुलन्द आवाज़ से क़िराअत। (الدرالمختار، کتاب الصلوۃ،باب الکسوف،ج۳،ص۷۸)

मय्यित के मुतअ़ल्लिक़ात

जब मौत की अ़लामतें ज़ाहिर होने लगे तो सुन्नत येह है कि दाहिनी करवट पर लिटा कर क़िब्ला की त़रफ़ मुंह कर दें और येह भी जाइज़ है कि चित लिटाएं और क़िब्ला को पाऊं कर दें मगर इस सूरत में सर को कुछ ऊंचा कर दें ताकि क़िब्ला की त़रफ़ मुंह हो जाए और अगर क़िब्ला को मुंह करने में उस को तक्लीफ़ होती हो तो जिस ह़ालत पर है छोड़ दें। (الدرالمختارمع ردالمحتار، کتاب الصلوۃ،باب صلوۃ الجنازۃ،ج۳،ص۹۱)

मस्अला :- जां कनी की ह़ालत में उसे तल्क़ीन करें या'नी उस के पास बुलन्द आवाज़ से कलिमए शहादत पढ़े मगर उसे पढ़ने का हुक्म न दें और जब वोह पढ़ ले तो तल्क़ीन बन्द कर दें। हां अगर कलिमा पढ़ने के बा'द उस ने कोई बात कर ली तो फिर तल्क़ीन करें ताकि उस का आख़िरी कलाम لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ (صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وبارک وسلم) हो।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصلاۃ، الباب الحادی والعشرون، الفصل الاول، ج۱، ص۱۵۷)

मस्अला :- जां कनी के वक़्त ह़ाज़िरीन अपने लिये और उस के लिये दुआ़ए ख़ैर करें और **सूरए यासीन** व **सूरए रा'द** पढ़ें। जब रूह़ निकल जाए तो एक चौड़ी पट्टी जबड़े के नीचे से सर पर ले जा कर गिरह लगा दें कि मुंह खुला न रहे और आंखें बन्द कर दी जाएं और हाथ पाऊं सीधे कर दिये जाएं। येह काम उस के घर वालों में जो ज़ियादा नर्मी के साथ कर सकता हो (मषलन बाप या बेटा) वोह कर ले।

(الفتاوی الھندیۃ، الباب الحادی والعشرون، الفصل الاول فی المختصر، ج۱، ص۱۵۷)

मस्अला :- कफ़न-दफ़्न जल्दी करें कि ह़दीषों में इस की बहुत ताकीद आई है। (الجوھرۃ النیّرۃ، کتاب الصلوۃ، باب الجنائز، ص۱۳۹)

मय्यित के नहलाने का त़रीक़ा

मय्यित को ग़ुस्ल देना फ़र्ज़े किफ़ाया है बा'ज़ लोगों ने नहला दिया तो सब इस ज़िम्मेदारी से बरी हो गए।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الثانی فی الغسل، ج۱، ص۱۵۸)

मस्अला :– नहलाने का त़रीक़ा येह है कि जिस तख़्त पर नहलाने का इरादा हो उस को तीन या पांच या सात मरतबा धूनी दें फिर इस पर मय्यित को लिटा कर नाफ़ से घुंटनों तक किसी पाक कपड़े से छुपा दें फिर नहलाने वाला अपने हाथ में कपड़ा लपेट कर पहले इस्तिन्जा कराए फिर नमाज़ जैसा वुज़ू कराए मगर मय्यित के वुज़ू में पहले गिट्टों तक हाथ धोना और कुल्ली करना और नाक में पानी चढ़ाना नहीं है। हां, कोई कपड़ा भिगो कर दांतों और मसूढों और नथनों पर फिरा दें फिर सर और दाढ़ी के बाल हों तो गुलख़ैरू या पाक साबून से धोएं वरना ख़ाली पानी भी काफ़ी है फिर बाईं करवट पर लिटा कर सर से पाऊं तक बेरी के पत्तों का जोश दिया हुवा पानी बहाएं कि तख़्त तक पानी पहुंच जाए फिर दाहिनी करवट पर लिटा कर इसी त़रह़ पानी बहाएं अगर बेरी के पत्तों का उबाला हुवा पानी न हो तो सादा नीम गर्म पानी काफ़ी है फिर टेक लगा कर बिठाएं और नर्मी से पेट सहलाएं अगर कुछ निकले तो धो डालें और ग़ुस्ल को दोहराने की ज़रूरत नहीं फिर आख़िर में सर से पाऊं तक काफ़ूर का पानी बहाएं फिर इस के बदन को किसी पाक कपड़े से आहिस्ता आहिस्ता पौंछ कर सुखाएं।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الطهارة،الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الثانی فی الغسل، ج ۱، ص ۱۵۸)

मस्अला :– मर्द को मर्द नहलाए और औ़रत को औ़रत और छोटा लड़का हो तो उसे औ़रत भी नहला सकती है और छोटी लड़की हो तो मर्द भी उस को ग़ुस्ल दे सकता है।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الطهارة،الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الثانی فی الغسل، ج ۱، ص ۱۶۰)

मस्अला :– औ़रत मर जाए तो शोहर न उसे नहला सकता है न छू सकता है हां देखने की मुमानअ़त नहीं।

(ردالمحتار، کتاب الصلاة، مطلب القرأة عند المیت، ج ۳، ص ۱۰۵)

अ़वाम में जो येह मशहूर है कि शोहर औ़रत के जनाज़े को न कन्धा दे सकता है न क़ब्र में उतार सकता है न मुंह देख सकता है येह बिल्कुल ग़लत़ है सिर्फ़ नहलाने और उस के बदन को बिला कपड़ा ह़ाइल होने के हाथ लगाने की मुमानअ़त है।

मस्अला :- ऐसी जगह इन्तिक़ाल हुवा कि वहां नहलाने के लिये पानी नहीं मिलता तो मय्यित को तयम्मुम कराएं और नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर दफ़्न कर दें। हां अगर दफ़्न से पहले पानी मिल जाए तो ग़ुस्ल दे कर दोबारा नमाज़े जनाज़ा पढ़ें।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الطھارۃ،الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الثانی فی الغسل، ج ۱،ص ۱۶۰)

कफ़न का बयान

मय्यित को कफ़न देना फ़र्ज़े किफ़ाया है कफ़न के तीन दर्जे हैं :- ﴾1﴿ कफ़ने ज़रूरत ﴾2﴿ कफ़ने किफ़ायत ﴾3﴿ कफ़ने सुन्नत। मर्द के लिये कफ़ने सुन्नत तीन कपड़े हैं : चादर, तहबन्द, कुर्ता मगर तहबन्द सर से पाऊं तक लम्बा होना चाहिये और औ़रत के लिये कफ़ने सुन्नत पांच कपड़े हैं चादर, तहबन्द, कुर्ता, ओढ़नी, सीनाबन्द और कफ़ने किफ़ायत मर्द के लिये दो कपड़े हैं चादर, तहबन्द और औ़रत के लिये तीन कपड़े चादर, तहबन्द, औढ़नी या चादर, कुर्ता, ओढ़नी और कफ़ने ज़रूरत औ़रत मर्द दोनों के लिये येह है कि जो मुयस्सर आ जाए और कम से कम इतना तो हो कि सारा बदन ढक जाए। (الدرالمختار، کتاب الصلوۃ،باب صلوۃ الجنازۃ، ج ۳،ص ۱۱۳۔۱۱۶)

कफ़न पहनाने का त़रीक़ा येह है कि कफ़न को तीन बार या पांच बार या सात बार धूनी दे कर पहले चादर को बिछाएं फिर इस के ऊपर तहबन्द फिर कुर्ता फिर मय्यित को इस पर लिटाए और कुर्ता पहनाएं और दाढ़ी और तमाम बदन पर ख़ुश्बू लगाएं और सजदे की जगहों या'नी माथे, नाक, दोनों हाथ, घुटनों, क़दमों पर काफ़ूर लगाएं फिर तहबन्द लपेटें पहले बाईं त़रफ़ से फिर दाहिनी त़रफ़ से फिर चादर लपेटें पहले

बाईं त़रफ़ से फिर दाहिनी त़रफ़ से फिर सर और पाऊं की त़रफ़ बांध दें ताकि उड़ने और बिखरने का अन्देशा न हो। औ़रत को कफ़नी या'नी कुर्ता पहना के उस के बाल के दो हिस्से कर के कफ़नी के ऊपर सीने पर डाल दें और औढ़नी आधी पीठ के नीचे से बिछा कर सर पर ला कर मुंह पर मिष्ले निक़ाब के डाल दें कि इस की लम्बाई आधी पीठ से सीने तक रहे और चौड़ाई एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक रहे।

(الفتاوی الہندیۃ،کتاب الطہارۃ،الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الثالث فی التکفین،ج۱،ص۱۶۱)

जनाज़ा ले चलने का बयान

सुन्नत येह है कि चार आदमी जनाज़ा उठाएं और यके बा'द दीगरे चारों पायों को कंधा दे और हर बार दस दस क़दम चले और पूरी सुन्नत येह है कि पहले दाहिने सिरहाने कंधा दे फिर दाहिनी पाइंती फिर बाएं सिरहाने फिर बाईं पाइंती और दस दस क़दम चले तो कुल चालीस क़दम हुए। ह़दीष शरीफ़ में है कि जो चालीस क़दम जनाज़ा ले चले उस के चालीस गुनाहे कबीरा मिटा दिये जाएंगे इसी त़रह़ एक ह़दीष में है कि जो जनाज़े के चारों पायों को कंधा दे **अल्लाह** तआ़ला ज़रूर उस की मग़्फ़िरत फ़रमा देगा।

(الدرالمختار،کتاب الصلوۃ،باب فی صلوۃ الجنازۃ،ج۳،ص۱۵۸،۱۵۹)

मस्अला :- जनाज़ा ले चलने में सिरहाना आगे होना चाहिये और औ़रतों को जनाज़े के साथ जाना ममनूअ़ व नाजाइज़ है।

(الفتاوی الہندیۃ،الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الرابع فی حمل الجنازۃ، ج۱،ص۱۶۲)

मस्अला :- मय्यित अगर पड़ोसी या रिश्तेदार या नेक आदमी हो तो उस के जनाज़े के साथ जाना नफ़्ल नमाज़ पढ़ने से अफ़्ज़ल है।

मस्अला :- जनाज़े के साथ पैदल चलना अफ़्ज़ल है और साथ चलने वालों को जनाज़े के पीछे चलना चाहिये दाएं बाएं न चलें और जनाज़े के आगे चलना मकरूह है।

(الفتاوی الہندیۃ،الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الرابع فی حمل الجنازۃ، ج۱،ص۱۶۲)

मस्अला :- जनाज़े को तेज़ी के साथ ले कर चलें मगर इस त़रह़ कि मय्यित को झटका न लगे।

(الفتاوی الھندیۃ،الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الرابع فی حمل الجنازۃ، ج۱،ص۱۶۲)

मस्अला :- हर मुसलमान की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाए अगर्चे वोह कैसा ही गुनहगार हो मगर चन्द क़िस्म के लोग हैं कि उन की नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ी जाएगी **मषलन :-** ﴾1﴿ बाग़ी जो इमामे बर ह़क़ पर खुरूज करे और इसी बग़ावत में मारा जाए ﴾2﴿ डाकू जो डाकाज़नी में मारा गया ﴾3﴿ मां बाप का क़ातिल ﴾4﴿ जिस ने कई शख़्सों का गला घोंट कर मार दिया हो।

(الدرالمختار مع ردالمحتار، کتاب الصلوٰۃ،باب صلوٰۃ الجنازۃ، ج۳،ص۱۲۵۔۱۲۸)

मस्अला :- जिस ने ख़ुदकुशी की ह़ालांकि येह बहुत बड़ा गुनाह है मगर उस के जनाज़े की नमाज़ पढ़ी जाएगी इसी त़रह़ जो ज़िनाकारी की सज़ा में संगसार किया गया या ख़ून के क़िसास में फांसी दिया गया उसे गुस्ल देंगे और जनाज़े की नमाज़ पढ़ेंगे।

(الدرالمختار، کتاب الصلوٰۃ،باب صلوٰۃ الجنازۃ، ج۳،ص۱۲۷ / والفتاوی الھندیۃ، کتاب الصلوٰۃ،الباب الحادی والعشرون ، الفصل الخامس، ج۱،ص۱۶۳)

मस्अला :- जो बच्चा मुर्दा पैदा हुवा उस की नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ी जाएगी। (الفتاوی الھندیۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الخامس فی الصلوٰۃ علی المیت، ج۱،ص۱۶۳)

नमाज़े जनाज़ा की तरकीब

नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़े किफ़ाया है या'नी अगर कुछ लोगों ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ ली तो सब बरियुज़्ज़िम्मा हो गए और अगर किसी ने भी नहीं पढ़ी तो सब गुनहगार हुए जो नमाज़े जनाज़ा के फ़र्ज़ होने का इन्कार करे वोह काफ़िर है।

(الفتاوی الھندیۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الخامس فی الصلوٰۃ علی المیت، ج۱،ص۱۶۲)

मस्अला :- नमाज़े जनाज़ा के लिये जमाअ़त शर्त़ नहीं एक शख़्स भी पढ़ ले तो फ़र्ज़ अदा हो गया।

(الفتاوی الھندیۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل الخامس فی الصلوٰۃ علی المیت، ج۱، ص۱۶۲)

मस्अला :- नमाज़े जनाज़ा इस त़रह़ पढ़ें कि पहले यूं निय्यत करे : निय्यत की मैं ने नमाज़े जनाज़ा की चार तक्बीरों के साथ, **अल्लाह** तआ़ला के लिये और दुआ़ इस मय्यित के लिये, मुंह मेरा का'बा शरीफ़ की त़रफ़, (मुक़्तदी इतना और कहे) पीछे इस इमाम के। फिर कानों तक दोनों हाथ उठा कर **अल्लाहु अक्बर** कहते हुए दोनों हाथों को नाफ़ के नीचे बांध ले फिर येह षना पढ़े।

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ

फिर बिग़ैर हाथ उठाए **अल्लाहु अक्बर** कहे और दुरूदे इब्राहीमी पढ़े जो पंज वक़्ता नमाज़ों में पढ़े जाते हैं फिर बिग़ैर हाथ उठाए **अल्लाहु अक्बर** कहे और बालिग़ का जनाज़ा हो तो येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا

اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ۔

इस के बा'द चौथी तक्बीर कहे फिर बिग़ैर कोई दुआ़ पढ़े हाथ छोड़ कर सलाम फैर दे और अगर ना बालिग़ लड़के का जानाज़ा हो तो तीसरी तक्बीर के बा'द येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا اَجْرًا وَّ ذُخْرًا وَّ اجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّ مُشَفَّعًا

और अगर ना बालिग़ लड़की का जनाज़ा हो तो येह दुआ़ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطًا وَّ اجْعَلْهَا لَنَا اَجْرًا وَّ ذُخْرًا وَّ اجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّ مُشَفَّعَةً۔

(الدرالمختار، کتاب الصلوٰۃ، باب صلوٰۃ الجنازۃ، ج۳، ص۱۲۸۔۱۳۴)

मस्अला :- मय्यित को ऐसे क़ब्रिस्तान में दफ़्न करना बेहतर है जहां नेक लोगों की क़ब्रें हों।

(الفتاوی الھندیۃ، الباب الحادی والعشرون فی الجنائز، الفصل السادس فی القبر والدفن والنقل من مکان الی آخر، ج۱، ص۱۶۶)

मस्अला :- मुस्तहब येह है कि दफ़्न के बा'द क़ब्र के पास सूरए बक़रह का अव्वल व आख़िर पढ़ें सिरहाने الٓمّٓ से مُفْلِحُوْنَ तक और पाइंती اٰمَنَ الرَّسُوْلُ से ख़त्मे सूरत तक पढ़ें।

(ردالمحتار، کتاب الصلوٰۃ،مطلب فی زیارۃ القبور، ج۳،ص۱۷۹)

क़ब्र पर तल्क़ीन

मस्अला :- दफ़्न के बा'द मुर्दे को तल्क़ीन करना अहले सुन्नत के नज़्दीक जाइज़ है। (الجوھرۃ النیرۃ، کتاب الصلاۃ،باب الجنائز،ص ۱۳۰)

येह जो बा'ज़ किताबों में है कि तल्क़ीन न की जाए येह मो'तज़िला का मज़्हब है उन्हों ने हमारी किताबों में येह इज़ाफ़ा कर दिया है (शामी) ह़दीष में है हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जब तुम्हारा कोई मुसलमान भाई मरे और उस की मिट्टी दे चुको तो तुम में से एक शख़्स क़ब्र के सिरहाने खड़ा हो कर मय्यित और उस की मां का नाम ले कर यूं कहे : या फ़ुलान बिन फ़ुलाना ! वोह सुनेगा और जवाब न देगा फिर कहे : या फ़ुलान बिन फ़ुलाना ! वोह सीधा हो कर बैठ जाएगा। फिर कहे : या फ़ुलान बिन फ़ुलाना ! वोह कहेगा : हमें इरशाद कर, अल्लाह तआ़ला तुझ पर रह़्म फ़रमाए। मगर तुम्हें उस के कहने की ख़बर नहीं होती फिर कहे :

اُذْكُرْ مَا خَرَجْتَ مِنَ الدُّنْيَا شَهَادَةَ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ (صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم) وَاَنَّكَ رَضِيْتَ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّ بِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّ بِمُحَمَّدٍ (صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم) نَبِيًّا وَّ بِالْقُرْاٰنِ اِمَامًا ۔

नकीरैन एक दूसरे का हाथ पकड़ कर कहेंगे चलो हम इस के पास क्या बैठें जिसे लोग इस की हुज्जत सिखा चुके। इस पर किसी ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की, कि अगर उस की मां का नाम मा'लूम न हो ? फ़रमाया : ह़व्वा की त़रफ़ निस्बत करे।

(ردالمحتار، کتاب الصلوٰۃ،مطلب فی التلقین بعد الموت، ج۳،ص۹۴/ والمعجم الکبیر، رقم۷۹۷۹، ج۸،ص۲۴۹)

मस्अला :- क़ब्र पर फूल डालना बेहतर है कि जब तक तर रहेंगे तस्बीह़ करेंगे और मय्यित का दिल बहलेगा।

(الفتاوی القاضی خان، کتاب الصلوۃ، باب بیان ان النقل من بلد الی بلد مکروہ، ج اولین، ص ۹٤)

मस्अला :- क़ब्र पर से तर घास नोचना न चाहिये कि इस की तस्बीह़ से रह़मते उतरती है और मय्यित को उन्स होता है और नोचने में मय्यित का ह़क़ ज़ाएअ़ करना है।

(الفتاوی القاضی خان، کتاب الصلوۃ، باب بیان ان النقل من بلد الی بلد مکروہ، ج اولین، ص ۹٤)

मस्अला :- क़ब्र पर सोना चलना बैठना ह़राम है। क़ब्रिस्तान में जो नया रास्ता निकाला गया है उस से गुज़रना नाजाइज़ है ख़्वाह नया होना उसे मा'लूम हो या उस का गुमान हो।

(الفتاوی الهندیة، الباب الحادی والعشرون، الفصل السادس فی القبر ۔۔۔الخ، ج۱، ص١٦٦/١

وردالمحتار مع درمختار، کتاب الصلوۃ، مطلب فی اهوا ء ثواب القرأة، ج۳، ص۱۸۳)

मस्अला :- मय्यित को दफ़्न करने के बा'द सोयम, दसवां, चहलुम करना या'नी नमाज़ व रोज़ा और तिलावत व कलिमा और सदक़ा व ख़ैरात और लोगों को खाना खिलाने का षवाब मय्यित की रूह़ को पहुंचाना जाइज़ है। जितने लोगों की रूह़ों को षवाब पहुंचाएगा सब की रूह़ों को षवाब पहुंचेगा और इस पहुंचाने वाले के षवाब में कोई कमी नहीं होगी **अल्लाह** तआ़ला की रह़मत से येह उम्मीद है कि इस को पूरा पूरा षवाब मिलेगा येह नहीं कि तक़्सीम हो कर टुकड़ा टुकड़ा मिलेगा बल्कि येह उम्मीद है कि इस षवाब पहुंचाने वाले को उन सब के मजमूए़ के बराबर षवाब मिलेगा। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि. 4, स. 166)

ज़ियारते क़ुबूर :- क़ब्रों की ज़ियारत के लिये जाना सुन्नत है हफ़्ते में एक दिन ज़ियारत करे और इस के लिये सब से अफ़्ज़ल जुमुआ़ का दिन और सुब्ह़ का वक़्त है। औलिया के मज़ारात पर दूर दराज़ से सफ़र कर

के जाना यक़ीनन जाइज़ है औलिया अपने ज़ियारत करने वालों को अपने रब की दी हुई त़ाक़तों से नफ़्अ़ पहुंचाते हैं और अगर मज़ारों पर कोई ख़िलाफ़े शरअ़ बात हो जैसे औ़रतों का सामना या गाना बजाना वग़ैरा तो इस की वजह से ज़ियारत न छोड़ी जाए कि ऐसी बातों से नेक काम छोड़ा नहीं जाता बल्कि ख़िलाफ़े शरअ़ बातों को बुरा जाने और हो सके तो बुरी बातों से लोगों को मन्अ़ करे और बुरी बातों को अपनी त़ाक़त भर रोके। (ردالمحتار، کتاب الصلوۃ،مطلب فی زیارۃ القبور، ج۳،ص۱۷۷)

मस्अला :– क़ब्रों की ज़ियारत का येह त़रीक़ा है कि क़ब्र की पाइंती की त़रफ़ से जा कर क़िब्ला को पुश्त कर के मय्यित के मुंह के सामने खड़ा हो और येह कहे कि اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَهْلَ دَارِ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ اَنْتُمْ لَنَا سَلَفٌ وَّ اِنَّا اِنْ شَآءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ ط फिर फ़ातिह़ा पढ़े और बैठना चाहे तो इतने फ़ासिले पर बैठे कि जितनी दूर ज़िन्दगी में इस के पास बैठता था।

(الدرالمختار مع رد المحتار، کتاب الصلوۃ،باب صلوۃ الجنازۃ، ج۳،ص۱۷۹)

मस्अला :– ह़दीष में है कि जो ग्यारह मरतबा قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ शरीफ़ पढ़ कर इस का षवाब मुर्दों की रूह़ को पहुंचाए तो मुर्दों की गिनती के बराबर उस को षवाब मिलेगा।

मस्अला :– वहाबी लोग क़ब्रों की तौहीन करते हैं, क़ब्रों की ज़ियारत और फ़ातिह़ा से मन्अ़ करते हैं। इन लोगों की सोह़बत से दूर रहना चाहिये और हरगिज़ इन लोगों से न मेल जोल रखना चाहिये न इन की बातों को मानना चाहिये, येह लोग अहले सुन्नत व जमाअ़त के ख़िलाफ़ हैं।

मस्अला :– उ़–लमा और औलिया की क़ब्रों पर क़ुब्बा बनाना जाइज़ है मगर क़ब्रों को पुख़्ता न किया जाए।

(ردالمحتار، کتاب الصلوۃ،مطلب فی دفن المیت ، ج۳،ص۱۶۹۔۱۷۰)

या'नी अन्दर से पुख़्ता न बनाई जाए और अगर अन्दर क़ब्र कच्ची हो और ऊपर से पुख़्ता बनाएं तो इस में कोई ह़रज नहीं।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि़. 4, स. 162)

मस्अला :- अगर ज़रूरत हो तो क़ब्र पर निशान के लिये कुछ लिख सकते हैं मगर ऐसी जगह न लिखें कि बे अदबी हो।

(الدرالمختارمع ردالمحتار، کتاب الصلوٰۃ،مطلب فی دفن المیت،ج۳،ص ۱۷۰)

मस्अला :- क़ब्र पर बैठना, सोना, चलना, फिरना, पेशाब–पाख़ाना करना, क़ब्र पर थूकना ह़राम है, कि इस से क़ब्र वाले को तक्लीफ़ पहुंचेगी। इसी त़रह़ क़ब्रिस्तान में जूता पहन कर न चले। एक आदमी को रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जूतियां पहन कर क़ब्रिस्तान में चलते देखा तो फ़रमाया कि ऐ शख़्स ! जूतियां उतार ले, न तू क़ब्र वाले को तक्लीफ़ दे और न क़ब्र वाला तुझ को तक्लीफ़ दे !

(الدرالمختارمع ردالمحتار، کتاب الصلوٰۃ،مطلب فی اهداء ثواب القرأة للنبی صلی الله علیه وسلم، ج۳،ص ۱۸۳)

मस्अला :- बुज़ुर्गाने दीन की क़ब्रों पर सफ़ाई सुथराई करते रहना, वहां अगरबत्ती जला कर इत्र लगा कर ख़ुश्बू करना, मज़ारों पर फूल पत्तियां डालना और अ़वाम की नज़रों में साह़िबे मज़ार की इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत पैदा करने के लिये मज़ारों पर ग़िलाफ़ व चादर चढ़ाना, मज़ारों के आस पास रोशनी करना ताकि रास्ता चलने वालों को रोशनी मिले और लोगों को मा'लूम हो जाए की येह किसी बुज़ुर्ग का मज़ार है ताकि येह लोग वहां आ कर फ़ातिह़ा पढ़ें येह सब काम जाइज़ हैं और अच्छी निय्यत से करें तो मुस्तह़ब भी।

मस्अला :- जहाज़ पर किसी का इन्तिक़ाल हुवा और कनारा बहुत दूर है तो चाहिये कि मय्यित को ग़ुस्ल दे कर और कफ़न पहना कर पूरे ए'ज़ाज़ के साथ समुन्दर में डाल दें।

(الفتاوی القاضی خان، کتاب الصلوٰۃ،باب فی غسل المیت وما یتعلق---إلخ، ج۱،ص ۹٤)

ज़कात का बयान

ज़कात फ़र्ज़ है। इस का इन्कार करने वाला काफ़िर और न देने वाला फ़ासिक़ व जहन्नमी और अदा करने में देर करने वाला गुनहगार व मर्दूदुश्शहादह है।

(الفتاوی الھندیة،کتاب الزکاة، الباب الاول فی تفسیرھا و صفتھا و شرائطھا،ج۱،ص۱۷۰)

नमाज़ की त़रह़ इस के बारे में भी बहुत सी आयतें व ह़दीषें आई हैं जिन में ज़कात अदा करने की सख़्त ताकीद है और न अदा करने वाले पर त़रह़ त़रह़ के दुन्या और आख़िरत के अ़ज़ाबों की वईदें आई हैं।

मस्अला :- **अल्लाह** के लिये माल का एक ह़िस्सा जो शरीअ़त ने मुक़र्रर किया है किसी फ़क़ीर को मालिक बना देना शरीअ़त में इस को **ज़कात** कहते हैं।

(الفتاوی الھندیة،کتاب الزکاة، الباب الاول فی تفسیرھا و صفتھا و شرائطھا،ج۱،ص۱۷۰)

मस्अला :- ज़कात फ़र्ज़ होने के लिये चन्द शर्तें हैं :-

﴾1﴿ मुसलमान होना या'नी काफ़िर पर ज़कात फ़र्ज़ नहीं ﴾2﴿ बालिग़ होना या'नी नाबालिग़ पर ज़कात फ़र्ज़ नहीं ﴾3﴿ आ़क़िल होना या'नी दीवाने पर ज़कात फ़र्ज़ नहीं ﴾4﴿ आज़ाद होना या'नी लौंडी ग़ुलाम पर ज़कात फ़र्ज़ नहीं ﴾5﴿ मालिके निसाब होना या'नी जिस के पास निसाब से कम माल हो उस पर ज़कात फ़र्ज़ नहीं ﴾6﴿ पूरे त़ौर पर मालिक हो या'नी इस पर क़ब्ज़ा भी हो तब ज़कात फ़र्ज़ है वरना नहीं मषलन किसी ने अपना माल ज़मीन में दफ़्न कर दिया और जगह भूल गया फिर बरसों के बा'द जगह याद आई और माल मिल गया तो जब तक माल न मिला था उस ज़माने की ज़कात वाजिब नहीं क्यूंकि निसाब का मालिक तो था मगर इस पर क़ब्ज़ा नहीं था ﴾7﴿ निसाब का क़र्ज़ से फ़ारिग़ होना। अगर किसी के पास एक हज़ार रूपिये है मगर वोह एक हज़ार का क़र्ज़दार भी है तो उस का माल क़र्ज़ से फ़ारिग़ नहीं लिहाज़ा उस पर ज़कात नहीं। ﴾8﴿ निसाब का ह़ाजते अस्लिय्या से फ़ारिग़ होना। ह़ाजते अस्लिय्या

या'नी आदमी को ज़िन्दगी बसर करने में जिन चीज़ों की ज़रूरत है मषलन अपने रहने का मकान, जाड़े गर्मियों के कपड़े, घरेलू सामान या'नी खाने पीने के बरतन, चारपाइयां, कुरसियां, मेज़ें, चूल्हे, पंखे वग़ैरा इन मालों में ज़कात नहीं क्यूंकि येह सब मालो सामान ह़ाजते अस्लिय्या से फ़ारिग़ नहीं है ﴾9﴿ माले नामी होना या'नी बढ़ने वाला माल होना ख़्वाह ह़क़ीक़तन बढ़ने वाला माल जैसे माले तिजारत और चराई पर छोड़े हुए जानवर या हुक्मन बढ़ने वाला माल हो जैसे सोना चांदी कि येह इसी लिये पैदा किये गये हैं कि इन से चीज़ें ख़रीदी जाएं और बेची जाएं ताकि नफ़्अ़ होने से येह बढ़ते रहें लिहाज़ा सोना चांदी जिस ह़ाल में भी हो ज़ेवर की शक्ल में हों या दफ़्न हों हर ह़ाल में येह माले नामी हैं और इन की ज़कात निकालनी ज़रूरी है ﴾10﴿ माले निसाब पर एक साल गुज़र जाना या'नी निसाब पूरा होते ही ज़कात फ़र्ज़ नहीं होगी बल्कि एक साल तक वोह निसाब मिल्क में बाक़ी रहे तो साल पूरा होने के बा'द इस की ज़कात निकाली जाए।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الزکاۃ، الباب الاول فی تفسیرھا وصفتھا وشرائطھا، ج۱، ص۱۷۱۔۱۷۴)

मस्अला :- सोने का निसाब साढ़े सात तोला है और चांदी का निसाब साढ़े बावन तोला है। सोने चांदी में चालीसवां ह़िस्सा ज़कात निकाल कर अदा करना फ़र्ज़ है। येह ज़रूरी नहीं कि सोने की ज़कात में सोना ही और चांदी की ज़कात में चांदी ही दी जाए बल्कि येह भी जाइज़ है कि बाज़ारी भाव से सोने चांदी की क़ीमत लगा कर रूपिये ज़कात में दें।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الزکاۃ، الباب الثالث، الفصل الاول فی زکاۃ الذھب والفضۃ، ج۱، ص۱۷۸)

ज़ेवरात की ज़कात :- ह़दीष शरीफ़ में है कि दो औ़रतें हुज़ूरे अक़्दस صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلم की ख़िदमते मुबारका में ह़ाज़िर हुईं। उन के हाथों में सोने के कंगन थे आप ने इरशाद फ़रमाया कि क्या तुम इन ज़ेवरों की ज़कात अदा करती हो? औ़रतों ने अ़र्ज़ किया कि जी नहीं! तो आप صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلم

ने इरशाद फ़रमाया कि क्या तुम इसे पसन्द करती हो कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें आग के कंगन पहनाए ? औ़रतों ने कहा : नहीं । तो इरशाद फ़रमाया कि तुम इन ज़ेवरों की ज़कात अदा करो ।

(سنن ترمذی، کتاب الزکاۃ،باب ماجاء فی زکاۃ الحلی،رقم۶۳۷،ج۲،ص۱۳۲)

मस्अला :- सोना चांदी जब कि ब क़दरे निसाब हों तो इन की ज़कात चालीसवां हिस्सा निकालनी फ़र्ज़ है ख़्वाह सोने चांदी के टुकड़े हों या सिक्के या ज़ेवरात या सोने चांदी की बनी हुई चीज़ें मषलन बरतन, घड़ी, सुर्मादानी, सलाई वग़ैरा ग़रज़ जो कुछ हो सब की ज़कात निकालनी फ़र्ज़ है । (الفتاوی الهندیة، کتاب الزکاۃ، الباب الثالث،الفصل الاول فی زکاۃ الذهب والفضة، ج۱،ص۱۷۸)

मस्अला :- जिन ज़ेवरात की मालिक औ़रत हो ख़्वाह वोह मैके से लाई हो या उस के शोहर ने उस को ज़ेवरात दे कर इन का मालिक बना दिया हो तो इन की ज़कात अदा करना औ़रत पर फ़र्ज़ है और जब ज़ेवरात का मालिक मर्द हो या'नी औ़रत को सिर्फ़ पहनने के लिये दिया है मालिक नहीं बनाया है तो इन ज़ेवरात की ज़कात मर्द के ज़िम्मे है औ़रत पर नहीं ।

(फ़तावा रज़विय्या, (अल जदीदा) जि. 10 स. 132)

मस्अला :- अगर किसी के पास सोना चांदी या इन दोनों के ज़ेवरात हों और सोना चांदी में से कोई भी ब क़दरे निसाब नहीं तो चाहिये कि सोने की क़ीमत के चांदी या चांदी की क़ीमत का सोना फ़र्ज़ कर के दोनों को मिलाएं फिर अगर मिलाने पर भी ब क़दरे निसाब न हो तो ज़कात नहीं और अगर सोने की क़ीमत की चांदी-चांदी में मिलाएं तो ब क़दरे निसाब हो जाता है और चांदी की क़ीमत का सोना, सोने में मिलाएं तो ब क़दरे निसाब नहीं तो वाजिब है कि जिस सूरत में निसाब पूरा हो जाता है वोह करें । (الفتاوی الهندیة، کتاب الزکاۃ، الباب الثالث،الفصل الاول فی زکاۃ الذهب والفضة، ج۱،ص۱۷۹)

मस्अला :- तिजारती माल की क़ीमत लगाई जाए फिर उस से अगर सोने या चांदी का निसाब पूरा हो तो उस के हिसाब से ज़कात निकाली जाए । (الفتاوی الهندیة، کتاب الزکاۃ، الباب الثالث،الفصل الاول فی زکاۃ الذهب والفضة، ج۱،ص۱۷۹)

मस्अला :- अगर सोना चांदी न हो न माले तिजारत हो बल्कि सिर्फ़ नोट और रूपे पैसे हों कि कम से कम इतने रूपे पैसे या नोट हों कि बाज़ार में इन से साढ़े सात तोला सोना या साढ़े बावन तोला चांदी ख़रीदी जा सकती है तो वोह शख़्स साहिबे निसाब है उस को नोट और रूपे पैसों की ज़कात (चालीसवां हिस्सा) निकालना फ़र्ज़ है।

(الفتاوی الھندیۃ،کتاب الزکاۃ، الباب الثالث،الفصل الاول فی زکاۃ الذھب والفضۃ،ج۱،ص۱۷۹)

मस्अला :- अगर शुरूअ़ साल में पूरा निसाब था और आख़िर साल में भी निसाब पूरा रहा दरमियान में कुछ दिनों माल घट कर निसाब से कम रह गया तो येह कमी कुछ अषर न करेगी बल्कि इस को पूरे माल की ज़कात देनी पड़ेगी।

(الفتاوی الھندیۃ،کتاب الزکاۃ، الباب الاول فی تفسیرھا وصفتھا وشرائطھا،ج۱،ص۱۷۵)

उ़श्र का बयान

ज़मीन से जो भी पैदावार हो जैसे गेहूं, जव, चना, बाजरा, धान वग़ैरा हर क़िस्म के अनाज, गन्ना, रूई हर क़िस्म की तरकारियां फूल फल मेवे सब में उ़श्र वाजिब है थोड़ी पैदा हो या ज़ियादा।

(الفتاوی الخانیۃ(اولین)، کتاب الزکاۃ،فصل فی العشر، ج ۱،ص ۱۳۲)

मस्अला :- जो पैदावार बारिश या ज़मीन की नमी से पैदा हो उस में दसवां हिस्सा वाजिब होता है और जो पैदावार चर से, डोल, पम्पिग मशीन या ट्यूबवेल वग़ैरा के पानी से या ख़रीदे हुए पानी से पैदा हो उस में बीसवां हिस्सा वाजिब है। (الدرالمختار،کتاب الزکاۃ،باب العشر،ج۳،ص ۳۱۲،۳۱۶)

मस्अला :- खेती के अख़राजात निकाल कर उ़श्र नहीं निकाला जाएगा बल्कि जो कुछ पैदावार हुई हो उन सब का उ़श्र या निस्फ़ उ़श्र देना वाजिब है गवर्नमेन्ट को माल गुज़ारी दी जाती है वोह भी उ़श्र की रक़म से मुजरा नहीं की जाएगी। पूरी पैदावार का उ़श्र या निस्फ़ उ़श्र ख़ुदा की राह में निकालना पड़ेगा। (الدرالمختار،کتاب الزکاۃ،باب فی العشر،ج۳،ص۳۱٦-۳۱۷)

मस्अला :- ज़मीन अगर बटाई पर दे कर खेती कराई है तो ज़मीन वाले और खेती करने वाले दोनों को जितनी जितनी पैदावार मिली है दोनों को अपने अपने हि़स्से की पैदावार का दसवां या बीसवां हि़स्सा निकालना वाजिब है। (الفتاوی الخانیة(اولین)،کتاب الزکاة،فصل فی العشر،ج ۱،ص ۱۳۲)

ज़कात का माल किन किन लोगों को दिया जाए ?

जिन जिन लोगों को उ़श्र व ज़कात का माल देना जाइज़ है वोह येह लोग हैं :-

﴾1﴿ फ़क़ीर या'नी वोह शख़्स कि उस के पास कुछ माल है मगर निसाब की मिक़्दार से कम है ﴾2﴿ मिस्कीन या'नी वोह शख़्स जिस के पास खाने के लिये ग़ल्ला और पहनने के लिये कपड़ा भी न हो ﴾3﴿ क़र्ज़दार या'नी वोह शख़्स कि जिस के ज़िम्मे क़र्ज़ हो और उस के पास क़र्ज़ से फ़ाज़िल कोई माल ब क़दरे निसाब न हो ﴾4﴿ मुसाफ़िर जिस के पास सफ़र की ह़ालत में माल न रहा हो उस को ब क़दरे ज़रूरत ज़कात का माल देना जाइज़ है ﴾5﴿ आ़मिल या'नी जिस को बादशाहे इस्लाम ने ज़कात व उ़श्र वुसूल करने के लिये मुक़र्रर किया हो ﴾6﴿ मुकातब ग़ुलाम ताकि वोह माल दे कर आज़ाद हो जाए ﴾7﴿ ग़रीब मुजाहिद ताकि वोह जिहाद का सामान करे। (الفتاوی الھندیة، کتاب الزکاة،الباب السابع فی المصارف،ج ۱،ص ۱۸۷۔۱۸۸)

किन किन लोगों को ज़कात का माल देना मन्अ़ है ?

जिन लोगों को उ़श्र व ज़कात का माल देना जाइज़ नहीं उन में से चन्द येह हैं :-

﴾1﴿ मालदार या'नी साहि़बे निसाब जिस पर ख़ुद ज़कात फ़र्ज़ है उस को ज़कात का माल जाइज़ नहीं ﴾2﴿ बनी हाशिम या'नी ह़ज़रते अ़ली, ह़ज़रते जा'फ़र, ह़ज़रते अ़क़ील, ह़ज़रते अ़ब्बास, ह़ारिष बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब की अवलाद को ज़कात का माल देना जाइज़ नहीं।

(الفتاوی الھندیة، کتاب الزکاة،الباب السابع فی المصارف،ج ۱،ص ۱۸۹)

﴾3﴿ अपनी अस्ल व फ़ुरूअ़ या'नी मां बाप, दादा दादी, नाना नानी वग़ैरहुम और बेटा, बेटी, पोता, पोती, नवासा, नवासी को ज़कात का माल देना जाइज़ नहीं ﴾4﴿ शोहर अपनी औ़रत को और औ़रत अपने शोहर को अपनी ज़कात नहीं दे सकते यूं ही सदक़ए फ़ित्र और कफ़्फ़ारा भी इन लोगों को नहीं दे सकता ﴾5﴿ मालदार के नाबालिग़ बच्चे को ज़कात नहीं दी जा सकती और मालदार की बालिग़ अवलाद जब कि वोह निसाब के मालिक न हों उन को ज़कात दे सकते हैं ﴾6﴿ किसी काफ़िर व मुर्तद या बद मज़हब को ज़कात का माल देना जाइज़ नहीं।

(الجوهرة النيرة، كتاب الزكاة، باب من يجوز دفع الصدقة۔۔۔الخ،ص١٦٦۔١٦٧)

मस्अला :- बहू दामाद और सोतेली मां या सोतेले बाप या ज़ौजा की अवलाद जो दूसरे शोहर से हों या शोहर की अवलाद जो दूसरी बीवी से हों और दूसरे रिश्तेदारों को ज़कात दे सकते हैं।

(ردالمحتار، كتاب الزكوة، باب المصرف، ج٣،ص٣٤٤)

मस्अला :- मालदार की बीवी अगर वोह मालिके निसाब नहीं है तो उस को ज़कात दे सकते हैं।

(الفتاوى الهندية، كتاب الزكاة،الباب السابع فى المصارف،ج١،ص١٨٩)

मस्अला :- तन्दुरुस्त और ताक़त वर आदमी अगर वोह मालिके निसाब नहीं है तो उस को ज़कात देना जाइज़ है मगर उस को सुवाल करना और भीक मांगना जाइज़ नहीं। (الفتاوى الهندية، كتاب الزكاة،الباب السابع فى المصارف،ج١،ص١٨٩)

मस्अला :- ज़कात अदा करने में येह ज़रूरी है कि जिसे दें उस को मालिक बना दें इस लिये अगर ज़कात की रक़म से खाना पका कर ग़रीबों को ब तौ़रे दा'वत के खिला दिया तो ज़कात अदा न हुई क्यूंकि येह इबाह़त हुई तम्लीक नहीं हुई हां अगर खाना पका कर फ़क़ीरों को खाना दे दे और इन को इस खाने का मालिक बना दे कि वोह चाहें इस को खाएं या किसी को दे दें या बेच डालें तो ज़कात अदा हो गई।

(الدرالمختار وردالمحتار، كتاب الزكاة، باب المصرف ،ج٣،ص٣٤١)

मस्अला :- ज़कात का माल मस्जिद या मद्रसे या मेहमान ख़ाने की इमारत में लगाना या मय्यित के कफ़न व दफ़्न में लगाना या कुंवां बनवा देना या किताबें ख़रीद कर किसी मद्रसे में वक़्फ़ कर देना इस से ज़कात अदा नहीं होगी जब तक किसी ऐसे आदमी को माले ज़कात का मालिक न बना दें जो ज़कात लेने का अहल है उस वक़्त तक ज़कात अदा नहीं हो सकती। (الدرالمختار و ردالمحتار، کتاب الزکاۃ، باب المصرف ، ج۳،ص ۳٤۱-۳٤۲)

मस्अला :- फ़क़ीर ज़कात के माल का मालिक हो जाने के बा'द ख़ुद अपनी त़रफ़ से अगर मस्जिद व मद्रसे की इमारत में लगा दे या मय्यित के कफ़न व दफ़्न में सर्फ़ कर दे तो जाइज़ है।

(الدرالمختار، کتاب الزکاۃ، باب المصرف، ج۳،ص ۳٤۳)

क़ाबिले तवज्जोह तम्बीह :- आज कल आ़म तौ़र पर दीनी मदारिस में येह चलन है कि अ़त़िय्यात और सदक़ात व ख़ैरात व चर्मे क़ुरबानी और ज़कात की सब रक़में मुतवल्ली या नाज़िम के पास जम्अ़ की जाती हैं और नाज़िम व मुतवल्ली इन सब रक़मों को मिला कर रखते हैं और इसी रक़म में से त़लबा का मत़बख़ भी चलाते हैं और मुदर्रिसीन व मुलाज़िमीन की तनख़्वाहें भी देते हैं और वाइज़ीन व मुमतह़िनीन का नज़राना भी देते हैं और मस्जिद व मद्रसे की इमारत भी बनवाते हैं और अपने मसारिफ़ में भी लाते हैं। याद रखो कि इस त़रह़ न तो ज़कात देने वालों की ज़कात अदा होती है न इन कामों में ज़कात की रक़मों को लगाना जाइज़ है और येह मुतवल्लियों और नाज़िमों की बहुत बड़ी ख़ियानत है कि वोह लोगों की ज़कात के मालों को सह़ीह़ मसरफ़ में सर्फ़ नहीं करते और गुनहगार होते हैं लिहाज़ा उ़-लमाए किराम पर शरअ़न वाजिब है कि मुतवल्लियों और नाज़िमों को येह मस्अला बता दें कि मदारिस में जितनी रक़में ज़कात की आती हैं पहले इन रक़मों का ह़ीलए शरइय्या कर लेना ज़रूरी है ताकि ज़कात देने वालों की ज़कात अदा हो जाए और फिर इन रक़मों को मद्रसे की जिस मद में चाहें ख़र्च कर सकें।

मस्अला :- ह़ीलए शरइय्या का त़रीक़ा येह है कि ज़कात की रक़मों को अलग कर के किसी त़ालिबे इ़ल्म को जो ग़रीब हो दे दें और उन रक़मों का उस त़ालिबे इ़ल्म को मालिक बना दिया जाए और फिर वोह त़ालिबे इ़ल्म अपनी त़रफ़ से वोह रक़म मद्रसे में अपनी ख़ुशी से दे दें इस त़रह़ कर लेने से ज़कात देने वालों की ज़कात अदा हो जाएगी और फिर वोह रक़म मद्रसे की हर मद में ख़र्च की जा सकेगी।

(फ़तावा रज़विय्या, (अल जदीदा) जि. 10 स. 269)

मस्अला :- ज़कात व सदक़ात में अफ़्ज़ल येह है कि पहले अपने भाइयों, बहनों, चचाओं, फूफियों को फिर इन की अवलाद को फिर अपने मामूओं और ख़ालाओं को फिर इन की अवलाद को फिर दूसरे रिश्तेदारों को फिर पड़ोसियों को फिर अपने पेशे वालों को फिर अपने शहर और गाऊं वालों को दें और इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने वाले त़ालिबें इ़ल्मों को भी देना अफ़्ज़ल है। (الفتاوی الھندیۃ، کتاب الزکاۃ، الباب السابع فی المصارف، ج۱،ص۱۹۰)

सदक़ए फ़ित्र का बयान

मस्अला :- हर मालिके निसाब पर अपनी त़रफ़ से और अपनी नाबालिग़ अवलाद की त़रफ़ से एक एक साअ़ सदक़ए फ़ित्र देना वाजिब है।

(الدرالمختار، کتاب الزکاۃ، باب صدقۃ الفطر، ج۳،ص۳٦۷)

मस्अला :- सदक़ए फ़ित्र की मिक़्दार येह है कि गेहूं और गेहूं का आटा आधा साअ़ और जव या जव का आटा या खजूर एक साअ़ दें।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الزکاۃ، الباب الثامن فی صدقۃ الفطر، ج۱،ص۱۹۱)

मस्अला :- आ'ला दर्जे की तह़क़ीक़ और एह़तियात़ येह है कि साअ़ का वज़्न चांदी के पुराने रूपे से तीन सो इक्यावन रूपे भर और आधा साअ़ का वज़्न एक सो पछत्तर रूपे अठन्नी भर ऊपर है।

(फ़तावा रज़विय्या, (अल जदीदा) जि. 1 स. 595)

और नए वज़्न से एक साअ़ का वज़्न चार किलों और तक़रीबन चोरानवे ग्राम होता है और आधे साअ़ का वज़्न दो किलो और तक़रीबन सेंतालीस ग्राम होता है।

मस्अला :- सदक़ए फ़ित्ऱ देने के लिये रोज़ा रखना शर्त़ नहीं लिहाज़ा अगर बीमारी या सफ़र की वजह से या مَعَاذَاللّٰہ बिला उ़ज़्र अपनी शरारत से रोज़ा न रखा जब भी सदक़ए फ़ित्ऱ देना वाजिब है।

(الدرالمختار، کتاب الزکاۃ، باب صدقۃ الفطر ،ج۳،ص۳٦٧)

सुवाल किसे ह़लाल है और किसे नहीं ?

आज कल येह एक आ़म बला फैली हुई है कि अच्छे ख़ासे तन्दुरुस्त चाहें तो कमा कर औरों को खिलाएं मगर उन्हों ने अपने वुजूद को बेकार क़रार दे रखा है। मेह़नत मशक़्क़त से जान चुराते हैं और नाजाइज़ त़ौर पर भीक मांग कर पेट भरते हैं और बहुत से लोगों ने तो सुवाल करना और भीक मांगना अपना पेशा ही बना रखा है। घर में हज़ारो रूपे हैं, खेती बाड़ी भी है मगर भीक मांगना नहीं छोड़ते। उन से कहा जाता है तो जवाब देते हैं कि येह तो हमारा पेशा है वाह साह़िब वाह ! क्या हम अपना पेशा छोड़ दें। ह़ालांकि ऐसे लोगों को सुवाल करना और भीक मांगना बिल्कुल ह़राम है। ह़दीष शरीफ़ में है कि जो शख़्स बिग़ैर ह़ाजत के सुवाल करता है गोया वोह आग का अंगारा खाता है।

(مجمع الزوائد، کتاب الزکاۃ، باب ماجاء فی السوال، رقم ٤٥٢٦،ج۳،ص٢٥٨)

एक दूसरी ह़दीष में है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स लोगों से सुवाल करे ह़ालांकि उस को न फ़ाक़ा हुवा है न उस के इतने बाल बच्चे हैं जिन की त़ाक़त नहीं रखता तो क़ियामत के दिन वोह इस त़रह़ आएगा कि उस के मुंह पर गोश्त न होगा

और हुज़ूर صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया जिस पर फ़ाक़ा नहीं गुज़रा और न इतने बाल बच्चे हैं जिन की ताक़त नहीं और सुवाल का दरवाज़ा खोले, अल्लाह तआ़ला उस पर फ़ाक़ा का दरवाज़ा खोल देगा ऐसी जगह से जो उस के ख़याल में भी नहीं।

(کنزالعمال، کتاب الزکاۃ، الفصل الثانی فی ذم السؤال،الاکمال ،رقم۱۶۷۳۹،ج۶،ص۲۱۵)

एक ह़दीष में येह भी आया है कि जो शख़्स माल बढ़ाने के लिये लोगों से सुवाल करता है तो वोह गोया आग का अंगारा त़लब करता है। (مسلم ، کتاب الزکاۃ،باب کراھۃ المسألۃ للناس،رقم۱۰۴۱،ص۵۱۸)

ख़ुलासा येह है कि बिग़ैर शदीद ज़रूरत के भीक मांगना और लोगों से सुवाल करना जाइज़ नहीं है।

सदक़ा करने की फ़ज़ीलत

ज़कात व उश्र व सदक़ए फ़ित्र येह तीनों तो वाजिब हैं

(جامع الترمذی، کتاب التفسیر،باب (ت:۹۵)رقم۳۳۸۰،ج۵،ص۲۴۲)

जो इन तीनों को न अदा करेगा सख़्त गुनाहगार होगा। इन तीनों के इ़लावा सदक़ा देने और ख़ुदा की राह में ख़ैरात करने का भी बहुत बड़ा षवाब है और दुन्या व आख़िरत में इस के बड़े बड़े फ़वाइद व मनाफ़ेअ़ हैं। चुनान्चे इस के बारे में हम यहां चन्द ह़दीषें लिखते हैं और इन को ग़ौर से पढ़ो और अपने प्यारे रसूल صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इन मुक़द्दस फ़रमानों पर अ़मल कर के अपनी दुन्या व आख़िरत को संवार लो।

ह़दीष (1) :- ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन को पैदा फ़रमाया तो वोह हिलने लगी तो अल्लाह तआ़ला ने पहाड़ों को

पैदा किया और ज़मीन को पहाड़ों के सहारे पर ठहरा दिया येह देख कर फ़िरिश्तों को पहाड़ों की ताक़त पर बड़ा तअ़ज्जुब हुवा और उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि ऐ परवर दगार ! क्या तेरी मख़्लूक़ में पहाड़ों से भी बढ़ कर ताक़तवर कोई चीज़ है ? तो **अल्लाह** तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया कि हां, लोहा तो फ़िरिश्तों ने कहा तेरी मख़्लूक़ में लोहे से भी बढ़ कर ताक़तवर कोई चीज़ है ? तो फ़रमाया : हां, आग तो फ़िरिश्तों ने पूछा कि आग से भी बढ़ कर कोई ताक़त वाली चीज़ तेरी मख़्लूक़ में है ? तो ख़ुदा ने फ़रमाया : हां, पानी । फिर फ़िरिश्तों ने सुवाल किया कि क्या तेरी मख़्लूक़ में पानी से भी ज़ियादा ताक़तवर कोई चीज़ है ? तो इरशाद हुवा : हां, हवा । येह सुन कर फ़िरिश्तों ने दरयाफ़्त किया कि क्या तेरी मख़्लूक़ में हवा से भी बढ़ कर ताक़त रखने वाली चीज़ है ? तो **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : हां, इब्ने आदम, अपने दाहिने हाथ से सदक़ा दे और बाएं हाथ से छुपाए ।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الزکاۃ،باب فضل الصدقۃ،الفصل الثانی، رقم۱۹۲۳، ج۱،ص ۵۳۰)

मत़लब येह है कि इस क़दर छुपा कर सदक़ा दे कि दाहिने हाथ से सदक़ा दे और बाएं हाथ को भी ख़बर न हो । येह सदक़ा पहाड़, लोहा, आग, हवा, पानी तमाम चीज़ों से बढ़ कर ताक़तवर है ।

ह़दीष (2) :- सदक़ा इस त़रह़ गुनाहों को बुझा देता है जिस त़रह़ पानी आग को बुझा देता है । (مجمع الزوائد، کتاب الصیام، باب فی فضل الصوم،رقم ۵۰۸۲،ج۳،ص۴۱۹)

ह़दीष (3) :- हर मुसलमान को सदक़ा करना चाहिये तो लोगों ने कहा : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जो शख़्स सदक़ा करने के लिये कोई चीज़ न पाए तो क्या करे ? तो इरशाद फ़रमाया कि उस को चाहिये कि वोह अपने हाथ से कोई काम कर के कुछ कमाए फिर ख़ुद भी उस से नफ़्अ़ उठाए और सदक़ा भी दे तो लोगों ने अ़र्ज़ किया कि अगर वोह कमाने की ताक़त न रखता हो ? तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि वोह किसी ह़ाजत मन्द की किसी त़रह़ मदद कर दे । इस पर लोगों ने

कहा कि अगर वोह येह भी न करे ? तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि उस को चाहिये कि वोह लोगों को अच्छी बातों का हुक्म देता रहे। येह सुन कर लोगों ने कहा कि अगर वोह येह भी न करे तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि वोह ख़ुद बुराई करने से रुक जाए येह उस के लिये सदक़ा है।

(صحیح البخاری، کتاب الادب، باب کل معروف صدقة،رقم ۶۰۲۲، ج۴،ص ۱۰۵)

हदीष (4) :- हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रावी हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि सदक़ा ख़ुदा के ग़ज़ब को बुझा देता है और बुरी मौत को रफ़्अ़ कर देता है।

(مشکاة المصابیح، کتاب الزکاة، باب فضل الصدقة،الفصل الثانی،رقم ۱۹۰۹، ج۱،ص ۵۲۷)

हदीष (5) :- हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ कहते हैं कि एक ज़िनाकार औ़रत एक कुत्ते के पास से गुज़री जो एक कुंवें के पास प्यास से ज़बान निकाले हुए था और क़रीब था कि प्यास उस कुत्ते को मार डाले तो उस औ़रत ने अपने चमड़े का मोज़ा निकाला और उस को अपनी ओढ़नी में बांध कर उस कुंवें से पानी भरा और उस कुत्ते को पिला दिया (तो इतना ही सदक़ा करने से) उस की मग़फ़िरत हो गई।

(صحیح البخاری، کتاب بدء الخلق ، باب اذا وقع الذباب فی شراب احدکم فلیغمسه، رقم ۳۳۲۱، ج۲،ص ۴۰۹)

हदीष (6) :- हज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी मां की वफ़ात हो गई तो उस की त़रफ़ से कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल है ? तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि "**पानी**" तो हज़रते सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक कुंवां खुदवा दिया और येह कहा कि येह सा'द की मां के लिये है।

(مشکاة المصابیح، کتاب الزکاة،باب فضل الصدقة،الفصل الثانی، رقم ۱۹۱۲، ج۱،ص ۵۲۷)

हदीष (7) :- हज़रते अबू सईद से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो किसी मुसलमान नंगे बदन वाले को कपड़ा पहनाएगा तो **अल्लाह** तआ़ला उस को जन्नत का हरा लिबास पहनाएगा और जो किसी भूके मुसलमान को खाना खिलाएगा तो **अल्लाह** तआ़ला उस को जन्नत के मेवे खिलाएगा और जो किसी प्यासे मुसलमान को पानी पिलाएगा तो **अल्लाह** तआ़ला उस को जन्नत का शरबते ख़ास पिलाएगा जिस पर मुहर लगी होगी।

(سنن الترمذی، کتاب صفة القیامة ، باب ۱۸(ت۸۳) رقم ۲۴۵۷، ج۴،ص ۲۰۴)

हदीष (8) :- हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने कहा कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुए सुना कि जो किसी मुसलमान को कपड़ा पहनाएगा तो जब तक उस के बदन पर उस कपड़े का एक टुकड़ा भी रहेगा उस वक़्त तक कपड़ा पहनाने वाला **अल्लाह** तआ़ला की हिफ़ाज़त में रहेगा।

(سنن الترمذی، کتاب صفة القیامة ، باب ۴۱(ت۱۰۶) رقم ۲۴۹۲، ج۴،ص ۲۱۸)

हदीष (9) :- हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा करे (या'नी खेत बोए और दरख़्त लगाए) तो उस को सदके़ का षवाब मिलेगा और चरन्द परन्द उस का दाना या फल खा लेंगे वोह सब उस के लिये सदक़ा होगा।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الزکاۃ،باب فضل الصدقۃ،الفصل الثانی، رقم ۱۹۱۶، ج۱،ص ۵۲۸)

या'नी उस को सदक़ा करने का षवाब मिलेगा।

हदीष (10) :- हज़रते अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْهُ ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि अपने किसी (मुसलमान)

भाई के सामने (ख़ुशी से) तुम्हारा मुस्कुरा देना येह भी सदक़ा है और किसी भटके हुए को रास्ता दिखा देना येह भी सदक़ा है और किसी अन्धे की मदद कर देना येह भी सदक़ा है और रास्ते से पथ्थर और कांटा और हड्डी हटा देना येह भी सदक़ा है।

(سنن الترمذی، کتاب البر والصلة،باب ماجاء فی صنائع المعروف،رقم١٩٦٣،ج٣،ص٣٨٤)

मत़लब येह है कि इन सब कामों पर सदक़ा देने का षवाब मिलता है।

रोज़े का बयान

नमाज़ की त़रह़ रोज़ा भी फ़र्ज़े ऐन है इस की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार करने वाला काफ़िर और बिला उ़ज़्र छोड़ने वाला सख़्त गुनहगार और अ़ज़ाबे जहन्नम का सज़ावार है।

मस्अला :- शरीअ़त में रोज़े के मा'ना हैं अल्लाह तआ़ला की इ़बादत की निय्यत से सुब्ह़े सादिक़ से ले कर सूरज डूबने तक खाने पीने और जिमाअ़ से अपने को रोके रखना।

(الفتاوی الھندیة، کتاب الصوم، الباب الاول فی تعریفه۔۔۔الخ،ج١،ص١٩٤)

मस्अला :- रमज़ान के अदा रोज़े और नज़्रे मुअ़य्यन और नफ़्ल व सुन्नत व मुस्तह़ब रोज़े और मकरूह रोज़े इन रोज़ों की निय्यत का वक़्त सूरज डूबने से ले कर ज़ह़्वए कुब्रा (दो पहर से तक़्रीबन डेढ़ घन्टा पहले) तक है इस दरमियान में जब भी रोज़े की निय्यत करे येह रोज़े हो जाएंगे लेकिन रात ही में निय्यत कर लेना बेहतर है। इन छे रोज़ों के इलावा जितने रोज़े हैं मषलन रमज़ान की क़ज़ा का रोज़ा, नज़्रे मुअ़य्यन की क़ज़ा का रोज़ा, कफ़्फ़ारे का रोज़ा, ह़ज में किसी जुर्म करने का रोज़ा वग़ैरा इन सब रोज़ों की निय्यत का वक़्त ग़ुरूबे आफ़्ताब से ले कर सुब्ह़े सादिक़ तुलूअ़ होने तक है इस के बा'द नहीं।

(الفتاوی الھندیة، کتاب الصوم، الباب الاول فی تعریفه۔۔۔الخ،ج١،ص١٩٥)

मस्अला :- जिस त़रह़ और इबादतों में बताया गया है कि निय्यत दिल के इरादे का नाम है ज़बान से कहना कुछ ज़रूरी नहीं इसी त़रह़ रोज़े में भी निय्यत से मुराद दिल का पुख़्ता इरादा है लेकिन ज़बान से भी कह लेना अच्छा है अगर रात में निय्यत करे तो यूं कहे कि :

نَوَيْتُ اَنْ اَصُوْ مَ غَدًا لِلّٰهِ تَعَالٰى مِنْ فَرْضِ رَمَضَانَ

और अगर दिन में निय्यत करे तो यूं कहे कि

نَوَيْتُ اَنْ اَصُوْمَ هٰذَاالْيَوْمَ مِنْ فَرْضِ رَمَضَانَ ط

(الفتاوى الهندية، كتاب الصوم، الباب الاول فى تعريفه...الخ،ج١،ص١٩٥)

मस्अला :- क़ज़ाए रमज़ान वग़ैरा जिन रोज़ों में रात से निय्यत कर लेनी ज़रूरी है उन रोज़ों में ख़ास उस रोज़े की निय्यत भी ज़रूरी है जो रोज़ा रखा जाए मषलन यूं निय्यत करे कि कल मैं अपने पहले रमज़ान के रोज़े की क़ज़ा रखूंगा या मैं ने जो एक दिन रोज़ा रखने की मन्नत मानी थी कल में वोह रोज़ा रखूंगा। (الفتاوى الهندية، كتاب الصوم، الباب الاول فى تعريفه...الخ،ج١،ص١٩٦)

मस्अला :- ईद व बक़र ईद और ज़ुलहिज्जा की ग्यारह, बारह, तेरह तारीख़ इन पांच दिनों में रोज़ा रखना मकरूहे तह़रीमी है और गुनाह है।

(الفتاوى الهندية، كتاب الصوم، الباب الثالث فيما يكره للصائم،ج١،ص٢٠١)

मस्अला :- किसी काम की मन्नत मानी तो काम पूरा हो जाने पर उस रोज़े को रखना वाजिब हो गया।

(الفتاوى الهندية، كتاب الصوم، الباب السادس فى النذر،ج١،ص٢٠٩)

मस्अला :- अगर नफ़्ल का रोज़ा रख कर इस को तोड़ दिया तो अब इस की क़ज़ा वाजिब है। (الدرالمختار مع ردالمحتار، كتاب الصوم،ج٣،ص٤٧٨)

मस्अला :- औरत को नफ़्ल का रोज़ा बिला शोहर की इजाज़त के रखना मन्अ़ है। (الفتاوى الهندية، كتاب الصوم، الباب الثالث فيما يكره للصيام وما لايكره،ج١،ص٢٠١)

चांद देखने का बयान

मस्अला :- पांच महीनों का चांद देखना वाजिबे किफ़ाया है शा'बान, रमज़ान, शव्वाल, ज़ुल क़ा'दा और ज़ुलहिज्जा।

(फ़तावा रज़विय्या, (अल जदीदा) जि. 10 स. 450-451)

मस्अला :- शा'बान की उन्तीस तारीख़ को शाम के वक़्त चांद देखें दिखाई दे तो रोज़ा अगले दिन रखें वरना शा'बान के तीस दिन पूरे कर के रोज़ा रखें। (الفتاوی الهندية، كتاب الصوم، الباب الثانی فی رؤية الهلال، ج۱، ص۱۹۷)

मत़्लअ़ साफ़ न होने में या'नी आस्मान में अब्रो ग़ुबार होने की ह़ालत में सिर्फ़ रमज़ान के चांद का षुबूत एक मुसलमान आ़क़िल व बालिग़ मस्तूर या आ़दिल की गवाही या ख़बर से हो जाता है चाहे मर्द हो या औ़रत और रमज़ान के सिवा तमाम महीनों का चांद उस वक़्त षाबित होगा जब दो मर्द या एक मर्द और दो औ़रतें गवाही दें और सब पाबन्दे शरअ़ हों और येह कहें कि मैं शहादत देता हूं कि मैं ने इस महीने का चांद फ़ुलां दिन ख़ुद देखा है। (الدرالمختار، كتاب الصوم، ج۳، ص۴۰۶)

आ़दिल :- होने का येह मत़्लब है कि कबीरा गुनाहों से बचता हो और सग़ीरा गुनाहों पर इसरार न करता हो और ऐसा काम न करता हो जो तहज़ीब व मुरुव्वत के ख़िलाफ़ हो जैसे बाज़ारों में सड़कों पर चलते फिरते खाना पीना।

मस्तूर :- से येह मुराद है कि जिस का ज़ाहिर ह़ाल शरअ़ के मुत़ाबिक़ हो मगर बात़िन का ह़ाल मा'लूम नहीं।

(ردالمحتار مع الدرالمختار، كتاب الصوم، مبحث فی يوم شك، ج۳، ص۴۰۶)

मस्अला :- जिस आ़दिल शख़्स ने चांद देखा है उस पर वाजिब है कि उसी रात में शहादत दे। (الفتاوی الهندية، كتاب الصوم، الباب الثانی فی رؤية الهلال، ج۱، ص۱۹۷)

मस्अला :- गाऊं में चांद देखा और वहां कोई ह़ाकिम या क़ाज़ी नहीं जिस के सामने गवाही दे तो गाऊं वालों को जम्अ़ कर के उन के सामने चांद देखने की गवाही दे अगर येह गवाही देने वाला आ़दिल है लोगों पर रोज़ा रखना लाज़िम है। (الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصوم، الباب الثانی فی رؤیۃ الھلال، ج۱، ص۱۹۷)

मत़लअ़ अगर साफ़ हो तो जब तक बहुत से लोग शहादत न दें चांद का षुबूत न होगा (चाहे रमज़ान का चांद हो या ई़द का या किसी और महीने का) रहा येह कि कितने लोगों की गवाही इस सूरत में चाहिये तो येह क़ाज़ी की राय पर है जितने गवाहों से इसे ग़ालिब गुमान हो जाए उतने गवाहों की शहादत से चांद होने का हुक्म देगा लेकिन अगर शहर के बाहर किसी ऊंची जगह से चांद देखना बयान करे तो एक मस्तूर का भी क़ौल सिर्फ़ रमज़ान के चांद में मान लिया जाएगा।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصوم، الباب الثانی فی رؤیۃ الھلال، ج۱، ص۱۹۸)

मस्अला :- अगर कुछ लोग आ कर येह कहें कि फ़ुलां जगह चांद हुवा बल्कि अगर येह शहादत दें कि फ़ुलां फ़ुलां ने देखा बल्कि अगर येह शहादत दें कि फ़ुलां जगह के क़ाज़ी ने रोज़ा या इफ़्त़ार के लिये लोगों से कहा येह सब त़रीक़े चांद के षुबूत के लिये ना काफ़ी हैं और इस क़िस्म की शहादतों से चांद का षुबूत न हो सकेगा।

(ردالمحتار مع الدرالمختار، کتاب الصوم، مطلب ماقالہ السبکی من الاعتماد، ج۳، ص۴۱۳)

मस्अला :- किसी शहर में चांद हुवा और वहां से चंद जमाअ़तें दूसरे शहर में आईं और सब ने ख़बर दी कि वहां फ़ुलां दिन चांद हुवा है और तमाम शहर में येह बात मशहूर है और वहां के लोगों ने चांद नज़र आने की बिना पर फ़ुलां दिन से रोज़े शुरूअ़ कर दिये हैं तो यहां वालों के लिये भी षुबूत हो गया।

(ردالمحتار مع الدرالمختار، کتاب الصوم، مطلب ماقالہ السبکی من الاعتماد۔۔۔الخ، ج۳، ص۴۱۳)

मस्अला :- किसी ने अकेले रमज़ान या ईद का चांद देखा और गवाही दी मगर क़ाज़ी ने उस की गवाही क़बूल नहीं की तो ख़ुद उस शख़्स पर रोज़ा रखना लाज़िम है अगर न रखा या तोड़ डाला तो क़ज़ा लाज़िम।

(الفتاوی الھندیة، کتاب الصوم، الباب الثانی فی رؤیة الھلال، ج١، ص١٩٨)

मस्अला :- अगर दिन में चांद दिखाई दिया दो पहर से पहले चाहे दो पहर के बा'द बहर ह़ाल वोह आने वाली रात का चांद माना जाएगा या'नी अब जो रात आएगी इस से महीना शुरूअ़ होगा मषलन तीस रमज़ान को दिन में चांद नज़र आया तो येह दिन रमज़ान ही का है शव्वाल का नहीं और रोज़ा पूरा करना फ़र्ज़ है और अगर शा'बान की तीसवीं तारीख़ को दिन में चांद नज़र आ गया तो येह दिन शा'बान ही का है रमज़ान का नहीं लिहाज़ा आज का रोज़ा फ़र्ज़ नहीं।

(ردالمحتار، کتاب الصوم، مطلب فی رؤیة الھلال نھاراً، ج٣، ص٤١٦)

मस्अला :- तार, टेलिफ़ोन, रेडियो से चांद देखना षाबित नहीं हो सकता इस लिये अगर इन ख़बरों को हर त़रह़ से सह़ीह़ मान लिया जाए जब भी येह मह़ज़ एक ख़बर है येह शहादत नहीं है और मह़ज़ एक ख़बर से चांद का षुबूत नहीं होता और इसी त़रह़ बाज़ारी अफ़वाहों से और जन्तरियों और अख़बारों में छपने से भी चांद नहीं हो सकता।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि़. 5, स. 112)

मस्अला :- चांद देख कर इस की जानिब उंगली से इशारा करना मकरूह है अगर्चे दूसरों को बताने के लिये हो।

(الفتاوی الھندیة، کتاب الصوم، الباب الثانی فی رؤیة الھلال، ج١، ص١٩٧)

रोज़ा तोड़ने वाली चीज़ें

खाने पीने से या जिमाअ़ करने से रोज़ा टूट जाता है जब कि रोज़ादार होना याद हो और अगर रोज़ादार होना याद न रहा और भूल कर खा पी लिया या जिमाअ़ कर लिया तो रोज़ा नहीं टूटा।

(الفتاوی الھندیة، کتاب الصوم، الباب الرابع فیما یفسد___الخ، النوع الاول، ج١، ص٢٠٢)

मस्अला :- हुक़्क़ा, बीड़ी, सिगरेट, चुरट, सिगार पीने से रोज़ा टूट जाता है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि. 5, स. 117)

मस्अला :- दांतों में कोई चीज़ रुकी हुई थी चने बराबर या उस से ज़ियादा थी उसे खा लिया या चने से कम ही थी मगर उस को मुंह से निकाल कर फिर खा गया तो रोज़ा टूट गया।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصوم، الباب الرابع فیما یفسد۔۔۔الخ ، النوع الاول، ج ۱، ص ۲۰۲)

मस्अला :- नथनों में दवा चढ़ाई या कान में तेल डाला या तेल चला गया तो रोज़ा टूट गया और अगर पानी कान में डाला या चला गया तो रोज़ा नहीं टूटा। जदीद तह्क़ीक़ के मुताबिक़ कान में मनफ़ज़ न होने की बिना पर रोज़ा नहीं टूटेगा। (الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصوم، الباب الرابع فیما یفسد۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۲۰۴)

मस्अला :- कुल्ली करने में बिला क़स्द पानी ह़ल्क़ से नीचे चला गया या नाक में पानी चढ़ा रहा था बिला क़स्द पानी दिमाग़ में चढ़ गया तो रोज़ा टूट गया। (الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصوم، الباب الرابع فیما یفسد۔۔۔الخ ، النوع الاول، ج ۱، ص ۲۰۲)

मस्अला :- दूसरे का थूक निगल गया या अपना ही थूक हाथ पर रख कर निगल गया तो रोज़ा जाता रहा।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصوم، الباب الرابع فیما یفسد۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۲۰۳)

मस्अला :- क़स्दन मुंह भर कर क़ै की और रोज़ादार होना याद है तो रोज़ा टूट गया और अगर मुंह भर से कम की तो रोज़ा नहीं टूटा।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصوم، الباب الرابع فیما یفسد۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۲۰۴)

मस्अला :- बिला क़स्द और बे इख़्तियार क़ै हो गई तो रोज़ा नहीं टूटा थोड़ी क़ै हो या ज़ियादा रोज़ादार होना याद हो या न हो बहर ह़ाल रोज़ा नहीं टूटेगा। (الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصوم، الباب الرابع فیما یفسد۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۲۰۴)

मस्अला :- मुंह में रंगीन धागा या कोई रंगीन चीज़ रखी जिस से थूक रंगीन हो गया फिर इस रंगीन थूक को निगल लिया तो उस का रोज़ा टूट गया।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصوم، الباب الرابع فیما یفسد۔۔۔الخ، ج ۱، ص ۲۰۳)

जिन चीज़ों से रोज़ा नहीं टूटता

भूल कर खाया पिया या जिमाअ़ कर लिया तो रोज़ा नहीं टूटा।

(الفتاوی الهندية، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد۔۔۔الخ، النوع الاول، ج۱، ص۲۰۲)

मस्अला :- मख्खी या धुवां गुबार बे इख़्तियार ह़ल्क़ के अन्दर चले जाने से रोज़ा नहीं टूटता इसी त़रह़ सुर्मा या तेल लगाया अगर्चे तेल या सुर्मे का मज़ा ह़ल्क़ में मा'लूम होता हो फिर भी रोज़ा नहीं टूटा। यूं ही दवा या मिर्च कूटा या आटा छाना और ह़ल्क़ में इस का अषर और मज़ा मा'लूम हुवा तो भी रोज़ा नहीं टूटा।

(الفتاوی الهندية، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد۔۔۔الخ، ج۱، ص۲۰۳)

मस्अला :- कुल्ली की और पानी बिल्कुल उगल दिया, सिर्फ़ कुछ तरी मुंह में बाक़ी रह गई, थूक के साथ इस को निगल गया या कान में पानी चला गया या एह़तिलाम हो गया या ग़ीबत की या ख़ियानत की ह़ालत में सुब्ह़ की बल्कि अगर सारे दिन जनाबत की ह़ालत में रह गया और ग़ुस्ल नहीं किया तो रोज़ा नहीं गया लेकिन इतनी देर तक बिला उ़ज़्र क़स्दन ग़ुस्ल न करना कि नमाज़ क़ज़ा हो जाए गुनाह और ह़राम है। ह़दीष में आया है कि जुनुबी (जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ है) जिस घर में रहता हो उस में रह़मत के फ़िरिश्ते नहीं आते।

(الفتاوی الهندية، كتاب الصوم، الباب الرابع فيما يفسد۔۔۔الخ، ج۱، ص۲۰۳)

रोज़े के मकरूहात :- झूट, ग़ीबत, चुग़ली, गाली गलोच करने, किसी को तक्लीफ़ देने से रोज़ा मकरूह हो जाता है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1 हि. 5, स. 127)

मस्अला :- रोज़ादार को बिला वजह कोई चीज़ ज़बान पर रख कर चखना या चबा कर उगल देना मकरूह है इसी त़रह औ़रत को बोसा देना और गले लगाना और बदन छूना भी मकरूह है जब कि येह डर हो कि इन्ज़ाल हो जाएगा।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصوم، الباب الثالث فیما یکرہ للصائم۔۔۔الخ، ج۱، ص۱۹۹۔۲۰۰)

मस्अला :- रोज़ादार के लिये कुल्ली करने और नाक में पानी चढ़ाने में मुबालग़ा करना भी मकरूह है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصوم، الباب الثالث فیما یکرہ۔۔۔الخ، ج۱، ص۱۹۹)

मस्अला :- रोज़ादार को ग़ुस्ल करना या ठन्डा पानी ठन्डक के लिये सर पर डालना या ग़ीला कपड़ा ओढ़ना या बार बार कुल्ली करना, मिस्वाक करना या सर और बदन में तेल की मालिश करना या सुर्मा लगाना या खुश्बू सूंघना मकरूह नहीं है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الصوم، الباب الثالث فیما یکرہ۔۔۔الخ، ج۱، ص۱۹۹)

रोज़ा तोड़ डालने का कफ़्फ़ारा :- अगर किसी वजह से रमज़ान का या कोई दूसरा रोज़ा टूट गया तो उस रोज़े की क़ज़ा लाज़िम है लेकिन बिला उ़ज़्र रमज़ान का रोज़ा क़स्दन खा पी कर या जिमाअ़ कर के तोड़ डालने से क़ज़ा के साथ कफ़्फ़ारा अदा करना भी वाजिब है। रोज़ा तोड़ डालने का कफ़्फ़ारा येह है कि एक ग़ुलाम या लौंडी ख़रीद कर आज़ाद करे और न हो सके तो लगातार साठ रोज़े रखे और अगर इस की भी ताक़त न हो तो साठ मिस्कीनों को दोनों वक़्त पेट भर कर खाना खिलाए। कफ़्फ़ारे में रोज़ा रखने की सूरत में लगातार साठ रोज़े रखना ज़रूरी हैं अगर दरमियान में एक दिन का भी रोज़ा छूट गया तो फिर से साठ रोज़े रखने पड़ेंगे। (ردالمحتار مع الدر المختار، کتاب الصوم، مطلب فی الکفارۃ، ج۳، ص۴۴۷)

कब रोज़ा छोड़ने की इजाज़त है :- शरई सफ़र, ह़ामिला औ़रत को नुक़्सान पहुंचने का अन्देशा, दूध पिलाने वाली औ़रत के दूध सूख जाने का डर, बीमारी, बुढ़ापा, कमज़ोरी की वजह से हलाक हो जाने का ख़ौफ़ या किसी ने गर्दन पर तलवार रख कर मजबूर कर दिया कि रोज़ा न रखे वरना जान से मार डालेगा या कोई उ़ज़्व काट लेगा या पागल हो जाना या जिहाद करना येह सब **रोज़ा न रखने के उ़ज़्र** हैं। इन बातों की वजह से अगर कोई रोज़ा न रखे तो गुनहगार नहीं लेकिन बा'द में जब उ़ज़्र जाता रहे तो इन छोड़े हुए रोज़ों को रखना फ़र्ज़ है।

(الدرالمختارمع ردالمحتار، کتاب الصیام، فصل فی العوارض، ج۳،ص ٤٦٢ـ٤٦٣)

मस्अला :- शैख़े फ़ानी या'नी वोह बुड्ढा कि न अब रोज़ा रख सकता है और न आयन्दा इस में इतनी त़ाक़त आने की उम्मीद है कि रख सकेगा तो उसे रोज़ा न रखने की इजाज़त है और उस को लाज़िम है कि हर रोज़े के बदले दोनों वक़्त एक मिस्कीन को भर पेट खाना खिलाए या हर रोज़े के बदले सदक़ए फ़ित्र की मिक़्दार मिस्कीन को दे दिया करे।

(الدرالمختارمع ردالمحتار، کتاب الصیام، فصل فی العوارض، ج۳،ص ٤٧١ـ٤٧٢)

मस्अला :- जिन लोगों को रोज़ा न रखने की इजाज़त है उन को ए'लानिया खाने पीने की इजाज़त नहीं है। वोह लोगों की निगाहों से छुप कर खा पी सकते हैं।

चन्द नफ़्ली रोज़ों की फ़ज़ीलत

आ़शूरा :- या'नी दसवीं मुह़र्रम का रोज़ा और बेहतर येह है कि नववीं मुह़र्रम को भी रोज़ा रखे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि रमज़ान के बा'द अफ़्ज़ल रोज़ा मुह़र्रम का रोज़ा है।

(مسلم، کتاب الصیام، باب فضل صوم المحرم، رقم ١١٦٣، ص ٥٩١)

और इरशाद फ़रमाया कि आ़शूरा का रोज़ा एक साल पहले के गुनाह मिटा देता है। (مسلم، کتاب الصیام، باب استحباب صیام ثلاثۃ ایام۔۔۔الخ، رقم ١١٦٢، ص ٥٨٩)

अ़रफ़ा :- या'नी नववीं ज़ुलहिज्जा का रोज़ा । हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि अ़रफ़ा का रोज़ा एक साल पहले और एक साल बा'द के गुनाहों को मिटा देता है ।

(مسلم ، کتاب الصیام،باب استحباب صیام ثلاثة ایام۔۔۔الخ،رقم۱۱۶۲،ص۵۸۹)

हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अ़रफ़ा के रोज़े को हज़ारों रोज़ों के बराबर बताते थे मगर हज करने वालों को जो मैदाने अ़रफ़ात में हों उन को इस रोज़े से मन्अ़ फ़रमाया । (المعجم الأوسط،رقم ۶۸۰۲،ج۵،ص۱۲۷)

शव्वाल के छे रोज़े :- रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने रमज़ान के रोज़े रखे फिर इन के बा'द छे दिन शव्वाल के रोज़े रखे तो वोह ऐसा है जिस ने हमेशा रोज़ा रखा और फ़रमाया जिस ने ईद के बा'द छे रोज़े रखे तो उस ने पूरे साल के रोज़े रखे ।

(مسلم ، کتاب الصیام،باب استحباب صوم ستة...الخ،رقم۱۱۶۴،ص۵۹۲)

शा'बान का रोज़ा और शबे बराअत :- रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब शा'बान की पन्दरहवीं रात (शबे बराअत) आए तो इस रात में क़ियाम करो या'नी नफ़्ल नमाज़ें पढ़ो और इस दिन में रोज़ा रखो कि **अल्लाह** तआ़ला सूरज डूबने के बा'द से आस्माने दुन्या पर ख़ास तजल्ली फ़रमाता है और ए'लान फ़रमाता है कि क्या है कोई बख़्शिश का त़लबगार ? कि मैं उस को बख़्श दूं ! क्या है कोई रोज़ी त़लब करने वाला ? कि मैं उसे रोज़ी दूं ! क्या है कोई गिरिफ़्तार होने वाला ? कि मैं उस को रिहाई दूं ! क्या है कोई ऐसा ? क्या है कोई ऐसा ? इस क़िस्म की निदाएं होती रहती हैं यहां तक कि फ़ज्र तुलूअ़ हो जाती है ।

(مشکاۃالمصابیح ، کتاب الصلوٰۃ،باب قیام شھررمضان،رقم۱۳۰۸،ج۱،ص۳۷۵)

अय्यामे बीज़ के रोज़े :- या'नी हर महीने की तेरह, चौदह, पन्द्रह तारीख़ों के रोज़े। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि हर महीने के तीन रोज़े ऐसे हैं जैसे हमेशा का रोज़ा।

(سنن ترمذی، کتاب الصوم،باب ماجاء فی صوم ثلاثۃ۔۔۔الخ،رقم ۷۶۲،ج۲،ص ۱۹٤)

और फ़रमाया कि जिस से हो सके हर महीने में तीन रोज़े रखे। हर रोज़ा उस दिन के गुनाह मिटाता है और वोह शख़्स गुनाहों से ऐसा पाक हो जाता है जैसे पानी कपड़े को पाक कर देता है। (المعجم الکبیر، رقم ۰۲،ج۲۵،ص ۳۵)

हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़र व हज़र में अय्यामे बीज़ के रोज़े रखते थे। (نسائی، کتاب الصوم،باب صوم النبی صلی اللہ علیہ و سلم۔۔۔الخ،ج٤،ص۱۹۸)

दो शम्बा और जुमा'रात का रोज़ा :- रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि दो शम्बा और जुमा'रात को आ'माल (दरबारे ख़ुदावन्दी) में पेश किये जाते हैं, तो मैं पसन्द करता हूं कि मेरा अमल इस हाल में पेश किया जाए कि मैं रोज़ादार होऊं।

(جامع الترمذی، کتاب الصوم،باب ماجاء فی صوم الاربعاء والخمیس،ج۲،ص ۱۸۷)

और फ़रमाया कि इन दोनों दिनों में **अल्लाह** तआ़ला हर मुसलमान की मग़फ़िरत फ़रमाता है मगर ऐसे दो आदमियों की जिन्हों ने एक दूसरे से क़त्ए तअ़ल्लुक़ कर लिया हो इन दोनों के बारे में **अल्लाह** तआ़ला फ़िरिश्तों से फ़रमाता है कि इन्हें छोड़ दो यहां तक कि येह दोनों आपस में सुल्ह कर लें।

(ابن ماجہ، کتاب الصیام،باب صیام یوم الاثنین والخمیس،رقم ۱۷٤۰،ج۲،ص ۳٤٤)

बुध, जुमा'रात और जुमुआ़ का रोज़ा :- रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो बुध व जुमा'रात व जुमुआ़ को रोज़ा रखे **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये जन्नत में एक ऐसा मकान बनाएगा जिस के बाहर का हिस्सा अन्दर से दिखाई देगा और अन्दर का हिस्सा बाहर से।

(المعجم الاوسط،رقم ۲۵۳،ج۱،ص ۸۷)

ए'तिकाफ़

इबादत की निय्यत से अल्लाह तआ़ला के लिये मस्जिद में ठहरने का नाम ए'तिकाफ़ है। ए'तिकाफ़ की तीन क़िस्में हैं। अव्वल ए'तिकाफ़े वाजिब, दूसरे ए'तिकाफ़े सुन्नत, तीसरे ए'तिकाफ़े मुस्तह़ब।

(الدرالمختارمع ردالمحتار، کتاب الصوم ،باب الاعتکاف، ج٣،ص ٤٩٢ـ٤٩٥)

ए'तिकाफ़े वाजिब :- जैसे किसी ने येह मन्नत मानी कि मेरा फुलां काम हो जाए तो मैं एक दिन या दो दिन का ए'तिकाफ़ करूंगा और उस का काम हो गया तो येह ए'तिकाफ़े वाजिब है और इस का पूरा करना ज़रूरी है। याद रखो कि ए'तिकाफ़े वाजिब के लिये रोज़ा शर्त़ है बिग़ैर रोज़े के ए'तिकाफ़े वाजिब सह़ीह़ नहीं।

(الدرالمختارمع ردالمحتار، کتاب الصوم ،باب الاعتکاف، ج٣،ص ٤٩٥ـ٤٩٦)

ए'तिकाफ़े सुन्नते मुअक्कदा :- रमज़ान के आख़िरी दस दिनों में किया जाएगा। या'नी बीसवीं रमज़ान को सूरज डूबने से पहले ए'तिकाफ़ की निय्यत से मस्जिद में दाख़िल हो जाएं और तीसवीं रमज़ान को सूरज डूबने के बा'द उन्तीसवीं रमज़ान को चांद होने के बा'द मस्जिद से निकले। याद रखो कि ए'तिकाफ़े सुन्नत मुअक्कदए किफ़ाया है या'नी मह़ल्ले के सब लोग छोड़ दें तो सब आख़िरत के मुआख़ज़े में गिरिफ़्तार होंगे और किसी एक ने भी ए'तिकाफ़ कर लिया तो सब आख़िरत के मुआख़ज़े से बरी हो जाएंगे। इस ए'तिकाफ़ में भी रोज़ा शर्त़ है मगर वोही रमज़ान के रोज़े काफ़ी हैं।

(الدرالمختارمع ردالمحتار، کتاب الصوم ،باب الاعتکاف، ج٣،ص ٤٩٥ـ٤٩٦)

ए'तिकाफ़े मुस्तह़ब :- ए'तिकाफ़े मुस्तह़ब येह है कि जब कभी भी दिन या रात में मस्जिद के अन्दर दाख़िल हो तो ए'तिकाफ़ की निय्यत करे। जितनी देर तक मस्जिद में रहेगा ए'तिकाफ़ का षवाब पाएगा।

निय्यत में सिर्फ़ इतना दिल में ख़याल कर लेना और मुंह से कह लेना काफ़ी है कि मैं ने ख़ुदा के लिये ए'तिकाफ़े मुस्तहब की निय्यत की।

मस्अला :- मर्द के लिये ज़रूरी है कि मस्जिद में ए'तिकाफ़ करे और औरत अपने घर में उस जगह ए'तिकाफ़ करेगी जो जगह उस ने नमाज़ पढ़ने के लिये मुक़र्रर की हो।

(الدر المختار، کتاب الصوم، باب الاعتکاف، ج٣،ص٤٩٣_٤٩٤)

मस्अला :- ए'तिकाफ़ करने वाले के लिये बिला उ़ज़्र मस्जिद से निकलना ह़राम है अगर निकला तो ए'तिकाफ़ टूट जाएगा चाहे क़स्दन निकला हो या भूल कर। इसी त़रह़ औ़रत ने जिस मकान में ए'तिकाफ़ किया है उस को उस घर से बाहर निकलना ह़राम है अगर औ़रत उस मकान से बाहर निकल गई तो ख़्वाह वोह क़स्दन निकली हो या भूल कर उस का ए'तिकाफ़ टूट जाएगा। (الدر المختار، کتاب الصوم، باب الاعتکاف، ج٣،ص٥٠٠_٥٠٣)

मस्अला :- ए'तिकाफ़ करने वाला सिर्फ़ दो उ़ज़्रों की वजह से मस्जिद से बाहर निकल सकता है **एक** उ़ज़्रे त़बई जैसे पेशाब पाख़ाना और ग़ुस्ले फ़र्ज़ व वुज़ू के लिये, **दूसरा** उ़ज़्रे शरई जैसे नमाज़े जुमुआ़ के लिये जाना। इन उ़ज़्रों के सिवा किसी और वजह से अगर्चे एक ही मिनट के लिये हो मस्जिद से अगर निकला तो ए'तिकाफ़ टूट जाएगा अगर्चे भूल कर ही निकले।

(الدرالمختار مع ردالمحتار، کتاب الصیام، باب الاعتکاف، ج٣،ص٥٠١،٥٠٣)

मस्अला :- ए'तिकाफ़ करने वाला दिन रात मस्जिद ही में रहेगा वहीं खाए, पिये, सोए मगर येह एह़तियात़ रखे कि खाने पीने से मस्जिद गन्दी न होने पाए। मो'तकिफ़ के सिवा किसी और को मस्जिद में खाने पीने और सोने की इजाज़त नहीं है इस लिये अगर कोई आदमी मस्जिद में

खाना पीना और सोना चाहे तो उस को चाहिये कि ए'तिकाफ़े मुस्तह़ब की निय्यत कर के मस्जिद में दाख़िल हो और नमाज़ पढ़े या ज़िक्रे इलाही करे फिर उस के लिये खाने पीने और सोने की भी इजाज़त है।

(الدرالمختار مع ردالمحتار، کتاب الصیام، باب الاعتکاف، ج۳، ص ۵۰۶)

मस्अला :– ए'तिकाफ़ करने वाला बिल्कुल ही चुप न रहे न बहुत ज़ियादा लोगों से बात चीत करे बल्कि उस को चाहिये कि नफ़्ल नमाज़ें पढ़ें, तिलावत करे, इल्मे दीन का दर्स दे, औलिया व सालेह़ीन के ह़ालात सुने और दूसरों को सुनाए, कषरत से दुरूद शरीफ़ पढ़े और ज़िक्रे इलाही करे और अकषर बा वुज़ू रहे और दुन्यादारी के ख़यालात से दिल को पाक साफ़ रखे और ब कषरत रो रो कर और गिड़गिड़ा कर ख़ुदा से दुआ़एं मांगे।

ह़ज का बयान

ह़ज सि. 9 हि. में फ़र्ज़ हुवा। नमाज़ व ज़कात और रोज़े की त़रह़ ह़ज भी इस्लाम का एक रुक्न है। इस का फ़र्ज़ होना क़त़ई और यक़ीनी है जो इस की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार करे वोह काफ़िर है और इस की अदाएगी में ताख़ीर करने वाला गुनाहगार और इस का तर्क करने वाला फ़ासिक़ और अ़ज़ाबे जहन्नम का सज़ावार है। **अल्लाह** तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया कि :

وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ۔ (پ ۲، البقرۃ: ۱۹۶)

या'नी ह़ज व उ़मरह को **अल्लाह** के लिये पूरा करो।

अह़ादीष में ह़ज व उ़मरह के फ़ज़ाइल और अज्रो षवाब के बारे में बड़ी बड़ी बिशारतें आई हैं मगर ह़ज उ़म्र में सिर्फ़ एक बार ही फ़र्ज़ है।

ह़दीष :– एक ह़दीष में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जिस ने ह़ज किया और ह़ज के दरमियान रफ़ष (फ़ोह़ूह़श कलाम) और फ़िस्क़ न किया तो वोह इस त़रह़ गुनाहों से पाक साफ़ हो कर लौटा जैसे उस दिन कि मां के पेट से पैदा हुवा था।

(صحیح البخاری، کتاب الحج، باب فضل الحج المبرور، رقم ۱۵۲۱، ج۱، ص ۵۱۲)

ह़दीष :– ह़ज व उ़मरह मोह़ताजी और गुनाहों को इस त़रह़ दूर करते हैं जैसे भट्ठी लोहे और चांदी सोने के मेल को दूर करती है और ह़ज्जे मबरूर का षवाब जन्नत ही है।

(سنن الترمذی، کتاب الحج،باب ماجاء فی ثواب الحج والعمرۃ، رقم۸۱۰،ج۲،ص۲۱۸)

ह़ज वाजिब होने की शर्तें :– ह़ज वाजिब होने की आठ शर्तें हैं जब तक येह सब न पाई जाएं ह़ज फ़र्ज़ नहीं।

﴾1﴿ मुसलमान होना, काफ़िर पर ह़ज फ़र्ज़ नहीं ﴾2﴿ दारुल ह़र्ब में हो तो येह भी ज़रूरी है कि जानता हो कि ह़ज इस्लाम के अरकान में से है ﴾3﴿ बालिग़ होना या'नी नाबालिग़ पर ह़ज फ़र्ज़ नहीं ﴾4﴿ आ़क़िल होना लिहाज़ा मजनून पर ह़ज फ़र्ज़ नहीं ﴾5﴿ आज़ाद होना या'नी लौंडी गुलाम पर ह़ज फ़र्ज़ नहीं ﴾6﴿ तन्दुरुस्त होना कि ह़ज को जा सके इस के आ'ज़ा सलामत हों, अख्यारा हो लिहाज़ा अपाहज और फ़ालिज वाले और जिस के पाऊं कटे हों और उस बुढ्ढे पर कि सुवारी पर ख़ुद न बैठ सकता हो ह़ज फ़र्ज़ नहीं। यूं ही अन्धे पर भी ह़ज फ़र्ज़ नहीं अगर्चे पकड़ कर ले चलने वाला उसे मिले इन सब पर भी येह ज़रूरी नहीं कि किसी को भेज कर अपनी त़रफ़ से ह़ज करा दें ﴾7﴿ सफ़रे ख़र्च का मालिक होना और सुवारी की क़ुदरत होना चाहिये। सुवारी का मालिक हो या उस के पास इतना माल हो कि सुवारी किराये पर ले सके ﴾8﴿ ह़ज का वक़्त या'नी ह़ज के महीनों में तमाम शराइत़ पाए जाएं।

(ردالمحتارمع الدرالمختار، کتاب الحج،مطلب فیمن حج بمال حرام،ج۳،ص۵۲۱)

वुजूबे अदा के शराइत़ :– यहां तक तो वुजूब के शराइत़ का बयान है अब शराइते़ अदा का बयान होता है कि येह शर्तें अगर पाई जाएं तो ख़ुद ह़ज को जाना ज़रूरी है और अगर येह सब शर्तें न पाई जाएं तो ख़ुद ह़ज को जाना ज़रूरी नहीं बल्कि दूसरे से ह़ज करा सकता है या वसिय्यत कर जाए मगर इस में येह भी ज़रूर है कि ह़ज कराने के बा'द आख़िर उ़म्र तक ख़ुद क़ादिर न हो वरना ख़ुद भी ह़ज करना ज़रूरी होगा वोह शर्तें येह हैं

﴾1﴿ रास्ते में अम्न व अमान होना या'नी अगर ग़ालिब गुमान सलामती का हो तो ह़ज के लिये जाना ज़रूरी है और ग़ालिब गुमान येह हो कि डाका या लड़ाई की वजह से जान ज़ाएअ़ हो जाएगी तो ह़ज के लिये जाना ज़रूरी नहीं ﴾2﴿ औ़रत को मक्का तक जाने में तीन दिन या ज़ियादा का रास्ता हो तो उस के हमराह शोहर या मह़रम का होना शर्त़ है ख़्वाह वोह औ़रत जवान हो या बुढ़िया और अगर तीन दिन से कम का रास्ता हो तो औ़रत बिग़ैर शोहर और मह़रम के भी जा सकती है मगर मह़रम से मुराद वोह मर्द है कि जिस से हमेशा के लिये उस औ़रत का निकाह़ ह़राम हो चाहे नसब की वजह से निकाह़ ह़राम हो जैसे बेटा, बाप, भाई वग़ैरा या सुसराल के रिश्ते से निकाह़ ह़राम हो जैसे ख़ुसर या शोहर का बेटा। औ़रत शोहर या मह़रम जिस के साथ सफ़र कर सकती है उस का आ़क़िल बालिग़ ग़ैरे फ़ासिक़ होना शर्त़ है ﴾3﴿ ह़ज को जाने के ज़माने में औ़रत इ़द्दत में न हो चाहे वफ़ात की इ़द्दत हो या त़लाक़ की ﴾4﴿ क़ैद में न हो।

(الفتاوی الهندية، كتاب المناسك، الباب الاول، ج١، ص٢١٨-٢١٩)

सिह़्ह़ते अदा की शर्तें :- सिह़्ह़ते अदा की नव शर्तें हैं कि अगर येह न पाई जाएं तो ह़ज सह़ीह़ नहीं होगा वोह शराइत़ येह हैं ﴾1﴿ मुसलमान होना ﴾2﴿ एह़राम (बिग़ैर एह़राम के ह़ज नहीं हो सकता) ﴾3﴿ ह़ज का वक़्त या'नी ह़ज के लिये जो वक़्त शरीअ़त की त़रफ़ से मुअ़य्यन है इस से क़ब्ल ह़ज के अफ़्आ़ल नहीं हो सकते ﴾4﴿ अफ़्आ़ले ह़ज की जगहों पर अफ़्आ़ले ह़ज करना मषलन त़वाफ़ की जगह मस्जिदे ह़राम है, वुक़ूफ़ की जगह मैदाने अ़रफ़ात व मुज़्दलिफ़ा है, कंकरी मारने की जगह मिना है। अगर येह काम दूसरी जगह करेगा तो ह़ज सह़ीह़ नहीं होगा ﴾5﴿ तमीज़ करना, इतना छोटा बच्चा कि जिस में किसी चीज़ की तमीज़ ही न हो उस का ह़ज सह़ीह़ नहीं ﴾6﴿ अ़क़्ल वाला होना कि मजनून और

दीवाने का ह़ज सह़ीह़ नहीं 《7》 ह़ज के फ़राइज़ को अदा करना। जिस ने ह़ज का कोई फ़र्ज़ छोड़ दिया उस का ह़ज सह़ीह़ नहीं हुवा 《8》 एह़राम के बा'द और अ़रफ़ात में वुक़ूफ़ से पहले जिमाअ़ न होना अगर होगा तो ह़ज बात़िल हो जाएगा 《9》 जिस साल एह़राम बांधा उसी साल ह़ज करना अगर इस साल एह़राम बांधा और चाहे इसी एह़राम से आयन्दा साल ह़ज करे तो येह ह़ज सह़ीह़ नहीं होगा।

(ردالمحتار مع الدر المختار، کتاب الحج،مطلب فیمن حج بمال حرام،ج۳،ص ۵۲۲)

ह़ज के फ़राइज़ :- ह़ज में येह चीज़ें फ़र्ज़ हैं 《1》 एह़राम कि येह शर्त़ है 《2》 वुक़ूफ़े अ़रफ़ा या'नी नववीं ज़ुलह़िज्जा के आफ़्ताब ढलने से दसवीं की सुब्ह़े सादिक़ से पहले तक किसी वक़्त "अ़रफ़ात" में ठहरना 《3》 त़वाफ़े ज़ियारत का अकषर ह़िस्सा या'नी चार फेरे। येह दोनों चीज़ें (या'नी अ़रफ़ा का वुक़ूफ़ और त़वाफ़े ज़ियारत) ह़ज का रुक्न हैं 《4》 निय्यत 《5》 तरतीब या'नी पहले एह़राम बांधना फिर अ़रफ़ा में ठहरना फिर त़वाफ़े ज़ियारत 《6》 हर फ़र्ज़ का अपने वक़्त पर होना 《7》 मकान या'नी वुक़ूफ़े अ़रफ़ा मैदाने अ़रफ़ात की ज़मीन में होना सिवा "बत़्ने अ़रना" के और त़वाफ़ का मकान मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ है।

(الدرالمختارمع ردالمحتار، کتاب الحج،مطلب فی فروض الحج وواجباته،ج۳،ص ۵۳۶۔۵۳۷)

ह़ज के वाजिबात :- ह़ज के वाजिबात येह हैं 《1》 मीक़ात से एह़राम बांधना या'नी मीक़ात से बिग़ैर एह़राम बांधे आगे न गुज़रना और अगर मीक़ात से पहले ही एह़राम बांध लिया जाए तो जाइज़ है 《2》 सफ़ा व मर्वा के दरमियान दौड़ना इस को "सअ़्य" कहते हैं 《3》 सअ़्य को "सफ़ा" से शुरूअ़ करना 《4》 अगर उ़ज़्र न हो तो पैदल सअ़्य करना 《5》 दिन में मैदाने अ़रफ़ात के अन्दर वुक़ूफ़ किया है तो इतनी देर तक वुक़ूफ़ करे कि आफ़्ताब ग़ुरूब हो जाए ख़्वाह आफ़्ताब ढलते ही शुरूअ़ किया था या बा'द में ग़रज़ ग़ुरूबे आफ़्ताब तक वुक़ूफ़ में मश्ग़ूल रहे और अगर रात में मैदाने अ़रफ़ात के अन्दर वुक़ूफ़ किया है तो उस के

लिये किसी ख़ास ह़द तक वुक़ूफ़ करना वाजिब नहीं मगर वोह इस वाजिब का तारिक हुवा कि दिन में ग़ुरूबे आफ़्ताब तक वुक़ूफ़ करता «6» वुक़ूफ़ में रात का कुछ हिस्सा आ जाना «7» अ़रफ़ात से वापसी में इमाम की पैरवी करना या'नी जब तक इमाम मैदाने अ़रफ़ात से न निकले येह भी न चले, हां, अगर इमाम ने वक़्त से ताख़ीर की तो उसे इमाम से पहले मैदाने अ़रफ़ात से रवाना हो जाना जाइज़ है और अगर ज़बरदस्त भीड़ की वजह से या किसी दूसरी ज़रूरत से इमाम के चले जाने के बा'द मैदाने अ़रफ़ात में ठहरा रहा (इमाम के साथ न गया) जब भी जाइज़ है «8» "मुज़्दलिफ़ा" में ठहरना «9» मग़रिब व इ़शा की नमाज़ का इ़शा के वक़्त में मुज़्दलिफ़ा मुज़्दलिफ़ा पहुंच कर पढ़ना «10» तीनों जमरों पर दसवीं, ग्यारहवीं, बारहवीं तीनों दिन कंकरियां मारना या'नी दस्वीं ज़ुलहिज्जा को सिर्फ़ जम्रतुल उ़क़बा पर और ग्यारहवीं व बारहवीं तीनों जमरों पर कंकरियां मारना «11» जम्रतुल उ़क़बा की रमी पहले दिन सर मुंडाने से पहले होना «12» हर रोज़ की रमी का उसी दिन होना «13» एह़राम खोलने के लिये सर मुंडाना या बाल कतरवाना «14» येह सर मुंडाना या बाल कतरवाना, अय्यामे नह़र या'नी दसवीं, ग्यारहवीं और बारहवीं ज़ुलहिज्जा की तारीख़ों के अन्दर हो जाना और सर मुंडाना या बाल कतरवाना मिना या'नी ह़रम की हुदूद के अन्दर होना «15» क़िरान या तमत्तोअ़ करने वाले को क़ुरबानी करना «16» और इस क़ुरबानी का हुदूदे ह़रम और अय्यामे नह़र में होना «17» त़वाफ़े ज़ियारत का अकषर हिस्सा अय्यामे नह़र में हो जाना। अ़रफ़ात से वापसी में जो त़वाफ़ किया जाता है इस का नाम "त़वाफ़े ज़ियारत" है और इस त़वाफ़ को "त़वाफ़े इफ़ाज़ा" भी कहते हैं «18» त़वाफ़ "ह़त़ीम" के बाहर होना «19» दाहिनी त़रफ़ से त़वाफ़ करना या'नी का'बए मुअ़ज़्ज़मा त़वाफ़ करने वाले के बाईं जानिब हो «20» उ़ज़्र न हो तो पाऊं से चल कर त़वाफ़

करना। हां, उ़ज़्र हो तो सुवारी पर भी त़वाफ़ करना जाइज़ है ﴾21﴿ त़वाफ़ करने में बा वुज़ू और बा ग़ुस्ल रहना ०अगर बे वुज़ू या जनाबत की ह़ालत में त़वाफ़ कर लिया तो इस त़वाफ़ को दोहराए ﴾22﴿ त़वाफ़ करते वक़्त सित्र छुपाना ﴾23﴿ त़वाफ़ के बा'द दो रक्अ़त नमाज़े तह़िय्यतुत्त़वाफ़ पढ़ना लेकिन अगर न पढ़ी तो दम वाजिब नहीं ﴾24﴿ कंकरियां मारने और क़ुरबानी करने और त़वाफ़े ज़ियारत में तरतीब या'नी पहले कंकरियां मारे फिर ग़ैरे मुफ़रिद क़ुरबानी करे फिर सर मुंडाए फिर त़वाफ़े ज़ियारत करे ﴾25﴿ त़वाफ़े सदर या'नी मीक़ात के बाहर के रहने वालों के लिये रुख़्सत का त़वाफ़ करना ﴾26﴿ वुक़ूफ़े अ़रफ़ा के बा'द सर मुंडाने तक जिमाअ़ न होना ﴾27﴿ एह़राम के ममनूआ़त मषलन सिला हुवा कपड़ा पहनने और मुंह या सर छुपाने से बचना। (बहारे शरीअ़त, हि़. 6, स. 16-17)

ह़ज की सुन्नतें :- ह़ज की सुन्नतें येह हैं ﴾1﴿ त़वाफ़े क़ुदूम या'नी मीक़ात के बाहर से आने वाला कि मक्कए मुअ़ज़्ज़मा पहुंच कर सब में पहला जो त़वाफ़ करे इस को त़वाफ़े क़ुदूम कहते हैं। त़वाफ़े क़ुदूम मुफ़रिद और क़ारिन के लिये सुन्नत है मुतमत्तेअ़ के लिये नहीं ﴾2﴿ त़वाफ़ का ह़जरे अस्वद से शुरूअ़ करना ﴾3﴿ त़वाफ़े क़ुदूम या त़वाफ़े ज़ियारत में रमल करना या'नी शाना हिला हिला कर और छोटे छोटे क़दम रखते हुए अकड़ कर चलना ﴾4﴿ सफ़ा और मर्वा के दरमियान दो सब्ज़ रंग के निशानों के दरमियान दौड़ना ﴾5﴿ इमाम का मक्का में सातवीं ज़ुलह़िज्जा को ख़ुत़्बा पढ़ना ﴾6﴿ इसी त़रह़ मैदाने अ़रफ़ात में नववीं ज़ुलह़िज्जा को ख़ुत़्बा पढ़ना ﴾7﴿ इसी त़रह़ मिना में ग्यारहवीं तारीख़ को ख़ुत़्बा पढ़ना ﴾8﴿ आठवीं ज़ुलह़िज्जा को फ़ज्र के बा'द मक्के से मिना के लिये रवाना होना ताकि मिना में ज़ोहर, अ़स्र, मग़रिब, इ़शा, फ़ज्र की पांच नमाज़ें पढ़ ली जाएं ﴾9﴿ ज़ुलह़िज्जा की नववीं रात मिना में गुज़ारना ﴾10﴿ आफ़्ताब निकलने के बा'द मिना से अ़रफ़ात को रवाना होना ﴾11﴿ अ़रफ़ात में ठहरने के लिये ग़ुस्ल कर लेना ﴾12﴿ अ़रफ़ात से वापसी में मुज़्दलिफ़ा

के अन्दर रात को रहना और ﴾13﴿ आफ़्ताब निकलने से पहले यहां से मिना को चला जाना ﴾14﴿ दस और ग्यारह के बा'द जो दोनों रातें हैं इन को मिना में गुज़ारना और अगर तेरहवीं को भी मिना में रहा तो बारहवीं के बा'द की रात भी मिना में रहे ﴾15﴿ "अबतह़" या'नी वादिये मुह़स्सब में उतरना अगर्चे थोड़ी ही देर के लिये हो।

(बहारे शरीअ़त, हि़. 6, स. 18)

ज़रूरी तम्बीह :- ह़ज के फ़राइज़ में से अगर एक फ़र्ज़ भी छूट गया तो ह़ज होगा ही नहीं और ह़ज के वाजिबात में से अगर किसी वाजिब को छोड़ दिया ख़्वाह क़स्दन छोड़ा हो या सह्वन तो उस पर एक "**दम**" वाजिब है और उस का ह़ज बाति़ल नहीं हुवा हां अलबत्ता बा'ज़ वाजिब ऐसे भी हैं कि इन के छोड़ने से कुरबानी लाज़िम नहीं होती मषलन त़वाफ़ के बा'द की दो रक्अ़तें तहि़य्यतुत्त़वाफ़ वाजिब हैं। लेकिन अगर कोई छोड़ दे तो उस पर कुरबानी लाज़िम नहीं और ह़ज की सुन्नतों में से अगर कोई सुन्नत छोड़ दे तो इस से न तो ह़ज बाति़ल होगा न कुरबानी लाज़िम होगी हां अलबत्ता ह़ज के षवाब में कुछ कमी आ जाएगी।

(ردالمحتار، کتاب الحج،مطلب فی فروض الحج ، ج۳،ص۵٤۲)

सफ़रे ह़ज व ज़ियारत के आदाब :- हर ह़ाजी को चाहिये कि रवानगी से पहले ज़रूरियाते सफ़र पुराने ह़ाजियों से मा'लूम कर के मुहय्या करे और मुन्दरजए ज़ैल आदाब व हिदायात का ख़ास तौ़र से ख़याल रखे।

﴾1﴿ सब से पहले निय्यत को दुरुस्त करे कि इस सफ़र से मक़्सूद सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हों इस के सिवा नामवरी या शोहरत या सैरो तफ़्रीह़ या तिजारत वग़ैरा का हरगिज़ हरगिज़ दिल में ख़याल न लाए।

﴾2﴿ नमाज़ रोज़ा ज़कात जितनी इबादात उस के ज़िम्मे वाजिब हों सब को अदा करे और तौबा करे और आयन्दा गुनाह न करने का पक्का इरादा करे। इसी त़रह़ उस के ऊपर जिन जिन लोगों का क़र्ज़ हो सब का क़र्ज़ अदा करे।

जिन जिन लोगों की अमानतें हों उन की अमानतों को अदा करे। जिन जिन लोगों के हुक़ूक़ उस के ज़िम्मे हों सब से हुक़ूक़ मुआ़फ़ कराए या अदा करे। जिन जिन लोगों पर कोई ज़ियादती की हो उन से मुआ़फ़ कराए। जिन जिन लोगों की इजाज़त के बिग़ैर सफ़र मकरूह है जैसे मां, बाप, शोहर, उन को रिज़ामन्द कर के इजाज़त ह़ासिल करे। इन तमाम चीज़ों से फ़ारिग़ और सुबुकदोश हो कर सफ़रे ह़ज व ज़ियारत के लिये रवाना हो।

﴾3﴿ औ़रत के साथ जब तक कि उस का शोहर या बालिग़ मह़रम क़ाबिले इत़्मीनान न हो (जिन से उस औ़रत का निकाह़ हमेशा के लिये ह़राम हो) उस वक़्त तक औ़रत के लिये सफ़र ह़राम है। औ़रत अगर बिला शोहर या बिग़ैर मह़रम के ह़ज करेगी तो उस का ह़ज हो जाएगा मगर हर हर क़दम पर गुनाह लिखा जाएगा।

(كتاب المناسك ملا علی قاری، كتاب الادعية الحج والعمرة، فصل في الوداع وفصل في لركوب،ص٥٤٥)

﴾4﴿ रक़म या तोशा जो कुछ साथ ले चले माले ह़लाल से ले वरना ह़ज मक़्बूल होने की उम्मीद नहीं अगर्चे फ़र्ज़ अदा हो जाएगा। अगर अपने माल में कुछ शुबा हो तो चाहिये कि किसी से क़र्ज़ ले कर ह़ज को जाए और वोह क़र्ज़ अपने माल से अदा करे। रक़म और तोशा अपनी ह़ाजत से कुछ ज़ियादा ही ले ताकि रफ़ीक़ों की मदद और फ़क़ीरों को सदक़ा देता चले कि येह ह़ज्जे मबरूर की निशानी है।

﴾5﴿ चूंकि सफ़र करने वाले मुख़्तलिफ़ हैषिय्यतों के लोग होते हैं इस लिये हर शख़्स को चाहिये कि अपनी ज़रूरत के मुत़ाबिक़ सफ़र का सामान अपने साथ ले जाए ताकि सफ़र में तक्लीफ़ों का सामना न करना पड़े। सब ह़ाजियों के लिये सामानों की यक्सां मिक़्दार मुअ़य्यन नहीं की जा सकती फिर भी एक औसत़ दर्जे के ह़ाजी के लिये सफ़रे ह़ज व ज़ियारत में मुन्दरजए ज़ैल सामान का साथ ले लेना आराम व राह़त का बाइ़ष होगा।

गर्मी और सर्दी के मौसिमों के लिहाज़ से एक हलका बिस्तर जिस में एक दरी, दो चादरें, एक ऊनी शाल, एक तकया हो, एक बॉक्स जिस में कपड़े और दूसरे सामान रखे जा सकें। एक टीन या लकड़ी का सन्दूक़ जिस में मुतफ़र्रिक़ सामान को रखा जा सके। एक बोरी का थेला जिस में सब बरतनों को रखा जा सके। बरतनों में एक बड़ी बालटी, एक लोटा, एक गिलास, छोटी बड़ी चार प्लेटें, दो प्याले ताम चीनी के, उगालदान, छोटी बड़ी दो देगचियां, एक बड़ा और दो तीन छोटे बड़े चमचे, अगर चन्द क़िस्म के खानों का आ़दी हो तो इसी अन्दाज़ से खाने पकाने के बरतन साथ ले जाए। एक बरतन मिट्टी का भी ज़रूर रख ले या मिट्टी और पथ्थर की कोई चीज़ रख ले ताकि अगर जहाज़ में बीमार हो गया और तयम्मुम की ज़रूरत पड़ी इस पर तयम्मुम कर सके। पानी रखने के लिये टीन के पीपे भी लाने चाहियें कि जहाज़ पर काम देंगे और जिस मंज़िल या मकान में ठहरोगे वहां भी इस की ज़रूरत पड़ेगी, स्टव और कोइला वाला चुल्हा भी सफ़र में साथ होना बहुत ज़रूरी है, पहनने के कपड़ों में पांच कुर्ते, पांच पाजामे, पांच बन्डियां, दो तहबन्द, दो सदरियां, एक इमामा, चार टोपियां, हाथ मुंह पोंछने के दो रूमाल, दो तोलिये, एह़राम की चादरें, कफ़न का कपड़ा साथ में रखें और बेहतर येह है कि एह़राम के दो जोड़े हों कि अगर मैला हुवा तो बदल सकें। एक भेड़ के बालों का देसी कम्बल या मोटे प्लास्टिक का दो गज़ लम्बा और डेढ़ गज़ चौड़ा टुकड़ा साथ होना बहुत ही आराम देह है कि जहां चाहो बिछा कर लैट बैठ जाओ फिर उठा लो। मुख़्तलिफ़ सामान में नज़्ला ज़ुकाम और क़ब्ज़ व पेचिश और क़ै दस्त व बद हज़्मी की मुजर्रब दवाएं ज़रूर साथ में रख लो क्यूंकि कम ही हुज्जाज इन अमराज़ से मह़फ़ूज़ रहते हैं और अगर तुम को ख़ुद ज़रूरत न पड़ी तो किसी ज़रूरत मन्द को तुम ने दे दी तो वोह इस कस्मपुर्सी की ह़ालत में तुम्हारे लिये कितनी दुआ़एं देगा। आईना, सुर्मा, कंघा, मिस्वाक साथ रखो कि येह सुन्नत है इन के इलावा

एक छुरी, एक चाक़ू, दो एक बोरियां, सुतली, सुवा, सुई, धागा, हज व ज़ियारत वग़ैरा के मसाइल की कुछ किताबें, चन्द क़लम, पेन्सिल, दवात, सादी कापियां, कुरआने मजीद, छड़ी, छतरी, टॉर्च, कुछ मोम बत्तियां, कुछ दिया सलाइयां भी ज़रूर ले लो। कुछ फटे पूराने कपड़े भी ज़रूर साथ रखो के इन को फाड़ फाड़ कर साफ़ी बना सको और जहाज़ पर कै वग़ैरा साफ़ करने और इस्तिन्जा वग़ैरा सुखाने में काम देंगे, खाने पीने की चीज़ों का बयान करने की ह़ाजत नहीं क्यूंकि इस मुआ़मले में लोगों की ह़ालतें और उन के खाने पीने की आ़दतें और ज़ौक़ मुख़्तलिफ़ हैं और हर शख़्स जानता है कि हमें किन किन चीज़ों की ज़रूरत होगी और हम किस त़रह़ गुज़र बसर कर सकते हैं। इस लिये हर शख़्स को चाहिये कि गेहूं, चावल, दाल, घी, तेल, मसाले वग़ैरा अपने ज़ौक़ और ज़रूरत के मुत़ाबिक़ ले ले। अचार चटनी अगर साथ हो या काग़ज़ी लीमूं कुछ ले ले तो जहाज़ पर इन चीज़ों की ज़रूरत पड़ती है। चाय और शकर भी ज़रूर ले ले कि समुन्दर की मरत़ूब हवा में चाय की ज़रूरत बहुत ज़ियादा पड़ती है। समुन्दरी सफ़र में मुंह का ज़ाइक़ा बहुत ख़राब रहता है और अकषर सूंधी चीज़ें खाने को दिल चाहता है इस लिये कुछ पापड़ या नमकीन दाल, सेवय्यां, भुने हुए चने रख लो मगर बन्द डब्बों में रखो वरना समुन्दरी हवा से बद मज़ा हो जाएंगे। अ़रब में सिगरेट बहुत मिलता है। मगर बीड़ी और पान बहुत कम और बेह़द गिरां मिलता है इस लिये हिन्दूस्तान ही से इस का इन्तिज़ाम कर लेना चाहिये। ज़रूरत की तमाम चीज़ें साथ हों येह बहुत अच्छा है लेकिन याद रखो कि सफ़र में जिस क़दर कम से कम सामान होगा उतना ही ज़ियादा आराम मिलेगा। सामान की कषरत बा'ज़ जगहों पर बहुत बड़ी मुसीबत बन जाती है इस का ख़याल रखो। अपने हर सामान के बन्डल पर अपना और अपने मुअ़ल्लिम का नाम ज़रूर लिख दो इस से जिद्दा में सामान तलाश करते वक़्त बड़ी आसानी होती है।

हाजी घर से निकलते वक़्त :-

﴾1﴿ चलते वक़्त सब अज़ीज़ों और दोस्तों से मुलाक़ात करे और अपने कुसूर मुआफ़ कराए और अपने लिये सब से दुआएं कराए क्यूंकि दूसरों की दुआएं क़बूल होने की ज़ियादा उम्मीद है और येह मा'लूम नहीं कि किस की दुआ मक़बूल होगी इस लिये सब से दुआ कराए और लोग हाजी या किसी मुसाफ़िर को रुख़्सत करते वक़्त येह दुआ पढ़ें।

اَستَودِعُ اللّٰهَ دِيْنَكَ وَ اَمَانَتَكَ وَ خَوَاتِيمَ عَمَلِكَ

और हाजी सब लोगों के दीन और जान माल अवलाद और सलामती व तन्दुरुस्ती को खुदा के सिपुर्द करे।

﴾2﴿ सफ़र का लिबास पहन कर घर में चार रक्अत नफ़्ल اَلْحَمْدُ और चारों قُل से पढ़ कर बाहर निकले येह चारों रक्अतें वापस आने तक उस के अहलो माल की निगहबानी करेंगी। नमाज़ के बा'द येह दुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ وَّعْثَآءِ السَّفَرِ وَكَاٰبَةِ الْمُنْقَلَبِ وَ الْحَوْرِ بَعْدَ الْكَوْرِ
وَ سُوْٓءِ الْمَنْظَرِ فِی الْاَهْلِ وَ الْمَالِ وَ الْوَلَدِ

फिर कुछ सदक़ा करे और घर में से निकले और दरवाज़े के बाहर निकलते ही कुछ सदक़ा करे और घर में से निकले तो येह पढ़े।

اِنَّ الَّذِیْ فَرَضَ عَلَیْکَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّکَ اِلٰی مَعَادٍ

اِنْ شَآءَ اللّٰه تعالٰی ख़ैरो आफ़िय्यत के साथ मकान पर वापस आएगा।

(बहारे शरीअ़त, हि. 6, स. 24)

घर से निकलते वक़्त खुशी खुशी बाहर निकले।

﴾3﴿ सब से रुख़्सत होने के बा'द अपनी मस्जिद से रुख़्सत हो और अगर मकरूह वक़्त न हो तो दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े फिर रेल वग़ैरा जिस सुवारी पर सुवार हो بِسۡمِ اللّٰه तीन बार पढ़े फिर اَللّٰهُ اَكۡبَرُ और اَلۡحَمۡدُ لِلّٰه और سُبۡحَانَ اللّٰه हर एक तीन तीन बार और لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه एक बार पढ़े, फिर येह पढ़े :

سُبۡحٰنَ الَّذِیۡ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقۡرِنِیۡنَ وَ اِنَّاۤ اِلٰی رَبِّنَا لَمُنۡقَلِبُوۡنَ

सुवारी के शर्र व फ़साद से महफ़ूज़ रहेगा।

हाजी बम्बई में :- टिकट वग़ैरा लेने और जहाज़ के इन्तिज़ार में हर हाजी को कम अज़ कम चार पांच दिन बम्बई में मुसाफ़िर ख़ाना हाजी साबू सिद्दीक़ या मुसाफ़िर ख़ाना वाड़ी बन्दर में ठहरना पड़ता है। यहां ख़ास तौर पर येह ख़याल रखना ज़रूरी है कि

﴾1﴿ मुसाफ़िर ख़ाने में मुख़्तलिफ़ सूबों और मुख़्तलिफ़ मिज़ाजों के हाजी और उन को रुख़्सत करने वालों का मजमअ़ होता है और चोरियां बहुत होती हैं इस लिये अपने सामान खुसूसन रक़मों की हिफ़ाज़त का ख़ास तौर पर ध्यान रखे। बक्सों में हर वक़्त ताला बन्द रखे और जब बाहर निकले तो अपने साथियों को सामान की हिफ़ाज़त सोंप कर निकले।

﴾2﴿ टिकट वग़ैरा ख़रीदने के लिये हरगिज़ हरगिज़ किसी के हाथ में रक़म न दे बल्कि खुद लाइन में खड़े हो कर रक़म जम्अ़ करवाए और टिकट ख़रीदे।

﴾3﴿ बम्बई शहर में बहुत ज़ियादा इधर उधर न फिरे कि जेब कटने के इलावा सुवारियों की भीड़ भाड़ से एक्सीडन्ट का हर वक़्त ख़त़रा रहता है इस लिये सब को और ख़ास कर देहात वालों को तो मुसाफ़िर ख़ाने से बाहर बहुत कम निकलना चाहिये और अपने सामान के पास ही रहना चाहिये।

﴾4﴿ अपने कुली का नम्बर हर वक़्त याद रखना चाहिये और जहाज़ पर सुवार होने के लिये बन्दरगाह को जाते हुए अपने कुली के सिवा किसी को अपना सामान सिपुर्द नहीं करना चाहिये और रक़म और पास पोर्ट टिकट वग़ैरा को बहर हाल अपने पास रखना चाहिये।

हाजी जहाज़ पर :- हवाई जहाज़ के मुसाफ़िरों को चाहिये कि बम्बई ही में एहराम बांध लें और जहाज़ पर सुवारी की दुआ पढ़ कर सुवार हों और रास्ते भर लबैक की दुआ पढ़ते रहें चन्द घन्टों में येह लोग जिद्दा में ज़मीन पर उतर जाएंगे मगर समुन्दरी जहाज़ वालों को एक हफ़्ता समुन्दर ही में रहना है इस लिये इन लोगों को मुन्दरजए ज़ैल बातों का ख़याल रखना चाहिये।

﴾1﴿ जहाज़ में मुख़्तलिफ़ सूबों के रहने वालों और मुख़्तलिफ़ ज़बान बोलने वालों का मजमअ़ होता है। एक दूसरे के मिज़ाजदान न होने से अकषर झगड़े तकरार की नौबत आ जाती है। खुसूसन मीठा पानी लेने के वक़्त लाइन लगाने में अकषर गाली गलोच बल्कि मार पीट हो जाया करती है इस लिये जहाज़ पर बहुत सब्रो बरदाश्त के साथ रहने की ज़रूरत है। हज के सफ़र में झगड़ा और गाली गलोच करना सख़्त हराम और बड़ा गुनाह है।

﴾2﴿ जहाज़ पर सुवार होने के बा'द अपना सब सामान अपनी सीट के नीचे तरतीब से रख कर जब मुतमइन हो जाएं तो वक़्त ज़ाएअ़ न करें बल्कि हज में मुख़्तलिफ़ जगह पढ़ने की दुआएं ज़बानी याद करने में मश्ग़ूल हो जाएं और इन्तिहाई कोशिश करें कि एक ख़त्मे कुरआने मजीद की तिलावत समुन्दर में पूरी कर लें और नमाज़े बा जमाअ़त की हर जगह ख़ास तौर पर पाबन्दी रखें और फ़ुज़ूल बातें ख़ास कर झगड़े तकरार से इन्तिहाई परहेज़ रखें।

हाजी जिद्दा में :- जिद्दा में जहाज़ से उतरते वक़्त येह बहुत ज़रूरी है कि अपने तमाम सामान को अच्छी तरह बांध कर एक जगह अपनी सीट के ऊपर रख दें। बक्सों को रस्सियों से जकड़ दें और सामान की बोरी को सी दें ताकि जहाज़ से उतारते वक़्त सामान के टूटने फूटने और बिखर

जाने का ख़त्रा न रहे फिर सिर्फ़ पासपोर्ट और रक़म साथ ले कर जहाज़ से उतर जाएं। पासपोर्ट की चेकिंग और मुआ़इने के बा'द सब से बड़ा और मुश्किल काम सामान के ढेर में से अपने सामान को तलाश करना है। इस सिलसिले में ह़ाजियों को बेह़द परेशानी होती है और लोग अपने अपने सामान की तलाश में दीवाना वार दौड़ते और भागते फिरते हैं इस मौक़अ़ पर निहायत ही सब्रो सुकून चाहिये और सामान की तलाश में जल्दी नहीं करनी चाहिये बल्कि थोड़ी देर सुकून के साथ बैठ जाना चाहिये। जब लोग अपने अपने सामान को उठा लेंगे और सामान थोड़े रह जाएं तो अपने सामान को तलाश करना आसान हो जाएगा। इत्मीनान रखें कि कोई दूसरा आप के सामान को नहीं उठाएगा आख़िर तक आप का सामान वहीं पड़ा रहेगा और अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता आप का सामान वहां न मिले तो भी घबराने की ज़रूरत नहीं बल्कि अपने मुअ़ल्लिम के वकील को हमराह ले कर मदीनतुल ह़ुज्जाज की मस्जिद के सामने वाले मैदान में अपने सामान को तलाश कीजिये वहां मिलेगा। वहां का दस्तूर है कि ह़ाजियो का जो सामान छूट जाता है ट्रक वाले उस को लाद कर मस्जिद के मैदान में डाल देते है, हां इस का ख़याल रखिये की आप के हर सामान पर आप का और आप के मुअ़ल्लिम का नाम ज़रूर लिखा होना चाहिये। **येह सऊ़दी गवर्नमेन्ट का फ़र्ज़ है कि हर ह़ाजी का छूटा हुवा सामान उस के मुअ़ल्लिम के मकान पर पहुंचाए।**

एह़राम :- जब जिद्दा दो तीन मंज़िल रह जाता है तो जहाज़ वाले सीटी बजा कर एह़राम बांधने की इत्तिलाअ़ देते हैं जब वोह जगह आ जाए तो गुस्ल करें और मिस्वाक के साथ वुज़ू करें और एक नई या धुली चादर का एह़राम बांध लें और ऐसे ही एक चादर ओढ़ ले और एह़राम की निय्यत से दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ें। पहली रक्अ़त में اَلْحَمْد के बाद **सूरए काफ़िरून** और दूसरी में **सूरए इख़्लास** पढ़ें। नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर एह़राम बांधने की दुआ़ पढ़ें। (बहारे शरीअ़त, हि. 6, स. 38)

ज़रूरी हिदायत :– याद रखो कि ह़ज का एह़राम तीन त़रह़ का होता है एक येह कि ख़ाली ह़ज करे इस ह़ाजी को "मुफ़रिद" कहते हैं और दूसरा येह कि यहां से फ़क़त़ उ़मरह की निय्यत करे और उ़मरह अदा कर के मक्कए मुकर्रमा में ह़ज का एह़राम बांधे ऐसे ह़ाजी को "मुतमत्तेअ़" कहते हैं, तीसरा येह कि ह़ज व उ़मरह दोनों के लिये यहीं से निय्यत करे येह सब से अफ़्ज़ल है इस को क़िरान कहते हैं और ऐसे ह़ाजी को क़ारिन कहा जाता है

(बहारे शरीअ़त, हि़. 6, स. 38)

मगर इन तीनों क़िस्मों में तमत्तोअ़ ज़ियादा आसान है और अकषर हिन्दूस्तानी लोग येही एह़राम बांधते हैं। इस लिये हम येही आसान त़रीक़ा लिखते हैं और वोह येह है कि।

दो रक्अ़त नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर येह दुआ़ पढ़े।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْۤ اُرِیْدُ الْعُمْرَةَ فَیَسِّرْهَا لِیْ وَتَقَبَّلْهَا مِنِّیْ نَوَیْتُ الْعُمْرَةَ وَاَحْرَمْتُ بِهَا مُخْلِصًا لِّلّٰهِ تَعَالٰی

ऐ **अल्लाह** मैं उ़मरह का इरादा करता हूं। इस को तू मेरे लिये आसान कर दे और मेरी त़रफ़ से क़बूल फ़रमा ले मैं ने उ़मरह की निय्यत की और इस का एह़राम बांधा ख़ालिस **अल्लाह** तआ़ला के लिये

इस निय्यत की दुआ़ के बा'द बुलन्द आवाज़ से लबैक पढ़े। लबैक येह है :

لَبَّیْكَ ؕ اَللّٰهُمَّ لَبَّیْكَ ؕ لَبَّیْكَ لَا شَرِیْكَ لَكَ لَبَّیْكَ ؕ اِنَّ الْحَمْدَ وَ
النِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ ؕ لَا شَرِیْكَ لَكَ ؕ

या'नी मैं तेरे पास ह़ाज़िर हुवा ऐ **अल्लाह** ! मैं तेरे हुज़ूर ह़ाज़िर हुवा मैं तेरे हुज़ूर ह़ाज़िर हुवा तेरा कोई शरीक नहीं मैं तेरे हुज़ूर ह़ाज़िर हुवा बेशक ता'रीफ़ और ने'मत और बादशाही तेरे ही लिये है तेरा कोई शरीक नहीं है।

जहां जहां दुआ़ में वक़्फ़ की अ़लामत (ط) बनी है वहां वक़्फ़ कर ले और लबैक की दुआ़ तीन मरतबा पढ़े फिर दुरूद शरीफ़ पढ़े फिर दिल लगा कर और हाथ उठा कर दुआ़ मांगे और येह दुआ़ पढ़े।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ رِضَاكَ وَالْجَنَّةَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ غَضَبِكَ وَالنَّارِ۔

ऐ **अल्लाह** मैं तेरी रिज़ा और जन्नत का साइल हूं और तेरे ग़ज़ब और जहन्नम से तेरी पनाह मांगता हूं।

लबैक पढ़ लेने के बा'द एह़राम बंध गया। अब जितनी चीज़ें एह़राम की ह़ालत में मन्अ़ हैं मषलन सिला हुवा कपड़ा पहनना, सर छुपाना, शिकार करना, ख़ुश्बू लगाना, ह़जामत बनवाना, जूं मारना वग़ैरा इन सब चीज़ों से बचे और उठते बैठते हर वक़्त ख़ास कर सह़र के वक़्त लबैक बराबर बुलन्द आवाज़ से पढ़ता रहे।

त़वाफ़े का'बए मुकर्रमा :- जब मक्कए मुकर्रमा में पहुंच जाए तो सब से पहले मस्जिदे ह़राम में जाए। अगर वुज़ू न हो तो वुज़ू करे और त़वाफ़ शुरूअ़ करने से पहले मर्द अपनी चादर को दाहिनी बग़ल के नीचे से निकाले कि दाहिना मूंढ़ा खुला रहे और चादर के दोनों कनारे बाएं मूंढ़े पर निकाल दे। अब का'बा की त़रफ़ मुंह कर के ह़जरे अस्वद की दाहिनी त़रफ़ रुक्ने यमानी की जानिब ह़जरे अस्वद के क़रीब यूं खड़ा हो कि पूरा ह़जरे अस्वद अपने दाहिने हाथ के सामने रहे फिर त़वाफ़ की निय्यत करे और निय्यत येह है।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُرِیْدُ طَوَافَ بَیْتِكَ الْمُحَرَّمِ فَیَسِّرْهُ لِیْ وَتَقَبَّلْهُ مِنِّیْ

या'नी ऐ **अल्लाह** ! मैं तेरे इ़ज़्ज़त वाले घर के त़वाफ़ का इरादा करता हूं लिहाज़ा तू इस को मेरे लिये आसान कर दे और इस को मेरी त़रफ़ से क़बूल फ़रमा ले।

इस निय्यत के बा'द का'बा को मुंह किये अपनी दाहिनी त़रफ़ चलो जब ह़जरे अस्वद बिल्कुल तुम्हारे मुंह के सामने हो (और येह बात एक ज़रा ह़रकत करने में ह़ासिल हो जाएगी क्यूंकि पहले ह़जरे अस्वद दाहिने हाथ के सामने था अब ज़रा सा हट जाने से मुंह के सामने हो जाएगा) अब कानों तक दोनों हाथ इस त़रह़ उठाओ कि हथेलियां ह़जरे अस्वद की त़रफ़ रहें और कहो :

بِسۡمِ اللّٰهِ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰهِ ط وَاللّٰهُ اَكۡبَرُ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوۡلِ اللّٰهِ ط

अगर आसानी से हो सके तो ह़जरे अस्वद पर दोनों हथेलियां और इन के बीच में मुंह रख कर यूं बोसा दे कि आवाज़ न पैदा हो। तीन बार ऐसा ही करो और अगर भीड़ की वजह से इस त़रह़ बोसा लेना नसीब न हो तो हाथ रख कर हाथ को चूम लो या इस पर छड़ी रख कर छड़ी चूम लो येह भी न हो सके तो हाथ से इस की त़रफ़ इशारा कर के अपना हाथ चुम लो। अब त़वाफ़ के लिये दरवाज़ए का'बा की त़रफ़ बढ़ो। जब ह़जरे अस्वद के सामने से गुज़र जाओ सीधे हो लो। ख़ानए का'बा को अपने बाएं हाथ पर कर के इस त़रह़ चलो कि किसी को ईज़ा मत दो पहले तीन फैरों में मर्द को रमल करना चाहिये या'नी छोटे छोटे क़दम रखता शाने हिलाता हुवा बहादूरों की त़रह़ चले न कूदते हुए न दौड़ते हुए और जब ह़जरे अस्वद के पास पहुंचे तो बोसा दे या इस की त़रफ़ हाथ से इशारा कर के हाथ को चूम ले दुआ़एं पढ़ते हुए त़वाफ़ करे मुअ़ल्लिम दुआ़एं पढ़ाते हुए त़वाफ़ कराते हैं लेकिन इन दुआ़ओं का पढ़ना फ़र्ज़ या वाजिब नहीं अगर येह दुआ़एं याद न हो तो दुरूद शरीफ़ पढ़ते हुए त़वाफ़ के सातों चक्कर पूरे करे। जब सातों फेरे पूरे हो जाएं तो फिर ह़जरे अस्वद को बोसा दे या इस की त़रफ़ हाथ बढ़ा कर चूम ले। ह़जरे अस्वद को पहली बार जब चूमा उस वक़्त से लबैक पढ़ना बन्द कर दे। त़वाफ़ के बा'द मक़ामे इब्राहीम पर आ कर येह आयत पढ़ो :

وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهِيْمَ مُصَلًّى (پ۲،البقرة:۱۲۵)

फिर दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ो पहली रक्अ़त में **सूरए काफ़िरून** और दूसरी रक्अ़त में **सूरए इख़्लास** पढ़ो। येह नमाज़ वाजिब है और इस का नाम "तहिय्यतुत्तवाफ़" है नमाज़ के बा'द येह दुआ़ निहायत रोते गिड़ गिड़ाते हुए हाथ उठा कर पढ़े।

मक़ामे इब्राहीम की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ تَعْلَمُ سِرِّىْ وَعَلَا نِيَتِىْ فَاقْبَلْ مَعْذِرَتِىْ وَتَعْلَمُ حَاجَتِىْ فَاَعْطِنِىْ سُؤَالِىْ وَتَعْلَمُ مَافِىْ نَفْسِىْ فَاغْفِرْلِىْ ذُنُوْبِىْ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ اِيْمَانًا يُّبَاشِرُ قَلْبِىْ وَيَقِيْنًا صَادِقًا حَتّٰى اَعْلَمَ اَنَّهٗ لَا يُصِيْبُنِىْ اِلَّا مَا كَتَبْتَ لِىْ وَرِضًا مِّنْكَ بِمَا قَسَمْتَ لِىْ يَاأَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

ऐ **अल्लाह** ! तू मेरे पोशीदा और ज़ाहिर को जानता है तू मेरी मा'ज़िरत को क़बूल कर और तू मेरी ह़ाजत को जानता है। मेरा सुवाल मुझ को अ़ता कर और जो कुछ मेरे नफ़्स में है तू उसे जानता है तू मेरे गुनाहों को बख़्श दे। ऐ **अल्लाह** ! मैं तुझ से उस ईमान का सुवाल करता हूं जो मेरे क़ल्ब में सरायत कर जाए और यक़ीने सादिक़ मांगता हूं ताकि मैं जान लूं कि मुझे वोही पहुंचेगा जो तूने मेरे लिये लिखा है और जो कुछ तूने मेरी क़िस्मत में किया है इस पर राज़ी रहूं। ऐ सब मेहरबानों से ज़ियादा मेहरबान।

नमाज़ और इस दुआ़ से फ़ारिग़ हो कर मुल्तज़म के पास जाए और अपना सीना और पेट और रुख़्सारों को दीवारे का'बा से मले और दोनों हाथ सर से ऊंचे कर के दिवार पर फैलाए या दाहिना हाथ दरवाज़ए का'बा और बायां हाथ ह़जरे अस्वद की त़रफ़ फैलाए और येह दुआ़ ख़ूब रो रो कर और गिड़ गिड़ा कर मांगे।

दुआए मुल्तज़म

يَا وَاجِدُ يَا مَاجِدُ لَاتُزِلْ عَنِّيْ نِعْمَةً اَنْعَمْتَهَا عَلَيَّ۔

ऐ कुदरत वाले ! ऐ बुज़ुर्ग ! तूने मुझे जो ने'मत दी है इस को मुझ से ज़ाइल न कर।

इस के इलावा और दूसरी दुआएं भी यहां मांगो कि येह मक़्बूलिय्यत की जगह है और मक़्बूलिय्यत का वक़्त भी है। इस के बा'द ज़म ज़म शरीफ़ के नलों के पास आओ और खड़े हो कर अदब के साथ का'बए मुकर्रमा की त़रफ़ मुंह कर के तीन सांस में ख़ूब भर पेट पियो। हर बार بِسْمِ اللّٰهِ से शुरूअ़ करो और اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ पर ख़त्म करो और हर बार निगाह उठा कर का'बए मुकर्रमा को देखो। बचा हुवा पानी अपने सर और बदन पर डाल लो। ज़म ज़म शरीफ़ पीने की दुआ येह है।

दुआए ज़म ज़म :- اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا وَّرِزْقًا وَّاسِعًا وَّ عَمَلًا مُّتَقَبَّلًا وَّشِفَاءً مِّنْ كُلِّ دَاءٍ

ऐ **अल्लाह** ! मैं तुझ से इल्मे नाफ़ेअ़ और कुशादा रोज़ी और अ़मले मक़्बूल और हर बीमारी से शिफ़ा का सुवाल करता हूं।

फिर ह़जरे अस्वद के पास आ कर इस को चूमो और اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ और दुरूद शरीफ़ पढ़ते रहो।

सफ़ा व मर्वा की सअ़्य :- फिर बाबुस्सफ़ा से निकल कर सफ़ा पहाड़ी की जानिब चलो और इस पर चढ़ते हुए येह पढ़ो।

اَبْدَءُ بِمَابَدَأَ اللّٰهُ بِهٖ اِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللّٰهِ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ اَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ اَنْ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِيْمٌ ۝

मैं इस से शुरूअ़ करता हूं जिन को **अल्लाह** ने पहले ज़िक्र किया बेशक सफ़ा व मर्वा **अल्लाह** की निशानियों से हैं जिस ने ह़ज या उ़मरह किया उस पर इन के त़वाफ़ में गुनाह नहीं और जो शख़्स नेक काम करे तो बेशक **अल्लाह** बदला देने वाला जानने वाला है।

फिर का'बए मुअ़ज़्ज़मा की त़रफ़ मुंह कर के दोनों हाथ कंधों तक दुआ़ की त़रह़ फैले हुए उठाओ और थोड़ी देर तस्बीह़ व तहलील व तक्बीर और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर अपने लिये और दोस्तों के लिये दुआ़ मांगो कि यहां दुआ़ क़बूल होती है।

फिर इस त़रह़ सअ़्य की निय्यत करो।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُرِیْدُ السَّعْیَ بَیْنَ الصَّفَا وَالْمَرْوَةِ فَیَسِّرْهُ لِیْ وَتَقَبَّلْهُ مِنِّیْ

या'नी ऐ **अल्लाह** मैं सफ़ा और मर्वा के दरमियान सअ़्य का इरादा करता हूं इस को तू मेरे लिये आसान फ़रमा दे और इस को तू मेरी त़रफ़ से क़बूल फ़रमा ले।

फिर सफ़ा से उतर कर मर्वा को चलो और दुरूद शरीफ़ और दुआ़ओं का पढ़ना बराबर जारी रखो जब सब्ज़ रंग का निशान आए तो यहां से दौड़ना शुरूअ़ करो यहां तक कि दूसरे सब्ज़ निशान से आगे निकल जाओ और मर्वा तक पहुंचो यहां भी तक्बीर, तस्बीह़ और ह़म्दो षना और दुरूद शरीफ़ पढ़ो और येह दुआ़ मांगो, येह एक फैरा हुवा फिर यहां से सफ़ा को चलो और सब्ज़ निशान के पास पहुंचो तो दौड़ो और दूसरे निशान से आगे निकल जाओ यहां तक कि सफ़ा पर पहुंच कर ब दस्तूर साबिक़ दुआ़एं मांगो इसी त़रह़ से सफ़ा से मर्वा और मर्वा से सफ़ा तक और सफ़ा से मर्वा तक आओ फिर जाओ यहां तक कि सातवां फैरा मर्वा पर ख़त्म हो हर फेरे में इसी त़रह़ करो और दोनों सब्ज़ रंग के निशानों के दरमियान हर फेरे में दौड़ कर चलते रहो त़वाफ़े का'बा और सअ़्य कर लेने से तुम्हारा उ़मरह जिस का एह़राम बांध कर आए अदा हो गया अब सर मुंडा कर या बाल कटवा कर एह़राम उतार लो और ग़ुस्ल कर के सिले हुए कपड़े पहन लो और बिला एह़राम के मक्कए मुकर्रमा में मुक़ीम रहो और रोज़ाना जिस क़दर ज़ियादा से ज़ियादा हो सके नफ़्ली त़वाफ़ करते रहो।

मिना को रवानगी :- फिर आठवीं ज़ुलहिज्जा का ह़ज का एह़राम बांधो और एक नफ़्ली त़वाफ़ में रमल और सफ़ा मर्वा की सअ्य कर लो और मस्जिदे ह़राम में दो रक्अ़त सुन्नते एह़राम की निय्यत से पढ़ो इस के बा'द ह़ज की निय्यत करो और लबैक पढ़ो और जब आफ़्ताब निकल आए तो मिना को चलो अगर हो सके तो पैदल जाओ कि जब तक मक्कए मुकर्रमा पलट कर आओगे हर क़दम पर सात करोड़ नेकियां लिखी जाएंगी येह नेकियां तक़्रीबन अठत्तर खरब चालीस अरब बनती हैं रास्ते भर लबैक और ह़म्दो षना व दुरूद शरीफ़ पढ़ते रहो। जब मिना नज़र आए तो येह दुआ़ पढ़ो।

اَللّٰهُمَّ هٰذَا مِنًى فَامْنُنْ عَلَيَّ بِمَا مَنَنْتَ بِهٖ عَلٰى اَوْلِيَاءِكَ ـ

इलाही येह मिना है मुझ पर तू वोह एह़सान कर जो अपने औलिया पर तूने किया है।

मिना में रात भर ठहरो और ज़ोहर से नववीं ज़ुलहिज्जा की फ़ज्र तक पांच नमाज़ें यहां की "मस्जिदे ख़ैफ़" में पढ़ो और बार बार लबैक बुलन्द आवाज़ से पढ़ते रहो और जिस क़दर हो सके रो रो कर दुआ़एं मांगो।

मैदाने अ़रफ़ात में :- नववीं ज़ुलहिज्जा को आफ़्ताब तुलूअ़ हो जाने के बा'द अब मैदाने अ़रफ़ात को चलो। दिल को ख़याले ग़ैर से पाक साफ़ कर के और येह सोचते हुए निकलो कि आज वोह दिन है कि बहुत से खुश बख़्तों का ह़ज मक़्बूल होगा और बहुत से लोग इन के सदक़े में बख़्शे जाएंगे। जो आज के दिन मह़रूम रहा वोह वाक़ेई मह़रूम है। रास्ते भर लबैक बे शुमार बार पढ़ते चलो जब "जबले रह़मत" पर नज़र पड़े तो और ज़ियादा गिड़ गिड़ा कर बुलन्द आवाज़ से लबैक पढ़ो और अपनी दुन्यावी व दीनी मुरादों और अपने ह़ज की मक़्बूलिय्यत के लिये दुआ़एं मांगते

मैदाने अ़रफ़ात में पहुंच कर अपने मुअ़ल्लिम के ख़ैमे में उतर कर ठहरो। दो पहर तक ज़ियादा वक़्त रोने गिड़ गिड़ाने में और सदक़ा व ख़ैरात करने में गुज़ारो और लबैक व दुरूद शरीफ़ व कलिमए तौह़ीद और इस्तिग़फ़ार पढ़ते रहो। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि आज के दिन सब से बेहतर वज़ीफ़ा मेरा और दूसरे नबियों का येही है।

لَااِلٰـہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ یُحْیِیْ وَیُمِیْتُ وَھُوَ حَیٌّ لَّا یَمُوْتُ ط بِیَدِہِ الْخَیْرُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ

अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है कोई उस का शरीक नहीं उसी के लिये बादशाही है उसी के लिये ह़म्द है वोह ज़िन्दगी और मौत देता है और वोह ज़िन्दा है वोह नहीं मरेगा उस के क़ब्ज़े में सब भलाइयां हैं और वोह हर चीज़ पर क़ुदरत वाला है।

दो पहर ढलते ही ज़ोहर की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ो। ज़ोहर के फ़र्ज़ पढ़ कर फ़ौरन तक्बीर होगी और अ़स्र की नमाज़ पढ़ो। याद रखो कि येह ज़ोहर व अ़स्र मिला कर ज़ोहर के वक़्त पढ़ना जभी जाइज़ है कि नमाज़ या तो सुल्ताने इस्लाम पढ़ाए या उस का नाइब। मैदाने अ़रफ़ात में जिस ने ज़ोहर अकेले या अपनी ख़ास जमाअ़त से पढ़ी उस को वक़्त से पहले अ़स्र पढ़ना जाइज़ नहीं बल्कि वोह ज़ोहर को ज़ोहर के वक़्त में और अ़स्र को अ़स्र के वक़्त में पढ़े। (बहारे शरीअ़त, हि़. 6, स. 82)

नमाज़ के बा'द फ़ौरन मोक़िफ़ को रवाना हो जाएं। मोक़िफ़ वोह जगह है कि नमाज़ के बा'द से ग़ुरूबे आफ़्ताब तक वहां खड़े हो कर ज़िक्रे इलाही और दुआ़ मांगने का हुक्म है अगर हुजूम और अपनी कमज़ोरी की वजह से "मोक़िफ़" में न जा सको तो अपने ख़ैमे ही में लबैक पढ़ने और ज़िक्रो दुआ़ में आफ़्ताब ग़ुरूब होने तक मश्ग़ूल रहो और ख़बरदार इस अनमोल और क़ीमती वक़्त को चाय, बीड़ी उड़ाने और गप लड़ाने में बरबाद न करो बल्कि आंखें बंद किये गर्दन झुकाए दुआ़ में हाथ आस्मान की त़रफ़ सर से ऊंचा उठा कर फैलाए तक्बीर व

तहलील और लबैक व दुआ़ और तौबा व इस्तिग़फ़ार में डूब जाए और ख़ूब रोए और अगर रोना न आए तो कम से कम रोने जैसी सूरत बनाए और इन्तिहाई कोशिश करे कि एक क़त्ऱा आंसू टपक जाए कि येह मक़्बूलिय्यत की निशानी है।

रात भर मुज़्दलिफ़ा में :- सूरज ग़ुरूब हो जाने के बा'द मैदाने अ़रफ़ात से मुज़्दलिफ़ा को रवाना हो जाओ और पूरे रास्ते में लबैक और ज़िक्रो दुआ़ और तक्बीर कष्रत से बुलन्द आवाज़ से पढ़ते चलो। मुज़्दलिफ़ा पहुंच कर मग़रिब को इ़शा के वक़्त में अदा की निय्यत से पढ़ो फिर मग़रिब के बा'द फ़ौरन ही इ़शा पढ़ो। इस के बा'द "मश्अ़रुल ह़राम" की मुक़द्दस पहाड़ी या इस के क़ुर्ब में या पूरे मैदान में "वादिये मुह़स्सर" के सिवा जहां चाहो ठहरो और लबैक और तक्बीर व तहलील में ख़ूब रो रो कर मशग़ूल रहो और सुब्हे सादिक़ के तुलूअ़ होने से उजाला होने तक का वक़्त बहुत ही ख़ास वक़्त है इस में ज़िक्रो दुआ़ से ग़ाफ़िल न रहो।

मुज़्दलिफ़ा ही से तीनों दिन जमरों पर मारने के लिये 49 कंकरियां खजूर की गुठली के बराबर चुन लो और इन को तीन मरतबा धो लो और तुलूए़ आफ़्ताब में जब दो रक्अ़त पढ़ने का वक़्त बाक़ी रह जाए तो मुज़्दलिफ़ा से मिना को रवाना हो जाओ और मिना पहुंच कर "जम्रतुल अ़क़बा" को सब से पहले जाओ और इस त़रह़ खड़े हो जाओ कि मिना दाहिने हाथ पर और का'बा बाएं हाथ की त़रफ़ हो अब पांच हाथ की दूरी से सात कंकरियां जुदा जुदा चुटकी में ले कर दाहिना हाथ ख़ूब ऊंचा उठा कर जमरह को मारो और हर कंकरी को येह दुआ़ पढ़ कर फैंको।

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ رَغْماً لِّلشَّيْطٰنِ رِضًا لِّلرَّحْمٰنِ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ حَجًّا مَّبْرُوْرًا وَّ سَعْيًا مَّشْكُوْرًا وَّذَنْبًا مَّغْفُوْرًا

अल्लाह के नाम से, **अल्लाह** बहुत बड़ा है, शैत़ान को ज़लील करने के लिये, **अल्लाह** की रिज़ा के लिये, ऐ **अल्लाह** ! इस ह़ज को मबरूर बना दे और सअ़्य मशकूर कर दे और गुनाहों को बख़्श दे।

कंकरी मार कर कुरबानी करे मगर ख़ूब समझ लो कि येह कुरबानी वोह कुरबानी नहीं है जो बक़र ईद में हुवा करती है बल्कि येह हज का शुक्राना है जो क़िरान करने वाले और तमत्तोअ़ करने वालों पर वाजिब और मुफ़रिद पर मुस्तहब है। कुरबानी के बा'द मर्द सर मुंडाएं या बाल कतरवाएं (औरतों को बाल मुंडवाना हराम है वोह सिर्फ़ एक पोरे के बराबर सर के बाल कटा दें) और एहराम उतार कर सिले हुए कपड़े पहन लें और अफ़्ज़ल येह है कि आज दसवीं ज़ुलहिज्जा ही को मक्का जा कर तवाफ़े ज़ियारत जो फ़र्ज़ है कर लें अगर दसवीं को येह तवाफ़ न कर सकें तो 11 या 12 को सूरज ग़ुरूब होने से पहले येह तवाफ़ कर लें और मक्का से मिना जा कर ठहरें और 11 और 12 ज़ुलहिज्जा को मिना में रहें और सूरज ढलने के बा'द दोनों रोज़ तीनों जमरों को सात सात कंकरियां मारते रहें। बारहवीं ज़ुलहिज्जा को कंकरी मार कर ग़ुरूबे आफ़्ताब से पहले पहले मिना से निकल कर मक्का को रवाना हो जाओ जब वादिये मुहस्सब में, जो जन्नतुल मा'ला के क़रीब है पहुंचों तो सुवारी से उतर लो या सुवारी ही पर कुछ देर ठहर कर दुआ़ कर लो। अब मक्का में जब तक क़ियाम रहे अपनी और अपने मां बाप की अपने उस्तादों अपने पीरों और हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की तरफ़ से रोज़ाना उ़मरे अदा करते रहो कुछ उ़मरे "तनईम" से (छोटा उ़मरह) करो कुछ उ़मरे जिइर्राना से (बड़ा उ़मरह) करो।

मक्का की चन्द ज़ियारत गाहें :- क़ब्रिस्तान जन्नतुल मा'ला में ख़ास तौर पर बीबी ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا व दीगर मज़ारात की ज़ियारत इसी तरह मकाने विलादत हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और मकाने ख़दीजतुल कुब्रा व मकाने हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا मस्जिदुर्राया व मस्जिदुल फ़त्ह व मस्जिदे जबले अबू कुबैस व मज़ाराते शुहदाए शुबकिया व जबले षौर व ग़ारे हिरा वग़ैरा मक़ामाते मुतबर्रका की ज़ियारतों से भी मुशर्रफ़ हो। का'बए मुअ़ज़्ज़मा में दाख़िला और दो

रक्अ़त नमाज़ अन्दर अदा करना भी बड़ी सआ़दत है। कमाले अदब से आंखें झुकाए लरज़ते कांपते بِسْمِ اللهِ पढ़ कर दायां क़दम पहले रखे और सामने की दीवार तक इतना बढ़े कि तीन हाथ का फ़ासिला रह जाए वहां दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़े कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस जगह नमाज़ पढ़ी है फिर ह़म्दे इलाही और दुरूद शरीफ़ पढ़े और दुआ़ मांगे और सुतूनों और दीवारों से चिमटे और रोते गिड़ गिड़ाते आंखें नीची किये वापस चला आए।

मक्कए मुकर्रमा से रवानगी :- जब रुख़्सत का इरादा हो तो त़वाफ़े वदाअ़ करे कि बाहर वालों पर येह त़वाफ़ वाजिब है मगर इस त़वाफ़ में न रमल करे न इज़्तिबाअ़ करे और इस त़वाफ़ के बा'द सफ़ा व मर्वा की सअ्य भी न करे। त़वाफ़ के बा'द मक़ामे इब्राहीम पर दो रक्अ़त पढ़ कर दुआ़ मांगे फिर ज़म ज़म शरीफ़ के पास आ कर ख़ूब सैराब हो कर पिये और कुछ बदन पर डाले फिर दरवाज़ए का'बा के पास आ कर चौखट चूमे और क़बूले ह़ज व ज़ियारत की और बार बार ह़ाज़िरी की दुआ़एं मांगे और येह दुआ़ पढ़े कि

اَلسَّائِلُ بِبَابِكَ يَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ وَمَعْرُوْفِكَ وَيَرْجُوْ رَحْمَتَكَ

(या **अल्लाह**) तेरे दरवाज़े पर साइल तेरे फ़ज़्लो एह़सान का सुवाल करता है और तेरी रह़मत का उम्मीद वार है।

फिर "मुलतज़म" पर आ कर ग़िलाफ़े का'बा से चिमटे और ख़ूब रोए फिर ह़जरे अस्वद को बोसा दे फिर उलटे पाऊं का'बा की त़रफ़ मुंह कर के का'बए मुक़द्दसा को ह़सरत से देखते हुए मस्जिदे ह़राम के दरवाज़े से बायां पाऊं पहले बढ़ा कर निकले और कलिमए शहादत व ह़म्दे इलाही और दुरूद शरीफ़ व दुआ़ करते हुए रवाना हो और फ़ुक़राए मक्कए मुकर्रमा को ह़स्बे तौफ़ीक़ सदक़ा व ख़ैरात देते हुए सरकारे आ'ज़म दरबारे मदीनए त़य्यिबा के मुक़द्दस सफ़र के लिये रवाना हो जाए।

हाज़िरी दरबारे मदीनए मुनव्वरा :- मदीनए तृय्यिबा की हाज़िरी और इस मुक़द्दस सफ़र में मुन्दरजए ज़ैल हिदायात पर ख़ास तौर से ध्यान रखो।

﴾1﴿ मज़ारे अक़्दस की ज़ियारत क़रीबुल वाजिब है। मुहद्दिष इब्ने अ़दी ने कामिल में हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस ने हज किया और मेरी ज़ियारत न की उस ने मुझ पर ज़ुल्म किया।

(الکامل فی الضعفاء،النعمان بن شبلی باھلی بصری، ج۸،ص۲۳۸)

﴾2﴿ हाज़िरी में ख़ास क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत की निय्यत करे यहां तक कि इमाम इब्नुल हुमाम फ़रमाते हैं कि इस मरतबा मस्जिदे नबवी की निय्यत भी शरीक न करे।

﴾3﴿ रास्ते में इस क़दर कषरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ते रहो कि ज़िक्रो दुरूद शरीफ़ में ग़र्क़ हो जाओ और जिस क़दर मदीनए तृय्यिबा क़रीब आता जाए और ज़ियादा ज़ौक़ो शौक़ बल्कि वज्द में झूम झूम कर दुरूद शरीफ़ पढ़ो और इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मस्ती में डूब जाओ।

﴾4﴿ जब ह़रमे मदीनए मुनव्वरा आए तो अगर सुवारी से उतर सको तो पियादा सर झुकाए रोते हुए और दुरूद शरीफ़ पढ़ते हुए चलो और जब गुम्बदे ख़ज़रा पर निगाह पड़े तो दुरूदो सलाम वालिहाना जोशो ख़रोश के साथ पढ़ो। जब शहरे अक़्दस मदीनए मुनव्वरा में पहुंचो तो जलाल व जमाले मह़बूब के तसव्वुर में ग़र्क़ हो जाओ और दरवाज़ए शहर में दाख़िल होते वक़्त पहले दाहिना क़दम रखो और येह दुआ़ पढ़ो।

بِسْمِ اللّٰہِ مَاشَآءَ اللّٰہُ لَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ رَبِّ اَدْخِلْنِیْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّ اَخْرِجْنِیْ مُخْرَجَ صِدْقٍ اَللّٰھُمَّ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ وَارْزُقْنِیْ مِنْ زِیَارَۃِ رَسُوْلِكَ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مَارَزَقْتَ اَوْلِیَآئَكَ وَ اَھْلَ طَاعَتِكَ وَاَنْقِذْنِیْ مِنَ النَّارِ وَاغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ یَا خَیْرَ مَسْئُوْلٍ

मैं **अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ करता हूं जो **अल्लाह** ने चाहा, नेकी की ताक़त नहीं मगर **अल्लाह** से। ऐ **अल्लाह** ! सच्चाई के साथ मुझ को दाख़िल कर और सच्चाई के साथ मुझ को बाहर ले जा। इलाही ! तू अपनी रह़मत के दरवाज़े मुझ पर खोल दे और अपने रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुझे वोह नसीब कर जो तू ने अपने औलिया और फ़रमां बरदार बन्दों के लिये नसीब किया और मुझे जहन्नम से नजात दे और मुझ को बख़्श दे और मुझ पर रह़्म फ़रमा। ऐ बेहतर सुवाल किये गए !

﴿5﴾ फिर ग़ुस्ल व वुज़ू और तमाम ज़रूरियात से फ़ारिग़ हो कर मिस्वाक कर के ख़ुश्बू लगा कर और सफ़ेद व साफ़ कपड़े पहन कर आस्तानए मुक़द्दसा की त़रफ़ इन्तिहाई आ़जिज़ी व ख़ाकसारी और अदबो एह़तिराम के साथ मुतवज्जेह हो और रोते हुए मस्जिदे नबवी के दरवाज़े पर सलातो सलाम अ़र्ज़ कर के थोड़ा ठहरो गोया तुम सरकार से ह़ाज़िरी की इजाज़त त़लब कर रहे हो फिर بِسْمِ اللّٰه पढ़ कर पहले दाहिना पाऊं रख कर सरापा अदब बन कर दाख़िल हो और मह़बूब के ख़याल व तसव्वुर में डूब जाओ।

﴿6﴾ यक़ीन रखो कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم सच्ची ह़क़ीक़ी जिस्मानी ह़यात के साथ वैसे ही ज़िन्दा हैं जैसे वफ़ात शरीफ़ से पहले थे उन की और तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मौत सिर्फ़ वा'दए इलाही की तस्दीक़ के लिये एक आन के वासित़े थी उन का इन्तिक़ाल सिर्फ़ अ़वाम की नज़रों से छुप जाना है चुनान्चे इमाम मुह़म्मद इब्ने ह़ाज मक्की मदख़ल में और इमाम अह़मद क़स्त़लानी ने मवाहिबद्दुनिया में और दूसरे अइम्मए दीन ने फ़रमाया है कि :

"हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़यात व वफ़ात में इस बात में कोई फ़र्क़ नहीं कि वोह अपनी उम्मत को देख रहे हैं और उन की ह़ालतों और निय्यतों को और इन के दिलों के ख़यालात को ख़ूब जानते पहचानते हैं और येह सब हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर इस त़रह़ रोशन है कि क़त़अ़न इस में कोई पोशीदगी नहीं।"

(شرح العلامة الزرقاني، المقصد العاشر، الفصل الثاني في زيارة قبره الشريف...إلخ، ج ۱۲، ص ۱۸۳)

﴾7﴿ मस्जिदे नबवी में हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुसल्ले पर दो सक्अ़त नमाज़ तहिय्यतुल मस्जिद **सूरए काफ़िरून** और **सूरए इख़्लास** से मुख़्तसर पढ़े फिर सजदे में गिर कर दरबारे ह़बीब में मक़्बूलिय्यत की दुआ़ मांगे फिर कमाले अदब में ग़र्क़ हो कर गर्दन झुकाए लरज़ते कांपते नदामत से पसीना पसीना हो कर आंसू बहाते हुए मशरिक़ की त़रफ़ से मवाजहे आ़लिया में ह़ाज़िर हो कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मज़ारे अन्वर में जलवा अफ़रोज़ हैं। इस त़रफ़ से तुम ह़ाज़िर होगे तो हुज़ूर की निगाहे बे कस पनाह तुम्हारी त़रफ़ होगी और येह सआ़दत तुम्हारे लिये दोनों जहां में काफ़ी है।

﴾8﴿ अब इन्तिहाई अदबो एह़तिराम के साथ कम अज़ कम चार हाथ के फ़ासिले से क़िब्ला को पीठ और मज़ारे पुर अन्वार को मुंह कर के नमाज़ की त़रह़ हाथ बांधे खड़ा हो। (الفتاوى الهندية، كتاب الحج،الباب السابع،ج ١،ص ٢٦٥)

और निहायत ही अदब व वक़ार के साथ दर्द अंगेज़ आवाज़ से इस त़रह़ सलातो सलाम अ़र्ज़ करो :

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَيْرَ خَلْقِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا شَفِيْعَ الْمُذْنِبِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ وَعَلٰى اٰلِكَ وَاَصْحَابِكَ وَاُمَّتِكَ اَجْمَعِيْنَ

ऐ नबी ! आप पर दुरूदो सलाम और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें और बरकतें, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल आप पर सलाम, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तमाम मख़्लूक़ से बेहतर आप पर सलाम, ऐ गुनहगारों की शफ़ाअ़त करने वाले आप पर सलाम, आप पर और आप की आल व अस्ह़ाब पर और आप की तमाम उम्मत पर सलाम।

इन सलामों को बार बार जब तक दिल जमे ब कषरत पढ़ते रहो और अपने मां बाप और उस्तादों और दोस्तों और अपने तमाम अ़ज़ीज़ों की त़रफ़ से भी सलाम अ़र्ज़ करो और सब के लिये बार बार शफ़ाअ़त की भीक मांगो और बार बार येह अ़र्ज़ करो कि "اَسْئَلُكَ الشَّفَاعَةَ يا رسولَ الله"

(بہارِ شریعت، ج۶، ص۱۶۹ ومناسك علی القاری، باب زیارۃ سید المرسلین صلی اللہ علیہ وسلم، ص۵۰۹۔۵۱۰)

और जो मेरी इस किताब को पढ़े उस को मैं वसिय्यत करता हूं कि मुझ गुनहगार की त़रफ़ से भी सलाम अ़र्ज़ कर के शफ़ाअ़त की भीक मांगें फिर अपने दाहिने हाथ की त़रफ़ हाथ भर हट कर ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के नूरानी चेहरे के सामने खड़े हो कर अ़र्ज़ करो कि

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا خَلِيْفَةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ ـ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَزِيْرَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا صَاحِبَ رَسُوْلِ اللّٰهِ فِي الْغَارِ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ

ऐ ख़लीफ़ए रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आप पर सलाम, ऐ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के वज़ीर आप पर सलाम, ऐ ग़ारे षोर में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के रफ़ीक़ आप पर सलाम और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और उस की बरकतें।

फिर इतनी ही दूर हट कर ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पुर जलाल चेहरे के सामने अ़र्ज़ करो कि :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا اَمِيْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُتَمِّمَ الْاَرْبَعِيْنَ ـ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا عِزَّ الْاِسْلَامِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ

ऐ अमीरल मोअमिनीन ! आप पर सलाम, ऐ चालीस का अ़दद पूरा करने वाले मुसलमान आप पर सलाम, ऐ इस्लाम और मुसलमानों की इ़ज़्ज़त आप पर सलाम और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें और बरकतें।

फिर बालिश्त भर मग़रिब की त़रफ़ पलटो और ह़ज़रते सिद्दीक़ व फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا के दरमियान खड़े हो कर अ़र्ज़ करो कि

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمَا یَا خَلِیْفَتَیْ رَسُوْلِ اللّٰہِ اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمَا یَا وَزِیْرَیْ رَسُوْلِ اللّٰہِ اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمَا یَا ضَجِیْعَیْ رَسُوْلِ اللّٰہِ وَرَحْمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکَاتُہٗ اَسْئَلُکُمَا الشَّفَاعَۃَ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَعَلَیْکُمَا وَبَارَكَ وَسَلَّمَ۔

ऐ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दोनों ख़लीफ़ा आप दोनों पर सलाम, ऐ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दोनों वुज़रा आप दोनों पर सलाम, ऐ रसूलुल्लाह के पहलू में आराम करने वालो ! आप दोनों पर सलाम और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत और उस की बरकतें। आप दोनों से सुवाल करता हूं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुज़ूर हमारी शफ़ाअ़त कीजिये। **अल्लाह** तआ़ला इन पर और आप दोनों पर दुरूद और बरकत व सलाम नाज़िल फ़रमाए।

(مناسك على القارى،باب زيارة سيد المرسلين،صلى الله عليه وسلم،ص ٥١٠۔٥١١ و بهارشريعت،ج٦،ص ١٧٠)

﴾9﴿ येह सब ह़ाज़िरियां मक़्बूलिय्यते दुआ़ के मक़ामात हैं लिहाज़ा ख़ूब दुआ़एं मांगो फिर मिम्बर शरीफ़ के पास दुआ़ करो और सुतूने अबू लुबाबा व सुतूने हन्नाना के पास दो रक्अ़त पढ़ कर दुआ़ओं में मश्ग़ूल रहो। यहां की ह़ाज़िरी में एक मिनट भी ज़ाएअ़ न करो। तिलावत, दुरूद शरीफ़ व सलाम और नवाफ़िल में हमातन मसरूफ़ रहो। मदीनए मुनव्वरा और मक्कए मुकर्रमा में कम अज़ कम एक एक रोज़ा भी रख लो तो तुम्हारी ख़ुश नसीबी का क्या कहना पंजगाना नमाज़ों के बा'द सलाम के लिये ह़ाज़िर हो हर नमाज़ मस्जिदे नबवी में अदा करो। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स मेरी मस्जिद में चालीस नमाज़ें पढ़े उस के लिये दोज़ख़ और निफ़ाक़ से आज़ादियां लिखी जाएंगी।

(المسند لإمام احمد بن حنبل، رقم ١٢٥٨٤، ج٤، ص ٣١١)

﴾10﴿ क़ब्रे मुनव्वर को कभी पीठ न करो न रौज़ए अन्वर का त़वाफ़ करो न सजदा करो न इतना झूको कि रुकूअ़ के बराबर हो । रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़क़ीक़ी ता'ज़ीम उन की इत़ाअ़त में है ।

﴾11﴿ क़ब्रिस्तान जन्नतुल बक़ीअ़ की ज़ियारत सुन्नत है । रौज़ए मुनव्वरा की ज़ियारत कर के वहां जाए ख़ुसूसन जुमुआ़ के दिन । इस क़ब्रिस्तान में दस हज़ार सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم आराम फ़रमा रहे हैं और ताबेईन व तबए़ ताबेईन व औलिया व उ़–लमा व सुलह़ा की गिनती का कोई शुमार ही नहीं कर सकता । जब ह़ाज़िर हो तो पहले तमाम मदफ़ूनीन मुस्लिमीन की ज़ियारत का क़स्द करो और इस त़रह़ सलाम पढ़ो :

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ دَارَقَوْمٍ مُّؤْمِنِیْنَ اَنْتُمْ لَنَا سَلَفٌ وَّاِنَّآ اِنْ شَآءَ اللّٰہُ تَعَالٰی

بِکُمْ لَاحِقُوْنَ ط اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِاَھْلِ الْبَقِیْعِ الْغَرْقَدِ اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَلَھُمْ

तुम पर सलाम ऐ क़ौमे मोअमिनीन के घर वालो ! तुम हमारे पेशवा हो और हम اِنْ شَآءَ اللّٰہ तुम से मिलने वाले हैं । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! बक़ीए़ ग़र्क़द वालों की मग़फ़िरत फ़रमा । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम को और इन्हें बख़्श दे ।

﴾12﴿ तमाम अहले बक़ीअ़ में अफ़्ज़ल ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं । इन के मज़ारे अन्वर पर ह़ाज़िर हो कर कमाले अदबो एह़तिराम के साथ इस त़रह़ सलाम अ़र्ज़ करे कि

اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا اَمِیْرَ الْمُؤْمِنِیْنَ اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا ثَالِثَ الْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِیْنَ

اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا صَاحِبَ الْھِجْرَتَیْنِ اَلسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا مُجَھِّزَ جَیْشِ الْعُسْرَۃِ بِالنَّقْدِ

وَ الْعَیْنِ جَزَاکَ اللّٰہُ عَنْ رَّسُوْلِہٖ وَعَنْ سَآئِرِ الْمُسْلِمِیْنَ وَرَضِیَ اللّٰہُ عَنْکَ وَ عَنِ

الصَّحَابَۃِ اَجْمَعِیْنَ ۔

ऐ अमीरल मोअमिनीन ! आप पर सलाम, ऐ खुलफ़ाए राशिदीन में तीसरे ख़लीफ़ा आप पर सलाम, ऐ दो हिजरत करने वाले आप पर सलाम, ऐ ग़ज़्वए तबूक की नक़्दो जिन्स से तय्यारी करने वाले आप पर सलाम, **अल्लाह** तआला आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को अपने रसूल और तमाम मुसलमानों की त़रफ़ से बदला दे और आप से और तमाम सह़ाबा से **अल्लाह** तआला राज़ी हो ।

《13》 ज़ालिम नज्दियों ने तमाम कुब्बो और क़ब्रों को तोड़ फोड़ कर मैदान कर डाला है । बहुत कम क़ब्रों के निशान बाक़ी हैं । बहर ह़ाल जो मक़ाबिर ज़ाहिर हैं सब जगह सलाम पढ़ो और फ़ातिह़ा ख़्वानी करो और दुआएं मांगो कि येह सब बारिशे अन्वार व बरकात की जगहें और मक़बूलिय्यते दुआ के मक़ामात हैं । (बहारे शरीअ़त, हि. 6, स. 172)

《14》 क़ुबा शरीफ़ की ज़ियारत करे और मस्जिदे क़ुबा में दो रक्अ़त नमाज़ पढ़े । ह़दीष शरीफ़ में है कि रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मस्जिदे क़ुबा में नमाज़ उ़मरह के मिष्ल है ।

(جامع الترمذی، کتاب الصلاۃ، باب ماجاء فی الصلاۃ فی مسجد قباء، رقم ۳۲۴، ج ۱، ص ۳۴۸)

और दूसरी ह़दीषों से षाबित है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हर सनीचर को क़ुबा तशरीफ़ ले जाते कभी सुवार कभी पैदल । इस मक़ाम की बुज़ुर्गी के बारे में दूसरी अह़ादीष भी हैं ।

《15》 शुहदाए उहुद की भी ज़ियारत करो । ह़दीष में है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हर साल के शुरूअ़ में शुहदाए उहुद की मुक़द्दस क़ब्रों पर तशरीफ़ ले जाते और येह फ़रमाते "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ"

(تفسیر الدرالمنثور، الرعد: ۲۴، ج ۴، ص ۶۴۰)

और उहुद पहाड़ की भी ज़ियारत करो कि ह़दीष शरीफ़ में हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि कोहे उहुद हम से मह़ब्बत करता है और हम इस से मह़ब्बत करते हैं । (مناسک ملاعلی قاری، باب زیارۃ سیدالمرسلین، ص ۵۲۵)

बेहतर येह है कि जुमा'रात के दिन सुब्ह़ के वक़्त जाए और सब से पहले सय्यिदुश्शुहदा ह़ज़रते ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मज़ारे मुक़द्दस पर सलाम अ़र्ज़ करे और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श और ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا पर भी सलाम अ़र्ज़ करे कि एक रिवायत में है : येह दोनों यहीं मदफ़ून हैं। (مناسك ملاعلی قاری،باب زیارة سیدالمرسلین،ص۵۲۰)

मदीनए त़य्यिबा के चन्द कुंवें

﴾16﴿ मदीनए त़य्यिबा के वोह कुंवें जो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मन्सूब हैं या'नी किसी से वुज़ू फ़रमाया किसी का पानी नोश फ़रमाया किसी में अपना लुआ़बे दहन डाला अगर कोई जानने वाला और बताने वाला मिले तो इन मुबारक कुंवों की भी ज़ियारत करो ख़ास कर मुन्दरजए ज़ैल कुंवों का ख़याल रखो।

बीरे ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ :- येह कुंवां वादिये अ़क़ीक़ के कनारे पर मदीनए मुनव्वरा से तक़रीबन तीन मील के फ़ासिले पर एक बाग़ में है इस कुंवें को "बीरे रूमा" भी कहते हैं येह वोही कुंवां है जिस का मालिक एक यहूदी था और मुसलमानों को पानी की तक्लीफ़ थी तो ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बीस हज़ार दिरहम पर इस कुंवें को यहूदी से ख़रीद कर मुसलमानों पर वक़्फ़ कर दिया।

बीरे अरीस :- येह कुंवां मस्जिदे क़ुबा से मुत्तसिल पश्चिम की जानिब है इस को "बीरए ख़ातिम" भी कहा जाता है इस लिये कि ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हाथ से मोहरे नुबुव्वत की अंगूठी इस कुंवें में गिर गई और बड़ी तलाश व जुस्तजू के बा वुजूद नहीं मिली। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस कुंवें का पानी पिया और इस से वुज़ू फ़रमाया और इस में अपना लुआ़बे दहन भी डाला था।

बीरे ग़रस :- येह कुंवां मस्जिदे क़ुबा से तक़रीबन चार फ़रलांग पूरब उत्तर कोने पर वाक़ेअ़ है। इस के पानी से हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने वुज़ू फ़रमाया और इस का पानी पिया भी है और इस में अपना लुआ़बे दहन और शदह भी डाला है।

बीरे बुस्साह :- येह कुंवां क़ुबा के रास्ते में जन्नतुल बक़ीअ़ के मुत्तसिल है। इस कुंवें पर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना सर मुबारक धोया और ग़ुस्ल फ़रमाया। इस जगह दो कुंवें हैं। सह़ीह़ येह है कि बड़ा कुंवां बीरे बुस्साह है और बेहतर येह है कि दोनों से बरकत ह़ासिल करे।

बीरे बज़ाआ़ :- येह कुंवां शामी दरवाज़े से बाहर जमलुल्लैल बाग़ के पास है। इस में भी हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना लुआ़बे दहन डाला और बरकत की दुआ़ फ़रमाई है।

बीरे ह़ा :- येह कुंवां बाबे मजीदी के सामने शिमाली फ़सील से बाहर है। येह कुंवां ह़ज़रते अबू त़लह़ा सह़ाबी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के बाग़ में था। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अकषर इस जगह जल्वा अफ़रोज़ होते थे और इस का पानी नोश फ़रमाते थे जब आयते मुबारका لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ (پ٤، آل عمران:٩٢) नाज़िल हुई तो चूंकि येह कुंवां ह़ज़रते अबू त़लह़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को बहुत ज़ियादा मह़बूब था इस लिये उन्हों ने इस को ख़ुदा की राह में सदक़ा कर दिया।

बीरे अ़हन :- येह कुंवां मस्जिदे शम्स के क़रीब है। इस कुंवें के पानी से भी हुज़ूर नबिय्ये करीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ने वुज़ू फ़रमाया है। इस का पानी क़दरे खारी है इस को "बीरुय्यसीरा" भी कहा जाता है।

मदीनए मुनव्वरा की चन्द मस्जिदें

﴾17﴿ मदीनए मुनव्वरा की चन्द मश्हूर मस्जिदों की भी ज़ियारत करे और हर मस्जिद में कम से कम दो दो रक्अ़त तह़िय्यतुल मस्जिद पढ़ कर दुआ़एं मांगे खुसूसिय्यत के साथ इन मस्जिदों की।

मस्जिदे जुमुआ़ :- येह मस्जिदे क़ुबा के नए रास्ते से जानिबे मशरिक़ है। पहला जुमुआ़ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم ने इसी जगह अदा फ़रमाया था।

मस्जिदे ग़मामा :- इस जगह हुज़ूर नबिय्ये करीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ईदैन की नमाज़ पढ़ते थे। इसी लिये इस को मस्जिदे मुसल्ला भी कहते हैं।

मस्जिदे अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ **:-** येह मस्जिद बिल्कुल मस्जिदे ग़मामा के क़रीब शिमाली जानिब है।

मस्जिदे अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ **:-** येह मस्जिद भी ग़मामा के पास ही है।

मस्जिदे बग़ला :- येह मस्जिद जन्नतुल बक़ीअ़ के मशरिक़ में है। मस्जिद के क़रीब एक पथ्थर में हुज़ूर صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم के ख़च्चर के खुर का निशान है इस लिये इस को मस्जिदे बग़ला कहते हैं। बग़ला के मा'ना ख़च्चर है।

मस्जिदे इजाबा :- येह मस्जिद जन्नतुल बक़ीअ़ के शिमाली जानिब है एक दिन हुज़ूर صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم ने औस क़बीले वालों के लिये इस जगह दुआ़एं मांगीं जो मक़बूल हुईं।

मस्जिदे उबय्य رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ **:-** येह मस्जिद जन्नतुल बक़ीअ़ के बिल्कुल क़रीब ही है। इसी जगह ह़ज़रते उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ का मकान था। हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم कभी कभी यहां रौनक़ अफ़रोज़ होते और नमाज़ पढ़ते थे।

मस्जिदे सुक़्या :- बाबे अ़म्बरिया के क़रीब रेल्वे स्टेशन के अन्दर एक क़ुब्बा है जिस को क़ुब्बतुर्रऊस कहते हैं इस में एक कुंवां है जिस का नाम "बीरुस्सुक़िया" है। हुज़ूर صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم ने जंगे बद्र में जाते हुए यहां नमाज़ अदा फ़रमाई थी।

मस्जिदे अह़ज़ाब :- येह मस्जिद सल्अ़ पहाड़ी के मग़रिबी कनारे पर है। जंगे ख़न्दक़ के मौक़अ़ पर इसी जगह हुज़ूर صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم की दुआ़ मक़बूल हुई और मुसलमानों को फ़त्ह़ नसीब हुई इसी लिये बा'ज़

लोग इसे मस्जिदुल फ़त्ह़ भी कहते हैं । इस के क़रीब में चार दूसरी मस्जिदें भी हैं । एक का नाम मस्जिदे अबू बक्र, दूसरी का नाम मस्जिदे उ़मर, तीसरी का नाम मस्जिदे उ़षमान और चौथी का नाम मस्जिदे सलमान है । इन पांचों मस्जिदों को मसाजिदे ख़मसा कहा जाता है येह चारों मक़ामात दर ह़क़ीक़त जंग के मोरचे थे और येह चारों सह़ाबए किराम एक एक मोरचे पर मुतअ़य्यन थे इन ह़ज़रात ने इन मौरचों में नमाज़ें भी पढ़ीं इस लिये येह मौरचे मस्जिद बन गए ।

मस्जिदे बनी ह़िराम :- सल्अ़ पहाड़ी की घाटी में मस्जिदे अह़ज़ाब को जाते हुए दाहिनी त़रफ़ येह मस्जिद वाकेअ़ है इस की तारीख़ येह है कि हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस जगह नमाज़ पढ़ी है । इस के क़रीब एक ग़ार है जिस पर हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर एक मरतबा वह़्य उतरी थी और जंगे ख़न्दक़ के मौक़अ़ पर रात को इस ग़ार में आराम फ़रमाया था । इस की भी ज़ियारत करनी चाहिये ।

मस्जिदे ज़बाब :- येह मस्जिद ज़बाब की पहाड़ी पर है जो जबले उहुद के रास्ते के बाईं जानिब है । जंगे ख़न्दक़ के मौक़अ़ पर इस जगह हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़ैमा गाड़ा गया था ।

मस्जिदे क़िब्लतैन :- येह मस्जिद वादिये अ़क़ीक़ के क़रीब एक टीले पर है । इसी जगह बैतुल मुक़द्दस के बजाए का'बा शरीफ़ क़िब्ला मुक़र्रर हुवा इसी लिये इस को मस्जिदे क़िब्लतैन कहते हैं ।

मस्जिदे फ़ज़ीख़ :- अ़वाली के मशरिक़ी हिस्से में येह मस्जिद है । इस जगह बनू नुज़ैर के यहूदियों का मुह़ासरा करने की ह़ालत में हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ पढ़ी थी । इस का दूसरा नाम ''मस्जिदे शम्स''भी है इस मस्जिद को नजदी हुकूमत ने शहीद कर डाला है ।

मस्जिदे बनू क़ुरैज़ा :- मुह़ासरए बनी नुज़ैर के वक़्त यहां हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़ियाम फ़रमाया था । येह मस्जिदे फ़ज़ीह़ से जानिबे मशरिक़ थोड़े फ़ासिले पर है ।

मस्जिदे इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ :- येह मस्जिद बनी कुरैज़ा से जानिबे शिमाल वाक़ेअ़ है । इस जगह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साहिब ज़ादे ह़ज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पैदा हुए थे और इस जगह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने नमाज़ भी पढ़ी है ।

दरबारे अक्दस से वापसी

मर के जीते हैं जो उन के दर पे जाते हैं ह़सन
जी के मरते हैं जो आते हैं मदीना छोड़ कर

जब मदीनए मुनव्वरा से वापसी का इरादा हो तो मस्जिदे नबवी शरीफ़ में जा कर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुसल्ला पर या इस के क़रीब जहां जगह मिले दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़ें । इस के बा'द सुनहरी जाली के सामने मुवाजहे अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर गिर्या व ज़ारी में डूब कर दर्दो ग़म के साथ सलातो सलाम अ़र्ज़ करें फिर दोनों जहां की भलाई ह़ज व ज़ियारत की मक़्बूलिय्यत और हुसूले शफ़ाअ़त की सआ़दत और ख़ातिमा बिल ख़ैर के लिये ख़ूब गिड़ गिड़ा कर और रोते हुए दुआ़एं मांगें और ख़ास कर येह भी दुआ़ करें कि ह़ाज़िरी का येह आख़िरी मौक़अ़ न हो बल्कि ख़ुदावन्दे कुद्दूस इस मुक़द्दस दरबार की ह़ाज़िरी बार बार नसीब फ़रमाए । अपने साथ अपने वालिदैन और रिश्तेदारों अ़ज़ीज़ों और दोस्तों और बुज़ुर्गों और बच्चों के लिये भी दुआ़ मांगें । इस के बा'द रौज़ए मुनव्वर की त़रफ़ देखते हुए और जुदाई के रंजो ग़म में आंसू बहाते हुए मस्जिदे नबवी शरीफ़ से पहले बायां पाऊं निकालें और जहां तक गुम्बदे ख़ज़रा नज़र आए बार बार ह़सरत भरी निगाहों से उस का दीदार करते रहें और येह कहते हुए रवाना हो जाएं कि

मदीना जाऊं फिर आऊं दोबारा फिर जाऊं
इसी में उ़म्र दो रोज़ा तमाम हो जाए

6

इस्लामिय्यात

हमें करनी है शहनशाहे बत़्हा की रिज़ा जोई
वोह अपने हो गए तो रह़मते परवर दगार अपनी

खाने का त़रीक़ा

खाना खाने से पहले और बा'द में दोनों हाथ गिट्टों तक धोए। सिर्फ़ एक हाथ या फ़क़त़ उंगलियां ही न धोए कि इस से सुन्नत अदा न होगी लेकिन इस का ध्यान रहे कि खाने से पहले हाथ धो कर पोंछना न चाहिये और खाने के बा'द हाथ धो कर तोलिया या रूमाल से पोंछ लेना चाहिये ताकि खाने का अषर बाक़ी न रहे।

(الفتاوٰی الهندية،كتاب الكراهية،الباب الحادی عشر فی الكراهية۔۔۔الخ،ج٥،ص٣٣٧)

بِسْمِ الله पढ़ कर खाना शुरूअ़ करें और बुलन्द आवाज़ से بِسْمِ الله पढ़ें ताकि दूसरे लोगों को भी याद आ जाए और सब بِسْمِ الله पढ़ लें

(الفتاوٰی الهندية،كتاب الكراهية،الباب الحادی عشر فی الكراهية۔۔۔الخ،ج٥،ص٣٣٧)

और अगर शुरूअ़ में بِسْمِ الله पढ़ना भूल गया हो तो जब याद आ जाए येह दुआ़ पढ़े بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَ اٰخِرَهٗ

(جامع الترمذی، كتاب الاطعمة،باب ماجاء فی التسمية۔۔۔الخ،رقم١٨٦٥،ج٣،ص٣٣٩)

रोटी के ऊपर कोई चीज़ न रखी जाए और हाथ को रोटी से न पोंछे।

(ردالمحتار،كتاب الحظر والاباحة،ج٩،ص٥٦٢)

खाना हमेशा दाहिने हाथ से खाएं, बाएं हाथ से खाना पीना शैत़ान का काम है। (جامع الترمذی، كتاب الاطعمة،باب ماجاء فی النهی ۔۔۔الخ،رقم١٨٠٦،ج٣،ص٣١٣)

मस्अला :- खाना खाते वक़्त बायां पाऊं बिछा दे और दहना पाऊं खड़ा रखे या सुरीन पर बैठे और दोनों घुटने खड़े रखे।

(اشعة اللمعات،کتاب الاطعمة،فصل ۱،ج۳،ص۵۱۸)

और अगर भारी बदन या कमज़ोर होने की वजह से इस त़रह़ न बैठ सके तो पालती मार कर खाने में भी कोई ह़रज नहीं।

खाना खाने के दरमियान में कुछ बातें भी करता रहे बिल्कुल चुप रहना येह मजूसियों का त़रीक़ा है मगर कोई बेहूदा या फोहड़ बात हरगिज़ न बके बल्कि अच्छी अच्छी बातें करता रहे।

(الفتاوی الھندیة،کتاب الکراھیة،الباب الثانی عشر فی الھدایا و الضیافات،ج۵،ص۳۴۵)

खाने के बा'द उंगलियों को चाट ले और बरतन को भी उंगलियों से पोंछ कर चाट ले। (الفتاوی الھندیة،کتاب الکراھیة،الباب الحادی عشر فی الکراھیة فی الاکل وما یتصل بہ،ج۵،ص۳۳۷)

खाने की इब्तिदा नमक से करें और नमक ही पर ख़त्म करें कि इस में बहुत सी बीमारियों से शिफ़ा है।

(ردالمحتارعلی الدرالمختار،کتاب الحظر والاباحة،ج۹،ص۵٦۲)

खाने के बा'द येह दुआ़ पढ़ें।

اَلْحَمْدُلِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَكَفَانَا وَجَعَلَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ

खाने के बा'द साबुन लगा कर हाथ धोने में कोई ह़रज नहीं। खाने से क़ब्ल अ़वाम और जवानों के हाथ पहले धुलाए जाएं और खाने के बा'द उ़-लमा व मशाइख़ और बुढ्ढों के हाथ पहले धुलाए जाएं। खाना खा लेने के बा'द दस्तरख़्वान पर साह़िबे ख़ाना और ह़ाज़िरीन के लिये ख़ैरो बरकत की दुआ़ मांगनी भी सुन्नत है। (बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि़. 16, स. 18)

मस्अला :- पाऊं फैला कर और लैट कर और चलते फिरते कुछ खाना पीना ख़िलाफ़े अदब और त़रीक़ए सुन्नत के ख़िलाफ़ है। मुसलमानों को हर बात और हर काम में इस्लामी त़रीक़ों की पाबन्दी और आदाबे सुन्नत की ताबे'दारी करनी चाहिये।

मस्अला :- चांदी सोने के बरतनों में खाना पीना जाइज़ नहीं बल्कि इन चीज़ों का किसी त़रह़ से इस्ति'माल करना दुरुस्त नहीं जैसे सोने चांदी का चमचा इस्ति'माल करना या इस के बने हुए ख़िलाल से दांत साफ़ करना इसी त़रह़ चांदी सोने के बने हुए गुलाब पाश से गुलाब छिड़कना या ख़ासदान में पान रखना या चांदी की सलाई से सुर्मा लगाना या चांदी की प्याली में तेल रख कर तेल लगाना येह सब ह़राम है।

(الدرالمختار، کتاب الحظر والاباحۃ، ج۹، ص٥٦٤)

आदाब :- किसी के यहां दा'वत में जाओ तो खाने के लिये बहुत बे सब्री न ज़ाहिर करो कि ऐसा करने में तुम लोगों की नज़रों में हल्के हो जाओगे। खाना सामने आए तो इत़मीनान के साथ खाओ, बहुत जल्दी जल्दी मत खाओ, दूसरों की त़रफ़ मत देखो और दूसरे के बरतनों की जानिब निगाह मत डालो। ख़बरदार किसी खाने में ऐ़ब न निकालो कि इस से घर वालों की दिल शिकनी होगी और सुन्नत की मुख़ालफ़त भी होगी क्यूंकि हमारे रसूल صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم का मुक़द्दस त़रीक़ा येही था कि कभी आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने किसी खाने को ऐ़ब नहीं लगाया बल्कि दस्तरख़्वान पर जो खाना आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم को मरग़ूब होता उस को तनावुल फ़रमाते और जो ना पसन्द होता उस को न खाते। बा'ज़ मर्दों और औ़रतों की आ़दत होती है कि दा'वत से लौट कर साह़िबे ख़ाना पर त़रह़ त़रह़ के त़ा'ने मारा करते हैं कभी खानों में ऐ़ब निकालते हैं कभी मुन्तज़िमीन को कोसने देते हैं। मेरा तजरिबा है कि मर्दों से ज़ियादा औ़रतें इस मरज़ में मुब्तला हैं लिहाज़ा इन बुरी बातों को छोड़ दो बल्कि येह त़रीक़ा इख़्तियार करो कि अगर दा'वतों में तुम्हारे मिज़ाज के ख़िलाफ़ भी कोई बात हो तो इस को ख़न्दा पेशानी के साथ बरदाश्त करो और साह़िबे ख़ाना की दिलजोई के लिये चन्द ता'रीफ़ के कलिमात कह कर उस का ह़ौसला बढ़ा दो ऐसा करने से साह़िबे ख़ाना के दिल में तुम्हारा वक़ार बढ़ जाएगा।

मस्अला :- हाथ से लुक़्मा छूट कर गिर जाए तो इस को उठा कर खा लो, शैख़ी मत बघारो कि इस को ज़ाएअ़ कर देना इस्राफ़ है जो गुनाह है। बहुत ज़ियादा गर्म खाना मत खाओ न खाने को सूंघो न खाने पर फूंक मार मार कर इस को ठंडा करो कि येह सब बातें ख़िलाफ़े अदब भी हैं और मुज़िर भी। (ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، ج۹،ص ۵٦۲)

पीने का त़रीक़ा

जो कुछ भी पियो بِسْمِ اللّٰه पढ़ कर दाहिने हाथ से पियो, बाएं हाथ से पीना शैत़ान का त़रीक़ा है जो चीज़ भी पियो तीन सांस में पियो और हर मरतबा बरतन से मुंह हटा कर सांस लो। चाहिये कि पहली मरतबा और दूसरी मरतबा एक घूंट पिये और तीसरी सांस में जितना चाहे पी ले। खड़े हो कर हरगिज़ कोई चीज़ न पिये।

ह़दीष शरीफ़ में इस की मुमानअ़त है। पानी चूस चूस कर पीना चाहिये ग़ट ग़ट बड़े बड़े घूंट न पिये। जब पी चुके तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहे पीने के बा'द गिलास या कटोरे का बचा हुवा पानी फैंकना इसराफ़ व गुनाह है। सुराह़ी और मशक के मुंह में मुंह लगा कर पानी पीना मन्अ़ है।

(बहारे शरीअ़त, हि़. 16, स. 26)

इसी त़रह़ लोटे की टूंटी से भी पानी पीने की मुमानअ़त है लेकिन अगर पानी उंडेलने के लिये कोई बरतन न हो तो टूंटी वग़ैरा में देख भाल कर पानी पी लेने में कोई ह़रज नहीं।

मस्अला :- वुज़ू का बचा हुवा पानी और ज़म ज़म शरीफ़ का पानी खड़े हो कर पिया जाए, इन दो के सिवा हर पानी बैठ कर पीना चाहिये।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3, हि़. 16, स. 27)

हदीष शरीफ़ में है कि हरगिज़ तुम में से कोई खड़े हो कर कुछ न पिये और अगर भूल कर खड़े खड़े पी ले उस को चाहिये कि कै़ कर दे।

(صحيح مسلم، كتاب الاشربة،باب كراهية الشرب قائمًا، رقم٢٠٢٦،ص١١٩)

हज़रते शैख़ अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिषे देहलवी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने इस हदीष की शरह़ में तह़रीर फ़रमाया कि जब भूल कर पी लेने में येह हुक्म है कि कै़ कर दे तो क़स्दन पीने में तो ब दरजए औला येह हुक्म होगा।

(اشعة اللمعات، كتاب الاطعمة،باب الاشربة، ج٣،ص٥٥٧)

मस्अला :- सबील का पानी मालदार भी पी सकता है। हां अलबत्ता वहां से पानी कोई अपने घर नहीं ले जा सकता क्यूंकि वहां पीने के लिये पानी रखा गया है न कि घर ले जाने के लिये लेकिन अगर सबील लगाने वाले की त़रफ़ से इस की इजाज़त हो तो घर में ले जा सकता है।

(الفتاوى الهندية، كتاب الكراهية،الباب الحادى عشر فى الكراهية فى الاكل وما يتصل به، ج٥،ص٣٤١)

मस्अला :- जाड़ों (सर्दी) में अकषर जगह मस्जिद के सक़ाया में पानी गर्म किया जाता है ताकि मस्जिद में जो नमाज़ी आएं इस से वुज़ू व गुस्ल करें वोह पानी भी वहीं इस्ति'माल किया जा सकता है घर ले जाने की इजाज़त नहीं। इसी त़रह़ मस्जिद के लोटों को भी वहीं इस्ति'माल कर सकते हैं घर नहीं ले जा सकते। बा'ज़ लोग ताज़ा पानी भर कर मस्जिद के लोटों में घर ले जाते हैं येह जाइज़ नहीं। (बहारे शरीअ़त, हि़. 6, स. 27)

सोने के आदाब

मुस्तह़ब येह है कि बा वुज़ू सोए और بِسْمِ اللّٰه पढ़ कर कुछ देर दाहिनी करवट पर اَللّٰهُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْيٰى

(جامع الترمذى، كتاب الدعوات،باب منه (٢٨) رقم٣٤٢٨، ج٥،ص٢٦٣)

पढ़ कर दाहिने हाथ को रुख़्सार के नीचे रख कर क़िब्ला रू सोए फिर इस के बा'द बाईं करवट पर सोए। पेट के बल न लैटे। ह़दीष शरीफ़ में

है कि इस त़रह़ लैटने को अल्लाह तआ़ला पसन्द नहीं फ़रमाता।

(الفتاوی الهندیة،کتاب الکراهیة،الباب الثلا ثون فی المتفرقات،ج٥،ص٣٧٦)

और पाऊं पर पाऊं रख कर चित लैटना मन्अ़ है जब कि तहबन्द पहने हुए हो क्यूंकि इस सूरत में सित्र खुल जाने का अन्देशा है।

(جامع الترمذی،کتاب الادب،باب ماجاء فی فصاحة و البیان،رقم٢٨٦٣،ج٤،ص٣٨٨)

ऐसी छत पर सोना मन्अ़ है जिस पर गिरने से कोई रोक न हो। लड़का जब दस बरस का हो जाए तो अपनी मां या बहन वगै़रा के साथ न सुलाया जाए बल्कि इतनी उ़म्र का लड़का लड़कों और मर्दों के साथ भी न सोए। (बहारे शरीअ़त, हि़. 16, स. 71)

मस्अला :- दिन के इब्तिदाई हि़स्से और मग़रिब व इ़शा के दरमियान और अ़स्र के बा'द सोना मकरूह है।

(الفتاوی الهندیة،کتاب الکراهیة،الباب الثلا ثون،ج٥،ص٣٧٦)

मस्अला :- शिमाल की त़रफ़ पाऊं फैला कर बिला शुबा सोना जाइज़ है इस को नाजाइज़ समझना ग़लत़ी है हां अलबत्ता मग़रिब की त़रफ़ पाऊं कर के सोना यक़ीनन नाजाइज़ है कि इस में क़िब्ला की बे अदबी है।

मस्अला :- रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब रात की इब्तिदाई तारीकी आ जाए तो बच्चों को घर में समेट लो कि उस वक़्त में शयात़ीन इधर उधर निकल पड़ते हैं फिर जब एक घड़ी रात चली जाए तो बच्चों को छोड़ दो। بِسْمِ الله पढ़ कर दरवाज़ों को बन्द कर लो और بِسْمِ الله पढ़ कर मशकों के मुंह बांध दो और बरतनों को ढांक दो और सोते वक़्त चरागों को बुझा दो और सोते वक़्त अपने घरों में आग मत छोड़ा करो येह आग तुम्हारी दुश्मन है जब सोया करो तो इस को बुझा दिया करो। (صحیح البخاری،کتاب بدء الخلق،باب صفة ابلیس و جنوده،رقم ٣٢٨٠،ج٢،ص٣٩٩)

रात में जब कुत्तों के भोंकने और गधों के बोलने की आवाजे़ं सुनो तो اعوذ بالله من الشیطن الرجیم पढ़ो।

मस्अला :- रात में कोई डरावना ख़्वाब नज़र आए तो बाईं त़रफ़ तीन बार थूकना चाहिये और तीन बार اعوذ باللہ من الشیطن الرجیم पढ़ कर और करवट बदल कर सोना चाहिये और किसी से भी इस ख़्वाब का ज़िक्र न करना चाहिये। اِنْ شَاءَ اللہ تعالٰی इस ख़्वाब से कोई नुक़्सान नहीं पहुंचेगा।

(صحیح مسلم، کتاب الرؤیا، رقم ۲۲٦۲، ص ۱۲٤۱)

मस्अला :- अपनी त़रफ़ से झूटा ख़्वाब घड़ कर लोगों से बयान करना ह़राम और बहुत बड़ा गुनाह है।

मस्अला :- सोने से पहले बिस्तर को झाड़ लेना सुन्नत है। जब सो कर उठे तब येह दुआ़ पढ़े और बिस्तर से उठ जाए :

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَیْہِ النُّشُوْرُ ط

(صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب مایقول اذانام، رقم ٦۳۱۲، ج ٤، ص ۱۹۲)

लिबास का पहनना

इतना लिबास पहनना ज़रूरी है कि जिस से सित्रे औ़रत हो जाए। औ़रतें बहुत बारीक और इतना चुस्त लिबास हरगिज़ न पहनें कि जिस से बदन के आ'ज़ा ज़ाहिर हों कि औ़रतों को ऐसा कपड़ा पहनना ह़राम है। मर्द भी पाजामा और तहबन्द ऐसे बारीक और हलके कपड़े का न पहनें कि जिस से बदन की रंगत झलके और सित्रपोशी न हो कि मर्दों को भी ऐसा तहबन्द और पाजामा पहनना जाइज़ नहीं।

मस्अला :- मर्दों को धोती नहीं पहननी चाहिये कि धोती पहनना हिन्दूओं का लिबास है और इस से सित्रपोशी भी नहीं होती कि चलने और उठने बैठने में अकषर रान का पीछला ह़िस्सा खुल जाता है। इसी त़रह़ हर वोह लिबास जो यहूदो नसारा या दूसरे कुफ़्फ़ार का क़ौमी या मज़हबी लिबास हो मुसलमानों को हरगिज़ नहीं पहनना चाहिये।

और ऐसा तंग लिबास भी नाजाइज़ है कि जिस से रुकूअ़ व सुजूद न हो सके। नीकर और जांगिया भी हरगिज़ न पहनें कि घुंटनों और रान का

खोलना ह़राम है। हां तहबन्द के नीचे अगर नीकर या जांगिया पहनें तो कोई हरज नहीं। (बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि. 16, स. 54)

मस्अला :- मर्दों को रेशमी लिबास पहनना या लड़कों को पहनाना ह़राम है और औ़रतों के लिये जाइज़ है लेकिन अगर रेशमी कपड़े का बाना सूत का हो और ताना रेशम का हो तो येह कपड़ा मर्दों के लिये भी जाइज़ है।

(الفتاوی الهندية، كتاب الكراهية،الباب التاسع فی اللبس ما يكره من ذالك وما يكره، ج٥، ص ٣٣٠)

मस्अला :- औ़रत को सारा बदन सर से पैर तक छुपाए रखने का हुक्म है किसी ग़ैर मह़रम के सामने बदन का कोई ह़िस्सा खोलना जाइज़ नहीं।

(الفتاوی الهندية، كتاب الكراهية،الباب الثامن فيما يحل للرجل النظراليه وما لا يحل لهٗ، ج٥، ص٣٢٩)

मस्अला :- बालिग़ औ़रत को ग़ैर मह़रम के सामने चेहरा खोलना या सर के कुछ ह़िस्से से दूपट्टा हटा देना जाइज़ नहीं। इसी से मा'लूम हुवा कि बा'ज़ जगह नई दुल्हन की मुंह दिखाई का जो दस्तूर है कि कुम्बे वाले और रिश्तेदार लोग आ कर दुल्हन का मुंह देखते हैं और कुछ रक़म मुंह दिखाई में दुल्हन को देते हैं। ग़ैर मह़रम लोगों के लिये येह हरगिज़ जाइज़ नहीं।

(الفتاوی الهندية، كتاب الكراهية،الباب الثامن فيما يحل للرجل النظراليه وما لا يحل لهٗ، ج٥، ص٣٢٩)

मस्अला :- मर्दों को औ़रतों का लिबास पहनना और औ़रतों को मर्दों का लिबास पहनना भी मन्अ़ है।

(سنن ابی داؤد، كتاب اللباس، باب فی لباس النساء، رقم ٤٠٩٨، ج٤، ص٨٣)

मस्अला :- सफ़ेद कपड़े बेहतर हैं कि ह़दीष में इस की ता'रीफ़ आई है और सियाह रंग के कपड़े भी बेहतर ही हैं। ह़दीषों में आया है कि रसूलुल्लाह صلّى الله تعالٰى عليه و اٰله وسلّم फ़त्ह़े मक्का के दिन जब फ़ातिह़ाना ह़ैषिय्यत से मक्कए मुअ़ज़्ज़मा तशरीफ़ लाए तो सरे अक़्दस पर काले रंग का इमामा था कुसुम व ज़ा'फ़रान में रंगा हुवा और सुर्ख़ रंग का कपड़ा औ़रतों के लिये जाइज़ और मर्दों के लिये मन्अ़ है।

(ردالمحتار، كتاب الحظر والاباحة، فصل فی اللبس، ج٩، ص٥٨٠)

मस्अला :- उ-लमा और फुक़हा को ऐसा लिबास पहनना चाहिये कि वोह पहचाने जाएं ताकि लोगों को उन से इल्मी फ़ाइदा हासिल करने का मौक़अ़ मिले और इल्म की इ़ज़्ज़त व वुक़्अ़त भी लोगों के दिलों में पैदा हो।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि. 16, स. 52)

मस्अला :- औ़रतों को चूड़ीदार तंग पाजामा नहीं पहनना चाहिये कि इस से इन की पिन्ड़लियों और रानों की बनावट और शक्ल ज़ाहिर होती है। औ़रतों के लिये येही बेहतर है कि इन के पाजामे ग़रारे या ढीले ढाले और नीचे हों कि क़दम छुप जाएं इन के लिये जहां तक पाऊं का ज़ियादा से ज़ियादा हिस्सा छुप जाए येह बहुत ही अच्छा है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि. 16, स. 54)

मस्अला :- मर्दों का पाजामा या तहबन्द टख़्नों से नीचा होना सख़्त मन्अ़ है और **अल्लाह** तआ़ला को बहुत ज़ियादा ना पसन्द है।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الکراهیة، الباب التاسع فی اللبس، ج٥، ص٣٣٣)

मस्अला :- ऊन और बालों के कपड़े ह़ज़राते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की सुन्नत हैं और बहुत से औलियाए कामिलीन और बुज़ुर्गाने दीन ने अपनी ज़िन्दगी भर इन कपड़ों को पहना है। ह़दीष में है कि ऊन के कपड़े पहन कर अपने दिलों को मुनव्वर करो कि येह दुन्या में ज़िल्लत है और आख़िरत में नूर है (الفتاوی الهندیة، کتاب الکراهیة، الباب التاسع فی اللبس، ج٥، ص٣٣٣)

मस्अला :- कपड़ा दाहिनी त़रफ़ से पहनना मषलन पहले दाहिनी आस्तीन दाहिना पाईंचा पहनना येह सुन्नत है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि. 16, स. 44)

नया लिबास पहनते वक़्त येह दुआ़ पढ़नी चाहिये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَسَانِیْ هٰذَا وَرَزَقَنِیْهِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَّلَا قُوَّةٍ O

(سنن ابی داود، کتاب اللباس، باب مایقول اذا لبس ثوبًا جدیدًا، رقم٤٠٢٣، ج٤، ص٥٩)

या'नी उस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये ह़म्द है जिस ने मुझे येह पहनाया और मुझे रिज़्क़ दिया बिग़ैर मेरी त़ाक़त व क़ुव्वत के।

ज़ीनत का बयान

मर्दों को सोने की अंगूठी पहनना ह़राम है। मर्द चांदी की एक अंगूठी एक नग वाली जो वज़्न में साढ़े चार माशा से कम हो पहन सकते हैं मर्द चन्द अंगूठियां या एक अंगूठी कई नग वाली या छल्ले नहीं पहन सकते कि येह सब मर्दों के लिये नाजाइज़ हैं। औ़रतें सोने चांदी की हर क़िस्म की अंगूठियां छल्ले और हर क़िस्म के ज़ेवरात पहन सकती हैं लेकिन सोने चांदी के इ़लावा दूसरी धातों मषलन लोहा, तांबा, पीतल, रोल्ड गोल्ड वग़ैरा के ज़ेवरात या अंगूठियां मर्द व औ़रत दोनों के लिये नाजाइज़ है। बजने वाले ज़ेवरात भी औ़रतों के लिये मन्अ़ हैं नाबालिग़ लड़कों को भी ज़ेवरात पहनाना ह़राम है। पहनाने वाले गुनाहगार होंगे।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الکراھیۃ،الباب العاشرفی استعمال الذھب والفضۃ،ج٥،ص٣٣٥)

मस्अला :- शरीअ़त में इजाज़त है कि अगर अल्लाह तआ़ला ने दौलत दी है तो अच्छा लिबास और क़ीमती कपड़ों का इस्ति'माल औ़रतों और मर्दों दोनों के लिये जाइज़ है बशर्त़ येह कि फ़ख़्र और घमन्ड के लिये न हों बल्कि ने'मते ख़ुदावन्दी के इज़्हार के लिये हो।

(ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ،فصل فی اللبس،ج٩،ص٥٧٩)

मस्अला :- इन्सान के बालों को औ़रत चोटी बना कर अपने बालों में गूंधे ताकि इस के बाल ज़ियादा और ख़ूब सूरत मा'लूम हों येह ह़राम है और अगर ऊन या काले धागों की चोटी बना कर बालों में गूंधे तो येह जाइज़ है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الکراھیۃ،الباب التاسع عشر فی الختان، ج٥،ص٣٥٨)

मस्अला :- दांतों को रेती से रेत कर ख़ूब सूरत बनाने वाली या मोचने से भोऊं के बालों को नोच कर भोऊं को बारीक और ख़ूब सूरत बनाने वाली इन सब औ़रतों पर ह़दीष शरीफ़ में ला'नत आई है।

(صحیح مسلم، کتاب اللباس والزینۃ،باب تحریم فعل الواصل۔۔۔الخ،رقم ٢١٢٥،ص١١٧٥)

मस्अला :- लड़कियों के नाक कान छेदना जाइज़ है बा'ज़ जाहिल मर्द और औ़रतें लड़कों के भी कान छेदवाते हैं और दोरिया पहनाते हैं येह नाजाइज़ है या'नी लड़कों के कान भी छेदवाना नाजाइज़ और इन के कान में ज़ेवर पहनाना भी ह़राम है।

(ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ،فصل فی البیع،ج۹،ص۶۹۳)

मस्अला :- औ़रतें अपनी चोटियों में सोने चांदी के दाने, फूल कलप लगा सकती हैं। (الفتاوی الھندیۃ،کتاب الکراھیۃ،الباب العشرون فی الزینۃ۔۔۔الخ،ج۵،ص۳۵۹)

मस्अला :- औ़रतों को काजल और काला सुर्मा ज़ीनत के लिये लगाना जाइज़ है मर्दों को काला सुर्मा मह़्ज़ ज़ीनत के लिये लगाना नाजाइज़ है हां अगर काला सुर्मा आंखों के इलाज के लिये लगाए तो इस में कोई कराहत नहीं। (الفتاوی الھندیۃ،کتاب الکراھیۃ،الباب العشرون فی الزینۃ۔۔۔الخ،ج۵،ص۳۵۹)

आदाब :-

﴾1﴿ जो अमीर औ़रतें बहुत ही क़ीमती और ज़र्क़ बर्क़ लिबास और शानदार ज़ेवरात पहनती है उन के पास बहुत कम उठो बैठो कि उन के ठाठ बाठ को देख कर तुम को अपनी मुफ़्लिसी और ग़रीबी पर अफ़्सोस होगा और तुम ख़ुदावन्दे करीम की नाशुक्री करने लगोगी और ख़्वाह मख़्वाह दुन्या की हवस बढ़ेगी।

﴾2﴿ हर हफ़्ते नहा धो कर नाफ़ से नीचे और बग़ल वग़ैरा के बाल दूर कर के बदन को साफ़ सुथरा करना मुस्तह़ब है। हर हफ़्ते न हो तो पन्दरहवें दिन सही, ज़ियादा से ज़ियादा चालीस दिन, इस से ज़ियादा की इजाज़त नहीं। अगर चालीस दिन गुज़र गए और बाल साफ़ न किये तो गुनाह हुवा। औ़रतों को ख़ास तौ़र पर इस का ख़याल रखना चाहिये क्यूंकि औ़रतों की गन्दगी और फौहड़ पन से शोहरों को अपनी बीवियों से नफ़रत हो जाया करती है। फिर मियां बीवी के तअ़ल्लुक़ात हमेशा के लिये ख़राब हो जाया करते हैं।

(ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ،فصل فی البیع،ج۹،ص۶۷۱)

﴾3﴿ मोटे कपड़े पहनना और फटे पुराने कपड़ों में पैवन्द लगा कर पहनना इस्लामी त़रीक़ा है।

(الفتاوی الھندیۃ،کتاب الکراھیۃ،الباب التاسع فی اللبس مایکرہ من ---الخ،ج٥،ص٣٣٣)

ह़दीष शरीफ़ में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब तक कपड़े में पैवन्द लगा कर न पहन लो उस वक़्त तक कपड़े को पुराना न समझो। इस लिये ख़बरदार ख़बरदार कभी हरगिज़ भी पैवन्द लगा कर कपड़ों को पहनने में न शर्म करो और न इस को ह़क़ीर समझो न इस पर किसी को ता'ना मारो। (बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि. 16, स. 54)

﴾4﴿ नाक मुंह साफ़ करने के लिये या वुज़ू के बा'द हाथ मुंह पोंछने या पसीना पोंछने के लिये रूमाल रखना औ़रतों और मर्दों के लिये जाइज़ है इस लिये रूमाल रखना चाहिये। दामन या आस्तीन से हाथ मुंह पोंछना या नाक साफ़ करना ख़िलाफ़े अदब और घिनावनी बात है।

(الفتاوی الھندیۃ،کتاب الکراھیۃ،الباب التاسع فی اللبس ،ج٥،ص٣٣٣)

मुतफ़र्रिक़ मसाइल

मस्अला :– मर्दों को इमामा बांधना सुन्नत है खुसूसन नमाज़ में क्यूंकि जो नमाज़ इमामा बांध कर पढ़ी जाती है उस का षवाब बहुत ज़ियादा होता है। (बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि. 16, स. 55)

मस्अला :– इमामा बांधे तो इस का शिम्ला दोनों शानों के दरमियान लटकाए और शिम्ला ज़ियादा से ज़ियादा इतना बड़ा होना चाहिये कि बैठने में न दबे। (الفتاوی الھندیۃ،کتاب الکراھیۃ،الباب التاسع فی اللبس مایکرہ ---الخ،ج٥،ص٣٣٠)

बा'ज़ लोग शिम्ला बिल्कुल नहीं लटकाते येह सुन्नत के ख़िलाफ़ है और बा'ज़ लोग शिम्ले को ऊपर ला कर इमामे में घुर्स लेते हैं येह भी नहीं चाहिये खुसूसन नमाज़ की ह़ालत में तो ऐसा करना मकरूह है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि. 16, स. 55)

मस्अला :- इमामे को जब फिर से बांधना हो तो इस को उतार कर ज़मीन पर फैंक न दे बल्कि जिस त़रह़ लपेटा है उसी त़रह़ उधेड़ना चाहिये।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الکراهیة،الباب التاسع فی اللبس مایکره ـــ الخ، ج٥، ص ٣٣٠)

मस्अला :- टोपी पहनना भी हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की सुन्नत है।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الکراهیة،الباب التاسع فی اللبس مایکره ـــ الخ، ج٥، ص ٣٣٠)

हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم टोपी के ऊपर इमामा बांधा करते थे और फ़रमाते थे कि हम में और मुशरिकीन में येह फ़र्क़ है कि हम इमामों के नीचे टोपी रखते हैं और वोह सिर्फ़ पगड़ी बांधते हैं और इस के नीचे टोपी नहीं रखते चुनान्चे हिन्दूस्तान के कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन भी पगड़ी बांधते हैं तो इस के नीचे टोपी नहीं पहनते। (बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि. 16, स. 56)

मस्अला :- रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का छोटा इमामा सात हाथ का और बड़ा इमामा बारह हाथ का था लिहाज़ा बस इसी सुन्नत के मुत़ाबिक़ इमामा रखना चाहिये। बारह हाथ से ज़ियादा बड़ा इमामा बांधना सुन्नत के ख़िलाफ़ है। (مرقاۃ المفاتیح، کتاب اللباس، الفصل الثانی، ج٨، ص١٤٨)

मस्अला :- औलिया व सालेह़ीन के मज़ारों पर ग़िलाफ़ व चादर डालना जाइज़ है जब कि येह मक़्सूद हो कि साह़िबे मज़ार की अ़ज़मत व रिफ्अ़त अ़वाम की नज़रों में पैदा हो और अ़वाम उन **अल्लाह** वालों का अदब करें और उन से फ़ुयूज़ो बरकात ह़ासिल करें और वहां बा अदब ह़ाज़िर हो कर फ़ातिह़ा ख़्वानी करें।

(ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحة، فصل فی اللبس، ج٩، ص٥٩٩)

वहाबी और बद अ़क़ीदा लोग जिन के दिलों में औलिया और बुज़ुर्गाने दीन की महब्बत व अ़क़ीदत नहीं है इस को नाजाइज़ व ह़राम बताते हैं। उन लोगों की बात हरगिज़ हरगिज़ नहीं माननी चाहिये वरना गुमराही का ख़त़रा है।

मस्अला :- गले में ता'वीज़ पहनना या बाज़ू पर ता'वीज़ बांधना इसी त़रह़ बा'ज़ दुआ़ओं या आयतों को काग़ज़ पर या रिकाबी पर लिख कर शिफ़ा की निय्यत से धो कर पिलाना भी जाइज़ है। याद रखो कि बा'ज़ ह़दीषों में जो गले में ता'वीज़ लटकाने की मुमानअ़त आई है इस से मुराद ज़मानए जाहिलिय्यत के वोह ता'वीज़ात हैं जो मुशरिकाना मन्तरों से बनाए जाते थे ऐसे जन्तरों का पहनना आज कल भी ह़राम है लेकिन क़ुरआन की आयतों और ह़दीषों के ता'वीज़ात हमेशा और हर ज़माने में जाइज़ रहे हैं और अब भी जाइज़ हैं। (ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ،فصل فی اللبس،ج۹،ص۶۰۰)

मस्अला :- बिछौने या मुसल्ला या दस्तरख़्वान या तकयों या मस्नदों या रूमालों पर अगर कुछ लिखा हुवा हो तो इन को इस्ति'माल करना जाइज़ नहीं। येह लिखावट ख़्वाह कपड़ों में बनी हुई हो या काढ़ी हुई हो या रोशनाई से लिखी हुई हो अल्फ़ाज़ हों या ह़ुरूफ़ हों हर सूरत में मुमानअ़त है क्यूंकि लिखे हुए अल्फ़ाज़ और ह़ुरूफ़ का अदबो एह़तिराम लाज़िम है। (ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ،فصل فی اللبس،ج۹،ص۶۰۰)

मस्अला :- नज़र से बचने के लिये माथे या ठोड़ी वग़ैरा में काजल वग़ैरा से धब्बा लगा देना या खेतों में किसी लकड़ी में कपड़ा लपेट कर गाड़ देना ताकि देखने वाले की नज़र पहले इस पर पड़े और बच्चों और खेती को किसी की नज़र न लगे ऐसा करना मन्अ़ नहीं है क्यूंकि नज़र का लगना ह़दीषों से षाबित है इस का इन्कार नहीं किया जा सकता। ह़दीष शरीफ़ में है कि जब अपनी या किसी मुसलमान की कोई चीज़ देखे और वोह अच्छी लगे और पसन्द आ जाए तो फ़ौरन येह दुआ़ पढ़े

تَبَارَكَ اللّٰهُ اَحۡسَنُ الۡخَالِقِيۡنَ اَللّٰهُمَّ بَارِكۡ فِيۡهِ ط

(ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ،فصل فی اللبس،ج۹،ص۶۰۱)

या उर्दू में येह कह दे कि अल्लाह बरकत दे इस त़रह़ कहने से नज़र नहीं लगेगी।

मस्अला :- जिस के यहां मय्यित हुई है उसे इज़्हारे ग़म के लिये काले कपड़े पहनना जाइज़ नहीं है।

(الفتاوی الھندیۃ،کتاب الکراھیۃ،الباب التاسع فی اللبس ۔۔۔الخ،ج۵،ص۳۳۳)

इसी त़रह़ इज़्हारे ग़म के लिये काले बिल्ले लगाना भी नाजाइज़ है। अव्वल तो येह सोग की सूरत है दुवुम येह कि येह नसरानियों का त़रीक़ा है इसी त़रह़ मुह़र्रम के दिनों में पहली मुह़र्रम से बारहवीं मुह़र्रम तक तीन क़िस्म के रंग वाले कपड़े नहीं पहने जाएं काला कि येह राफ़िज़ियों का त़रीक़ा है। सब्ज़ कि येह बिदअ़तियों या'नी ता'ज़ियादारों का त़रीक़ा है और सुर्ख़ कि येह ख़ारिजियों का त़रीक़ा है कि वोह مَعَاذَ اللّٰه इज़्हारे मसर्रत के लिये सुर्ख़ लिबास पहनते हैं। (बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि. 16, स. 53)

मस्अला :- उ़-लमा और फ़ुक़हा को ऐसा लिबास पहनना चाहिये कि वोह पहचाने जाएं ताकि लोगों को इन से मसाइल पूछने और दीनी मा'लूमात ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिले और इल्मे दीन की इ़ज़्ज़त व वुक़्अ़त लोगों के दिलों में पैदा हो।

मस्अला :- इमामा खड़े हो कर बांधे और पाजामा बैठ कर पहने जिस ने इस का उल्टा किया वोह ऐसे मरज़ में मुब्तला होगा जिस की दवा नहीं।

(خلاصۃ الفتاوی،رسالہ ضیاء القلوب فی لباس المحبوب،ج۳،ص۱۵۳)

मस्अला :- पाजामे का तकया न बनाए कि येह अदब के ख़िलाफ़ है और इमामे का भी तकया न बनाए।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि. 16, स. 258)

चलने के आदाब

अल्लाह तआला ने कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया कि :

وَلَا تَمْشِ فِی الْاَرْضِ مَرَحًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ

وَاقْصِدْ فِیْ مَشْیِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِیْرِ

(پ ۲۱، لقمٰن:۱۸)

और ज़मीन पर इतरा कर मत चलो कोई इतरा कर चलने वाला फ़ख़्र करने वाला अल्लाह को पसन्द नहीं है और दरमियानी चाल चलो (न बहुत ही आहिस्ता और न बिला ज़रूरत दौड़ कर) और बात चीत में अपनी आवाज़ पस्त रखो बेशक सब आवाज़ों में बुरी आवाज़ गधे की आवाज़ है।

दूसरी आयत में इरशाद फ़रमाया

وَلَا تَمْشِ فِی الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا.

(پ ۱۵، بنی اسرائیل:۳۷)

या'नी तू ज़मीन पर इतरा कर मत चल बेशक तू हरगिज़ न तो ज़मीन को चीर डालेगा और न तू बुलन्दी में पहाड़ो को पहुंचेगा।

तीसरी आयत में फ़रमाया कि

وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِیْنَ یَمْشُوْنَ عَلَی الْاَرْضِ هَوْنًا. (پ ۱۹، الفرقان:۶۳)

या'नी रह़मान के बन्दे वोह हैं जो ज़मीन पर आहिस्ता चलते हैं।

मस्अला :– चलने में इतरा इतरा कर चलना या अकड़ कर चलना या दाएं बाएं हिलते और झुमते हुए चलना या ज़मीन पर पाऊं पटक पटक कर चलना या बिला ज़रूरत दौड़ते हुए चलना या बिला ज़रूरत इधर उधर देखते हुए चलना या लोगों को धक्का देते हुए चलना येह सब

अल्लाह तआ़ला को नापसन्द है और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत के ख़िलाफ़ है इस लिये शरीअ़त में इस क़िस्म की चाल चलना मन्अ़ और नाजाइज़ है ह़दीष शरीफ़ में है कि एक शख़्स दो चादरें ओढ़े हुए इतरा इतरा कर चल रहा था और बहुत घमन्ड में था तो **अल्लाह** तआ़ला ने उस को ज़मीन में धंसा दिया और वोह क़ियामत तक ज़मीन में धंसता ही जाएगा।

(صحيح مسلم، كتاب اللباس والزينة،باب تحريم التبختر في المشي..الخ، رقم٢٠٨٨،ص١١٥٦)

एक ह़दीष में येह भी आया है कि चलने में जब तुम्हारे सामने औ़रतें आ जाएं तो तुम इन के दरमियान में से मत गुज़रो दाहिने या बाएं का रास्ता ले लो। (شعب الايمان،باب في تحريم الفروج، رقم٥٤٤٧،ج٤،ص٣٧١)

मस्अला :- रास्ता छोड़ कर किसी की ज़मीन में चलने का ह़क़ नहीं। हां अगर वहां रास्ता नहीं है तो चल सकता है मगर जब कि ज़मीन का मालिक मन्अ़ करे तो अब नहीं चल सकता। येह हुक्म एक शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ है और जब बहुत से लोग हों तो जब ज़मीन का मालिक राज़ी न हो नहीं चलना चाहिये लेकिन अगर रास्ते में पानी है और इस के कनारे किसी की ज़मीन है ऐसी सूरत में इस ज़मीन पर चल सकता है।

(الفتاوى الهندية، كتاب الكراهية،الباب الثلاثون في المتفرقات، ج٥،ص٣٧٣)

बा'ज़ मरतबा खेत बोया होता है ज़ाहिर है कि उस में चलना काश्त कार के नुक़्सान का सबब है ऐसी सूरत में हरगिज़ इस में न चलना चाहिये बल्कि बा'ज़ मरतबा काश्त कार खेत के कनारे पर कांटे रख देते हैं येह साफ़ इस की दलील है कि इस की जानिब से चलने की मुमानअ़त है इस पर भी बा'ज़ लोग तवज्जोह नहीं करते उन लोगों को जान लेना चाहिये कि इस सूरत में चलना मन्अ़ है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि. 16, स. 71)

आदाबे मजलिस का बयान

अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया कि

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِي الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ط (پ۲۸،المجادلۃ:۱۱)

ऐ ईमान वालो ! जब तुम से कहा जाए मजलिसों में जगह दे दो तो तुम लोग जगह दे दो। अल्लाह तआ़ला तुम को जगह देगा और जब तुम में से कहा जाए कि उठ खड़े हो तो उठ खड़े हुवा करो अल्लाह तआ़ला तुम में से ईमान वालों और इ़ल्म वालों के दर्जात को बुलन्द फ़रमा देगा।

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि कोई शख़्स ऐसा न करे कि मजलिस से किसी को उठा कर ख़ुद उस की जगह पर बैठ जाए बल्कि आने वालों के लिये हट जाए और जगह कुशादा कर दे।

(صحیح البخاری، کتاب الاستئذان، باب ۳۲، رقم ۶۲۷۰، ج۴، ص۱۷۹)

मजलिसों मे हर मर्द औ़रत को इन चन्द आदाब का लिहा़ज़ रखना चाहिये।

《1》 किसी को उस की जगह से उठा कर ख़ुद वहां मत बैठो।

(صحیح البخاری، کتاب الاستئذان، باب ۳۱، رقم ۶۲۶۹، ج۴، ص۱۷۹)

《2》 कोई मजलिस से उठ कर किसी काम को गया और येह मा'लूम है कि वोह अभी आएगा तो ऐसी सूरत में उस जगह किसी और को बैठना नहीं चाहिये वोह जगह उसी का ह़क़ है।

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب اذا قام الرجل من مجلس ۔۔۔الخ، رقم ۴۸۵۳، ج۴، ص۳۴۶)

《3》 अगर दो शख़्स मजलिस में पास पास बैठ कर बातें कर रहे हों तो उन दोनों के बीच में जा कर नहीं बैठ जाना चाहिये हां अलबत्ता अगर वोह दोनों अपनी ख़ुशी से तुम्हें अपने दरमियान में बिठाएं तो बैठने में कोई ह़रज नहीं।

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی الرجل یجلس بین الرجلین ۔۔۔الخ، رقم ۴۸۴۴، ج۴، ص۳۴۴)

﴾4﴿ जो तुम से मुलाक़ात के लिये आए तो तुम ख़ुशी का इज़्हार करते हुए उस के लिये ज़रा अपनी जगह से खिसक जाओ जिस से वोह येह जाने कि मेरी क़द्रो इ़ज़्ज़त की।

﴾5﴿ मजलिस में सरदार बन कर मत बैठो बल्कि जहां भी जगह मिले बैठ जाओ घमन्ड और ग़ुरूर **अल्लाह** तआ़ला को बेहद नापसन्द है और तवाज़ोअ़ और इन्किसारी **अल्लाह** तआ़ला को बहुत ज़ियादा मह़बूब है।

﴾6﴿ मजलिस में छींक आए तो अपने मुंह पर अपना हाथ या कोई कपड़ा रख लो और पस्त आवाज़ से छींको और बुलन्द आवाज़ से اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहो और बुलन्द आवाज़ से ह़ाज़िरीने मजलिस जवाब में يرحمك الله कहें।

(الفتاوی الهندية، كتاب الكراهية، الباب السابع فی السلام---إلخ، ج٥، ص٣٢٦)

﴾7﴿ जमाई को जहां तक हो सके रोको अगर फिर भी न रुके तो हाथ या कपड़े से मुंह ढांक लो।

﴾8﴿ बहुत ज़ोर से क़हक़हा लगा कर मत हंसो कि इस त़रह़ हंसने से दिल मुर्दा हो जाता है। (سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب الحزن والبكاء، رقم١٤٩٣، ج٤، ص٤٦٥)

﴾9﴿ मजलिसों में लोगों के सामने तेवरी चढ़ा कर और माथे पर बल डाल कर नाक मुंह चढ़ा कर मत देखो कि येह घमन्डी लोगों और मुतकब्बिरों का त़रीक़ा है बल्कि निहायत आ़जिज़ाना अन्दाज़ से ग़रीबों की त़रह़ बैठो कोई बात मौक़अ़ की हो तो लोगों से बोल चाल भी लो लेकिन हरगिज़ हरगिज़ किसी की बात मत काटो न किसी की दिल आज़ारी करो न कोई गुनाह की बात बोलो।

﴾10﴿ मजलिस में ख़बरदार ख़बरदार किसी की त़रफ़ पाऊं न फैलाओं येह बिल्कुल ही ख़िलाफ़े अदब है।

मजलिस से उठते वक़्त की दुआ़ :- रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स मजलिस से उठ कर तीन मरतबा येह दुआ़ पढ़ लेगा **अल्लाह** तआ़ला उस के गुनाहों को मिटा देगा और जो शख़्स मजलिसे ख़ैर और मजलिसे ज़िक्र में इस दुआ़ को पढ़ेगा **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये इस ख़ैर पर मोहर कर देगा।

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَ بِحَمْدِكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَ اَتُوْبُ اِلَيْكَ۔

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम तेरी ता'रीफ़ के साथ तेरी पाकी बयान करते हैं तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं मैं तुझ से बख़्शिश मांगता हूं और तेरे दरबार में तौबा करता हूं। (سنن ابی داؤد، کتاب الادب،باب فی کفارۃ المجلس،رقم۴۸۵۷،ج۴،ص۳۴۷)

ज़बान की हि़फ़ाज़त का बयान

बात चीत में हमेशा इस का ध्यान रखो कि तुम्हारी ज़बान से कोई गुनाह की बात न निकल जाए। ह़दीष शरीफ़ मे है कि बहुत से लोगों को उन की ज़बानों से निकली हुई बातें जहन्नम में ले जाएंगी इस लिये ख़ा़स तौ़र पर बात चीत करने में इन बातों का ख़याल रखो।

《1》 बे सोचे समझे हरगिज़ कोई बात मत कहो जब सोच कर तुम्हें यक़ीन हो जाए कि येह बात किसी त़रह़ बुरी नहीं तब बोलो वरना बोलने से चुप रहना बेहतर है।

《2》 किसी को बे ईमान कहना या येह कहना कि फ़ुलां पर ख़ुदा की मार, ख़ुदा की फिटकार, ख़ुदा की ला'नत, ख़ुदा का ग़ज़ब पड़े, फ़ुलां को दोज़ख़ नसीब हो, इस त़रह़ से बोलना गुनाह की बात है जिस को ऐसा कहा है अगर वाक़ेई वोह ऐसा न हुवा तो येह बुरी ला'नत और फिटकार लौट कर कहने वाले पर पड़ेगी।

《3》 अगर तुम को किसी ने दुख देने वाली बात कह दी है तो तुम सब्र करो और मुआ़फ़ कर दो तुम्हें बहुत बड़ा अज्रो षवाब मिलेगा और अगर तुम इस का जवाब देना चाहो तो तुम बस इतना ही कह सकते हो जितना

उस ने तुम को कहा है अगर इस से ज़ियादा कहोगे तो गुनहगार हो जाओगे।

﴾4﴿ दुग़ली बात हरगिज़ हरगिज़ मत कहो कि इस के मुंह पर इस की सी बात करो और दूसरे के मुंह पर उस की सी बात करो कि येह दोनों जहान में रुस्वाई का सामान है।

﴾5﴿ न किसी की चुग़ली करो न किसी की चुग़ली सुनो कि येह बड़े बड़े फ़सादों की जड़ और गुनाहे कबीरा है।

﴾6﴿ झूट भी हरगिज़ न बोलो कि येह बहुत ही सख़्त गुनाहे कबीरा है।

﴾7﴿ ख़ुशामद के त़ौर पर किसी के मुंह पर उस की ता'रीफ़ न करो। पीठ के पीछे भी ह़द से ज़ियादा किसी की ता'रीफ़ न करो।

﴾8﴿ न किसी की ग़ीबत करो न किसी की ग़ीबत सुनो। ग़ीबत गुनाहे कबीरा है और ग़ीबत येह है कि किसी की पीठ के पीछे उस की ऐसी कोई बात कहना कि अगर वोह सुने तो उस को रंज हो अगर्चे वोह बात सच्ची ही हो और अगर वोह बात ही ग़लत़ हो तो उस को कहना येह बोहतान है इस में ग़ीबत से भी ज़ियादा गुनाह है।

(ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ،فصل فی البیع،ج۹،ص۶۷۶)

﴾9﴿ जिस शख़्स की ग़ीबत की है अगर उस से मुआ़फ़ न करा सको तो उस के लिये मग़फ़िरत की दुआ़एं किया करो उम्मीद है कि क़ियामत में वोह मुआ़फ़ कर दे। (ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ،فصل فی البیع،ج۹،ص۶۷۶)

﴾10﴿ कभी हरगिज़ किसी से झूटा वा'दा न करो।

﴾11﴿ मह़ज़ अपनी बात को ऊंची रखने के लिये किसी से बह़्ष न करो।

﴾12﴿ कभी ऐसी हंसी मत करो जिस से दूसरा ज़लील हो जाए।

﴾13﴿ सुनी सुनाई बातों को बिला तह़क़ीक़ किये हुए मत कहा करो क्यूंकि अकषर ऐसी बातें झूटी होती हैं।

﴾14﴿ किसी की बुरी सूरत या बुरी बात की नक़्ल मत करो।

﴾15﴿ हमेशा अच्छी बातें लोगों को बताते रहो और बुरी बातों से लोगों को मन्अ़ करते रहो।

मकान में जाने के लिये इजाज़त लेना

कुरआने मजीद में **अल्लाह** तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया कि *"ऐ ईमान वालो ! अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में दाख़िल न हो जब तक इजाज़त न ले लो और घर वालों पर सलाम न कर लो येह तुम्हारे लिये बेहतर है ताकि तुम नसीह़त पकड़ो और अगर उन घरों में किसी को न पाओ तो अन्दर मत जाओ जब तक तुम्हें इजाज़त न मिले और अगर तुम से कहा जाए कि लौट जाओ तो वापस चले आओ येह तुम्हारे लिये ज़ियादा पाकीज़ा है और जो कुछ तुम करते हो* ***अल्लाह*** *उस को जानता है इस में तुम पर कोई गुनाह नहीं कि ऐसे घरों के अन्दर चले जाओ जिन में कोई रहता नहीं है और उन के बरतने का तुम्हें इख़्तियार है और* ***अल्लाह*** *जानता है तमाम उन बातों को जिन को तुम ज़ाहिर करते हो और जिन को तुम छुपाते हो।"* (پ۱۸،النور:۲۷۔۲۹)

मस्अला :- जब कोई शख़्स दूसरे के मकान पर जाए तो पहले अन्दर आने की इजाज़त ह़ासिल करे फिर जब अन्दर जाए तो पहले सलाम करे फिर इस के बा'द बात चीत शुरूअ़ करे और अगर जिस शख़्स के पास गया है वोह मकान से बाहर ही मिल गया हो तो अब इजाज़त त़लब करने की ज़रूरत नहीं सलाम करे फिर कलाम शुरूअ़ कर दे।

(الفتاوی قاضی خان، کتاب الحظر والاباحة، ج٤، ص٣٧٧)

मस्अला :- किसी के दरवाज़े पर जा कर आवाज़ दी और उस ने अन्दर से कहा "कौन ?" तो इस के जवाब में येह न कहे कि "मैं" जैसा कि आज कल बहुत से लोग "मैं" कह कर जवाब देते हैं इस जवाब को हुज़ूरे अक्दस صلّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہ وسلّم ने नापसन्द फ़रमाया बल्कि जवाब में अपना नाम ज़िक्र करे क्यूंकि "मैं" का लफ़्ज़ तो हर शख़्स अपने को कह सकता है फिर येह जवाब ही कब हुवा।

(ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحة، فصل فی البیع، ج۹، ص٦٨٣)

मस्अला :- अगर तुम ने किसी के मकान पर जा कर अन्दर दाख़िल होने की इजाज़त मांगी और घर वाले ने इजाज़त न दी तो नाराज़ होने की

ज़रूरत नहीं ख़ुशी ख़ुशी वहां से वापस चले आओ। हो सकता है कि वोह उस वक़्त किसी ज़रूरी काम में मश्गूल हो और उस को तुम से मिलने की फ़ुर्सत न हो। (ردالمحتار، کتاب الحظر و الاباحۃ،فصل فی البیع،ج۹،ص ٦٨٢)

मस्अला :– अगर ऐसे मकान में जाना हो कि उस में कोई न हो तो येह कहो कि "اَلسَّلَامُ عَلَیْنَا وَعَلٰی عِبَادِ اللّٰہِ الصّٰلِحِیْن" फ़िरिश्ते इस सलाम का जवाब देंगे।

(ردالمحتار، کتاب الحظر و الاباحۃ،فصل فی البیع،ج۹،ص ٦٨٢)

या इस त़रह़ कहे कि "السلام علیك ایھاالنبی" क्यूंकि ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रूहे मुबारक मुसलमानों के घरों में तशरीफ़ फ़रमा हुवा करती है। (बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि़. 16, स. 84)

सलाम के मसाइल

अल्लाह ने क़ुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया कि

وَاِذَا حُیِّیْتُمْ بِتَحِیَّۃٍ فَحَیُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْھَآ اَوْ رُدُّوْھَا اِنَّ اللّٰہَ کَانَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ حَسِیْبًا ۝ (پ۵،النساء: ٨٦)

और जब तुम को कोई किसी लफ़्ज़ से सलाम करे तो तुम उस से बेहतर लफ़्ज़ में जवाब दो या वोही लफ़्ज़ तुम भी कह दो बेशक **अल्लाह** हर चीज़ का ह़िसाब लेने वाला है।

मस्अला :– सलाम करना सुन्नत और सलाम का जवाब देना वाजिब है।

(الدرالمختار مع ردالمحتار،کتاب الحظر و الاباحۃ،فصل فی البیع،ج۹،ص ٦٨٣،٦٨٧)

मस्अला :– सलाम करने वाले को चाहिये कि सलाम करते वक़्त दिल में येह निय्यत करे कि इस शख़्स की जान, इस का माल, इस की इ़ज़्ज़त व आबरू, सब कुछ मेरी ह़िफ़ाज़त में है और मैं इन में से किसी चीज़ में दख़्ल अन्दाज़ी करना ह़राम जानता हूं।

(ردالمحتار، کتاب الحظر و الاباحۃ،فصل فی البیع،ج۹،ص ٦٨٢)

मस्अला :– औ़रत हो या मर्द सब के लिये सलाम करने और जवाब देने का इस्लामी त़रीक़ा येही है कि السلام علیکم और जवाब में وعلیکم السلام कहे इस के सिवा दूसरे सब त़रीक़े ग़ैर इस्लामी हैं।

मस्अला :- अगर दूसरे का सलाम लाए तो जवाब में येह कहना चाहिये "علیك و علیھم السلام"

(الدرالمختار مع ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ،فصل فی البیع،ج۹،ص۶۸۵)

मस्अला :- "السلام علیکم" और जवाब में "وعلیکم السلام" कहना काफ़ी है लेकिन बेहतर येह कि सलाम करने वाला "السلام علیکم ورحمۃ اللّٰہ وبرکاتہ" कहे और जवाब देने वाला भी येह कहे। सलाम में इस से ज़ियादा अल्फ़ाज़ कहने की ज़रूरत नहीं।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الکراھیۃ،الباب السابع فی السلام،ج۵،ص۳۲۵)

मस्अला :- "سَلَامٌ عَلَیْکُمْ" का लफ़्ज़ भी सलाम है मगर चूंकि येह लफ़्ज़ शीओं में मज़हबी निशान के तौर पर राइज हो गया है कि इस लफ़्ज़ के सुनते ही फ़ौरन ज़ेहन इस तरफ़ जाता है कि येह शख़्स शीआ मज़हब का है लिहाज़ा सुन्नियों को सलाम में इस लफ़्ज़ से बचना ज़रूरी है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि़. 16, स. 89)

मस्अला :- सलाम का जवाब फ़ौरन ही देना वाजिब है बिला उ़ज़्र ताख़ीर की तो गुनहगार हुवा और येह गुनाह सलाम का जवाब दे देने से दफ़्अ़ नहीं होगा बल्कि तौबा करनी होगी।

(ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ،فصل فی البیع،ج۹،ص۶۸۳)

मस्अला :- एक जमाअ़त दूसरी जमाअ़त के पास आई और उन में से किसी एक ने भी सलाम न किया तो सब सुन्नत छोड़ने के इलज़ाम की गिरिफ़्त में आ गए और अगर उन में से एक शख़्स ने भी सलाम कर लिया तो सब बरी हो गए लेकिन अफ़्ज़ल येह है कि सब ही सलाम करें यूं ही अगर जमाअ़त में से किसी ने भी सलाम का जवाब न दिया तो वाजिब छोड़ने की वजह से सब गुनहगार हुए और अगर एक शख़्स ने भी सलाम का जवाब दे दिया तो पूरी जमाअ़त इलज़ाम से बरी हो गई मगर अफ़्ज़ल येही है कि सब सलाम का जवाब दें।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الکراھیۃ،الباب السابع فی السلام۔۔۔الخ،ج۵،ص۳۲۵)

मस्अला :- एक शख़्स शहर से आ रहा है और दूसरा शख़्स दिहात से आ रहा है दोनों में से कौन किस को सलाम करे । बा'ज़ ने कहा कि शहरी देहाती को सलाम करे और बा'ज़ का क़ौल है कि देहाती शहरी को सलाम करे और इस मस्अले में सब का इत्तिफ़ाक़ है कि चलने वाला बैठने वाले को सलाम करे, छोटा बड़े को सलाम करे, सुवार पैदल को सलाम करे, थोड़े लोग ज़ियादा लोगों को सलाम करें, एक शख़्स पीछे से आया येह आगे वाले को सलाम करे ।

(الفتاوی الهندية، كتاب الكراهية،الباب السابع في السلام---الخ،،ج٥،ص ٣٢٥)

मस्अला :- काफ़िर को सलाम न करे और वोह सलाम करें तो जवाब दे सकता है मगर जवाब में सिर्फ़ عليكم कहे और अगर ऐसी जगह गुज़रता हो जिस जगह मुसलमान और कुफ़्फ़ार दोनों जम्अ़ हों तो السلام عليكم कहे और मुसलमानों पर सलाम करने की निय्यत करे और येह भी हो सकता है कि ऐसे मिले जुले मज्मअ़ को "اَلسَّلَامُ عَلٰی مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰی" कह कर सलाम करे । (الفتاوی الهندية، كتاب الكراهية،الباب السابع في السلام---الخ،،ج٥،ص ٣٢٥)

मस्अला :- अज़ान व इक़ामत और जुमुआ़ व ईदैन के ख़ुत्बे के वक़्त सलाम नहीं करना चाहिये ।

(الفتاوی الهندية، كتاب الكراهية،الباب السابع في السلام---الخ،،ج٥،ص ٣٢٥-٣٢٦)

मस्अला :- अ़लानिया फ़िस्क़ो फ़ुजूर करने वालों को सलाम नहीं करना चाहिये लेकिन अगर किसी के पड़ोस में फ़ुस्साक़ रहते हों और येह अगर उन से सख़्ती बरतता है तो वोह इस को परेशान करते हों और ईज़ा देते हों और अगर येह उन से सलाम व कलाम जारी रखता है तो वोह इस को ईज़ा पहुंचाने से बाज़ रहते हों तो ऐसी सूरत में ज़ाहिरी तौर पर उन फ़ुस्साक़ के साथ सलाम व कलाम के साथ मेल जोल रखने में येह शख़्स मा'ज़ूर समझा जाएगा ।

(الفتاوی الهندية، كتاب الكراهية،الباب السابع في السلام---الخ،،ج٥،ص ٣٢٦)

मस्अला :- किसी से कह दिया कि फुलां को मेरा सलाम कह देना और उस ने सलाम पहुंचाने का वा'दा कर लिया तो उस पर सलाम पहुंचाना वाजिब है और अगर सलाम पहुंचाने का वा'दा नहीं किया था तो सलाम पहुंचाना उस पर वाजिब नहीं।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الکراھیۃ،الباب السابع فی السلام۔۔۔الخ،ج٥،ص ٣٢٥)

मस्अला :- ख़त में सलाम लिखा होता है उस को पढ़ते ही ज़बान से "وعلیکم السلام" कह ले, तह़रीरी सलाम का जवाब हो गया।

(ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ،فصل فی البیع،ج٩،ص ٦٨٥)

आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान साह़िब बरेलवी عَلَيْهِ رَحْمَة का भी येह त़रीक़ा है। (बहारे शरीअ़त, जि. 3 ह़ि. 16, स. 92)

मस्अला :- उंगली या हथेली से सलाम करना मन्अ़ है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3 ह़ि. 16, स. 92)

ह़दीष शरीफ़ में है कि उंगलियों से सलाम करना यहूदियों का त़रीक़ा है और हथेली से इशारा कर के सलाम करना येह नसरानियों का त़रीक़ा है। (جامع الترمذی، کتاب الاستئذان والآداب،باب ماجاء فی کراھیۃ۔۔۔الخ،رقم۲۷۰٤،ج٤،ص٣١٩)

मस्अला :- बा'ज़ लोग सलाम के जवाब में हाथ या सर से इशारे कर देते हैं बल्कि बा'ज़ तो फ़क़त़ आंखों के इशारे से सलाम का जवाब दिया करते हैं यूं सलाम का जवाब नहीं हुवा, ज़बान से सलाम का जवाब देना वाजिब है। (बहारे शरीअ़त, जि. 3 ह़ि. 16, स. 92)

मस्अला :- छोटे जब बड़ो को सलाम करते हैं तो बड़ा जवाब में कहता है कि "जीते रहो" इसी त़रह़ बुढ्ढी औ़रतें बच्चों के सलाम का जवाब इस त़रह़ दिया करती हैं "खुश रहो", "सुहागन बनी रहो", "दूध पूत वाली रहो" इन सब अल्फ़ाज़ से सलाम का जवाब नहीं होता बल्कि हमेशा और हर मर्द व औ़रत को सलाम के जवाब में "وعلیکم السلام" कहना चाहिये। (बहारे शरीअ़त, ह़ि. 16, स. 93)

मस्अला :- इस ज़माने में कई त़रह़ के सलाम लोगों ने ईजाद कर लिये हैं जिन में सब से बुरे अल्फ़ाज़ "नमसते" और "बन्दगी अ़र्ज़" हैं। मुसलमानों को कभी हरगिज़ हरगिज़ येह नहीं कहना चाहिये। बा'ज़ लोग "आदाब अ़र्ज़" कहते हैं इस में अगर्चे इतनी बुराई नहीं मगर येह भी सुन्नत के ख़िलाफ़ है। (बहारे शरीअ़त, हि़. 16, स. 92)

मस्अला :- कोई शख़्स तिलावत में मश्ग़ूल है या दर्स व तदरीस या इल्मी गुफ़्तगू में है तो उस को सलाम नहीं करना चाहिये इसी त़रह़ अज़ान व इक़ामत व ख़ुत़्बए जुमुआ़ व ईदैन के वक़्त भी सलाम न करे। सब लोग इल्मी बात चीत कर रहे हों या एक शख़्स बोल रहा हो और बाक़ी सुन रहे हों दोनों सूरतों में सलाम न करे मषलन कोई आ़लिम वा'ज़ कह रहा है या दीनी मस्अले पर तक़रीर कर रहा है और ह़ाज़िरीन सुन रहे हैं तो आने वाला शख़्स चुपके से आ कर बैठ जाए सलाम न करे।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الکراهیة،الباب السابع فی السلام۔۔۔الخ،،ج٥،ص٣٢٥)

मस्अला :- जो शख़्स पेशाब पाख़ाना कर रहा हो या कबूतर उड़ा रहा हो या गाना गा रहा हो या नंगा नहा रहा हो या पेशाब के बा'द ढेला ले कर इस्तिन्जा सुखा रहा हो उस को सलाम न किया जाए।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الکراهیة،الباب السابع فی السلام۔۔۔الخ،،ج٥،ص٣٢٦)

मस्अला :- जब अपने घर में जाए तो घर वालों को सलाम करे, बच्चों के सामने गुज़रे तो उन बच्चों को सलाम करे।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الکراهیة،الباب السابع فی السلام۔۔۔الخ،،ج٥،ص٣٢٥)

मस्अला :- मर्द औ़रत की मुलाक़ात हो तो मर्द औ़रत को सलाम करे और अगर किसी अजनबिय्या औ़रत ने मर्द को सलाम किया और वोह बुढ़ी हो तो इस तरह़ जवाब दे कि वोह भी सुने और वोह जवान हो तो इस त़रह़ जवाब दे कि वोह न सुने।

(فتاوی قاضی خان، کتاب الحظر والاباحة،فصل فی التسبیح والتسلیم۔۔۔الخ،ج٤،ص٣٧٧)

मस्अला :- बा'ज़ लोग सलाम करते वक़्त झुक जाते हैं अगर येह झुकना रुकूअ़ के बराबर हो जाए तो ह़राम है और अगर रुकूअ़ की ह़द से कम हो तो मकरूह है। (बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि़. 16, स. 92)

मस्अला :- किसी के नाम के साथ عَلَيْهِ السَّلَام कहना येह ह़ज़राते अम्बियां और मलाइका के साथ ख़ास है मषलन ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام और ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام। नबी और फ़िरिश्ते के इलावा किसी दूसरे के नाम के साथ عَلَيْهِ السَّلَام नहीं कहना चाहिये।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि़. 16, स. 93)

मस्अला :- सलाम मह़ब्बत पैदा होने का ज़रीआ़ है। ह़दीष शरीफ़ में है कि हु़ज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि उस ज़ात की क़सम है कि जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है कि तुम लोग उस वक़्त तक जन्नत में दाख़िल नहीं होगे यहां तक कि तुम मोमिन बन जाओ और तुम लोग मोमिन नहीं बनोगे यहां तक कि तुम एक दूसरे से मह़ब्बत करने लगो लिहाज़ा मैं तुम लोगों को एक ऐसे काम की रहनुमाई करता हूं कि जब तुम लोग वोह काम करने लगोगे तो तुम एक दूसरे से मह़ब्बत करने लगोगे वोह काम येह है कि तुम लोग आपस में सलाम का चर्चा करो।

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب،باب فی افشاء السلام،رقم۵۱۹۳،ج۴،ص۴۴۸)

मस्अला :- सलाम ख़ैरो बरकत का सबब है हु़ज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने ख़ादिमे ख़ास ह़ज़रते अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से फ़रमाया कि ऐ प्यारे बेटे ! जब तू घर में दाख़िल हुवा करे तो घर वालों को सलाम कर। क्यूंकि तेरा सलाम तेरे और तेरे घर वालों के लिये बरकत का सबब होगा।

(جامع الترمذی، کتاب الاستئذان و الآداب،باب ماجاء فی التسلیم۔۔۔الخ، رقم۲۷۰۷، ج۴،ص ۳۲۰)

मस्अला :- सुवार पैदल चलने वालों को सलाम करे और चलने वाला बैठे हुए को सलाम करे और थोड़े लोग ज़ियादा लोगों को सलाम करें।

(صحیح البخاری، کتاب الاستئذان،باب تسلیم الماشی علی القاعد،رقم۶۲۳۳،ج۴،ص۱۶۶)

मस्अला :- हर मुसलमान के दूसरे मुसलमान के ऊपर छे हुक़ूक़ है (1) जब वोह बीमार हो तो इ़यादत करे (2) जब वोह मर जाए तो उस के जनाज़े पर ह़ाज़िर हो (3) जब दा'वत करे तो उस की दा'वत क़बूल करे (4) जब वोह मुलाक़ात करे तो उस को सलाम करे (5) जब वोह छींके तो يرحمك الله कह कर उस की छींक का जवाब दे (6) उस की गै़र ह़ाज़िरी और मौजूदगी दोनों सूरतों में उस की ख़ैर ख़्वाही करे।

(جامع الترمذی،کتاب الأدب،باب ماجاء فی تشمیت العاطس،رقم۲۷۴۶،ج۴،ص۳۳۸)

मुसाफ़ह़ा व मुआ़नक़ा व बोसा व क़ियाम

ह़दीष शरीफ़ में है कि जब दो मुसलमान मिलें और मुसाफ़ह़ा करें और **अल्लाह** عزّوجلّ की ह़म्द करें और इस्तिग़फ़ार करें तो दोनों की मग़फ़िरत हो जाएगी। (سنن ابی داؤد،کتاب الادب،باب فی المصافحۃ،رقم۵۲۱۱،ج۴،ص۴۵۳)

मस्अला :- मुसाफ़ह़ा सुन्नत है और इस का षुबूत मुतवातिर ह़दीषों से है और अह़ादीष में इस की बहुत बड़ी फ़ज़ीलत आई है एक ह़दीष में है कि जिस ने अपने मुसलमान भाई से मुसाफ़ह़ा किया और हाथ को हिलाया तो उस के तमाम गुनाह गिर जाएंगे जितनी बार मुलाक़ात हो हर बार मुसाफ़ह़ा करना मुस्तह़ब है। मुत़्लक़न मुसाफ़ह़ा का जाइज़ होना येह बताता है कि नमाज़े फ़ज्र व नमाज़े अ़स्र के बा'द जो अकषर जगह मुसाफ़ह़ा करने का मुसलमानों में रवाज है येह भी जाइज़ है और फ़िक़ह की जो बा'ज़ किताबों में इस को बिदअ़त कहा गया है इस से मुराद बिदअ़ते ह़सना है और हर बिदअ़ते ह़सना जाइज़ ही हुवा करती है और जिस त़रह़ नमाज़े फ़ज्र व अ़स्र के बा'द मुसाफ़ह़ा जाइज़ है दूसरी नमाज़ों के बा'द भी मुसाफ़ह़ा करना जाइज़ है क्यूंकि जब अस्ल मुसाफ़ह़ा करना जाइज़ है तो जिस वक़्त भी मुसाफ़ह़ा किया जाए जाइज़ ही रहेगा जब तक कि शरीअ़ते मुत़ह्हरा से इस की मुमानअ़त षाबित न हो जाए और

ज़ाहिर है कि पांचों नमाज़ों के बा'द मुसाफ़हा करने की कोई मुमानअ़त शरीअ़त की त़रफ़ से षाबित नहीं है लिहाज़ा पांचों नमाज़ों के बा'द मुसाफ़हा जाइज़ है। (الدرالمختارمع ردالمحتار،کتاب الحظر والاباحة،باب الاستبراء،ج۹،ص۶۲۸)

मस्अला :- मुसाफ़हा का एक त़रीक़ा वोह है जो बुख़ारी शरीफ़ में ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक हाथ इन के दोनों हाथों के दरमियान में था या'नी हर एक का एक हाथ दूसरे के दोनों हाथों के दरमियान में हो, दूसरा त़रीक़ा जिस को बा'ज़ फ़ुक़हा ने बयान किया है और इस को भी ह़दीष से षाबित बताते हैं वोह येह है कि हर एक अपना दाहिना हाथ दूसरे के दाहिने हाथ से और बायां हाथ बाएं हाथ से मिलाए और अंगूठे को दबाए कि अंगूठे में एक रग है कि इस के पकड़ने से मह़ब्बत पैदा होती है। (बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि़. 16, स. 98)

मस्अला :- वहाबी ग़ैर मुक़ल्लिद दोनों हाथों से मुसाफ़हा करने को नाजाइज़ और ख़िलाफ़े सुन्नत बताते हैं और सिर्फ़ एक हाथ से मुसाफ़हा करते हैं येह इन लोगों की जहालत है। ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिषे देहल्वी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने साफ़ साफ़ तह़रीर फ़रमाया है कि

"मुलाक़ात के वक़्त मुसाफ़हा करना सुन्नत है और दोनों हाथ से मुसाफ़हा करना चाहिये।" (اشعة اللمعات،کتاب الآداب،باب المصافحة والمعانقة،ج۴،ص۲۲)

मस्अला :- मुआ़नक़ा करना सुन्नत है क्यूंकि ह़दीष से षाबित है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुआ़नक़ा फ़रमाया है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि़. 16, स. 98)

मस्अला :- बा'द नमाज़े ईदैन मुसलमानों में मुआ़नक़ा का रवाज है और येह भी इज़्हारे ख़ुशी का एक त़रीक़ा है। येह मुआ़नक़ा भी जाइज़ है बशर्त़ येह कि फ़ितने का ख़ौफ़ और शहवत का अन्देशा न हो मषलन

ख़ूब सूरत अम्रद लड़कों से मुआ़नक़ा करना कि येह फ़ितने का मह़ल है लिहाज़ा इस से बचना चाहिये। (बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि. 16, स. 98)

मस्अला :- किसी मर्द के रुख़्सार या पेशानी या ठोड़ी को बोसा देना अगर शहवत के साथ हो तो नाजाइज़ है और अगर इकराम व ता'ज़ीम के लिये हो तो जाइज़ है। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की दोनों आंखों के दरमियान को बोसा दिया और ह़ज़राते सह़ाबा व ताबेई़न رضی اللہ تعالٰی عنہم اجمعین से भी बोसा देना षाबित है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि. 16, स. 98-99)

मस्अला :- आ़लिमे दीन और बादशाहे आ़दिल के हाथ को बोसा देना जाइज़ है बल्कि इन लोगों के क़दम को चुमना भी जाइज़ है बल्कि अगर किसी आ़लिमे दीन से लोग येह ख़्वाहिश ज़ाहिर करें कि आप अपना हाथ या क़दम मुझे दीजिये कि मैं बोसा दूं तो लोगों की ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ वोह आ़लिम अपना हाथ पाऊं बोसे के लिये लोगों की त़रफ़ बढ़ा सकता है।

(الدرالمختار، کتاب الحظر والاباحۃ،باب الاستبراء وغیرہ،ج۹،ص ٦٣١-٦٣٢)

मस्अला :- बा'ज़ लोग मुसाफ़ह़ा करने के बा'द ख़ुद अपना हाथ चूम लिया करते हैं येह मकरूह है ऐसा नहीं करना चाहिये।

(الدرالمختار، کتاب الحظر والاباحۃ،باب الاستبراء وغیرہ،ج۹،ص ٦٣٢)

बोसे की छे क़िस्में :- याद रखो कि बोसे की छे क़िस्में हैं ﴾1﴿ बोसए रह़मत जैसे मां बाप का अपनी अवलाद को बोसा देना ﴾2﴿ बोसए शफ़्क़त जैसे अवलाद का अपने वालिदैन को बोसा देना ﴾3﴿ बोसए मह़ब्बत जैसे एक शख़्स अपने भाई की पेशानी को बोसा दे ﴾4﴿ बोसए तहिय्यत जैसे ब वक़्ते मुलाक़ात एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को बोसा दे ﴾5﴿ बोसए शहवत जैसे औ़रत को बोसा दे ﴾6﴿ बोसए दियानत जैसे ह़जरे अस्वद का बोसा। (الدرالمختار، کتاب الحظر والاباحۃ،باب الاستبراء وغیرہ،ج۹،ص ٦٣٣)

मस्अला :- कुरआन शरीफ़ को बोसा देना भी सह़ाबए किराम के फ़े'ल से षाबित है ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रोज़ाना सुब्ह़ को कुरआने मजीद को चुमते थे और कहते थे कि येह मेरे रब का अ़हद और उस की किताब है और ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी कुरआने मजीद को बोसा देते थे और अपने चेहरे से लगाते थे।

(الدرالمختار، کتاب الحظر والاباحۃ،باب الاستبراء وغیرہ،ج۹،ص۶۳۴)

मस्अला :- सजदए तह़िय्यत या'नी मुलाक़ात के वक़्त ता'ज़ीम के त़ौर पर किसी को सजदा करना ह़राम है और अगर इ़बादत की निय्यत से हो तो सजदा करने वाला काफ़िर है कि ग़ैरे ख़ुदा की इ़बादत कुफ़्र है।

(الدرالمختار، کتاب الحظر والاباحۃ،باب الاستبراء وغیرہ،ج۹،ص۶۳۲)

मस्अला :- आने वाले की ता'ज़ीम के लिये खड़ा होना जाइज़ बल्कि मुस्तह़ब है खुसूसन जब कि ऐसे शख़्स की ता'ज़ीम के लिये खड़ा हो जो ता'ज़ीम का मुस्तह़िक़ है मषलन आ़लिमे दीन की ता'ज़ीम के लिये खड़ा होना। (ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ،باب الاستبراء وغیرہ،ج۹،ص۶۳۲۔۶۳۳)

मस्अला :- जो शख़्स येह पसन्द करता हो कि लोग मेरी ता'ज़ीम के लिये खड़े हों उस की येह ख़्वाहिश मज़्मूम और नापसन्दीदा है।

(الدرالمختار، کتاب الحظر والاباحۃ،باب الاستبراء وغیرہ،ج۹،ص۶۳۳)

बा'ज़ ह़दीषों में जो क़ियाम की मज़म्मत आई है इस से मुराद ऐसे ही शख़्स के लिये क़ियाम है या उस क़ियाम को मन्अ़ किया गया है जो अ़जम के बादशाहों में राइज है कि सलात़ीन अपने तख़्त पर बैठे होते हैं और उस के इर्द गिर्द ता'ज़ीम के त़ौर पर लोग खड़े रहते हैं आने वाले के लिये क़ियाम करना इस क़ियाम में दाख़िल नहीं।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3 ह़ि. 16, स. 100)

छींक और जमाई का बयान

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि छींक **अल्लाह** तआ़ला को पसन्द है और जमाई नापसन्द है जब कोई छींके और اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहे तो जो मुसलमान इस को सुने उस पर ह़क़ है कि يـرحمك الله कहे और जमाई शैत़ान की त़रफ़ से है। जब किसी को जमाई आए तो जहां तक हो सके इस को दफ़्अ़ करे। क्यूंकि जब कोई आदमी जमाई लेता है तो शैत़ान हंसता है या'नी ख़ुश होता है क्यूंकि जमाई कस्ल और ग़फ़्लत की दलील है ऐसी चीज़ को शैत़ान पसन्द करता है।

(صحیح البخاری، کتاب الأدب،باب اذا تثاوب فلیضع۔۔۔الخ،رقم٦٢٢٦،ج٤،ص١٦٣)

मस्अला :- जब छींकने वाला اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहे तो उस की छींक का जवाब देना वाजिब है और जिस त़रह़ सलाम का जवाब फ़ौरन ही देना और इस त़रह़ जवाब देना कि वोह सुन ले वाजिब है बिल्कुल इसी त़रह़ छींक का जवाब भी फ़ौरन ही और बुलन्द आवाज़ से देना वाजिब है।

(ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحة،فصل فی البیع،ج٩،ص٦٨٣۔٦٨٤)

मस्अला :- जमाई आए तो जहां तक हो सके इस को रोके क्यूंकि बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीषों में है कि जब कोई जमाई लेता है तो शैत़ान हंसता है। (صحیح البخاری، کتاب الأدب،باب اذا تثاوب فلیضع۔۔۔الخ،رقم٦٢٢٦،ج٤،ص١٦٣)

जमाई रोकने का त़रीक़ा येह है कि अपने होंट को दांतों से दबा ले और जमाई रोकने का एक मुजर्रब अ़मल येह है कि जब जमाई आने लगे तो दिल में येह ख़याल करे कि ह़ज़राते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام को जमाई नहीं आती थी येह ख़याल दिल में लाते ही हरगिज़ जमाई नहीं आएगी।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3 स. 167)

मस्अला :- जिस को छींक आए वोह बुलन्द आवाज़ से اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहे और बेहतर येह है कि الحمد لله رب العلمين कहे इस के जवाब में दूसरा

शख़्स यूं कहे يــرحمك الله फिर छींकने वाला يَغۡفِرُاللّٰهُ لَنَا وَلَكُمۡ कहे।

(الفتاوی الهندية،کتاب الکراهية،الباب السابع فی السلام و تشميت العاطس،ج٥،ص٣٢٦)

मस्अला :- अगर एक मजलिस में किसी को कई मरतबा छींक आई तो सिर्फ़ तीन बार तक जवाब देना है इस के बा'द उसे इख़्तियार है कि जवाब दे या न दे।

(الفتاوی الهندية،کتاب الکراهية،الباب السابع فی السلام و تشميت العاطس،ج٥،ص٣٢٦)

मस्अला :- दीवार के पीछे किसी को छींक आई और उस ने اَلۡحَمۡدُ لِلّٰه कहा तो सुनने वाले पर इस का जवाब देना वाजिब है।

(ردالمحتار،کتاب الحظر والاباحة،فصل فی البيع،ج٩،ص٦٨٤)

मस्अला :- छींकने वाले को चाहिये कि सर झुका कर पस्त आवाज़ से मुंह को छुपा कर छींके। बहुत ही बुलन्द आवाज़ से छींकना हि़माक़त है।

(ردالمحتار،کتاب الحظر والاباحة،فصل فی البيع،ج٩،ص٦٨٤)

मस्अला :- बा'ज़ जाहिल लोग छींक को बद शगूनी समझते हैं अगर किसी काम के लिये जाते वक़्त खुद, किसी को या किसी दूसरे को छींक आ गई तो लोग येह बद फ़ाली लेते हैं कि येह काम नहीं होगा येह बहुत बड़ी जहालत है और बे अ़क़्ली की दलील है।

(बहारे शरीअ़त, हि. 16 स. 103)

ह़दीष में आया है कि छींक **अल्लाह** तआ़ला को पसन्द है और येह भी एक ह़दीष में है कि अगर कोई बात करते हुए छींक आ जाए तो येह छींक इस बात पर "शाहिदे अ़द्ल" है। अब ग़ौर करो कि जब छींक को रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم ने "शाहिदे अ़द्ल" का लक़ब दिया तो फिर भला छींक मन्हूस और बद शगूनी का सामान कैसे बन सकती है ? इस लिये लोगों को इस अ़क़ीदे से तौबा करनी चाहिये कि छींक मन्हूस और बद फ़ाली की चीज़ है। खुदावन्दे करीम मुसलमानों को इत्तिबाए़ सुन्नत और पाबन्दिये शरीअ़त की तौफ़ीक़ बख़्शे आमीन

(बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि. 16, स. 103)

मस्अला :- काफ़िर को छींक आई और उस ने اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहा तो जवाब में يَهْدِيْكَ اللّٰه कहना चाहिये। (ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ،فصل فی البیع،ج۹،ص۶۸٤)

मस्अला :- छींक का जवाब एक मरतबा वाजिब है, दोबारा छींक आई और उस ने اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहा तो दोबारा जवाब देना वाजिब नहीं बल्कि मुस्तह़ब है। (ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ،فصل فی البیع،ج۹،ص۶۸٤)

ख़रीदो फ़रोख़्त के चन्द मसाइल

ख़रीदने और बेचने के मसाइल बहुत ज़ियादा हैं। इस मुख़्तसर किताब में भला इस की गुन्जाइश कहां? जिस को मुफ़स्सल तौ़र पर ख़रीदो फ़रोख़्त के मसाइल को जानना हो वोह बहारे शरीअ़त हिस्सा याज़्दहुम का बग़ौर मुत़ालआ़ करे। येह इस बारे में बहुत ही जामेअ़ और मो'तबर किताब है हम यहां सिर्फ़ चन्द ज़रूरी मसाइल का ज़िक्र करते हैं जिन से अकषर व बेशतर वासित़ा पड़ता रहता है इन को ग़ौर से पढ़ कर याद कर लो।

मस्अला :- जब तक ख़रीदो फ़रोख़्त के ज़रूरी मसाइल न मा'लूम हों कि कौन सी बैअ़ जाइज़ है और कौन सी नाजाइज़ उस वक़्त तक मुसलमान को चाहिये कि वोह तिजारत न करे बल्कि तिजारत करने से पहले इन मस्अलों को जान लेना चाहिये ताकि तिजारत में ह़राम कमाई से बचा रहे।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الکراھیۃ،الباب الخامس والعشرون فی البیع۔۔۔الخ،ج۵،ص۳۶۳)

मस्अला :- ताजिर को अपनी तिजारत में इस क़दर मश्ग़ूल न हो जाना चाहिये कि फ़राइज़ फ़ौत हो जाएं बल्कि जब नमाज़ का वक़्त हो जाए तो लाज़िम है कि तिजारत को छोड़ कर नमाज़ पढ़ने चला जाए।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الکراھیۃ،الباب الخامس والعشرون فی البیع۔۔۔الخ،ج۵،ص۳۶٤)

मस्अला :- बेचने और ख़रीदने में येह ज़रूरी है कि सौदे और क़ीमत दोनों को अच्छी त़रह़ साफ़ साफ़ तै़ कर लें कोई बात ऐसी गोल मोल न रखें जिस से बा'द में झगड़े बखेड़े पड़ें अगर इन दोनों में से एक चीज़ भी अच्छी त़रह़ मा'लूम और तै़ न होगी तो बैअ़ सह़ीह़ न होगी।

(ردالمحتار، کتاب البیوع،مطلب شرائط البیع انواع اربعۃ،ج۷،ص۱۵)

मस्अला :- आदमी के बाल और हड्डी वग़ैरा किसी चीज़ का बेचना नाजाइज़ है और अपने किसी काम में लाना भी दुरुस्त नहीं।

(فتح القدیر، کتاب البیوع،فصل بیع الفاسد،ج٦،ص٣٩٠)

मस्अला :- औ़रत के दूध को बेचना और ख़रीदना नाजाइज़ है अगर्चे इस को किसी बरतन में रख लिया हो अगर्चे जिस का दूध हो वोह बान्दी हो।

(فتح القدیر، کتاب البیوع،فصل بیع الفاسد،ج٦،ص٣٨٨۔٣٨٩)

मस्अला :- ख़िन्ज़ीर के बाल उस की खाल वग़ैरा उस के किसी जुज़्व का बेचना और ख़रीदना ह़राम और उस की बैअ़ बात़िल है इसी त़रह़ मुर्दार के चमड़े की बैअ़ भी बात़िल और नाजाइज़ है जब पकाया हुवा न हो और अगर दबाग़त कर ली तो उस की बैअ़ दुरुस्त और उस का काम में लाना जाइज़ है। (فتح القدیر، کتاب البیوع،فصل بیع الفاسد،ج٦،ص٣٩٠)

मस्अला :- तेल नापाक हो गया उस की बैअ़ जाइज़ है और खाने के इ़लावा उस को दूसरे काम में लाना जाइज़ है।

(الدرالمختارمع ردالمحتار، کتاب البیوع،مطلب فی التداوی...الخ، ج٧،ص٢٦٧)

मगर येह ज़रूरी है कि बेचने वाला ख़रीदार को तेल के नापाक होने की इत्त़िलाअ़ दे दे ताकि ख़रीदार उस को खाने के काम में न लाए और इस वजह से भी ख़रीदार को मुत्त़लअ़ करना ज़रूरी है कि तेल नापाक होना ऐ़ब है और बेचने वाले पर लाज़िम है कि ख़रीदार को सौदे के ऐ़ब पर मुत्त़लअ़ कर दे नापाक तेल मस्जिद में जलाना जाइज़ नहीं। घर में जला सकता है। नापाक तेल का चराग़ जला कर इस्ति'माल करना अगर्चे जाइज़ है मगर बदन या कपड़े पर जहां भी लग जाएगा नापाक हो जाएगा और बदन या कपड़े को पाक करना पड़ेगा। बा'ज़ दवाएं इस क़िस्म की बनाई जाती हैं जिस में कोई नापाक चीज़ शामिल करते हैं मषलन जानवर का पित्ता या ख़ून या ह़राम जानवरों की चर्बी या शराब वग़ैरा येह दवाएं अगर बदन या कपड़े में लग गईं तो इन का पाक करना ज़रूरी है।

मस्अला :- मुर्दार की चर्बी को बेचना या इस से किसी क़िस्म का नफ़्अ़ उठाना जाइज़ नहीं। न इस से चराग़ जला सकते हैं न चमड़ा पकाने के काम में ला सकते हैं न इस को किसी मरहम या साबुन में मिला सकते हैं। (ردالمحتار، کتاب البیوع،مطلب فی التداوی ..الخ،ج۷،ص۲٦۷)

मस्अला :- मुर्दार के बाल, हड्डी, सींग, खुर, पर, चोंच, नाखुन इन सब को बेचना और ख़रीदना जाइज़ है। शिकारी जानवर सिखाए हुए हों इन को काम में लाना भी जाइज़ है इसी त़रह़ हाथी के दांत और हड्डी और इस की बनी हुई चीज़ों को भी ख़रीदना और बेचना और इस्ति'माल करना जाइज़ है। (فتح القدیر، کتاب البیوع،فصل بیع الفاسد،ج٦،ص ۳۹۲)

मस्अला :- कुत्ता, बिल्ली, हाथी, चीता, बाज़, शिकरा इन सब को ख़रीदना और बेचना जाइज़ है। शिकारी जानवर सिखाए हुवे हों या बिग़ैर सिखाए हुए उन को ख़रीदना और बेचना जाइज़ है मगर येह ज़रूरी है कि वोह सिखाए जाने के क़ाबिल हों। कटखना कुत्ता जो सिखाए जाने के क़ाबिल नहीं है उस को ख़रीदना-बेचना जाइज़ नहीं।

(ردالمحتار، کتاب البیوع،مطلب فی بیع دودۃ القرمز،ج۷،ص ۲٦۱)

मस्अला :- जानवर या खेती या मकान की ह़िफ़ाज़त के लिये या शिकार के लिये कुत्ता पालना जाइज़ है और इन मक़ासिद के लिये न हो तो कुत्ता पालना जाइज़ नहीं और जिन सूरतों में कुत्ता पालना जाइज़ है उन सूरतों में भी मकान के अन्दर कुत्तों को न रखे लेकिन अगर चोर या दुश्मन का ख़ौफ़ हो तो मकान के अन्दर भी रख सकता है।

(الدرالمختارمع ردالمحتار، کتاب البیوع،باب المتفرقات،ج۷،ص ۵۰٦۔۵۰۷)

मस्अला :- मछली के सिवा पानी के तमाम जानवर मेंडक, कछवा, केकड़ा वग़ैरा और ह़शरातुल अर्द़, चूहा, सांप, गिरगिट, गोह, बिच्छू, च्यूंटी वग़ैरा को ख़रीदना और बेचना जाइज़ नहीं।

(درمختار، کتاب البیوع ،باب المتفرقات،ج۷،ص ۵۰۷)

बन्दर को खेल और मज़ाक़ के लिये ख़रीदना मन्अ़ है और इस को नचाना और इस के साथ खेल करना ह़राम है।

मस्अला :- गेहूं वग़ैरा अनाजों में धूल और कंकरी वग़ैरा मिला कर बेचना नाजाइज़ है। (बहारे शरीअ़त, ह़ि. 16, स. 105)

इसी त़रह़ दूध में पानी मिला कर बेचना भी नाजाइज़ है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3 ह़ि. 16, स. 106)

मस्अला :- तालाब के अन्दर की मछलियों को बेचने का जो दस्तूर है येह बैअ़ नाजाइज़ है तालाब के अन्दर जितनी मछलियां होती हैं जब तक वोह शिकार कर के पकड़ न ली जाएं तब तक उन का कोई मालिक नहीं। शिकार कर के जो उन मछलियों को पकड़ ले वोही उन का मालिक बन जाता है जब येह बात समझ में आ गई तो अब समझो कि जिस शख़्स का तालाब है जब वोह उन मछलियों का मालिक ही नहीं तो उस का उन मछिलयों को बेचना कैसे दुरुस्त होगा ? हां अगर तालाब का मालिक खुद उन मछलियों को पकड़ कर बेचा करे तो येह दुरुस्त है अगर किसी दूसरे शख़्स से पकड़वाएगा तो पकड़ने वाला उन मछलियों का मालिक हो जाएगा। तालाब के मालिक का उन मछलियों में कोई ह़क़ नहीं होगा। तालाब के मालिक को येह भी ह़क़ नहीं है कि मछलियों के पकड़ने से लोगों को मन्अ़ करे। (ردالمحتار، کتاب البیوع، مطلب: شرائط البیع---الخ، ج۷، ص۱٤)

मस्अला :- किसी की ज़मीन में खुद ब खुद घास उगी न उस ने लगाया न उस ने पानी दे कर सींचा तो येह घास भी किसी की मिल्क नहीं है जो चाहे काट ले जाए, ज़मीन के मालिक के लिये न इस घास को बेचना जाइज़ है न किसी को मन्अ़ करना दुरुस्त है। हां अलबत्ता अगर ज़मीन के मालिक ने पानी दे कर सींचा हो और मेह़नत की हो और ह़िफ़ाज़त व रखवाली की हो तो इस सूरत में वोह घास ज़मीन के मालिक की हो जाएगी अब उस को

बेचना भी जाइज़ है और लोगों को उस घास के काटने से मन्अ़ करना भी दुरुस्त है।

मस्अला :- काफ़िर ने अगर कुरआने मजीद ख़रीद लिया तो क़ाज़ी को चाहिये कि उस को इस बात पर मजबूर करे कि वोह किसी मुसलमान के हाथ फ़रोख़्त कर दे। (बहारे शरीअ़त, जि. 11, स. 186)

मस्अला :- ताड़ी, सेंधी, शराब की तिजारत ह़राम है रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने शराब पर और इस के पीने वाले पर और इस के पिलाने वाले पर और इस के ख़रीदने वाले पर इस के बेचने वाले पर और इस को निचोड़ने वाले पर और इस को छानने वाले पर और इस को उठाने वाले पर और येह जिस के ऊपर लादी गई हो ला'नत फ़रमाई है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 11, स. 77)

मस्अला :- लोहे, पीतल वग़ैरा की अंगूठी जिस का पहनना मर्द और औ़रत दोनों के लिये नाजाइज़ है इस का बेचना मकरूह है।

(الفتاوی الھندیة،کتاب الکراھیة،الباب الخامس و العشرون فی البیع۔۔۔الخ،ج٥،ص٣٦٥)

इसी त़रह़ अफ़्यून वग़ैरा का खाना जाइज़ नहीं ऐसों के हाथ बेचना जो इन को नशे के तौ़र पर खाते हैं नाजाइज़ है क्यूंकि येह गुनाह पर इआ़नत है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि. 16, स. 106)

मस्अला :- जिस सौदे के मुतअ़ल्लिक़ येह मा'लूम है कि येह चोरी या ग़सब का माल है उस को ख़रीदना जाइज़ नहीं।

मस्अला :- रन्डियों को ह़रामकारी या गाने, नाचने की उजरत में जो सामान मिला है वोह भी माले ख़बीष और ह़राम है इस को भी ख़रीदना जाइज़ नहीं।

किसी ने कोई चीज़ बे देखे हुए ख़रीद ली तो येह बैअ़ जाइज़ है लेकिन जब उस सामान को देखे तो उस को इख़्तियार है पसन्द हो तो रखे और अगर नापसन्द हो तो फैर दे अगर्चे उस में कोई ऐ़ब न हो इस को शरीअ़त में "ख़यारे रुइय्यत" कहते हैं।

(فتح القدیر،کتاب البیوع،باب خیار الرؤیة،ج٦،ص٣٠٩)

मस्अला :- जब कोई सौदा बेचे तो वाजिब है कि इस में अगर कुछ ऐ़ब व ख़राबी हो तो ख़रीदार को बता दे ऐ़ब को छुपा कर और ख़रीदार को धोका दे कर बेचना ह़राम है।

(الدرالمختار، کتاب البیوع،مطلب فی مسئلة المصراة،ج۷،ص۲۲۹)

मस्अला :- कोई चीज़ ख़रीदी और ख़रीदने के बा'द देखा कि उस में ऐ़ब है मषलन थान को अन्दर से चूहों ने कतर डाला है या अन्दर से कटा हुवा है तो ख़रीदार को इख़्तियार है कि चाहे ले ले चाहे वापस कर दे इस को शरीअ़त में "ख़यारे ऐ़ब" कहते हैं।

(فتح القدیر، کتاب البیوع،باب خیارا لعیب،ج٦،ص٣٢٧)

मस्अला :- जानवर के थन में जो दूध भरा है दोहने से पहले इस को बेचना और ख़रीदना जाइज़ नहीं पहले दूध दोह ले तब बेचे इसी त़रह़ भेड़, दुम्बा वग़ैरा के बाल जब तक काट न ले इस को बेचना और ख़रीदना जाइज़ नहीं। (درمختار، کتاب البیوع،مطلب فی حکم ایجار البرك للاصطیاد،ج۷،ص۲٥۲)

मस्अला :- गोबर को बेचना और ख़रीदना जाइज़ है लेकिन आदमी के पाख़ाने को बेचना और ख़रीदना जाइज़ नहीं। हां अलबत्ता अगर आदमी के पाख़ाने में राख और मिट्टी इस क़दर मिल जाए कि मिट्टी और राख ग़ालिब हो जाए और पाख़ाना खाद बन जाए तो इस को बेचना और ख़रीदना जाइज़ है। (الدرالمختار، کتاب الحظر و الاباحة،فصل فی البیع،ج۹،ص٦٣٤)

मस्अला :- एह़तिकार (ज़ख़ीरा अन्दोज़ी) ममनूअ़ है एह़तिकार के मा'ना येह है कि खाने की चीज़ों को इस लिये छुपा कर रख लेना कि जब इस का भाव ज़ियादा गिरां हो जाए तो बेचेगा ऐसा करने से गिरानी बढ़ जाती है और क़ह़त़ का अन्देशा बढ़ जाता है और मख़्लूक़े ख़ुदा को ज़रर और नुक़्सान पहुंचता है इस लिये शरीअ़त ने इस से मन्अ़ किया है और इस के बारे में बहुत सी वई़द की ह़दीषें आई हैं। एक ह़दीष में है कि जो चालीस दिन तक एह़तिकार (ज़ख़ीरा अन्दोज़ी) करेगा अल्लाह तआ़ला

उस को जुज़ाम (कोढ़) और मुफ़्लिसी में मुब्तला करेगा और एक दूसरी ह़दीष में आया है कि उस पर **अल्लाह** और फ़िरिश्तों और तमाम आदमियों की ला'नत है। **अल्लाह** तआ़ला न उस की नफ़्ली इ़बादतों को क़बूल फ़रमाएगा न फ़र्ज़ इ़बादतों को । (درمختار ج۵ ص۲۴۶) एह़तिकार (ज़ख़ीरा अन्दोज़ी) इन्सान के खाने की चीज़ों में भी होता है मषलन अनाज, शकर वग़ैरा और जानवरों के चारे में भी होता है जैसे घास भूसा।

(الدرالمختار مع ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحة، فصل فی البیع، ج۹، ص۶۵۶-۶۵۷ /

سنن ابن ماجه، کتاب التجارات، باب الحکرة والجلب، رقم۲۱۵۵، ج۳، ص۱۵)

मस्अला :- एह़तिकार वहीं कहलाएगा जब कि ग़ल्ले का रोकना वहां वालों के लिये मुज़िर हो या'नी इस की वजह से गिरानी हो जाए या येह सूरत हो कि सारा ग़ल्ला उसी के क़ब्ज़े में है उस के रोकने से क़ह़त़ का अन्देशा है दूसरी जगह ग़ल्ला दस्तयाब न होगा। (ہدایہ ج۴ ص۴۵۴)

और अगर किसी ने फ़स्ल पर ग़ल्ला इस निय्यत से ख़रीद कर रख लिया कि जब ग़ल्ले का भाव कुछ गिरां होगा तो बेच कर कुछ नफ़्अ़ उठाऊंगा तो येह न एह़तिकार है न ममनूअ़ है।

(الدرالمختار مع ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحة، فصل فی البیع، ج۹، ص۶۵۷، ۶۵۸)

मस्अला :- एह़तिकार करने वालों को क़ाज़ी येह हुक्म देगा कि अपने घरवालों के ख़र्च के लाइक़ ग़ल्ला रख ले और बाक़ी फ़रोख़्त कर डाले अगर वोह लोग क़ाज़ी के हुक्म के ख़िलाफ़ करें या'नी ज़ाइद ग़ल्ला न बेचें तो क़ाज़ी उन लोगों को मुनासिब सज़ा दे और उन लोगों की ह़ाजत से ज़ियादा जितना ग़ल्ला होगा क़ाज़ी खुद उस को फ़रोख़्त कर देगा क्यूंकि लोगों को परेशानी और ज़रर आ़म से बचाने की येही सूरत है।

(الدرالمختار مع ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحة، فصل فی البیع، ج۹، ص۶۵۷، ۶۵۸)

मस्अला :– बादशाह को रिआ़या की हलाकत का अन्देशा हो तो ज़ख़ीरा अन्दोज़ी करने वालों से ग़ल्ला ले कर रिआ़या पर तक़्सीम कर दे फिर जब उन लोगों के पास ग़ल्ला हो जाए तो जितना जितना लिया है वापस दे दें। (الدرالمختار، کتاب الحظر والاباحة،فصل فی البیع،ج۹،ص٦٥٨)

मस्अला :– ताजिरों ने अगर चीज़ों की क़ीमत बहुत ज़ियादा बढ़ा दी है और बिग़ैर कन्ट्रोल के काम चलता नज़र न आता हो तो ह़ाकिम चीज़ो की क़ीमतें मुक़र्रर कर के भाव पर कन्ट्रोल कर सकता है और कन्ट्रोल की हुई क़ीमत पर जो बैअ़ होगी वोह जाइज़ व दुरुस्त होगी।

(نصب الرایة،کتاب الکراھیة،فصل فی البیع،ج٤،ص ٥٧١)

नशा वाली चीज़ों का बयान

हर क़िस्म की शराब ह़राम और नजिस है, ताड़ी का भी येही हुक्म है दवा के लिये भी इस का पीना दुरुस्त नहीं बल्कि जिन दवाओं में ताड़ी या शराब पड़ी हो इस का खाना और बदन में लगाना जाइज़ नहीं।

(الد رمختار، کتاب الاشربة،ج ١٠،ص ٣٤)

मस्अला :– ताड़ी शराब के इ़लावा जितनी नशा लाने वाली चीज़ें हैं जैसे अफ़्यून, भंग, जाइफ़ल वग़ैरा इन का हुक्म येह है कि दवा के लिये इतनी मिक़्दार में इन का खा लेना दुरुस्त है कि बिल्कुल नशा न आए और इस दवा का बदन में लगाना भी जाइज़ है जिस में येह चीज़ें पड़ी हों लेकिन इन को इतनी मिक़्दार में खाना कि नशा हो जाए ह़राम है।

(الد رالمختارمع ردالمحتار، کتاب الاشربة،ج ١٠،ص ٤٣)

मस्अला :– बा'ज़ जाहिल औ़रतें बच्चों को अफ़्यून पिला कर सुला देती हैं कि वोह नशे में पड़े सोते रहें रोएं धोएं नहीं येह ह़राम है और इस का गुनाह औ़रतों के सर पर है। (बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि. 17, स. 12)

बिला इजाज़त किसी की कोई चीज़ ले लेना

मस्अला :- किसी की कोई चीज़ ज़बरदस्ती ले लेना या पीठ पीछे उस की इजाज़त के बिग़ैर ले लेना बहुत बड़ा गुनाह है बा'ज़ औ़रतें अपने शोहर या और किसी रिश्तेदार की चीज़ बिला इजाज़त ले लेती हैं इसी त़रह़ बा'ज़ मर्द अपने दोस्तों और साथियों या अपनी औ़रतों की चीजें बिला इजाज़त ले लिया करते हैं याद रखो कि येह जाइज़ और दुरुस्त नहीं बल्कि गुनाह है अगर किसी की कोई चीज़ बिला इजाज़त ले ली है तो उस का हुक्म येह है कि अगर वोह चीज़ अभी मौजूद हो तो बि ऐ़निही उस चीज़ को वापस कर देना ज़रूरी है और अगर ख़र्च या हलाक हो गई तो मस्अला येह है कि अगर वोह ऐसी चीज़ है कि इस की मिष्ल बाज़ार में मिल सकती है तो जैसी चीज़ ली है वैसी ही ख़रीद कर दे देना वाजिब है और अगर कोई ऐसी चीज़ ले कर ज़ाएअ़ कर दी है कि इस की मिष्ल मिलना मुश्किल है तो इस की क़ीमत देना वाजिब है या येह कि जिस की चीज़ थी उस से मुआ़फ़ करा ले और मुआ़फ़ कर दे तब छुटकारा मिल सकता है।

तस्वीरों का बयान

ह़ज़रते रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि नहीं दाख़िल होते फ़िरिश्ते (रह़मत के) जिस घर में कुत्ता या तस्वीर हो।

(صحیح مسلم، کتاب اللباس و الزینۃ،باب تحریم تصویر صورۃ الحیوان ـــالخ،رقم ۲۱۰۶،ص۱۱٦٥)

और दूसरी ह़दीष में येह भी फ़रमाया कि सब से ज़ियादा इ़ताब **अल्लाह** के नज़दीक तस्वीर बनाने वालों को होगा।

(صحیح مسلم، کتاب اللباس و الزینۃ،باب تحریم تصویر صورۃ الحیوان،رقم ۲۱۰۹،ص۱۱٦۹)

एक ह़दीष में येह भी है कि तस्वीर बनाने वाले पर ख़ुदा की ला'नत है।

(صحیح البخاری، کتاب الطلاق،باب مہر البغی والنکاح الفاسد،رقم ٥۳٤۷،ج۳،ص٥۰۹)

मस्अला :- जानदार चीज़ों की तस्वीर बनाना, बनवाना, इस का रखना, इस का बेचना, ख़रीदना ह़राम है। हां अलबत्ता ग़ैर जानदार चीज़ों जैसे दरख़्तों, मकानों वग़ैरा की तस्वीर बनाने और इन के रखने, इन की ख़रीदो फ़रोख़्त में कोई ह़रज नहीं है। ऊपर की ह़दीषों में जिन तस्वीरों की मुमानअ़त है इन से मुराद जानदार की तस्वीरें हैं।

मस्अला :- कुछ लोग मकानों में ज़ीनत के लिये इन्सानों और जानवरों की तस्वीरें या मुर्तियां रखते हैं येह ह़राम है कुछ लोग मिट्टी या प्लास्टिक या धातों की मुर्तियां बच्चों के खेलने के लिये ख़रीदते हैं येह सब ह़राम व ममनूअ़ हैं अपने बच्चों को इस से रोकना चाहिये और ऐसे खिलौनों और गुडियों को तोड़ फोड़ देना या जला देना चाहिये।

मस्अला :- जानवरों और खेती और मकान की ह़िफ़ाज़त और शिकार के लिये कुत्ता पालना जाइज़ है इन मक़्सदों के इ़लावा कुत्ता पालना जाइज़ नहीं। (बहारे शरीअ़त, ह़ि. 11, स. 186)

बा'ज़ बच्चे कुत्तों के बच्चों को शोक़िया पालते और घरों में लाते हैं मां बाप को लाज़िम है कि बच्चों को इस से रोकें और अगर वोह न मानें तो सख़्ती करें। ह़दीष में जिन कुत्तों के घर में रहने से रह़मत के फ़िरिश्तों के न आने का ज़िक्र है इन कुत्तों से मुराद वोही कुत्ते हैं जिन को पालना जाइज़ नहीं है। (बहारे शरीअ़त, ह़ि. 11, स. 186)

बेवा औ़रतों का निकाह़

मुसलमानों में हिन्दूओं के मेल जोल से जहां बहुत सी बेहुदा रस्मों का रवाज और चलन हो गया है इन में से एक रस्म येह भी है कि बेवा औ़रत के निकाह़ को बुरा और आ़र समझते हैं और ख़ास कर अपने को शरीफ़ कहलाने वाले मुसलमान इस बला में बहुत ज़ियादा गिरिफ़्तार हैं ह़ालांकि शरअ़न और अ़क़्लन जैसा पहला निकाह़ वैसा दूसरा इन दोनों में फ़र्क़ समझना इन्तिहाई ह़माक़त और बे वुक़ूफ़ी बल्कि शर्मनाक जहालत

है। औ़रतों की ऐसी बुरी आ़दत है कि ख़ुद दूसरा निकाह़ करना या दूसरों को इस की रग़्बत दिलाना तो दर किनार अगर कोई अल्लाह की बन्दी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म को अपने सर और आंखों पर ले कर दूसरा निकाह़ कर लेती है तो वोह उ़म्र भर ह़क़ारत की नज़्र से देखी जाती है और औ़रतें बात बात पर उस को त़ा'ना दे कर ज़लील करती हैं। याद रखो कि दूसरा निकाह़ करने वाली औ़रतों को ह़क़ीर व ज़लील समझना और निकाहे़ षानी को बुरा जानना येह बहुत बड़ा गुनाह है बल्कि इस को ऐ़ब समझने में कुफ़्र का ख़ौफ़ है क्यूंकि शरीअ़त के किसी हुक्म को ऐ़ब समझना और उस के करने वाले को ज़लील जानना कुफ़्र है। कौन नहीं जानता कि हमारे रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की जितनी बीबियां थीं ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के सिवा कोई कंवारी न थीं एक एक दो दो निकाह़ उन के पहले हो चुके थे तो क्या نَعُوْذُ بِاللّٰہ कोई इन उम्मत की माओं को ज़लील या बुरा कह सकता है? तौबा نَعُوْذُ بِاللّٰہ

बहर ह़ाल याद रखो कि बेवा औ़रतों से निकाह़ येह रसूले ख़ुदा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत है और ह़दीष शरीफ़ में है कि जो कोई किसी छोड़ी हुई और मुर्दा सुन्नत को ज़िन्दा और जारी करे उस को सो शहीदों का षवाब मिलेगा लिहाज़ा मुसलमान मर्दों और औ़रतों पर वाजिब है कि इस बेहूदा रस्म को दुन्या से मिटा दें और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुश्नूदी के लिये बेवा औ़रतों का निकाह़ ज़रूर कर दें और इन बेचारी दुख्यारी अल्लाह की बन्दियों को बे कसी और तबाही व बरबादी से बचा कर एक सो शहीदों का षवाब ह़ासिल करें और बेवा औ़रतों को भी लाज़िम है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म को अपने सर और आंखों पर रखते हुए बिग़ैर किसी शर्म और आ़र के ख़ुशी ख़ुशी दूसरा निकाह़ कर लें और सो शहीदों के षवाब की ह़क़दार बन जाएं। अल्लाह तआ़ला ने क़ुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया कि

وَ اَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ وَ الصّٰلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَ اِمَائِكُمْ.(پ ۱۸،النور:۳۲)

और निकाह़ कर दो अपनों में उन का जो बे निकाह़ हों और अपने लाइक़ ग़ुलामों और कनीज़ों का।

और हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि

من تمسك بسنّتي عند فساد امّتي فلهٗ اجر مائة شهيدٍ۔

(الترغيب والترهيب،الترغيب فى اتباع الكتاب والسنة،رقم ٥،ج١،ص٤١)

या'नी मेरी उम्मत में फ़साद फैल जाने के वक़्त जो शख़्स मज़बूत़ी के साथ मेरी सुन्नत पर अ़मल करे उस को एक सो शहीदों का षवाब मिलेगा।

इस ह़दीष को इमाम बयहक़ी عَلَيْهِ رَحْمَة ने भी "किताबुज़्ज़ोहद" में ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत किया है।

बीमारी और इलाज का बयान

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने कोई बीमारी नहीं उतारी मगर उस के लिये शिफ़ा भी उतारी।

(صحيح البخارى،كتاب الطب، باب ما انزل الله ۔۔۔الخ،رقم ٥٦٧٨،ج٤،ص١٦)

अबू दावूद व तिरमिज़ी व इब्ने माजा ने ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत की, कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़बीष दवाओं से मुमानअ़त फ़रमाई।

(جامع الترمذى،كتاب الطب،باب ماجاء فيمن قتل۔۔۔الخ،رقم ٢٠٥٢،ج٤،ص٧)

और रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने नज़रे बद से झाड़ फूंक करने की इजाज़त दी है। (صحيح البخارى كتاب الطب،باب رقية العين،رقم ٥٧٣٨،ج٤،ص٣١)

बीमार पुर्सी :- बीमार का ह़ाल पूछना बड़े षवाब का काम है। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जो मुसलमान किसी

मुसलमान की बीमार पुर्सी के लिये सुब्ह़ को जाए तो शाम तक सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत करते हैं और शाम को जाए तो सुब्ह़ तक सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उस के लिये मग़फ़िरत की दुआ़ मांगते हैं।

(سنن ابو داود، كتاب الجنائز، باب فی فضل العبادة، رقم ٣٠٩٨، ج٣، ص٢٤٨)

एक दूसरी ह़दीष में है कि जो शख़्स किसी मुसलमान की बीमार पुर्सी के लिये जाता है तो आस्मान से एक ए'लान करने वाला फ़िरिश्ता येह निदा करता है कि तू अच्छा है और तेरा चलना अच्छा है और जन्नत की एक मंज़िल को तू ने अपना ठिकाना बना लिया।

(سنن ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ماجاء فی ثواب ـــ الخ، رقم ١٤٤٣، ج٢، ص١٩٢)

मस्अला :- मरीज़ की बीमार पुर्सी के लिये जाना सुन्नत और षवाब है लेकिन अगर मा'लूम हो कि बीमार पुर्सी को जाएगा तो मरीज़ पर गिरां गुज़रेगा तो ऐसी ह़ालत में बीमार पुर्सी को न जाए।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3, हि़. 16, स. 125)

मस्अला :- दवा व इलाज करना जाइज़ है जब कि येह ए'तिक़ाद हो कि दर ह़क़ीक़त शिफ़ा देने वाला **अल्लाह** तआ़ला ही है और इस ने दवाओं को मरज़ के ज़ाइल करने का सबब बना दिया है अगर कोई दवा ही को शिफ़ा देने वाला समझता है तो इस ए'तिक़ाद के साथ दवा-इलाज करना जाइज़ नहीं। (الفتاوى الهندية، كتاب الكراهية، الباب الثامن عشر فی التداوی ـــ الخ، ج٥، ص٣٥٤)

मस्अला :- ह़राम चीज़ों को दवा के त़ौर पर भी इस्ति'माल करना जाइज़ नहीं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि जो चीज़ें ह़राम हैं इन में **अल्लाह** तआ़ला ने शिफ़ा नहीं रखी है।

(سنن ابو داود، كتاب الطب، باب فی الادوية المكروهة، رقم ٣٨٧٤، ج٤، ص١١)

अंग्रेज़ी दवाएं ब कषरत ऐसी हैं जिन में स्प्रिट आल्कोह़ोल और शराब की आमेज़िश होती है ऐसी दवाएं हरगिज़ इस्ति'माल न की जाएं।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3, हि़. 16, स. 126)

मस्अला :- शराब से ख़ारिजी इलाज भी नाजाइज़ है जैसे ज़ख़्म में शराब लगाई या किसी जानवर के ज़ख़्म पर शराब का फाया रखा या शराब मिले हुए मरहम या लेप को बदन पर लगाया या बच्चे के इलाज में शराब का इस्ति'माल किया इन सब सूरतों में वोह गुनाहगार हुवा जिस ने शराब को इस्ति'माल किया या कराया।

(الفتاوی الھندیۃ،کتاب الکراھیۃ،الباب الثامن عشر فی التداوی۔۔۔الخ،ج٥،ص٣٥٥)

मस्अला :- कोई शख़्स बीमार हुवा और दवा-इलाज नहीं किया और मर गया तो गुनाहगार नहीं हुवा।

(الفتاوی الھندیۃ،کتاب الکراھیۃ،الباب الثامن عشر فی التداوی۔۔۔الخ،ج٥،ص٣٥٥)

मत़लब येह है कि दवा-इलाज करना फ़र्ज़ या वाजिब नहीं है कि अगर दवा न करे और मर जाए तो गुनाहगार हो हां अलबत्ता भूक प्यास का ग़लबा हो और खाना पानी मौजूद होते हुए कुछ खाया पिया नहीं और भूक प्यास से मर गया तो ज़रूर गुनाहगार होगा क्यूंकि यहां यक़ीनन मा'लूम है कि खाने पीने से इस की भूक प्यास चली जाती और भूक प्यास की वजह से इस की मौत न होती।

(الفتاوی الھندیۃ،کتاب الکراھیۃ،الباب الثامن عشر فی التداوی۔۔۔الخ،ج٥،ص٣٥٥)

मस्अला :- हुक़ना करने या'नी अ़मल देने में कोई ह़रज नहीं जब की हुक़ना ऐसी चीज़ का न हो जो ह़राम है मषलन शराब।

(الدر المختار،کتاب الحظر والاباحۃ،فصل فی البیع،ج٩،ص٦٤٠۔٦٤١)

मस्अला :- बा'ज़ अमराज़ में मरीज़ को बे होश करना पड़ता है ताकि गोश्त काटा जा सके या हड्डी को काटा या जोड़ा जा सके या ज़ख़्म में टांके लगाए जाएं इस ज़रूरत में दवाओं के ज़रीए मरीज़ को बेहोश करना जाइज़ है। (बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि. 16, स. 127)

मस्अला :- हुक़ना लगाने या पेशाब उतारने के लिये सलाई चढ़ाने में उस जगह की त़रफ़ देखने और छूने की नोबत आती है ब वजहे ज़रूरत ऐसा करना जाइज़ है। (تبیین الحقائق،کتاب الکراھیۃ،باب النظر والمس،ج٧،ص٤٠)

मस्अला :- इस्क़ाते ह़म्ल के लिये दवा इस्ति'माल करना या दवाई से ह़म्ल गिरवाना मन्अ़ है। बच्चे की सूरत बन गई हो या न बनी हो दोनों सूरतों में ह़म्ल गिराना ममनूअ़ है लेकिन हां अगर कोई उ़ज़्र हो मषलन बच्चा पैदा होने में औ़रत की जान का ख़त़रा हो या औ़रत के शीरख़्वार बच्चा है और ह़म्ल से दूध ख़ुश्क हो जाएगा और कोई दूध पिलाने वाली औ़रत मिल नहीं सकती और बाप के पास इतनी वुस्अ़त नहीं कि वोह बच्चे के लिये दूध का इन्तिज़ाम कर सके और बच्चे के हलाक हो जाने का अन्देशा हो तो इन सूरतों में मजबूरी की वजह से ह़म्ल गिराया जा सकता है मगर शर्त़ येह है कि बच्चे के आ'ज़ा न बने हों और इस की मुद्दत एक सो बीस दिन है या'नी अगर ह़म्ल एक सो बीस दिन का हो चुका हो और बच्चे के आ'ज़ा बन चुके हों तो ऐसी सूरत में ह़म्ल गिराने की इजाज़त नहीं है।

(الفتاوی الهندية، كتاب الكراهية،الباب الثامن عشر فی التداوی۔۔۔الخ،ج٥،ص٣٥٦)

मस्अला :- बीमारी में नुक़्सान देने वाली चीज़ों से परहेज़ करना सुन्नत है। बद परहेज़ी नहीं करनी चाहिये।

मस्अला :- मरीज़ को खिलाने पिलाने में ज़बरदस्ती नहीं करनी चाहिये। ह़दीष में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि मरीज़ों को खिलाने पर मजबूर न करो क्यूंकि मरीज़ों को **अल्लाह** तआ़ला खिलाता पिलाता है। (سنن ابن ماجه، كتاب الطب،باب لاتكرهوا المريض۔۔۔الخ،رقم٣٤٤٤،ج٤،ص٩٢)

और येह भी फ़रमाने नबवी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم है कि जब मरीज़ खाने की ख़्वाहिश करे तो उसे खिला दो।

(سنن ابن ماجه، كتاب الطب،باب المريض يشتهى الشئى، رقم ٣٤٤٠،ج٤،ص٩٠)

येह हुक्म उस वक़्त है कि खाना मरीज़ को मुज़िर न हो और खाने की इश्तिहा सादिक़ हो।

मस्अला :- जिन बीमारियों से दूसरों को नफ़रत होती है जैसे ख़ारिश कोढ़ वग़ैरा ऐसे मरीज़ों को चाहिये कि वोह ख़ुद सब से अलग अलग रहें ताकि किसी को तक्लीफ़ न हो।

क़ुरआन की तिलावत का षवाब

कुरआने मजीद पढ़ने और पढ़ाने के फ़ज़ाइल और अज्रो षवाब बहुत ज़ियादा हैं इस के मुतअ़ल्लिक़ चन्द ह़दीषों को पढ़ लो और इन पर अ़मल कर के अज्रो षवाब की दौलतों से माला माल हो जाओ।

ह़दीष :- रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि तुम में वोह बेहतरीन शख़्स है जो कुरआने मजीद पढ़े और पढ़ाए।

(صحیح البخاری، کتاب فضائل القرآن،باب خیر کم من تعلم ۔۔۔الخ،رقم ۵۰۲۷،ج۳،ص ٤١٠)

ह़दीष :- हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जो कुरआन पढ़ने में माहिर है वोह "किरामन कातिबीन" के साथ है और जो शख़्स रुक रुक कर कुरआन पढ़ता है और वोह इस पर शाक़ है या'नी उस की ज़बान आसानी से नहीं चलती तक्लीफ़ के साथ अल्फ़ाज़ अदा होते हैं उस के लिये दो गुना षवाब है।

(جامع الترمذی،کتاب فضائل القرآن،باب ماجاء فی فضل قاری ء القرآن،رقم٢٩١٣،ج٤،ص٤١٤)

ह़दीष :- हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस के सीने में कुछ भी कुरआन नहीं है वोह वीराना और उजाड़ मकान के मिष्ल है।

(جامع الترمذی،کتاب فضائل القرآن،باب (ت:١٨) رقم ٢٩٢٢،ج٤،ص٤١٩)

ह़दीष :- रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स कुरआन का एक ह़र्फ़ पढ़ेगा उस को एक ऐसी नेकी मिलेगी जो दस नेकियों के बराबर होगी, मैं येह नहीं कहता कि الٓمٓ एक ह़र्फ़ है बल्कि

الف एक ह़र्फ़ है और لام दुसरा ह़र्फ़ है और میم तीसरा ह़र्फ़ है मत़लब येह है कि जिस ने सिर्फ़ الم पढ़ लिया तो उस को तीस नेकियां मिलेंगी।

(جامع الترمذی،کتاب فضائل القرآن،باب ماجاء فی من قرء ۔۔۔الخ،رقم۲۹۱۹،ج۴،ص۴۱۷)

ह़दीष :- जिस ने कु़रआने मजीद पढ़ा और इस को याद कर लिया और उस ने कु़रआन के ह़लाल किये हुए को ह़लाल समझा और ह़राम किये हुए को ह़राम जाना तो वोह अपने घर वालों में से ऐसे दस आदमियों की शफ़ाअ़त करेगा जिन के लिये जहन्नम वाजिब हो चुका था।

(جامع الترمذی،کتاب فضائل القرآن،باب ماجاء فی ۔۔۔الخ،رقم۲۹۱۴،ج۴،ص۴۱۴)

ह़दीष :- हु़ज़ूरे अकरम صلّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلّم ने ह़ज़रते उबय्य बिन का'ब رضی اللہ تعالٰی عنہ से दरयाफ़्त फ़रमाया कि नमाज़ में तुम ने कौन सी सूरह पढ़ी। उन्हों ने सूरए फ़ातिह़ा (الحمدللّٰہ رب العلمین) पढ़ कर सुनाई तो आप ने इरशाद फ़रमाया कि मुझे उस ज़ात की क़सम है जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है कि न इस के मिष्ल तौरैत में कोई सूरह उतारी गई न इन्जील में न ज़बूर में, येह सूरए सब्अ़ मषानी है और कु़रआने अ़ज़ीम है जो मुझे खु़दा की त़रफ़ से अ़त़ा किया गया है।

(جامع الترمذی،کتاب فضائل القرآن،باب ماجاء فی فضل فاتحۃ الکتاب،رقم۲۸۸۴، ج۴،ص۴۰۰)

ह़दीष :- हु़ज़ूरे अक़्दस صلّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلّم ने फ़रमाया कि तुम लोग अपने घरों को क़ब्रिस्तान न बनाओ शैत़ान उस घर में से भागता है जिस में सूरए बक़रह पढ़ी जाती है।

(جامع الترمذی،کتاب فضائل القرآن،باب ماجاء فی فضل سورۃ البقرۃ۔۔۔الخ، رقم۲۸۸۶، ج۴،ص۴۰۲)

और येह भी इरशाद फ़रमाया कि तुम लोग दो चमकदार सूरतें सूरए बक़रह और सूरए आले इमरान को पढ़ो क्यूंकि येह दोनों क़ियामत के दिन इस त़रह़ आएंगी गोया दो अब्र हैं या दो साइबान हैं या सफ़ बस्ता परन्दों की दो जमाअ़तें। वोह दोनों अपने पढ़ने वालों की त़रफ़ से झगड़ा

करेंगी या'नी शफ़ाअ़त करेंगी, सूरए बक़रह को पढ़ा करो कि इस का लेना बरकत है और इस को छोड़ना ह़सरत है और अहले बात़िल इस सूरह की ताब नहीं ला सकते। (جامع الترمذی، کتاب فضائل القرآن،باب ماجاء فی فضل سورۃ آل عمران، رقم۲۸۹۲، ج٤،ص٤٠٤)

ह़दीष :– जो शख़्स सूरए कह्फ़ जुमुआ़ के दिन पढ़ेगा उस के लिये दोनों जुमुओं के दरमियान नूर रोशन होगा।

(مشکوۃ المصابیح، کتاب فضائل القران،الفصل الثالث،رقم۲۱۷۵، ج۱،ص۵۹٦)

ह़दीष :– जो शख़्स **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के लिये सूरए यासीन पढ़ेगा उस के अगले गुनाहों की मग़्फ़िरत हो जाएगी लिहाज़ा इस को अपने मुर्दों के पास पढ़ा करो।

(شعب الایمان،باب فی تعظیم القرآن،فصل فی فضائل السور۔۔۔الخ،رقم ۲٤۵۸، ج۲،ص٤۷۹)

और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह भी फ़रमाया कि हर चीज़ के लिये दिल है और क़ुरआन का दिल यासीन है जिस ने सूरए यासीन पढ़ी दस मरतबा क़ुरआन पढ़ना **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये लिखेगा।

(جامع الترمذی، کتاب فضائل القرآن،باب ماجاء فی فضل سورۃ یٰسین، رقم۲۸۹٦، ج٤،ص٤٠٦)

ह़दीष :– रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि क़ुरआन में तीस आयतों की एक सूरह है वोह आदमी के लिये शफ़ाअ़त करेगी यहां तक कि इस की मग़्फ़िरत हो जाएगी वोह सूरए मुल्क है।

(جامع الترمذی، کتاب فضائل القرآن،باب ماجاء فی فضل سورۃ الملک، رقم۲۹٠٠، ج٤،ص٤٠٨)

ह़दीष :– हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि قل هو الله احد तिहाई क़ुरआन के बराबर और قل يايها الكفرون चौथाई क़ुरआन के बराबर है।

(جامع الترمذی، کتاب فضائل القرآن،باب ماجاء فی فضل سورۃ الاخلاص۔۔۔الخ، رقم۲۹٠۳، ج٤،ص٤٠۹)

और येह भी इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स सोते वक़्त बिछौने पर दाहिनी करवट लैट कर सो मरतबा قل هو الله احد पढ़े क़ियामत के दिन **अल्लाह** तआ़ला उस से फ़रमाएगा कि ऐ मेरे बन्दे ! अपनी दाहिनी जानिब जन्नत में चला जा। (جامع الترمذی، کتاب فضائل القرآن،باب ماجاء فی فضل سورۃ الاخلاص، رقم۲۹٠۷، ج٤،ص٤١١)

कु़रआने मजीद और किताबों के आदाब

मस्अला :- कुरआने मजीद पर सोने चांदी का पानी चढ़ाना और क़ीमती गि़लाफ़ चढ़ाना जाइज़ है कि इस से अ़वाम की नज़रों में कुरआने मजीद की अ़ज़्मत पैदा होती है।

(الفتاوی الهندية، كتاب الكراهية، الباب الخامس فی آداب المسجد۔۔۔الخ، ج٥، ص٣٢٣)

मस्अला :- कुरआने मजीद बहुत छोटे साइज़ का छपवाना जैसे कि लोग ता'वीज़ी कुरआन छपवाते हैं मकरूह है कि इस से कुरआने मजीद की अ़ज़्मत अ़वाम की नज़रों में कम होती है।

(الفتاوی الهندية، كتاب الكراهية، الباب الخامس فی آداب المسجد۔۔۔الخ، ج٥، ص٣٢٣)

मस्अला :- कुरआने मजीद बहुत पुराना और बोसीदा हो गया और इस क़ाबिल नहीं रहा कि इस में तिलावत की जाए और येह अन्देशा है कि इस के अवराक़ इधर से उधर बिखर जाएंगे तो चाहिये कि इस को पाक कपड़े में लपेट कर एह़तियात़ की जगह दफ़्न कर दें और दफ़्न करने में इस पर तख़्ता लगा कर दफ़्न कर दें ताकि कुरआने मजीद पर मिट्टी न पड़े। कुरआन पुराना बोसीदा हो जाए तो इस को जलाया न जाए।

(الفتاوی الهندية، كتاب الكراهية، الباب الخامس فی آداب المسجد۔۔۔الخ، ج٥، ص٣٢٣)

मस्अला :- कुरआने मजीद पर अगर तौहीन के इरादे से किसी ने पाऊं रख दिया तो काफ़िर हो जाएगा।

(الفتاوی الهندية، كتاب الكراهية، الباب الخامس فی آداب المسجد۔۔۔الخ، ج٥، ص٣٢٢)

और अगर बे इख़्तियार ग़लती से पाऊं पड़ गया तो कुरआने मजीद को अदब से उठा कर बोसा दे और तौबा करे।

मस्अला :- किसी ने मह़ज़ ख़ैरो बरकत के लिये अपने मकान में कुरआने मजीद रखा है और इस में तिलावत नहीं करता तो कुछ गुनाह नहीं बल्कि उस की येह निय्यत बाइ़षे षवाब है।

(الفتاوی الهندية، كتاب الكراهية، الباب الخامس فی آداب المسجد۔۔۔الخ، ج٥، ص٣٢٢)

मस्अला :- लुग़त और नह्व व सर्फ़ की किताबों को नीचे रखे और इन के ऊपर इल्मे कलाम की किताबें रखी जाएं इन के ऊपर फ़िक़्ह की किताबें और ह़दीष की किताबें रखी जाएं और इन के ऊपर तफ़्सीर की किताबों को रखें और सब किताबों से ऊपर क़ुरआने मजीद को रखें और क़ुरआने मजीद के ऊपर कोई चीज़ न रखें बल्कि क़ुरआने मजीद जिस बॉक्स या अलमारी में हो उस बॉक्स और अलमारी के ऊपर भी कोई चीज़ न रखें। (الفتاوی الهندیة، کتاب الکراهیة،الباب الخامس فی آداب المسجد۔۔۔الخ، ج٥، ص٣٢٣۔٣٢٤)

मस्अला :- जिस घर में क़ुरआने मजीद हो उस में बीवी से सोह़बत करने की इजाज़त है जब कि क़ुरआने मजीद पर पर्दा पड़ा हो।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الکراهیة،الباب الخامس فی آداب المسجد۔۔۔الخ، ج٥، ص٣٢٢)

क़ुरआने मजीद की त़रफ़ पीठ करना या पाऊं फैलाना क़ुरआन से ऊंची जगह बैठना सख़्त ख़िलाफ़े अदब और ममनूअ़ है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि. 16, स. 119)

मस्जिद और क़िब्ला के आदाब

मस्अला :- मस्जिद को चूने और गच से मुनक़्क़श करना जाइज़ है और सोने चांदी के पानी से नक़्शो निगार बनाना दुरुस्त है जब कि कोई शख़्स अपने माल से ऐसा करे मस्जिद के वक़्फ़ के माल से मुतवल्ली को ऐसे नक़्शो निगार बनवाने की इजाज़त नहीं है लेकिन बा'ज़ मशाइख़े किराम दीवारे क़िब्ला में नक़्शो निगार बनवाने को मकरूह बताते हैं कि नमाज़ी का दिल उधर मुतवज्जेह होगा और ध्यान बटेगा।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الکراهیة،الباب الخامس فی آداب المسجد۔۔۔الخ، ج٥، ص٣١٩)

मस्अला :- मस्जिद में खाना सोना मो'तकिफ़ के लिये जाइज़ है ग़ैरे मो'तकिफ़ के लिये खाना सोना मकरूह है अगर कोई शख़्स मस्जिद में खाना या सोना चाहता हो तो उस को चाहिये कि ए'तिकाफ़ की निय्यत से मस्जिद में दाख़िल हो और कुछ ज़िक्रे इलाही करे या नमाज़ पढ़े इस के बा'द मस्जिद में खाए और सोए।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الکراهیة،الباب الخامس فی آداب المسجد۔۔۔الخ، ج٥، ص٣٢١)

हिन्दूस्तान में आ़म तौ़र पर येह रवाज है कि लोग मस्जिद के अन्दर रोज़ा इफ़्ता़र करते हैं और खाते पीते हैं अगर ख़ारिजे मस्जिद कोई ऐसी जगह हो जब तो मस्जिद में न इफ़्ता़र करें वरना मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त ए'तिकाफ़ की निय्यत कर लें और अब इफ़्ता़र करने में कोई ह़रज नहीं मगर इस का लिह़ाज़ ज़रूरी है कि मस्जिद के फ़र्श और चटाइयों को खाने पानी से आलूदा न करें। (बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि़. 16, स. 120)

मस्अला :- मस्जिद को रास्ता बनाना मस्जिद में कोई सामान या ता'वीज़ वग़ैरा बेचना या ख़रीदना जाइज़ नहीं।

(الفتاوی الهندية، كتاب الكراهية،الباب الخامس في آداب المسجد۔۔۔الخ،ج٥،ص ٣٢١)

मस्अला :- मस्जिद में दुन्या की बातें करनी मन्अ़ हैं मस्जिद में दुन्यावी बात चीत नेकियों को इस त़रह़ खा लेती है जिस त़रह़ आग लकड़ी को खा डालती है येह जाइज़ कलाम के मुतअ़ल्लिक़ है नाजाइज़ कलाम के गुनाह का तो पूछना ही क्या है।

मस्अला :- मस्जिद की छत पर चढ़ना मकरूह है गर्मी की वजह से मस्जिद की छत पर जमाअ़त करना भी मकरूह है। हां अगर नमाज़ियों की कषरत और मस्जिद में तंगी हो तो छत पर नमाज़ पढ़ सकते हैं।

(الفتاوی الهندية، كتاب الكراهية،الباب الخامس في آداب المسجد۔۔۔الخ،ج٥،ص ٣٢٢)

जैसा कि बम्बई और कलकत्ता में मस्जिद की तंगी की वजह से छत पर भी जमाअ़त होती है। (बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि़. 16, स. 121)

मस्अला :- अ़ज़्मत और एह़तिराम के लिह़ाज़ से सब से बड़ा दर्जा मस्जिदे ह़राम या'नी का'बए मुक़द्दसा की मस्जिद का है फिर मस्जिदे नबवी का फिर मस्जिदे बैतुल मुक़द्दस का फिर जामेअ़ मस्जिद का फिर मह़ल्ले की मस्जिद का फिर सड़कों की मस्जिदों का।

(الفتاوی الهندية، كتاب الكراهية،الباب الخامس في آداب المسجد۔۔۔الخ،ج٥،ص ٣٢١)

मस्अला :- मस्जिदों की सफ़ाई के लिये अबाबीलों और चमगादड़ों वग़ैरा के घोंसलों को नोच कर फैंक देना जाइज़ है।

(الفتاوی الهندية، كتاب الكراهية،الباب الخامس في آداب المسجد۔۔۔الخ،ج٥،ص ٣٢١)

मस्अला :- मस्जिदों में जूता पहन कर दाख़िल होना मकरूह है।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الکراهیة، الباب الخامس فی آداب المسجد۔۔۔الخ، ج۵، ص ۳۲۱)

येह उस वक़्त है जब कि जूतों में कोई नजासत न लगी हो और अगर जूतों में नजासत लगी हो तो इन नापाक जूतों को पहन कर मस्जिद में दाख़िल होना सख़्त ह़राम है।

मस्अला :- मस्जिद में इन आदाब का ख़ास तौर पर ख़याल रखें ﴾1﴿ जब मस्जिद में दाख़िल हो तो सलाम करे बशर्त़ येह कि लोग ज़िक्रे इलाही (عَزَّوَجَلَّ) और दर्स या नमाज़ में मश्ग़ूल न हों और अगर मस्जिद में कोई मौजूद न हो या जो लोग मौजूद हों वोह इ़बादतों में मश्ग़ूल हों तो اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ कहने की बजाए यूं कहे اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا مِنْ رَّبِّنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ ﴾2﴿ वक़्ते मकरूह न हो तो दो रक्अ़त तह़िय्यतुल मस्जिद अदा करे ﴾3﴿ ख़रीदो फ़रोख़्त न करे ﴾4﴿ नंगी तलवार ले कर मस्जिद में न जाए ﴾5﴿ गुमी हुई चीज़ चिल्ला कर मस्जिद में न ढूंडे ﴾6﴿ ज़िक्रे इलाही (عَزَّوَجَلَّ) के सिवा आवाज़ बुलन्द न करे ﴾7﴿ दुन्या की बातें मस्जिद में न करे ﴾8﴿ लोगों की गर्दनें न फलांगे ﴾9﴿ जगह के लिये लोगों से झगड़ा न करे ﴾10﴿ इस त़रह़ न बैठे कि लोगों के लिये जगह तंग हो जाए ﴾11﴿ नमाज़ी के आगे से न गुज़रे ﴾12﴿ मस्जिद में थूक और खंखार न डाले ﴾13﴿ उंगलियां न चटख़ाए ﴾14﴿ नजासत और बच्चों और पागलों से मस्जिद को बचाए ﴾15﴿ ज़िक्रे इलाही (عَزَّوَجَلَّ) की कषरत करे।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الکراهیة، الباب الخامس فی آداب المسجد۔۔۔الخ، ج۵، ص ۳۲۱)

मस्अला :- क़िब्ला की त़रफ़ मुंह या पीठ कर के पेशाब पाख़ाना करना जाइज़ नहीं है इसी त़रह़ क़िब्ला की त़रफ़ निशाना बना कर उस पर तीर चलाना या गोली मारना या'नी चांद मारी करना मकरूह है क़िब्ला की त़रफ़ थूकना भी ख़िलाफ़े अदब है।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الکراهیة، الباب الخامس فی آداب المسجد۔۔۔الخ، ج۵، ص ۳۲۰)

लह्‌व व लअ़ूब का बयान

मस्अला :- गन्जिफ़ा, चोसर, शत्‌रंज, ताश खेलना नाजाइज़ है। ह़दीषों में शत्‌रंज खेलने की बहुत ज़ियादा मुमानअ़त आई है। एक ह़दीष में रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस ने "नर्दशेर" खेला गोया सुवर के गोश्त और ख़ून में अपना हाथ डाल दिया।

(سنن ابو داؤد، کتاب الادب، باب فی النھی عن اللعب بالنرد، رقم ٤٩٣٩، ج٤، ص ٣٧١)

फिर येह भी वजह है कि इन खेलों में आदमी इस क़दर मह्‌व और ग़ाफ़िल हो जाता है कि नमाज़ वग़ैरा दीन के बहुत से कामों में ख़लल पड़ जाता है तो जो काम ऐसा हो कि इस की वजह से दीनी कामों में ख़लल पड़ता हो वोह क्यूं न बुरा होगा।

(الدرالمختار، مع ردالمحتار، کتاب الحظر و الاباحۃ، فصل فی البیع، ج٩، ص ٦٥٠۔٦٥١)

येही ह़ाल पतंग उड़ाने का भी है कि येही सब ख़राबियां इस में भी हैं बल्कि बहुत से लड़के पतंग के पीछे छतों से गिर कर मर गए इस लिये पतंग उड़ाना भी मन्अ़ है ग़रज़ लह्‌व व लअ़ूब की जितनी क़िस्में हैं सब बात़िल हैं सिर्फ़ तीन क़िस्म के लह्‌व की ह़दीष में इजाज़त है ﴾1﴿ बीवी के साथ खेलना ﴾2﴿ घोड़े की सुवारी करने में मुक़ाबला ﴾3﴿ तीर अन्दाज़ी का मुक़ाबला।

(سنن ابو داؤد، کتاب الجھاد، باب فی الرمی، رقم ٢٥١٣، ج٣، ص ١٩)

मस्अला :- नाचना, ताली बजाना, सितार, हारमोनियम, चंग, त़म्बूरा बजाना इसी त़रह़ दूसरी क़िस्म के तमाम बाजे सब नाजाइज़ हैं इसी त़रह़ हारमोनियम, ढोल बजा कर गाना सुनाना और सुनना भी नाजाइज़ है।

(ردالمحتار، کتاب الحظر و الاباحۃ، فصل فی البیع، ج٩، ص ٦٥١)

मस्अला :- ईद के दिन और शादियों में दफ़ बजाने की इजाज़त है जब कि इन दफ़ों में झांज न लगे हों और मूसीक़ी के क़वाइद पर न बजाए

जाएं बल्कि महूज़ ढब ढब की बे सुरी आवाज़ से फ़क़त़ निकाह़ का ए'लान मक़्सूद हो ।

(الفتاوی الهندیة، کتاب الکراهیة، الباب السابع عشر فی الغناء۔۔۔الخ، ج٥، ص ٣٥٢)

मस्अला :- रमज़ान शरीफ़ में सह़री खाने और इफ़्त़ारी के वक़्त बा'ज़ शहरों में नक़ारे या घंटे बजते हैं या सीटियां बजाई जाती हैं जिन से येह मक़्सूद होता है कि लोग बेदार हो कर सह़री खाएं या उन्हें येह मा'लूम हो जाए कि अभी सह़री का वक़्त बाक़ी है और लोगों को मा'लूम हो जाए कि आफ़्ताब ग़ुरूब हो गया है और इफ़्त़ार का वक़्त हो गया, येह सब जाइज़ हैं क्यूंकि येह लह्व व लअ़ब के त़ौर पर नहीं हैं बल्कि इन से ए'लान करना मक़्सूद है इसी त़रह़ मिलों और कारख़ानों में काम शुरूअ़ होने और काम ख़त्म होने के वक़्त जो सीटियां बजाई जाती हैं येह भी जाइज़ हैं कि इन से लह्व मक़्सूद नहीं बल्कि इत्त़िलाअ़ देने के लिये येह सीटियां बजाई जाती हैं। (बहारे शरीअ़त, जि. 3, हि़. 16, स. 130)

मस्अला :- कबूतर पालना अगर उड़ाने के लिये न हो तो जाइज़ है और अगर कबूतरों को उड़ाने के लिये पाला है तो नाजाइज़ है क्यूंकि कबूतर बाज़ी येह भी एक क़िस्म का लह्व है और अगर कबूतरों को उड़ाने के लिये छत पर चढ़ता हो जिस से लोगों की बे पर्दगी होती हो तो उस को सख़्ती के साथ मन्अ़ किया जाएगा और वोह इस पर भी न माने तो इस्लामी हुकूमत की त़रफ़ से उस के कबूतर ज़ब्ह़ कर के उस को दे दिये जाएंगे ताकि उड़ाने का सिलसिला ही ख़त्म हो जाए। (बहारे शरीअ़त, जि. 3, हि़. 16, स. 131)

मस्अला :- जानवरों को लड़ाना जैसे लोग मुर्ग़, बटेर, तीतर, मेंढ़ों को लड़ाते हैं येह ह़राम है और इन का तमाशा देखना भी नाजाइज़ है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3, हि़. 16, स. 131)

मस्अला :- अखाड़ों में कुश्ती लड़ना अगर लह्व व लअ़ब के तौ़र पर न हो बल्कि इस से मक़्सूद अपनी जिस्मानी ता़क़त को बढ़ाना हो तो येह जाइज़ है मगर शर्त़ येह है कि सित्रपोशी के साथ हो आज कल लंगोट और जांगिया पहन कर जो कुश्ती लड़ते हैं जिस में रानें वग़ैरा खुली रहती हैं येह नाजाइज़ है और ऐसी कुश्तियों का तमाशा देखना भी नाजाइज़ है क्यूंकि किसी के सित्र को देखना ह़राम है हमारे हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने रकाना पहलवान से कुश्ती लड़ी और तीन मरतबा उस को पछाड़ा क्यूंकि रकाना पहलवान ने कहा था कि अगर आप मुझे पछाड़ दें तो मैं मुसलमान हो जाउंगा चुनान्चे रकाना मुसलमान हो गए।

(الفتاوی الھندیۃ،کتاب الکراھیۃ،الباب السابع عشر فی الغناء۔۔۔الخ،ج۵،ص۳۵۲)

मस्अला :- अगर लोग इस त़रह़ आपस में हंसी मज़ाक़ करें कि न गाली गलोच हो न किसी की ईज़ा रसानी हो बल्कि मह़्ज़ पुर लुत़्फ़ और दिल खुश करने वाली बातें हों जिन से अहले मह़फ़िल को हंसी आ जाए और तफ़रीह़ हो जाए इस में कोई ह़रज नहीं बल्कि ऐसी तफ़रीह़ और मिज़ाह़ रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और सह़ाबा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से षाबित है।

(الفتاوی الھندیۃ،کتاب الکراھیۃ،الباب السابع عشر فی الغناء۔۔۔الخ،ج۵،ص۳۵۲)

इल्मे दीन पढ़ने और पढ़ाने की फ़ज़ीलत

इल्मे दीन पढ़ने और पढ़ाने की फ़ज़ीलत और इस के अज्रो षवाब की फ़ज़ीलत का क्या कहना ? इस इल्म से आदमी की दुन्या व आख़िरत दोनों संवरती हैं और येह इल्म के ज़रीए़ नजात है **अल्लाह** तआ़ला ने कुरआने मजीद में इल्मे दीन जानने वालों की बुज़ुर्गी और फ़ज़ीलत को बयान करते हुए इरशाद फ़रमाया कि

یَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَالَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ط(پ۲۸،المجادلۃ:۱۱)

अल्लाह तआ़ला तुम्हारे ईमान वालों के और उन लोगों के जिन को इल्म दिया गया है बहुत से दर्जात बुलन्द फ़रमाएगा।

हमारे हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बहुत सी ह़दीषों में इल्मे दीन की फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई है और इल्मे दीन पढ़ने और पढ़ाने वालों की बुज़ुर्गियों और उन के मरातिब व दर्जात की अ़ज़्मतों का बयान फ़रमाया है चुनान्चे एक ह़दीष में इरशाद फ़रमाया :

ह़दीष :- आ़लिम की फ़ज़ीलत आ़बिद पर वैसी ही है जैसी मेरी फ़ज़ीलत तुम्हारे अदना पर फिर फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला और उस के फ़िरिश्ते और तमाम आस्मान व ज़मीन वाले यहां तक कि च्यूंटी अपने सूराख़ में और यहां तक कि मछली सब उस की भलाई चाहने वाले हैं जो आ़लिम कि लोगों को अच्छी बातों की ता'लीम देता है।

(سنن الترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقه علی العبادة، رقم٢٦٩٤، ج٤، ص٣١٣-٣١٤)

ह़दीष :- ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि एक घड़ी रात में पढ़ना पढ़ाना सारी रात इबादत करने से अफ़्ज़ल है।

(مشکوۃ المصابیح، کتاب العلم، الفصل الثالث، رقم٢٥٦، ج١، ص١١٧)

ह़दीष :- आ़लिमों की दवातों की रोशनाई क़ियामत के दिन शहीदों के ख़ून से तोली जाएगी और इस पर ग़ालिब हो जाएगी।

(کنزالعمال، کتاب العلم، قسم الاقوال، رقم٢٨٧١١، ج١٠، ص٦١)

ह़दीष :- उ़-लमा की मिषाल येह है कि जैसे आस्मान में सितारे जिन से ख़ुश्की और समुन्दर में रास्ते का पता चलता है अगर सितारे मिट जाएं तो रास्ता चलने वाले भटक जाएंगे।

(المسند لامام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالك، رقم١٢٦٠٠، ج٤، ص٣١٤)

ह़दीष :- एक आ़लिम एक हज़ार आ़बिद से ज़ियादा शैत़ान पर सख़्त है।

(سنن ابن ماجه، کتاب السنة،باب فضل العلماء۔۔۔الخ، رقم۲۲۲،ج۱،ص۱٤٥)

प्यारे भाइयो और अ़ज़ीज़ बहनो ! आज कल मुसलमान मर्दों और औ़रतों में इ़ल्मे दीन सीखने सिखाने और दीन की बातों के जानने का जज़्बा और ज़ौक़ो शौक़ तक़्रीबन मिट चुका है इस लिये हर त़रफ़ बे दीन और ला मज़्हबिय्यत का सैलाब बढ़ता जा रहा है। हज़ारों नौजवान लड़के और लड़कियां दीन व मज़्हब से आज़ाद और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से बेज़ार हो कर जानवरों की त़रह़ बे लगाम हो रहे हैं बल्कि बहुत से तो ख़ुदा ही का इन्कार कर बैठे हैं और मानते ही नहीं कि ख़ुदा मौजूद है। इस बे दीनी के तूफ़ान का एक ही सबब है कि मुसलमानों ने ख़ुद भी दीन का इ़ल्म पढ़ना छोड़ दिया और अपने बच्चों को भी इ़ल्मे दीन नहीं पढ़ाया इस लिये बेह़द ज़रूरी है कि मुसलमान मर्द व औ़रत ख़ुद भी फ़ुर्सत निकाल कर दीन की ज़रूरी बातों का इ़ल्म ह़ासिल करें और अपने बच्चे और बच्चियों को ज़रूरी बातें बचपन ही से बताते और सिखाते रहें। अगर अपने बच्चों को इ़ल्मे दीन पढ़ा कर आ़लिम नहीं बना सकते तो कम से कम इन को दीन का इतना इ़ल्म तो सिखा दें कि वोह मुसलमान बाक़ी रह जाएं।

ह़लाल रोज़ी कमाने का बयान

इतना कमाना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है जो अपने और अपने अहलो इ़याल के गुज़ारे के लिये और जिन लोगों का ख़र्चा उस के ज़िम्मे वाजिब है उन का ख़र्च चलाने के लिये और अपने क़र्ज़ों को अदा करने के लिये काफ़ी हो इस के बा'द उसे इख़्तियार है कि इतनी ही कमाई पर बस करे या अपने और अपने अहलो इ़याल के लिये कुछ पसे मानदा माल रखने की भी कोशिश करे। किसी के मां बाप अगर मोह़ताज तंग दस्त हों

तो लड़कों पर फ़र्ज़ है कि कमा कर उन्हें इतना दें कि उन के लिये काफ़ी हो जाए। (الفتاوی الھندیۃ، کتاب الکراھیۃ،الباب الخامس عشر فی الکسب،ج٥،ص٣٤٨_٣٤٩)

मस्अला :- सब से अफ़्ज़ल कमाई जिहाद है या'नी जिहाद में जो माले ग़नीमत ह़ासिल हुवा। जिहाद के बा'द अफ़्ज़ल कमाई तिजारत है फिर ज़राअ़त फिर सनअ़त व ह़रफ़त का मरतबा है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الکراھیۃ،الباب الخامس عشر فی الکسب،ج٥،ص٣٤٩)

मस्अला :- जो लोग मस्जिदों और बुज़ुर्गों की ख़ानक़ाहों और दरगाहों में बैठ जाते हैं और बसर अवक़ात के लिये कोई काम नहीं करते और अपने को मुतवक्किल बताते हैं ह़ालांकि उन की नज़्रें हर वक़्त लोगों की जेबों पर लगी रहती हैं कि कोई हमें कुछ दे जाए। इन लोगों ने इस को अपनी कमाई का पेशा बना लिया है और येह लोग त़रह़ त़रह़ के मक्रो फ़रेब से काम ले कर लोगों से रक़्में खसोटते हैं इन लोगों के येह त़रीक़े नाजाइज़ हैं हरगिज़ हरगिज़ येह लोग मुतवक्किल नहीं बल्कि मुफ़्तख़ोर और कामचोर हैं इस से लाखों दर्जे येह अच्छा है कि येह लोग बसर अवक़ात के लिये कुछ काम करते और रिज़्क़े ह़लाल खा कर ख़ुदा के फ़राइज़ को अदा करते। (الفتاوی الھندیۃ، کتاب الکراھیۃ،الباب الخامس عشر فی الکسب،ج٥،ص٣٤٩)

मस्अला :- अपनी ज़रूरतों से बहुत ज़ियादा मालो दौलत कमाना अगर इस निय्यत से हो कि फ़ुक़रा व मसाकीन और अपने रिश्तेदारों की मदद करेंगे तो येह मुस्तह़ब बल्कि नफ़्ली इ़बादतों से अफ़्ज़ल है और अगर इस निय्यत से हो कि मेरे वक़ारो इ़ज़्ज़त में इज़ाफ़ा होगा तो येह भी मुबाह़ है लेकिन अगर माल की कषरत और फ़ख़्रो तकब्बुर की निय्यत से ज़ियादा माल कमाए तो येह ममनूअ़ है।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الکراھیۃ،الباب الخامس عشر فی الکسب،ج٥،ص٣٤٩)

ज़रूरी तम्बिह :- याद रखो कि माल कमाने की बा'ज़ सूरतें जाइज़ हैं और बा'ज़ सूरतें नाजाइज़ हैं हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है कि जाइज़ त़रीक़ों

पर अ़मल करे और नाजाइज़ त़रीक़ों से दूर भागे अल्लाह तआ़ला ने कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया कि

لَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ. (پ٥،النسآء:٢٩)

"या'नी आपस में एक दूसरे के माल को नाह़क़ मत खाओ।"

दूसरी जगह कुरआने मजीद में रब तआ़ला ने फ़रमाया कि

كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۪ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ○

(پ٧،المآئدة:٨٨)

"या'नी अल्लाह तआ़ला ने जो रोज़ी दी है इस में से ह़लाल व त़य्यिब माल को खाओ और अल्लाह से डरते रहो जिस पर तुम ईमान लाए हो।"

इन आयतों के इ़लावा इस बारे में चन्द ह़दीषें भी सुन लो।

ह़दीष :- सह़ीह़ मुस्लिम में ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह पाक है और वोह पाक ही पसन्द फ़रमाता है और अल्लाह तआ़ला ने मोमिनों को भी उसी बात का हुक्म दिया जिस का रसूलों को हुक्म दिया चुनान्चे उस ने अपने रसूलों से फ़रमाया कि

يٰٓاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا.

(صحيح مسلم، كتاب الزكاة،باب قبول الصدقة من الكسب...الخ، رقم١٠١٥، ص٥٠٦، پ١٨،المؤمنون:٥١)

"या'नी ऐ रसूलो! ह़लाल चीज़ों को खाओ और अच्छे अ़मल करो।"

और मोअमिनीन से फ़रमाया कि

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ط (پ٢،البقرة:١٧٢)

या'नी ऐ ईमान वालो! जो कुछ हम ने तुम को दिया इस में से ह़लाल चीज़ों को खाओ।

इस के बा'द फिर हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि एक शख़्स लम्बे लम्बे सफ़र करता है जिस के बाल परा गन्दा और बदन गर्द आलूद है (या'नी उस की ह़ालत ऐसी है कि जो दुआ़ मांगे वोह क़बूल हो) वोह आस्मान की त़रफ़ हाथ उठा कर या रब्ब या रब्ब कहता है (दुआ़ मांगता है) मगर उस की ह़ालत येह है कि उस का खाना ह़राम उस का पीना ह़राम उस का लिबास ह़राम और गिज़ा ह़राम है फिर उस की दुआ़ क्यूंकर मक़बूल हो (या'नी अगर दुआ़ मक़बूल होने की ख़्वाहिश हो तो ह़लाल रोज़ी इख़्तियार करो कि बिग़ैर इस के दुआ़ क़बूल होने के तमाम अस्बाब बेकार हैं) (مشکوۃ المصابیح، کتاب البیوع، باب الکسب وطلب الحلال، رقم ۲۷۶۰، ج۲، ص ۱۲۹)

ह़दीष :- हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि ह़लाल कमाई की तलाश भी फ़राइज़ के बा'द एक फ़रीज़ा है।

(شعب الایمان، باب فی حقوق الاولاد والأهلین، رقم ۸۷٤۱، ج٦، ص ٤٢٠)

ह़दीष :- हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा कि आदमी परवाह नहीं करेगा कि इस माल को कहा से ह़ासिल किया है ह़लाल से या ह़राम से ?

(صحیح البخاری، کتاب البیوع، باب من لم یبال من ۔۔۔الخ، رقم ۲۰۵۹، ج۲، ص ۷)

ह़दीष :- हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो बन्दा ह़राम माल ह़ासिल करता है और उस को सदक़ा करे तो मक़बूल नहीं और ख़र्च करे तो उस के लिये इस में बरकत नहीं और अपने बा'द छोड़ कर मरे तो जहन्नम में जाने का सामान है (या'नी माल की तीन ह़ालतें हैं और ह़राम माल की तीनों ह़ालतें ख़राब ही हैं)

(مشکوۃ المصابیح، کتاب البیوع، باب الکسب وطلب الحلال، الفصل الثانی، رقم ۲۷۷۱، ج۲، ص ۱۳۱)

ह़दीष :- चोरी, डाका, ग़सब, ख़ियानत, रिश्वत, शराब, सीनेमा, जूआ, सट्टा, नाच, गाना, झूट, फ़रेब, धोकाबाज़ी, कम नाप तोल, बिग़ैर काम किये मज़्दूरी और तनख़्वाह लेना, सूद वग़ैरा येह सारी कमाइयां ह़राम व नाजाइज़ हैं।

ह़दीष :– जिस शख़्स ने ह़राम त़रीक़ों से माल जम्अ़ किया और मर गया तो उस के वारिषों पर येह लाज़िम है कि अगर उन्हें मा'लूम हो कि येह फ़ुलां फ़ुलां के अम्वाल हैं तो उन को वापस कर दें और न मा'लूम हो तो कुल मालों को सदक़ा कर दें कि जान बुझ कर ह़राम माल को लेना जाइज़ नहीं। (الفتاوی الهندية، كتاب الكراهية، الباب الخامس عشر في الكسب، ج٥،ص٣٤٩)

खुलासए कलाम येह है कि मुसलमान को लाज़िम है कि हमेशा माले ह़राम से बचता रहे। ह़दीष शरीफ़ में है कि माले ह़राम जब ह़लाल माल में मिल जाता है तो माले ह़राम ह़लाल को भी बरबाद कर देता है इस ज़माने में लोग ह़लाल व ह़राम की परवाह नहीं करते येह क़ियामत की निशानियों में से एक निशानी है लेकिन बहर ह़ाल एक मुसलमान के लिये ह़लाल व ह़राम में फ़र्क़ करना फ़र्ज़ है। ऊपर तुम येह ह़दीष पढ़ चुके हो कि ख़ुदा के फ़राइज़ के बा'द रिज़्क़े ह़लाल तलाश करना भी मुसलमान के लिये एक फ़रीज़ा है।

पीरी मुरीदी के लिये हिदायात

﴾1﴿ मुरीद को चाहिये कि अपने पीर का ज़ाहिर व बात़िन में सामने और पीठ पीछे इन्तिहाई अदबो एह़तिराम रखे। पीर जो वज़ीफ़ा बताए उस को पाबन्दी के साथ पढ़ता रहे और अपने पीर के बारे में येह एतिक़ाद रखे कि जिस क़दर ज़ाहिरी और बात़िनी फ़ैज़ मुझे अपने पीर से मिल सकता है उतना इस ज़माने के किसी बुज़ुर्ग से नहीं मिल सकता।

﴾2﴿ अगर पीर ने अपने मुरीद का दिल अभी अच्छी त़रह़ न संवारा हो और पीर का विसाल हो जाए तो मुरीद को चाहिये कि किसी दूसरे पीरे कामील से जिस में पीरी की सब शराइत़ पाई जाती हों उस से मुरीद हो कर फ़ैज़ ह़ासिल करे और पहले पीर के लिये हमेशा फ़ातिह़ा दिलाता और ईसाले षवाब करता रहे।

﴾3﴿ बिग़ैर अपने पीर से पूछे हुए कोई वज़ीफ़ा या फ़क़ीरी का कोई अ़मल न करे और जो कुछ दिल में बुरे या अच्छे ख़यालात पैदा हों या नए काम का इरादा करे तो पीर से पूछ लिया करे।

﴾4﴿ औ़रत को चाहिये कि अपने पीर के सामने बे पर्दा न हो और मुरीद होते वक़्त पीर के हाथ में हाथ दे कर मुरीद न हो बल्कि पीर का रूमाल पकड़ कर मुरीद बने।

﴾5﴿ अगर ग़लत़ी से किसी ख़िलाफ़े शरअ़ पीर का मुरीद बन गया या पहले वोह पीर शरीअ़त का पाबन्द था अब बिगड़ गया तो मुरीद को लाज़िम है कि उस की बैअ़त तोड़ दे और किसी दूसरे पाबन्दे शरीअ़त पीर से मुरीद हो जाए लेकिन अगर पीर में कोई हलकी सी ख़िलाफ़े शरीअ़त बात कभी देख ले तो फ़ौरन ए'तिक़ाद ख़राब न करे और येह समझ ले कि पीर भी आदमी ही है कोई फ़िरिश्ता तो है नहीं इस लिये अगर उस से इत्तिफ़ाक़िया कोई मा'मूली सी ख़िलाफ़े शरअ़ बात हो गई है जो तौबा कर लेने से मुआ़फ़ हो सकती है तो ऐसी बात पर बदज़न हो कर पीर को न छोड़े हां अलबत्ता अगर पीर बद अ़क़ीदा हो जाए या किसी गुनाहे कबीरा पर अड़ा रहे तो फिर मुरीदी तोड़ दे क्यूंकि बद अ़क़ीदा और फ़ासिक़े मो'लिन को अपना पीर बनाना ह़राम है।

﴾6﴿ आज कल के मक्कार फ़क़ीर कहा करते हैं कि शरीअ़त का रास्ता और है और फ़क़ीरी का रस्ता और है। ऐसा कहने वाले फ़क़ीर ख़्वाह कितना ही शो'बदा दिखाएं मगर इन के बारे में येही अ़क़ीदा रखना फ़र्ज़ है कि येह गुमराह और झूटे हैं और याद रखो कि ऐसे फ़क़ीरों से मुरीद होना बहुत बड़ा गुनाह है और वोह जो कुछ तअ़ज्जुब खेज़ चीज़ें दिखला रहे हैं वोह हरगिज़ हरगिज़ करामत नहीं बल्कि जादू या नज़रबन्दी का अ़मल या शैत़ान का धोका है। (देखो हमारी किताब मा'मूलातुल अबरार)

﴾7﴿ अगर पीर के बताए हुए वज़ीफ़ों से दिल में कुछ रोशनी या अच्छी ह़ालत पैदा हो या अच्छे अच्छे ख़्वाब नज़र आएं या ख़्वाब व बैदारी में बुज़ुर्गों का दीदार और उन की ज़ियारत होने लगे या नमाज़ और वज़ीफ़े

में कोई चमक पैदा हो या कोई ख़ास कैफ़िय्यत या लज़्ज़त महसूस हो तो ख़बरदार ! ख़बरदार इन बातों का अपने पीर के सिवा किसी दूसरे से ज़िक्र न करे न अपने वज़ीफ़ों और इबादतों का पीर के इलावा किसी के सामने इज़्हार करे क्यूंकि ज़ाहिर कर देने से येह मिली हुई रूहानी दौलत चली जाती है और फिर मुरीद उम्र भर हाथ मलता रह जाएगा।

﴾8﴿ अगर पीर के बताए हुए वज़ीफ़े या ज़िक्र का कुछ मुद्दत तक कोई अषर या कैफ़िय्यत न ज़ाहिर हो तो इस से तंग दिल और पीर से बद ज़न न हो और इस को अपनी ख़ामी या कोताही समझे और यूं समझे कि बड़ा अषर येही है कि मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लेने की तौफ़ीक़ हो रही है। हर मुरीद में पैदाइशी तौर पर अलग अलग सलाहिय्यत हुवा करती है एक ही वज़ीफ़ा और एक ही ज़िक्र से किसी में कोई अषर पैदा होता है और किसी में कोई दूसरी कैफ़िय्यत पैदा होती है, किसी में जल्द अषर ज़ाहिर होता है किसी में बहुत देर के बा'द अषरात ज़ाहिर होते हैं जिस में जैसी और जितनी सलाहिय्यत होती है इसी लिहाज़ से वज़ीफ़ों और ज़िक्र की कैफ़िय्यात पैदा होती है येह ज़रूरी नहीं की हर मुरीद का हाल यक्सा ही हो बहर हाल अगर वज़ीफ़े व ज़िक्र से कुछ कैफ़िय्यात पैदा हो तो ख़ुदा का शुक्र अदा करे और अगर कुछ अषरात न हों या कम हों या अषरात हो कर कम हो जाएं या बिल्कुल अषरात व कैफ़िय्यात ज़ाइल हो जाएं तो हरगिज़ हरगिज़ पीर से बद ए'तिक़ाद हो कर ज़िक्र और वज़ीफ़े को न छोड़े बल्कि बराबर पढ़ता रहे और पीर का अदबो एहतिराम ब दस्तूर रखे और ज़रा भी तंग दिल न हो और येह सोच सोच कर सब्र करे और अपने दिल को तसल्ली देता रहे कि

उस के अल्ताफ़ तो हैं आम शहीदी सब पर
तुझ से क्या ज़िद थी अगर तू किसी क़ाबिल होता

﴾9﴿ हर मुरीद को लाज़िम है कि दूसरे बुज़ुर्गों या दूसरे सिलसिले की शान में हरगिज़ हरगिज़ कभी कोई गुस्ताख़ी और बे अदबी न करे न किसी दूसरे पीर के मुरीदों के सामने कभी येह कहे कि मेरा पीर तुम्हारे पीर से अच्छा है या हमारा सिलसिला तुम्हारे सिलसिले से बेहतर है न येह कहे कि हमारे पीर के मुरीद तुम्हारे पीर से ज़ियादा हैं या हमारे पीर का ख़ानदान तुम्हारे पीर के ख़ानदान से बढ़ चढ़ कर है क्यूंकि इस क़िस्म की फ़ुज़ूल बातों से दिल में अंधेरा पैदा होता है और फ़ख़्र व ग़ुरूर का शैतान सर पर सुवार हो कर मुरीद को जहन्नम के गढ़े में गिरा देता है और पीरों व मुरीदों के दरमियान निफ़ाक़ व शिक़ाक़, पार्टी बन्दी और क़िस्म क़िस्म के झगड़ों का और फ़ित्ना व फ़साद का बाज़ार गर्म हो जाता है।

मुरीद को किस त़रह़ रहना चाहिये ?

﴾1﴿ ज़रूरत के मुत़ाबिक़ दीन का इल्म ह़ासिल करता रहे ख़्वाह किताबें पढ़ कर या आ़लिमों से पूछ पूछ कर।

﴾2﴿ सब गुनाहों से बचता रहे।

﴾3﴿ अगर कभी कोई गुनाह हो जाए तो फ़ौरन दिल में शरमिन्दा हो कर खुदा से तौबा करे।

﴾4﴿ किसी को अपने हाथ या ज़बान से तक्लीफ़ न दे न किसी का कोई ह़क़ मारे।

﴾5﴿ माल की मह़ब्बत और इ़ज़्ज़त व शोहरत की तमन्ना दिल में न रखे न अच्छे खाने और अच्छे कपड़े की फ़िक्र करे बल्कि वक़्त पर जो कुछ मिल जाए उस पर सब्रो शुक्र करे।

﴾6﴿ अगर किसी ख़त़ा पर कोई टोके तो अपनी बात की पच कर के इस पर अड़ा न रहे बल्कि फ़ौरन ही खुश दिली से अपनी ग़लत़ी को तस्लीम करे और तौबा करे।

﴾7﴿ बिग़ैर सख़्त ज़रूरत के सफ़र न करे क्यूंकि सफ़र में बहुत सी बे एह़तियात़ी होती है और बहुत से दीनी कामों और वज़ीफ़ों यहां तक कि नमाज़ में ख़लल पैदा हो जाया करता है।

﴾8﴿ किसी से झगड़ा तकरार न करे।

﴾9﴿ बहुत ज़ियादा और क़हक़हा लगा कर न हंसे।

﴾10﴿ हर बात और हर काम में शरीअ़त और सुन्नत की पाबन्दी का ख़याल रखे।

﴾11﴿ ज़ियादा वक़्त तन्हाई में रहे अगर लोगों से मिलना जुलना पड़े तो लोगों से आ़जिज़ी और इन्किसारी के साथ मिले सब की ख़िदमत करे और हरगिज़ हरगिज़ अपने किसी क़ौल व फ़े'ल से अपनी बड़ाई न जताए।

﴾12﴿ अमीरों की सोहबत में बहुत कम बैठे।

﴾13﴿ बद दीनों बद फ़े'लों से बहुत दूर भागे।

﴾14﴿ दूसरों का ऐ़'ब न ढूंडे बल्कि अपने ऐ़'बों पर नज़र रखे और अपनी इस्लाह़ की कोशिश में लगा रहे।

﴾15﴿ नमाज़ों को अच्छी त़रह़ अच्छे वक़्त में पाबन्दी के साथ दिल लगा कर पढ़े।

﴾16﴿ जो कुछ नुक़्सान या रन्जो ग़म पेश आए उस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से जाने और इस पर सब्र करे और येह समझे कि इस पर खुदावन्दे तआ़ला की त़रफ़ से षवाब मिलेगा और अगर कोई फ़ाइदा ह़ासिल हो या कोई खुशी ह़ासिल हो तो इस पर खुदा का शुक्र अदा करे और येह दुआ़ मांगे कि **अल्लाह** तआ़ला इस नफ़्अ़ और खुशी को मेरे ह़क़ में बेहतर बनाए।

﴾17﴿ दिल या ज़बान से हर वक़्त खुदा का ज़िक्र करता रहे किसी वक़्त ग़ाफ़िल न रहे कम से कम हर दम येह ख़याल रखे कि खुदा मुझे देख रहा है।

﴾18﴿ जहां तक हो सके दूसरों को दीन या दुन्या का फ़ाइदा पहुंचाता रहे और हरगिज़ किसी मुसलमान को नुक़्सान न पहुंचाए।

﴾19﴿ खुराक में न इतनी कमी करे कि कमज़ोर या बीमार हो जाए न इतनी ज़ियादती करे कि इबादत में सुस्ती होने लगे।

﴾20﴿ **अल्लाह** तआला के सिवा किसी आदमी से कोई उम्मीद और आस न लगाए और हरगिज़ येह ख़याल न रखे कि फुलां जगह से या फुलां आदमी से मुझे कोई फ़ाइदा मिल जाएगा बस **अल्लाह** तआला से आस लगाए रखे और इस अक़ीदे पर जमा रहे कि अगर **अल्लाह** तआला चाहेगा तो सब मेरे काम आएंगे और अगर **अल्लाह** तआला नहीं चाहेगा तो कोई मेरे काम नहीं आ सकता।

﴾21﴿ जहां तक हो सके मुसलमानों के उ़यूब को छुपाए।

﴾22﴿ मेहमानों, मुसाफ़िरों और आ़मिलों व दूरवेशों की ख़िदमत करे और ग़रीबों, मोह्ताजों की अपनी ताक़त भर मदद करे।

﴾23﴿ अपनी मौत को याद रखे।

﴾24﴿ रोज़ाना रात को सोते वक़्त दिन भर के कामों को सोचे कि आज दिन भर में मुझ से कितनी नेकियां हुई और कितने गुनाह हुए नेकियों पर खुदा का शुक्र अदा करे और गुनाहों से तौबा करे।

﴾25﴿ झूट, ग़ीबत, गाली गलोच, फ़ुज़ूल बक्वास से हमेशा बचता रहे।

﴾26﴿ जो महफ़िल ख़िलाफ़े शरीअ़त हो वहां हरगिज़ क़दम न रखे और इस मुआ़मले में अ़ज़ीज़ व अक़रबा की नाराज़ी की भी कोई परवाह न करे।

﴾27﴿ अपनी सूरत व सीरत, अपने इल्मो फ़न, अपनी इ़ज़्ज़त व शोहरत, अपने मालो दौलत और दूसरी ख़ूबियों पर हरगिज़ कभी मग़रूर न हो।

﴾28﴿ नेकों की सोह्बत में बैठे।

﴾29﴿ ग़ुस्सा न करे, हमेशा बुर्दबारी और बरदाश्त करने की आ़दत बनाए।

﴾30﴿ हर शख़्स से नर्मी के साथ बात चीत करे।

﴾31﴿ अपने पीर के बताए हुए ज़िक्र और वज़ीफ़ों की पाबन्दी करे और इस की नसीहतों को हर दम पेशे नज़र रखे।

ख़ैरो बरकत वाली मजलिसें

मुसलमानों की वोह मजलिसें जिन के बारे में रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि इन मजलिसों में रह़मत के फ़िरिश्ते उतरते हैं और रह़मतों बरकतों का नुज़ूल होता है इन मुबारक मजलिसों में चन्द येह हैं जिन में मुसलमानों का ह़ाज़िर होना सआ़दत और बाइ़षे ख़ैरो बरकत और अज्रो षवाब की दौलत से माला माल होने का ज़रीआ़ है।

﴾1﴿ **मीलाद शरीफ़ :–** इस मजलिस में हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत का बयान और इसी के ज़िम्न में हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के फ़ज़ाइल मो'जिज़ात और आप की सीरते मुबारका और आप की मुक़द्दस ज़िन्दगी के ह़ालात का ज़िक्रे जमील होता है। इन चीज़ों का ज़िक्र कुरआने मजीद में भी है और ह़दीषों में भी ब कषरत इन बातों का ज़िक्र है अगर मुसलमान अपनी मह़फ़िल में इन मुक़द्दस मज़ामीन को बयान करें बल्कि ख़ास इन बातों के बयान करने के लिये मह़फ़िल मुनअ़क़िद करें तो इस के नाजाइज़ होने की भला कौन सी वजह हो सकती है। बिला शुबा यक़ीनन येह मजलिस जाइज़ बल्कि मुस्तह़ब और बाइ़षे अज्रो षवाब है। इस मजलिस के लिये लोगों को बुलाना और शरीक करना यक़ीनन एक ख़ैर की त़रफ़ बुलाना है जो षवाब का काम है जिस त़रह़ वा'ज़ और जलसों के ए'लान किये जाते हैं और तारीख़ मुक़र्रर कर के इश्तिहार छापे जाते हैं और ए'लान कर के लोगों को दा'वत दी जाती है और इन बातों की वजह से वोह वा'ज़ और जलसे नाजाइज़ नहीं हो जाते इसी त़रह़ मीलाद शरीफ़ के लिये बुलावा देने से इस मजलिस को नाजाइज़ और बिदअ़त नहीं कहा जा सकता।

इसी त़रह़ मीलाद शरीफ़ में शीरीनी बांटना भी जाइज़ है। मिठाई बांटना मुसलमानों के साथ एक नेक सुलूक और एह़सान करना है। जब मीलाद शरीफ़ की मह़फ़िल जाइज़ है तो मिठाई बांटना जो एक जाइज़ और नेक काम है इस मह़फ़िल को नाजाइज़ नहीं कर देगा। मीलाद शरीफ़ की मजलिस में ज़िक्रे विलादत के वक़्त खड़े हो कर सलातो सलाम पढ़ते है। अ़रबो अ़जम के बड़े बड़े उ़–लमाए किराम और मुफ़्तियाने उ़ज़्ज़ाम ने इस क़ियाम और सलातो सलाम को मुस्तह़ब फ़रमाया है इस लिये खड़े हो कर सलाम पढ़ना यक़ीनन जाइज़ और षवाब का काम है बा'ज़ अकाबिरे औलिया को मीलाद शरीफ़ की मजलिसे पाक में हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत का शरफ़ भी ह़ासिल हुवा है। अगर्चे येह नहीं कहा जा सकता कि हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ज़रूर ही इस मजलिसे मीलाद शरीफ़ में तशरीफ़ लाते हैं लेकिन अगर वोह अपने किसी उम्मती पर अपना ख़ास करम फ़रमाएं और तशरीफ़ लाए तो येह कोई मुह़ाल बात भी नहीं। बहुत से गुलामों को आक़ाए नामदार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने नवाज़ा है और अपने दीदारे अन्वर से मुशर्रफ़ फ़रमाते रहेंगे क्यूंकि अल्लाह तआ़ला ने अपने मह़बूब को ह़याते जाविदानी अ़त़ा फ़रमाई है और इन को बड़ी बड़ी त़ाक़तों का बादशाह बल्कि शहनशाह बनाया है

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَ بَارِکْ عَلٰی حَبِیْبِکَ سُلْطَانِ الْعٰلَمِیْنَ وَاٰلِہٖ وَاَصْحَابِہِ الْمُکَرَّمِیْنَ اِلٰی یَوْمِ الدِّیْنِO

(बहारे शरीअ़त, जि. 3 हि़. 16, स. 245-246)

﴾2﴿ **रजबी शरीफ़ :–** 26-27 रजब को मे'राज शरीफ़ का बयान करने के लिये जो जल्सा किया जाता है इस को रजबी शरीफ़ की मजलिस कहते हैं। मीलाद शरीफ़ की त़रह़ येह भी बहुत ही मुबारक जल्सा है इस जल्से को करने वाले और ह़ाज़िरीन व सामेईन सब षवाब के मुस्तह़िक़ हैं ज़ाहिर है

कि हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ज़ाइल व कमालात और इन के मो'जिज़ात में से एक बहुत ही अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़ा या'नी मे'राजे जिस्मानी का ज़िक्रे जमील किस क़दर खुदावन्दे जलील की रह़मतों और बरकतों के नुज़ूल का बाइ़ष होगा ? इस लिये मुसलमानों को चाहिये कि ज़ियादा से ज़ियादा ता'दाद में और बड़े से बड़े एहतिमाम के साथ इस मजलिसे ख़ैरो बरकत को मुनअ़क़िद करें और ज़िक्रे मे'राज सुनने के लिये कषीर ता'दाद में ह़ाज़िर हो कर अन्वारो बरकात की सआ़दतों से सरफ़राज़ हों और इस मुक़द्दस रात में नवाफ़िल पढ़ कर और सदक़ातो ख़ैरात कर के षवाबे दारैन की दौलतों से माला माल हों।

﴾3﴿ **ग्यारहवीं शरीफ़ :-** 11, 12 रबीउ़ल आख़िर को ह़ज़रते ग़ौषे आ'ज़म सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के फ़ज़ाइल व मनाक़िब और आप की करामात को बयान करने के लिये येह जल्सा मुनअ़क़िद किया जाता है। ह़दीष शरीफ़ में है कि सालिह़ीन के ज़िक्र के वक़्त रह़मतों और बरकतों का नुज़ूल हुवा करता है।

(كشف الخفاء، حرف العين المهملة، رقم ۱۷۷۰، ج۲، ص ٦٥)

लिहाज़ा येह जल्से भी जाइज़ और बहुत ही बा बरकत हैं और बिला शुबा षवाब के काम हैं।

﴾4﴿ **सीरते पाक के इज्लास :-** इन जल्सों में हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ज़ाइल और आप की मुक़द्दस सीरत और इत्तिबाए सुन्नत व शरीअ़त और मह़ब्बते रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का बयान हुवा करता है। मीलाद शरीफ़ की त़रह़ येह जल्से भी बहुत मुबारक और ख़ैरो बरकत वाले हैं और अहले जल्सा ह़ाज़िरीन सब षवाब पाते हैं।

ह़ल्क़ए ज़िक्र :- सूफ़ियाए किराम, अहले त़रीक़त जम्अ़ हो कर और ह़ल्क़ा बना कर कलिमए त़य्यिबा पढ़ते और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र

करते हैं फिर शजरह शरीफ़ पढ़ कर पीराने किबार को ईसाले षवाब करते हैं इन ह़ल्क़ों की फ़ज़ीलत और अ़ज़्मत का क्या कहना ? इन ज़िक्र के ह़ल्क़ों को ह़दीष में "जन्नत का बाग़" कहा गया है।

इसी त़रह़ दूसरे सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और औलियाए उ़ज़्ज़ाम عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के तजकिरों की मजलिसें मुनअ़क़िद करना भी जाइज़ है मगर येह ज़रूरी है कि इन सब जल्सों में रिवायात सह़ीह़ बयान की जाएं ग़ैर ज़िम्मेदार लोगों से न वा'ज़ कहलाया जाए न ग़लत़ रिवायतों को बयान किया जाए वरना षवाब कि जगह अ़ज़ाब के सिवा और कुछ न मिलेगा।

उ़र्से बुज़ुर्गाने दीन :- बुज़ुर्गाने दीन व उ़-लमाए सालिह़ीन के विसाल की तारीख़ों में इन के मज़ारों पर ह़ाज़िरीन का इजतिमाअ़ जिस में कु़रआने मजीद की तिलावत और मीलाद शरीफ़, ना'त ख़्वानी और वा'ज़ होता है और इन बुज़ुर्ग के ह़ालाते ज़िन्दगी बयान किये जाते हैं फिर फ़ातिह़ा व ईसाले षवाब किया जाता है येह जाइज़ है। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم भी हर साल के अव्वल या आख़िर में शुहदाए उहुद के मज़ारों की ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले जाया करते थे हां येह ज़रूर है कि उ़र्सों को ज़मानए ह़ाल के ख़ुराफ़ात व लग़्विय्यात चीज़ों से पाक रखा जाए, जाहिलों को नाजाइज़ कामों से मन्अ़ किया जाए, मन्अ़ करने से भी अगर वोह बाज़ न आएं तो इन नाजाइज़ कामों का गुनाह उन के सर पर होगा इन लग़्विय्यात व ख़ुराफ़ात की वजह से उ़र्स को ह़राम नहीं कहा जा सकता। नाक पर मख्खी बैठ जाए तो मख्खी को उड़ा देना चाहिये नाक काट कर नहीं फैंक दी जाएगी !

ईसाले षवाब

या'नी कु़रआने मजीद की तिलावत या कलिमा शरीफ़ या नफ़्ली नमाज़ों या किसी भी बदनी या माली इ़बादतों का षवाब किसी दूसरे को पहुंचाना येह जाइज़ है। इसी को आ़म तौ़र पर लोग फ़ातिह़ा देना और

फ़ातिह़ा दिलाना कहते हैं, ज़िन्दों के ईसाले षवाब से मुर्दों को फ़ाइदा पहुंचता है। फ़िक़्ह और अ़क़ाइद की किताबों मषलन हिदाया व शर्हे अ़क़ाइदे नस्फ़िय्या में इस का बयान मौजूद है इस को बिदअ़त और नाजाइज़ कहना जहालत और हटधर्मी है। ह़दीष से भी इस का जाइज़ होना षाबित है। चुनान्चे ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वालिदा का जब इन्तिक़ाल हो गया तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी मां का इन्तिक़ाल हो गया उन के लिये कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल है ? हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : पानी बेहतरीन सदक़ा है, तो (हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रमाने के मुत़ाबिक़) ह़ज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कुंवां खुदवा दिया (और उसे अपनी मां की त़रफ़ मन्सूब करते हुए) कहा येह कुंवां सा'द की मां के लिये है (या'नी इस का षवाब उस की रूह़ को मिले)

(مشکوۃ المصابیح، کتاب الزکاۃ،باب فضل الصدقۃ،الفصل الثانی ،رقم۱۹۱۲، ج۱،ص۵۲۷)

इसी त़रह़ एक और ह़दीष में है कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरी मां का अचानक इन्तिक़ाल हो गया और वोह किसी बात की वसिय्यत न कर सकी मेरा गुमान है कि वोह इन्तिक़ाल के वक़्त कुछ बोल सकती तो सदक़ा ज़रूर देती तो अगर मैं उस की त़रफ़ से सदक़ा कर दूं तो क्या उस की रूह़ को षवाब पहुंचेगा ? तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि : हां पहुंचेगा।

(صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ،باب وصول ثواب الصدقۃ۔۔۔الخ،رقم۱۰۰۴،ص۵۰۲)

अ़ल्लामा नववी رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस ह़दीष की शर्ह़ में इरशाद फ़रमाया कि

"इस ह़दीष से षाबित हुवा कि अगर मय्यित की त़रफ़ से सदक़ा दिया जाए तो मय्यित को इस का फ़ाइदा और षवाब पहुंचता है इसी पर उ़-लमा का इत्तिफ़ाक़ है।"

(شرح صحیح مسلم، کتاب الزکاۃ،باب وصول ثواب الصدقۃ۔۔۔الخ، ج۱،ص۳۲۴)

इस के इ़लावा इन ह़दीषों से मुन्दरजए ज़ेल मसाइल भी निहायत ही वाज़ेह़ त़ौर पर षाबित होते हैं।

﴾1﴿ मय्यित के ईसाले षवाब के लिये पानी बेहतरीन सदक़ा है कि कुंवा खुदवा कर या नल लगवा कर या सबील लगा कर इस का षवाब मय्यित को बख़्शा जाए।

﴾2﴿ मय्यित को किसी कारे ख़ैर का षवाब बख़्शना बेहतर और अच्छा काम है चुनान्चे तफ़्सीरे अ़ज़ीज़ी पारह अ़म्मा स. 113 पर है कि

"मुर्दा एक डूबने वाले की त़रह़ किसी फ़रियाद रस के इन्तिज़ार में रहता है ऐसे वक़्त में सदक़ात और दुआ़एं और फ़ातिह़ा इस के बहुत काम आते हैं येही वजह है कि लोग एक साल तक ख़ुसूसन मौत के बा'द एक चिल्ले तक मय्यित को इस क़िस्म की इमदाद पहुंचाने की पूरी पूरी कोशिश करते हैं।"

﴾3﴿ षवाब बख़्शने के अल्फ़ाज़ ज़बान से अदा करना सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सुन्नत है।

﴾4﴿ खाना शीरीनी वग़ैरा सामने रख कर फ़ातिह़ा देना जाइज़ है इस लिये कि ह़ज़रते सा'द رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इशारा क़रीब का लफ़्ज़ इस्ति'माल करते हुए फ़रमाया هٰذِهٖ لِاُمِّ سعد येह कुंवां सा'द की मां के लिये है या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस कुंवें के पानी का षवाब मेरी मां को अ़त़ा फ़रमा इस से मा'लूम हुवा कि कुंवां इन के सामने था।

﴾5﴿ ग़रीब, मिस्कीन को खाना वग़ैरा देने से पहले भी फ़ातिह़ा करना जाइज़ है जैसा कि ह़ज़रते सा'द ने किया कि कुंवां तय्यार होने के साथ ही उन्हों ने षवाब बख़्श दिया ह़ालांकि लोगों के पानी इस्ति'माल करने के बा'द षवाब मिलेगा इसी त़रह़ अगर्चे ग़रीब मिस्कीन को खाना देने के बा'द षवाब मिलेगा लेकिन इस षवाब को पहले ही बख़्श देना जाइज़ है।

﴾6﴿ किसी चीज़ पर मय्यित का नाम आने से वोह चीज़ ह़राम न होगी मषलन ग़ौषे पाक का बकरा या ग़ाज़ी मियां का मुर्ग़ा कहने से बकरा या

मुर्ग़ा ह़राम नहीं हो सकता क्यूंकि ह़ज़रते सा'द सह़ाबी ने उस कुंवें को अपनी मर्हूमा मां के नाम से मन्सूब किया था जो आज तक बिरे उम्मे सा'द ही के नाम से मश्हूर है और दौरे सह़ाबा से आज तक मुसलमान इस का पानी पीते रहे हैं और कोई भी इस का क़ाइल नहीं कि उम्मे सा'द का नाम बोल देने से कुंवें का पानी ह़राम हो गया।

बहर ह़ाल इस बात पर चारों इमामों का इत्तिफ़ाक़ है कि ईसाले षवाब या'नी ज़िन्दों की त़रफ़ से मुर्दों को षवाब पहुंचाना जाइज़ है। अब रहें तख़्सीसात कि तीसरे दिन षवाब पहुंचाना, चालीसवें दिन षवाब पहुंचाना। तो येह तख़्सीसात और दिनों की ख़ुसूसिय्यात न तो शरई तख़्सीसात हैं न कोई भी इन को शरई समझता है क्यूंकि कोई भी येह नहीं कहता कि इसी दिन षवाब पहुंचेगा बल्कि येह तख़्सीसात मह़्ज़ उ़र्फ़ी और रवाजी बात है जो लोगों ने अपनी सहुलत के लिये मुक़र्रर कर रखी है वरना सब जानते हैं कि इन्तिक़ाल के बा'द ही से तिलावते क़ुरआने मजीद और सदक़ातो ख़ैरात का सिलसिला शुरूअ़ हो जाता है और अकषर लोगों के यहां बहुत दिनों तक येह सिलसिला जारी रहता है इन सब बातों के होते हुए येह कैसे कहा जा सकता है कि सुन्नी लोग तीसरे दिन और चालीसवें दिन के सिवा दूसरे दिनों में ईसाले षवाब को नाजाइज़ मानते हैं येह बहुत बड़ा इफ़्तरा और शर्मनाक तोहमत है जो मुख़ालिफ़ीन की त़रफ़ से हम सुन्नी मुसलमानों पर लगाने की कोशिश की जा रही है और ख़्वाह मख़्वाह तीजा और चालीसवें को ह़राम कह कर मुर्दों को षवाब से मह़रूम किया जा रहा है बहर ह़ाल जब हम येह क़ाइदए कुल्लिया बयान कर चुके हैं कि ईसाले षवाब और फ़ातिह़ा जाइज़ है तो ईसाले षवाब के तमाम जुज़इय्यात के अह़काम इसी क़ाइदए कुल्लिया से मा'लूम हो गए मषलन।

तीजे की फ़ातिहा :- मरने से तीसरे दिन बा'द कुरआन ख़्वानी और कलिमए त़य्यिबा पढ़ा जाता है और कुछ बताशे या चने या मिठाइयां तक़्सीम की जाती हैं और इन का षवाब मय्यित की रूह़ को पहुंचाया जाता है चूंकि येह ईसाले षवाब का एक त़रीक़ा है इस लिये जाइज़ और बेहतर है लिहाज़ा इस को करना चाहिये।

चालीसवीं और बरसी की फ़ातिहा :- मरने के चालीसवें दिन बा'द ही कुछ खाना पकवा कर फ़ुक़रा व मसाकीन को खिलाया जाता है और कुरआन ख़्वानी भी की जाती है और इस का षवाब मय्यित की रूह़ को पहुंचाया जाता है इसी त़रह़ एक बरस पूरा हो जाने के बा'द भी खानों और तिलावत वग़ैरा का ईसाले षवाब किया जाता है येह सब जाइज़ और षवाब के काम हैं लिहाज़ा इन को करते रहना चाहिये।

शबे बराअत की फ़ातिहा :- शबे बराअत में ह़ल्वा पकाया जाता है और इस पर फ़ातिहा दिलाई जाती है ह़ल्वा पकाना भी जाइज़ है और इस पर फ़ातिहा दिलाना ईसाले षवाब में दाख़िल है लिहाज़ा येह भी जाइज़ है।

कूंडों की फ़ातिहा :-रजब के महीने में चावल या खीर पका कर कूंडों में रखते हैं और ह़ज़रते जलालुद्दीन बुख़ारी رحمۃ اللہ की फ़ातिहा दिलाते हैं इसी त़रह़ माहे रजब में ह़ज़रते इमामे जा'फ़रे सादिक़ رحمۃ اللہ को ईसाले षवाब करने के लिये पूरियों के कूंडे भरे जाते हैं येह सब जाइज़ और षवाब के काम हैं मगर कूंडों की फ़ातिहा में जाहिलों का येह फ़े'ल मज़्मूम और निरी जहालत है कि जहां कूंडों की फ़ातिहा होती है वहीं खिलाते हैं वहां से हटने नहीं देते येह पाबन्दी ग़लत़ और बेजा है मगर येह जाहिलों का त़रीक़ए अ़मल है पढ़े लिखे लोगों में येह पाबन्दी नहीं इसी त़रह़ कूंडों की फ़ातिहा के वक़्त एक किताब "दास्ताने अ़जीब" लोग पढ़ते हैं इस में जो कुछ लिखा है इस का कोई षुबूत नहीं लिहाज़ा इस को नहीं पढ़ना चाहिये मगर फ़ातिहा दिलाना चाहिये कि येह जाइज़ और षवाब का काम है।

इसी त़रह़ ह़ज़रते ग़ौषे आ'ज़म رحمۃ اللہ व ह़ज़रते मुईनुद्दीन चिश्ती رحمۃ اللہ ह़ज़रते ख़्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबन्द رحمۃ اللہ ह़ज़रते ख़्वाजा शहाबुद्दीन सोहरवर्दी رحمۃ اللہ वग़ैरा तमाम बुज़ुर्गाने दीन की फ़ातिह़ा दिलाना जाइज़ और षवाब का काम है। जो लोग इन बुज़ुर्गों की फ़ातिह़ा से मन्अ़ करते हैं वोह दर ह़क़ीक़त इन बुज़ुर्गों के दुश्मन हैं। लिहाज़ा इन की बातों पर कान नहीं धरना चाहिये न इन लोगों से मेल जोल रखना चाहिये बल्कि निहायत मज़बूती के साथ अपने मज़हबे अहले सुन्नत व जमाअ़त पर क़ाइम रहना चाहिये कि येही मज़हबे ह़क़ है और इस के सिवा जितने फ़िर्क़े हैं वोह सब सिराते़ मुस्तक़ीम से बहके और भटके हुए हैं ख़ुदावन्दे करीम सब को अहले सुन्नत व जमाअ़त के मज़हब पर क़ाइम रखे और इसी मज़हब पर ख़ातिमा बिल ख़ैर फ़रमाए।

آمین یا رب العلمین بحرمۃ النبی الامین وآلہ واصحابہ اجمعین.

फ़ातिह़ा का त़रीक़ा

पहले तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़े फिर कम से कम चारों कुल सूरए फ़ातिह़ा और الٓمٓ से مُفْلِحُوْنَ तक पढ़े इस के बा'द पढ़े

وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝ اور اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝
وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ـــ مَاكَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ
وَ خَاتَمَ النَّبِيّٖنَ وَ كَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝ ـــ اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ط
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝

अब तीन बार दुरूद शरीफ़ पढ़े और

سُبۡحٰنَ رَبِّکَ رَبِّ الۡعِزَّۃِ عَمَّا یَصِفُوۡنَ وَ سَلٰمٌ عَلَی الۡمُرۡسَلِیۡنَ اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ

पढ़ कर बरगाहे इलाही (عَزَّوَجَلَّ) में हाथ उठा कर यूं दुआ करे :

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम ने जो कुछ दुरूद शरीफ़ पढ़ा है और कुरआने मजीद की आयतें तिलावत की हैं इन को क़बूल फ़रमा और इन का षवाब (अगर खाना या शीरीनी भी हो तो इतना और कहे कि इस खाने और शीरीनी का षवाब) हमारी जानिब से हुज़ूर सरवरे काइनात صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नज़्र पहुंचा दे फिर आप के वसीले से तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام व सहाबए उ़ज़्ज़ाम व अज़्वाजे मुत़ह्हरात व अहले बैते अत़्हार व शुहदाए करबला और तमाम औलिया व उ़-लमा व सुलह़ा व शुहदा को अ़त़ा फ़रमा (फिर अगर किसी ख़ास बुज़ुर्ग को ईसाले षवाब करना हो तो उन का नाम ख़ुसूसिय्यत के साथ ले मषलन यूं कहे कि ख़ुसूसन ह़ज़रते ग़ौषे पाक رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه को नज़्र पहुंचा दे) और जुम्ला मोअमिनीन व मोअमिनात की अरवाह़ को षवाब अ़त़ा फ़रमा और किसी आ़म आदमी को ईसाले षवाब करना हो तो उस का ज़िक्र ख़ुसूसिय्यत से करे मषलन यूं कहे कि ख़ुसूसन हमारे वालिद या वालिदा की रूह़ को षवाब पहुंचा दे।

آمین یا رب العلمین وَ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ سَيِّدِنَا وَ مَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ O بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

7

तज़्किरए सालिहात

चन्द नेक औ़रतों का ह़ाल

येही माएं हैं जिन की गोद में इस्लाम पलता था

इसी ग़ैरत से इन्सां नूर के सांचे में ढलता था

जहां तक मसाइल और इस्लामी आ़दात व ख़साइल का तअ़ल्लुक़ है इस के बारे में हम एक ह़द तक काफ़ी लिख चुके। अब हम मुनासिब समझते हैं कि चन्द ख़वातीने इस्लाम या'नी उन मुक़द्दस बीबियों का मुख़्तसर तज़्किरा भी तह़रीर कर दें जो तारीख़े इस्लाम में सालिह़ात (नेक बीबियों) के लक़ब से मश्हूर हैं ताकि आज कल की माओं बहनों को उन के वाक़िआ़त और उन की मुक़द्दस ज़िन्दगी के मुबारक ह़ालात से इ़ब्रत व नसीह़त ह़ासिल हो और येह उन के नक़्शे क़दम पर चल कर अपनी ज़िन्दगी संवार लें और दुन्या व आख़िरत की नेक नामियों से सुर्ख़रू सर बुलन्द हो जाएं। उन क़ाबिले एह़तिराम ख़वातीन की लज़ीज़ ह़िकायतों को हम रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस बीबियों के ज़िक्रे जमील से शुरूअ़ करते हैं जो तमाम उम्मत की माएं हैं और जिन को तमाम दुन्या की औ़रतों में येह ख़ुसूसी शरफ़ मिला है कि उन्हें बिस्तरे नुबुव्वत पर सोना नसीब हुवा और वोह दिन रात मह़बूबे ख़ुदा (صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) की मह़ब्बत और इन की ख़िदमत व सोह़बत के अन्वार व बरकात से सरफ़राज़ होती रहीं और जिन की फ़ज़ीलत व अ़ज़्मत का ख़ुत़्बा पढ़ते हुए क़ुरआने अ़ज़ीम ने क़ियामत तक के लिये येह ए'लान फ़रमा दिया।

یٰنِسَآءَ النَّبِیِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ .(پ۲۲،الاحزاب:۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- *ऐ नबी की बीबियो ! तुम और औ़रतों की त़रह़ नहीं हो।*

﴾1﴿ हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

येह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم की सब से पहली बीवी और रफ़ीक़ए ह़यात हैं। येह ख़ानदाने क़ुरैश की बहुत ही बा वक़ार व मुमताज़ ख़ातून हैं, इन के वालिद का नाम ख़ुवैलद बिन असद और इन की मां का नाम फ़ातिमा बिन्ते ज़ाइदा है, इन की शराफ़त और पाक दामनी की बिना पर तमाम मक्का वाले इन को "त़ाहिरा" के लक़ब से पुकारा करते थे, इन्हों ने हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के अख़्लाक़ व आ़दात और जमाले सूरत व कमाले सीरत को देख कर ख़ुद ही आप से निकाह़ की रग़बत ज़ाहिर की चुनान्चे अशरफ़े क़ुरैश के मजमअ़ में बाक़ाइ़दा निकाह़ हुवा। येह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم की बहुत ही जां निषार और वफ़ा शिआ़र बीवी हैं और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم को इन से बहुत ही बे पनाह मह़ब्बत थी चुनान्चे जब तक येह ज़िन्दा रहीं आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم ने किसी दूसरी औ़रत से निकाह़ नहीं फ़रमाया और येह मुसलसल पचीस साल तक मह़बूबे ख़ुदा की जां निषार व ख़िदमत गुज़ारी के शरफ़ से सरफ़राज़ रहीं। हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को भी इन से इस क़दर मह़ब्बत थी कि इन की वफ़ात के बा'द आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم अपनी मह़बूब तरीन बीवी ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया करते थे कि ख़ुदा की क़सम ! ख़दीजा से बेहतर मुझे कोई बीवी नहीं मिली जब सब लोगों ने मेरे साथ कुफ़्र किया उस वक़्त वोह मुझ पर ईमान लाईं और जब सब लोग मुझे झुटला रहे थे उस वक़्त उन्हों ने मेरी तस्दीक़ की और जिस वक़्त कोई शख़्स मुझे कोई चीज़ देने के लिये तय्यार न था उस वक़्त ख़दीजा ने मुझे अपना सारा सामान दे दिया और उन्हीं के शिकम से **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे अवलाद अ़त़ा फ़रमाई।

(شرح العلامۃ الزرقانی علی المواھب اللدنیۃ،حضرت خدیجۃ ام المؤمنین رضی اللہ عنھا،ج ٤،ص ٣٦٢

و"الاستیعاب"،کتاب النساء ٣٣٤٧،خدیجۃ بنت خویلد،ج ٤،ص ٣٧٩)

इस बात पर सारी उम्मत का इत्तिफ़ाक़ है कि सब से पहले हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की नुबुव्वत पर येही ईमान लाईं और इब्तिदाए इस्लाम में जब कि हर त़रफ़ आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मुख़ालफ़त का तूफ़ान उठा हुवा था ऐसे ख़ौफ़नाक और कठिन वक़्त में सिर्फ़ एक ह़ज़रते ख़दीजा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की ही ज़ात थी जो परवानों की त़रह़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर क़ुरबान हो रही थीं और इतने ख़त़रनाक अवक़ात में जिस इस्तिक़्लाल व इस्तिक़ामत के साथ इन्हों ने ख़त़रात व मसाइब का मुक़ाबला किया, इस ख़ुसूसिय्यत में तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात पर इन को एक मुमताज़ फ़ज़ीलत ह़ासिल है।

इन के फ़ज़ाइल में बहुत सी ह़दीषें भी आई हैं चुनान्चे हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तमाम दुन्या की औ़रतों में सब से ज़ियादा अच्छी और बा कमाल चार बीबियां हैं : एक ह़ज़रते मरयम, दूसरी आसिया (फ़िरऔ़न की बीवी) तीसरी ह़ज़रते ख़दीजा, चौथी ह़ज़रते फ़ात़िमा (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ)

एक मरतबा ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام दरबारे नुबुव्वत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि ऐ मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) येह ख़दीजा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا हैं जो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पास एक बरतन में खाना ले कर आ रही हैं जब येह आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पास आ जाएं तो इन से इन के रब عَزَّ وَجَلَّ का और मेरा सलाम कह दीजिये और इन को येह ख़ुश ख़बरी सुना दीजिये कि जन्नत में इन के लिये मोती का एक घर बना है जिस में न कोई शोर होगा न कोई तक्लीफ़ होगी।

(صحیح البخاری، کتاب مناقب الانصار، باب تزویج النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم خدیجۃ، رقم ۳۸۲۰، ج۲، ص ۵۶۵)

सरकारे दो जहां صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन की वफ़ात के बा'द बहुत सी औ़रतों से निकाह़ फ़रमाया लेकिन ह़ज़रते ख़दीजा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की मह़ब्बत आख़िर उ़म्र तक हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के क़ल्बे मुबारक में रची बसी रही यहां तक कि इन की वफ़ात के बा'द जब भी हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के घर में कोई बकरी ज़ब्ह़ होती

तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सहेलियों के यहां भी ज़रूर गोश्त भेजा करते थे और हमेशा आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बार बार हज़रते बीबी ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का ज़िक्र फ़रमाते रहते थे। हिजरत से तीन बरस क़ब्ल पैंसठ बरस की उम्र पा कर माहे रमज़ान में मक्कए मुकर्रमा के अन्दर इन्हों ने वफ़ात पाई और मक्कए मुकर्रमा के मशहूर क़ब्रिस्तान हजून (जन्नतुल मा'ला) में ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की क़ब्रे अन्वर में उतर कर अपने मुक़द्दस हाथों से इन को सिपुर्दे ख़ाक फ़रमाया। उस वक़्त तक नमाज़े जनाज़ा का हुक्म नाज़िल नहीं हुवा था इस लिये हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की नमाज़ नहीं पढ़ाई। हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की वफ़ात से तीन या पांच दिन पहले हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा अबू तालिब का इन्तिक़ाल हो गया था। अभी चचा की वफ़ात के सदमे से हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم गुज़रे ही थे कि हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का इन्तिक़ाल हो गया इस सानिहे का क़ल्बे मुबारक पर इतना ज़बरदस्त सदमा गुज़रा कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस साल का नाम "आमुल हुज़्न"(ग़म का साल) रख दिया।

तबसिरा :- हज़रते उम्मुल मोअमिनीन बीबी ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की मुक़द्दस ज़िन्दगी से मां बहनों को सबक़ हासिल करना चाहिये कि इन्हों ने कैसे कठिन और मशक़्क़त के दौर में हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर अपना तन मन धन सब कुछ क़ुरबान कर दिया और सीना सिपर हो कर तमाम मसाइब व मुशकिलात का मुक़ाबला किया और पहाड़ की तरह ईमान व अमले सालेह पर षाबित क़दम रहीं और मसाइब व आलाम के तूफ़ान में निहायत ही जां निषारी के साथ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की दिलजोई और तस्कीने क़ल्ब का सामान करती रहीं और इन की इन क़ुरबानियों का दुन्या ही में इन को येह सिला मिला कि रब्बुल आलमीन का सलाम इन के नाम ले कर हज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام नाज़िल हुवा करते थे। इस से मा'लूम हुवा कि मुश्किलात व

परेशानियों में अपने शोहर की दिलजोई और तसल्ली देने की आ़दत ख़ुदा के नज़्दीक महबूब व पसन्दीदा ख़स्लत है लेकिन अफ़्सोस कि इस ज़माने में मुसलमान औ़रतें अपने शोहरों की दिलजोई तो कहां ? उलटे अपने शोहरों को परेशान करती रहती हैं। कभी त़रह़ त़रह़ की फ़रमाइशें कर के कभी झगड़ा तकरार कर के कभी ग़ुस्से में मुंह फुला कर।

इस्लामी बहनो ! तुम्हें ख़ुदा का वासित़ा दे कर कहता हूं कि अपने शोहरों का दिल न दुखाओ और इन को परेशानियों में न डाला करो बल्कि आड़े वक़्तों में अपने शोहरो को तसल्ली दे कर इन की दिलजोई किया करो।

(2) ह़ज़रते सौदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا

येह हमारे हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस बीवी और तमाम उम्मत की मां हैं, इन के बाप का नाम "ज़मआ़" और मां का नाम "शमूस बिन्ते उ़मर" है, येह भी क़ुरैश ख़ानदान की बहुत ही नामवर और मुअ़ज़्ज़ज़ औ़रत हैं येह पहले अपने चचाज़ाद भाई "सकरान बिन उ़मर" से बियाही गई थीं और इस्लाम की शुरूआ़त ही में येह दोनों मियां बीवी मुसलमान हो गए थे लेकिन जब ह़ब्शा से वापस हो कर दोनों मियां बीवी मक्कए मुकर्रमा में आ कर रहने लगे तो इन के शोहर का इन्तिक़ाल हो गया और हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم भी ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के इन्तिक़ाल के बा'द रात दिन मग़्मूम रहा करते थे। येह देख कर ह़ज़रते ख़ौला बिन्ते ह़कीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में येह दरख़्वास्त पेश की, कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सौदा बिन्ते ज़मआ़ से निकाह़ फ़रमा लें ताकि आप का ख़ानए मईशत आबाद हो जाए, ह़ज़रते सौदा बहुत ही दीनदार और सलीक़ा शिआ़र ख़ातून हैं और बेह़द ख़िदमत गुज़ार भी हैं आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ख़ौला के इस मुख़्लिसाना मश्वरे को क़बूल फ़रमा लिया चुनान्चे ह़ज़रते ख़ौला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने ह़ज़रते सौदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के बाप से बात चीत कर के निस्बत त़ै करा दी और निकाह़ हो गया और येह उ़म्र भर हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ौजिय्यत

के शरफ़ से सरफ़राज़ रहीं और जिस वालिहाना महब्बत व अ़क़ीदत के साथ वफ़ादारी व ख़िदमत गुज़ारी का ह़क़ अदा किया वोह इन का बहुत ही शानदार कारनामा है। ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के साथ हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत को देख कर इन्हों ने अपनी बारी का दिन ह़ज़रते आ़इशा को दे दिया था। ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا फ़रमाया करती थीं कि किसी औ़रत को देख कर मुझ को येह ह़िर्स नहीं होती थी कि मैं भी वैसी ही होती मगर मैं ह़ज़रते सौदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के जमाले सूरत व हु़स्ने सीरत को देख कर येह तमन्ना किया करती थी कि काश ! मैं भी ह़ज़रते सौदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا जैसी होती ! येह अपनी दूसरी ख़ूबियों के साथ बहुत फ़य्याज़ और आ'ला दर्जे की सख़ी थीं। एक मरतबा अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में दिरहमों से भरा हुवा एक थैला ह़ज़रते बीबी सौदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के पास भेज दिया उन्हों ने इस थैले को देख कर कहा कि वाह ! भला खजूरों के थैले में कहीं दिरहम भेजे जाते हैं ? येह कहा और उठ कर उसी वक़्त उन तमाम दिरहमों को मदीनए मुनव्वरा के फ़ुक़रा व मसाकीन को घर में बुला कर बांट दिया और थैला ख़ाली कर दिया। इमाम बुख़ारी और इमाम ज़हबी का क़ौल है कि 33 हि. में मदीनए मुनव्वरा के अन्दर इन की वफ़ात हुई लेकिन वाक़िदी और साह़िबे अकमाल के नज़्दीक इन की वफ़ात का साल 54 हि. है मगर अ़ल्लामा इब्ने ह़ज़र अ़स्क़लानी ने तक़्रीबुत्तहज़ीब में इन की वफ़ात का साल 55 हि. शव्वाल का महीना लिखा है। इन की क़ब्रे मुनव्वर मदीनए मुनव्वरा के क़ब्रिस्तान जन्नतुल बक़ीअ़ में है।

(شرح العلامۃ الزرقانی علی المواھب ،حضرت سودۃ ام المؤمنین، ج ٤،ص ٣٧٧)

तबसिरा :- ग़ौर करो कि ह़ज़रते बीबी ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا के बा'द ह़ज़रते सौदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا ने किस त़रह़ हु़ज़ूर عَلَیۡہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ग़म को ग़लत़ किया और किस त़रह़ काशानए नुबुव्वत को संभाला कि क़ल्बे मुबारक मुत़मइन हो गया और फिर इन की महब्बते रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

पर एक नज़र डालो कि इन्हों ने हुज़ूर की खुशी के लिये अपनी बारी का दिन किस खुश दिली के साथ अपनी सोत ह़ज़रते बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को दे दिया फिर इन की फ़य्याज़ी और सख़ावत भी देखो दिरहमों से भरे हुवे थैले को चन्द मिनटों में फ़ुक़रा व मसाकीन के दरमियान तक़्सीम कर दिया और अपने लिये एक दिरहम भी न रखा।

मां बहनो ! खुदा के लिये इन उम्मत की माओं के त़र्ज़े अ़मल से सबक़ सीखो और नेक बीबियों की फ़ेहरिस्त में अपना नाम लिखाओ, ह़सद और कन्जूसी न करो और कामचोर न बनो।

﴾3﴿ ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا

येह अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की साहि़बज़ादी हैं, इन की मां का नाम "उम्मे रूमान" है। इन का निकाह़ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से क़ब्ले हिजरत मक्कए मुकर्रमा में हुवा था लेकिन काशानए नुबुव्वत में येह मदीनए मुनव्वरा के अन्दर शव्वाल 2 हि. में आईं। येह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़बूबा और बहुत ही चहीती बीवी हैं।

(شرح العلامۃ الزرقانی،حضرت عائشۃ ام المؤمنین رضی اللہ عنہا،ج٤،ص ٣٨١۔٣٨٢،٣٨٥)

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इन के बारे में इरशाद है कि किसी बीवी के लिह़ाफ़ में मेरे ऊपर वह़्य नहीं उतरी मगर ह़ज़रते आ़इशा जब मेरे साथ नुबुव्वत के बिस्तर पर सोती रहती हैं तो इस ह़ालत में भी मुझ पर वह़्य उतरती रहती है।

(صحیح البخاری،کتاب فضائل اصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم،باب فضل عائشۃ رضی اللہ عنہا،رقم ٣٧٧٥،ج٢،ص ٥٥٢)

फ़िक़्ह व ह़दीष के उ़लूम में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बीबियों के दरमियान इन का दर्जा बहुत ऊंचा है। बड़े बड़े सह़ाबा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان इन से मसाइल पूछा करते थे। इ़बादत में इन का येह आ़लम था कि नमाज़े तहज्जुद की बेह़द पाबन्द थीं और नफ़्ली रोज़े भी बहुत ज़ियादा रखती थीं। सख़ावत और सदक़ात व ख़ैरात के मुआ़मले में भी हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सब बीबियों में ख़ास त़ौर पर बहुत मुमताज़ थीं। उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا

कहती हैं कि एक मरतबा कहीं से एक लाख दिरहम इन के पास आए आप ने उसी वक़्त उन सब दिरहमों को ख़ैरात कर दिया। उस दिन वोह रोज़ादार थीं। मैं ने अ़र्ज़ किया कि आप ने सब दिरहमों को बांट दिया और एक दिरहम भी आप ने बाक़ी नहीं रखा कि इस से आप गोश्त ख़रीद कर रोज़ा इफ़्तार करतीं तो आप ने फ़रमाया कि अगर तुम ने पहले कहा होता तो मैं एक दिरहम का गोश्त मंगा लेती। आप के फ़ज़ाइल में बहुत सी ह़दीषें आई हैं। 17 रमज़ान मंगल की रात में 57 हि. या 58 हि. में मदीनए मुनव्वरा के अन्दर आप की वफ़ात हुई। ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और रात में दूसरी अज़्वाजे मुत़ह्हरात के पहलू में जन्नतुल बक़ीअ़ के अन्दर मदफ़ून हुईं।

(شرح العلامة الزرقانی علی المواھب،حضرت عائشة ام المؤمنین رضی اللہ عنہا،ج ۴،ص ۳۸۹ـ۳۹۲)

तबसिरा :- येह उ़म्र में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की तमाम बीबियों में सब से छोटी थीं मगर इ़ल्मो फ़ज़्ल, ज़ोहद व तक़्वा, सख़ावत व शुजाअ़त, इ़बादत व रियाज़त में सब से बढ़ कर हुईं इस को फ़ज़्ले ख़ुदावन्दी के सिवा और क्या कहा जा सकता है ? बहर ह़ाल प्यारी बहनो ! ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ज़िन्दगी से सबक़ ह़ासिल करो और अच्छे अच्छे अ़मल करती रहो और अपने शोहरों को ख़ुश रखो।

﴾4﴿ ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

येह भी रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस बीवी और उम्मत की माओं में से हैं। येह ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बुलन्द इक़्बाल साहि़बज़ादी हैं और इन की वालिदा का नाम ज़ैनब बिन्ते मज़ऊ़न है जो एक मश्हूर सह़ाबिया हैं। येह पहले ह़ज़रते ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा सहमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजिय्यत में थीं और मियां बीवी दोनों हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा चले गए थे मगर इन के शोहर जंगे उहुद में ज़ख़्मी हो कर वफ़ात पा गए तो 3 हि. में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन से निकाह़ फ़रमा लिया। येह भी

बहुत ही शानदार बुलन्द हिम्मत और सख़ी औ़रत थीं और फ़हम व फ़िरासत और ह़कगोई व ह़ाज़िर जवाबी में अपने वालिद ही का मिज़ाज पाया था। अकषर रोज़ादार रहा करती थीं और तिलावते कु़रआने मजीद और दूसरी क़िस्म क़िस्म की इ़बादतों में मसरूफ़ रहा करती थीं। इ़बादत गुज़ार होने के साथ साथ फ़िक़ह व ह़दीष के उ़लूम में भी बहुत मा'लूमात रखती थीं। शा'बान 45 हि. में मदीनए मुनव्वरा के अन्दर इन की वफ़ात हुई, ह़ाकिमे मदीना मरवान बिन ह़कम ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और इन के भतीजों ने क़ब्र में उतारा और जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़्न हुईं ब वक़्ते वफ़ात इन की उ़म्र साठ या तिरसठ बरस की थी।

(شرح العلامة الزرقاني، حضرت حفصه ام المؤمنين رضى الله عنها، ج ٤، ص ٣٩٣-٣٩٦)

तबसिरा :- घरेलू काम धंदा संभालते हुए रोज़ाना इतनी इ़बादत भी करनी फिर ह़दीष व फ़िक़ह के उ़लूम में भी महारत ह़ासिल करनी येह इस बात की दलील है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ و اٰلِه وَسَلَّم की बीबियां आराम पसन्द और खेल कूद में ज़िन्दगी बसर करने वाली नहीं थीं बल्कि दिन रात का एक मिनट वोह ज़ाएअ़ नहीं करती थीं और दिन रात घर के काम काज या इ़बादत या शोहर की ख़िदमत या इ़ल्म ह़ासिल करने में मसरूफ़ रहा करती थीं سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन ख़ुश नसीब बीबियों की ज़िन्दगी नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ و اٰلِه وَسَلَّم के निकाह़ में होने की बरकत से कितनी मुक़द्दस किस क़दर पाकीज़ा और किस दर्जे नूरानी ज़िन्दगी थी। मां बहनो ! काश तुम्हारी ज़िन्दगी में भी इन उम्मत की माओं की ज़िन्दगी की चमक दमक या हलकी सी भी झलक होती तो तुम्हारी ज़िन्दगी जन्नत का नुमूना बन जाती और तुम्हारी गोद में ऐसे बच्चे और बच्चियां परवरिश पाते जिन की इस्लामी शान और ज़ाहिदाना ज़िन्दगी की अ़ज़मत को देख कर आस्मानों के फ़िरिश्ते दुआ़ करते और जन्नत की हूरें तुम्हारे लिये "आमीन" कहतीं मगर हाए अफ़्सोस की तुम को तो अच्छा खाने, अच्छे लिबास बनाव-सिंगार कर के पलंग पर दिन रात लैटने, रेडियो का गाना सुनने से इतनी फ़ुर्सत ही कहां कि तुम इन

उम्मत की माओं के नक़्शे क़दम पर चलो। ख़ुदावन्दे करीम तुम्हें हिदायत दे इस दुआ़ के सिवा हम तुम्हारे लिये और क्या कर सकते हैं? काश तुम हमारी इन मुख़्लिसाना नसीह़तों पर अ़मल कर के अपनी ज़िन्दगी को इस्लामी सांचे में ढाल लो और उम्मत की नेक बीबियों की फेहरिस्त में अपना नाम लिखा कर दोनों जहान में सुर्ख़रू हो जाओ।

﴾5﴿ ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

इन का नाम "हिन्द" और कुन्यत "उम्मे सलमा" है लेकिन येह अपनी कुन्यत ही के साथ ज़ियादा मश्हूर हैं। इन के वालिद का नाम "हुज़ैफ़ा" या "सुहैल" और इन की वालिदा "आ़तिका बिन्ते आ़मिर" हैं येह पहले अबू सलमा अ़ब्दुल्लाह बिन असद से बियाही गई थीं और येह दोनों मियां बीवी मुसलमान हो कर पहले "ह़ब्शा" हिजरत कर गए फिर ह़ब्शा से मक्कए मुकर्रमा चले आए और मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ हिजरत करने का इरादा किया चुनान्चे अबू सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ऊंट पर कजावा बांधा और बीबी उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को ऊंट पर सुवार कराया और वोह अपने दूध पीते बच्चे को गोद में ले कर ऊंट पर बिठा दी गईं तो एक दम ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के मैके वाले बनू मुग़ीरा दौड़ पड़े और उन लोगों ने येह कह कर कि हमारे ख़ानदान की लड़की मदीना नहीं जा सकती ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को ऊंट से उतार डाला येह देख कर ह़ज़रते अबू सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ख़ानदान वालों को त़ैश आ गया और उन लोगों ने ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की गोद से बच्चे को छीन लिया और येह कहा कि येह बच्चा हमारे ख़ानदान का है इस लिये हम इस बच्चे को हरगिज़ हरगिज़ तुम्हारे पास नहीं रहने देंगे इस त़रह़ बीवी और बच्चा दोनों ह़ज़रते अबू सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से जूदा हो गए मगर ह़ज़रते अबू सलमा ने हिजरत का इरादा नहीं छोड़ा बल्कि बीवी और बच्चा दोनों को ख़ुदा के सिपुर्द कर के तन्हा मदीनए मुनव्वरा चले गए। ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا शोहर और बच्चे की जुदाई पर दिन रात रोया करती थीं

इन का येह ह़ाल देख इन के एक चचाज़ाद भाई को रह़्म आ गया और उस ने बनू मुग़ीरा को समझाया कि आख़िर इस ग़रीब औ़रत को तुम लोगों ने इस के शोहर और बच्चे से क्यूं जुदा कर रखा है ? क्या तुम लोग येह नहीं देख रहे हो कि वोह एक पथ्थर की चट्टान पर एक हफ़्ते से अकेली बैठी हुई बच्चे और शोहर की जुदाई में रोया करती है आख़िर बनू मुग़ीरा के लोग इस पर रिज़ा मन्द हो गए कि उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا अपने बच्चे को ले कर अपने शोहर के पास मदीने चली जाए फिर ह़ज़रते अबू सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ख़ानदान वालों ने भी बच्चे को ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के सिपुर्द कर दिया और ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا बच्चे को गोद में ले कर हिजरत के इरादे से ऊंट पर सुवार हो गईं मगर जब मक़ामे "तनईम" में पहुंचीं तो उ़षमान बिन त़ल्ह़ा रास्ते में मिला जो मक्का का माना हुवा एक निहायत ही शरीफ़ इन्सान था उस ने पूछा कि उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا कहां का इरादा है ? उन्हों ने कहा कि मैं अपने शोहर के पास मदीना जा रही हूं उस ने कहा कि क्या तुम्हारे साथ कोई दूसरा नहीं है ? ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने दर्दभरी आवाज़ में जवाब दिया : मेरे साथ मेरे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और मेरे इस बच्चे के सिवा दूसरा कोई नहीं है । येह सुन कर उ़षमान बिन त़ल्ह़ा को शरिफ़ाना जज़्बा आ गया और उस ने कहा कि ख़ुदा की क़सम मेरे लिये येह ज़ैब नहीं देता कि तुम्हारे जैसी एक शरीफ़ ज़ादी और एक शरीफ़ इन्सान की बीवी को तन्हा छोड़ दूं येह कह कर उस ने ऊंट की मुहार अपने हाथ में ली और पैदल चलने लगा ।

ह़ज़रते उम्मे सलमा का बयान है कि ख़ुदा कि क़सम मैं ने उ़षमान बिन त़ल्ह़ा से ज़ियादा शरीफ़ किसी अ़रब को नहीं पाया, जब हम किसी मंज़िल पर उतरते तो वोह अलग दूर जा कर किसी दरख़्त के नीचे सो रहता और मैं अपने ऊंट पर सुवार रहती फिर चलने के वक़्त वोह ऊंट की मुहार हाथ में ले कर पैदल चलने लगता । इसी त़रह़ उस ने मुझे "क़ुबा" तक पहुंचा दिया और येह कह कर वापस मक्का चला गया

कि अब तुम चली जाओ तुम्हारा शोहर इसी गाऊं में है चुनान्चे ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बख़ैरिय्यत मदीना पहुंच गईं ।

(شرح العلامۃ الزرقانی،حضرت ام سلمۃ ام المؤمنین رضی اللہ عنہا،ج ٤،ص٣٩٦۔٣٩٨)

फिर दोनों मियां बीवी मदीने में रहने लगे, चन्द बच्चे भी हो गए । शोहर का इन्तिक़ाल हो गया तो ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बड़ी बे कसी में पड़ गईं । चन्द छोटे छोटे बच्चों के साथ बेवगी में ज़िन्दगी बसर करना दुश्वार हो गया । इन का येह ह़ाले ज़ार देख कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन से निकाह़ फ़रमा लिया और बच्चों को अपनी परवरिश में ले लिया इस त़रह़ येह हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के घर आ गईं और तमाम उम्मत की मां बन गईं । ह़ज़रते बीबी उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अ़क्लो फ़ह्म, इ़ल्मो अ़मल, दियानत व शुजाअ़त के कमाल का एक बे मिषाल नुमूना थीं और फ़िक़्ह व ह़दीष की मा'लूमात का येह आ़लम था कि तीन सो अठत्तर ह़दीषें इन्हें ज़बानी याद थीं । मदीनए मुनव्वरा में चौरासी बरस की उ़म्र पा कर वफ़ात पाई । इन के विसाल के साल में बड़ा इख़्तिलाफ़ है बा'ज़ मुअर्रिख़ीन ने 53 हि. बा'ज़ 59 हि. बा'ज़ ने 62 हि. लिखा है और बा'ज़ का क़ौल है कि इन का इन्तिक़ाल 63 हि. के बा'द हुवा है इन की क़ब्र मुबारक जन्नतुल बक़ीअ़ में है ।

(شرح العلامۃ الزرقانی،حضرت ام سلمۃ ام المؤمنین رضی اللہ عنہا،ج ٤،ص٣٩٩۔٤٠٣)

तबसिरा :- अल्लाहु अकबर ह़ज़रते बीबी उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ज़िन्दगी सब्रो इस्तिक़ामत, जज़्बए ईमानी, जोशे इस्लामी, ज़ाहिदाना ज़िन्दगी, इ़ल्मो अ़मल, मेह़नत व जफ़ाकशी, अ़क़्लो फ़ह्म का एक ऐसा शाहकार है जिस की मिषाल मुश्किल ही से मिल सकेगी । इन के कारनामों और बहादुरी की दास्तानों को तारीख़े इस्लाम के अवराक़ में पढ़ कर येह कहना पड़ता है कि ऐ आस्मान बोल ! ऐ ज़मीन बता ! क्या तुम ने ह़ज़रते उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا जैसी शेर दिल और पैकरे ईमान औ़रत को इन से पहले कभी देखा था

मां बहनो ! तुम प्यारे नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी बीबियों की ज़िन्दगी से सबक़ ह़ासिल करो और ख़ुदा के लिये सोचो कि वोह क्या थीं ? और तुम क्या हो ? तुम भी मुसलमान औ़रत हो ख़ुदा के लिये कुछ तो इन की ज़िन्दगी की झलक दिखाओ।

﴾6﴿ ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا

येह सरदारे मक्का ह़ज़रते अबू सुफ़्यान رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की बेटी और ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की बहन हैं इन की मां "सफ़िय्या बिन्ते आ़स" हैं जो अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की फूफी हैं। ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا का निकाह़ पहले उ़बैदुल्लाह बिन जह़श से हुवा था और मीयां बीवी दोनों इस्लाम क़बूल कर के ह़ब्शा की त़रफ़ हिजरत कर के चले गए थे मगर ह़ब्शा जा कर उ़बैदुल्लाह बिन जह़श नस्रानी हो गया और ईसाइयों की सोह़बत में शराब पीते पीते मर गया लेकिन उम्मे ह़बीबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا अपने ईमान पर क़ाइम रहीं और बड़ी बहादुरी के साथ मसाइब व मुश्किलात का मुक़ाबला करती रहीं जब हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को इन के ह़ाल की ख़बर हुई तो क़ल्बे नाज़ुक पर बेह़द सदमा गुज़रा और आप ने ह़ज़रते अ़म्र बिन उमय्या ज़मिरी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को इन की दिलजोई के लिये ह़ब्शा भेजा और नज्जाशी बादशाह ह़ब्शा के नाम ख़त़ भेजा कि तुम मेरे वकील बन कर ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के साथ मेरा निकाह़ कर दो। नज्जाशी बादशाह ने अपनी लौंडी "अबरहा" के ज़रीए़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के पास भेजा जब ह़ज़रते बीबी उम्मे ह़बीबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने येह ख़ुश ख़बरी का पैग़ाम सुना तो ख़ुश हो कर अबरहा लौंडी को इन्आ़म के त़ौर पर अपना ज़ेवर उतार कर दे दिया फिर अपने मामूज़ाद भाई ह़ज़रते ख़ालिद बिन सईद رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को अपने निकाह़ का वकील बना कर नज्जाशी बादशाह के पास भेज दिया और उन्हों ने बहुत से मुहाजिरीन को जम्अ़

कर के ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का निकाह़ हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ कर दिया और अपने पास से महर भी अदा कर दिया और फिर पूरे ए'ज़ाज़ के साथ ह़ज़रते शरजील बिन ह़सना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ मदीनए मुनव्वरा हु़ज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के पास भेज दिया और येह हु़ज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मुक़द्दस बीवी और तमाम मुसलमानों की मां बन कर हु़ज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ख़ानए नुबुव्वत में रहने लगीं। येह सख़ावत व शुजाअ़त, दीनदारी और अमानत व दियानत के साथ बहुत ही क़वी ईमान वाली थीं। एक मरतबा इन के बाप अबू सुफ़्यान जो अभी काफ़िर थे मदीने में इन के घर आए और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बिस्तर पर बैठ गए। ह़ज़रते उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने ज़रा भी बाप की परवाह नहीं की और बाप को बिस्तर से उठा दिया और कहा कि मैं हरगिज़ येह गवारा नहीं कर सकती कि एक नापाक मुशरिक रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इस पाक बिस्तर पर बैठे इसी त़रह़ इन के जोशे ईमानी और जज़्बए इस्लामी के वाकिआ़त अ़जीबो ग़रीब हैं जो तारीख़ों में लिखे हुए हैं बहुत ही दीनदार और पाकीज़ा औ़रत थीं बहुत सी ह़दीषें भी याद थीं और इन्तिहाई इ़बादत गुज़ार और हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बे इन्तिहा ख़िदमत गुज़ार और वफ़ादार बीवी थीं 44 हि. में मदीनए मुनव्वरा के अन्दर इन की वफ़ात हुई और जन्नतुल बक़ीअ़ के क़ब्रिस्तान में दूसरी अज़्वाजे मुत़ह्हरात के ख़त़ीरे में मदफ़ून हुई। (شرح العلامۃ الزرقانی،حضرت ام حبیبہ رضی اللہ عنہا،ج۴،ص۴۰۳ و مدارج النبوت،ج۲،ص۴۸۱)

तबसिरा :- **अल्लाहु अकबर** ! ह़ज़रते बीबी उम्मे ह़बीबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की ज़िन्दगी कितनी इ़ब्रतख़ेज़ और तअ़ज्जुब अंगेज़ है। सरदारे मक्का की शहज़ादी हो कर दीन के लिये अपना वत़न छोड़ कर ह़ब्शा की दूर दराज़ जगह में हिजरत कर के चली जाती हैं और पनाह गुज़ीनों की एक झोपड़ी में रहने लगती हैं। फिर बिल्कुल ना गहां येह मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ता है कि शोहर जो परदेस की जमीन में तन्हा एक सहारा था। ईसाई हो कर अलग थलग हो गया और कोई दूसरा

सहारा न रह गया मगर ऐसे नाज़ुक और ख़ृतरनाक वक़्त में भी ज़रा भी इन का क़दम नहीं डगमगाया और पहाड़ की त़रह़ दीने इस्लाम पर क़ाइम रहीं। एक ज़रा भी इन का ह़ौसला पस्त नहीं हुवा न इन्हों ने अपने काफ़िर बाप को याद किया न अपने काफ़िर भाइयों भतीजों से कोई मदद त़लब की। ख़ुदा पर तवक्कुल कर के नामानूस परदेस की ज़मीन में पड़ी ख़ुदा की इ़बादत में लगी रहीं यहां तक कि ख़ुदा के फ़ज़्लो करम और रह़मतुल्लिल आ़लमीन की रह़मत ने इन की दस्तगीरी की और बिल्कुल अचानक ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने इन को अपने मह़बूब की मह़बूबा बीबी और सारी उम्मत की मां बना दिया कि क़ियामत तक सारी दुन्या इन को उम्मुल मोअमिनीन (मोमिनों की मां) कह कर पुकारती रहेगी और क़ियामत में भी सारी ख़ुदाई ख़ुदा के इस फ़ज़्लो करम का तमाशा देखेगी।

ऐ मुसलमान औ़रतो ! देखो ईमान पर मज़बूत़ी के साथ क़ाइम रहने और ख़ुदा पर तवक्कुल करने का फल कितना मीठा और किस क़दर लज़ीज़ होता है ? और येह तो दुन्या में अज्र मिला है अभी आख़िरत में इन को क्या क्या अज्र मिलेगा ? और कैसे कैसे दर्जात की बादशाही मिलेगी ? इस को ख़ुदा के सिवा कोई नहीं जानता हम लोग तो इन दर्जों और मर्तबों की बुलन्दी व अ़ज़मत को सोच भी नहीं सकते।

अल्लाहु अक्बर ! अल्लाहु अक्बर !

﴾7﴿ ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

येह हु़ज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की फूफी उमैमा बिन्ते अ़ब्दुल मुत्त़लिब की बेटी हैं। हु़ज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अपने आज़ाद कर्दा ग़ुलाम और मुतबन्ना ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिषा से इन का निकाह़ कर दिया लेकिन ख़ुदा की शान के मियां बीवी में निबाह न हो सका और ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इन को त़लाक़ दे दी जब इन की इ़द्दत गुज़र गई तो अचानक एक दिन येह आयत उतर पड़ी कि

فَلَمَّا قَضٰی زَیْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا (پ۲۲،الاحزاب:۳۷)

***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :–** फिर जब ज़ैद की ग़र्ज़ इस से निकल गई तो हम ने वोह तुम्हारे निकाह़ में दे दी।*

इस आयत के नुज़ूल होने पर रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुस्कुराते हुए इरशाद फ़रमाया कि कौन है जो ज़ैनब के पास जा कर उस को येह खुश ख़बरी सुना दे कि **अल्लाह** तआ़ला ने मेरा निकाह़ उस के साथ कर दिया। येह सुन कर एक ख़ादिमा दौड़ी हुई गई और ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को येह खुश ख़बरी सुना दी। ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا येह खुश ख़बरी सुन कर इतनी खुश हुई कि अपने ज़ेवरात उतार कर ख़ादिमा को इन्आ़म में दे दिये और खुद सजदे में गिर पड़ीं और फिर दो माह लगातार शुक्रिया का रोज़ा रखा। हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के साथ निकाह़ करने पर इतनी बड़ी दा'वते वलीमा फ़रमाई कि किसी बीवी के निकाह़ पर इतनी बड़ी दा'वते वलीमा नहीं की थी। तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने नान गोश्त खिलाया।

(شرح العلامة الزرقاني،حضرت زينب بنت جحش ام المؤمنين رضي الله عنها،ج٤،ص٤٠٩ـ٤١٢)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस बीबियों में ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا इस ख़ुसूसिय्यत में सब बीबियों से मुमताज़ हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने इन का निकाह़ खुद अपने ह़बीब से कर दिया। इन की एक ख़ुसूसिय्यत येह भी है कि येह अपने हाथ से कुछ दस्तकारी कर के इस की आमदनी फ़ुक़रा व मसाकीन को दिया करती थीं चुनान्चे एक मरतबा हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया था कि मेरी वफ़ात के बा'द सब से पहले मेरी उस बीबी की वफ़ात होगी जिस के हाथ सब बीबियों से लम्बे हैं येह सुन कर बीबियों ने एक लकड़ी से अपना अपना हाथ नापा तो ह़ज़रते सौदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का हाथ सब से लम्बा निकला लेकिन जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ाते अक़्दस के बा'द सब से पहले ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की वफ़ात हुई तो लोगों

की समझ में येह बात आई कि हाथ लम्बा होने से हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मुराद कषरत से सदक़ा देना था बहर ह़ाल अपनी क़िस्म क़िस्म की सिफ़ाते ह़मीदा की बदौलत येह तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात में खुसूसी इम्तियाज़ के साथ मुमताज़ थीं 20 हि. या 21 हि. में मदीनए मुनव्वरा के अन्दर इन की वफ़ात हुई और अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हर कूचा व बाज़ार में ए'लान करा दिया था कि सब लोग उम्मुल मोअमिनीन के जनाज़े में शरीक हों चुनान्चे बहुत बड़ा मज्मअ़ हुवा । अमीरुल मोअमिनीन ने खुद ही इन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और इन को जन्नतुल बक़ीअ़ में हुज़ूर صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم की दूसरी बीवियों के पहलू में दफ़्न किया । (شرح العلامة الزرقاني،حضرت زينب بنت جحش ام المؤمنين رضي الله عنها،ج٤،ص٤١٣ـ٤١٥)

तबसिरा :- ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़ात से किस क़दर वालिहाना मह़ब्बत और इ़श्क़ था कि इन्हों ने अपने निकाह़ की ख़बर सुन कर अपना सारा ज़ेवर खुश ख़बरी सुनाने वाली लौंडी को दे दिया और सजदए शुक्र अदा किया और खुशी में दो माह लगातार रोज़ादार रहीं फिर ज़रा इन की सख़ावत पर भी एक नज़र डालो कि शहनशाहे दारैन की मलिका हो कर अपने हाथ की दस्तकारी से जो कुछ कमाया करती थीं वोह फ़ुक़रा व मसाकीन को दे दिया करती थीं और सिर्फ़ इसी लिये मेह़नत व मशक़्क़त करती थीं कि फ़क़ीरों और मोह़ताजों की इमदाद करें। **अल्लाहु अकबर** मह़ब्बते रसूल صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم और मिस्कीन नवाज़ी व ग़रीब परवरी के येह जज़्बात तमाम मुसलमान औ़रतों के लिये नसीह़त आमोज़ व क़ाबिले तक़्लीद शाहकार हैं। खुदावन्दे करीम सब औ़रतों को तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए (आमीन)

﴾8﴿ ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

येह बचपन ही से बहुत सख़ी थीं ग़रीबों और मिस्कीनों को ढूंड ढूंड कर खाना खिलाया करती थीं इस लिये लोग इन को "उम्मुल मसाकीन" (मिस्कीनों की मां) कहा करते थे । पहले मश्हूर सह़ाबी

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जह़श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इन का निकाह़ हुवा था लेकिन जब वोह जंगे उहुद में शहीद हो गए तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने 3 हि. में इन से निकाह़ कर लिया और येह "उम्मुल मसाकीन" की जगह "उम्मुल मोअमिनीन" कहलाने लगीं मगर येह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से निकाह़ के बा'द सिर्फ़ दो या तीन महीने ज़िन्दा रहीं और रबीउ़ल अव्वल 4 हि. में ब मक़ामे मदीनए मुनव्वरा वफ़ात पा गईं और जन्नतुल बक़ीअ़ में अज़्वाजे मुत़ह्हरात के पहलू में मदफ़ून हुईं हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इन की वफ़ात तक इन से बेह़द ख़ुश रहे और इन की वफ़ात का क़ल्बे नाज़ुक पर बड़ा सदमा गुज़रा। येह मां की जानिब से ह़ज़रते उम्मुल मोअमिनीन बीबी मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बहन हैं। इन की वफ़ात के बा'द हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की बहन मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से निकाह़ फ़रमाया।

(شرح العلامة الزرقانی، حضرت زینب ام المساکین و المؤمنین، ج٤، ص٤١٦-٤١٧)

﴾9﴿ ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

इन के वालिद का नाम ह़ारिष बिन ह़ज़्न और वालिदा हिन्द बिन्ते औ़फ़ हैं, पहले इन का नाम "बर्रा" था मगर जब येह हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के निकाह़ में आ गईं तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन का नाम मैमूना (बरकत वाली) रख दिया। 7 हि. उ़म्रतुल क़ज़ा की वापसी में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन से निकाह़ फ़रमाया और मक़ामे "सरफ़" में येह पहली मरतबा बिस्तरे नुबुव्वत पर सोईं। कुल छहत्तर ह़दीषें इन से मरवी हैं इन के इन्तिक़ाल के साल में इख़्तिलाफ़ है बा'ज़ ने 51 हि. बा'ज़ ने 61 हि. लेकिन इब्ने इस्ह़ाक़ का क़ौल है कि 63 हि. में इन की वफ़ात मक़ामे "सरफ़" में हुई जब इन का जनाज़ा उठाया गया तो इन के भानजे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने बुलन्द आवाज़ से फ़रमाया कि ऐ लोगो ! येह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बीवी हैं। जनाज़ा

बहुत आहिस्ता आहिस्ता ले कर चलो और इन की मुक़द्दस लाश को हिलने न दो। ह़ज़रते यज़ीद बिन असम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि हम लोगों ने ह़ज़रते मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को मक़ामे सरफ़ में उसी छप्पर के अन्दर दफ़्न किया जिस में पहली बार इन को हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी कुर्बत से सरफ़राज़ फ़रमाया था।

(شرح العلامة الزرقانی، حضرت میمونہ ام المؤمنین رضی اللہ عنہا، ج٤، ص٤١٨۔٤٢٣)

तबसिरा :– इन को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से इन्तिहाई मह़ब्बत बल्कि इ़श्क़ था इन्हों ने खुद हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से निकाह़ की तमन्ना ज़ाहिर की थी बल्कि येह कहा था कि मैं अपनी जान रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को हिबा करती हूं और मुझे महर लेने की भी कोई ख़्वाहिश नहीं है चुनान्चे कुरआने मजीद में एक आयत भी इस के बारे में नाज़िल हुई है। मां बहनो ! देख लो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस बीबियों को हुज़ूर से कैसी वालिहाना मह़ब्बत थी ! سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ क्या कहना ? इन उम्मत की माओं के ईमान की नूरानिय्यत का।

﴾10﴿ ह़ज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

येह क़बीला बनी मुस्त़लक़ के सरदारे आ'ज़म ह़ारिष बिन ज़रार की बेटी हैं। ग़ज़्वए "मुरैसयअ़" में इन का सारा क़बीला गिरिफ़्तार हो कर मुसलमानों के हाथों में क़ैदी बन चुका था और सब मुसलमानों के लौंडी गुलाम बन चुके थे मगर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब ह़ज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को आज़ाद कर के इन से निकाह़ फ़रमा लिया तो ह़ज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की शादमानी व मसर्रत की कोई इन्तिहा न रही। जब इस्लामी लश्कर में येह ख़बर फैली कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से निकाह़ फ़रमा लिया इस ख़ानदान का कोई फ़र्द लौंडी गुलाम नहीं रह सकता चुनान्चे उस ख़ानदान के जितने लौंडी गुलाम मुसलमानों के क़ब्ज़े में थे सब के

सब आज़ाद कर दिये गए येही वजह है कि ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाया करती थीं कि दुन्या में किसी औ़रत का निकाह़ ह़ज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के निकाह़ से ज़ियादा मुबारक नहीं षाबित हुवा क्यूंकि इस निकाह़ की वजह से तमाम ख़ानदाने बनी मुस्त़लक़ को ग़ुलामी से नजात मिल गई। ह़ज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का बयान है कि हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मेरे क़बीले में आने से पहले मैं ने येह ख़्वाब देखा था कि मदीने की जानिब से एक चांद चलता हुवा आया और मेरी गोद में गिर पड़ा मैं ने ख़्वाब का ज़िक्र नहीं किया लेकिन जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से निकाह़ फ़रमा लिया तो मैं ने समझ लिया कि येही मेरे उस ख़्वाब की ता'बीर है। इन का अस्ली नाम "बर्रा" था मगर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन का नाम "जुवैरिया" रख दिया, इन के दो भाई अ़म्र बिन ह़ारिष व अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिष और इन की एक बहन अ़म्मारा बिन्ते ह़ारिष ने भी इस्लाम क़बूल कर के सह़ाबी का शरफ़ पाया। ह़ज़रते जुवैरिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बड़ी इ़बादत गुज़ार और दीनदार थीं, नमाज़े फ़ज्र से नमाज़े चाश्त तक हमेशा अपने वज़ीफ़ों में मश्ग़ूल रहा करती थीं 50 हि. में पैंसठ बरस की उ़म्र पा कर वफ़ात पाई। ह़ाकिमे मदीना मरवान ने इन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और येह जन्नतुल बक़ीअ़ में सिपुर्दे ख़ाक की गईं। (شرح العلامۃ الزرقانی،حضرت جویریۃ رضی اللّٰہ عنھا،ج۴،ص۴۲۴۔۴۲۸)

तबसिरा :- इन का ज़िन्दगी भर का येह अ़मल कि नमाज़े फ़ज्र से नमाज़े चाश्त तक हमेशा लगातार ज़िक्रे इलाही और वज़ीफ़ों में मश्ग़ूल रहना येह उन औ़रतों के लिये ताज़ियाना इ़ब्रत है जो नमाज़े चाश्त तक सोती रहती हैं। **अल्लाहु अक्बर** ! नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बीबियां तो इतनी इ़बादत गुज़ार और दीनदार और उम्मतियों का येह ह़ाले ज़ार कि नवाफ़िल का तो पूछना ही क्या ? फ़राइज़ से भी बेज़ार बल्कि उलटे दिन रात त़रह़ त़रह़ के गुनाहों के आज़ार में गिरिफ़्तार।

इलाही عَزَّوَجَلَّ तौबा ! इलाही عَزَّوَجَلَّ तेरी पनाह।

﴾11﴿ ह़ज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا

येह ख़ैबर के सरदारे आ'ज़म "ह़य बिन अख़्त़ब" की बेटी और क़बीला बनू नुज़ैर की रईसे आ'ज़म "किनाना बिन अल ह़क़ीक़" की बीवी थीं जो "जंगे ख़ैबर" में मुसलमानों के हाथों से क़त्ल हुवा। येह ख़ैबर के क़ैदियों में गिरिफ़्तार हो कर आईं। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلہٖ وَسلَّم ने इन की ख़ानदानी इ़ज़्ज़त व वजाहत का ख़याल फ़रमा कर अपनी अज़्वाजे मुत़ह्हरात और उम्मत की माओं में शामिल फ़रमा लिया। जंगे ख़ैबर से वापसी में तीन दिनों तक मंज़िले सहबा में आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلہٖ وَسلَّم ने इन को अपने ख़ैमे के अन्दर अपनी क़ुर्बत से सरफ़राज़ फ़रमाया और इन के वलीमे में खजूर, घी, पनीर का मलिदा आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلہٖ وَسلَّم ने सह़ाबए किराम को खिलाया। ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلہٖ وَسلَّم इन का बहुत ज़ियादा ख़याल रखते थे। एक मरतबा ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने इन को "पस्ता क़द" कह दिया तो ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلہٖ وَسلَّم ने ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को इस क़दर ग़ुस्से में भर कर डांटा कि कभी भी इन को इतना नहीं डांटा था। इसी त़रह़ एक मरतबा ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने इन को "यहूदिया" कह दिया तो येह सुन कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلہٖ وَسلَّم ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا पर इस क़दर ख़फ़ा हो गए कि दो तीन माह तक इन के बिस्तर पर क़दम नहीं रखा। येह बहुत ही इ़बादत गुज़ार और दीनदार होने के साथ साथ ह़दीष व फ़िक़्ह सीखने का भी जज़्बा रखती थीं चुनान्चे दस ह़दीषें भी इन से मरवी हैं। इन की वफ़ात के साल में इख़्तिलाफ़ है वाक़िदी ने 50 हि. और इब्ने सा'द ने 52 हि. लिखा है येह भी मदीने के मश्हूर क़ब्रिस्तान जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़ून हैं।

(شرح العلامة الزرقاني، حضرت صفيه ام المؤمنين رضى الله عنها، ج٤، ص٤٢٨۔٤٣١/مدارج النبوة، ام المؤمنين صفية، ج٢، ص٤٨٣)

तबसिरा :- हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन से महज़ इस बिना पर खुद निकाह फ़रमा लिया ताकि इन के ख़ानदानी ए'ज़ाज़ व इकराम में कोई कमी न होने पाए। तुम ग़ौर से देखोगे तो हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ज़ियादा तर जिन जिन औरतों से निकाह फ़रमाया वोह किसी न किसी दीनी मस्लिहत ही की बिना पर हुवा। कुछ औरतों की बे कसी पर रहम फ़रमा कर और कुछ औरतों के ख़ानदानी ए'ज़ाज़ व इकराम को बचाने के लिये। कुछ औरतों से इस बिना पर निकाह फ़रमा लिया कि वोह रंजो ग़म के सदमों से निढ़ाल थीं लिहाज़ा हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के ज़ख़्मी दिलों पर मरहम रखने के लिये इन को ए'ज़ाज़ बख़्श दिया कि अपनी अज़्वाजे मुतह्हरात में इन को शामिल कर लिया।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इतनी औरतों से निकाह फ़रमाना हरगिज़ हरगिज़ अपनी ख़्वाहिशे नफ़्सानी की बिना पर नहीं था इस का सब से बड़ा षुबुत येह है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बीबियों में हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के सिवा कोई भी कंवारी नहीं थीं बल्कि सब उम्र दराज़ और बेवा थीं हालांकि अगर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ख़्वाहिश फ़रमाते तो कौन सी ऐसी कंवारी कड़की थी जो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से निकाह करने की तमन्ना न करती मगर दरबारे नुबुव्वत का तो येह मुआमला है कि शहनशाहे दो आलम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का कोई क़ौल फ़े'ल कोई इशारा भी ऐसा नहीं हुवा जो दुन्या और दीन की भलाई के लिये न हो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो कहा और जो किया सब दीन ही के लिये किया बल्कि आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जो किया और कहा वोही दीन है बल्कि आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ाते अकरम ही मुजस्समे दीन है।

اللّٰھم صل و سلم و بارك علٰی سیدنا محمد و اٰلہ و صحبہ اجمعین

येह हुज़ूरे अकरम शहनशाहे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की वोह ग्यारह अज़्वाजे मुतह्हरात हैं जिन पर तमाम मुअर्रिख़ीन का इत्तिफ़ाक़ है इन का मुख़्तसर तज़्किरा तुम ने पढ़ लिया अगर मुफ़स्सल हाल पढ़ना हो तो हमारी किताब "सीरते मुस्तफ़ा" पढ़ो।

अब हम हुज़ूर सुल्ताने दो आलम صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم की उन चार शहज़ादियों का मुख़्तसर तज़्किरा लिखते हैं जो सालिहात और नेक बीबियों की लडी में आबदार मोतियों की त़रह़ चमक रही हैं।

﴾12﴿ ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا

येह रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم की सब से बड़ी शहज़ादी हैं जो ए'लाने नुबुव्वत से दस साल क़ब्ल मक्कए मुकर्रमा में पैदा हुई। येह इब्तिदाए इस्लाम ही में मुसलमान हो गई थीं और जंगे बद्र के बा'द हुज़ूर صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم ने इन को मक्का से मदीना बुला लिया था। मक्का में काफ़िरों ने इन पर जो ज़ुल्मो सितम के पहाड़ तोड़े इन का तो पूछना ही क्या ह़द हो गई कि जब येह हिजरत के इरादे से ऊंट पर सुवार हो कर मक्का से बाहर निकलीं तो काफ़िरों ने इन का रास्ता रोक लिया और एक बद नसीब काफ़िर जो बड़ा ही ज़ालिम था "हबार बिन अल अस्वद" उस ने नेज़ा मार कर इन को ऊंट से ज़मीन पर गिरा दिया जिस के सदमे से इन का ह़म्ल साक़ित़ हो गया। येह देख कर इन के देवर "किनाना" को जो अगर्चे काफ़िर था एक दम तै़श आ गया और उस ने जंग के लिये तीर कमान उठा लिया। येह माजरा देख कर "अबू सुफ़्यान" ने दरमियान में पड़ कर रास्ता साफ़ करा दिया और येह मदीनए मुनव्वरा पहुंच गईं।

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم के क़ल्ब को इस वाक़िए से बड़ी चोट लगी चुनान्चे आप ने इन के फ़ज़ाइल में येह इरशाद फ़रमाया कि

هِيَ اَفْضَلُ بَنَاتِيْ اُصِيْبَتْ فِيَّ ٥

येह मेरी बेटियों में इस ए'तिबार से बहुत फ़ज़ीलत वाली है कि मेरी त़रफ़ हिजरत करने में इतनी बड़ी मुसीबत उठाई।

फिर इन के बा'द इन के शोहर ह़ज़रते अबुल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी मक्का से हिजरत कर के मदीना आ गए और दोनों एक साथ रहने

लगे। इन की अवलाद में एक लड़का जिन का नाम "अ़ली" था और एक लड़की जिन का नाम "उमामा" था ज़िन्दा रहे इब्ने अ़साकिर का क़ौल है कि **अ़ली** "जंगे यरमूक" में शहीद हो गए। ह़ज़रते उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से ह़ुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को बेह़द मह़ब्बत थी। बादशाहे ह़ब्शा ने तोह़फ़े में एक जोड़ा और एक क़ीमती अंगूठी दरबारे नुबुव्वत में भेजी तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह अंगूठी ह़ज़रते उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को अ़त़ा फ़रमाई। इस त़रह़ किसी ने एक मरतबा बहुत ही बेश क़ीमत और इन्तिहाई ख़ूब सूरत एक हार नज़्र किया तो सब बीबियां येह समझती थीं कि ह़ुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह हार ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के गले में डालेंगे मगर आप ने येह फ़रमाया कि मैं येह हार उस को पहनाऊंगा जो मेरे घर वालों में मुझ को सब से ज़ियादा प्यारी है। येह फ़रमा कर आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह क़ीमती हार अपनी नवासी ह़ज़रते उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के गले में डाल दिया। 8 हि. में ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का इन्तिक़ाल हो गया और ह़ुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तबर्रुक के त़ौर पर अपना तहबन्द शरीफ़ इन के कफ़न में दे दिया और नमाज़े जनाज़ा पढ़ा कर ख़ुद अपने मुबारक हाथों से इन को क़ब्र में उतारा। इन की क़ब्र शरीफ़ भी जन्नतुल बक़ीअ़ (मदीनए मुनव्वरा) में है। (شرح العلامۃ الزرقانی،الفصل الثانی فی ذکر اولادہ الکرام علیہ وعلیہم الصلوۃ والسلام،ج۴،ص۳۱۸۔۳۲۱)

तबसिरा :- ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की साहि़बज़ादी को इस्लाम लाने की बिना पर काफ़िरों ने जिस क़दर सताया और दुख दिया इस से मुसलमान बीबियों को सबक़ लेना चाहिये कि काफ़िरों और ज़ालिमों के ज़ुल्म पर सब्र करना हमारे रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और रसूल صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के घर वालों की सुन्नत है और ख़ुदा की राह में दीन के लिये तक्लीफ़ उठाना और बरदाश्त करना बहुत बड़े अज्रो षवाब का काम है।

﴾13﴿ ह़ज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا

येह ए'लाने नुबुव्वत से सात बरस क़ब्ल जब कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उ़म्र शरीफ़ का तैंतीसवां साल था येह मक्कए मुकर्रमा में पैदा हुईं। पहले इन का निकाह़ अबू लहब के बेटे "उ़तबा" से हुवा था मगर अभी रुख़्सती भी नहीं हुई थी कि "**सूरए तब्बत यदा**" नाज़िल हुई। इस ग़ुस्से में अबू लहब के बेटे उ़तबा ने ह़ज़रते रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को त़लाक़ दे दी। इस के बा'द हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इन का निकाह़ कर दिया और इन दोनों मियां बीवी ने ह़ब्शा की त़रफ़ और फिर मदीना की त़रफ़ हिजरत की और दोनों साह़िबुल हिजरतैन (दो हिजरतों वाले) के मुअ़ज़्ज़ज़ लक़ब से सरफ़राज़ हुए।

जंगे बद्र के दिनों में ह़ज़रते रुक़य्या ज़ियादा बीमार थीं चुनान्चे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इन की तीमारदारी के लिये मदीने में रहने का हुक्म दे दिया और जंगे बद्र में जाने से रोक दिया। ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिषा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जिस दिन जंगे बद्र में फ़त्ह़े मुबीन की ख़ुश ख़बरी ले कर मदीना पहुंचे उसी दिन बीबी रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने बीस बरस की उ़म्र पा कर मदीने में इन्तिक़ाल किया। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जंगे बद्र की वजह से इन के जनाज़े में शरीक न हो सके। ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अगर्चे जंगे बद्र में शरीक नहीं हुए मगर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन को जंगे बद्र के मुजाहिदीन में शुमार फ़रमाया और मुजाहिदीन के बराबर माले ग़नीमत में से ह़िस्सा भी अ़त़ा फ़रमाया। ह़ज़रते बीबी रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के शिकमे मुबारक से एक फ़रज़न्द पैदा हुए थे जिन का नाम "अ़ब्दुल्लाह" था मगर वोह अपनी वालिदा की वफ़ात के बा'द 4 हि. में वफ़ात पा गए। बीबी रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की क़ब्र भी जन्नतुल बक़ीअ़ में है।

(شرح العلامۃ الزرقانی،الفصل الثانی فی ذکر اولادہ الکرام علیہ وعلیھم الصلوۃ و السلام،ج۴ ص۳۲۲۔۳۲۳)

﴾14﴿ ह़ज़रते उम्मे कुलषूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

येह भी पहले अबू लहब के दूसरे बेटे "उ़तैबा" से बियाही गई थीं मगर "**सूरए तब्बत यदा**" में अबू लहब की बुराई सुन कर "उ़तैबा" इस क़दर तैश में आ गया कि उस ने गुस्ताख़ी करते हुए हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर झपट कर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पैराहन शरीफ़ को फाड़ डाला और ह़ज़रते उम्मे कुलषूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को त़लाक़ दे दी। हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के क़ल्बे नाज़ुक पर इस गुस्ताख़ी और बे अदबी से इन्तिहाई सदमा गुज़रा और जोशे ग़म से आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने मुबारक से बे इख़्तियार येह अल्फ़ाज़ निकल गए कि

"या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने कुत्तों में से किसी कुत्ते को इस पर मुसल्लत़ फ़रमा दे।"

इस दुआ़ए नबवी का येह अषर हुवा कि मुल्के शाम के रास्ते में येह क़ाफ़िले के बीच में सोया था और अबू लहब क़ाफ़िले वालों के साथ पहरा दे रहा था मगर अचानक एक शेर आया और उ़तैबा के सर को चबा गया और वोह मर गया। ह़ज़रते बीबी रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की वफ़ात के बा'द हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने 3 हि. में ह़ज़रते उम्मे कुलषूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का निकाह़ ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ कर दिया मगर इन के शिकमे मुबारक से कोई अवलाद नहीं हुई। 9 हि. में ह़ज़रते उम्मे कुलषूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की वफ़ात हुई। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और मदीनए मुनव्वरा के क़ब्रिस्तान जन्नतुल बक़ीअ़ में इन को दफ़्न फ़रमाया।

(شرح العلامۃ الزرقانی،الفصل الثانی فی ذکر اولادہ الکرام علیہ وعلیہم الصلوۃ والسلام،ج٤،ص٣٢٥۔٣٢٧)

﴾15﴿ ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

येह हुज़ूर शहनशाहे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सब से छोटी मगर सब से ज़ियादा चहीती और लाडली शहज़ादी हैं इन का नाम फ़ात़िमा और लक़ब ज़हरा व बतूल है। **अल्लाहु अक्बर** ! इन के

फ़ज़ाइल और मनाक़िब और इन के दर्जात व मरातिब का क्या कहना। हृदीषों में ब कषरत इन के फ़ज़ाइल और बुज़ुर्गियों का ज़िक्र है जिन को मुफ़स्सल हम ने अपनी किताब "हृक्क़ानी तक़रीरें" में लिखा है 2 हि. में हृज़रते अ़ली शेरे खुदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इन का निकाह़ हुवा और इन के शिकमे मुबारक से तीन साहि़ब ज़ादगान हृज़रते इमामे ह़सन व हृज़रते इमामे हुसैन व हृज़रते मोह़सिन और तीन साहि़ब ज़ादियां ज़ैनब उम्मे कुलषूम व रुक़य्या (رضی اللّٰہُ تعالٰی عَنْھُم وعنھن) पैदा हुए। हृज़रते मोह़सिन व रुक़य्या तो बचपन ही में वफ़ात पा गए हृज़रते उम्मे कुलषूम की शादी अमीरुल मोअमिनीन हृज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से हुई जिन के शिकमे मुबारक से एक फ़रज़न्द हृज़रते ज़ैद और एक साहि़बज़ादी हृज़रते रुक़य्या की पैदाइश हुई और हृज़रते ज़ैनब की शादी हृज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से हुई जिन के फ़रज़न्द औ़न व मुह़म्मद करबला में शहीद हुए। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के छे महीने बा'द 3 रमज़ान 11 हि. मंगल की रात में आप की वफ़ात हुई और जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़ून हुई।

(شرح العلامۃ الزرقانی،الفصل الثانی فی ذکر اولادہ الکرام علیہ وعلیھم الصلوۃ والسلام، ج۴،ص۳۳۱،۳۳۳،۳۳۹۔۳۴۲)

﴾16﴿ हृज़रते सफ़िय्या बिन्ते अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا

येह हमारे रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी और जन्नती सहाबी हृज़रते ज़ुबैर बिन अल अ़वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वालिदा हैं। येह बहुत शेर दिल और बहादुर ख़ातून हैं। जंगे ख़न्दक़ के मौक़अ़ पर तमाम मुजाहिदीने इस्लाम कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में सफ़बन्दी कर के खड़े थे और एक मह़फ़ूज़ मक़ाम पर सब औ़रतों बच्चों को एक पुराने क़ल्ए़ में जम्अ़ कर दिया गया था। अचानक एक यहूदी तलवार ले कर क़ल्ए़ की दीवार फांदते हुए औ़रतों की त़रफ़ बढ़ा। इस मौक़अ़ पर हृज़रते सफ़िय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا अकेली उस यहूदी पर झपट कर पहुंचीं और ख़ैमे की एक चोब उखाड़ कर इस ज़ोर से उस यहूदी के सर पर मारी कि उस

का सर फट गया और वोह तलवार लिये हुए चकरा कर गिरा और मर गया फिर उसी की तलवार से उस का सर काट कर बाहर फैंक दिया येह देख कर जितने यहूदी औ़रतों पर ह़म्ला करने के लिये क़ल्ए़ के बाहर खड़े थे भाग निकले। इसी त़रह़ जंगे उहुद में जब मुसलमानों का लश्कर बिखर गया, येह अकेली कुफ़्फ़ार पर नेज़ा चलाती रहीं यहां तक कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ و اٰلهٖ وسلَّم को इन की बे पनाह बहादुरी पर सख़्त तअ़ज्जुब हुवा और आप صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ و اٰلهٖ وسلَّم ने इन के फ़रज़न्द ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से फ़रमाया कि ऐ ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अपनी मां और मेरी फूफी की बहादुरी तो देखो कि बड़े बड़े बहादुर भाग गए मगर चट्टान की त़रह़ कुफ़्फ़ार के नर्गे में डटी हुई अकेली लड़ रही हैं। इसी त़रह़ जब जंगे उहुद में हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के चचा ह़ज़रते सय्यिदुश्शुहदा ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ शहीद हो गए और काफ़िरों ने इन के कान नाक काट कर और आंखें निकाल कर शिकम चाक कर दिया तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ و اٰلهٖ وسلَّم ने ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को मन्अ़ कर दिया कि मेरी फूफी ह़ज़रते सफ़िया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को मेरे चचा की लाश पर मत आने देना वरना वोह अपने भाई की लाश का येह ह़ाल देख कर रंजो ग़म में डूब जाएंगी मगर ह़ज़रते सफ़िया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फिर भी लाश के पास पहुंच गईं और हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ و اٰلهٖ وسلَّم से इजाज़त ले कर लाश को देखा तो اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ पढ़ा और कहा कि मैं ख़ुदा की राह में इस को कोई बड़ी क़ुरबानी नहीं समझती फिर मग़फ़िरत की दुआ़ मांगते हुए वहां से चली आईं। 20 हि. में तहत्तर बरस की उ़म्र पा कर मदीने में वफ़ात पाई और जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़ून हुईं। (شرح العلامة الزرقاني، ذكر بعض مناقب العباس، ج٤، ص ٤٩٠)

﴾17﴿ एक अन्सारिया औ़रत رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا

मदीने की एक औ़रत जो अन्सार के क़बीले की थीं इन को येह ग़लत़ ख़बर पहुंची कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ و اٰلهٖ وسلَّم जंगे उहुद में शहीद

हो गए हैं तो येह बे क़रार हो कर घर से निकल पड़ीं और मैदाने जंग में पहुंच गईं। वहां लोगों ने इन को बताया कि ऐ औ़रत ! तेरे बाप और भाई और शोहर तीनों इस जंग में शहीद हो गए। येह सुन कर इस ने कहा कि मुझे येह बताओ मेरे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم का क्या ह़ाल है ? जब लोगों ने बताया कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم अगर्चे ज़ख़्मी हो गए हैं मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰه कि ज़िन्दा सलामत हैं।

(السيرة النبوية لابن هشام،غزوة احد،باب شأن المرأة الدينارية،ج٣،ص٨٦)

तो बे इख़्तियार इस की ज़बान से इस शे'र का मज़मून निकल पड़ा कि

तसल्ली है पनाहे बे कसां ज़िन्दा सलामत है
कोई परवाह नहीं सारा जहां जिन्दा सलामत है

अल्लाहु अक्बर ! ऐसी शेर दिल और बहादुर औ़रत का क्या कहना ? बाप और शोहर और भाई तीनों के क़त्ल हो जाने से सदमात के तीन तीन पहाड़ दिल पर गिर पड़े हैं मगर मह़ब्बते रसूल صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم के नशे में इस की मस्ती का येह आ़लम है कि ज़बाने ह़ाल से येह ना'रा इस की ज़बान पर जारी है कि

मैं भी और बाप भी शोहर भी बरादर भी फ़िदा
ऐ शहे दीं तेरे होते हुए क्या चीज़ हैं हम

﴾18﴿ ह़ज़रते उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا

येह जंगे उहुद में अपने शोहर ह़ज़रते ज़ैद बिन आ़सिम और अपने दो बेटों ह़ज़रते अ़म्मारा और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह (رَضِیَ اللّٰه تعَالٰی عَنْهُم) को साथ ले कर मैदाने जंग में कूद पड़ीं और जब कुफ़्फ़ार ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم पर ह़म्ला कर दिया तो येह एक ख़न्जर ले कर कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में खड़ी हो गईं और कुफ़्फ़ार के तीर व तलवार के हर एक वार को रोकती रहीं यहां तक कि जब इब्ने क़िमया मलऊन ने रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰه تعَالٰی عَلَيْهِ و اٰلِهٖ وَسَلَّم पर तलवार चला दी तो सय्यिदा उम्मे अ़म्मारा

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उस तलवार को अपनी पीठ पर रोक लिया चुनान्चे इन के कंधे पर इतना गहरा ज़ख़्म लगा के ग़ार पड़ गया फिर ख़ुद बढ़ कर इब्ने क़िमया के कंधे पर इस ज़ोर से तलवार मारी कि वोह दो टुकड़े हो जाता मगर वोह मलऊ़न दोहरी ज़िर्ह पहने हुए था इस लिये बच गया इस जंग में बीबी उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के फ़रज़न्द ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का बयान है कि मुझे एक काफ़िर ने जंगे उहुद में ज़ख़्मी कर दिया और मेरे ज़ख़्म से ख़ून बन्द नहीं होता था। मेरी वालिदा ह़ज़रते उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़ौरन अपना कपड़ा फाड़ कर ज़ख़्म को बांध दिया और कहा कि बेटा उठो खड़े हो जाओ और फिर जिहाद में मश्ग़ूल हो जाओ। इत्तिफ़ाक़ से वोही काफ़िर सामने आ गया तो हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ उम्मे अ़म्मारा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) देख तेरे बेटे को ज़ख़्मी करने वाला येह है। येह सुनते ही ह़ज़रते उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने झपट कर उस काफ़िर की टांग में तलवार का ऐसा भरपूर वार मारा कि वोह काफ़िर गिर पड़ा और फिर चल न सका बल्कि सुरीन के बल घिसटता हुवा भागा। येह मन्ज़र देख कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हंस पड़े और फ़रमाया कि ऐ उम्मे अ़म्मारा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) तू ख़ुदा का शुक्र अदा कर कि उस ने तुझ को इतनी त़ाक़त और हिम्मत अ़त़ा फ़रमाई है, तू ने ख़ुदा की राह में जिहाद किया। ह़ज़रते उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कहा कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दुआ़ फ़रमाइये कि **अल्लाह** तआ़ला हम लोगों को जन्नत में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत गुज़ारी का शरफ़ अ़त़ा फ़रमाए। उस वक़्त आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के लिये और इन के शोहर और इन के बेटों के लिये इस त़रह़ दुआ़ फ़रमाई कि

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْھُمْ رُفَقَائِیْ فِی الْجَنَّۃِ

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन सब को जन्नत में मेरा रफ़ीक़ बना दे।

ह़ज़रते बीबी उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ज़िन्दगी भर ए'लानिया येह कहती रहीं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इस दुआ़ के बा'द

दुन्या में बड़ी से बड़ी मुसीबत भी मुझ पर आ जाए तो मुझ को इस की कोई परवाह नहीं है। (مدارج النبوت، ج۲، ص۱۲۶)

तबसिरा :- हज़रते बीबी सफ़िया और अन्सारिया औ़रत और हज़रते बीबी उम्मे अ़म्मारा (رضی اللہ تعالیٰ عنہن) के तीनों वाक़िआ़त को पढ़ कर ग़ौर करो कि मादरे इस्लाम की आग़ोश में कैसी कैसी शेर दिल और बहादुर औ़रतों ने जनम लिया है। इन बहादुर ख़वातीने इस्लाम के कारनामों को गर्दिशे लैलो नहार क़ियामत तक कभी नहीं मिटा सकती। इन के सीनों में पथ्थर की चट्टानों से ज़ियादा मज़बूत़ दिल था जिस में इस्लाम की ह़रारत का जोश और मह़ब्बते रसूल (صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم) की ऐसी मस्ती भरी हुई थी कि कुफ़्फ़ार के लश्करों का दल बादल इन की नज़रों में मख्खियों और मच्छरों का झुंड़ नज़र आता था और इन के दिलों में सब्रो इस्तिक़ामत का ऐसा समुन्दर लहरें मार रहा था कि इस के तूफ़ान में बड़ी बड़ी मुसीबतों के पहाड़ पाश पाश हो जाया करते थे मगर अफ्सोस ! आज कल की मुसलमान औ़रतों के दिलों में मह़ब्बते रसूल صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم का चराग़ इस त़रह़ बुझ गया है कि इस्लाम का जोशे ईमान का जज़्बा, मह़ब्बते रसूल (صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم) की मस्ती, जिहाद का नशा, सब कुछ ग़ारत हो गया और दुन्या की मह़ब्बत और ज़िन्दगी की हवस ने बदन के रौंगटे रौंगटे में ख़ौफ़ व हिरास और बुज़दिली की ऐसी आंधी चला दी है कि कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में हर मुसलमान औ़रत रोने और गिड़ गिड़ाने के सिवा कुछ कर ही नहीं सकती। ऐ मुसलमान औ़रतो ! तुम उन जांबाज़ और सरफ़रोश जिहाद करने वाली औ़रतों के जज़्बए ईमानी और जोशे इस्लामी से सबक़ सीखो। तुम भी मुसलमान औ़रत हो अगर कुफ़्फ़ार का मुक़ाबला हो तो अपनी जान पर खेल कर और सर हथेली पर रख कर कुफ़्फ़ार से लड़ते हुए जामे शहादत पी लो और जन्नतुल फ़िरदौस में पहुंच जाओ। ख़बरदार ख़बरदार ! कुफ़्फ़ार के आगे रोते गिड़ गिड़ाते हुए और रह़्म की भीक मांगते हुए बुज़दिली की मौत

हरगिज़ न मरो और याद रखो कि वक़्त से पहले हरगिज़ मौत नहीं आ सकती लिहाज़ा डर, ख़ौफ़ व हिरास और बुज़दिली से मौत नहीं टल सकती इस लिये बहादुर बनो, शेर दिल बनो और बीबी सफ़िया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और बीबी उम्मे अ़म्मारा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और बीबी अन्सारिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की मुजाहिदाना सर फ़रोशियों का किरदार पेश करो।

﴾19﴿ ह़ज़रते बीबी सुमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

येह ह़ज़रते अ़म्मार बिन यासिर सह़ाबी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की वालिदा हैं। इस्लाम लाने की वजह से मक्का के काफ़िरों ने इन को बहुत ज़ियादा सताया। एक मरतबा अबू जह्ल ने नेज़ा तान कर इन से धमका कर कहा कि तू कलिमा न पढ़ वरना मैं तुझे येह नेज़ा मार दूंगा। ह़ज़रते बीबी सुमय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने सीना तान कर ज़ोर ज़ोर से कलिमा पढ़ना शुरूअ़ किया अबू जह्ल ने ग़ुस्से में भर कर इन की नाफ़ के नीचे इस ज़ोर से नेज़ा मारा कि वोह ख़ून में लत पत हो कर गिर पड़ीं और शहीद हो गईं। (الاستیعاب، کتاب النساء، باب السین ۳۴۲۱، سمیۃ ام عمار بن یاسر، ج۴، ص۴۱۹)

तबसिरा :- येह एक जांबाज़ मुसलमान औ़रत का पहला ख़ून था जिस से ख़ुदा की ज़मीन रंगीन हो गई मगर इस ख़ून की गर्मी ने हज़ारों मुसलमान मर्दों और औ़रतों में जोशे जिहाद का ऐसा जज़्बा पैदा कर दिया कि बद्र व उहुद और हुनैन का मैदान इन कुफ़्फ़ार का क़ब्रिस्तान बन गया और मक्का व ख़ैबर में कुफ़्रो शिर्क के जंगलात कट गए और हर त़रफ़ इस्लाम का बाग़ फलने फूलने लगा।

﴾20﴿ ह़ज़रते बीबी लुबैना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

येह एक लौंडी थीं। इब्तिदाए इस्लाम ही में इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत का नूर इन के दिल में चमक उठा और येह इस्लाम के दामन में आ गईं। कुफ़्फ़ारे मक्का ने इन को ऐसी ऐसी दर्दनाक तक्लीफ़ें दीं कि अगर पहाड़ भी इन की जगह पर होता तो शायद लरज़ जाता मगर इस पैकरे ईमान के क़दम नहीं डगमगाए। ख़ुद ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

जब तक दामने इस्लाम में नहीं आए थे इस लौंडी को इतना मारते थे कि मारते मारते खुद थक जाते थे मगर हज़रते लुबैना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا उफ़ नहीं करती थीं बल्कि निहायत ही जुरअत व इस्तिक़्लाल के साथ कहती थीं कि ऐ उ़मर ! तुम जितना चाहो मुझ ग़रीब को मार लो अगर खुदा के सच्चे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर तुम ईमान नहीं लाओगे तो खुदा ज़रूर तुम से इनतिक़ाम लेगा।

तबसिरा :- हज़रते लुबैना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की इस ईमानी तक़रीर की जहांगीरी तो देखो कि अभी हज़रते लुबैना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के ज़ख़्म नहीं भरे थे कि इस्लाम कि हक़्क़ानिय्यत ने हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को इस त़रह़ दबोच लिया कि वोह बे इख़्तियार दामने इस्लाम में आ गए और ज़िन्दगी भर अपने किये पर पछताते रहे और हज़रते लुबैना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا जैसी ग़रीब व मज़्लूम लौंडियों के सामने शर्म से सर नहीं उठा सकते थे और इन कमज़ोरों और ग़रीबों से मुआ़फ़ी मांगा करते थे यहां तक कि हज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ जिन को येह गर्म गर्म जलती हुई रैत पर लिटा कर इन के सीने पर वज़्नी पथ्थर रखा हुवा देख कर ह़क़ारत से ठोकर मार कर गुज़रते थे। थोड़े दिन नहीं गुज़रे कि अमीरुल मोअमिनीन होते हुए अपने तख़्ते शाही पर बैठ कर येह कहा करते थे कि सय्यिदुना व मौलाना बिलाल या'नी बिलाल तो हमारे आक़ा हैं और बिलाल की सूरत को कमाले अदब और महब्बत के साथ देख कर ज़बाने ह़ाल से भरे मजमओं में येह कहा करते थे कि

बद्र अच्छा है फ़लक पर न हिलाल अच्छा है
चश्मे बीना हो तो दोनों से बिलाल अच्छा है

﴾21﴿ हज़रते बीबी नहदिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا

येह भी लौंडी थीं मगर इस्लाम लाने पर काफ़िरों ने इन के साथ कैसे कैसे ज़ालिमाना सुलूक किये इस की तस्वीर खींचने से क़लम का सीना शक़ हो जाता है और हाथ कांपने लगते हैं लेकिन येह अल्लाह

वाली बड़ी बड़ी मारधाड़ को बरदाश्त करती रही और मुसीबतें झेलती रही मगर इस्लाम से बाल भर भी इस के क़दम कभी भी नहीं डगमगाए यहां तक कि वोह दिन आ गया कि इस्लाम को ढाने वाले खुद इस्लाम के मे'मार बन गए और इस्लाम के ख़ून के प्यासे अपने ख़ूनों से इस्लाम के बाग़ को सींच सींच कर सुर्ख़रू बनने लगे।

(الاصابة في تمييز الصحابة، رقم ١٢١٦٣، أمّ عبيس، ج٨، ص ٤٣٤)

﴾22﴿ ह़ज़रते बीबी उम्मे उ़बैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

ह़ज़रते बीबी नहदिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की त़रह़ येह भी लौंडी थीं और इन को भी काफ़िरों ने बहुत सताया, बेह़द ज़ुल्मो सितम किया, लोहा गर्म कर के इन के बदन के नाज़ुक ह़िस्सों पर दाग़ लगाया करते थे, कभी पानी में इस क़दर डुबकियां दिया करते थे कि इन का दम घुटने लगता था। मार पीट का तो पूछना ही क्या वोह तो उन काफ़िरों का रोज़ाना ही का मह़बूब मश्ग़ला था। आख़िर प्यारे रसूले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के यारे ग़ार सिद्दीक़े जां निषार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपना ख़ज़ाना ख़ाली कर के इन मज़्लूमों को ख़रीद ख़रीद कर आज़ाद कर दिया तो इन मुसीबत के मारों को कुछ आराम मिला।

(الاصابة في تمييز الصحابة، رقم ١٢١٦٣، أمّ عبيس، ج٨، ص ٤٣٤)

﴾23﴿ ह़ज़रते ज़िन्नीरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

येह भी ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के घराने की एक लौंडी थीं। इन्हों ने भी जब इस्लाम क़बूल कर लिया तो सारा घर इन की जान का दुश्मन हो गया और उन काफ़िरों ने इतना मारा कि इन की आंखों की बीनाई जाती रही तो काफ़िर इन को येह त़ा'ना देने लगे कि तूने हमारे देवताओं को छोड़ दिया तो तेरी आंखें फूट गईं अब कहां है तेरा एक खुदा ! तू क्यूं नहीं उस को बुलाती कि वोह तेरी आंखों को रोशन कर दे। येह त़ा'ना सुन कर वोह निहायत जुरअ़त के साथ कहा करती थीं जिस

रसूल صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وسلّم पर ईमान लाई हूं यक़ीनन वोह ख़ुदा के सच्चे रसूल صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وسلّم हैं और मेरा एक ख़ुदा अगर चाहेगा तो ज़रूर मेरी आंखें रोशन हो जाएंगी और तुम्हारे सेकड़ों देवता मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। एक दिन रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وسلّم ने काफ़िरों का येह ता'ना सुना तो फ़रमाया कि ऐ ज़िन्नीरह ! तू सब्र कर फिर हुज़ूर صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وسلّم ने दुआ फ़रमा दी तो इन की आंखों में एक दम रोशनी आ गई। येह मो'जिज़ा देख कर कुफ़्फ़ार कहने लगे कि येह तो मुहम्मद صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وسلّم का जादू है। वोह रसूल नहीं हैं बल्कि वोह तो अ़रब के सब से बड़े जादूगर हैं (مَعَاذَ اللّٰہ) ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इन को ख़रीद कर आज़ाद कर दिया।

(الاستیعاب،باب النساء ، باب الزای ۳۳۸۸،زنیرۃ مولاۃ ابی بکر الصدیق، ج۴،ص۴۰۶)

तबसिरा :– ऐ मुसलमान माओं बहनो ! तुम्हें ख़ुदा का वासित़ा दे कर कहता हूं कि ह़ज़रते लुबैना व ह़ज़रते नहदिया व ह़ज़रते उम्मे उ़बैस व ह़ज़रते ज़िन्नीरह (رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْھُنَّ) वग़ैरा की जां सोज़ व दिल दोज़ ह़िकायतों को बग़ौर और बार बार पढ़ो और सोचो कि इन **अल्लाह** वालियों ने इस्लाम के लिये कैसी कैसी मुसीबतें उठाईं मगर एक सेकन्ड के लिये भी इस्लाम से इन के क़दम नहीं डगमगाए एक तुम हो कि ज़रा कोई तक्लीफ़ पहुंची तो तुम घबरा कर अपने होश व ह़वास खो बैठती हो और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وسلّم की शान में नाशुक्री के अल्फ़ाज़ बोलने लगती हो और ज़रा काफ़िरों ने धोंस दी तो तुम काफ़िरों की बोलियां बोलने लगती हो। ख़ुदा के लिये ऐ मुसलमान मर्दो और ऐ मुसलमान औ़रतो ! तुम उन **अल्लाह** की मुक़द्दस बन्दियों का किरदार पेश करो कि अपने ईमान व इस्लाम पर इतनी मज़्बूती के साथ क़ाइम रहो कि तुम्हें देख कर काफ़िरों की दुन्या पुकार उठे कि

बिनाए आस्मान भी इस सितम पर डग मगाएगी
मगर मोमिन के क़दमों में कभी लग़्ज़िश न आएगी

﴾24﴿ ह़ज़रते ह़लीमा सा'दिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا

येह वोह मुक़द्दस और ख़ुश नसीब औ़रत हैं कि इन्हों ने हमारे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को दूध पिलाया है जब रसूल صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मक्का फ़त्ह़ हो जाने के बा'द त़ाइफ़ के शहर पर जिहाद फ़रमाया उस वक़्त ह़ज़रते ह़लीमा सा'दिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا अपने शोहर और बेटे को ले कर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुई तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन के लिये अपनी चादर मुबारक को ज़मीन पर बिछा कर इन को इस पर बिठाया और इन्आ़म व इकराम से भी नवाज़ा और येह सब कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गए।

(الاستيعاب ،باب النساء،باب الحاء ٣٣٣٦،حليمة السعدية،ج٤،ص ٣٧٤)

ह़ज़रते बीबी ह़लीमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की क़ब्रे अन्वर मदीनए मुनव्वरा में जन्नतुल बक़ीअ़ के अन्दर है।

तबसिरा :- 1959 ई. में जब मैं मदीना त़य्यिबा ह़ाज़िर हुवा और जन्नतुल बक़ीअ़ के मज़ाराते मुक़द्दसा की ज़ियारतों के लिये गया तो देख कर क़ल्बो दिमाग़ पर रंजो ग़म और सदमात के पहाड़ टूट पड़े कि ज़ालिम नजदी वहाबियों ने तमाम मज़ारात को तोड़ फोड़ कर और क़ुब्बों को गिरा कर फैंक दिया है। सिर्फ़ टूटी फूटी क़ब्रों पर चन्द पथ्थरों के टुकड़े पड़े हुए हैं और सफ़ाई सुथराई का भी कोई एहतिमाम नहीं है। बहर ह़ाल सब मुक़द्दस क़ब्रों की ज़ियारत करते हुए जब मैं ह़ज़रते बीबी ह़लीमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की क़ब्रे अन्वर के सामने खड़ा हुवा तो येह देख कर ह़ैरान रह गया कि जन्नतुल बक़ीअ़ की किसी क़ब्र पर मैं ने कोई घास और सब्ज़ा नहीं देखा लेकिन ह़ज़रते बीबी ह़लीमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की क़ब्र शरीफ़ को देखा कि बहुत ही हरी और शादाब घासों से पूरी क़ब्र छुपी हुई है। मैं ह़ैरत से देर तक इस मन्ज़र को देखता रहा। आख़िर मैं ने अपने गुजराती साथियों से कहा कि लोगो ! बताओ तुम लोगों ने जन्नतुल बक़ीअ़ की किसी क़ब्र पर भी घास जमी हुई देखी ? लोगों ने कहा कि

''जी नहीं'' मैं ने कहा कि ह़ज़रते बीबी ह़लीमा की क़ब्र को देखो कि कैसी हरी हरी घास से येह क़ब्र सर सब्ज़ो शादाब हो रही है। लोगों ने कहा कि ''जी हां बेशक'' फिर मैं ने कहा कि क्या इस की कोई वजह तुम लोगों की समझ में आ रही है? लोगों ने कहा की जी नहीं आप ही बताइये तो मैं ने कह दिया कि इस वक़्त मेरे दिल में येह बात आई है कि इन्हों ने हुज़ूर रह़मतुल्लिलल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को अपना दूध पिला पिला कर सैराब किया था तो रब्बुल आ़लमीन ने अपनी रह़मत के पानियों से इन की क़ब्र पर हरी हरी घास उगा कर इन की क़ब्र को सर सब्ज़ो शादाब कर दिया है मेरी येह तक़रीर सुन कर तमाम ह़ाज़िरीन पर ऐसी रिक़्क़त त़ारी हुई कि सब लोग चीख़ मार मार कर रोने लगे और मैं ख़ुद भी रोते रोते निढ़ाल हो गया फिर मेरे मुह़िब्बे मुख़्लिस सेठ अलह़ाज उ़षमान ग़नी छीपा रंग वाले अह़मदाबादी ने इ़त्र की एक बड़ी सी शीशी जिस में से दो दो तीन तीन क़त़रे वोह हर क़ब्र पर इ़त्र डालते थे एक दम पूरी शीशी इन्हों ने ह़ज़रते बीबी ह़लीमा की क़ब्र पर उंडेल दी और रोते हुए कहा कि ऐ दादी ह़लीमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ख़ुदा की क़सम अगर आप की क़ब्र अह़मदाबाद में होती तो मैं आप की क़ब्रे मुबारक को इ़त्र से धो देता फिर बड़ी देर के बा'द हमारे दिलों को सुकून हुवा और मैं ने पीछे मुड़ कर देखा तो लग भग पचास आदमी मेरे पीछे खड़े थे और सब की आंखें आंसूओं से तर थीं (या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! फिर दोबारा येह मौक़अ़ नसीब फ़रमा आमीन या रब्बल आ़लमीन)

﴾25﴿ ह़ज़रते उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا

जब हमारे प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते बीबी ह़लीमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के घर से मक्कए मुकर्रमा पहुंच गए और अपनी वालिदए मोह़तरमा के पास रहने लगे तो ह़ज़रते उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا जो आप के वालिदे माजिद की बांदी थीं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ात़िरदारी व ख़िदमत गुज़ारी में दिन रात जी जान से मसरूफ़ रहने लगीं। येही

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को खाना खिलाती थीं, कपड़े पहनाती थीं, कपड़े धोती थीं। जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बड़े हुए तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने आज़ाद कर्दा गुलाम और मुंह बोले बेटे ह़ज़रते ज़ैद बिन ह़ारिषा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से इन का निकाह़ कर दिया जिन से ह़ज़रते उसामा बिन ज़ैद पैदा हुए (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) ह़ज़रते बीबी उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के बा'द काफ़ी दिनों तक मदीने में ज़िन्दा रहीं और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) अपनी अपनी ख़िलाफ़तों के दौरान ह़ज़रते बीबी उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की ज़ियारत व मुलाक़ात के लिये तशरीफ़ ले जाया करते थे और इन की ख़बरगीरी फ़रमाते थे।

(الاستيعاب، كتاب كنى النساء، باب الألف، رقم ٣٥٥٧، ام أيمن خادمة الرسول صلى الله عليه وسلم، ج ٤، ص ٤٧٨)

तबसिरा :- मां बहनो ! ग़ौर करो कि अमीरुल मोअमिनीन होते हुए अपनी जलालते शान के बा वुजूद ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ व ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) एक बुढ़िया औ़रत की ज़ियारत के लिये इन के घर जाया करते थे ऐसा क्यूं ? और किस लिये था ? सिर्फ़ इस लिये कि ह़ज़रते उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से येह तअ़ल्लुक़ था कि इन्हों ने बचपन में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ातिरदारी और ख़िदमत गुज़ारी का शरफ़ पाया था। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) के इस अ़मल से षाबित येह हुवा कि जिन जिन हस्तियों को बल्कि जिन जिन चीज़ों को हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से तअ़ल्लुक़ रहा हो उन से मह़ब्बत व अ़क़ीदत और इन की ता'ज़ीमो तकरीम और इन का अदबो एह़तिराम येह ईमान का निशान और हर मुसलमान की ईमानी शान है। **अल्लाह** तआ़ला हर मुसलमान को इस नेक अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए (आमीन)

﴾26﴿ ह़ज़रते उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا

येह हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सब से प्यारे ख़ादिम ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की मां हैं इन के पहले शोहर

का नाम मालिक था। बेवा हो जाने के बा'द इन का निकाह़ ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से हो गया।

(الاستیعاب، کتاب کنی النساء،باب السین ۳۵۹۷،ام سلیم بنت ملحان،ج٤،ص٤٩٤)

येह रिश्ते में एक त़रह़ से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ाला होती थीं और इन के भाई हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के साथ एक जिहाद में शहीद हो गए थे। इन सब बातों की वजह से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इन पर बहुत मेहरबान थे और कभी कभी इन के घर भी तशरीफ़ ले जाया करते थे। बुख़ारी शरीफ़ वग़ैरा में इन का एक बहुत ही नसीह़त आमोज़ और इ़ब्रतख़ेज़ वाक़िआ़ लिखा हुवा है और वोह येह है कि ह़ज़रते उम्मे सुलैम का एक बच्चा बीमार था जब ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ सुब्ह़ को अपने काम धंदे के लिये बाहर जाने लगे तो उस बच्चे का सांस बहुत ज़ोर ज़ोर से चल रहा था। अभी ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ मकान पर नहीं आए थे कि बच्चे का इन्तिक़ाल हो गया। ह़ज़रते बीबी उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने सोचा कि दिन भर के थके मांदे मेरे शोहर मकान पर आएंगे और बच्चे के इन्तिक़ाल की ख़बर सुनेंगे तो न खाना खाएंगे न आराम कर सकेंगे इस लिये इन्हों ने बच्चे की लाश को एक अलग मकान में लैटा दिया और कपड़ा ओढ़ा दिया और ख़ुद रोज़ाना की त़रह़ खाना पकाया फिर ख़ूब अच्छी त़रह़ बनाव सिंगार कर के बैठ कर शोहर के आने का इन्तिज़ार करने लगीं। जब ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ रात को घर में आए तो पूछा कि बच्चे का क्या ह़ाल है ? तो बीबी उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने कह दिया कि अब इस का सांस ठहर गया है। ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ मुत़मइन हो गए और इन्हों ने येह समझा कि सांस का खिंचाव थम गया है फिर फ़ौरन ही खाना सामने आ गया और इन्हों ने शिकम सैर हो कर खाना खाया फिर बीवी के बनाव सिंगार को देख कर इन्हों ने बीवी से सोह़बत भी की। जब सब कामों से फ़ारिग़ हो कर बिल्कुल ही मुत़मइन

हो गए। बीबी उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने कहा कि ऐ मेरे प्यारे शोहर ! मुझे येह मस्अला बताइये कि अगर हमारे पास किसी की कोई अमानत हो और वोह अपनी अमानत हम से ले ले तो क्या हम को बुरा मानने या नाराज़ होने का कोई ह़क़ है ? ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया कि हरगिज़ नहीं अमानत वाले को उस की अमानत ख़ुशी ख़ुशी दे देनी चाहिये। शोहर का येह जवाब सुन कर ह़ज़रते उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने कहा कि ऐ मेरे सरताज ! आज हमारे घर में येही मुआ़मला पेश आया कि हमारा बच्चा जो हमारे पास ख़ुदा की एक अमानत था आज ख़ुदा ने वोह अमानत वापस ले ली और हमारा बच्चा मर गया येह सुन कर ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ चोंक कर उठ बैठे और ह़ैरान हो कर बोले कि क्या मेरा बच्चा मर गया ? बीबी ने कहा कि "जी हां" ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने फ़रमाया कि तुम ने तो कहा था कि उस के सांस का खिंचाव थम गया है। बीवी ने कहा कि जी हां मरने वाला कहां सांस लेता है ? ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को बेह़द अफ़्सोस हुवा कि हाए मेरे बच्चे की लाश घर में पड़ी रही और मैं ने भर पेट खाना खाया और सोह़बत की। बीवी ने अपना ख़याल ज़ाहिर कर दिया कि आप दिन भर के थके हुए घर आए थे, मैं फ़ौरन ही अगर बच्चे की मौत का ह़ाल कह देती तो आप रंजो ग़म में डूब जाते न खाना खाते न आराम करते इस लिये मैं ने इस ख़बर को छुपाया। ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ सुब्ह़ मस्जिदे नबवी में नमाज़े फ़ज्र के लिये गए और रात का पूरा माजरा हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ कर दिया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के लिये येह दुआ़ फ़रमाई कि तुम्हारी रात की उस सोह़बत में **अल्लाह** तआ़ला ख़ैरो बरकत अ़त़ा फ़रमाए। इस दुआ़ए नबवी का येह अषर हुवा की उसी रात में ह़ज़रते बीबी उम्मे सुलैम के ह़म्ल ठहर गया और एक बच्चा पैदा हुवा जिस का नाम अ़ब्दुल्लाह रखा गया और इन अ़ब्दुल्लाह के बेटों में बड़े बड़े उ़-लमा पैदा हुए।

तबसिरा :- मुसलमान माओं और बहनो ! ह़ज़रते बीबी उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से सब्र करना सीखो और शोहर को आराम पहुंचाने का त़रीक़ा और सलीक़ा भी इस वाक़िए़ से ज़ेह्न नशीन करो और देखो कि बीबी उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कैसी अच्छी मिषाल दे कर शोहर को तसल्ली दी । अगर हर आदमी इस बात को अच्छी त़रह़ समझ ले तो कभी बे सब्री न करेगा और देखो कि सब्र का फल ख़ुदावन्दे करीम ने कितनी जल्दी ह़ज़रते बीबी उम्मे सुलैम को दिया कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह एक साल पूरा होने से पहले ही पैदा हो गए फिर इन का घर आ़लिमों से भर गया ।

﴾27﴿ ह़ज़रते उम्मे ह़िराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

येह ह़ज़रते बीबी उम्मे सुलैम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बहन हैं जिन का ज़िक्र तुम ने ऊपर पढ़ा है इन के मकान पर भी कभी कभी हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दोपहर को क़ैलूला फ़रमाया करते थे । एक दिन हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुस्कुराते हुए नींद से बैदार हुए तो ह़ज़रते बीबी उम्मे ह़िराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की, कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आप के मुस्कुराने का क्या सबब है ? तो इरशाद फ़रमाया कि मैं ने अभी अभी अपनी उम्मत के कुछ मुजाहिदीन को ख़्वाब में देखा है कि वोह समुन्दर में किश्तियों पर इस त़रह़ बैठे हुए जिहाद के लिये जा रहे हैं जिस त़रह़ बादशाह लोग अपने अपने तख़्त पर बैठे रहा करते हैं । ह़ज़रते उम्मे ह़िराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कहा कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दुआ़ फ़रमाइये कि अल्लाह तआ़ला मुझे उन मुजाहिदीन में शामिल फ़रमाए । फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सो गए और दोबारा फिर इसी त़रह़ हंसते हुए उठे और येही ख़्वाब बयान फ़रमाया तो उम्मे ह़िराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कहा कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दुआ़ फ़रमाए कि मैं उन मुजाहिदों में शामिल रहूं तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम पहले मुजाहिदीन की सफ़ में रहोगी । चुनान्चे जब ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दौरे हु़कूमत में बह़री बेड़ा तय्यार हुवा और मुजाहिदीन किश्तियों में

सुवार होने लगे तो ह़ज़रते बीबी उम्मे ह़िराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी अपने शोहर ह़ज़रते उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साथ उन मुजाहिदीन की जमाअ़त में शामिल हो कर जिहाद के लिये रवाना हो गईं। समुन्दर से पार हो जाने के बा'द येह ऊंट पर सुवार होने लगीं तो ऊंट पर से गिर पड़ी और ऊंट के पाऊं से कुचल कर इन की रूह़ परवाज़ कर गई इस त़रह़ येह शहादत के शरफ़ से सरफ़राज़ हो गईं।

(صحیح البخاری، کتاب الجھاد، باب غزو المرأۃ فی البحر، رقم ۲۸۷۷، ۲۸۷۸، ج ۲، ص ۲۷۵)

तबसिरा :- मुसलमान बीबियो ! ह़ज़रते बीबी उम्मे ह़िराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के इस वाक़िए़ से जिहाद का शौक़ और इस्लाम पर कुरबान होने का जज़्बा सीखो। इन दोनों बुड्ढे मियां बीवी को बुढ़ापे के बा वुजूद जिहाद का किस क़दर शौक़ था ? और शहादत की कितनी ज़ियादा तमन्ना थी **अल्लाहु अक्बर** ! **अल्लाहु अक्बर** !

﴾28﴿ ह़ज़रते फ़ात़िमा बिन्ते ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

येह ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बहन हैं येह और इन के शोहर ह़ज़रते सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا शुरूअ़ ही में मुसलमान हो गए थे मगर येह दोनों ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के डर से अपना इस्लाम पोशीदा रखते थे। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इन दोनों के मुसलमान होने की ख़बर मिली तो ग़ुस्से में आग बगूला हो कर बहन के घर पहुंचे। कवाड़ बन्द था मगर अन्दर से कुरआन पढ़ने की आवाज़ आ रही थी। दरवाज़ा खट खटाया तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की आवाज़ सुन कर सब घर वाले इधर उधर छुप गए। बहन ने दरवाज़ा खोला तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ चिल्ला कर बोले कि ऐ अपनी जान की दुश्मन ! क्या तू ने भी इस्लाम क़बूल कर लिया है ? फिर अपने बहनोई ह़ज़रते सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर झपटे और इन की दाढ़ी पकड़ कर ज़मीन पर पछाड़ दिया और मारने लगे। इन की बहन ह़ज़रते फ़ात़िमा बिन्ते ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने शोहर को बचाने के लिये ह़ज़रते

उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को पकड़ने लगीं तो इन को ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने ऐसा त़मांचा मारा कि कान के झूमर टूट कर गिर पड़े और चेहरा ख़ून से रंगीन हो गया। बहन ने निहायत जुरअत के साथ साफ़ साफ़ कह दिया कि उ़मर ! सुन लो तुम से जो हो सके कर लो मगर अब हम इस्लाम से कभी हरगिज़ हरगिज़ नहीं फिर सकते। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने बहन का जो लहू लुहान चेहरा देखा और इन का जोशो जज़्बात में भरा हुवा जुम्ला सुना तो एक दम इन का दिल नर्म पड़ गया। थोड़ी देर चुप खड़े रहे फिर कहा कि अच्छा तुम लोग जो पढ़ रहे थे वोह मुझे भी दिखाओ। बहन ने क़ुरआन शरीफ़ के वर्क़ों को सामने रख दिया। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने सूरए ह़दीद की चन्द आयतों को बग़ौर पढ़ा तो कांपने लगे और क़ुरआन की ह़क़्क़ानिय्यत की ताषीर से दिल बे क़ाबू हो कर थर्रा गया। जब इस आयत पर पहुंचे कि اٰمِنُوۡا بِاللّٰہِ وَ رَسُوۡلِہٖ या'नी **अल्लाह** और उस के रसूल पर ईमान लाओ तो फिर ह़ज़रते उ़मर ज़ब्त़ न कर सके और आखों से आंसू जारी हो गए। बदन की बोटी बोटी कांप उठी और ज़ोर ज़ोर से पढ़ने लगे اَشۡهَدُ اَنۡ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشۡهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبۡدُهٗ وَرَسُوۡلُهٗ फिर एक दम उठे और ह़ज़रते ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के मकान पर जा कर रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दामने रह़्मत से चिमट गए और फिर ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और सब मुसलमानों को अपने साथ ले कर ख़ानए का'बा में गए और अपने इस्लाम का ए'लान कर दिया। उस दिन से मुसलमानों को ख़ौफ़ो हिरास से कुछ सुकून मिला और ह़रमे का'बा में अ़लानिया नमाज़ पढ़ने का मौक़अ़ मिला वरना लोग पहले घरों में छुप छुप कर नमाज़ व क़ुरआन पढ़ा करते थे।

(تاریخ الخلفاء، فصل فی الاخبار الموارد ماجاء فی اسلامہ ، ص ۹۰)

तबसिरा :– ऐ इस्लामी बहनो ! ह़ज़रते फ़ात़िमा बिन्ते ख़त़्त़ाब से ईमानी जोश और इस्लामी जुरअत का सबक़ सीखो।

﴾29﴿ हज़रते उम्मुल फ़ज़्ल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا

येह हमारे रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की चची और हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की वालिदा और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा हज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की बीवी हैं। येह हज़रते अ़ब्बास से पहले मुसलमान हो गई थीं और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم भी इन पर बेहद मेहरबान थे और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन को दीनो दुन्या की बड़ी बड़ी बिशारतें दी थीं। येह हिजरत के लिये बे क़रार थीं मगर येह हिजरत का सामान न होने से लाचार थीं चुनान्चे इन के बारे में येह आयत नाज़िल हुई कि येह हिजरत का सामान न होने की वजह से हिजरत नहीं कर सकती हैं तो इन पर कोई गुनाह नहीं।

﴾30﴿ हज़रते रबीअ़ बिन्ते मुअ़व्विज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا

येह अन्सारिया सहाबिया और जंगे बद्र में अबू जह्ल को क़त्ल करने वाले सहाबी हज़रते मुअ़व्विज़ बिन अ़फ़रा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की बेटी हैं। इन्हों ने बैअ़तुर्रिज़्वान में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते मुबारक पर बैअ़त की थी। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इन पर बड़ा ख़ास करम था। इन कि शादी के दिन हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इन के मकान पर तशरीफ़ ले गए थे और एक रिवायत में है कि इन्हों ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में खजूर का एक ख़ोशा नज़्र किया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस को क़बूल फ़रमा कर कुछ सोना या चांदी इन को अ़ता फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया कि तुम इस के ज़ेवर बनवा लो। इमाम वाक़िदी ने इन का एक अ़जीब वाक़िआ़ नक़्ल फ़रमाया है और वोह येह है कि एक औ़रत अस्मा बिन्ते मख़रुमा मदीनए मुनव्वरा में इ़त्र बेचा करती थी। वोह इ़त्र ले कर हज़रते रबीअ़ बिन्ते मऊ़ज़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के पास आई और कहा कि तुम उस शख़्स की बेटी हो जिस ने अपने सरदार या'नी अबू जह्ल को क़त्ल कर दिया? तो इन्हों ने तड़प

कर जवाब दिया : मैं उस शख़्स की बेटी हूं जिस ने अपने ग़ुलाम या'नी अबू जह्ल को क़त्ल कर दिया। येह जवाब सुन कर इत्र बेचने वाली औ़रत झला गई और कहा कि मुझ पर ह़राम है कि मैं तुम्हारे हाथ अपना इत्र बेचूं तो ह़ज़रते रबीअ़ ने भी जोश में आ कर येह कह दिया कि मुझ पर ह़राम है कि मैं तेरा इत्र ख़रीदूं। तेरे इत्र से तो बदबूदार मैं ने किसी का इत्र नहीं पाया। ह़ज़रते रबीअ़ कहती हैं उस का इत्र बदबूदार नहीं था मगर मैं ने उस को जलाने के लिये उस के इत्र को बदबूदार कह दिया था क्यूंकि वोह अबू जह्ल की मद्दाह़ थी। (الاستيعاب ،باب النساء،باب الراء ، ۳۳۷۰،الربيع بنت معوّذ،ج۴،ص۳۹۶)

तबसिरा :- ह़ज़रते रबीअ़ बिन्ते मुअ़व्विज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की जुरअते ईमानी देखो कि अबू जह्ल को सरदार कहने वाली औ़रत को इस के मुंह पर कैसा दन्दान शिकन जवाब दिया कि उस का मुंह बन्द हो गया और वोह ला जवाब हो गई और बिला शुबा जो कुछ कहा वोह ह़क़ ही कहा। अबू जह्ल हरगिज़ हरगिज़ किसी मुसलमान का सरदार नहीं हो सकता बल्कि वोह हर मुसलमान का ग़ुलाम बल्कि ग़ुलाम से भी हज़ारों दर्जे बदतर और कमतर है।

मुसलमान बीबियों ! काश तुम भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दुश्मनों से ऐसी ही अ़दावत और नफ़रत रखो ताकि तुम सुन्नते सह़ाबा पर अ़मल कर के षवाबे दारैन की दौलत से माला माल हो जाओ।

﴾31﴿ ह़ज़रते उम्मे सलीत़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا

येह मदीनए मुनव्वरा की एक अन्सारिया औ़रत हैं। बड़ी बहादुर और इस्लाम पर जान देने वाली सह़ाबिया हैं। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में मदीने की औ़रतों के दरमियान चादरें तक़्सीम कर रहे थे कि एक बहुत ही उ़म्दा चादर बच गई तो आप ने लोगों से मश्वरा किया कि येह चादर मैं किस को दूं ? तो लोगों ने कहा कि येह चादर आप ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की साह़िबज़ादी बीबी

उम्मे कुलषूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا को दे दीजिये जो आप की बीवी हैं तो आप ने फ़रमाया कि नहीं हरगिज़ हरगिज़ नहीं मैं येह चादर उम्मे कुलषूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا को नहीं दूंगा बल्कि मेरी नज़र में इस चादर की ह़क़दार बीबी उम्मे सलीत़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا हैं। ख़ुदा की क़सम ! मैं ने अपनी आंखों से देखा है कि जंगे उहुद के दिन येह और उम्मुल मोअमिनीन बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا दोनों अपने कंधों पर मशक भर भर कर लाती थीं और मुजाहिदीन और ज़ख़्मियों को पानी पिलाती थीं और फिर उम्मे सलीत़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا उन ख़ुश नसीब औ़रतों में से हैं जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से बैअ़त कर चुकी हैं ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने येह फ़रमा कर वोह चादर ह़ज़रते उम्मे सलीत़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا को अ़त़ा फ़रमा दी।

(صحیح البخاری، کتاب الجھاد والسیر، باب حمل النساء القرب الی الناس، رقم ۲۸۸۱، ج۲، ص۲۷۶)

﴾32﴿ ह़ज़रते ह़ौला बिन्ते तुवैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا

येह ख़ानदाने क़ुरैश की एक बा वक़ार औ़रत हैं। शरफ़े सह़ाबियात पाया और हिजरत की फ़ज़ीलत भी इन को मिली येह बहुत ही इ़बादत गुज़ार सह़ाबिया हैं। चुनान्चे एक ह़दीष में है कि येह रात भर जाग कर इ़बादत करती थीं इन का येह ह़ाल सुन कर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि सुन लो **अल्लाह** तआ़ला नहीं उक्ताएगा बल्कि तुम्हीं लोग उक्ता जाओगे इस लिये तुम लोग इतने ही आ'माल करो जितने आ'माल की तुम त़ाक़त रखते हो। अपनी त़ाक़त से ज़ियादा कोई अ़मल मत किया करो।

ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا का बयान है कि एक मरतबा ह़ज़रते ह़ौला बिन्ते तुवैत ने हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के घर में दाख़िल होने की इजाज़त त़लब की तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन को मकान के अन्दर आने की इजाज़त अ़त़ा फ़रमाई और जब येह घर में आईं तो हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इन की त़रफ़ बहुत ख़ुसूसी तवज्जोह फ़रमाई और इन की मिज़ाज पुर्सी फ़रमाई। ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھَا फ़रमाती हैं कि येह देख कर मैं ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

आप इन पर इस क़दर ज़ियादा तवज्जोह फ़रमाते हैं इस की क्या वजह है ? तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि येह ह़ज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के ज़माने में भी हमारे घर बहुत ज़ियादा आया जाया करती थीं और पुराने मुलाक़ातियों के साथ अच्छा सुलूक करना येह ईमानी ख़स्लत है। (الاستيعاب ،باب النساء،باب الحاء ٣٣٤٢،الحولاء بنت تويت،ج٤،ص٣٧٧)

तबसिरा :- ऐ इस्लामी बहनो ! ह़ज़रते ह़ौला बिन्ते तुवैत رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की इबादत और अपनी मर्ह़ूमा बीवी की सहेलियों के साथ हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के अच्छे बरताव से सबक़ सीखो। **अल्लाह** तआ़ला तुम पर अपना फ़ज़्ल फ़रमाए (आमीन)

﴾33﴿ ह़ज़रते अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا

येह भी सह़ाबिया और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर जान छिड़कने वाली औ़रत हैं। मक्का में जब काफ़िरों ने मुसलमानों को बेह़द सताना शुरूअ़ किया तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ब्शा की त़रफ़ हिजरत का हुक्म दिया चुनान्चे जब लोगों ने ह़ब्शा की त़रफ़ हिजरत की तो अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने भी अपने शोहर जा'फ़र बिन अबी त़ालिब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के साथ ह़ब्शा का सफ़र किया और जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ हिजरत फ़रमाई तो ह़ब्शा के मुहाजिरीन ह़ब्शा से मदीनए मुनव्वरा चले आए। जब बीबी अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا बारगाहे रिसालत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुई तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन को साह़िबुल हिजरतैन (दो हिजरत वाली) के लक़ब से सरफ़राज़ फ़रमाया और अज्रे अ़ज़ीम की बिशारत दी। (الاستيعاب ،باب النساء،باب الالف ٣٢٦٤،أسماء بنت عميس ،ج٤،ص٣٤٧)

﴾34﴿ ह़ज़रते उम्मे रूमान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا

येह अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की बीवी हैं और ह़ज़रते आ़इशा और ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र की मां हैं। इन की शक्लो सूरत और इन की बेहतरीन आ़दतों और

ख़स्लतों की बिना पर हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم फ़रमाया करते थे कि दुन्या में अगर किसी को हूर देखने की ख़्वाहिश हो तो वोह उम्मे रूमान को देख ले कि वोह जमाले सूरत और हुस्ने सीरत में बिल्कुल जन्नत की हूर जैसी है। हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام इन पर बड़ा ख़ास करम फ़रमाया करते थे। 6 हि. में जब हज़रते उम्मे रूमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का इन्तिक़ाल हुवा तो हुज़ूर صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم इन की क़ब्र में उतरे और अपने दस्ते मुबारक से इन को सिपुर्दे ख़ाक फ़रमाया और इन की मग़फ़िरत के लिये दुआ करते हुए कहा कि या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उम्मे रूमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने तेरे और तेरे रसूल صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم के साथ बेहतरीन सुलूक किया है वोह तुझ पर पोशीदा नहीं लिहाज़ा तू इन की मग़फ़िरत फ़रमा। (الاستيعاب، كتاب كنى النساء،باب الراء ٣٥٨٦،أم رومان، ج٤،ص٤٨٩)

तबसिरा :- ख़ुदा की इबादत और प्यारे रसूल صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم की महब्बत व इताअ़त की ब दौलत हज़रते उम्मे रूमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को कितनी अ़ज़ीम सआदत और कितनी बड़ी फ़ज़ीलत नसीब हो गई कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से इन को क़ब्र में उतारा और बेहतरीन अन्दाज़ से इन की मग़फ़िरत के लिये दुआ फ़रमाई। यक़ीनन येह हज़रते उम्मे रूमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की बहुत बड़ी ख़ुश नसीबी है और इस से येह सबक़ मिलता है कि ख़ुदावन्दे करीम की इबादत और रसूल صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم की महब्बत व इताअ़त से दीनो दुन्या की कितनी बड़ी बड़ी ने'मतें और दौलतें मिलती हैं। ख़ुदावन्दे क़ुद्दुस तमाम मुसलमान मर्दों और औरतों को अपनी इबादत और रसूल صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم की महब्बत व इताअ़त की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए (आमीन)

﴾35﴿ हज़रते हाला बिन्ते ख़ुवैलद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا

येह हमारे हुज़ूर नबी صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم की साली और हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की बहन हैं। हज़रते बीबी ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की वजह से हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام इन से बड़ी महब्बत फ़रमाते थे एक

मरतबा इन्हों ने दरवाज़े के बाहर से खड़े हो कर मकान में आने की इजाज़त तलब की। इन की आवाज़ हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की आवाज़ से मिलती जुलती थी। जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन की आवाज़ सुनी तो हज़रते ख़दीजा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की याद आ गई और आप ने जल्दी से उठ कर दरवाज़ा खोला और ख़ुश हो कर फ़रमाया कि या **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ येह तो हाला आ गई।

(صحیح البخاری، کتاب مناقب الأنصار، باب تزویج النبی صلی الله علیه وسلم خدیجة، رقم ۳۸۲۱، ج۲، ص۵۶۵)

﴾36﴿ हज़रते उम्मे अ़तिय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا

येह बहुत ही जांनिषार सहाबिया हैं और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ छे लड़ाइयों में गई। येह मुजाहिदीन को पानी पिलाया करती थीं और ज़ख़्मियों का इलाज और उन की तीमारदारी किया करती थीं और इन को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से इतनी आ़शिक़ाना महब्बत थी कि जब भी येह हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का नाम लेती थी तो हर मरतबा येह ज़रूर कहा करती थी कि "मेरे बाप आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर कुरबान"

(الاستیعاب، کتاب کنی النساء، باب العین ۳۶۲۱، ام عطیة، ج٤، ص ٥٠١)

तबसिरा :- मुसलमान बीबियो ! तुम इन **अल्लाह** व रसूल वाली औ़रतों की इन हिकायतों से सबक़ सीखो और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से इसी त़रह़ इश्क़ो महब्बत रखो कि महब्बते रसूल ईमान का निशान बल्कि ईमान की जान है। ख़ुदावन्दे करीम हर मुसलमान को येह करामत नसीब फ़रमाए (आमीन)

﴾37﴿ हज़रते अस्मा बिन्ते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا

येह अमीरुल मोअमिनीन अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की साहिबज़ादी हज़रते उम्मुल मोअमिनीन आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की बहन और जन्नती सहाबी हज़रते जुबैर बिन अल अ़वाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की

बीवी हैं। ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर इन ही के शिकम से पैदा हुए। हिजरत के बा'द मुहाजिरीन के यहां कुछ दिनों तक अवलाद नहीं हुई तो यहूदियों को बड़ी ख़ुशी हुई बल्कि बा'ज़ यहूदियों ने येह भी कहा कि हम लोगों ने ऐसा जादू कर दिया है कि किसी मुहाजिर के घर में बच्चा पैदा ही नहीं होगा। इस फ़ज़ा में सब से पहले जो बच्चा मुहाजिरीन के यहां पैदा हुवा वोह येही अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) थे। पैदा होते ही ह़ज़रते बीबी अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इस अपने फ़रज़न्द को बारगाहे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में भेजा। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी मुक़द्दस गोद में ले कर खजूर मंगाई और ख़ुद चबा कर खजूर को इस बच्चे के मुंह में डाल दिया और अ़ब्दुल्लाह नाम रखा और ख़ैरो बरकत की दुआ़ फ़रमाई। येह इस बच्चे की ख़ुश नसीबी है कि सब से पहली ग़िज़ा जो इन के शिकम में गई वोह हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का लुआ़बे दहन था चुनान्चे ह़ज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को अपने बच्चे के इस शरफ़ पर बड़ा नाज़ था इन के शोहर ह़ज़रते ज़ुबैर रिश्ते में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के फूफीज़ाद हैं, मुहाजिरीन में बहुत ही ग़रीब थे। ह़ज़रते बीबी अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا जब इन के घर में आईं तो घर में न कोई लौंडी थी न कोई ग़ुलाम। घर का सारा काम धंदा येही किया करती थीं यहां तक कि घोड़े का घास दाना और उस की मालिश की ख़िदमत भी येही अन्जाम दिया करती थीं बल्कि ऊंट की ख़ूराक के लिये खजूरों की गुटलियां भी बाग़ों से चुन कर और सर पर गठरी लाद कर लाया करती थीं। इन की येह मशक़्क़त देख कर ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इन को ग़ुलाम अ़ता फ़रमा दिया तो इन के कामों का बोझ हलका हो गया। आप फ़रमाया करती थीं कि एक ग़ुलाम दे कर गोया मेरे वालिद ने मुझे आज़ाद कर दिया।

येह मेहनती होने के साथ साथ बड़ी बहादुर और दिल गुर्दा वाली औ़रत थीं। हिजरत के वक़्त ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

के मकान में जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का तौशए सफ़र एक थेले में रखा गया और उस थेले का मुंह बांधने के लिये कुछ न मिला तो ह़ज़रते बीबी अस्मा ने फ़ौरन अपनी कमर के पटके को फाड़ कर इस से तौशादान का मुंह बांध दिया इसी दिन से इन को ज़ातुन्नत़ाक़ैन (दो पटके वाली) का मुअ़ज़्ज़ज़ लक़ब मिला। ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तो हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ हिजरत की लेकिन ह़ज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इस के बा'द अपने घर वालों के साथ हिजरत की।

(الاستیعاب ،باب النساء،باب الالف ۳۲۰۹،أسماء بنت ابی بکر،ج ٤،ص ٣٤٥)

63 हि. में वाक़िअ़ए करबला के बा'द यज़ीदे पलीद की फ़ौजों ने मक्कए मुकर्रमा पर ह़म्ला किया और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इन ज़ालिमों का मुक़ाबला किया और यज़ीदी लश्कर को कुत्तों और चूहों की त़रह़ दौड़ा दौड़ा कर मारा। उस वक़्त भी ह़ज़रते अस्मा मक्कए मुकर्रमा में मौजूद रह कर अपने फ़रज़न्द ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर की हिम्मत बढ़ाती और इन की फ़त्ह़ो नुसरत के लिये दुआ़एं मांगती रहीं और जब अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान के ज़मानए हुकूमत में ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ षक़फ़ी ज़ालिम ने मक्कए मुकर्रमा पर ह़म्ला किया और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस ज़ालिम की फ़ौजों का भी मुक़ाबला किया तो इस ख़ूंरेज़ जंग के वक़्त भी ह़ज़रते अस्मा मक्कए मुकर्रमा में अपने फ़रज़न्द का ह़ौसला बढ़ाती रहीं यहां तक कि जब अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर को शहीद कर के ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ ने इन की मुक़द्दस लाश को सूली पर लटका दिया और उस ज़ालिम ने मजबूर कर दिया कि बीबी अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا चल कर अपने बेटे की लाश को सूली पर लटकी हुई देखें तो आप अपने बेटे की लाश के पास तशरीफ़ ले गईं। जब लाश को सूली पर देखा तो न रोईं न बिलबिलाईं बल्कि निहायत जुरअत के साथ फ़रमाया कि सब सुवार तो घोड़ों से

उतर गए लेकिन अब तक येह सुवार घोड़े से नहीं उतरा फिर फ़रमाया कि ऐ हज्जाज ! तूने मेरे बेटे की दुन्या ख़राब की और उस ने तेरे दीन को बरबाद कर दिया। इस वाक़िए के बा'द भी चन्द दिनों हज़रते अस्मा ज़िन्दा रहीं, मक्कए मुकर्रमा के क़ब्रिस्तान में मां बेटे दोनों की मुक़द्दस क़ब्रें एक दूसरे के बराबर बनी हुई हैं जिन को नजदियों ने तोड़ फोड़ डाला है मगर अभी निशान बाक़ी है और 1959 ई. में इन दोनों मज़ारों की ज़ियारत मैं ने की है (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا)

तबसिरा :- इस्लामी बहनो ! हज़रते बीबी अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ग़रीबी और अपने शोहर की ख़िदमत और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से इन की महब्बत फिर इन की बहादुरी और जुरअत व इस्तिक़्लाल के इन वाक़िआत को बारबार पढ़ो और इन के नक़्शे क़दम पर चलने की कोशिश करो और येह भी सुन लो कि पहले तो हज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के शोहर बहुत ग़रीब थे मगर बहुत ही बड़े मुजाहिद थे, बहुद ज़ियादा माले ग़नीमत में से हिस्सा पाया यहां तक कि बहुत मालदार हो गए और फिर इन के मालों में इस क़दर ख़ैरो बरकत हुई कि शायद ही किसी सहाबी के माल में इतनी ख़ैरो बरकत हासिल हुई होगी।

येह इन की नेक निय्यती और इस्लाम की ख़िदमतों और इबादतों की बरकतों के मीठे मीठे फल थे जो इन को दुन्या की ज़िन्दगी में मिले और आख़िरत में **अल्लाह** तआला ने इन अल्लाह वालियों के लिये जो ने'मतों के ख़ज़ाने तय्यार फ़रमाए हैं इन को तो न किसी आंख ने देखा है न किसी कान ने सुना है न किसी के ख़याल में आ सकता है।

ऐ **अल्लाह** की बन्दियो ! हिम्मत करो और कोशिश करो और इन नेक बन्दियों के तरीक़ों पर चलने का पुख़्ता इरादा कर लो اِنْ شَاءَ اللّٰہ تَعَالٰی **अल्लाह** جَلَّ شَانُہٗ की इमदाद व नुसरत तुम्हारा बाज़ू थाम लेगी और اِنْ شَاءَ اللّٰہ تَعَالٰی दुन्या व आख़िरत में तुम्हारा बेड़ा पार हो जाएगा बस शर्त येह है कि इख़्लास के साथ येह अ़ज़्म कर लो कि हम इन

अल्लाह वाली मुक़द्दस बीबियों के नक़्शे क़दम पर अपनी ज़िन्दगी की आख़िरी सांस तक चलती रहेंगी और इस्लाम के अ़क़ाइदो आ'माल पर पूरी त़रह़ कारबन्द रह कर दूसरी औ़रतों की इस्लाहे ह़ाल के लिये भी अपनी त़ाक़त भर कोशिश करती रहेंगी।

﴾38﴿ ह़ज़रते अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

येह ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की फूफीज़ाद बहन हैं और इन की कुन्यत उम्मे सलमा है। क़बीलए अन्सार से तअ़ल्लुक़ रखने वाली सह़ाबिया हैं। येह बहुत अ़क़्लमन्द और होश गोश वाली औ़रत थीं। एक मरतबा हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुईं और कहने लगीं कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मैं बहुत सी औ़रतों की नुमाइन्दा बन कर आई हूं। सुवाल येह है कि अल्लाह तआ़ला ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को मर्दों और औ़रतों दोनों की त़रफ़ रसूल बना कर भेजा है। चुनान्चे हम औ़रतें आप पर ईमान लाई हैं और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की पैरवी का अ़हद किया है अब सूरते ह़ाल येह है कि हम औ़रतें पर्दा नशीन बना कर घरों में बिठा दी गई हैं और हम अपने शोहरों की ख़्वाहिशात पूरी करती हैं और इन के बच्चों को गोद में लिये फिरती हैं और इन के घरों की रखवाली करती हैं और इन के मालों और सामानों की ह़िफ़ाज़त करती हैं और मर्द लोग जनाज़ों और जिहादों में शिर्कत कर के अज्रे अ़ज़ीम ह़ासिल करते हैं तो सुवाल येह है कि इन मर्दों के षवाबों में से कुछ हम औ़रतों को भी ह़िस्सा मिलेगा या नहीं। येह सुन कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया कि देखो इस औ़रत ने अपने दीन के बारे में कितना अच्छा सुवाल किया है फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ अस्मा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) तुम सुन लो और जा कर औ़रतों से कह दो कि औ़रतें अगर अपने शोहरों की ख़िदमत गुज़ारी कर के इन को ख़ुश रखें और हमेशा अपने शोहरों की ख़ुशनूदी त़लब करती रहें और इन की फ़रमां

बरदारी करती रहें तो मर्दों के आ'माल के बराबर ही औ़रतों को भी षवाब मिलेगा। येह सुन कर ह़ज़रते अस्मा बिन्ते यज़ीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا मारे खुशी के ना'रए तक्बीर लगाती हुई बाहर निकलीं।

(الاستيعاب ،باب النساء،باب الالف٣٢٦٧،أسماء بنت يزيد،ج٤،ص٣٥٠)

तबसिरा :- अस्मा बिन्ते यज़ीद को षवाबे आख़िरत ह़ासिल करने का कितना शौक़ और जज़्बा था येह तमाम मुसलमान औ़रतों के लिये एक क़ाबिले तक़्लीद नुमूना है। काश इस ज़माने की औ़रतों में भी येह शौक़ और जज़्बा होता तो यक़ीनन येह औ़रतें भी नेक बीबियों की फ़ेहरिस्त में शामिल हो जातीं और षवाब से माला माल हो जातीं।

﴾39﴿ ह़ज़रते उम्मे ख़ालिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

येह भी सह़ाबिया हैं जब मुसलमानों ने ह़ब्शा की त़रफ़ हिजरत की तो येह ह़ब्शा में पैदा हुईं जब इन के वालिदैन ह़ब्शा से हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा आए तो इन के बाप इन को ले कर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में गए। येह उस वक़्त पीले रंग का कपड़ा पहने हुए थीं। आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन को देख कर फ़रमाया कि बहुत अच्छा लिबास है बहुत अच्छा कपड़ा है फिर एक फूल दार चादर जो बहुत ही ख़ूब सूरत थी आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने प्यार व मह़ब्बत से इन को ओढ़ा दी और येह फ़रमाया कि इस को पुरानी कर। इस को फाड़। येह बहुत अच्छी लगती है। इस दुआ़ का मत़लब येह था कि तेरी उ़म्र ख़ूब बड़ी हो ताकि इस को ओढ़ते ओढ़ते पुरानी कर दे और बिल्कुल फट जाए चुनान्चे इस दुआ़ए नबवी का येह अषर हुवा कि ह़ज़रते उम्मे ख़ालिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की उ़म्र इस क़दर लम्बी हुई कि इन की बड़ी उ़म्र का लोगों में चर्चा होता था और लोग कहा करते थे कि हम ने नहीं सुना कि जितनी लम्बी उ़म्र इन्हों ने पाई है इतनी बड़ी उ़म्र मदीने में किसी ने पाई हो। (الاصابة في تمييز الصحابة، رقم ١٢٠٠٤،أم خالد بنت خالد،ج٨،ص٣٨٥)

तबसिरा :- سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उ़म्र लम्बी हो और फिर सारी उ़म्र नेकियों के कमाने में गुज़र जाए इस से बड़ी ख़ुश नसीबी और क्या हो सकती है ? इस में कोई शक नहीं कि ह़ज़रते उम्मे ख़ालिद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا बड़ी नेक बख़्त और ख़ुश नसीब थीं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से इन को चादर ओढ़ाई और अपनी मुबारक दुआ़ओं से इन को सरफ़राज़ किया जिस का येह अषर हुवा कि उ़म्र लम्बी हुई और जिन्दगी का एक एक लम्ह़ा नेकियों और इ़बादतों की छाऊं में गुज़रा।

दीनी बहनो ! तुम भी कोशिश करो कि जितनी भी उ़म्र गुज़रे वोह नेकियों में गुज़रे येह यक़ीनन तिजारते आख़िरत है कि जिस में नफ़्अ़ के सिवा कभी कोई घाटा नहीं हो सकता।

﴾40﴿ ह़ज़रते उम्मे हानी बिन्ते अबू त़ालिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا

येह ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बहन हैं। फ़त्हे मक्का के साल 8 हि. में इन्हों ने इस्लाम क़बूल कर लिया था। ज़ुहूरे इस्लाम से पहले ही इन की शादी हुबैरा बिन अबी वह्ब के साथ हो गई थी। हुबैरा अपने कुफ़्र पर अड़ा रहा और मुसलमान नहीं हुवा।

(الاستیعاب ، کتاب کنی النساء،باب الہاء،٣٦٥٦،أم ھانی بنت أبی طالب،ج٤،ص٥١٧)

इसी लिये मियां बीवी में जुदाई हो गई। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के ज़ख़्मी दिल को तस्कीन देने के लिये इन के पास कहला भेजा कि अगर तुम्हारी ख़्वाहिश हो तो मैं ख़ुद तुम से निकाह़ कर लूं ? उन्हों ने जवाब में अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब मैं कुफ़्र की ह़ालत में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत करती थी तो भला इस्लाम की दौलत मिल जाने के बा'द मैं क्यूं न आप से मह़ब्बत करूंगी ? लेकिन बड़ी मुश्किल येह है कि मेरे छोटे छोटे बच्चे हैं। मुझे ख़ौफ़ है कि मेरे इन बच्चों की वजह से आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को कोई तक्लीफ़ न पहुंच जाए। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इन का जवाब सुन कर मुत़्मइन हो गए।

हज़रते उम्मे हानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की येह दो खुसूसिय्यात बहुत ज़ियादा बाइषे शरफ़ हैं एक येह कि फ़त्हे मक्का के दिन हज़रते उम्मे हानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने एक काफ़िर को अमान और पनाह दे दी इस के बा'द हज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उस काफ़िर को क़त्ल करना चाहा। जब उम्मे हानी ने हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस को तुम ने अमान दे दी उस को हम ने भी अमान दे दी।

(صحیح البخاری ، کتاب الجزیۃ ولھوادعۃ،باب امان النساء،رقم ۳۱۷۱،ج۲،ص۳۶۷)

दूसरी येह कि फ़त्हे मक्का के दिन हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के मकान पर ग़ुस्ल फ़रमाया और खाना तनावुल फ़रमाया फिर आठ रक्अ़त नमाज़े चाश्त अदा फ़रमाई।

(صحیح البخاری ، کتاب الغسل،باب التسترفی الغسل عند الناس،رقم ۲۸۰،ج۱،ص۱۱۵)

﴾41﴿ हज़रते उम्मे कुलषूम बिन्ते उ़क़्बा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا

येह मक्कए मुकर्रमा में मुसलमान हुईं और चूंकि मुफ़्लिसी की वजह से सुवारी का इन्तिज़ाम न हो सका इस लिये पैदल चल कर इन्हों ने हिजरत की और मदीनए मुनव्वरा पहुंच कर हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से बैअ़त हुई। मदीने में इन से ज़ैद बिन हारिष رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने निकाह़ फ़रमा लिया फिर जब वोह जंगे "मौता" में शहीद हो गए तो इन से जन्नती सह़ाबी ह़ज़रते ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने निकाह़ फ़रमा लिया फिर त़लाक़ दे दी तो दूसरे जन्नती सह़ाबी ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इन से निकाह़ फ़रमा लिया और इन के शिकम से इब्राहीम व हुमैद दो फ़रज़न्द पैदा हुए फिर जब ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वफ़ात हो गई तो फ़ातेहे मिस्र ह़ज़रते अ़म्र बिन अल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इन से निकाह़ किया और चन्द महीने ज़िन्दा रह कर वफ़ात पा गई येह ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मां की त़रफ़ से बहन हैं।

(الاستیعاب ، کتاب کنی النساء،باب الکاف۳۶۳۷،أم کلثوم بنت عقبۃ،ج۴،ص۵۰۸)

तबसिरा :- मुसलमान बहनो ! ग़ौर करो कि इन्हों ने इस्लाम की महब्बत में अपने घर और वतन को छोड़ कर पैदल हिजरत की और मदीना जा कर हुज़ूरे अक्दस صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ و اٰلهٖ وسلّم से बैअ़त हुई फिर येह ग़ौर करो कि इन्हों ने यके बा'द दीगरे चार शोहरों से निकाह़ किया इस में उन औ़रतों के लिये बहुत बड़ा सबक़ है जो दूसरा निकाह़ करने को ऐ़ब समझती हैं और पूरी उ़म्र बिला शोहर के गुज़ार देती हैं।

﴾42﴿ ह़ज़रते शिफ़ा बिन्ते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا

येह हिजरत से पहले ही मुसलमान हो गई थीं बहुत ही अ़क़्लमन्द और फ़ज़्लो कमाल वाली औ़रत थीं। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ و اٰلهٖ وسلّم इन पर बहुत ज़ियादा शफ़्क़त व करम फ़रमाते थे। इन्हों ने हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये एक मख़्सूस बिस्तर बना रखा था कि जब आप صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ و اٰلهٖ وسلّم दोपहर में कभी कभी इन के मकान पर क़ैलूला फ़रमाते थे तो वोह इस बिस्तर को हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ و اٰلهٖ وسلّم के लिये बिछा देती थीं। दूसरा कोई शख़्स भी न इस बिस्तर पर सो सकता था न बैठ सकता था।

(الاستيعاب ،باب النساء،باب الشين ٣٤٣٢،الشفاء أم سليمان، ج٤ ،ص ٤٢٣)

तबसिरा :- سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन के क़ल्ब में किस क़दर हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ و اٰلهٖ وسلّم की अ़ज़मत और कितना नुबुव्वत का एह़तिराम था कि जिस बिस्तर पर हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ و اٰلهٖ وسلّم ने आराम फ़रमा लिया उन्हों ने दूसरे किसी शख़्स को भी इस पर बैठने नहीं दिया। येह बिस्तर ह़ज़रते शिफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के बा'द इन के साहिब ज़ादे ह़ज़रते सुलैमान बिन अबी ह़षमा के पास एक यादगारी तबर्रुक होने की ह़ैषिय्यत से मह़फ़ूज़ रहा मगर ह़ाकिमे मदीना मरवान बिन उमवी ने इस मुक़द्दस बिछौने को इन से छीन लिया इस त़रह़ येह तबर्रुक ला पता हो कर ज़ाएअ़ हो गया।

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ و اٰلهٖ وسلّم ने ह़ज़रते शिफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا को जागीर में एक घर भी अ़त़ा फ़रमाया था जिस में येह अपने बेटे सुलैमान के साथ रहा करती थीं। ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ

इन की बहुत क़द्र करते थे बल्कि बहुत से मुआ़मलात में इन से मश्वरा तृलब किया करते थे। इन को बिच्छू के डंक का ज़हर उतारने वाला एक अ़मल भी याद था और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन से फ़रमाया था कि तुम येह अ़मल मेरी बीवी हज़रते हफ़्सा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْھَا को भी सिखा दो। अल ग़रज़ येह बारगाहे नुबुव्वत में मुक़र्रब थीं और हुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के इ़श्क़ो महब्बत की दौलत से माला माल थीं।

(الاستیعاب ،باب النساء،باب الشّین ۳۴۳۲،الشفاء أم سلیمان،ج۴،ص۴۲۳۔۴۲۴)

﴿43﴾ हज़रते उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا

येह मश्हूर सहाबी हज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बीवी हैं। बहुत समझदार निहायत ही अ़क़्लमन्द सहाबिया हैं। इ़ल्मी फ़ज़ीलत के इ़लावा इ़बादत में भी बे मिषाल थीं। अपने शोहर हज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से दो साल पहले मुल्के शाम में हज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िलाफ़त के दौरान इन की वफ़ात हुई।

(الاستیعاب ،کتاب النساء،باب الدال ۴۸۵۳،أم الدرداء،ج۴،ص۴۸۸)

﴿44﴾ हज़रते रुबय्यिअ़ बिन्ते नज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا

येह मश्हूर सहाबी हज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की फूफी हैं। बहुत ही बहादुर और बुलन्द हौसला सहाबिया हैं। इन के फ़रज़न्द हारिषा बिन सुराक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी बहुत बा कमाल हुए। अन्सारी ख़ानदान में क़ाबिले फ़ख़्र औ़रत थीं। जब इन के बेटे हारिषा शहीद हो गए तो इन्हों ने कहा कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अगर मेरा बेटा जन्नत में है तो मैं सब्र करूंगी वरना इतना ग़म खाऊंगी कि आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم भी देखेंगे तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तेरा बेटा जन्नतुल फ़िरदौस में है।

(الاستیعاب ،باب النساء،باب الراء ۳۳۷۱،الربیع بنت النضر،ج۴،ص۳۹۷)

﴾45﴿ ह़ज़रते उम्मे शरीक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

येह क़बीला "दोस" की एक सह़ाबिया हैं जो अपने वत़न से हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा आ गई थीं येह बहुत ही इ़बादत गुज़ार और साह़िबे करामत भी थीं इन की दो करामतें बहुत मश्हूर हैं जिन को हम ने अपनी किताब "करामते सह़ाबा" में भी लिखा है। एक करामत तो येह है कि येह हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा जा रही थीं और रोज़ादार थीं। रास्ते में एक यहूदी के मकान पर पहुंचीं ताकि रोज़ा इफ़्त़ार कर लें। उस दुश्मने इस्लाम ने इन को एक मकान में बन्द कर दिया ताकि रोज़ा इफ़्त़ार करने के लिये एक क़त़रा पानी भी न मिल सके। जब सूरज गु़रूब हो गया और इन को रोज़ा इफ़्त़ार करने की फ़िक्र हुई तो अन्धेरी बन्द कोठड़ी में अचानक किसी ने ठन्डे पानी का भरा हुवा डोल इन के सीने पर रख दिया और इन्हों ने रोज़ा इफ़्त़ार कर लिया। दूसरी करामत येह है कि इन के पास चमड़े का एक कुप्पा था। एक दिन इन्हों ने उस कुप्पे में फूंक मार कर इस को धूप में रख दिया तो वोह कुप्पा घी से भर गया फिर हमेशा उस कुप्पे में से घी निकलता रहता यहां तक कि इस करामत का चर्चा हो गया कि लोग कहा करते थे कि उम्मे शरीक का कुप्पा ख़ुदा की निशानियों में से एक निशानी है।

(حجة اللّٰه على العالمين،المطلب الثالث في ذكر بعض كرامات أصحاب رسول اللّٰه صلى اللّٰه عليه وسلم،أم تسريك،ص٦٢٣)

﴾46﴿ ह़ज़रते उम्मे साइब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

येह एक बुढ़िया नाबीना सह़ाबिया हैं जो ख़ुदा की राह में अपना वत़न छोड़ कर और हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा रहने लगी थीं इन की भी एक करामत अ़जीबो ग़रीब है और वोह येह है कि इन का एक बेटा जो अभी बच्चा था अचानक इन्तिक़ाल कर गया। लोगों ने उस की लाश को कपड़ा ओढ़ा दिया और ह़ज़रते उम्मे साइब को ख़बर कर दी कि आप का बच्चा इन्तिक़ाल कर गया। येह सुन कर इन्हों ने आबदीदा हो कर दोनों हाथ उठा कर इस त़रह़ दुआ़ मांगी कि

"या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर ईमान लाई और मैं ने अपना वतन छोड़ कर तेरे रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की तरफ़ हिजरत की है इस लिये ऐ मेरे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से दुआ़ करती हूं कि तू मेरे बच्चे की मौत की मुसीबत मुझ पर न डाल।"

ह़ज़रते अनस बिन मालिक सह़ाबी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का बयान है कि ह़ज़रते उम्मे साइब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की दुआ़ ख़त्म होते ही एक दम इन का बच्चा अपने चेहरे से कपड़ा उठा कर उठ बैठा और ज़िन्दा हो गया। (حجة اللّٰه على العالمين، فى معجزات سيد المرسلين،ص٦٢٣)

तबसिरा :- इस्लामी बहनो ! ग़ौर करो कि हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत करने वालियों और इ़बादत गुज़ार औ़रतों को ख़ुदावन्दे करीम ने कैसी कैसी करामतों से सरफ़राज़ फ़रमाया है। तुम भी रसूले पाक से सच्ची मह़ब्बत रखो और क़िस्म क़िस्म की नेकियों और इ़बादतों में अपनी ज़िन्दगी गुज़ार दो। ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस बड़ा रह़ीमो करीम है। हो सकता है कि वोह अपना फ़ज़्लो करम फ़रमा दे और तुम को भी साह़िबे करामत बना दे।

﴾47﴿ ह़ज़रते कब्शा अन्सारिया رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا

येह क़बीलए अन्सार की बहुत ही जांनिषार सह़ाबिया हैं। एक मरतबा रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन की मशक के मुंह से अपना मुंह लगा कर पानी नोश फ़रमा लिया तो ह़ज़रते कब्शा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने उस मशक का मुंह काट कर तबर्रुकन अपने पास रख लिया।

(الاستيعاب ،باب النساء،باب الكاف ٣٥١١، كبشة الأنصارية، ج٤،ص٤٦٠)

तबसिरा :- इस से पता चलता है कि ह़ज़राते सह़ाबा व सह़ाबियात رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم को हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से कितनी वालिहाना और आ़शिक़ाना मह़ब्बत थी कि जिस चीज़ को भी हु़ज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से तअ़ल्लुक़ हो जाता था वोह चीज़ इन की नज़रों में बाइ़षे ता'ज़ीम और

लाइक़े एह्‌तिराम हो जाया करती थीं । क्यूं न हो कि येही ईमान की निशानी है कि मुसलमान न सिर्फ़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात से मह़ब्बत करे बल्कि हुज़ूर की हर हर चीज़ से भी मह़ब्बत करे और हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की हर चीज़ को अपने लिये क़ाबिले ता'ज़ीम जाने और इस का ईमानी मह़ब्बत के साथ ए'ज़ाज़ो इकराम करे ।

﴾48﴿ ह़ज़रते ख़न्सा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا

येह ज़मानए जाहिलिय्यत में बहुत बड़ी मरषिया गो शाइ़रा थीं यहां तक कि "इ़काज़" के मैले में इन के ख़ैमे पर जो साइन बोर्ड लगता था उस पर "अरषिल अ़रब" (अ़रब की सब से बड़ी मरषिया गो शाइ़रा) लिखा होता था येह मुसलमान हुईं और ह़ज़रते अमीरुल मोअमिनीन उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के दरबारे ख़िलाफ़त में भी ह़ाज़िर हुईं । इन की शाइ़री का दीवान आज भी मौजूद है और उ़–लमाए अदब का इत्तिफ़ाक़ है कि मरषिया के फ़न में आज तक ख़न्सा का मिष्ल पैदा नहीं हुवा इन के मुफ़स्सल ह़ालात अ़ल्लामा अबुल फ़रज अस्फ़हानी ने अपनी किताब "किताबुल अग़ानी" में तह़रीर किये हैं । येह सह़ाबियत के शरफ़ से सरफ़राज़ हैं और बे मिषाल शे'र गोई के साथ येह बहुत ही बहादुर भी थीं । मुह़र्रम 14 हि. में जंगे क़ादिसिय्या के ख़ूंरेज़ मा'रके में येह अपने चार जवान बेटों के साथ तशरीफ़ ले गईं जब मैदाने जंग में लड़ाई की सफ़ें लग गईं और बहादुरों ने हथियार संभाल लिये तो इन्हों ने अपने बेटों के सामने येह तक़्रीर की, कि

"मेरे प्यारे बेटो ! तुम अपने मुल्क को दूभर न थे न तुम पर कोई क़ह़त पड़ा था बा वुजूद इस के तुम अपनी बुढ़ी मां को यहां लाए और फ़ारस के आगे डाल दिया । ख़ुदा की क़सम ! जिस त़रह़ तुम एक मां की अवलाद हो इसी त़रह़ एक बाप की भी हो मैं ने कभी तुम्हारे बाप से बद दियानती नहीं की न तुम्हारे मामूं को रुस्वा किया लो जाओ आख़िर तक लड़ो ।"

बेटों ने मां की तक़रीर सुन कर जोश में भरे हुए एक साथ दुश्मनों पर ह़म्ला कर दिया। जब निगाह से ओझल हो गए तो ह़ज़रते ख़न्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने आस्मान की त़रफ़ हाथ उठा कर कहा कि इलाही عَزَّوَجَلَّ तू मेरे बच्चों का ह़ाफ़िज़ो नासिर है तू इन की मदद फ़रमा।

चारों भाइयों ने इन्तिहाई दिलेरी और जांबाज़ी के साथ जंग की यहां तक कि चारों इस लड़ाई में शहीद हो गए। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ इस वाक़िए़ से बेह़द मुतअष्षिर हुए और इन चारों बेटों की तनख़्वाहें इन की मां ह़ज़रते ख़न्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को अ़त़ा फ़रमाने लगे।

(الاستيعاب ،باب النساء،باب الخاء ۳۳۵۱،خنساء بنت عمرو السلمية ج ٤،ص۳۸۷)

तबसिरा :- ख़वातीने इस्लाम ! ख़ुदा के लिये ह़ज़रते ख़न्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का दिल अपने सीनों में पैदा करो और इस्लाम पर अपने बेटों को क़ुरबान कर देने का सबक़ इस दीनदार और जांनिषार औ़रत से सीखो जिस के जोशे इस्लाम व जज़्बए जिहाद की याद क़ियामत तक फ़रामोश नहीं की जा सकती (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا)

﴾49﴿ ह़ज़रते उम्मे वरक़ा बिन्ते अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا

येह क़बीलए अन्सार की एक सह़ाबिया हैं। ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इन पर बहुत ही मेहरबान थे और कभी कभी इन के घर भी तशरीफ़ ले जाते थे और इन की ज़िन्दगी ही में आप ने इन को शहादत की बिशारत दी और इन को शहीदा के लक़ब से सरफ़राज़ फ़रमाया। जंगे बद्र के मौक़अ़ पर इन्हों ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आप मुझे भी इस जंग में चलने की इजाज़त दे दीजिये।

मैं ज़ख़्मियों की मरहम पट्टी और इन की तीमारदारी करूंगी शायद **अल्लाह** तआ़ला मुझे शहादत नसीब फ़रमाए। येह सुन कर हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि तुम अपने घर में बैठी रहो **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें शहादत से सरफ़राज़ फ़रमाएगा, यक़ीनन तुम शहीदा हो। चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के दौरे ख़िलाफ़त में इन को इन के घर के अन्दर इन के एक ग़ुलाम और लौंडी ने क़त्ल कर दिया और दोनों फ़िरार हो गए। अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को बड़ा रंजो क़लक़ हुवा और आप ने इन दोनों क़ातिलों को गिरिफ़्तार कराया और मदीनए मुनव्वरा में इन दोनों को फांसी दी गई थी। उम्मे वरक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की शहादत की ख़बर सुन कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि बेशक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सच्चे थे क्यूंकि आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाया करते थे कि चलो उम्मे वरक़ा शहीदा की मुलाक़ात कर लें चुनान्चे ऐसा ही हुवा कि घर बैठे इन को शहादत नसीब हो गई। (الاستیعاب ، کتاب النساء،باب الواو ۳۶۵۸،ام ورقة بنت عبداللّٰه ج٤،ص٥١٩)

तबसिरा :- ह़ज़रते उम्मे वरक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के शौक़े शहादत से इ़ब्रत ह़ासिल करो।

﴾50﴿ ह़ज़रते सय्यिदा आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا

येह ह़ज़रते ग़ौष मुह्युद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللّٰه की फूफी हैं। बड़ी आ़बिदा ज़ाहिदा और साहिबे करामत वलिया थीं। एक मरतबा गीलान में बिल्कुल बारिश नहीं हुई और लोग क़ह्त़ से परेशान ह़ाल हो कर इन की ख़िदमत में दुआ़ के लिये ह़ाज़िर हुए तो आप ने अपने सह्न में झाड़ू दे कर आस्मान की त़रफ़ सर उठाया और येह कहा कि

رَبِّ اَنَا كَنَسْتُ فَرُشَّ اَنْتَ

या'नी ऐ परवर दगार ! मैं ने झाड़ू दे दिया तू छिड़काव कर दे।

इस दुआ़ के बा'द फ़ौरन ही मूसलाधार बारिश होने लगी और इस क़दर बारिश हुई कि लोग निहाल और ख़ुशह़ाल हो गए।

(بہجۃ الاسرار،ذکر نسبہ و صفتہ،ص ۱۷۳)

तबसिरा :- **अल्लाह अक्बर** ! ख़ुदा के नेक बन्दों और नेक बन्दियों की विलायत और करामत का क्या कहना ? जो लोग औलिया से अ़क़ीदत व मह़ब्बत नहीं रखते वोह बहुत बड़े मह़रूम बल्कि मन्हूस हैं इस लिये हर मुसलमान मर्द व औ़रत पर लाज़िम है कि इन बुज़ुर्गों से अ़क़ीदत व मह़ब्बत रखे और फ़ातिह़ा पढ़ कर इन की नियाज़ दिला कर इन की रूह़ों को षवाब पहुंचाता रहे और इन को वसीला बना कर ख़ुदा से दुआ़एं मांगता रहे। औलिया ख़ुदा के मह़बूब और प्यारे बन्दे हैं इस लिये जो मुसलमान औलिया से उल्फ़त व अ़क़ीदत रखता है **अल्लाह** तआ़ला उस मुसलमान से ख़ुश हो कर उस को अपना प्यारा बन्दा बना लेता है और त़रह़ त़रह़ की ने'मतों और दौलतों से उस बन्दे को माला माल और ख़ुशह़ाल बना देता है। इस क़िस्म के हज़ारों वाक़िआ़त हैं कि अगर इन को लिखा जाए तो किताब बहुत मोटी हो जाएगी।

﴾51﴿ ह़ज़रते मुआ़ज़ अ़दविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

येह बहुत ही इ़बादत गुज़ार और परहेज़गार ख़ुदा की नेक बन्दी थीं। ह़ज़रते उम्मुल मोअमिनीन बीबी आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ह़दीष में शागिर्द हैं। दिन रात में छे सो रक्अ़ात नफ़्ल पढ़ा करती थीं और रात भर नवाफ़िल और ख़ुदा की याद में मसरूफ़ रह कर जागती थीं। ख़ुदा के ख़ौफ़ से कभी आस्मान की त़रफ़ सर उठा कर नहीं देखतीं थीं। दिन में कभी कभी जब बहुत ज़ियादा नींद का ग़लबा होता था तो घन्टा दो घन्टा सो लिया करती थीं और अपने नफ़्स से कहा करती थीं कि अभी क्यूं सोई ? येह तो अ़मल का वक़्त है, जाग कर जितना हो सके अच्छे अच्छे अ़मल कर लेना चाहिये, मौत के बा'द जब अ़मल का वक़्त नहीं रहेगा फिर तो

क़ियामत तक सोना ही है। कभी कहा करती थीं कि मैं क्यूं सोऊं ? क्या मा'लूम कब मौत आ जाए ? कहीं ऐसा न हो कि मैं सोती रह जाऊं और खुदा की याद से ग़ाफ़िल रहते हुए मेरा दम निकल जाए। ग़रज़ इन पर ख़ौफ़े खुदा का बहुत ज़ियादा ग़लबा था जो विलायत की ख़ास निशानी है। **अल्लाह** तआ़ला हर मुसलमान को येह दौलत नसीब फ़रमाए (आमीन)

तबसिरा :- **अल्लाह** की बन्दियो ! आंखें खोलो और देखो कि कैसी कैसी नेक बीबियां इस दुन्या में हो गईं। क्या तुम में भी नेक बनने का कोई शौक़ है ? हाए अफ़्सोस ! आज कल की मुसलमान औ़रतों की ज़िन्दगी और इन की ग़फ़्लतों और बद आ'मालियों को देख कर डर लगता है कि कहीं इन गुनाहों की नुहूसत से खुदा का अ़ज़ाब न उतर पड़े। ऐ सीनेमा देख देख कर जागने वालियो ! क्या खुदा के ख़ौफ़ से भी तुम कभी जागती रही हो और ऐ नाविल और झूटे अफ़्साने पढ़ने वालियो ! क्या तुम्हें इस की भी तौफ़ीक़ हुई कि कुरआन और दीनी व ईमानी किताबें पढ़ो ? सोचो और इ़ब्रत पकड़ो और अपनी ह़ालतों को बदलो और येह न भूलो कि दुन्या की ज़िन्दगी चन्द रोज़ा और आनी फ़ानी है। लिहाज़ा जल्द कुछ आख़िरत का काम कर लो।

﴾52﴿ ह़ज़रते राबिआ़ बसरिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

येह वोह नेक बीबी और करामत वाली वलिया हैं कि तमाम दुन्या में इन की धूम मची हुई है। येह दिन रात खुदा के ख़ौफ़ से रोया करती थीं। अगर इन के सामने कोई जहन्नम का ज़िक्र कर देता तो येह मारे ख़ौफ़ के बेहोश हो जाया करती थीं। बहुत ज़ियादा नफ़्ली नमाज़ें पढ़ा करती थीं। खुदा ने इन का दिल इस क़दर रोशन कर दिया था कि हज़ारों मील के वाक़िआत की इन को ख़बर हो जाया करती थी बल्कि अपनी आंखों से देख लिया करती थीं। बड़े बड़े बुज़ुर्गाने दीन इन से दुआ़ लेने के लिये इन की ख़िदमत में ह़ाज़िरी दिया करते थे। इन की करामतें और इन के अक़्वाल बहुत ज़ियादा हैं जो आ़म तौ़र पर मशहूर हैं।

﴾53﴿ ह़ज़रते फ़ात़िमा नीशा पूरिया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا

येह बड़ी अल्लाह वाली हुई हैं। मिस्र के एक बहुत बड़े बुज़ुर्ग ह़ज़रते ज़ुन्नून मिस्री عَلَیۡہِ رَحۡمَۃ फ़रमाया करते थे कि इस अल्लाह वाली नेक बीबी से मुझे बहुत ज़ियादा फ़ैज़ मिला है। ह़ज़रते ख़्वाजा बायज़ीद बिस्त़ामी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ का बयान है कि फ़ात़िमा के बराबर बुज़ुर्गी में कोई औ़रत मेरी नज़र से नहीं गुज़री। वोह येह फ़रमाया करती थीं कि जो ख़ुदा की याद से ग़ाफ़िल हो जाता है वोह तमाम गुनाहों में पड़ जाता है, जो मुंह में आता है बक डालता है और जो दिल चाहता है कर बैठता है और जो ख़ुदा की याद में मसरूफ़ रहता है वोह फ़ुज़ूल कामों और गुनाह की बातों के करने और बोलने से मह़फ़ूज़ रहता है। मक्कए मुकर्रमा में उ़मरह के रास्ते में 223 हि. में इन की वफ़ात हुई।

﴾54﴿ ह़ज़रते आमिना रमलिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا

येह भी बहुत बुलन्द मर्तबा और बा करामत वलिया हैं। ह़ज़रते बिशर ह़ाफ़ी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ जो बहुत बड़े मुह़द्दिष और साह़िबे करामत वली हैं इन की मुलाक़ात के लिये जाया करते थे। एक मरतबा ह़ज़रते बिशर ह़ाफ़ी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ बीमार हो गए तो ह़ज़रते आमिना रमलिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا इन की बीमार पुर्सी के लिये गईं। इत्तिफ़ाक़ से उसी वक़्त ह़ज़रते इमाम अह़मद رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ भी इ़यादत के लिये आ गए। जब इन को पता चला कि बीबी आमिना रमलिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا आई हुई हैं तो ह़ज़रते इमाम अह़मद رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने ह़ज़रते बिशर ह़ाफ़ी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से कहा : इन बीबी साह़िबा से हमारे ह़क़ में दुआ़ कराइये चुनान्चे ह़ज़रते बीबी आमिना रमलिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने इस त़रह़ दुआ़ मांगी कि या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बिशर ह़ाफ़ी और अह़मद बिन ह़म्बल को जहन्नम के अ़ज़ाब से अमान दे। ह़ज़रते इमाम अह़मद बिन ह़म्बल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का बयान है कि उसी रात को एक पर्चा आस्मान से हमारे आगे गिरा जिस में بِسۡمِ اللّٰہ के बा'द लिखा हुवा था कि हम ने बिशर ह़ाफ़ी और अह़मद बिन ह़म्बल को दोज़ख़ के अ़ज़ाब से अमान दे दी और हमारे यहां इन दोनों के लिये और भी ने'मतें हैं।

«55» हज़रते मैमूना सौदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا

येह पाक बातिन औ़रत भी अपने ज़माने की एक बहुत ही मश्हूर करामत वाली वलिया हैं। इन के ज़माने के एक बहुत बुलन्द मर्तबा बा करामत वली ह़ज़रते अ़ब्दुल वाह़िद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा मैं ने ख़ुदा से येह दुआ़ मांगी कि या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जन्नत में दुन्या की जो औ़रत मेरी बीवी बनेगी मुझे वोह औ़रत दुन्या ही में एक मरतबा दिखा दे। ख़ुदा ने मेरे दिल में येह बात डाल दी कि वोह औ़रत "मैमूना सौदा" है और वोह कूफ़ा में रहती है। चुनान्चे मैं कूफ़ा गया और जब लोगों से इस का पता ठिकाना पूछा तो मा'लूम हुवा कि वोह एक दीवानी औ़रत है जो जंगल में बकरियां चराती है। मैं उस की तलाश में जंगल की त़रफ़ गया तो येह देखा कि वोह खड़ी हुई नमाज़ पढ़ रही हैं और भेड़िये और बकरियां एक साथ चल फिर रहे हैं। जब वोह नमाज़ से फ़ारिग़ हुई तो मुझ से फ़रमाया कि ऐ अ़ब्दल वाह़िद ! जाओ ! हमारी तुम्हारी मुलाक़ात बहिश्त में होगी। मुझे बेह़द तअ़ज्जुब हुवा कि इन बीबी साह़िबा को मेरा नाम और मेरे आने का मक़्सद कैसे मा'लूम हो गया। मुझे येह ख़याल आया ही था कि उन्हों ने कहा कि ऐ अ़ब्दल वाह़िद ! क्या तुम को मा'लूम नहीं कि रोज़े अज़ल में जिन जिन रूहों को एक दूसरे की पहचान हो गई है इन में दुन्या के अन्दर उल्फ़त व मह़ब्बत पैदा हो जाया करती है। फिर मैं ने पूछा कि भेड़ियों और बकरियों को मैं एक साथ चरते हुए देख रहा हूं येह क्या मुआ़मला है? येह सुन कर उन्हों ने जवाब दिया कि जाइये अपना काम कीजिये मुझे नमाज़ पढ़ने दीजिये, मैं ने अपना मुआ़मला **अल्लाह** तआ़ला से दुरुस्त कर लिया है इस लिये **अल्लाह** तआ़ला ने मेरी बकरियों का मुआ़मला भेड़ियों के साथ दुरुस्त कर दिया है।

तबसिरा :- मां बहनो ! येह मुख़्तलिफ़ ज़मानों की पचपन बा कमाल औ़रतों का तज़्किरा हम ने लिख दिया है ताकि मुसलमान औ़रतें इन अल्लाह वालियों के ह़ालात व वाक़िआ़त को पढ़ कर इ़ब्रत और सबक़ ह़ासिल करें और अपनी इस्लाह़ कर के दोनों जहान की सलाह़ व फ़लाह़ ह़ासिल करने का सामान करें । ख़ुदावन्दे करीम अपने ह़बीब عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم के तुफ़ैल में सब को हिदायत दे और सब को सिराते़ मुस्तक़ीम पर चला कर ख़ातिमा बिल ख़ैर नसीब फ़रमाए (आमीन)

नेक बीबियों का इन्आ़म

मेह़शर में बख़्शी जाएंगी सब नेक बीबियां
जन्नत ख़ुदा से पाएंगी सब नेक बीबियां
हूराने ख़ुल्द आंखें बिछाएंगी राह में
जन्नत में जब कि जाएंगी सब नेक बीबियां
हर हर क़दम पर ना'रए तक्बीर व मरह़बा
ए'ज़ाज़ ऐसा पाएंगी सब नेक बीबियां
कौषर भी सल्सबील भी पीती रहेंगी येह
जन्नत के मेवे खाएंगी सब नेक बीबियां
ह़क़ तआ़ला का होगा इन्हें दीदार नसीब
अन्वार में नहाएंगी सब नेक बीबियां
तारों में जैसे चांद की होती है रोशनी
इस त़रह़ जग मगाएंगी सब नेक बीबियां
जन्नत के ज़ेवरात बहिश्ती लिबास में
सज धज के मुस्कुराएंगी सब नेक बीबियां

जन्नत की ने'मतों में मगन हो के वज्द में
नग़माते शौक़ गाएंगी सब नेक बीबियां
ऐ बीबियो ! नमाज़ पढ़ो नेकियां करो
इन्आ़मे खुल्द पाएंगी सब नेक बीबियां
तुम **आ'ज़मी** के पन्दो नसाएह़ को मान लो
जल्वा तुम्हें दिखाएंगी सब नेक बीबियां

❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁

﴾8﴿

मुतफ़र्रिक़ हिदायात

येह आस्माने हिदायत के चन्द तारे हैं
ख़ुदा करे तुम्हें मिल जाए रोशनी इन से

दस्तकारी और पेशों का बयान

इस ज़माने में सेकड़ों ता'लीम याफ़्ता लड़के और लड़कियां मुलाज़मत न मिलने की वजह से इधर उधर मारे मारे फिरते हैं और अपना ख़र्च चलाने से आ़जिज़ हैं। इसी त़रह़ बा'ज़ ला वारिष ग़रीब औ़रतें ख़ुसूसन बेवा औ़रतें जिन के खाने कपड़े का कोई सहारा नहीं ऐसी परेशानियों और मुसीबतों में मुब्तला हैं कि ख़ुदा की पनाह। इस का बेहतरीन इलाज येह है कि हर लड़का और हर लड़की कोई न कोई दस्तकारी और अपने हाथ का हुनर ज़रूर सीख ले। मगर अफ़्सोस कि हिन्दूस्तान के बा'ज़ जाहिल मुसलमान ख़ुसूसन शुरफ़ा कहलाने वाले दस्तकारी और हाथ के हुनर को ऐ़ब समझते हैं बल्कि हाथ के हुनर से पेशा करने वालों को ह़क़ीर व ज़लील शुमार कर के इन पर त़ा'नाबाज़ी करते रहते हैं और पेशावर लोगों का मज़ाक़ उड़ाया करते हैं। ह़द हो गई कि मक्रो फ़रेब कर के रिश्वतख़ोरों की दलाली कर के यहां तक कि चोरी कर के और भीक मांग कर खाना इन बद बख़्तों को गवारा है मगर कोई दस्तकारी और पेशा करना इन को क़बूल व मन्ज़ूर नहीं।

अ़ज़ीज़ भाइयो और प्यारी बहनो ! सुन लो कि दस्तकारी और अपने हाथों की कमाई इस्लाम में बेहतरीन कमाई शुमार की गई है बल्कि क़ुरआनो ह़दीष में इस को नबियों और रसूलों का त़रीक़ा बताया गया है चुनान्चे एक ह़दीष में है कि कोई खाना कभी उस खाने से अच्छा और बेहतर नहीं होगा जिस को आदमी अपने हाथ के हुनर की कमाई से कमा कर खाए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام अपने हाथ के हुनर की कमाई खाते थे या'नी लोहे की ज़िरहें बनाया करते थे।

(صحیح البخاری، کتاب البیوع، باب کسب الرجل وعمله بیده، رقم ۲۰۷۲، ج۲، ص ۱۱)

इस लिये मां बहनो ! ख़बरदार, ख़बरदार कभी हरगिज़ हरगिज़ किसी दस्तकारी और अपने हाथ के हुनर को ह़क़ीर व ज़लील मत समझो और अगर कोई नादान इस को ह़क़ीर समझे और इस का मज़ाक़ उड़ाए तो हरगिज़ इस की परवाह मत करो और ज़रूर कोई न कोई हुनर सीख लो । कि येह ख़ुदा के प्यारे नबियों की सिफ़त है और ह़लाल कमाई ह़ासिल करने का बेहतरीन ज़रीआ़ है। येह हमारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान है इस लिये इस पर जी जान से अ़मल करो ।

बा'ज़ नबियों की दस्तकारी

ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने हाथ से खेती की । ह़ज़रते इद्रीस عَلَيْهِ السَّلَام ने लिखने और दरज़ी का काम किया। ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام ने लकड़ी तराश कर किश्ती बनाई है जो कि बढ़ई का पेशा है। ह़ज़रते ज़ुलक़रनैन जो बहुत बड़े बादशाह थे और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इन को नबी भी कहा है वोह ज़म्बील या'नी डलिया और टोकरी बनाया करते थे ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام खेती करते थे और आप ने अपने हाथों से ख़ानए का'बा की ता'मीर की जो मे'मारी का काम है। ह़ज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام अपने हाथों से तीर बनाया करते थे । ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام और इन की अवलाद बकरियां चराते थे और बकरियां पाल पाल कर इन को बेचा करते थे। ह़ज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام भी ऊंट और बकरियां चराते थे। ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام लोहे की ज़िरहें बनाया करते थे जो लोहार का काम है । ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ज़म्बील बनाया करते थे । ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام बढ़ई का काम करते थे । ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام एक दुकानदार के हां कपड़ा रंगते थे और ख़ुद हमारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم और तमाम नबियों ने बकरियां चराई हैं ।

अगर्चे इन मुक़द्दस पैग़म्बरों का गुज़र बसर इन चीज़ों पर नहीं था मगर येह तो क़ुरआने मजीद और ह़दीषों से षाबित है कि इन पैग़म्बरों

ने इन कामों को किया है और इन धंदों को आ़र और ऐ़ब नहीं समझा है। इसी त़रह़ बड़े बड़े औलिया और फ़ुक़्हा व मुह़द्दिषीन में से बा'ज़ ने कपड़ा बुना है, किसी ने चमड़े का काम किया है, किसी ने जूता बनाने का पेशा किया है, किसी ने मिठाई बनाने का धंदा किया है किसी ने दरज़ी का काम किया है।

बा'ज़ आसान दस्तकारियां

लड़कों के लिये बा'ज़ आसान दस्तकारियां और पेशे येह हैं : सिलाई का हुनर और मशीन से कपड़े सीना, कपड़ा बुनना, साईकलों और मोटरों की मरम्मत करना, बिजली की फ़िटिंग करना, बढ़ई का काम, लोहार, मे'मार और सुनार का काम करना, टाइप करना, किताबत करना, प्रेस चलाना, कपड़ों की रंगाई–छपाई–धुलाई करना, खेती करना।

लड़कियों के लिये आसान दस्तकारियां येह हैं : स्वेटर बुनना, ऊनी और सूती मौज़े बनाना, चिकन काढ़ना, टोपियां और कपड़े सी सी कर बेचना, सूत कातना, चोटियां बनाना, रस्सी बुटना, चारपाई बुनना, किताबों की जिल्द बनाना, अचार, चटनी, मुरब्बे वग़ैरा बना कर बेचना।

लड़के और लड़कियां इन पेशों और हुनरों को अगर सीख लें तो वोह कभी भी ان شاء اللہ تعالٰی अपनी रोज़ी रोटी के लिये मोह़ताज न रहेंगी।

न तक्लीफ़ दो, न तक्लीफ़ उठाओ

हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِنْ لِّسَانِهٖ وَيَدِهٖ۔

(صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب المسلم من سلم المسلمون من لسانه ویده، رقم ۱۰، ج۱، ص۱۵)

या'नी मुसलमान का इस्लामी निशान येह है कि तमाम मुसलमान उस की ज़बान और उस के हाथ से सलामत रहें।

मत़लब येह है कि वोह किसी मुसलमान को कोई तक्लीफ़ न दे और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह भी फ़रमाया कि मुसलमान को चाहिये कि वोह जो कुछ अपने लिये पसन्द करता है वोही अपने इस्लामी भाइयों के लिये भी पसन्द करे।

(صحیح البخاری، کتاب الایمان،باب من الایمان ان یحب لاخیہ ما یحب لنفسہ،رقم ۱۳، ج۱،ص۱٦)

ज़ाहिर है कि कोई शख़्स भी अपने लिये येह पसन्द नहीं करेगा कि वोह तक्लीफ़ों में मुब्तला हो और दुख उठाए तो फिर फ़रमाने रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मुत़ाबिक़ हर शख़्स पर येह लाज़िम है कि वोह अपने किसी क़ौल व फ़े'ल से किसी को ईज़ा और तक्लीफ़ न पहुंचाए इस लिये मुन्दरजए ज़ैल बातों का ख़ास त़ौर पर हर मुसलमान को ख़याल रखना बहुत ज़रूरी है।

﴾1﴿ किसी के घर मेहमान जाओ या बीमार पुर्सी के लिये जाना हो तो इस क़दर ज़ियादा दिनों तक या इतनी देर तक न ठहरो कि घर वाला तंग हो जाए और तक्लीफ़ में पड़ जाए।

﴾2﴿ अगर किसी की मुलाक़ात के लिये जाओ तो वहां इतनी देर तक मत बैठो या उस से इतनी ज़ियादा बातें न करो कि वोह उकता जाए या उस के काम में ह़रज होने लगे क्यूंकि इस से यक़ीनन उस को तक्लीफ़ होगी।

﴾3﴿ रास्तों में चारपाई या कुर्सी या कोई दूसरा सामान बरतन या ईंट पथ्थर वग़ैरा मत डालो क्यूंकि अकषर ऐसा होता है कि लोग रोज़ाना की आ़दत के मुत़ाबिक़ बे खटके तेज़ी के साथ चले आते हैं और इन चीज़ों से ठोकर खा कर उलझ कर गिर पड़ते हैं बल्कि ख़ुद इन चीज़ों को रास्तों में डालने वाला भी रात के अन्धेरे में ठोकर खा कर गिरता है और चोट खा जाता है।

﴾4﴿ किसी के घर जाओ तो जहां तक हो सके हरगिज़ हरगिज़ उस से किसी चीज़ की फ़रमाइश न करो। बा'ज़ मरतबा बहुत ही मा'मूली चीज़ भी घर में मौजूद नहीं होती और वोह तुम्हारी फ़रमाइश पूरी नहीं

कर सकता ऐसी सूरत में उस को शर्मिन्दगी और तक्लीफ़ होगी और तुम को भी इस से कोफ़्त और तक्लीफ़ होगी कि ख़्वाह मख़्वाह मैं ने उस से एक घटिया दर्जे की चीज़ की फ़रमाइश की और ज़बान ख़ाली गई।

﴾5﴿ हड्डी या लोहे शीशे वग़ैरा के टुकड़ों या ख़ारदार शाख़ों को न खुद रास्तों में डालो न किसी को डालने दो और अगर कहीं रास्तों में इन चीज़ों को देखो तो ज़रूर रास्तों से हटा दो वरना रास्ता चलने वालों को इन चीज़ों के चुभ जाने से तक्लीफ़ होगी और मुमकिन है कि गफ़्लत में तुम्हीं को तक्लीफ़ पहुंच जाए इसी त़रह़ केले और ख़रबूज़े वग़ैरा के छिलकों को रास्तों पर न डालो वरना लोग फिसल कर गिरेंगे।

﴾6﴿ खाना खाते वक़्त ऐसी चीज़ों का नाम मत लिया करो जिस से सुनने वालों को घिन पैदा हो। क्यूंकि बा'ज़ नाज़ुक मिज़ाज लोगों को इस से बहुत तक्लीफ़ हो जाया करती है।

﴾7﴿ जब आदमी बैठे हुए हों तो झाड़ू मत दिलाओ क्यूंकि इस से लोगों को तक्लीफ़ होगी।

﴾8﴿ तुम्हारी कोई दा'वत करे तो जितने आदमियों को तुम्हारे साथ उस ने बुलाया है ख़बरदार इस से ज़ियादा आदमियों को ले कर उस के घर न जाओ शायद खाना कम पड़ जाए तो मेज़बान को शर्मिन्दगी और तक्लीफ़ होगी और मेहमान भी भूक से तक्लीफ़ उठाएंगे।

﴾9﴿ अगर किसी मजलिस में दो आदमी पास पास बैठे बातें कर रहे हों तो ख़बरदार तुम उन दोनों के दरमियान में जा कर न बैठ जाओ कि ऐसा करने से उन दोनों साथियों को तक्लीफ़ होगी।

﴾10﴿ औ़रत को लाज़िम है कि अपने शोहर के सामने किसी दूसरे मर्द की ख़ूब सूरती या उस की किसी ख़ूबी का ज़िक्र न करे क्यूंकि बा'ज़ शोहरों को इस से तक्लीफ़ हुवा करती है इसी त़रह़ मर्द के लिये ज़रूरी है कि वोह अपनी बीवी के सामने किसी दूसरी औ़रत के हुस्नो जमाल या

उस की चाल ढाल का तज़्किरा और ता'रीफ़ न करे क्यूंकि बीवी को इस से तक्लीफ़ पहुंचेगी।

﴾11﴿ किसी दूसरे के ख़त़ को कभी हरगिज़ न पढ़ा करो मुमकिन है ख़त़ में कोई ऐसी राज़ की बात हो जिस को वोह हर शख़्स से छुपाना चाहता हो तो ज़ाहिर है कि तुम ख़त़ पढ़ लोगे तो उस को तक्लीफ़ होगी।

﴾12﴿ किसी से इस त़रह़ की हंसी मज़ाक़ न करो जिस से उस को तक्लीफ़ पहुंचे इसी त़रह़ किसी को ऐसे नाम या अल्क़ाब से न पुकारो जिस से उस को तक्लीफ़ पहुंचती हो। क़ुरआने मजीद में इस की सख़्त मुमानअ़त आई है।

﴾13﴿ जिस मजलिस में किसी ऐ़बी आदमी के ऐ़ब का ज़िक्र करना हो तो पहले देख लो कि वहां इस क़िस्म का कोई आदमी तो नहीं है वरना इस ऐ़ब का ज़िक्र करने से उस आदमी को तक्लीफ़ और ईज़ा पहुंचेगी।

﴾14﴿ दिवारों पर पान खा कर न थूको कि इस से मकान वाले को भी तक्लीफ़ होगी और हर देखने वाले को भी घिन पैदा होगी।

﴾15﴿ दो आदमी किसी मुआ़मले में बात करते हों और तुम से कुछ पूछते गुछते न हों तो ख़्वाह मख़्वाह तुम उन को कोई राए मश्वरा न दो ऐसा हरगिज़ नहीं करना चाहिये येह तक्लीफ़ देने वाली बात है।

बहर ह़ाल ख़ुलासा येह है कि तुम इस कोशिश में लगे रहो कि तुम्हारे किसी क़ौल या फे़'ल या त़रीके़ से किसी को कोई तक्लीफ़ न पहुंचे और तुम खुद बिला ज़रूरत ख़्वाह मख़्वाह किसी तक्लीफ़ में पड़ो।

आदाबे सफ़र

﴾1﴿ सफ़र में रवाना होने से पहले पेशाब व पाख़ाना वग़ैरा ज़रूरियात से फ़राग़त ह़ासिल कर लो।

﴾2﴿ अकेले सफ़र करना खुसूसन ख़त़रों के दौर में अच्छा नहीं। एक दो रुफ़क़ा सफ़र में साथ हों ताकि वक़्ते ज़रूरत एक दूसरे की मदद करें येह मसनून त़रीक़ा है।

﴾3﴿ सफ़र में कम से कम सामान हो येह आराम देह और अच्छा है बा'ज़ औ़रतों में येह ऐ़ब है कि वोह सफ़र में बहुत ज़ियादा सामान लाद लिया करती हैं जिस से बहुत ज़ियादा तक्लीफ़ उठानी पड़ती है। ख़ास कर सब से ज़ियादा मुसीबत मर्दों को उठानी पड़ती है। तमाम सामानों को संभालना, लादना, उतारना, मज़दूरी के पैसे देना येह सारी बलाएं मर्दों के सरों पर नाज़िल होती हैं। औ़रतें तो अच्छी ख़ासी बे फ़िक्र बैठी रहती हैं, पान चबाती रहती हैं और बातें बनाती रहती हैं।

﴾4﴿ लड़ाका और झगड़ालू आदमियों के साथ हरगिज़ सफ़र न किया करो, हर क़दम पर कोफ़्त और तक्लीफ़ उठाओगे।

﴾5﴿ सफ़र में जब तुम किसी के मेहमान बनो तो सब से पहले पेशाब पाख़ाना की जगह मा'लूम कर लो।

﴾6﴿ सफ़र में मुत़ालए़ के लिये कोई किताब, चन्द कार्ड, लिफ़ाफ़े, पेन्सिल, सादा काग़ज़, लोटा गिलास, मुसल्ला, चाक़ू, सूई, धागा, कंघा, आईना ज़रूर साथ रख लो अगर मेज़बान के घर बिस्तर मिलने की उम्मीद हो तो ख़ैर वरना मुख़्तसर बिस्तर भी होना चाहिये।

﴾7﴿ जहां जाना हो वहां दिन में और जल्द पहुंचना चाहिये। बा'ज़ मर्दों और औ़रतों में येह ऐ़ब है कि ख़्वाह शहर में या सफ़र में कहीं भी जाना हो तो टालते टालते बहुत देर कर देते हैं। बा'ज़ की गाड़िया छूट जाती हैं और बिला वजह ताख़ीर से मंज़िले मक़्सूद पर पहुंचते हैं और सारा प्रोग्राम बिगड़ जाता है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुहि़ब्ब या मह़बूब कौन ?

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जिस शख़्स को येह बात अच्छी लगती हो कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुहि़ब्ब बन जाए या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल का मह़बूब बन जाए तो उस को चाहिये कि हमेशा सच्ची बात बोले और जब उस को किसी चीज़ का अमीन बना दिया जाए तो वोह

उस अमानत को अदा करे और अपने तमाम पड़ोसियों के साथ अच्छा सुलूक करे। (شعب الایمان،باب فی تعظیم النبی صلی اللہ علیہ وسلم واجلالہ۔۔۔الخ،رقم ۱۵۳۳،ج۲،ص۲۰۱)

मुसलमानों के उ़यूब छुपाओ

रसूले अकरम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स किसी मुसलमान के ऐ़ब को देख ले और फिर इस की पर्दा पोशी करे तो उस को **अल्लाह** तआ़ला इतना बड़ा षवाब अ़ता फ़रमाएगा जैसे कि ज़िन्दा दरगोर की हुई बच्ची को कोई क़ब्र से निकाल कर उस की परवरिश और उस की जिन्दगी का सामान कर दे।

(مشکاۃ المصابیح،کتاب الآداب ،باب الشفقۃ والرحمۃ،رقم ٤٩٨٤،ج٣،ص٧٥)

दिल की सख़्ती का इलाज

एक शख़्स ने दरबारे रिसालत صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में येह शिकायत की, कि मेरा दिल सख़्त है तो हु़ज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि तुम यतीम के सर पर हाथ फेरो और मिस्कीन को खाना खिलाओ।

(الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلۃ،باب فی کفالۃ الیتیم ورحمتہ۔۔۔الخ،رقم ١٥،ج٣،ص٢٣٧)

बुड्ढों की ता'ज़ीम करो

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो जवान आदमी किसी बुड्ढे की ता'ज़ीम उस के बुढ़ापे की बिना पर करेगा तो **अल्लाह** तआ़ला उस के बुढ़ापे के वक़्त कुछ ऐसे लोगों को तय्यार फ़रमा देगा जो बुढ़ापे में उस का ए'ज़ाज़ व इकराम करेंगे।

(جامع الترمذی،کتاب البر والصلۃ،باب ماجاء فی اجلال الکبیر،رقم ٢٠٢٩،ج٣،ص٤١١)

बेहतरीन घर और बदतरीन घर

हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि मुसलमानों के घरों में सब से बेहतरीन घर वोह है जिस में कोई यतीम रहता हो और उस के साथ बेहतरीन सुलूक किया जाता हो और मुसलमानों के घरों में से बदतरीन घर वोह है कि उस में कोई यतीम हो और उस के साथ बुरा सुलूक किया जाता हो। (سنن ابن ماجہ،کتاب الادب،باب حق الیتیم،رقم ٣٦٧٩،ج٤،ص١٩٣)

ग़ुरूर और घमन्ड की बुराई

गुरूर या घमन्ड येह है कि आदमी अपने आप को इल्म में या इबादत में दियानतदारी या ह़सब व नसब में या माल व सामान में या इ़ज़्ज़त व आबरू में या किसी और बात में दूसरों से बड़ा समझे और दूसरों को अपने से कम और ह़क़ीर जाने येह बहुत बड़ा गुनाह और निहायत ही क़ाबिले नफ़रत ख़स्लत है। ह़दीष शरीफ़ में है कि जिस के दिल में राई के बराबर ईमान होगा वोह जहन्नम में (हमेशा के लिये) नहीं जाएगा और जिस के दिल में राई के बराबर तकब्बुर होगा वोह जन्नत में सज़ा भुगतने के बा'द दाख़िल होगा। (صحیح مسلم، کتاب الایمان،باب تحریم الکبر،رقم ۹۱،ص ۶۰)

इसी त़रह़ एक दूसरी ह़दीष में है कि हर सरकश और सख़्त दिल और मुतकब्बिर जहन्नमी है।

(صحیح مسلم، کتاب الجنة وصفة نعیمها،باب النار یدخلها الجبارون...الخ،رقم ۲۸۵۳،ص ۱۵۲۷)

इसी त़रह़ एक तीसरी ह़दीष में रह़मते आ़लम صَلَّی اللہ تعَالٰی علَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है कि तीन आदमी वोह है कि **अल्लाह** तआ़ला क़ियामत के दिन न उन से बात करेगा न उन की त़रफ़ रह़मत की नज़र फ़रमाएगा न उन्हें गुनाहों से पाक करेगा बल्कि उन लोगों को दर्दनाक अ़ज़ाब देगा एक बुड्ढा ज़िनाकार दूसरा झूटा बादशाह तीसरा मुतकब्बिर फ़क़ीर।

(صحیح مسلم، کتاب الایمان،باب بیان غلظ تحریم اسبال ۔۔۔الخ،رقم ۱۰۷،ص ۶۸)

दुन्या के लोग भी मग़रूर और घमन्डी मर्दों और औ़रतों को बड़ी ह़क़ारत की नज़रों से देखते हैं और नफ़रत करते हैं। येह और बात है कि उस के डर से और उस के फ़ितनों से बचने के लिये ज़ाहिर में लोग उस की आव भगत कर लेते हैं मगर दिल में उस को इन्तिहाई बुरा समझ कर उस से बे इन्तिहा नफ़रत करते हैं और उस के दुश्मन होते हैं चुनान्चे

जब मुतकब्बिर आदमी पर कोई मुसीबत आन पड़ती है तो किसी के दिल में हमदर्दी और मुरुव्वत का जज़्बा नहीं पैदा होता बल्कि लोगों को एक त़रह़ की ख़ुशी होती है। बहर ह़ाल घमन्ड व ग़ुरूर और शैख़ी मारना जैसा कि अकषर मालदार मर्दों और औ़रतों का त़रीक़ा है येह बहुत बड़ा गुनाह और बहुत ही ख़राब आ़दत है।

अगर आदमी इतनी बात सोच ले कि मैं एक नापाक क़त़रे से पैदा हुवा हूं और मेरे पास जो भी माल या कमाल है वोह सब **अल्लाह** तआ़ला का दिया हुवा है और वोह जब चाहे एक सेकन्ड में सब ले ले फिर मैं घमन्ड किस बात पर करूं और अपनी कौन सी ख़ूबी पर शैख़ी मारूं तो اِنْ شَآءَاللّٰہ येह बुरी ख़स्लत और ख़राब आ़दत बहुत जल्द छुट जाएगी।

बुढ़िया औ़रतों की ख़िदमत

ह़दीष शरीफ़ में है कि बुढ़िया औ़रतों और मिस्कीनों की ख़िदमत करने का षवाब इतना ही बड़ा है जितना कि ख़ुदा की राह में जिहाद करने वाले को और सारी रात इ़बादत में मुस्ता'दी के साथ खड़े होने वाले को और लगातार रोज़े रखने वाले को षवाब मिलता है।

(صحیح البخاری، کتاب النفقات،باب فضل النفقة علی الاھل، رقم ۵۳۵۳، ج۳،ص ۵۱۱)

लड़कियों की परवरिश

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स तीन लड़कियों की इस त़रह़ परवरिश करे कि इन को अदब सिखाए और इन पर मेहरबानी का बरताव करे तो **अल्लाह** तआ़ला उस को ज़रूर जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। येह इरशादे नबवी صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सुन कर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया कि अगर कोई शख़्स दो लड़कियों की परवरिश करे ? तो इरशाद फ़रमाया कि उस के लिये भी

येही अज्रो षवाब है। यहां तक कि कुछ लोगों ने सुवाल किया कि अगर कोई शख़्स एक ही लड़की को पाले तो जवाब में आप ने फ़रमाया कि उस के लिये भी येही षवाब है।

(شرح السنة، كتاب البر و الصلة،باب ثواب كافل اليتيم،رقم ٣٣٥١، ج٦،ص ٤٥٢)

मां बाप की ख़िदमत

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि मैं जन्नत में दाख़िल हुवा तो मैं ने सुना कि वहां कोई शख़्स कुरआने मजीद की क़िराअत कर रहा है। जब मैं ने दरयाफ़्त किया कि क़िराअत करने वाला कौन है ? तो फ़िरिश्तों ने बताया कि आप के सहाबी हारिषा बिन नो'मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हैं। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ मेरे सहाबियो ! देख लो येह है नेकू कारी और ऐसा होता है अच्छे सुलूक का बदला। हज़रते हारिषा बिन नो'मान (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) सब लोगों से ज़ियादा बेहतरीन सुलूक अपनी मां के साथ करते थे।

(شرح السنة، كتاب البر و الصلة،باب بر الوالدين،رقم ٣٣١٢-٣٣١٣، ج٦،ص ٤٢٦)

और दूसरी हदीष में है कि खुदा की खुशी बाप की खुशी में और खुदा की नाराज़ी बाप की नाराज़ी में है।

(السنن الترمذی، كتاب البر و الصلة،باب ماجاء من الفضل فی رضا الوالدين،رقم ١٩٠٧، ج٣،ص ٣٦٠)

बेटियां जहन्नम से पर्दा बनेंगी

हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने बयान फ़रमाया कि मेरे पास एक औरत अपनी दो बेटियों को ले कर भीक मांगने के लिये आई तो एक खजूर के सिवा उस ने मेरे पास कुछ नहीं पाया वोही एक खजूर मैं ने उस को दे दी तो उस ने एक खजूर को अपनी दोनों बेटियों के दरमियान तक़्सीम कर दिया और खुद नहीं खाया और चली गई। इस के बा'द जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मकान में तशरीफ़ लाए और मैं ने इस वाक़िए का तज़्किरा हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से किया तो

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स इन बेटियों के साथ मुब्तला किया गया उस ने इन बेटियों के साथ अच्छा सुलूक किया तो येह बेटियां उस के लिये जहन्नम से पर्दा और आड़ बन जाएंगी।

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلة والآداب،باب فضل الاحسان الی البنات،رقم ۲۶۲۹،ص۱۴۱۴)

इन्सान की तीस ग़लतिय़ां

《1》 इस ख़याल में हमेशा मगन रहना कि जवानी और तन्दुरूस्ती हमेशा रहेगी

《2》 मुसीबतों में बे सब्र बन कर चीख़ो पुकार करना

《3》 अपनी अ़क़्ल को सब से बढ़ कर समझना

《4》 दुश्मन को ह़क़ीर समझना

《5》 बीमारी को मा'मूली समझ कर शुरूअ़ में इलाज न करना

《6》 अपनी राए पर अ़मल करना और दूसरों के मश्वरों को ठुकरा देना

《7》 किसी बदकार को बार बार आज़्मा कर भी उस की चापलूसी में आ जाना

《8》 बेकारी में ख़ुश रहना और रोज़ी की तलाश न करना

《9》 अपना राज़ किसी दूसरे को बता कर इसे पोशीदा रखने की ताकीद करना

《10》 आमदनी से ज़ियादा ख़र्च करना

《11》 लोगों की तक्लीफ़ में शरीक न होना और उन से इमदाद की उम्मीद रखना

《12》 एक दो ही मुलाक़ात में किसी शख़्स की निस्बत कोई अच्छी या बुरी राए क़ाइम कर लेना

《13》 वालिदैन की ख़िदमत न करना और अवलाद से ख़िदमत की उम्मीद रखना

《14》 किसी काम को इस ख़याल से अधूरा छोड़ देना कि फिर किसी वक़्त मुकम्मल कर लिया जाएगा

﴾15﴿ हर शख़्स से बदी करना और लोगों से अपने लिये नेकी की तवक़्क़ोअ़ रखना

﴾16﴿ गुमराहों की सोहबत में उठना बैठना

﴾17﴿ कोई अ़मले सालेह़ की तल्क़ीन करे तो इस पर ध्यान न देना

﴾18﴿ खुद ह़राम व ह़लाल का ख़याल न करना और दूसरों को भी इस राह पर लगाना

﴾19﴿ झूटी क़सम खा कर झूट बोल कर धोका दे कर अपनी तिजारत को फ़रोग़ देना

﴾20﴿ इल्मे दीन और दीनदारी को इ़ज़्ज़त न समझना

﴾21﴿ खुद को दूसरों से बेहतर समझना

﴾22﴿ फ़क़ीरों और साइलों को अपने दरवाज़े से धक्का दे कर भगा देना

﴾23﴿ ज़रूरत से ज़ियादा बात चीत करना

﴾24﴿ अपने पड़ोसियों से बिगाड़ रखना

﴾25﴿ बादशाहों और अमीरों की दोस्ती पर ए'तिबार करना

﴾26﴿ ख़्वाह मख़्वाह किसी के घरेलू मुआ़मलात में दख़्ल देना

﴾27﴿ बिग़ैर सोचे समझे बात करना

﴾28﴿ तीन दिन से ज़ियादा किसी का मेहमान बनना

﴾29﴿ अपने घर का भेद दूसरों पर ज़ाहिर करना

﴾30﴿ हर शख़्स के सामने अपने दुख दर्द बयान करना।

सलीक़ा और आराम की चन्द बातें

﴾1﴿ रात को दरवाज़ा बन्द करते वक़्त घर के अन्दर अच्छी त़रह़ देख भाल लो कि कोई अजनबी या कुत्ता बिल्ली अन्दर तो नहीं रह गया येह आ़दत डाल लेने से ان شاء اللہ تعالٰی घर में कोई नुक़्सान नहीं होगा।

﴾2﴿ घर और घर के तमाम सामानों को साफ़ सुथरा रखो और हर चीज़ को उस की जगह पर रखो।

﴾3﴿ सब घर वाले आपस में तै कर लें कि फ़ुलां चीज़ फ़ुलां जगह पर रहेगी फिर सब घर वाले इस के पाबन्द हो जाएं कि जब उस चीज़ को वहां से उठाएं तो इस्ति'माल कर के फिर उसी जगह रख दें ताकि हर आदमी को बिग़ैर पूछे और बिला ढूंढ़े वोह मिल जाया करे और ज़रूरत के वक़्त तलाश करने की ह़ाजत न पड़े।

﴾4﴿ घर के तमाम बरतनों को धो मांझ कर किसी अलमारी या ताक़ पर उलटा कर के रख दो और फिर दोबारा उस बरतन को इस्ति'माल करना हो तो फिर उस बरतन को बिग़ैर धोए इस्ति'माल न करो।

﴾5﴿ कोई झूटा बरतन या ग़िज़ा या दवा लगा हुवा बरतन हरगिज़ हरगिज़ न रख दिया करो। झूटे या ग़िज़ाओं और दवाओं से आलूदा बरतनों में जराषीम पैदा हो कर त़रह़ त़रह़ की बीमारियों के पैदा होने का ख़त़रा रहता है।

﴾6﴿ अन्धेरे में बिला देखे हरगिज़ हरगिज़ पानी न पियो न खाना खाओ।

﴾7﴿ घर या आंगन के रास्ते में चारपाई या कुरसी या कोई बरतन या कोई सामान मत डाल दिया करो। ऐसा करने से बा'ज़ दफ़्अ़ रोज़ की आ़दत के मुत़ाबिक़ बे खटके चले आने वाले को ठोकर ज़रूर लगती है और बा'ज़ मरतबा तो सख़्त चोटें भी लग जाती हैं।

﴾8﴿ सुराह़ी के मुंह या लोटे की टोंटी से मुंह लगा कर हरगिज़ कभी पानी न पियो क्यूंकि अव्वलन तो येह ख़िलाफ़े तहज़ीब है दूसरे येह ख़त़रा है कि सुराह़ी या टोंटी में कोई कीड़ा मकोड़ा छुपा हो और वोह पानी के साथ पेट में चला जाए।

﴾9﴿ हफ़्ता या दस दिनों में एक दिन घर की मुकम्मल सफ़ाई के लिये मुक़र्रर कर लो कि इसी दिन सब काम धंदा बन्द कर के पूरे मकान की सफ़ाई कर लो।

《10》 दिन रात बैठे रहना या पलंग पर सोए या लैटे रहना तन्दुरुस्ती के लिये बेहद नुक़्सान देह है। मर्दों को साफ़ और खुली हवा में कुछ चल फिर लेना और औ़रतों को कुछ मेह़नत का काम हाथ से कर लेना तन्दुरुस्ती के लिये बहुत ज़रूरी है।

《11》 जिस जगह चन्द आदमी बैठे हों उस जगह बैठ कर न थूको न खंखार निकालो न नाक साफ़ करो कि ख़िलाफ़े तहज़ीब भी है और दूसरों के लिये घिन पैदा करने वाली चीज़ है।

《12》 दामन या आंचल या आस्तिन से नाक साफ़ न करो न हाथ मुंह इन चीज़ों से पोंछो क्यूंकि येह गन्दगी है और तहज़ीब के ख़िलाफ़ भी।

《13》 जूती और कपड़ा या बिस्तर इस्ति'माल से पहले झाड़ लिया करो मुमकिन है कोई मूज़ी जानवर बैठा हो जो बे ख़बरी में तुम्हें डस ले।

《14》 छोटे बच्चों को खिलाते खिलाते कभी हरगिज़ हरगिज़ उछाल उछाल कर न खिलाओ ख़ुदा न ख़्वास्ता हाथ से छूट जाए तो बच्चे की जान ख़त़रे में पड़ जाएगी।

《15》 बीच दरवाज़े में न बैठा करो सब आने जाने वालों को तक्लीफ़ होगी और ख़ुद तुम भी तक्लीफ़ उठाओगे।

《16》 अगर पोशीदा जगहों में किसी के फौड़ा फुन्सी या दर्दो वरम हो तो उस से येह न पूछो कि कहां है ? इस से ख़्वाह मख़्वाह उस को शर्मिन्दगी होगी।

《17》 पाख़ाना या ग़ुस्ल ख़ाने से कमर बन्द या तहबन्द या साड़ी बांधते हुए बाहर मत निकलो बल्कि अन्दर ही से बांध कर बाहर निकलो।

《18》 जब तुम से कोई शख़्स कोई बात पूछे तो पहले उस का जवाब दो फिर दूसरे काम में लगो।

﴾19﴿ जो बात किसी से कहो या किसी का जवाब दो तो साफ़ साफ़ बोलो और इतने ज़ोर से बोलो कि सामने वाला अच्छी त़रह़ सुन ले और तुम्हारी बातों को समझ ले।

﴾20﴿ ज़बान बन्द कर के हाथ या सर के इशारों से कुछ कहना या किसी बात का जवाब देना येह ख़िलाफ़े तहज़ीब और ह़माक़त की बात है।

﴾21﴿ अगर किसी के बारे में कोई पोशीदा बात किसी से कहनी हो और वोह शख़्स उस मजलिस में मौजूद हो तो आंख या हाथ से बार बार उस की त़रफ़ इशारा मत करो कि नाह़क़ उस शख़्स को त़रह़ त़रह़ के शुबहात होंगे।

﴾22﴿ किसी को कोई चीज़ देनी हो तो अपने हाथ से उस के हाथ में दो या बरतन में रख कर उस के सामने पेश करो। दूर से फैंक कर कोई चीज़ किसी को मत दिया करो शायद उस के हाथ में न पहुंच सके और ज़मीन पर गिर कर टूट फूट जाए या ख़राब हो जाए।

﴾23﴿ अगर किसी को पंखा झलो तो इस का ख़याल रखो कि उस के सर या चेहरे या बदन के किसी ह़िस्से में पंखा लगने न पाए और पंखे को इतने ज़ोर से भी न झला करो कि तुम ख़ुद या दूसरे परेशान हो जाएं।

﴾24﴿ मैले कपड़े जो धोबी के यहां जाने वाले हो घर में इधर उधर पड़ा या बिखरा हुवा ज़मीन पर न रहने दो बल्कि मकान के किसी कोने में लकड़ी का एक मा'मूली बॉक्स रख लो और सब मैले कपड़ों को उसी में जम्अ़ करते रहो।

﴾25﴿ अपने ऊनी कपड़ों को कभी कभी धूप में सुखा लिया करो और किताबों को भी ताकि कीड़े मकोड़े कपड़ों और किताबों को काट कर ख़राब न कर सकें।

﴾26﴿ जहां कोई आदमी बैठा हो वहां गर्दो ग़ुबार वाली चीज़ों को न झाड़ो।

﴾27﴿ किसी दुख या परेशानी या ग़म और बीमारी वग़ैरा की ख़बरों को हरगिज़ उस वक़्त तक नहीं कहना चाहिये जब तक कि उस की ख़ूब अच्छी त़रह़ तह़क़ीक़ न हो जाए।

﴾28﴿ खाने पीने की कोई चीज़ खुली मत रखो हमेशा ढांक कर रखा करो और मख्खियों के बैठने से बचाओ।

﴾29﴿ दौड़ कर मुंह ऊपर उठा कर नहीं चलना चाहिये इस में बहुत से ख़त़रात हैं।

﴾30﴿ चलने में पाऊं पूरा उठा कर और पूरा पाऊं ज़मीन पर रखा करो, पंजों या एड़ी के बल चलना या पाऊं घसीटते हुए चलना येह तहज़ीब के ख़िलाफ़ भी है।

﴾31﴿ कपड़ा पहने पहने नहीं सीना चाहिये।

﴾32﴿ हर किसी पर इत़्मीनान मत कर लिया करो, जब तक किसी को हर त़रह़ से बार बार आज़मा न लो उस का ए'तिबार मत कर लिया करो। ख़ास कर अकषर शहरों में बहुत सी औ़रतें कोई ह़ज्जन साहि़बा बनी हुई का'बा का ग़िलाफ़ लिये हुए कोई ता'वीज़ गन्डे झाड़ फूंक करती हुई घरों में घुसती फिरती हैं और औ़रतों के मजमअ़ में बैठ कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बातें करती हैं। ख़बरदार ख़बरदार इन औ़रतों को हरगिज़ हरगिज़ घरों में आने ही मत दो। दरवाज़े ही से वापस कर दों। ऐसी औ़रतों ने बहुत से घरों का सफ़ाया कर डाला है, इन औ़रतों में बा'ज़ चोरों और डाकूओं की मुख़बिर भी हुवा करती हैं जो घर के अन्दर घुस कर सारा माह़ोल देख लेती हैं फिर चोरों और डाकूओं को उन के घरों का ह़ाल बता देती हैं।

﴾33﴿ जहां तक हो सके कोई सौदा सामान उधार मत मंगाया करो और अगर मजबूरी से मंगाना ही पड़ जाए तो दाम पूछ कर तारीख़ के साथ लिख लो और जब रूपिया तुम्हारे पास आ जाए तो फ़ौरन अदा कर दो ज़बानी याद पर भरोसा मत करो।

﴾34﴿ जहां तक हो सके ख़र्च चलाने में बहुत ज़ियादा किफ़ायत से काम लो और रूपिया पैसा बहुत ही इन्तिज़ाम से उठाओ बल्कि जितना ख़र्च के लिये तुम को मिले उस में से कुछ बचा लिया करो।

﴾35﴿ जो औ़रतें बहुत से घरों में आया जाया करती हैं जैसे धोबन नाइन वग़ैरा इन के सामने हरगिज़ हरगिज़ अपने घर के इख़्तिलाफ़ और झगड़ों को मत बयान करो क्यूंकि ऐसी औ़रतें घरों की बातें दस घरों में कहती फिरती हैं।

﴾36﴿ कोई मर्द तुम्हारे दरवाज़े पर आ कर तुम्हारे शोहर का दोस्त या रिश्तेदार होना ज़ाहिर करे तो हरगिज़ उस को अपने मकान के अन्दर मत बुलाओ न उस का कोई सामान अपने घर में रखो न अपना कोई क़ीमती सामान उस के सिपुर्द करो। एक ग़ैर आदमी की त़रह़ खाना वग़ैरा उस के लिये बाहर भेज दो। जब तक तुम्हारे घर का कोई मर्द उस को पहचान न ले हरगिज़ उस पर भरोसा मत करो न घर में आने दो, ऐसे लोगों ने बहुत से घरों को लूट लिया है इसी त़रह़ अगर बे पहचाना हुवा आदमी घर पर आ कर या सफ़र में कोई खाने की चीज़ दे तो हरगिज़ मत खाओ वोह लाख बुरा माने परवाह मत करो। बहुत से सफ़ेद पोश ठग नशा वाली या ज़हरीली चीज़ खिला कर घरवालों या मुसाफ़िरों को लूट लेते हैं।

﴾37﴿ मह़ब्बत में अपने बच्चों को बिला भूक के खाना मत खिलाओ न इसरार कर के ज़ियादा खिलाओ कि इन दोनों सूरतों में बच्चे बीमार हो जाते हैं जिस की तक्लीफ़ तुम को और बच्चों दोनों को भुगतनी पड़ती है।

﴾38﴿ बच्चों के सर्दी गर्मी के कपड़ों का ख़ास तौर पर ध्यान लाज़िमी है। बच्चे सर्दी गर्मी लगने से बीमार हो जाया करते हैं।

﴾39﴿ बच्चों को मां बाप बल्कि दादा का नाम भी याद करा दो और कभी कभी पूछा करो ताकि याद रहे इस में येह फ़ाइदा है कि अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता बच्चा खो जाए और कोई इस से पूछे कि तेरे बाप का क्या

नाम है ? तेरे मां बाप कौन हैं ? तो अगर बच्चे को नाम याद होंगे तो बता देगा फिर कोई न कोई इस को तुम्हारे पास पहुंचा देगा या तुम्हें बुला कर बच्चा तुम्हारे सिपुर्द कर देगा और अगर बच्चे को मां बाप का नाम याद न रहा तो बच्चा येही कहेगा कि मैं अब्बा या अम्मा का बच्चा हूं कुछ ख़बर नहीं कि कौन अब्बा ? कौन अम्मां ?

﴾40﴿ छोटे बच्चों को अकेला छोड़ कर घर से बाहर न चली जाया करो। एक औ़रत बच्चे के आगे खाना रख कर बाहर चली गई। बहुत से कव्वों ने बच्चे के आगे का खाना छीन कर खा लिया और चोंच मार मार कर बच्चे की आंख भी फोड़ डाली। इसी त़रह़ एक बच्चे को बिल्ली ने अकेला पा कर इस क़दर नोच डाला कि बच्चा मर गया।

﴾41﴿ किसी को ठहराने या खाना खिलाने पर बहुत ज़ियादा इसरार मत करो। बा'ज़ मरतबा इस में मेहमान को उलझन या तक्लीफ़ हो जाती है फिर सोचो कि भला ऐसी महब्बत से क्या फ़ाइदा जिस का अन्जाम नफ़रत और बदनामी हो।

﴾42﴿ वज़्न या ख़त़रे वाली कोई चीज़ किसी आदमी के ऊपर से उठा कर मत दिया करो। ख़ुदा न ख़्वास्ता वोह चीज़ हाथ से छुट कर आदमी के ऊपर गिर पड़ी तो उस का अन्जाम कितना ख़त़रनाक होगा ?

﴾43﴿ किसी बच्चे या शागिर्द को सज़ा देनी हो तो मोटी लकड़ी या लात घूंसा से मत मारो। ख़ुदा न ख़्वास्ता अगर किसी नाज़ुक जगह चोट लग जाए तो कितनी बड़ी मुसीबत सर पर आ पड़ेगी।

﴾44﴿ अगर तुम किसी के घर मेहमान जाओ और खाना खा चुके हो तो जाते ही घर वालों से कह दो कि हम खाना खा कर आए हैं क्यूंकि घर वाले लिह़ाज़ की वजह से पूछेंगे नहीं और चुपके चुपके खाना तय्यार कर लेंगे और जब खाना सामने आ गया तो तुम ने कह दिया कि हम तो खाना खा कर आए हैं। सोचो कि उस वक़्त घर वालों को कितना अफ़्सोस होगा ?

﴾45﴿ मकान में अगर रक़म या ज़ेवर वग़ैरा दफ़्न कर रखा है तो अपने घरों में से जिस पर भरोसा हो उस को बता दो वरना शायद तुम्हारा अचानक इन्तिक़ाल हो जाए तो वोह ज़ेवर या रक़म हमेशा ज़मीन ही में रह जाएगी।

﴾46﴿ मकान में जलता चराग़ या आग छोड़ कर बाहर मत चले जाओ। चराग़ और आग को मकान से निकलते वक़्त बुझा दिया करो।

﴾47﴿ इतना ज़ियादा मत खाओ कि चूरन की जगह भी पेट में बाक़ी न रह जाए।

﴾48﴿ जहां तक मुमकिन हो रात को मकान में तन्हा मत रहो। ख़ुदा जाने रात में क्या इत्तिफ़ाक़ पड़ जाए? लाचारी और मजबूरी की तो और बात है मगर जब तक हो सके मकान में रात को अकेले नहीं सोना चाहिये।

﴾49﴿ अपने हुनर पर नाज़ न करो।

﴾50﴿ बुरे वक़्त का कोई साथी नहीं होता इस लिये सिर्फ़ ख़ुदा पर भरोसा रखो।

कार आमद तदबीरें

﴾1﴿ पलंग की पाईंती अजवाइन (एक देसी दवा) की पोटलियां बांधने से इस पलंग के खटमल भाग जाएंगे।

﴾2﴿ अगर मच्छर दानी मुयस्सर न हो और गर्मियों के मौसिम में मच्छर ज़ियादा तंग करें तो बिस्तर पर जा बजा तुलसी (नामी पौदे) के पत्ते फैला दें मच्छर भाग जाएंगे।

﴾3﴿ लकड़ी में कील ठोकते हुए लकड़ी के फटने का ख़त़रा हो तो इस कील को पहले साबून में ठोकने के बा'द लकड़ी में ठोकना चाहिये इस त़रह़ लकड़ी नहीं फटेगी।

﴾4﴿ काग़ज़ी लीमूं (पतले छिलके वाला लीमूं) का रस अगर दिन में चन्द बार पी लें तो मलेरिया का ह़म्ला नहीं होगा।

﴾5﴿ लू से बचने के लिये तेज़ धूप में सफ़र करते वक़्त जेब में एक प्याज़ रख लेना चाहिये ।

﴾6﴿ हैज़ा (नामी ख़त़रनाक बीमारी) के ह़म्ले से बचने के लिये सिरका, लीमूं और प्याज़ का ब कषरत इस्ति'माल करना चाहिये ।

﴾7﴿ सब्ज़ियों को जल्द गलाने और आटे में ख़मीर जल्द आने के लिये ख़रबूज़े के छिलकों को ख़ूब सुखाएं और इस को बारीक पीस कर सफ़ूफ़ (या'नी पावडर) तय्यार कर लें फिर थोड़ा सफ़ूफ़ आटे में डाल दिया करें ।

﴾8﴿ रोग़ने ज़ैतून (olive oil) दांतों पर मलने से मसूढ़े और हिलते हुए दांत मज़बूत़ हो जाते हैं ।

﴾9﴿ हिचकी आ रही हो तो लोंग खा लेने से बन्द हो जाती है ।

﴾10﴿ सर में जूएं पड़ जाएं तो सते पोदीना (पोदीने का अ़रक़) साबून के पानी में ह़ल कर के सर में डालें और सर को ख़ूब धोएं दो तीन मरतबा ऐसा कर लेने से कुल जूएं मर जाएंगी ।

﴾11﴿ लीमूं की फांक (टुकड़ा) चेहरे पर कुछ दिनों मलने और फिर साबून से धो लेने से चेहरे के कील मुहासे दूर हो जाते हैं ।

﴾12﴿ पैदल चलने की वजह से अगर पाऊं में थकन ज़ियादा मा'लूम हो तो नमक मिले हुए गर्म पानी में कुछ देर पाऊं रख देने से थकावट दूर हो जाती है ।

﴾13﴿ लीमूं को अगर भोबल (या'नी गर्म रैत) में गर्म कर के निचोड़ें तो अ़र्क़ आसानी के साथ दो गुना निकलेगा ।

﴾14﴿ आग से जल जाएं तो जले हुए मक़ाम पर फ़ौरन रोशनाई लगाएं या चूने का पानी डालें या बरोज़ा का तेल लगाएं या शकर सफ़ेद पानी में घोल कर लगाएं ।

﴾15﴿ सांप या कोई ज़हरीला जानवर काट ले तो कांटने से ज़रा ऊपर फ़ौरन किसी मज़बूत़ धागे से कस कर बांध दो फिर काटने की जगह अफ़्यून लगा दो ताकि वोह जगह सुन हो जाए फिर ब्लेड़ से ज़ख़्म लगा कर दबा दो ताकि चन्द क़त़रे ख़ून निकल जाए फिर प्याज़ को चूलहे में भून कर और नमक मिला कर उस जगह पर बांध दें और मरीज़ को सोने न दें येह फ़ौरी तरकीब कर के फिर डॉक्टर से इलाज कराएं और इन्जेक्शन लगवाएं।

﴾16﴿ अगर कोई संखिया (नामी ख़त़रनाक ज़ह्‌र) या अफ़्यून या धतूरा (एक पौदा जिस का बीज नशा आवर होता है) खा ले तो फ़ौरन सोया (एक ख़ुश्बूदार साग का नाम) का बीज दो तोला आधा सेर पानी में पका कर इस में पाव भर घी एक तोला नमक मिला कर नीम गर्म पिलाएं और क़ै कराएं जब ख़ूब क़ै हो जाए तो दूध पिलाएं और अगर दूध से भी क़ै हो जाए तो बहुत अच्छा है और मरीज़ को सोने न दें ان شاء اللہ تعالیٰ मरीज़ सिह़्ह़त याब हो जाएगा।

कीड़ों मकोड़ों को भगाना

सांप :- एक पाव नोशादर को पांच सेर पानी में घोल कर घर के तमाम बिलों सूराखों और कोनों में छिड़क दें अगर घर में सांप होगा तो भाग जाएगा और कभी कभी येह पानी छिड़कते रहें तो उस मकान में सांप नहीं आएगा।

दूसरी तरकीब येह है कि घर के बिलों और दूसरे सब सूराख़ों में राई डाल दें सांप फ़ौरन ही मर जाएगा और अगर अपने आस पास राई डाल कर सोएं तो सांप क़रीब नहीं आ सकता।

बिच्छू :- मूली का अ़रक़ अगर बिच्छू के ऊपर डाल दिया जाए तो बिच्छू ज़रूर मर जाएगा और अगर बिच्छू के सूराख़ में मूली के चन्द टुकड़े डाल दिये जाएं तो बिच्छू सूराख़ से बाहर नहीं निकल सकेगा बल्कि सूराख़ के अन्दर ही हलाक हो जाएगा।

दूसरी तरकीब येह है कि चिरचिट्टा घास की जड़ अगर बिछौने पर रख दी जाए तो बिच्छू बिस्तर पर नहीं चढ़ सकेगा।

अगर बिच्छू डंक मार दे तो बहरूज़ा का तेल लगाएं या चिरचिट्टा की जड़ घिस कर लगाएं ज़ह्र उतर जाएगा।

कनखजूरा (गोजर) :– अगर किसी के बदन में चिमट जाए या कान में घुस जाए तो शकर उस के ऊपर डालें फ़ौरन ही उस के पाऊं खाल में से बाहर निकल जाएंगे और अगर प्याज़ का अ़रक़ कनखजूरे के ऊपर डाल दें तो वोह जगह भी छोड़ देगा और फिर फ़ौरन ही मर जाएगा और उस के पाऊं चुभने से ज़ख़्म हो गया है तो प्याज़ भुलभुला कर उस ज़ख़्म पर बांधना अकसीर है।

पिस्सू (एक परदार ज़हरीला कीड़ा जिस के काटने से खुजली होती है) **:–** इन्द्राइन के फल या जड़ पानी में भिगो कर तमाम घर में पानी छिड़क दें तो उस मकान से पिस्सू भाग जाएंगे।

च्यूटियां :– हींग (एक दरख़्त का बदबूदार गूंद जो पन्सारी से मिल सकता है) से भाग जाती हैं।

कपड़ों और किताबों का कीड़ा :– अफ़्सन्तीन (नामी दवा) या पोदीना या लीमूं के छिलके या नीम के पत्ते या काफ़ूर कपड़ों और किताबों में रख दें तो कपड़े और किताबें कीड़ों के खाने से मह़फ़ूज़ रहेंगी।

ज़मानए ह़म्ल की एह़तियात व तदाबीर

《1》 ह़म्ल के ज़माने में औ़रत को इस का ख़याल रखना बहुत ज़रूरी है कि ऐसी षक़ील (या'नी वज़्नी) ग़िज़ाएं न खाए जिस से क़ब्ज़ पैदा हो जाए और अगर ज़रा भी पेट में गिरानी (बोझ) मा'लूम हो तो एक दो वक़्त रोटी चावल न खाएं बल्कि सिर्फ़ शोरबा घी डाल कर पी लें या दो तीन तोला मुनक़्क़ा या एक हड़ का मुरब्बा खा लें।

《2》 ह़ामिला औ़रत को चाहिये कि चलने में पाऊं ज़ोर से ज़मीन पर न पड़े और न दौड़ कर चले इसी त़रह़ ऊंची जगह से नीचे को एक दम झटके के साथ न उतरे इसी त़रह़ सीढ़ी पर दौड़ कर न चढ़े बल्कि आहिस्ता आहिस्ता चढ़े ग़रज़ इस का ख़याल रखे कि पेट न ज़ियादा हिले और न पेट को झटका लगने दे न भारी बोझ उठाए न कोई सख़्त मेह़नत का काम करे न ग़म और ग़ुस्सा करे न दस्त लाने वाली दवाएं खाए न ज़ियादा ख़ुश्बू सूंघे।

《3》 ह़ामिला औ़रत को चलने फिरने की आ़दत रखनी चाहिये क्यूंकि हर वक़्त बैठे और लैटे रहने से बादी और सुस्ती बढ़ती है मे'दा ख़राब हो जाता है और क़ब्ज़ की शिकायत पैदा हो जाती है।

《4》 ह़ामिला औ़रत को शोहर के पास नहीं सोना चाहिये ख़ुसूसन चौथे महीने से पहले और सातवें महीने के बा'द बहुत ज़ियादा एह़तियात़ की ज़रूरत है।

《5》 अगर ह़ामिला औ़रत को क़ै आने लगे तो पोदीने की चटनी या काग़ज़ी लीमूं इस्ति'माल करें।

《6》 अगर ह़म्ल की ह़ालत में ख़ून आने लगे तो "कुर्स कुहरबा" खाएं और फ़ौरन ह़कीम या डॉक्टर से इलाज कराएं।

《7》 अगर ह़म्ल गिर जाने की आ़दत हो तो उस औ़रत को चार महीने तक फिर सातवें महीने के बा'द बहुत ज़ियादा एह़तियात़ रखने की ज़रूरत है। गर्म ग़िज़ाओं से बिल्कुल परहेज़ रखे और अच्छा येह है कि लंगोट बांधे रहे और बिल्कुल कोई बोझ न उठाए और न मेह़नत का कोई काम करे और अगर ह़म्ल गिरने के कुछ आषार ज़ाहिर हों मषलन पानी जारी हो जाए या ख़ून गिरने लगे तो फ़ौरन ही ह़कीम या डॉक्टर को बुलाना चाहिये।

﴾8﴿ अगर खुदा न ख़्वास्ता ह़ामिला को मिट्टी (मुल्तानी मिट्टी औ़रतें शौक से खाती हैं और येह नुक़्सान देह है) खाने की आ़दत हो तो इस आ़दत को छुड़ाना ज़रूरी है और अगर मिट्टी की बहुत ही ह़िर्स हो तो निशास्ता की टिक्यां या त़बाशीर (एक सफ़ेद रंग की दवाई जो बांस की गांठों से निकलती है) खाया करे इस से मिट्टी की आ़दत छूट जाती है।

﴾9﴿ अगर ह़ामिला की भूक बन्द हो जाए तो मिठाई और मुरग़्ग़न (या'नी तेल घी वाली) गिज़ाएं छोड़ दें और सादा गिज़ाएं खिलाएं और अगर पेट में दर्द और रियाह़ (गेस) मा'लूम हो तो "नमक सुलैमानी" या "जवारिश कमोनी" खिलाएं बहर ह़ाल तेज़ दवाओं के इस्ति'आल और इन्जेक्शन वग़ैरा से बचना बेहतर है ऐसी ह़ालत में इलाज से बेहतर परहेज़ और एह़तियात़ है।

﴾10﴿ बा'ज़ ह़ामिला औ़रतों के पैरों पर वरम आ जाता है येह कोई ख़त़रनाक चीज़ नहीं है विलादत के बा'द खुद ब खुद येह वरम जाता रहता है।

ज़च्चे की तदबीरों का बयान

﴾1﴿ ह़ामिला को जब नवां महीना शुरूअ़ हो जाए तो बहुत ज़ियादा एह़तियात़ करने कराने की ज़रूरत है। इस वक़्त में ह़ामिला को त़ाक़त पहुंचाने की ज़रूरत है लिहाज़ा मुन्दरिजए ज़ैल तदबीरों का ख़ास त़ौर पर ख़याल रखना चाहिये। रोज़ाना ग्यारह अ़दद बादाम मिस्री में पीस कर चटाएं और दो अ़दद नारियेल और शक्र दोनों को हावन दसते में कूट कर सफ़ूफ़ बना लें और दो तोला रोज़ाना खाएं, गाएं का दूध, जिस क़दर हज़्म हो सके पिलाएं, मख्खन वग़ैरा भी खिलाएं। इन सब दवाओं की वजह से बच्चा आसानी से पैदा होता है।

﴾2﴿ जब विलादत का वक़्त आ जाए और दर्दे ज़ेह शुरूअ़ हो जाए तो बाएं हाथ में मिक़्नात़ीस (magnet) लेने से और बाएं रान में मूंगे की जड़ (सुर्ख़ रंग की बारीक बारीक शाख़ों की मानिन्द एक पथ्थर जो समुन्दर से निकाला जाता है, पन्सारी की दुकान से शाख़े मर्जान के नाम

से मिलता है) बांधने से बच्चा पैदा होने में आसानी होती है। विलादत की आसानी के लिये मुजर्रब ता'वीज़ात भी हैं जिन का ज़िक्र आगे "अ़मलिय्यात" के बयान में हम लिखेंगे।

﴿3﴾ पैदाइश के वक़्त किसी होशियार दाई या लेडी डॉक्टर को ज़रूर बुला लेना चाहिये, अनाड़ी दाइयों की ग़लत़ तदबीरों से अकषर ज़च्चा व बच्चा को नुक़्सान पहुंच जाता है।

﴿4﴾ पैदाइश के बा'द ज़च्चा के बदन में तेल की मालिश बहुत मुफ़ीद है जैसा कि पुराना त़रीक़ा है कि विलादत के बा'द चन्द दिनों तक मालिश कराई जाती है येह बहुत ही मुफ़ीद है।

﴿5﴾ जिस औ़रत के दूध बहुत कम होता हो अगर वोह दूध आसानी के साथ हज़्म कर सकती हो तो उस को रोज़ाना दूध पीना चाहिये और मुर्ग़ वग़ैरा का मुरग़्ग़न शोरबा और गाजर का ह़ल्वा वग़ैरा उ़म्दा ग़िज़ाएं हैं और पांच माशा कलोंजी और पांच माशा तोदरी सुर्ख़ दूध में पीस कर पीलाएं।

बच्चों की एह़तियात़ व तदाबीर

﴿1﴾ पैदाइश के बा'द बच्चे को पहले नमक मिले हुए नीम गर्म पानी से नहलाएं फिर इस के बा'द सादे पानी से ग़ुस्ल दें तो बच्चा फोड़े फुन्सी की बीमारियों से मह़फ़ूज़ रहता है। नमक मिले हुए पानी से बच्चों को कुछ दिनों तक नहलाते रहें तो येह बच्चों की तन्दुरुस्ती के लिये बहुत मुफ़ीद है और नहलाने के बा'द बच्चों के बदन में सरसों के तेल की मालिश बच्चों की सिह़ह़त के लिये अकसीर है।

﴿2﴾ बच्चों को दूध पिलाने से पहले रोज़ाना दो तीन मरतबा एक उंगली शहद चटा दिया करें तो येह बहुत मुफ़ीद है।

﴿3﴾ बच्चों को ख़्वाह झूले में झुलाएं या बिछौने पर सुलाएं या गोद में खिलाएं हर ह़ाल में बच्चों का सर ऊंचा रखें सर नीचा और पाऊं ऊंचे न होने दें।

《4》 पैदाइश के बा'द बच्चों को ऐसी जगह न रखें जहां रोशनी बहुत तेज़ हो क्यूंकि बहुत तेज़ रोशनी में रहने से बच्चे की निगाहे कमज़ोर हो जाती है।

《5》 जब बच्चे के मसूढ़े सख़्त हो जाएं और दांत निकलते मा'लूम हों तो मसूढ़ों पर मुर्ग़ की चरबी मला करें और रोज़ाना एक दो मरतबा मसूढ़ों पर शहद भी मला करें और बच्चे के सर और गर्दन पर तेल की मालिश करते रहें।

《6》 जब दूध छुड़ाने का वक़्त आए और बच्चा कुछ खाने लगे तो ख़बरदार ! ख़बरदार बच्चे को कोई सख़्त चीज़ न चबाने दें बल्कि निहायत ही लत़ीफ़ और नर्म और जल्द हज़्म होने वाली ग़िज़ाएं बच्चे को खिलाएं और गाय या बकरी का दूध भी पिलाते रहें और फल वग़ैरा भी बच्चे को खिलाते रहें और जिस क़दर मां बाप को मक़दूर हो बच्चों को इस उ़म्र में अच्छी ख़ोराक दें इस उ़म्र में जो कुछ त़ाक़त बदन में आ जाएगी वोह तमाम उ़म्र काम आएगी हां इस का ख़याल रखना बहुत ज़रूरी है कि बच्चों को बार बार ग़िज़ा नहीं देनी चाहिये जब तक एक ग़िज़ा हज़्म न हो जाए दूसरी ग़िज़ा हरगिज़ न दें।

《7》 बच्चों को मिठाई और खटाई की आ़दत से बचाना बहुत बहुत ज़रूरी है कि येह दोनों चीज़ें बच्चों की सिह़्ह़त के लिये बहुत मुज़िर और नुक़्सान देने वाली हैं। सूखे और ताज़ा मेवों का बच्चों को खिलाना बहुत ही अच्छा है।

《8》 ख़तना जितनी छोटी उ़म्र में हो जाए बेहतर है तक्लीफ़ भी कम होती है और ज़ख़्म भी जल्दी भर जाता है।

9

अ़मलियात

येह ईमां है ख़ुदा शाहिद कि हैं आयाते क़ुरआनी

इलाज जुम्ला इलतिहाए जिस्मानी व रूह़ानी

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

इस में कोई शक नहीं कि **अल्लाह** तआ़ला के मुक़द्दस नामों और क़ुरआन की मुबारक आयतों, वज़ाइफ़ और दुआ़ओं में इस क़दर फ़ुयूज़ो बरकात और अ़जीब अ़जीब ताषीरात हैं कि जिन को देख कर बिलाशुबा क़ुदरते ख़ुदावन्दी का जल्वा नज़र आता है। बहुत से मरीज़ जिन को तमाम ह़कीमों और डॉक्टरों ने ला इलाज कह कर मायूस कर दिया था लेकिन जब **अल्लाह** तआ़ला के अस्माए ह़ुस्ना और क़ुरआने मजीद की मुक़द्दस आयतों से सह़ीह़ त़रीक़े पर चारह जोई की गई तो दम ज़दन में बड़े बड़े ख़ौफ़नाक और भयानक अमराज़ इस त़रह़ ख़त्म हो गए कि इन का नामो निशान भी बाक़ी न रहा। जादू और आसेब वग़ैरा की बलाएं इतनी ख़त़रनाक हैं कि ह़कीमों की त़िब और डॉक्टरों की डॉक्टरी इस मंज़िल में बिल्कुल लाचार है लेकिन दुआ़ओं, वज़ीफ़ों और क़ुरआनी आयतों की ताषीरात क़ह़्रे इलाही की वोह तलवार हैं कि जिन की तेज़ धार से जादू टोना आसेब सब के सर क़लम हो जाते हैं। जादू भी टूट जाता है और आसेब भी कभी भाग जाता है और कभी गिरिफ़्तार हो कर जल जाता है। इस लिये हम मुनासिब समझते हैं कि चन्द अ़मलियात और क़ुरआनी आयात के ता'वीज़ात तह़रीर कर दें ताकि अहले ह़ाजत इन के फ़ुयूज़ो बरकात से फ़ाइदा उठाएं।

आ'माल और दुआओं की शराइत़

याद रखो कि जिस त़रह़ जड़ी बूटियों और तमाम दवाओं की ताषीर उसी वक़्त ज़ाहिर होती है जब कि उसी तरकीब से वोह दवाएं इस्ति'माल की जाएं जो इन के इस्ति'माल का त़रीक़ा है इसी त़रह़ अ़मलियात और ता'वीज़ात की भी कुछ शराइत़ कुछ तरकीबें कुछ लवाज़िमात हैं कि जब तक इन सब चीज़ों की रिआ़यत न की जाएगी अ़मलियात की ताषीरात ज़ाहिर न होंगी और फ़ुयूज़ो बरकात ह़ासिल न होंगे। इन शराइत़ में से सात शर्तें निहायत ही अहम और इन्तिहाई ज़रूरी हैं कि जिन के बिग़ैर क़ुरआनी आ'माल में ताषीरात की उम्मीद रखना नादानी है और वोह सब शर्तें ह़स्बे ज़ैल हैं।

﴾1﴿ **अक्ले ह़लाल :-** या'नी ह़लाल लुक़्मा खाना और ह़राम ग़िज़ाओं से बचना।

﴾2﴿ **सिदक़े मुक़ाल :-** या'नी सच बोलना और झूट से हमेशा बचते रहना।

﴾3﴿ **इख़्लास :-** या'नी निय्यत को दुरुस्त और पाकीज़ा रखना कि हर नेकी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के लिये करना।

﴾4﴿ **तक़्वा :-** या'नी शरीअ़त के अह़काम की पूरी पूरी पाबन्दी करना।

﴾5﴿ **शआ़इरे इलाही** عَزَّوَجَلَّ **की ता'ज़ीम :-** या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीन के सुतूनों मषलन क़ुरआन, का'बा, नबी, नमाज़ वग़ैरा की ता'ज़ीम और बुज़ुर्गाने दीन का हमेशा अदबो एह़तिराम करना।

﴾6﴿ **ह़ुज़ूरे क़ल्ब :-** या'नी जो वज़ीफ़ा भी पढ़ें दिल की ह़ुज़ूरी के साथ पढ़ना।

﴾7﴿ **मज़्बूत़ अ़क़ीदा :-** या'नी जो अ़मल और वज़ीफ़ा पढ़ें उस की ताषीर पर पूरा पूरा और पुख़्ता अ़क़ीदा रखना अगर तज़बज़ुब या तरद्दुद रहा तो वज़ीफ़ा या अ़मल में अषर न रहेगा।

वज़ाइफ़ के ज़रूरी आदाब

ऊपर ज़िक्र हुई सात शर्तों के इलावा आ'माल व वज़ाइफ़ के कुछ ज़रूरी आदाब भी हैं हर अ़मल करने वाले को लाज़िम है कि इन आदाब का भी लिहाज़ ख़याल रखे वरना दुआओं और वज़ीफ़ों की ताषीरात में कमी हो जाना लाज़िमी है। आदाबे दुआ और वज़ाइफ़ की ता'दाद यूं तो बहुत ज़ियादा है मगर हम इन में से चन्द निहायत ही अहम और ज़रूरी आदाब का तज़्किरा करते हैं जो येह हैं।

《1》 **बारगाहे ह़क़ में इजज़ो नियाज़ :–** या'नी हर अ़मल करने या ता'वीज़ात लिखने के वक़्त निहायत ही ख़ुज़ूअ़ व ख़ुशूअ़ के साथ ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की बारगाह में आ़जिज़ी व नियाज़ मन्दी का इज़्हार करे।

《2》 **सदक़ा व ख़ैरात :–** या'नी हर अ़मल और वज़ाइफ़े शुरूअ़ करने से पहले कुछ सदक़ा व ख़ैरात करे।

《3》 **दुरूद शरीफ़ :–** या'नी हर अ़मल हर वज़ीफ़े के अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ का विर्द करे।

《4》 **बार बार दुआ मांगे :–** या'नी वज़ीफ़ों के बा'द जब अपने मक़्सद के लिये दुआ मांगे तो एक ही मरतबा दुआ मांग कर बस न कर दे बल्कि बार बार गिड़ गिड़ा कर ख़ुदा से दुआ मांगे।

《5》 **तन्हाई :–** या'नी जहां तक हो सके हर दुआ और वज़ीफ़े वग़ैरा अ़मलियात को तन्हाई में पढ़े जहां न किसी की आमदो रफ़्त हो न किसी की कोई आवाज़ आए।

《6》 **किसी को नुक़्सान न पहुंचाए :–** या'नी किसी मुसलमान को नुक़्सान पहुंचाने के लिये हरगिज़ हरगिज़ न कोई अ़मल करे न कोई वज़ीफ़ा पढ़े।

﴾7﴿ **ख़ुराक में कमी :-** या'नी जब कोई अ़मल करे या वज़ीफ़ा पढ़े तो इस दौरान में बहुत कम खाए और सादा गिज़ा खाए, भर पेट न खाए क्यूंकि पेट भरे लोग दुआ़ओं की तासीर से अकषर मह़रूम रहते हैं।

﴾8﴿ **पाकी और सफ़ाई :-** आ'माल और वज़ाइफ़ पढ़ने के दौरान बदन और कपड़ों की पाकी और सफ़ाई सुथराई का ख़ास तौर पर ख़याल व लिह़ाज़ रखे बल्कि ख़ुश्बू भी इस्ति'माल करे और ज़ाहिरी पाकी व सफ़ाई के साथ साथ अपने अख़्लाक़ व किरदार और बातिनी सफ़ाई का भी एहतिमाम रखे।

﴾9﴿ **पाक रोशनाई :-** जो ता'वीज़ लिखे वोह ज़ा'फ़रान से लिखे या ऐसी रोशनाई से लिखे जिस में स्प्रिट न पड़ी हो बल्कि अपने हाथ से बनाई हुई रोशनाई होनी चाहिये जो ज़म ज़म शरीफ़ में घोली हुई हो या दरियाओं के जारी पानी में।

﴾10﴿ **अच्छी साअ़त अच्छी निय्यत :-** हर अ़मल अच्छी साअ़त में करे और हर ता'वीज़ अच्छी साअ़त में क़िब्ला रू हो कर लिखे और ता'वीज़ लिखते वक़्त हरगिज़ कोई तम्अ़ और लालच दिल में न लाए बल्कि इख़्लास के साथ ता'वीज़ लिख कर ह़ाजत मन्दों को दे। हां अगर लोग अपनी त़रफ़ से ता'वीज़ों का नज़राना ख़ुशी के साथ पेश करें तो इस को रद न करे।

सिफ्ली व रह़मानी अ़मलियात

अ़मलियात की दो क़िस्में हैं एक सिफ़ली, दूसरे रह़मानी। सिफ़ली अ़मलियात नाजाइज़ और ह़राम हैं बल्कि इन में से बा'ज़ सरीह़ कुफ़्र और शिर्क हैं लिहाज़ा तमाम सिफ़ली अ़मलियात जादू टोना वग़ैरा कोई मुसलमान कभी हरगिज़ हरगिज़ न करे वरना ईमान बरबाद हो जाएगा हां रह़मानी अ़मलियात जाइज़ हैं जो क़ुरआन शरीफ़ की आयतों और मुक़द्दस दुआ़ओं के ज़रीए़ किये जाते हैं मगर रह़मानी अ़मल भी उसी वक़्त जाइज़ हैं जब कि शरीअ़त इजाज़त दे मषलन दुश्मनी डालने

के लिये कोई रह़मानी अ़मल किया जाए तो येह उसी सूरत में जाइज़ होगा कि शरीअ़त इस को जाइज़ क़रार दे। चुनान्चे किसी मर्द व औ़रत में नाजाइज़ तअ़ल्लुक़ हो गया है तो इन दोनों में अ़दावत डालने के लिये कोई रह़मानी अ़मल करना जाइज़ है बल्कि षवाब का काम है कि दोनों को गुनाह से बचाना मक़्सूद है। लेकिन मियां बीवी या भाई भाई के दरमियान दुश्मनी डालने के लिये कोई रह़मानी अ़मल करना ह़राम और गुनाह है।

मुवक्कलाती अ़मलियात से बचते रहो

रह़मानी अ़मलियात की दो क़िस्में हैं एक मुवक्कलाती जो मुवक्कलों के वासिते़ से होता है दूसरे ग़ैर मुवक्कलाती जिस में मुवक्कलों का वासिता़ नहीं होता। अगर्चे मुवक्कलाती अ़मलियात बहुत ही मुअष्षिर हुवा करते हैं लेकिन इन में बड़े बड़े ख़त़रात भी हैं बल्कि जान का भी डर रहता है इस लिये मुवक्कलाती अ़मलियात से हमेशा दूर ही भागते रहना चाहिये। जो लोग भी मुवक्कलाती अ़मलियात के चक्कर में पड़े वोह ख़त़रात के भंवर में फंस गए। कोई कोढ़ी हुवा, कोई पागल हो गया, कोई जान से मारा गया। शैख़े कामिल की ता'लीम व इजाज़त मुवक्कलाती अ़मलियात में इन्तिहाई ज़रूरी है और इस ज़माने में "शैख़े कामिल" का मिलना बहुत दुश्वार है इस लिये हम यहां चन्द ग़ैर मुवक्कलाती अ़मलियात लिखते हैं इन अ़मलियात में मुवक्कलों का कोई वासिता़ नहीं है और हर सुन्नी मुसलमान मर्द व औ़रत जो पाबन्दे शरीअ़त हों उन सब को इन आ'माल व ता'वीज़ात के करने की इजाज़त है वोह अगर शराइत़ व आदाब की पाबन्दी करेंगे तो फ़ाइदा उठाएंगे वरना फ़ाइदे से मह़रूम रहेंगे लेकिन बहर ह़ाल इन को न कोई ख़त़रा होगा न कोई नुक़्सान وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعلَم

ख़वासे بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

"**बिस्मिल्लाह शरीफ़**" के ख़वास और इस आयते मुबारका की ख़ासिय्यतें बहुत हैं इन में से चन्द फ़वाइद यहां लिखे जाते हैं जो बुज़ुर्गों के मुजर्रब और आज़मूदा हैं।

हर त़रह़ की ह़ाजत रवाई :- अगर कोई सख़्त मुश्किल या ह़ाजत पेश आ जाए तो बुध जुमा'रात और जुमुआ़ को मुसलसल तीन दिन रोज़े रखे और जुमुआ़ का ग़ुस्ल कर के नमाज़े जुमुआ़ के लिये जाए और कुछ ख़ैरात भी करे फिर नमाज़े जुमुआ़ के बा'द येह दुआ़ पढ़ कर अपने मक़्सद के लिये दिल लगा कर और गिड़ गिड़ा कर ख़ुदा से दुआ़ मांगे ان شاء الله تعالٰی ज़रूर उस की दुआ़ क़बूल होगी।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِاِسْمِكَ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ O اَلَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ط عَالِمُ الْغَیْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُO وَاَسْئَلُكَ بِاِسْمِكَ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط اَلَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ط اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ط لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ط اَلَّذِیْ مَلَئَتْ عَظْمَتُهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط وَاَسْئَلُكَ بِاِسْمِكَ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط اَلَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَعَنَتْ لَهُ الْوُجُوْهُ وَخَشَعَتْ لَهُ الْاَصْوَاتُ وَ وَجِلَتِ الْقُلُوْبُ مِنْ خَشْیَتِهٖ اَنْ تُصَلِّیَ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ وَاَنْ تُعْطِیَنِیْ مَسْئَلَتِیْ وَتَقْضِیَ حَاجَتِیْ بِرَحْمَتِكَ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ

(فیوض قرآنی بحوالہ الترغیب وَالتَّرْهِیْب و مفتاح الحسن وغیرہ)

लफ़्ज़ ह़ाजती के बा'द अपनी ज़रूरत का नाम ज़िक्र करो।

जिस सह़ाबी से येह दुआ़ मुन्क़ूल है उन का इरशाद है कि येह दुआ़ नादानों को हरगिज़ मत सिखाओ क्यूंकि वोह नाजाइज़ कामों के लिये पढ़ेंगे और गुनाहों में मुब्तला होंगे। बुज़ुर्गों के फ़रमान के मुत़ाबिक़ मैं भी सख़्त ताकीद करता हूं कि नाजाइज़ कामों के लिये कभी हरगिज़ इस दुआ़ को न पढ़ना वरना सख़्त नुक़्सान उठाओगे।

दुश्मनी दूर हो जाए और मह़ब्बत पैदा हो जाए :- अगर पानी पर 786 मरतबा بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ़ कर मुख़ालिफ़ को पिला दो तो ان شاء الله تعالٰی वोह मुख़ालफ़त छोड़ देगा और मह़ब्बत करने लगेगा और अगर मुवाफ़िक़ को पिला दो तो मह़ब्बत बढ़ जाएगी। (फ़ुयूज़े क़ुरआनी)

हर दर्द व मरज़ दूर हो जाए :- जिस दर्द या मरज़ पर तीन रोज़ तक सो मरतबा بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم हुज़ूरे दिल से पढ़ कर दम किया जाए اِن شَاءَ اللّٰه تعالٰی इस से आराम हो जाएगा। (फ़ुयूज़े क़ुरआनी)

चोर और अचानक मौत से हिफ़ाज़त :- अगर रात को सोते वक़्त 21 मरतबा بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़लो तो اِن شَاءَ اللّٰه تعالٰی माल व अस्बाब चोरी से महफ़ूज़ रहेगे और मर्गे ना गहानी से भी हिफ़ाज़त होगी। (फ़ुयूज़े क़ुरआनी)

हाजतों के लिये बिस्मिल्लाह और नमाज़ :- بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم इस तरह पढ़ो कि जब एक हज़ार मरतबा हो जाए तो दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ कर दुरूद शरीफ़ पढ़ों और अपनी मुराद के लिये दुआ़ मांगो फिर एक हज़ार मरतबा बिस्मिल्लाह पढ़ कर दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ो और दुरूद शरीफ़ पढ़ कर अपनी मुराद के लिये दुआ़ मांगो ग़रज़ इस तरह बारह हज़ार मरतबा बिस्मिल्लाह पढ़ो और हर हज़ार पर दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ों और नमाज़ के बा'द दुरूद शरीफ़ पढ़ कर अपनी मुराद के लिये दुआ़ मांगो اِن شَاءَ اللّٰه تعالٰی मुराद हासिल होगी। (مرقع کلیمی و مجربات دیربی)

अवलाद ज़िन्दा रहेगी :- जिस औ़रत का बच्चा ज़िन्दा न रहता हो वोह एक कागज़ पर एक सो साठ बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم लिखवा कर इस का ता'वीज़ बना कर हर वक़्त पहने रहे तो اِن شَاءَ اللّٰه تعالٰی उस की अवलाद ज़िन्दा रहेगी। (फ़ुयूज़े क़ुरआनी)

ज़हर का अषर न हो :

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ

येह दुआ़ पढ़ कर हमेशा खाना खाएं और पानी वग़ैरा पीएं तो اِن شَاءَ اللّٰه تعالٰی ज़हर का अषर दूर हो जाएगा और ज़हर कोई नुक़्सान नहीं देगा लेकिन पुख़्ता अ़क़ीदा और शराइत़ का पाया जाना ज़रूरी है। (फ़ुयूज़े क़ुरआनी)

बुख़ार से शिफ़ा :- जिस को बुख़ार हो सात बार येह दुआ़ पढ़े

بِسْمِ اللّٰهِ الْكَبِيْرِ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ مِنْ شَرِّ كُلِّ عِرْقٍ نَعَّارٍ وَّ مِنْ شَرِّ حَرِّ النَّارِ

अगर मरीज़ खुद न पढ़ सके तो कोई दूसरा नमाज़ी आदमी सात बार पढ़ कर दम कर दे या पानी पर दम कर के पिला दे اِنْ شَاءَ اللّٰهُ تَعَالٰی बुख़ार उतर जाएगा। एक मरतबा में बुख़ार न उतरे तो बार बार येह अ़मल करें।

(المستدرك، كتاب الرقى و التمائم، باب رقية وجع الضرس و الاذن، رقم ٨٣٢٤، ج٥، ص ٥٩٢)

तप लर्ज़ा से शिफ़ा :- जिस को जाड़ा बुख़ार आता हो इस नक़्श को लिख कर मरीज़ के गले में डाल दें।

الرحيم	الرحمٰن	اللّٰه	بسم
بسم	الرحيم	الرحمٰن	اللّٰه
اللّٰه	بسم	الرحيم	الرحمٰن
الرحمٰن	اللّٰه	بسم	الرحيم

बाज़ार में नुक़्सान न हो बल्कि फ़ाइदा हो :- बाज़ार जाओ तो येह दुआ़ पढ़ो।

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ خَيْرَ هٰذِهِ الْاَسْوَاقِ وَخَيْرَ مَا فِيْهَا وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ هَا وَشَرِّ مَا فِيْهَا اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ اَنْ اُصِيْبَ يَمِيْنًا فَاجِرَةً اَوْ صَفْقَةً خَاسِرَةً ط

इस दुआ़ की बरकत से اِنْ شَاءَ اللّٰهُ تَعَالٰی बाज़ार में ख़ूब नफ़्अ़ होगा और कोई घाटा नहीं होगा इस दुआ़ को हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने पढ़ा है। (المستدرك، كتاب الدعاء و التكبير ... الخ، رقم ٢٠٢١، ج٢، ص ٢٣٢)

आसेब दूर हो जाए :- आसेबज़दा मरीज़ पर येह पढ़ा जाए :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ الٓمٓصٓ ○ طٰهٰ ○ طٰسٓمٓ ○ كٓهٰيٰعٓصٓ ○ يٰسٓ ○

وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِO حٰمٓ عٓسٓقٓ O قٓO نٓO وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَO

اِنْ شَاءَ اللّٰهُ تَعَالٰى आसेब निकल जाएगा और फिर न आएगा। पढ़ने वाले में तक़्वा ए'तिक़ादे कामिल और रूहानी क़ुव्वत होनी चाहिये और हुज़ूरे क़ल्ब के साथ पढ़े। (फ़ुयूज़े क़ुरआनी)

ख़त़रे में पड़ जाने के वक़्त :- ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का इरशाद है कि अगर कोई ख़त़रे में पड़ जाए तो येह पढ़े بِسْمِ اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ تَعَالٰى इस की बरकत से ख़त़रा टल जाएगा।

(عمل اليوم و الليلة لا بن السنى، باب مايقول اذا وقع فى ورطة، رقم ٣٣٦، ص ١٠٨)

हर आफ़त से अमान :- जो शख़्स रोज़ाना सुब्ह़ो शाम इस दुआ़ को पढ़े वोह हर आफ़त व बला से मह़फ़ूज़ रहेगा।

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ عَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَاَنْتَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ط مَاشَآءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَا لَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ اَشْهَدُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ه وَاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ه وَاَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَ مِنْ شَرِّ كُلِّ دَآبَّةٍ اَنْتَ اٰخِذٌ ۢ بِنَاصِيَتِهَا اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ه وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ه اِنَّ وَلِيِّۦَ اللّٰهُ الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ ه فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ط عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ۔

इस दुआ़ का बड़ा ह़िस्सा शरहे़ सफ़रुस्सआ़दह स. 478 में मज़्कूर है और पूरी दुआ़ मुतअ़द्दद बुज़ुर्गों ने लिखी है "अल क़ौलुल जमील" स. 77 में लिखा है कि मैं ने इस दुआ़ को निहायत मुफ़ीद पाया है।

दफ़्ए आसेब व रद्दे सह़र की छे दुआ़एं :– इन छे दुआ़ओं को "शश कुफ़्ल" (छे ताला) भी कहते हैं। जो शख़्स रात को हमेशा शश कुफ़्ल पढ़ता रहे या लिख कर अपने पास रखे वोह हर ख़ौफ़ व ख़त़रे से और जादू से और हर क़िस्म की बलाओं से मह़फ़ूज़ रहेगा और अगर शश कुफ़्ल को आसेब ज़दा या सह़र व जादू के मरीज़ के कान में पढ़ कर फूंक मार दी जाए तो आसेब भाग जाएगा और जादू उतर जाएगा। (फ़ुयूज़े कुरआनी)

कुफ़्ले अव्वल

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۰ بِسْمِ اللّٰهِ السَّمِيْعِ الْبَصِيْرِ الَّذِىْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَىْءٌ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ○

कुफ़्ले दुवुम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الْخَلَّاقِ الْعَلِيْمِ الَّذِىْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَىْءٌ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ ○

कुफ़्ले सिवुम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۰ بِسْمِ اللّٰهِ السَّمِيْعِ الْبَصِيْرِ الَّذِىْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَىْءٌ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْبَصِيْرُ ○

कुफ़्ले चहारुम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۰ بِسْمِ اللّٰهِ السَّمِيْعِ الْبَصِيْرِ الَّذِىْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَىْءٌ وَهُوَ الْغَنِىُّ الْقَدِيْرُ ○

कुफ़्ले पन्जुम

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ السَّمِيْعِ الْبَصِيْرِ الَّذِىْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَىْءٌ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ○

कुफ़्ले शशुम بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۰ بِسْمِ اللّٰهِ السَّمِيْعِ الْبَصِيْرِ الَّذِىْ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَىْءٌ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ الْحَكِيْمُ ط فَاللّٰهُ خَيْرٌ حَافِظًا ۰ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ○

ज़ालिम और शैत़ान के शर से पनाह :– इस के लिये ह़ज़रते अनस सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की दुआ़ बेह़द नाफ़ेअ़ और बहुत ही फ़ाइदा बख़्श है। इमामुल हिन्द ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिष رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ ने अपने एक मक्तूब में इस को पूरी तफ़्सील के साथ बयान फ़रमाया है। इस मक्तूब का नाम "इस्तीनासुल अन्वारिल क़ुब्स फ़ी शर्ह़ दुआ़ए उन्स" है येह मक्तूब "अख़्बारुल अख़्यार" स. 191 के ह़ाशिये पर छपा है इस में आप लिखते हैं।

इमाम जलालुद्दीन सुयूती رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه जमउ़ल जवामेअ़ में मुह़द्दिष अबूश्शैख़ की किताबुष्षवाब और तारीख़े इब्ने अ़साकिर से नक़्ल करते हैं कि एक रोज़ ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ षक़फ़ी ज़ालिम गवर्नर ने ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को मुख़्तलिफ़ अक़्साम के चार सो घोड़े दिखा कर कहा कि ऐ अनस ! क्या तुम ने अपने साह़िब (या'नी रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) के पास भी इतने घोड़े और येह शानो शौकत देखी है। ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया की ख़ुदा की क़सम ! मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पास इस से बेहतर चीज़ें देखी हैं और मैं ने ह़ुज़ूर صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना है कि घोड़े तीन त़रह़ के हैं एक वोह घोड़ा जो जिहाद के लिये रखा जाए फिर इस के रखने का षवाब बयान फ़रमाया (येह अ़ाम त़ौर पर ह़दीष की किताबों में मौजूद है) दूसरा वोह घोड़ा जो अपनी सुवारी के लिये रखा जाता है। तीसरा वोह घोड़ा जो नामो नुमूद के लिये रखा जाता है इस के रखने से आदमी जहन्नम में जाएगा ऐ ह़ज्जाज ! तेरे घोड़े ऐसे ही हैं।"

ह़ज्जाज इस ह़दीष को सुन कर आग बगूला हो गया और कहा कि ऐ अनस ! अगर मुझ को इस का लिह़ाज़ न होता कि तुम ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत की है और अमीरुल मोअमिनीन (अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान) ने तुम्हारे साथ रिआ़यत करने की हिदायत की है तो मैं तुम्हारे साथ बहुत बुरा मुआ़मला कर डालता।

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि ऐ ह़ज्जाज ! क़सम बख़ुदा तू मेरे साथ कोई बद उ़नवानी नहीं कर सकता। मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से चन्द कलिमात सुने हैं जिन की बरकत से मैं हमेशा अल्लाह तआ़ला की पनाह में रहता हूं और इन कलिमात की ब दौलत

किसी ज़ालिम की सख़्ती और किसी शैत़ान के शर से डरता ही नहीं। ह़ज्जाज इस कलाम की हैबत से दम बखुद रह गया और सर झुका लिया। थोड़ी देर के बा'द सर उठा कर बोला कि ऐ अबू ह़म्ज़ा (येह ह़ज़रते अनस की कुन्यत है) येह कलिमात मुझे बता दीजिये। ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया कि मैं हरगिज़ तुझे न बताऊंगा इस लिये कि तू इस का अहल नहीं है। रावी का बयान है कि जब ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का आख़िरी वक़्त आ गया तो इन के ख़ादिम ह़ज़रते अब्बान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इन के सिरहाने आ कर रोने लगे। ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया क्या चाहता है? ह़ज़रते अब्बान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की वोह कलिमात हमें ता'लीम फ़रमाए जिन के बताने की ह़ज्जाज ने दरख़्वास्त की थी और आप ने इन्कार फ़रमा दिया था। ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया लो सीख लो इन को सुब्ह़ो शाम पढ़ना वोह कलिमात येह हैं।

दुआ़ए अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **:-**

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○ بِسْمِ اللّٰہِ

عَلٰی نَفْسِیْ وَدِیْنِیْ بِسْمِ اللّٰہِ عَلٰی اَھْلِیْ وَمَالِیْ وَوَلَدِیْ۔ بِسْمِ اللّٰہِ عَلٰی مَا اَعْطَانِیَ اللّٰہُ اَللّٰہُ رَبِّیْ لَا اُشْرِكُ بِهٖ شَیْئًا ط اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ وَاَعَزُّ وَاَجَلُّ وَاَعْظَمُ مِمَّا اَخَافُ وَاَحْذَرُ عَزَّ جَارُكَ وَجَلَّ ثَنَاءُكَ وَلَا اِلٰہَ غَیْرُكَ اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِیْ وَمِنْ شَرِّ کُلِّ شَیْطَانٍ مَّرِیْدٍ O وَمِنْ شَرِّ کُلِّ جَبَّارٍ عَنِیْدٍ O فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِیَ اللّٰہُ لَا اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ ط عَلَیْهِ تَوَکَّلْتُ وَھُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ O اِنَّ وَلِیِّ ۦ اللّٰہُ الَّذِیْ نَزَّلَ الْکِتٰبَ وَھُوَ یَتَوَلَّی الصّٰلِحِیْنَ O

इस दुआ़ को तीन मरतबा सुब्ह़ को और तीन मरतबा शाम को पढ़ना बुज़ुर्गों का मा'मूल है।

(جامع الاحادیث للسیوطی،مسند انس بن مالك،رقم۱۲۰۶۳،ج۱۸،ص٤٨٧، اخبار الاخیار(فارسی)،ص۲۹۲)

हर मरज़ से शिफ़ा :- येह कलिमात पढ़े जाएं और इन का ता'वीज़ पहना जाए।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَبِاللّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ O اُسْكُنْ اَيُّهَا الْوَجْعُ سَكَّنْتُكَ بِالَّذِيْ يُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ O بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ O وَبِاللّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ اُسْكُنْ اَيُّهَا الْوَجْعُ سَكَّنْتُكَ بِالَّذِيْ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا وَلَئِنْ زَالَتَا اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهٖ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا O

येह ह़ज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मुजर्रब अ़मल है। इमाम मौसूफ़ का क़ौल है कि इस के पढ़ने की बरकत से मुझे कभी त़बीब (डॉक्टर) की ज़रूरत ही नहीं हुई। (फुयूज़े कुरआनी)

ह़िर्ज़ अबू दुजाना رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه **:-** जो जिन्नो शैत़ान वग़ैरा के शर और शरारतों से बचाने वाला बेहतरीन वज़ीफ़ा और आ'ला दर्जे का अ़मल है। ह़ज़रते इमाम सुयूत़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه "ख़साइसुल कुब्रा" जिल्द 2, स. 98 में इमाम बयहक़ी की रिवायात लिखते हैं कि ह़ज़रते अबू दुजाना رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दरबारे अक़्दस में गुज़ारिश की, कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं रात को बिस्तर पर लैटता हूं तो अपने घर में चक्की चलने की आवाज़, शहद की मख्खियों की भिनभिनाहट जैसी आवाज़ सुना करता हूं और कभी कभी बिजली की सी चमक भी देखता हूं। एक रात मैं ने कुछ ख़ौफ़ज़दा हो कर सर उठाया तो सहन में एक काला साया नज़र आया जो ऊंचा और लम्बा होता जा रहा है, मैं ने बढ़ कर उस को छुवा तो उस की खाल साही की खाल की त़रह़ काटने वाली थी। फिर उस ने मेरे मुंह पर आग का एक शो'ला फैंका और मुझे मह़सूस हुवा कि मैं जल जाऊंगा येह सुन कर

हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم ने हुक्म फ़रमाया कि क़लम दवात और काग़ज़ लाओ। मैं ने पेश किया तो आप ने ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہٗ से फ़रमाया कि लिखो

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ هٰذَا كِتَابٌ مِّنْ رَّسُوْلِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ اِلٰی مَنْ طَرَقَ الدَّارَ مِنَ الْعُمَّارِ وَ الزُّوَّارِ وَالسَّائِحِیْنَ اِلَّا طَارِقٌ یَّطْرُقُ بِخَیْرٍ یَارَحْمٰنُ ○ اَمَّا بَعْدُ فَاِنَّ لَنَا وَلَكُمْ فِی الْحَقِّ سَعَةً فَاِنْ تَكُ عَاشِقًا مُّوْلِعًا اَوْفَاجِرًا مُّقْتَحِمًا اَوْرَاعِیًا حَقًّا مُّبْطِلًا فَهٰذَا كِتَابٌ یَّنْطِقُ عَلَیْنَا وَ عَلَیْكُمْ بِالْحَقِّ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ○ وَرُسُلُنَا یَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ ○ اُتْرُكُوْا صَاحِبَ كِتَابِیْ هٰذَا وَانْطَلِقُوْ اِلٰی عَبَدَةِ الْاَصْنَامِ وَاِلٰی مَنْ یَّزْعَمُ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ط كُلُّ شَیْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ لَهُ الْحُكْمُ اِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ○ تُقْلَبُوْنَ ○ حٰمٓ ○ لَا تُنْصَرُوْنَ ○ حٰمٓ ○ عٓسٓقٓ ○ تَفَوَّقَ اَعْدَآءُ اللّٰهِ وَبَلَغَتْ حُجَّةُ اللّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ط فَسَیَكْفِیْكَهُمُ اللّٰهُ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ط

येह ह़िर्ज़ आसेबज़दा की गर्दन में ता'वीज़ बना कर पहना दिया जाए اِن شَاءَ اللّٰہ تعالٰی आसेब जाता रहेगा। अगर घर में आसेब का अषर है तो दीवार पर चस्पां कर दिया जाए اِن شَاءَ اللّٰہ تعالٰی आसेब भाग जाएगा। चुनान्चे ह़ज़रते अबू दुजाना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस ह़िर्ज़ को ले कर घर आए और रात को अपने सर के नीचे रख कर सोए तो उन की आंख उस वक़्त खुली जब कोई चिल्ला चिल्ला कर कह रहा था कि ऐ अबू दुजाना (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) लात व उ़ज़्ज़ा की क़सम है कि मैं इन कलिमात से जल रहा हूं मैं इस तह़रीर वाले के ह़क़ का वसीला दे कर कहता हूं कि अगर तुम ने इस ह़िर्ज़ को उठा लिया तो हम तुम्हारे घर और तुम्हारे हमसाये के घर न आएंगे। ह़ज़रते अबू दुजाना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़ज्र को मस्जिदे नबवी में

आए और नमाज़ पढ़ कर रात का माजरा सुनाया तो हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया :

ऐ अबू दुजाना (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) उस ज़ात की क़सम है मुझे जिस ने हक़ के साथ भेजा है अब येह आसेब क़ियामत तक अज़ाब में रहेगा । (الخصائص الکبریٰ،ج٢،ص١٦٦)

ख़फ़क़ान का ता'वीज़ :- दिल धडकता हो या दिल घबराता हो या दिल में दर्द या जलन हो तो येह ता'वीज़ लिख कर गले में डाल दिया जाए और डोरा इतना बड़ा हो कि ता'वीज़ दिल के पास लटका रहे ता'वीज़ येह है بسم اللہ الرحمٰن الرحیم یا اللہ یا رحمٰن یا رحیم ذل مارا کن مستقیم بحق ایاك نعبد و ایاك نستعین وبحق الا بذکر اللہ تطمئن القلوب وبحق طٰہٰ ویٰس وحق ق وص وبحق یا بدوح ۔

ख़वासे सूरए फ़ातिहा

इमाम दारिमी इमाम बयहक़ी वग़ैरा की रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि **सूरए फ़ातिहा** हर मरज़ की दवा है इस सूरह का एक नाम "शाफ़िया" और एक नाम "सूरतुश्शिफ़ा" है इस लिये कि येह हर मरज़ के लिये शिफ़ा है ।

(سنن الدارمی،باب فضل خاتمۃ الکتاب،رقم٣٣٧٠،ج٢،ص٥٣٨۔صاوی،الفاتحۃ،ج١،ص١٣)

रोज़ी की फ़िरावानी वग़ैरा :- मुस्नदे दारिमी में है कि सो मरतबा सूरए फ़ातिहा पढ़ कर जो दुआ मांगी जाए उस को **अल्लाह** तआला क़बूल फ़रमाता है ।

मकान से जिन्न भाग जाए :- अगर किसी घर में जिन्न रहता हो और परेशान करता हो तो **सूरए फ़ातिहा** और **आयतुल कुरसी** और **सूरए जिन्न** की इब्तिदाई पांच आयतें पढ़ कर पानी पर दम कर के मकान के अत्राफ़ व जवानिब में छिड़क देने के बा'द जिन्न मकान में से चला जाएगा और ان شاء اللہ تعالٰی फिर न आएगा । (फ़ुयूज़े कुरआनी)

शिफ़ाए अमराज़ :- बुज़ुर्गों ने फ़रमाया है कि फ़ज्र की सुन्नतों और फ़र्ज़ के दरमियान में 41 बार **सूरए फ़ातिहा** पढ़ कर मरीज़ पर दम करने से आराम हो जाता है और आंख का दर्द बहुत जल्द अच्छा हो जाता है और अगर इतना पढ़ कर अपना थूक आंखों में लगा दिया जाए तो बहुत मुफ़ीद है। (फ़ुयूज़े क़ुरआनी)

हज़रते ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं कि अगर कोई मुश्किल पेश आ जाए तो सूरए फ़ातिहा इस तरह चालीस मरतबा पढ़ो कि بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم की **मीम** को **अल-हम्द** के लाम में मिलाओ और الرحمٰن الرحيم को तीन बार पढ़ो और हर मरतबा आख़िर में तीन बार **"आमीन"** कहो اِن شَاءَاللّٰہ تعالٰی मक़्सद हासिल होगा।

(فوائد الفوادمع هشت بهشت،ج ۲، ص ۷۹ بتغيرقليل)

बीमारी और आफ़तों को दफ़्अ़ करने के लिये :- सात दिनों तक रोज़ाना ग्यारह हज़ार मरतबा सिर्फ़ इतना पढ़े اِیَّاکَ نَعْبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسْتَعِیْنُ अव्वल आख़िर तीन तीन बार दुरूद शरीफ़ भी पढ़ों। बीमारियों और बलाओं को दूर करने के लिये बहुत ही मुजर्रब अ़मल है। (फ़ुयूज़े क़ुरआनी)

ख़वासे सूरए बक़रह

शैतान भाग जाए :- हदीष शरीफ़ में है कि जिस घर में सूरए बक़रह पढ़ी जाती है वहां से शैतान भाग जाता है।

(ترمذی کتاب فضائل القران،باب ما جاء فی سورة البقرة،الحديث ۲۸۸٦،ج ٤،ص ٤٠٢)

बड़ी बरकत :- हदीष शरीफ़ में है कि **सूरए बक़रह** सीखो कि इस का हासिल करना बड़ी बरकत है और इस को छोड़ देना और हासिल न करना बड़ी हसरत की बात है बातिल परस्त (जादूगर) इस की ताब नहीं ला सकेंगे। (مجمع الزوائد،باب منه:في فضل القرآن،الحديث ۱۱٦۳۳،ص ۳۰۰،ج ۷)

ख़वासे आयतुल कुरसी

हदीष शरीफ़ में है कि येह आयत कुरआने मजीद की आयतों में बहुत ही अज़्मत वाली आयत है। (درمنثور،ج۲،ص۶)

इस के फ़वाइद बहुत ज़ियादा हैं जो शख़्स हर नमाज़ के बा'द आयतुल कुरसी पढ़ेगा उस को हस्बे ज़ैल बरकतें नसीब होंगी।

﴾1﴿ वोह मरने के बा'द जन्नत में जाएगा।

﴾2﴿ वोह शैतान और जिन्न की तमाम शरारतों से महफ़ूज़ रहेगा।

﴾3﴿ अगर मोहताज होगा तो चन्द दिनों में उस की मोहताजी और ग़रीबी दूर हो जाएगी।

﴾4﴿ जो शख़्स सुब्हो शाम और बिस्तर पर लेटते वक़्त आयतुल कुरसी और इस के बा'द दो आयतें خالدون तक पढ़ा करेगा वोह चोरी, ग़र्क़आबी और जलने से महफ़ूज़ रहेगा।

﴾5﴿ अगर सारे मकान में किसी ऊंची जगह पर लिख कर इस का कतबा आवेज़ां कर दिया जाए तो ان شاء اللہ تعالیٰ उस घर में कभी फ़ाक़ा न होगा। बल्कि रोज़ी में बरकत और इज़ाफ़ा होगा और उस मकान में कभी चोर न आ सकेगा। (फ़ुयूज़े कुरआनी)

तुम्हें कोई न देख सके :- अगर तुम किसी ख़तरनाक जगह दुश्मनों के नर्ग़े में फंस जाओ या दुश्मन तुम्हें गिरिफ़्तार करना चाहें तो अपने साथियों से कहो कि वोह एक दूसरे से पीठ लगा कर बैठें फिर तुम इन के गिर्द आयतुल कुरसी पढ़ते हुए एक दाइरा खींचो फिर तुम भी दाइरे के अन्दर लोगों से पीठ लगा कर बैठो और सात मरतबा आयतुल कुरसी पढ़ो फिर कुरआन की इन आयतों को भी पढ़ो।

وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ○ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ○ وَحِفْظًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ○ وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ

الرَّجِيمِ O اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ O لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ؕ اَللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ O وَمَآ اَنْتَ بِوَكِيْلٍ O اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ O بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ O فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ O فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ O

के बा'द तीन मरतबा يَا حَفِيْظُ कहो फिर तीन बार येह पढ़ो

يَا حَفِيْظُ احْفَظْنَا O اَللّٰهُمَّ احْرِسْنَا بِعَيْنِكَ الَّتِيْ لَا تَنَامُ O وَاكْنُفْنَا بِكَنَفِكَ الَّذِيْ لَا يُرَامُ O

फिर तीन बार या **अल्लाह** पढ़ो और तीन बार **या रब्बल आ़लमीन।** अब दाइरे के तमाम लोग और तुम खुद भी बिल्कुल ख़ामोश हो जाओ। आपस में भी बात चीत न की जाए اِنْ شَاءَ اللّٰه تعالٰی तुम लोगों को कोई भी न देख सकेगा और कोई भी ज़रर न पहुंचा सकेगा बहुत मुजर्रब अ़मल है।

(फ़ुयूज़े कुरआनी)

ख़्वासे सूरए आले इमरान :- जो शख़्स क़र्ज़दार हो गया अगर वोह रोज़ाना सात बार सूरए आले इमरान पढ़ता रहे तो اِنْ شَاءَ اللّٰه تعالٰی क़र्ज़ से सुबुकदोश हो जाएगा और **अल्लाह** तआ़ला ग़ैब से उस की रोज़ी का सामान और इन्तिज़ाम फ़रमाएगा।

ख़्वासे सूरए निसा :- इस सूरह को सात मरतबा पढ़ कर पानी पर दम कर के मियां बीवी को पिला दो तो दोनों में महब्बत व मुवाफ़क़त पैदा हो जाएगी और अगर इस सूरह को मुश्क व ज़ा'फ़रान से लिख कर और धो कर ख़फ़क़ान के मरीज़ को पिला दें तो मरज़े ख़फ़क़ान ज़ाइल हो जाएगा।

ख़्वासे सूरए माइदह :- जो शख़्स इस सूरह को रोज़ाना पढ़ेगा वोह क़हत़ और फ़ाक़ा से मह़फ़ूज़ रहेगा और ग़ैब से उस की रोज़ी का इन्तिज़ाम हो जाया करेगा। इस सूरह को लिख कर और धो कर इस्तिस्क़ा के मरीज़ को पिला दें तो आराम हो जाएगा।

ख़्वासे सूरए अन्आ़म :- इस के पढ़ने से हर त़रह़ की मुश्किल आसान हो जाती है। कहा गया है कि मुश्किल दूर होने के लिये एक बैठक में इस को इक्तालीस बार पढ़ो।

ख़्वासे सूरए अअ़्राफ़ :- तीन बार पढ़ कर ह़ाकिम के पास जाओ। ह़ाकिम मेहरबान हो जाएगा और रोज़ाना इस की तिलावत करने से हर आफ़त से मह़फ़ूज़ रहोगे।

ख़्वासे सूरए अन्फ़ाल :- जो बिला क़ुसूर क़ैद हो, सात बार इस सूरह को पढ़े ان شاء اللہ تعالٰی क़ैद से रिहाई हो जाएगी।

ख़्वासे सूरए तौबह :- ﴾1﴿ ग्यारह मरतबा पढ़ कर ह़ाकिम के सामने जाओ वोह नर्मी से पेश आएगा। ﴾2﴿ इस का नक़्श माल व अस्बाब में रखो बरकत होगी।

ख़्वासे सूरए यूनुस :- ﴾1﴿ इक्कीस बार पढ़ने से दुश्मन पर फ़त्ह़ होगी। ﴾2﴿ तेरह बार पढ़ने से मुसीबत दूर होती है।

ख़्वासे सूरए हूद :- दुश्मन पर फ़त्ह़ पाने के लिये इस को हिरन की झिल्ली पर लिख कर ता'वीज़ बना लो।

ख़्वासे सूरए यूसुफ़ :- ﴾1﴿ ह़िफ़्ज़े क़ुरआन की सहूलत के लिये पहले सूरए यूसुफ़ याद कर लो इस की बरकत से पूरा क़ुरआने मजीद ह़िफ़्ज़ करना आसान हो जाएगा।

﴾2﴿ जो शख़्स ओ़हदे से मा'ज़ूल हो गया हो वोह इस सूरह को तेरह बार पढ़े ओ़हदा बह़ाल हो जाएगा और ह़ाकिम मेहरबान होगा।

﴾3﴿ मुफ़्लिस आदमी इसे पढ़ कर दुआ़ मांगे ان شاء اللہ تعالٰی चन्द रोज़ में ग़नी हो जाएगा।

ख़्वासे सूरए रअ़्द :- जिस घर के कारोबार का फ़रोग़ और जिस बाग़ और खेत की पैदावार की तरक़्क़ी मन्ज़ूर हो उस के चारों कोनों पर इस सूरह की इब्तिदाई आयतें لقوم يتفكرون तक लिख कर दफ़्न कर दो लेकिन दफ़्न इस त़रह़ करो कि ता'वीज़ को हांडी में रख कर और हांडी के मुंह

को बन्द कर के दफ़्न करो ताकि बे अदबी न हो। अगर रोने वाले बच्चों पर उन्नीस बार पढ़ कर इस सूरह को दम कर दें तो बच्चे हंसने खेलने लगेंगे।

ख़वासे सूरए इब्राहीम :- जो शख़्स जादू के ज़ोर से नामर्द बना दिया गया हो वोह रोज़ाना तीन बार इस सूरह को पढ़े اِنْ شَاءَاللّٰہ تعالٰی जादू दफ़्अ़ हो जाएगा और नामर्दी दूर हो जाएगी।

ख़वासे सूरए ह़जर :- इस सूरह को लिख कर ता'वीज़ पहनने वाला लोगों की नज़रों में मह़बूब होगा। उस के कारोबार में तरक़्क़ी और रोज़ी में बरकत होगी।

ख़वासे सूरए नह़्ल :- अगर इस को लिख कर दुश्मन के मकान में दफ़्न कर दें तो घर वीरान हो जाएगा। खेत और बाग़ में दफ़्न कर दें तो सत्यानास हो जाएगा लेकिन येह उसी दुश्मन के लिये करना जाइज़ है जिस को तबाह करने के लिये शरीअ़त इजाज़त दे।

ख़वासे सूरए बनी इस्राईल :- अगर कोई लड़का कुन्द ज़ेह्न या तोतला हो तो इस सूरह को मुश्क व ज़ा'फ़रान से लिख कर घो लो और पिलाओ اِنْ شَاءَاللّٰہ تعالٰی ज़ेह्न खुल जाएगा और लड़का फ़सीह़ ज़बान वाला हो जाएगा।

ख़वासे सूरए कह्फ़ :- इस सूरह को हमेशा पढ़ने वाला बरस व जुज़ाम और बला, ख़ुसूसन दज्जाल के फ़ितनों से मह़फ़ूज़ रहेगा।

ख़वासे सूरए मरयम :- परेशान ह़ाल आदमी सात बार पढ़े तो ग़नी हो जाए। इस सूरह को लिख कर पीना तमाम आफ़तों से बचने का ता'वीज़ है। बाग़ और खेत में इस का पानी डाल दो तो पैदावार बढ़ जाएगी।

ख़वासे सूरए ताहा :- जिस लड़की का निकाह़ न होता हो वोह इक्कीस बार पढ़े ان شاءالله تعالٰی किसी सालेह़ मर्द से शादी हो जाएगी। इस को ब कषरत पढ़ने वाले की रोज़ी कुशादा हो जाती है और उस पर कोई जादू नहीं चल सकता।

ख़वासे सूरए अम्बिया :- जो शख़्स रोज़ाना इस को तीन मरतबा पढ़े उस का दिल नूरे ईमान से रोशन हो जाता है और उस का रंजो ग़म दूर हो जाएगा।

ख़वासे सूरए ह़ज्ज :- किश्ती और जहाज़ पर सुवार हो कर तीन बार पढ़ लो ان شاءالله تعالٰی सलामती के साथ किश्ती साहि़ल पर पहुंचेगी और इस की तिलावत से जान व माल मह़फ़ूज़ रहेगा।

ख़वासे सूरए मोअमिनून :- इस की तिलावत की बरकत से नमाज़ की काहिली दूर हो जाएगी। फ़िस्क़ो फुजूर से नफ़रत और शराब की आ़दत छूट जाएगी। इस का ता'वीज़ पहनना मुफ़्लिसी को दूर करता है।

ख़वासे सूरए नूर :- जिसे एह़तिलाम हो जाया करता है वोह तीन बार इस सूरह को पढ़ कर सोए। दुश्मनों की ज़बानबन्दी के लिये पांच बार पढ़ें। ज़िनाकार को तीन मरतबा पढ़ कर और पानी पर दम कर के पिला दो ان شاءالله تعالٰی उस की येह बुरी आ़दत छूट जाएगी।

ख़वास सूरए फुरक़ान :- इस की तिलावत से ज़ालिम के ज़ुल्म से पनाह रहेगी। इस के नक़्श का ता'वीज़ सांप बिच्छू से मह़फ़ूज़ रखता है।

ख़वास सूरए शुअ़रा :- अगर अवलादे आदम या मुलाज़िम नाफ़रमान हो और शरारत करते हों तो उन की इस्लाह़ की निय्यत से सात मरतबा इस सूरह को बा वुज़ू पढ़ कर दुआ़ मांगो ان شاءالله تعالٰی इस्लाह़ हो जाएगी।

ख़वास सूरए नम्ल :- इस को हिरन की झिल्ली में लिख कर सन्दूक़ में रख देने से सांप बिच्छू वग़ैरा से ह़िफ़ाज़त रहेगी।

ख़वासे सूरए क़सस :- बीमार को तीन रोज़ तक इस सूरह को पानी पर दम कर के पिलाएं اِنْ شَاءَاللّٰہ تَعَالٰی शिफ़ा होगी बिल ख़ुसूस जुज़ाम दूर करने के लिये बहुत मुफ़ीद है।

ख़वासे सूरए अन्कबूत :- ग़म दूर करने के लिये इस सूरह को सात बार पढ़ो।

ख़वासे सूरए रूम :- दुश्मनों पर फ़त्ह पाने के लिये इस सूरह को सात बार पढ़ों।

ख़वासे सूरए लुक़्मान :- इस को पढ़ने वाला कभी पानी में ग़र्क़ नहीं होगा और हर बीमारी से शिफ़ा पाएगा।

ख़वासे सूरए सजदह :- इस को सात मरतबा मरीज़ बिल ख़ुसूस जुज़ामी और दक़ वाले पर पढ़ कर दम करें اِنْ شَاءَاللّٰہ تَعَالٰی शिफ़ा होगी।

ख़वासे सूरए अह्ज़ाब :- जिस लड़की के निकाह़ का पैग़ाम न आता हो उस को इस सूरह का नक़्श पहना दो बहुत जल्द उस की शादी हो जाएगी।

ख़वासे सूरए सबा :- ज़ालिम के ज़ुल्म से नजात पाने के लिये इस को सात बार पढ़ो और मूज़ी जानवरों से बचने के लिये इस को लिख कर ता'वीज़ बनाओ और पहन लो।

ख़वासे सूरए फ़ातिर :- अगर इसे रोज़ाना बिलानाग़ा बा वुज़ू पढ़ा जाए तो रूह़ में बड़ी ताक़त और बुलन्द परवाज़ी आ जाएगी और ग़ैबी ने'मतों के मिलने का इन्तिज़ाम हो जाएगा।

ख़वास सूरए यासीन :- किसी मुर्दा पर इस को पढ़ा जाए तो उस को राह़त मिलती है। जो शख़्स हर जुमुआ़ को अपने वालिदैन या दोनों में से एक की ज़ियारत के लिये उन की क़ब्र पर जाए और सूरए यासीन पढ़े तो उन के इतने गुनाह बख़्श दिये जाएं जितने इस सूरह में हुरूफ़ हैं।

(الدرالمنثور،ج۷،ص۴۹،۴۰)

अ़ल्लामा ख़्वाजा अह़मद दैरबी ने "फ़त्हुल मलिकुल मजीद" में लिखा है कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से फ़रमाया कि सूरए यासीन पढ़ो इस में बीस बरकतें हैं :-

《1》 भूका आदमी इस को पढ़े तो आसूदा किया जाए 《2》 प्यासा पढ़े तो सैराब किया जाए 《3》 नंगा पढ़े तो लिबास मिले 《4》 मर्द बे औ़रत वाला पढ़े तो जल्द उस की शादी हो जाए 《5》 औ़रत बे शोहर वाली पढ़े तो जल्द शादी हो जाए 《6》 बीमार पढ़े तो शिफ़ा पाए 《7》 क़ैदी पढ़े तो रिहा हो जाए 《8》 मुसाफ़िर पढ़े तो सफ़र में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मदद हो 《9》 ग़मगीन पढ़े तो उस का रंजो ग़म दूर हो जाए 《10》 जिस की कोई चीज़ गुम हो गई हो वोह पढ़े तो जो खोया है वोह पा जाए। बाक़ी बरकतों का ज़िक्र नहीं किया है। सूरए यासीन की एक आयत سَلَامٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ○ को एक हज़ार चार सो उन्हत्तर (1469) बार पढ़ो اِنْ شَاءَ اللّٰهُ تَعَالٰى जिस मक़्सद से पढ़ोगे मुराद पूरी होगी ख़्वाजा दैरबी लिखते हैं कि येह मुजर्रब है और سَلَامٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ○ को पांच जगह एक काग़ज़ पर लिख कर ता'वीज़ बांधो तो ह़वादिषात और चोर वग़ैरा से ह़िफ़ाज़त रहेगी। जो शख़्स सुब्ह़ को सूरए यासीन पढ़ेगा उस का पूरा दिन अच्छा गुज़रेगा और जो शख़्स रात में इस को पढ़ेगा उस की पूरी रात अच्छी गुज़रेगी ह़दीष शरीफ़ में है कि यासीन क़ुरआन का दिल है।

(جامع الترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ما جاء فی فضل یٰسٓ، الحدیث ۲۸۹۶، ج ۴، ص ۴۰۶)

ख़वासे सूरए अस्साफ़्फ़ात :- जिस मकान में जिन्न रहते हों वहां इस सूरह को लिख कर सन्दूक़ में मुक़फ़्फ़ल कर दें اِنْ شَآءَ اللّٰه जिन्न कोई ज़रर न पहुंचा सकेंगे।

ख़वासे सूरए ص :- नज़्रे बद को दफ़्अ़ करने के लिये सात बार इस सूरह को पढ़ कर दम करें।

ख़वासे सूरए ज़ुमर :- इस को रोज़ाना सात बार पढ़ने से इ़ज़्ज़त और दौलत ग़ैब से मिलती है।

ख़वासे सूरए मुअमिन :- जिसे फोड़े निकलते हों वोह रोज़ाना इस सूरह को एक बार पढ़ लिया करे और अगर इस सूरह को लिख कर दुकान में आवेज़ां करें तो ख़रीदार ब कषरत आएं।

ख़वास सूरए حٰمٓ अस्सजदह :- जिस की आंखों में कोई आ़रिज़ा हो वोह इस सूरए पाक को लिख कर पाक साफ़ पानी में धोए और आंखों में लगाए या उसी पानी में सुरमा घिस कर आंखों में लगाए ان شاء اللہ تعالٰی शिफ़ा होगी।

ख़वासे सूरए शूरा :- जो शख़्स इस सूरह को रोज़ाना एक बार पढ़ता रहेगा वोह दुश्मनों पर ग़ालिब रहेगा।

ख़वासे सूरए ज़ुख़रुफ़ :- इस को सात बार रोज़ाना पढ़ने से तमाम ह़ाजतें पूरी होती हैं और इस का ता'वीज़ तमाम अमराज़ के लिये शिफ़ा है।

ख़वासे सूरए दुख़ान :- कोई मुश्किल दरपेश हो तो इस को सात बार पढ़ें अव्वल व आख़िर ग्यारह ग्यारह बार दुरूद शरीफ़ भी पढ़ लें।

ख़वासे सूरए जाषियह :- जो शख़्स जां कनी के आ़लम में हो उस पर इस सूरह को पढ़ कर दम करो ان شاء اللہ تعالٰی सकरात की सख़्ती से नजात पा जाएगा और ख़ातिमा बिल ख़ैर होगा।

ख़वासे सूरए अह़क़ाफ़ :- इस का दम किया हुवा पानी आसेब वाले के लिये बहुत फ़ाइदे मन्द है।

ख़वास सूरए मुह़म्मद :- इस को आबे ज़म ज़म में मुश्क व ज़ा'फ़रान ह़ल कर के लिखो और पियो! इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत मिलेगी और त़रह़ त़रह़ की बीमारियों से शिफ़ा ह़ासिल होगी।

ख़वासे सूरए फ़त्ह़ :- दुश्मनों पर फ़त्ह़ पाने के लिये इस को इक्कीस मरतबा पढ़ो अगर रमज़ान का चांद देख कर इस के सामने पढ़ा जाए तो ان شاء اللہ تعالٰی साल भर अम्न रहेगा।

ख़वासे सूरए हुजुरात :- महब्बते रसूल صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسلَّم और ईमान की सलामती और घर में ख़ैरो बरकत के लिये इस को इक्तालीस बार पढ़ कर दुआ मांगो और पानी पर दम कर के पी लो।

ख़वासे सूरए ق :- बाग़ में फलों की कषरत और खेतों में पैदावार बढ़ाने के लिये इस सूरह को इक्कीस मरतबा पढ़ कर और पानी पर दम कर के दरख़्तों और खेतों पर छिड़क दें। बे शुमार ख़ैरो बरकत اِن شاءاللہ تعالٰی होगी।

ख़वासे सूरए ज़ारियात :- इस को सत्तर बार पढ़ने से आदमी ग़नी हो जाता है और क़हत़ दफ़्अ़ हो जाता है।

ख़वासे सूरए त़ूर :- अगर जुज़ामी इस को पढ़े शिफ़ायाब हो अगर मुसाफ़िर पढ़े सफ़र में बलाओं और आफ़तों से मह़फ़ूज़ रहे।

ख़वासे सूरए नज्म :- इसे इक्कीस बार पढ़ने से ह़ाजत बर आती है और इस का पढ़ने वाला दुश्मनों पर फ़त्ह़ पाता है।

ख़वासे सूरए क़मर :- शबे जुमुआ़ में इस को पढ़ने से दुश्मनों पर फ़त्ह़ मिलती है और मुरादें पूरी होती हैं।

ख़वासे सूरए अर्रह़मान :- इसे ग्यारह बार पढ़ने से तमाम मक़ासिद पूरे होते हैं। इस को लिख कर और धो कर तुह़ाल के मरीज़ को पिलाना बहुत मुफ़ीद है।

ख़वासे सूरए वाक़िअ़ह :- मिश्कात जि. 1 स. 189 में ह़दीष है कि जो शख़्स रोज़ाना सूरए वाक़िआ़ पढ़ेगा उस को कभी फ़ाक़ा न होगा।

(مشکوۃ المصابیح، کتاب فضائل القرآن، الفصل الثالث، رقم۲۱۸۱، ج۱، ص۵۹۷)

हज़रते ख़्वाजा कलीमुल्लाह साहिब رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं कि अदाए क़र्ज़ और फ़ाक़ा दूर करने के लिये इस को बा'दे मग़रिब पढ़ो। (مرقع کلیمی ص ۱۳)

बा'ज़ बुज़ुर्गों का इरशाद है कि मग़रिब के बा'द बिला कुछ बात किये सूरए वाक़िआ़ पढ़ कर येह दुआ़ पढ़ो।

اَللّٰھُمَّ یَا مُسَبِّبَ الْاَسْبَابِ وَیَامُفَتِّحَ الْاَبْوَابِ وَیَاسَرِیْعَ الْحِسَابِ یَسِّرْ لَنَا الْحِسَابَ O اَللّٰھُمَّ اِنْ کَانَ رِزْقِیْ فِی السَّمَآءِ فَاَنْزِلْہُ وَاِنْ کَانَ فِی الْاَرْضِ فَاَخْرِجْہُ وَاِنْ کَانَ بَعِیْدًا فَقَرِّبْہُ اِلَیَّ وَاِنْ کَانَ قَرِیْبًا فَیَسِّرْہُ وَاِنْ کَانَ قَلِیْلًا فَکَثِّرْہُ وَاِنْ کَانَ کَثِیْرًا فَخَلِّدْہُ وَطَیِّبْہُ وَاِنْ کَانَ طَیِّبًا فَبَارِکْ لِیْ فِیْہِ اِنَّکَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ O

ان شاء اللہ تعالٰی कभी फ़ाक़ा न होगा

ख़वासे सूरए ह़दीद :- बीमार आदमी या दुश्मन से परेशान आदमी इस को लिख कर अपने पास रखे तो ان شاء اللہ تعالٰی बीमारी और परेशानी दूर हो जाएगी और बा'ज़ बुज़ुर्गों का क़ौल है कि जो शख़्स इस सूरह को लिख कर अपने पास रखेगा तलवार वग़ैरा के ह़म्लों से महफ़ूज़ रहेगा।

ख़वासे सूरए मुजा-दलह :- दो शख़्सों या जमाअ़तों की बाहम जंग व जिदाल ख़त्म कराने के लिये इस का पढ़ना मुफ़ीद है।

ख़वासे सूरए ह़श्र :- अगर ह़ाजत बरारी के लिये चार रक्अ़त नमाज़ पढ़ी जाए और हर रक्अ़त में सूरए ह़श्र एक बार पढ़ी जाए तो ان شاء اللہ تعالٰی ह़ाजत पूरी होगी। चीनी की तख़्ती पर इस को लिख कर पीना निसयान का इलाज है। इस सूरह की आख़िरी तीन आयतें बहुत अहम हैं ह़दीष में है कि इन आयतों में "इस्मे आ'ज़म" है।

ख़्वासे सूरए मुम-तहि़नह :- जिस लड़की की शादी न होती हो उस के लिये सूरए मुमतहि़नह पांच मरतबा पढ़ी जाए اِنْ شَاءَاللہ تَعَالٰی उस का निकाह़ किसी नेक मर्द से हो जाएगा।

ख़्वासे सूरए सफ़ :- जो लड़का मां बाप का नाफ़रमान हो उस पर तीन बार सूरए सफ़ पढ़ कर दम कर दो اِنْ شَاءَاللہ تَعَالٰی फ़रमां बरदार हो जाएगा। मुसाफ़िर इस को पढ़े तो अम्नो अमान से रहेगा, रोज़ी में ख़ैरो बरकत होगी।

ख़्वासे सूरए जुमुअ़ह:- मिया बीवीं में अगर मुख़ालफ़त हो जाए तो जुमुआ़ के दिन इस सूरह को तीन बार पढ़ कर और पानी पर दम कर के दोनों को पिला दो, दोनों में اِنْ شَاءَاللہ تَعَالٰی मुवाफ़क़त हो जाएगी।

ख़्वासे सूरए मुनाफ़िक़ून :- चुग़ल ख़ोरों के शर से बचने के लिये इसे रोज़ाना पढ़ो और अगर आंख में दर्द हो तो इस को पढ़ कर दम करो।

ख़्वासे सूरए त़लाक़ :- रंजो ग़म दूर करने के लिये और हर बीमारी से शिफ़ा के लिये इस की तिलावत बहुत मुफ़ीद है।

ख़्वासे सूरए तह़रीम :- अदाए क़र्ज़ और ह़ुसूले ग़ना के लिये इक्कीस बार पढ़ो।

ख़्वासे सूरए मुल्क :- ह़दीष शरीफ़ में है कि जो शख़्स हर रात में इसे पढ़ेगा वोह अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ रहेगा।

(السنن الکبری للنسائی، کتاب عمل الیوم و اللیلۃ،الفضل فی قراءۃ تبارک الذی،رقم۱۰۵۴۷،ج۶،ص۱۷۹)

ख़्वासे सूरए नून :- नमाज़ में इस सूरह को पढ़ने से फ़क़्रो फ़ाक़ा दूर हो जाता है और सत्तर बार पढ़ने से चुग़ल ख़ोरों से हि़फ़ाज़त हो जाती है।

ख़्वासे सूरए अल ह़ाक़्क़ह :- ﴾1﴿ पानी पर दम कर के आसेब ज़दा को पिलाओ ﴾2﴿ जो बच्चा ज़ियादा रोता हो उस को भी पिलाओ।

﴾3﴿ जब बच्चा पैदा हो तो नहलाने के बा'द इस का पढ़ा हुवा पानी बच्चे के मुंह पर मल दो तो बच्चा ان شاء اللہ تعالٰی बहुत ज़हीन होगा।

ख़वासे सूरए मआ़रिज :- एह्तिलाम को रोकने के लिये सोने से पहले आठ बार पढ़ना मुफ़ीद है।

ख़वासे सूरए नूह़ :- इस की तिलावत दुश्मनों पर ग़ालिब आने के लिये बहुत मुफ़ीद है।

ख़वासे सूरए जिन्न :- इस की तिलावत से आसेब और जिन्नों का शर दूर हो जाता है।

ख़वासे सूरए मुज़्ज़म्मिल :- इस को ग्यारह बार पढ़ने से हर मुश्किल आसान हो जाती है।

ख़वास सूरए मुद्दष्षिर :- इस को पढ़ कर ह़िफ़्ज़े कुरआने मजीद की दुआ़ मांगो ان شاء اللہ تعالٰی कुरआने मजीद का याद करना आसान हो जाएगा।

ख़वास सूरए क़ियामह :- इस को पढ़ कर पानी पर दम कर के पीने से क़ल्ब में नर्मी और रिक्क़त पैदा हो जाती है और रोज़ाना पढ़ने से मक्बूलिय्यत ह़ासिल होती है।

ख़वास सूरए दहर :- इस को ब कषरत पढ़ने से इल्मो ह़िक्मत की बातें ज़बान पर जारी हो जाती हैं और पछत्तर बार पढ़ने से रोज़ी में बरकत होती है।

ख़वास सूरए मुरसलात :- इस को पढ़ कर दम करने से हर मरज़ ख़ास कर फोड़ा अच्छा हो जाता है।

ख़वास सूरए अन्नबा :- इस को पढ़ने से ज़ो'फ़ बसर की शिकायत दूर हो जाती है पानी पर दम कर के आंखों में लगाना भी मुफ़ीद है। हज़रते ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया علیہ رحمۃ ने फ़रमाया है कि जो शख़्स अ़स्र के बा'द इस सूरह को पांच मरतबा पढ़ेगा वोह असीरे इश्क़े इलाही عزّوجلّ हो जाएगा। (فوائد الفوائد مع ھشت بہشت، ج۳، ص ۱۰۱)

ख़वासे सूरए वन्नाज़िआ़त :- जो शख़्स रोज़ाना इस को पढ़े उस को जां कनी की तक्लीफ़ नहीं होगी।

ख़वासे सूरए अ़बस :- इस की तिलावत नज़र की कमज़ोरी और तोन्धे के लिये मुफ़ीद है।

ख़वासे सूरए तक्वीर :- पढ़ कर आंखों पर दम करने से आशूबे चश्म और जाला वग़ैरा दूर हो जाता है और अगर इस सूरह को ज़ा'फ़रान से लिख कर सात रोज़ तक नामर्द को पिलाया जाए तो उम्मीद है कि इन्क़िलाबे ह़ाल शुरूअ़ हो जाएगा।

ख़वासे सूरए इनफ़ित़ार :- इस की तिलावत की बरकत से क़ैदी जल्द छूट जाता है।

ख़वासे सूरए अल मुत़फ़्फ़िफ़ीन :- जिस चीज़ पर पढ़ दोगे ان شاء الله تعالیٰ वोह दीमक से मह़फ़ूज़ रहेगी और अगर लिख कर बांझ औ़रत के गले में ता'वीज़ पहना दो तो ان شاء الله تعالیٰ वोह साह़िबे अवलाद हो जाएगी।

ख़वासे सूरए इनशिक़ाक़ :- जिस बच्चे का दूध छुड़ाना मन्ज़ूर हो उसे इस सूरह का ता'वीज़ पहना दो नीज़ दर्दे ज़ेह की तक्लीफ़ में गुड़ और पानी पर दम कर के पिलाने से बहुत जल्द पैदाइश हो जाती है।

ख़वासे सूरए बुरूज :- अ़स्र के बा'द तिलावत करने से फोड़ा फुन्सी से नजात मिल जाती है।

ख़वास सूरए त़ारिक़ :- अगर कान में गूंज या दर्द पैदा हो जाए तो इस को पढ़ कर दम करने से ان شاء الله تعالیٰ आराम हो जाएगा और बवासीर का मरीज़ पढ़ता रहे तो ان شاء الله تعالیٰ जल्द शिफ़ा पाएगा।

ख़वास सूरए अअ़्ला :- अगर मुसाफ़िर पढ़ता रहे सफ़र की तमाम आफ़तों से मह़फ़ूज़ रहेगा।

ख़वासे सूरए ग़ाशियह :– इस को पढ़ कर दम करने से मरीज़ को शिफ़ा मिलती है।

ख़वासे सूरए फ़ज्र :– आधी रात को पढ़ कर अगर बीवी से सोह़बत करें तो नेक बख़्त अवलाद पैदा होगी।

ख़वासे सूरए बलद :– इस को पढ़ने से अम्न व आ़फ़िय्यत और लोगों की मह़ब्बत मिलेगी।

ख़वासे सूरए वश्शम्स :– इस को पढ़ कर मिर्गी वाले के कान में फूंक मारना बहुत मुफ़ीद है। अगर बकरी के दूध पर दम कर के बद ज़बान आदमी को पिलाओ اِنْ شَاءَ اللہ تَعَالٰی बद ज़बानी जाती रहेगी।

ख़वासे सूरए वल्लैल :– बच्चे की विलादत के वक़्त इस को ता'वीज़ बना कर बच्चे को पहना दो बच्चा हर क़िस्म के कीड़े मकोड़ों से मह़फ़ूज़ रहेगा। जाड़ा बुख़ार वाले को इस का ता'वीज़ नफ़्अ़ बख़्श है।

ख़वासे सूरए वद्दुह़ा :– इस को 35 मरतबा पढ़ कर दुआ़ मांगें तो اِنْ شَاءَ اللہ تَعَالٰی भागा हुवा आदमी वापस आ जाएगा।

ख़वासे सूरए अलम नशरह़ :– जिस माल पर ख़रीदने के बा'द तीन मरतबा इसे पढ़ दिया जाए उस में اِنْ شَاءَ اللہ تَعَالٰی ख़ूब बरकत होगी।

ख़वासे सूरए वत्तीन :– इस को रोज़ाना तीन मरतबा जो पढ़ेगा उस के अख़्लाक़ व किरदार निहायत बेहतरीन हो जाएंगे अगर ह़ामिला औ़रत को इब्तिदाए ह़म्ल से रोज़ाना येह सूरए पाक धो धो कर पिलाते रहें तो اِنْ شَاءَ اللہ تَعَالٰی लड़का ह़सीनो जमील पैदा हो जाएगा, सफ़ेद चीनी की त़श्तरी पर ज़ा'फ़रान से लिख कर पिलाएं।

ख़वासे सूरए अ़लक़ :– (गंठिया और जोड़ों के दर्द का इलाज) तरकीब येह है कि नमाज़े फ़ज्र से पहले सात मरतबा इस सूरह को पढ़ कर तिलावत का एक सजदा करें और सजदे में حَسْبِیَ اللہُ وَنِعْمَ الْوَکِیْلُ ○ نِعْمَ الْمَوْلٰی وَنِعْمَ النَّصِیْرُ सात मरतबा पढ़ें।

ख़वासे सूरए क़द्र :- जो शख़्स रोज़ाना इस को सुब्हो शाम तीन तीन बार पढ़ेगा **अल्लाह** तआ़ला उस की इ़ज़्ज़त बढ़ा देगा।

ख़वासे सूरए बय्यिनह :- येह बरस और यरक़ान का इलाज है तरकीब येह है कि इस सूरह को ब कषरत पढ़ा करें और इस का नक्श पानी में घोल कर पिलाएं ان شاء الله تعالٰی सिह़ह़त हो जाएगी।

ख़वासे सूरए ज़िलज़ाल :- येह सूरह चौथाई क़ुरआन के बराबर है इस को सत्तर मरतबा पढ़ने से मुश्किल दूर हो जाती है और इस के पढ़ने से आसेब दूर हो जाता है।

ख़वासे सूरए वल आ़दियात :- जिस आदमी या जानवर को नज़र लगी हो उस पर सात मरतबा इस सूरह को पढ़ कर दम करो नज़र दफ़्अ़ हो जाएगी। दर्दे जिगर वाले को येह लिख कर धो कर तीन दिन तक पिलाएं।

ख़वासे सूरए अल क़ारिअ़ह :- इस सूरह को एक सो एक बार पढ़ देने से नज़र दफ़्अ़ हो जाती है मकान में लिख कर लगाने से बलाओं से अमान और ह़िफ़ाज़त रहती है।

ख़वासे सूरए तकाषुर :- येह हज़ार आयतों के बराबर है। इस को तीन सो बार पढ़ने से क़र्ज़ बहुत जल्द ان شاء الله تعالٰی अदा हो जाएगा। अगर किसी मुर्दे से मुलाक़ात करनी हो तो इस सूरह को शबे जुमुआ़ में एक सो तेरह मरतबा पढ़ कर सो जाओ।

ख़वासे सूरए वल अ़स्र :- इस को पढ़ने से ग़म दूर हो जाता है। मुसीबत ज़दा पर सात मरतबा इस सूरह को पढ़ कर दम कर दो।

ख़वासे सूरए अल हु-मज़ह :- दुश्मन के शर से ह़िफ़ाज़त के लिये रोज़ाना ग्यारह मरतबा पढ़ो।

ख़वासे सूरए फ़ील :- दुश्मन के शर से ह़िफ़ाज़त के लिये इस सूरह को एक सो बार पढ़ कर दुआ़ मांगो।

ख़्वासे सूरए कुरैश :- जान की हिफ़ाज़त और फ़ाक़े से अम्न के लिये रोज़ाना इस सूरह को सत्ताईस मरतबा पढ़ना मुजर्रब है।

ख़्वासे सूरए अल माऊ़न :- बड़ी मुश्किल पेश आ जाए तो इस सूरह को हज़ार बार पढ़ना बहुत मुफ़ीद है।

ख़्वासे सूरए अल कौषर :- ला वलद साहिबे अवलाद हो जाए इस के लिये इस सूरह को रोज़ाना पांच सो मरतबा पढ़े। तीन माह तक पढ़ने के बा'द ان شاء اللہ تعالٰی ह़म्ल क़रार पा जाएगा और आदमी साहिबे अवलाद हो जाएगा।

ख़्वासे सूरए काफ़िरून :- येह चौथाई कुरआन के बराबर है। जो ज़रूरत मन्द इतवार के दिन तुलूए आफ़्ताब के वक़्त दस बार इस सूरह को पढ़े उस का काम बन जाएगा।

ख़्वासे सूरए अल लहब :- दुश्मनों की मग़लूबिय्यत के लिये इस को ब कषरत पढ़ना मुफ़ीद है।

ख़्वासे सूरए इख़्लास :- येह सूरए पाक तिहाई कुरआन के बराबर है। जो बीमार अपनी बीमारी के ज़माने में इस को पढ़ता रहे अगर वोह इसी बिमारी में मर गया तो ह़दीष का बयान है कि वोह क़ब्र के दबोचने और क़ब्र की तंगी के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहेगा और क़ियामत के दिन फ़िरिश्ते उस को चारों त़रफ़ से घेरे में ले कर और अपने बाज़ूओं पर बिठा कर पुल सिरात़ पार करा देंगे और जन्नत में पहुंचा देंगे।

जो शख़्स इस सूरह को सुब्ह़ो शाम तीन तीन मरतबा नीचे लिखी हुई दुआ़ की सूरत में पढ़ेगा ان شاء اللہ تعالٰی उस की हर दुआ़ पूरी होगी, पढ़ने की तरकीब येह है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ O اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ O وَالصَّلٰوةُ

وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ O قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ O لَیْسَ كَمِثْلِهٖ

اَحَدٌO لَا تُسَلِّطْ عَلٰی اَحَدٍO وَلَا تُحَوِّجْنِیْ اِلٰی اَحَدٍO وَاَغْنِنِیْ یَارَبِّ عَنْ كُلِّ

اَحَدٍO بِفَضْلِ قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌO اَللّٰهُ الصَّمَدُO لَمْ یَلِدْ وَلَمْ یُوْلَدْOوَلَمْ یَكُنْ لَّهٗ

كُفُوًا اَحَدٌO اِلٰهِیْ یَامَنْ هُوَ قَدِیْمٌ دَائِمٌ یَا حَیُّ یَاقَیُّوْمُ یَا اَوَّلُ یَا آخِرُ اِقْضِ حَاجَتِیْ یَا

فَرْدُ یَافَرْدُ یَا صَمَدُ وَ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّآلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلَّمْ۔

ख़्वास सूरए अल फ़लक़ वन्नास :- सह़ीह़ मुस्लिम में ह़दीष है कि (अम्नो पनाह के बाब में) सूरए फ़लक़ और सूरए नास जैसी कोई सूरह न देखोगे।

(صحیح مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین،باب فضائل القران مایتعلق به،رقم۸۱٤،ص٤٠٦)

इन दोनों सूरतों में जिन्न व शैत़ान और ह़ासिदों के शर से मह़फ़ूज़ रहने की बे नज़ीर ताषीर है। इन को अ़मल में लाने की चन्द सूरतें दर्जे ज़ेल हैं।

(1) मसह़ूर पर सो मरतबा इन दोनों सूरतों को पढ़ कर दम करने से ان شاء اللہ تعالٰی सह़र का अषर ज़ाइल हो जाएगा और अगर पानी पर इतनी ही बार पढ़ कर दम कर दिया जाए और पिलाया जाए जब भी जादू टूट जाएगा।

(2) अगर ग्यारह ग्यारह मरतबा भी पढ़े जब भी फ़ाइदा होगा कई रोज़ तक ऐसा करना होगा।

(3) जिन बच्चों को इन दोनों सूरतों का ता'वीज़ पहना दिया जाए वोह जिन्न व शैत़ान और तमाम ज़हरीले जानवरों से मह़फ़ूज़ रहेंगे।

(फ़ुयूज़े क़ुरआनी)

दूसरे मुख़्तलिफ़ अ़मलियात

दिमाग़ की कमज़ोरी :- पांचों नमाज़ों के बा'द सर पर दाहिना हाथ रख कर ग्यारह मरतबा یَا قَوِیُّ पढ़ो।

नज़र का कमज़ोर होना :- पांचों नमाज़ो के बा'द ग्यारह मरतबा يَا نُوْرُ पढ़ कर दोनों हाथों के पोरों पर दम कर के आंखों पर फैर लें।

ज़बान में लुकनत :- फ़ज्र की नमाज़ पढ़ कर एक पाक कंकरी मुंह में रख कर येह आयत इक्कीस मरतबा पढ़ें

رَبِّ اشْرَحْ لِیْ صَدْرِیْ وَیَسِّرْ لِیْ اَمْرِیْ وَ احْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِیْ یَفْقَهُوْا قَوْلِیْ.(پ١٦،طٰهٰ:٢٥-٢٧)

इख़्तिलाजे क़ल्ब :- येह आयत बिस्मिल्लाह समेत लिख कर गले में बांधें डोरा इतना लम्बा रहे कि ता'वीज़ दिल पर पड़ा रहे :

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِکْرِ اللهِ اَلَا بِذِکْرِ اللهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ (پ١٣،الرعد:٢٨)

दर्दे शिकम :- येह आयत पानी वग़ैरा पर तीन बार पढ़ कर पिला दें या लिख कर पेट पर बांध दें : لَا فِیْهَا غَوْلٌ وَّلَا هُمْ عَنْهَا یُنْزَفُوْنَ O (پ٢٣،الصّٰفّٰت:٤٧)

तिल्ली बढ़ जाना :- इस आयत को लिख कर तिल्ली की जगह बांधें

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ O ذٰلِکَ تَخْفِیْفٌ مِّنْ رَّبِّکُمْ وَرَحْمَةٌ O (پ٢،البقرة:١٧٨)

नाफ़ टल जाना :- इस आयत को लिख कर नाफ़ की जगह बांधें

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ O اِنَّ اللهَ یُمْسِکُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا وَلَئِنْ زَالَتَا اِنْ اَمْسَکَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْ بَعْدِهٖ اِنَّهٗ کَانَ حَلِیْمًا غَفُوْرًا O (پ٢٢،فاطر:٤١)

बुख़ार :- अगर बिग़ैर जाड़े के हो तो येह आयत लिख कर गले में बांधें और इसी को पढ़ कर दम करें

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ O قُلْنَا یٰنَارُ کُوْنِیْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓی اِبْرٰهِیْمَ O (پ١٧،الانبیاء:٦٩)

और अगर बुख़ार जाड़े के साथ हो तो येह आयत लिख कर गले में बांधें

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ O بِسْمِ اللهِ مَجْرٖهَا وَمُرْسٰهَا اِنَّ رَبِّیْ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ O (پ١٢،هود:٤١)

फोड़ा-फुन्सी :- पाक साफ़ ढेला पीस कर उस पर येह दुआ तीन मरतबा पढ़ कर थूके और उस मिट्टी पर थोड़ा पानी छिड़क कर वोह मिट्टी तक्लीफ़ की जगह पर दिन में दो चार बार मल लिया करे चाहे फोड़े पर येह मिट्टी लगा कर पट्टी बांध दे।

घर में से सांप भगाना :- लोहे की चार किलें ले कर एक एक कील पर पच्चीस पच्चीस मरतबा येह आयत दम कर के मकान के चारों कोनों पर ज़मीन में गाड़ दें اِنْ شَاءَ اللہ تعالٰی सांप उस घर में नहीं रहेगा और आसेब भी चला जाएगा आयत येह है

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا○وَّاَكِيْدُ كَيْدًا ○ فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ○ (پ ۳۰، الطارق:۱۵۔۱۷)

बावले कुत्ते का काट लेना :- ऊपर ज़िक्र की हुई आयत को रोटी या बिस्किट के चालीस टुटड़ों पर लिख कर एक टूकड़ा रोज़ उस शख़्स को खिला दें اِنْ شَاءَ اللہ تعالٰی उस शख़्स को बावलापन और हड़क न होगी।

बांझपन :- चालीस लौंगें ले कर हर एक पर सात सात बार इस आयत को पढ़े और जिस दिन औ़रत हैज़ से पाक हो कर ग़ुस्ल करे उस दिन से एक लौंग रोज़ मर्रा सोते वक़्त खाना शुरूअ़ करे और इस पर पानी न पीवे और इस दरमियान में ज़रूर शोहर के साथ सोए اِنْ شَاءَ اللہ تعالٰی ज़रूर अवलाद होगी।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ط اِذَاۤ اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ○ (پ ۱۸، النور: ۴۰)

ह़म्ल गिर जाना :- इस आयत का ता'वीज़ बना कर कमर में बांधे और ता'वीज़ नाफ़ के नीचे पेडू पर रहे ان شاء اللہ تعالٰی ह़म्ल गिरने से मह़फ़ूज़ रहेगा।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○ وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَاتَكُ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ○ اِنَّ اللهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ○ (پ۱۴، النحل:۱۲۷،۱۲۸)

पैदाइश का दर्द :- येह आयत एक पर्चे पर लिख कर कपड़े में लपेट कर औ़रत की बाईं रान में बांधें या सात मरतबा गुड़ पर पढ़ कर खिलाए बच्चा आसानी के साथ पैदा होगा वोह आयत येह है :

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○ اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ○ وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ○ وَاِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ ○ وَاَلْقَتْ مَافِيْهَا وَتَخَلَّتْ○ (پ۳۰، الانشقاق:۱ـ۴)

बच्चा ज़िन्दा न रहना :- अजवाइन और काली मिर्च आध आध पाव ले कर पीर के दिन सूरज ढलने के बा'द चालीस बार सूरए वश्शम्स इस त़रह़ पढ़े कि हर दफ़्अ़ के साथ दुरूद शरीफ़ भी पढ़े और हर मरतबा अजवाइन और काली मिर्च पर दम कर के और शुरूअ़ ह़म्ल से दूध छुड़ाने तक रोज़ाना थोड़ी थोड़ी अजवाइन और काली मिर्च खा लिया करे ان شاء اللہ تعالٰی अवलाद जिन्दा रहेगी।

बच्चे को नज़र लगना या रोना या सोते में डर कर चौंकना

قل اعوذ برب الفلق○ और قل اعوذ برب الناس○ को بِسْمِ اللهِ समेत तीन तीन बार पढ़ कर बच्चे पर दम करे और येह ता'वीज़ लिख कर बच्चे के गले में पहनाए بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○ اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ كُلِّهَا مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ○ اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْطَانٍ وَّهَامَّةٍ ○وَمِنْ شَرِّ كُلِّ عَيْنٍ

لَّامَّةٍOاَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّات مِنْ غَضَبِهٖ وَعِقَابِهٖ وَمِنْ شَرِّ عِبَادِهٖ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِيْنِ وَ اَنْ يَّحْضُرُوْنَ Oوَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّ آلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَO

हैज़ा और वबाई अमराज़ में :– इन दोनों में हर खाने पीने की चीज़ पर सूरए इन्ना अन्ज़लना पढ़ कर दम कर लिया करें ان شاء اللہ تعالٰی हिफ़ाज़त रहेगी और जिस को मरज़ हो जाए उस को भी किसी चीज़ पर दम कर के खिलाए पिलाएं ان شاء اللہ تعالٰی शिफ़ा हासिल होगी।

चेचक का गन्डा :– नीला सात रंग का गन्डा ले कर उसी पर सूरए अर्रह़मान पढ़ें और हर فَبِاَيِّ الَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِO पर फूंक मार कर एक गिरह लगा दें फिर येह गन्डा बच्चे के गले में डाल दें। चेचक से हिफ़ाज़त रहेगी और अगर चेचक निकलने के बा'द डालें तो ان شاء اللہ تعالٰی चेचक की ज़ियादा तक्लीफ़ न रहेगी ।

दूध कम होना :– येह दोनों आयतें नमक पर सात बार पढ़ कर उडद की दाल में खिलाएं और बिस्मिल्लाह समेत दोनों आयतों को पढ़ें, **पहली आयत**

وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ط(پ۲، البقرۃ:۲۳۳)

और दूसरी आयत

وَاِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَO(پ۱۴، النحل:۶۶)

जादू टोना के लिये :– येह आयत लिख कर मरीज़ के गले में पहनाएं और पानी पढ़ कर पानी पिलाएं और इसी पढ़े हुए पानी से मरीज़ को किसी बड़ी लगन या टब में बिठा कर नहलाएं और पानी किसी जगह डाल दें

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ فَلَمَّآ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ط

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَOوَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَO (پ۱۱، یونس:۸۱،۸۲)

और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ पूरी पूरी सूरह एक एक मरतबा।

अय्यामे माहवारी की कमी :- अगर अय्यामे माहवारी में कमी हो और इस से तक्लीफ़ हो तो इन आयात को लिख कर गले में डालें और डोरा इतना बड़ा हो कि ता'वीज़ नाफ़ के नीचे पड़ा रहे

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ وَجَعَلۡنَا فِیۡهَا جَنّٰتٍ مِّنۡ نَّخِیۡلٍ وَّاَعۡنَابٍ وَّفَجَّرۡنَا فِیۡهَا مِنَ الۡعُیُوۡنِ ۝ لِیَاۡکُلُوۡا مِنۡ ثَمَرِهٖ ۙ وَمَا عَمِلَتۡهُ اَیۡدِیۡهِمۡ ؕ اَفَلَا یَشۡکُرُوۡنَ ۝ (پ۲۳، یٰسٓ:۳۴،۳۵) اَوَلَمۡ یَرَ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡۤا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ کَانَتَا رَتۡقًا فَفَتَقۡنٰهُمَا ؕ وَجَعَلۡنَا مِنَ الۡمَآءِ کُلَّ شَیۡءٍ حَیٍّ ؕ اَفَلَا یُؤۡمِنُوۡنَ ۝

(پ۱۷، الانبیاء:۳۰)

अय्यामे माहवारी की ज़ियादती :- अगर किसी औ़रत को अय्यामे माहवारी ज़ियादा आते हों और इस से तक्लीफ़ हो तो इन आयतों को लिख कर ता'वीज़ गले में डालें और डोरा इतना बड़ा हो कि ता'वीज़ नाफ़ के नीचे पड़ा हो

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۝ وَقِیۡلَ یٰۤاَرۡضُ ابۡلَعِیۡ مَآءَکِ وَیٰسَمَآءُ اَقۡلِعِیۡ وَغِیۡضَ الۡمَآءُ وَقُضِیَ الۡاَمۡرُ وَاسۡتَوَتۡ عَلَی الۡجُوۡدِیِّ وَقِیۡلَ بُعۡدًا لِّلۡقَوۡمِ الظّٰلِمِیۡنَ ۝ (پ۱۲، ھود:۴۴)

ग़ाइब को वापस बुलाना :- अगर किसी का लड़का या कोई भी कहीं चला गया और लापता हो गया तो उस को वापस बुलाने के लिये नीचे की आयतों को लिख कर इस ता'वीज़ को गले या नीले कपड़े में लपेट कर घर की अन्धेरी कोठरी में दो पथ्थरों के दरमियान इस त़रह़ रख दिया जाए कि इस पर किसी का पाऊं न पड़े पथ्थर न हो तो चक्की के दो पाटों के दरमियान इस को दबा देना चाहिये और लफ़्ज़ फुलां की जगह उस ला पता का नाम लिखें।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ O اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِیْ بَحْرٍ لُّجِّیٍّ یَّغْشٰهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ظُلُمٰتٌ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ؕ اِذَاۤ اَخْرَجَ یَدَهٗ لَمْ یَكَدْ یَرٰىهَا ؕ وَمَنْ لَّمْ یَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ O اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَیْكِ فَرَدَدْنٰهُ اِلٰۤى اُمِّهٖ كَیْ تَقَرَّ عَیْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ O یٰبُنَیَّ اِنَّهَاۤ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِیْ صَخْرَةٍ اَوْ فِی السَّمٰوٰتِ اَوْ فِی الْاَرْضِ یَاْتِ بِهَا اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِیْفٌ خَبِیْرٌ O حَتّٰۤى اِذَا ضَاقَتْ عَلَیْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَیْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْۤا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّاۤ اِلَیْهِ ؕ ثُمَّ تَابَ عَلَیْهِمْ لِیَتُوْبُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ O اَللّٰهُمَّ یَا هَادِیَ الضَّالِّ وَیَا رَادَّ الضَّآلَّةِ اُرْدُدْ عَلَیَّ ضَالَّتِیْ فُلَان

ग़रीबी दूर होने के लिये :- बा'द नमाज़े इशा अव्वल आख़िर ग्यारह ग्यारह मरतबा दुरूद शरीफ़ और दरमियान में ग्यारह मरतबा तस्बीह़ یَا مُعِزُّ की पढ़ कर दुआ़ मांगें और अगर चाहें तो येह दूसरा वज़ीफ़ा पढ़ लिया करें कि बा'द नमाज़े इशा आगे पीछे सात सात मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ कर बीच में चौदह तस्बीह़ और चौदह दाने یَا وَهَّابُ पढ़ कर दुआ़ करें اِنْ شَاءَ اللّٰهُ تَعَالٰی रोज़ी में फ़राख़ी और बरकत होगी।

बच्चों का ज़ियादा रोना :- येह ता'वीज़ लिख कर बच्चों के गले में पहनाएं। اَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِیْثِ تَعْجَبُوْنَ O وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ O وَلَبِثُوْا فِیْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِیْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا O

د	ط	ب
ج	ه	ز
ح	ا	و

दर्दे सर के लिये :- येह दुआ़ पढ़ कर बार बार सर पर दम करें और इसी को लिख कर सर में बांधें

بِسْمِ اللّٰہِ خَیْرِ الْاَسْمَآءِ بِسْمِ اللّٰہِ رَبِّ الْاَرْضِ وَالسَّمَآءِ بِسْمِ اللّٰہِ الَّذِیْ بِیَدِہٖ الشِّفَآءُ بِسْمِ اللّٰہِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِہٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِO

दर्दे सर (आधा सीसी) :- येह ता'वीज़ लिख कर सात तार कोरे सूत के धागे में बांध कर सर में बांधें और जिस त़रफ़ दर्द हो उधर ता'वीज़ रहे।

احمد	محمد
مصطفٰی	مرتضٰی

صلی اللہ تعالٰی علیہ وعلی راسہ الشریف والہ و صحبہ وبارک وسلمO

चन्द मुफ़ीद बातें

﴿1﴾ صَلَّی اللّٰہُ عَلَی النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ وَاٰلِہٖ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ صَلٰوۃً وَّ سَلَامًا عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِO इस दुरूद शरीफ़ को बा'द नमाज़े जुमुआ़ मदीनए मुनव्वरा की त़रफ़ रुख़ कर के और अदब के साथ हाथ बांध कर एक सो मरतबा पढ़ें तो दीनो दुन्या की बे शुमार ने'मतों से सरफ़राज़ होंगे।

﴿2﴾ मस्जिद में पहले दाहिना क़दम रख कर दाख़िल हों और येह दुआ़ पढें :-

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِکَO

(ابن ماجہ،کتاب المساجد...الخ،باب الدعاء...الخ، الحدیث ۷۷۲،ج۱،ص۴۲۶)

﴿3﴾ मस्जिद से निकलते वक़्त पहले बायां क़दम बाहर निकालो और येह दुआ़ पढ़ो :-

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ مِنْ فَضْلِکَO

(صحیح مسلم،کتاب صلوۃ المسافرین...الخ،باب ما یقول اذا...الخ،الحدیث۷۱۳،ص۳۶۰)

﴾4﴿ चांद देख कर येह दुआ़ पढ़ो

اَللّٰھُمَّ اَھِلَّہٗ عَلَیْنَا بِالْیُمْنِ وَالْاِیْمَانِ وَالسَّلَامَۃِ وَ الْاِسْلَامِ ط رَبِّیْ وَرَبُّکَ اللّٰہُ یَا ھِلَالُ O

(ترمذی، کتاب الدعوات، باب مایقول عند رؤیۃ الھلال، الحدیث ۳٤٦۲، ج ۵، ص ۲۸۱)

﴾5﴿ किश्ती और जहाज़ पर सुवार होते वक़्त येह दुआ़ पढें अम्नो अमान से सफ़र तमाम होगा।

بِسْمِ اللّٰہِ مَجْرٖھَا وَمُرْسٰھَا اِنَّ رَبِّیْ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ۔

(المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث ۱۲٦٦۱، ج ۱۲، ص ۹۷)

﴾6﴿ मोटर, ट्रेन, रिक्षा, हवाई जहाज़ वग़ैरा पर सुवार होते वक़्त येह दुआ़ पढ़ो सलामती से रहोगे

سُبْحٰنَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا ھٰذَا وَمَا کُنَّا لَہٗ مُقْرِنِیْنَ O

(سنن ابی داود، کتاب الجہاد، باب مایقول الرجل...الخ، الحدیث ۲٦۰۲، ج ۳، ص ۴۹)

﴾7﴿ जब सोने लगे तो येह दुआ़ पढ़ ले

اَللّٰھُمَّ بِاسْمِكَ اَمُوْتُ وَاَحْیَا O

(صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب مایقول اذا نام، الحدیث ٦۳۱۲، ج ٤، ص ۱۹۲)

﴾8﴿ जब सो कर उठे तो येह दुआ़ पढ़ ले

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَیْہِ النُّشُوْرُ O

(صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب مایقول اذا نام، الحدیث ٦۳۱۲، ج ٤، ص ۱۹۲)

﴾9﴿ जब कोई डरावना या बुरा ख़्वाब देखे और आंख खुल जाए तो तीन मरतबा पढ़े اعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم O फिर तीन मरतबा बाईं त़रफ़ थूके फिर अगर सोना चाहे तो करवट बदल कर सो जाए اِنْ شَاءَ اللہ تعالٰی बुरे ख़्वाब से कोई नुक़्सान नहीं पहुंचेगा।

(صحیح البخاری، کتاب التعبیر، باب اذا رأی ما یکرہ...الخ، الحدیث ۷۰٤٤، ج ٤، ص ٤۲۳)

﴾10﴿ जब आस्मान से कोई तारा टूटता हुवा नज़र आए तो निगाहे नीची कर ले और येह दुआ़ पढ़े :-

مَاشَآءَ اللّٰہُ لَاحَوْلَ وَ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہِ۔

(عمل الیوم و اللیلة،باب مایقول اذا انقض الکوکب ،الحدیث ٦٥٣،ص ١٩٨)

﴾11﴿ कोढ़ी, अन्धे, लंगड़े वग़ैरा मरीज़ या मुसीबत ज़दा को देखे तो येह दुआ़ पढ़ ले ان شاء اللہ تعالیٰ इस मरज़ और मुसीबत से मह़फ़ूज़ रहेगा मगर ज़ुकाम व आशूबे चश्म और ख़ारिश के मरीज़ों को देख कर येह दुआ़ न पढ़े क्यूंकि इन बीमारियों से बदन की इस्लाह़ होती है वोह दुआ़ येह है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهٖ وَفَضَّلَنِیْ عَلٰی كَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِیْلًا

(ترمذی، کتاب الدعوات،باب ما یقول اذا رأی مبتلی،الحدیث ٣٤٤٢،ج٥،ص ٢٧٢)

﴾12﴿ ज़हरीले जानवरों से ह़िफ़ाज़त के लिये येह दुआ़ सुब्ह़ो शाम को पढ़ लिया करो

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ○

इस दुआ़ को जो सुब्ह़ को पढ़ ले वोह दिन भर ज़हरीले जानवरों से मह़फ़ूज़ रहेगा और जो शाम को पढ़ ले वोह रात भर इन जानवरों से अम्नो अमान में रहेगा।

(صحیح مسلم، کتاب الذکر و الدعاء..الخ،باب فی التعوذمن...الخ،الحدیث ٢٧٠٩،ص ١٤٥٣)

﴾13﴿ **क़र्ज़ अदा होने की दुआ़**

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِیْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِیْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ۔

(سنن الترمذی،احادیث شتی،باب ١٢١،الحدیث ٣٥٧٤،ج٥،ص ٣٢٩)

हर नमाज़ के बा'द ग्यारह ग्यारह मरतबा सुब्ह़ो शाम सो सो बार रोज़ाना पढ़े और अव्वल व आख़िर तीन तीन बार दुरूद शरीफ़ भी पढ़ ले।

﴾14﴿ बाज़ार में दाख़िल हो तो येह कलिमात पढ़ ले لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِىْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَیٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ۔

(جامع الترمذی، کتاب الدعوات، باب مایقول اذا دخل السوق،الحدیث ٣٤٢٩،ج٥،ص ٢٧١)

﴾15﴿ जब नया लिबास पहने तो येह पढ़े

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ کَسَانِیْ مَا اُوَارِیْ بِهٖ عَوْرَتِیْ وَ اَتَجَمَّلُ بِهٖ فِیْ حَیَاتِیْ ۝

(جامع الترمذی، کتاب الدعوات، الحدیث ۳۵۷۱، ج۵، ص۳۲۷)

﴾16﴿ जब आईना देखे तो येह दुआ पढ़े

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اَللّٰهُمَّ کَمَا حَسَّنْتَ خَلْقِیْ فَحَسِّنْ خُلُقِیْ ۝

(کتاب الدعاء للطبرانی، باب القول عند النظر فی المرآۃ، الحدیث ۴۰۴، ص۱۴۵)

﴾17﴿ जब किसी को रुख़्सत करे तो येह दुआ पढ़े

اَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِیْنَكَ وَاَمَانَتَكَ وَ خَوَاتِیْمَ عَمَلِكَ ۝

(ابوداود، کتاب الجہاد، باب فی الدعاء عند الوداع، الحدیث ۲۶۰۰، ج۳، ص۴۸)

﴾18﴿ सफ़र के लिये रवाना होते वक़्त येह दुआ पढ़ ले तो अम्नो सलामती के साथ सफ़र तमाम होगा

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ فِیْ سَفَرِنَا هٰذَا الْبِرَّ وَ التَّقْوٰی ۝ وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضٰی ۝ اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَیْنَا هٰذَا السَّفَرَ ۝ وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَهٗ ۝ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِی السَّفَرِ وَ الْخَلِیْفَةُ فِی الْاَهْلِ ۝ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَّعْثَاءِ السَّفَرِ وَکَاٰبَةِ الْمَنْظَرِ وَ سُوْءِ الْمُنْقَلَبِ فِی الْاَهْلِ وَالْمَالِ وَالْوَلَدِ ۝

(صحیح مسلم، کتاب الحج، باب مایقول اذا... الخ، الحدیث ۱۳۴۲، ص۷۰۰)

﴾19﴿ जब सफ़र से वापस हो तो येह दुआ पढ़े

اٰئِبُوْنَ ۝ تَائِبُوْنَ ۝ عَابِدُوْنَ ۝ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ ۝

(سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ما یقول اذا قدم من السفر، الحدیث ۳۴۵۱، ج۵، ص۲۷۶)

﴾20﴿ जब किसी मंज़िल या स्टेशन पर उतरे तो येह दुआ पढ़े ان شاء اللہ تعالٰی हर क़िस्म के नुक़्सान से महफ़ूज़ रहेगा।

رَبِّ اَنْزِلْنِیْ مُنْزَلًا مُّبٰرَکًا ۝ وَّاَنْتَ خَیْرُ الْمُنْزِلِیْنَ ۝ (الدر المنثور، ج۶، ص۹۷)

﴾21﴿ आंखों में सुर्मा लगाते वक़्त येह दुआ पढ़नी चाहिये

اَللّٰھُمَّ مَتِّعْنِیْ بِالسَّمْعِ وَالْبَصَرِO

(سنن الترمذی،احادیث شتی،باب ۱۳۸،الحدیث ۳۶۲۲،ج۵،ص۳۴۹)

﴾22﴿ खाना खाने के बा'द इस दुआ को पढ़े

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَھَدَانَا وَجَعَلَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَO

(ابو داود،کتاب الاطعمہ،باب ما یقول الرجل اذا طعم،الحدیث ۳۸۴۹،ج۳،ص۵۱۳)

﴾23﴿ जब कोई ने'मत मिले तो येह पढ़े اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ بِنِعْمَتِہٖ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُO

(سنن ابن ماجہ،کتاب الادب،باب فضل الحامدین،الحدیث ۳۸۰۳،ج۴،ص۲۵۰)

﴾24﴿ हर बला हर नुक़्सान से अमान मिलने के लिये सुब्ह को और शाम को तीन तीन मरतबा इस दुआ को पढ़ ले اِنْ شَاءَ اللّٰہ تَعَالٰی हर बला और हर नुक़्सान से महफ़ूज़ रहेगा ।

بِسْمِ اللّٰہِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِہٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ وَھُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُO

(سنن ابن ماجہ،کتاب الدعاء،باب مایدعو بہ الرجل...الخ،الحدیث ۳۸۶۹،ج۴،ص۲۸۴)

﴾25﴿ जब आंधी चले तो येह दुआ पढ़े ।

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ مِنْ خَیْرِھَا وَ خَیْرِ مَا فِیْھَا وَ خَیْرِ مَا اُرْسِلَتْ بِہٖO وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّھَا وَشَرِّ مَافِیْھَا وَشَرِّ مَا اُرْسِلَتْ بِہٖO

(صحیح مسلم،کتاب صلوۃ الاستسقاء،باب التعوذ عند رؤیۃ الریح...الخ،الحدیث ۸۹۹،ص۴۴۶)

﴾26﴿ बादलों की गरज और बिजली की कड़क के वक़्त येह दुआ पढ़नी चाहिये । اَللّٰھُمَّ لَا تَقْتُلْنَا بِغَضَبِکَ وَلَا تُھْلِکْنَا بِعَذَابِکَ وَعَافِنَا قَبْلَ ذٰلِکَO

(جامع ترمذی،کتاب الدعوات،باب مایقول اذا سمع الرعد،الحدیث ۳۴۶۱،ج۵،ص۲۸۱)

﴾27﴿ अगर किसी क़ौम या किसी गुरौह से जानो माल का ख़ौफ़ हो तो येह दुआ़ पढ़े ।

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَجْعَلُكَ فِیْ نُحُوْرِهِمْO وَنَعُوْذُبِكَ مِنْ شُرُوْرِهِمْO

(سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب ما یقول الرجل اذا خاف قوما، الحدیث ۱۵۳۷، ج۲، ص۱۲۷)

﴾28﴿ मुर्ग़ की आवाज़ सुन कर येह पढ़े ।

اَسْئَلُ اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهِ الْعَظِيْمِO

(صحیح مسلم، کتاب الذکر و الدعاء ...الخ، باب استحباب الدعاء...الخ، الحدیث ۲۷۲۹، ص۱٤٦١)

﴾29﴿ गधा बोले तो येह दुआ़ पढ़ें ।

لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِO

﴾10﴿

मीलाद व ना'त

मीलाद शरीफ़ मन्ज़ूम

अज़ : मौलाना ह़सन बरेल्वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ

सबा ने किस की आमद की सुनाई मुरादे बुलबुल बे ताब लाई
मची हैं शादियां कैसी गुलों में मुबारक बादियां हैं बुलबुलों में
येह नरगिस किस का रास्ता देखती है येह सोसन किस की मिदह़त कर रही है
खुले पड़ते हैं सब गुंचे येह क्या है इन्हें किस फूल का शौक़ लिक़ा है
नई पोशाक बदली है गुलों ने मचाया शोर है क्यूं बुलबुलों ने
नहीं मा'लूम है येह माजरा क्या येह कैसा हुक्म है रिज़्वां को आया
बना दे तू चमन हर एक बन को न हो जन्नत से कुछ निस्बत दुल्हन को
हुवा मालिक को येह हुक्मे खुदावन्द कि दरवाज़े जहन्नम के हों सब बन्द
क़ुरैशी जानवर क्यूं बोलते हैं येह किस के वस्फ़ में लब खोलते हैं
ज़मीन की सम्त क्यूं माइल हैं तारे येह किस की दीद के साइल हैं तारे
येह बुत किस वासित़े औंधे पड़े हैं ज़मीं पे क्यूं ख़जालत से गिरे हैं
ज़मीं पर क्यूं मलाइक आ रहे हैं येह क्यूं तोह़्फ़े पे तोह़्फ़े ला रहे हैं
येह आमद कौन से ज़ीशान की है येह आमद कौन से सुलत़ान की है

इसी हैरत में थे अहले तमाशा
कि नागा हातिफ़े ग़ैबी येह बोला

वोह उठी देख लो गिर्दे सुवारी इयां होने लगे अन्वारे बारी
नक़ीबों की सदाएं आ रही हैं किसी की जान को तड़पा रही हैं
मुअद्दब हाथ बाधें आगे आगे चले आते हैं कहते आगे आगे
फ़िदा जिन के शरफ़ पर सब नबी हैं येही हैं वोह येही हैं वोह येही हैं
येही वाली हैं सारे बे कसों के येही फ़रियाद रस हैं बे बसों के
इन्हीं की ज़ात है सब का सहारा इन्हीं के दर से है सब का गुज़ारा
इन्हीं से करती हैं फ़रियाद चिड़यां इन्हीं से चाहती हैं दाद चिड़यां
येही हैं जो अ़ता फ़रमाएं दौलत करें ख़ुद जव की रोटी पर क़नाअ़त
इन्हीं पर दोनों आ़लम मर रहे हैं इन्हीं पर जान सदक़े कर रहे हैं
फ़ुज़ू रुतबा है सुब्हो शाम इन का मुह़म्मद मुस्त़फ़ा है नाम इन का
कोई दामन से लिपटा रो रहा है कोई हरगाम मह्‌वे इल्तिजा है
इधर भी इक नज़र हो ताज वाले कोई कब तक दिले मुज़्त़र संभाले
बहुत नज़दीक आ पहुंचा वोह प्यारा फ़िदा है जानो दिल जिस पर हमारा

उठें ता'ज़ीम को याराने मह़फ़िल
हुवा जल्वा नुमा जाने मह़फ़िल

❀❀❀❀❀

मीलाद शरीफ़

الحمد لله رب العٰلمين والصلوة والسلام على رسوله محمد و اله وصحبه اجمعين

سَلِّمُوْا يَاقَوْمِ بَلْ صَلُّوْا عَلَى الصَّدْرِ الْاَمِيْن

مُصْطَفٰى مَا جَاءَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْن

आवाज़ हो बुलन्द दुरूदो सलाम की   महफ़िल है ज़िक्रे मौलुदे ख़ैरुल अनाम की

अल्लाह ...का है और क़ुदसियों का भी   क्या शान है रसूल عَلَيْهِ السَّلَام की

رَبِّ سَلِّمْ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰه

مَرْحَبَا مَرْحَبَا رَسُوْلِ اللّٰه

भेज ऐ रब मेरे दुरूदो सलाम   अपने प्यारे नबी पर भेज मुदाम

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ

बज़्मे हस्ती के ताजदार आए   गुलशने दहर की बहार आए

जिस के दामन में छुप सके दुन्या   वोह रसूल करम शिआर आए

रिवायत है कि अल्लाह तआ़ला ने ज़मीनो आस्मान बल्कि तमाम आ़लम और सारे जहान के पैदा करने से बहुत पहले अपने ह़बीब ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नूर को पैदा फ़रमाया और अपने प्यारे ह़बीब عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुक़द्दस नूर से अपनी तमाम काइनात को शरफ़े वुजूद से सरफ़राज़ फ़रमाया। जैसा कि ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि : "اَوَّلُ مَا خَلَقَ اللّٰهُ نُوْرِیْ" या'नी सब से पहले अल्लाह तआ़ला ने मेरे नूर को पैदा फ़रमाया। "وَكُلُّ الْخَلَائِقِ مِنْ نُّوْرِیْ" और तमाम मख़्लूक़ को अल्लाह तआ़ला ने मेरे नूर से ख़ल्क़ फ़रमाया। "وَاَنَا مِنْ نُّوْرِ اللّٰهِ" और मैं अल्लाह का नूर हूं।

رَبِّ سَلِّمْ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰه   مَرْحَبًا مَرْحَبًا رَسُوْلَ اللّٰه

अपने प्यारे नबी पर भेज मुदाम   भेज ऐ रब मेरे दुरूदो सलाम

बरस हा बरस बल्कि हज़ारों बरस तक येह नूरे मुहम्मदी खुदावन्दे कुद्दूस की तस्बीह व तक्दीस में मश्गूल व मसरूफ़ रहा। यहां तक कि **अल्लाह** तआला ने हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को पैदा फ़रमाया। तो इस मुक़द्दस नूर को इन की पेशानी में अमानत रखा और जब तक खुदावन्दे आलम को मन्ज़ूर था, हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام बहिश्त के बाग़ों में अपनी बीवी हज़रते हव्वा के साथ सुकूनत फ़रमाते थे यहां तक कि जब खुदावन्दे आलम के हुक्म से हज़रते आदम व हव्वा (عليهما السلام) बहिश्ते बरीं से रूए ज़मीन पर तशरीफ़ लाए और बाल बच्चों की पैदाइश का सिलसिला शुरूअ हुवा तो नूरे मुहम्मदी जो आप की पेशानी में जल्वा गर था, वोह आप के फ़रज़न्द हज़रते शीष عَلَيْهِ السَّلَام की पेशानी में मुन्तक़िल हुवा और सिलसिला ब सिलसिला, दर्जा ब दर्जा नूरे मुहम्मदी मुक़द्दस पीठों से मुबारक शिकमों की तरफ़ तफ़वीज़ होता रहा और जिन जिन मुक़द्दस पेशानियों में येह नूर चमकता रहा हर जगह अजीब अजीब मो'जिज़ात व ख़वारिक़े आदात का ज़ुहूर होता रहा और इस नूरे पाक की बरकतों के फ़ुयूज़ तरह तरह से ज़ाहिर होते रहे। चुनान्चे हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की मुक़द्दस पेशानी में इस नूरे मुहम्मदी ने येह जल्वा दिखाया कि हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام मस्जूदे मलाइका हो गए और तमाम फ़िरिश्तों ने उन के सामने सजदा किया। येही नूर जब हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام को मिला तो तूफ़ान में इसी नूर की ब दौलत इन की किश्ती सलामती के साथ जूदी पहाड़ पर पहुंच कर ठहर गई। इसी नूरे मुहम्मदी का फ़ैज़ान था कि हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को जब नमरूद काफ़िर ने आग के शो'लों में डाल दिया तो वोह आग जिस की बुलन्द शो'लों के ऊपर से कोई परन्द भी नहीं गुज़र सकता था एक दम ठंडी और सलामती व राहत का बाग़ बन गई।

येही वजह है कि तमाम अम्बिया عَلَيۡهِمُ السَّلَام आप की तशरीफ़ आवरी के मुश्ताक़ व मुन्तज़िर है और हर दौर के मुक़द्दस रसूलों की जमाअ़त आप की आमद आमद के इन्तिज़ार में आप की मदहो षना का ख़ुत्बा पढ़ने में मश्गूल रही। चुनान्चे हर ज़माने के मुक़द्दस नबियों और रसूलों का येह ह़ाल रहा कि

ख़लीलुल्लाह ने जिस के लिये ह़क़ से दुआ़एं कीं
ज़बीहुल्लाह ने वक़्ते ज़ब्ह़ जिस की इल्तिजाएं कीं
जो बन के रोशनी फिर दीदए या'क़ूब में आया
जिसे यूसुफ़ ने अपने हुस्न के नेरंग में पाया
दिले यह़्या में अरमान रह गए जिस की ज़ियारत के
लबे ईसा पे आए वा'ज़ जिस की शाने रह़मत के

अल ग़रज़ नूरे मुह़म्मदी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बराबर एक पेशानी से दूसरी पेशानियों में मुन्तक़िल होता रहा और अपने फ़ुयूज़ो बरकात के जल्वों से हर दौर के लोगों को नूरानिय्यत बख़्शता रहा यहां तक कि येह नूरे पाक हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दादा ह़ज़रते अ़ब्दुल मुत्त़लिब को मिला। इसी नूरे अक़्दस का तुफ़ैल था कि अबरहा बादशाह ह़ब्श का वोह लश्कर जो का'बा ढाने के लिये चढ़ाई कर के आया था ह़ज़रते अ़ब्दुल मुत्त़लिब की बदौलत छोटे छोटे परन्दे अबाबीलों के कंकरियों से पूरा लश्कर मअ़ हाथियों के हलाक व बरबाद हो गया और ख़ुदा का मुक़द्दस घर ख़ानए का'बा एक काफ़िर के ह़म्लों से सलामत रहा।

سَلِّمُوۡا يَا قَوۡمِ بَلۡ صَلُّوۡا عَلَى الصَّدۡرِ الۡاَمِيۡن
مُصۡطَفٰى مَا جَاءَ اِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعٰلَمِيۡن

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَ اٰلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

صَلٰوةً وَّ سَلَامًا عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ

हज़रते अ़ब्दुल मुत्त़लिब से येह नूरे पाक मुन्तक़िल हो कर हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسلِيم के वालिदे माजिद हज़रते अ़ब्दुल्लाह رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को मिला और हज़रते अ़ब्दुल्लाह से आप की वालिदए माजिदा बीबी आमिना رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को तफ़्वीज़ हुवा, अय्यामे ह़म्ल में त़रह़ त़रह़ के फ़ुयूज़ो बरकात का ज़ुहूर होता रहा। चुनान्चे हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वालिदए माजिदा का बयान है कि हर रात ख़्वाब में एक फ़िरिश्ता आ कर मुझे नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी की बिशारत व ख़ुश ख़बरी सुनाता रहा, यहां तक कि वोह मुक़द्दस वक़्त क़रीब से क़रीब होता रहा कि ख़ज़ानए क़ुदरत की सब से ज़ियादा अनमोल दौलत रूए ज़मीन की त़रफ़ मुतवज्जेह हो और ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस की ने'मतों में से सब से बड़ी ने'मत का ज़ुहूर हो चुनान्चे

रबीउ़ल अव्वल उम्मीदों की दुन्या साथ ले आया
दुआ़ओं की क़बूलिय्यत को हाथों हाथ ले आया

ख़ुदा ने नाख़ुदाई की ख़ुद इन्सानी सफ़ीने की
कि रह़मत बन के छाई बारहवीं शब इस महीने की

रबीउ़ल अव्वल के मुबारक महीने की बारहवीं तारीख़ आ गई। इस रात में अ़जीब अ़जीब मनाज़िरे क़ुदरत के जल्वे नज़र आए जिन के बयान से ज़बान क़ासिर व आ़जिज़ है। ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام सत्तर हज़ार मुक़द्दस फ़िरिश्तों की फ़ौज ले कर आस्मान से ह़रमे का'बा में उतर पड़े, سُبْحٰنَ اللّٰه

यका यक हो गई सारी फ़ज़ा तमषिले आईना
नज़र आया मुअ़ल्लक़ अ़र्श तक इक नूर का ज़ीना

ख़ुदा की शाने रह़मत के फ़िरिश्ते सफ़ ब सफ़ उतरे
परे बांधे हुए सब दीनो दुन्या के शरफ़ उतरे

ह़ज़रते जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام एक मरतबा ख़ानए का'बा में जा कर ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस के ह़ुज़ूर सर ब सुजूद हो कर दुआ़ मांगते कि या **अल्लाह** ! जल्द अपने मह़बूब को दुन्या में भेज दे और एक मरतबा काशानए नुबुव्वत पर ह़ाज़िर हो कर बसद ज़ौक़ो शौक़ इल्तिजाएं करते कि اِظْهَرْ يَاسَيِّدَ الْمُرْسَلِيْنَ اِظْهَرْ يَاخَاتَمَ النَّبِيِّيْنَ اِظْهَرْ يَا شَفِيْعَ الْمُذْنِبِيْنَ या'नी ऐ तमाम रसूलों के सरदार ज़ाहिर हो जाइये और ऐ तमाम नबियों के ख़ातिम तशरीफ़ लाइये और ऐ तमाम गुनाहगाराने उम्मत को अपनी शफ़ाअ़त के दामन में छुपाने वाले आक़ा जल्द ज़ुहूरे पुरनूर फ़रमाइये। येही आ़लम था कि सुब्हे सादिक़ नुमूदार हुई और सारे जहान की सोई हुई क़िस्मत बेदार हुई कि

अभी जिब्राईल उतरे भी न थे का'बा के मिम्बर से
कि इतने में सदा आई येह अ़ब्दुल्लाह के घर से
मुबारक हो कि दौरे राह़तो आराम आ पहुंचा
नजाते दाइमी की शक्ल में इस्लाम आ पहुंचा
मुबारक हो कि ख़त्मुल मुरसलीं तशरीफ़ ले आए
जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़लमीं तशरीफ ले आए
बसद अन्दाज़ यक्ताई बग़ायत शाने ज़ैबाई
अमीं बन कर अमानत आमिना की गोद में आई

या'नी नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां, ख़त्मे पैग़म्बरां ह़ुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीं, रह़्मतुल्लिल आ़लमीं صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत हुई और हर त़रफ़ मुबारक बाद की सदाएं बुलन्द हो रही थीं और सर ज़मीने ह़रम का ज़र्रा ज़र्रा ज़बाने ह़ाल से यूं मुतरन्निम रेज़ था कि

मुबारक हो कि वोह शहा पर्दे से बाहर आने वाला है
गदाई को ज़माना जिस के दर पे आने वाला है
फ़क़ीरों से कहो हाज़िर हों जो मांगेंगे पाएंगे
कि सुल्ताने जहां मोह्ताज परवर आने वाला है
चकोरों से कहो माहे दिल आरा है चमकने को
ख़बर ज़र्रों को दो, महरे मुनव्वर आने वाला है
हसन कह दे उठें सब उम्मती ता'ज़ीम की ख़ातिर
कि अपना पेशवा अपना पयम्बर आने वाला है

सलातो सलाम

يــــا نبـــى ســلام عــليك   يـــا رســول ســلام عــليك
يـــا حبيـــب ســلام عــليك   صــلــوات الــلـــه عــليك

अस्सलाम ऐ ताज वाले   दो जहां के राज वाले
आ़सियों की लाज वाले   ऐ मेरे मे'राज वाले

يــــا نبـــى ســلام عــليك   يـــا رســول ســلام عــليك
يـــا حبيـــب ســلام عــليك   صــلــوات الــلـــه عــليك

काश हासिल हो हुज़ूरी   दूर हो जाए येह दूरी
देख लूं वोह शक्ले नूरी   दिल की येह ह़सरत हो पूरी

يــــا نبــــى سـلام عــلـيك يــــا رسـول سـلام عـلـيك

يــا حبيــب سـلام عـليك صـلـوات الــلــه عـلـيك

दर के पालों का सदक़ा दुख भरे नालों का सदक़ा

भीक दो लालों का सदक़ा करबला वालों का सदक़ा

يــــا نبــــى سـلام عــلـيك يــــا رسـول سـلام عـلـيك

يــا حبيــب سـلام عـليك صـلـوات الــلــه عـلـيك

सरवरे दुन्या व दीं हो तुम शफ़ीउ़ल मुज़्नबीं हो

रह्मतुल्लिल आ़लमीं हो सादिक़ुल वा'दो अमीं हो

يــــا نبــــى سـلام عــلـيك يــــا رسـول سـلام عـلـيك

يــا حبيــب سـلام عـليك صـلـوات الــلــه عـلـيك

सामेई के दिल की सुन लो बानिये मह़फ़िल की सुन लो

आ़शिक़े बिस्मिल की सुन लो रह़्म के क़ाबिल की सुन लो

يــــا نبــــى سـلام عــلـيك يــــا رسـول سـلام عـلـيك

يــا حبيــب سـلام عـليك صـلـوات الــلــه عـلـيك

ह़म्दे बारी तआ़ला

पूछा गुल से येह मैं ने कि ऐ ख़ूबरू तुझ में आई कहां से नज़ाकत की ख़ू

याद में किस की हंसता महकता है तू हंस के बोला कि ऐ त़ालिबे रंगो बू

अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह

अ़र्ज़ की मैं ने सुम्बुल से ऐ मुश्कबू सुब्ह़ से कर के शबनम से ताज़ा वुज़ू

झूम कर कौन सा ज़िक्र करता है तू सुन के करने लगा दम ब दम ज़िक्रे हू

अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह

जब कहा मैं ने बुलबुल से ऐ ख़ुश गुलू क्यूं चमन में चहकता है तू चार सू
देख कर गुल किसे याद करता है तू वज्द में बोल उठा वह़दहू वह़दहू

अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह

जब पपीहे से पूछा कि ऐ नीम जां याद में किस की कहता है तू पी कहां
कौन है "पी तेरा" क्या है नामो निशां बोल उठा बस वोही जिस पे शैदा है तू

अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह

मैं ने क़ुमरी से की जा के येह गुफ़्तगू गाती रहती है कू कू तू क्यूं कू ब कू
ढूंडती है किसे किस की है आरज़ू? बोली सुन मेरा नग़मा है "ह़क़ सिर्रहू"

अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह

आके जुगनू जो चमका मेरे रूबरू अ़र्ज़ की मैं ने ऐ शाहिदे शो'ला रू
किस की त़लअ़त है तू किस का जलवा है तू? येह कहा जिस का जल्वा है हर चार सू

अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह

मैंने पूछा येह परवाने से दू बदू किस लिये शम्अ़ की लौ पे जलता है तू
शो'लए नार में किस की है जुस्तजू जलते जलते कहा उस ने "या नूरहू"

अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह

आ'ज़मी गर्चे बेह़द गुनहगार है मुजरिमो बे अ़मल है ख़त़ा कार है
ह़क़ तआ़ला मगर ऐसा ग़फ़्फ़ार है उस की रह़मत का ना'रा है لاتقنطوا

अल्लाह अल्लाह अल्लाह अल्लाह

दीगर

ऐ मेरे मा'बूदे ह़क़ ऐ किरदिगार सारे आ़लम का तू है परवर दगार

फ़ज़्ल से तेरे ही ऐ रब्बे करीम गुलशने हस्ती की है सारी बहार

कर दिया मुझ को गुलामे मुस्त़फ़ा हो गया मैं दो जहां का ताजदार

बख़्श दे या रब्ब ख़त़ाएं सब मेरी तू है ग़फ़्फ़ार और मैं इस्यां शिआ़र

तेरी रह़मत पर भरोसा है मुझे फ़ज़्ल का तेरे मैं हूं उम्मीद वार

किस त़रह़ हो शुक्र ने'मत का अदा शुक्र है मह़दूद ने'मत बे शुमार

नाज़ है इतनी सी निस्बत पर मुझे मैं हूं मुजरिम और तू आमर्ज़गार

तेरे सजदों ने वोह रिफ़्अ़त दी मुझे रिफ़्अ़ते अफ़्लाक है मुझ पर निषार

बन्दा फ़रमा कर बढ़ाया किस क़दर क़ुदसियों में मेरा शाहाना वक़ार

ख़ाक बोसे त़ैबा है येह **आ'ज़मी**

ह़श्र में या रब्ब न हो येह शर्मसार

ना'त शरीफ़

सरवरे आ़लम नबिय्युल अम्बिया मेरे रसूल अव्वलीं व आख़िरीं के पेशवा मेरे रसूल

सदरे बज़्मे अम्बिया मौलाए कुल फ़ख़्रे रुसुल मह़रमे अस्रारे ह़क़, शाने ख़ुदा मेरे रसूल

मज़्हरे शाने इलाही ताजदारे काइनात नाइबे ह़क़ ह़ाकिमे हर मा सिवा मेरे रसूल

महब्बते लौलाक सय्यारे फ़लक अ़र्शे आस्तां साह़िबे मे'राज व मिस्दाक़ "दना" दनी मेरे रसूल

सूरए वल फ़ज्र अ़क्स रूए रौशन का बयां मत़लए वश्शम्स व शर्हे वद्दुहा मेरे रसूल

मत़लए अन्वरे रश्के आफ़्ताब व माहताब नय्यरे बुर्ज शरफ़े नूरे ख़ुदा मेरे रसूल

इब्ने मरयम की बिशारत रूहे पैग़ामे कलीम बानिये का'बा की तारीख़ी दुआ मेरे रसूल
मन्सबे शाने रिसालत लक़ब ख़त्मुर्रुसुल मंज़िले महबूबिय्यत में मुस्तफ़ा मेरे रसूल
जिन के क़दमों से है वाबस्ता दो आ़लम की नजात वोह अमीरे कारवां वोह हक़ नुमा मेरे रसूल
आ'ज़मी मोमिन हूं, रब्बुल आ़लमीं मेरा ख़ुदा
रह़मतुल्लिल आ़लमीं सल्ले अ़ला मेरे रसूल

❁❁❁❁❁

निगारे तै़बा अज़ल से है आरज़ू तेरी मेरे वुजूद का मक़्सद है जुस्तजू तेरी
तेरा सुकूत है लुत़्फ़ो करम की इक दुन्या नसीमे ख़ुल्द की जन्नत है गुफ़्तगू तेरी
नसीमे ख़ुल्द ने मांगी है भीक ख़ुश्बू की खुली मदीने में जब ज़ुल्फ़े मुश्कबू तेरी
मेरी वफ़ात का दिन मेरी ईद का दिन हो ब वक़्ते मर्ग जो सूरत हो रूबरू तेरी
गुनाह कर के भी उम्मीद वारे जन्नत हूं सुना है जब से कि लुत़्फ़ो करम है ख़ू तेरी
कहां नहीं रुख़े अन्वर की जल्वा सामानी जहां में तलअ़ते ज़ैबा है चार सू तेरी
ह़रीमे का'बा में भी याद आई तै़बा की कि याद गारे ह़रम में है कू बकू तेरी
न छूटे दामने अ़ब्दिय्यत आ'ज़मी उन का
इसी से दोनों जहां में हे आबरू तेरी

❁❁❁❁❁

येह ह़ालत है अब सांस लेना गिरां है मगर आप का नाम विर्दे ज़बां है
कोई जाने क्या इस का परचम कहां है सरे अ़र्श जिस के क़दम का निशां है
वोह फ़ानूसे फ़ित्रत हैं दोनों जहां में उन्हीं की तजल्ली यहां है वहां है

येह सारा जहां उन के ज़ेरे क़दम है
कि पामाल उन का मकां ला मकां है

कफ़े दस्ते रह़मत में है सारा आ़लम
ज़मीं आप की आप का आस्मां है

मुसल्लम है उन को ख़ुदा की नियाबत
कलामे ख़ुदा मुस्त़फ़ा की ज़बां है

न पूछ **आ'ज़मी** मंज़िले सर बुलन्दी
मेरा सर है, मह़बूब का आस्तां है

❁❁❁❁❁

ह़ाजियो ! अब गुम्बदे सरकार थोड़ी दूर है
रह़मते ह़क़ का अ़लमबरदार थोड़ी दूर है

है ख़रीदारे गुनाह रह़मत का ताजिर जिस जगह
आ़सियो ! वोह मुस्त़फ़ा बाज़ार थोड़ी दूर है

इ़श्क़ो मस्ती में क़दम आगे बढ़ा कर देख लो
गुम्बदे ख़ज़रा का वोह मीनार थोड़ी दूर है

ने'मते कौनैन मिलती है गदाओं को जहां
वोह मुह़म्मद का सख़ी दरबार थोड़ी दूर है

ले के आए थे जहां जिब्रील भी फ़ौजे मलक
वोह उहुद का जन्नती कहसार थोड़ी दूर है

वोह शहीदाने मह़ब्बत की मुबारक ख़्वाबगाह
वोह बक़ीए़ पाक ख़ुल्द आषार थोड़ी दूर है

अल्लाह अल्लाह वोह गुलिस्ताने मदीना मरह़बा
फूल से बेहतर हैं जिस के ख़ार थोड़ी दूर है

चल पड़ा हूं गिरता पड़ता सूए त़ैबा अल मदद
ऐ मसीह़ा अब तेरा बीमार थोड़ी दूर है

दश्ते त़ैबा है, यहां चल सर के बल ऐ **आ'ज़मी**
मुस्त़फ़ा का जन्नती दरबार थोडी दूर है

ह़ाजियों का इस्तिक़्बाल

मुबारक आ गए मक्का मदीना देखने वाले
ख़ुदा का घर रसूले ह़क़ का रौज़ा देखने वाले

ह़रीमे का'बा में मस्तों का मैला देखने वाले
मज़ारे मुस्त़फ़ा पे ह़क़ का जल्वा देखने वाले

जलाले का'बा का ऊंचा मनारा देखने वाले
जमाले गुम्बदे ख़ज़रा का तारा देखने वाले

लिपट कर रोने वाले का'बे जां के गिलाफ़ों से
नबी के दर पे रह़मत का बरसना देखने वाले

त़वाफ़े का'बा में हर हर क़दम पर झूमने वाले
भरे प्यालों में ज़म ज़म का छलकना देखने वाले

जमाले अक़्दस रौज़ा बसा है इन की आंखों में
ह़क़ीक़त में हैं येह जन्नत का नक़्शा देखने वाले

कमाले शौक़ से हम इन को सो सो बार देखेंगे
बड़े प्यारे हैं येह मक्का मदीना देखने वाले

मुबारक हैं मुबारक हैं ख़ुदा शाहिद मुबारक हैं
येह मक्का देखने वाले मदीना देखने वाले

मिला है **आ'ज़मी** मक्के मदीने से शरफ़ इन को
निगाहे दिल से देखें इन का रुतबा देखने वाले

दीगर

मुबारक मरह़बा मक्का मदीना देखने वाले
ज़मीं पर अ़र्श की मंज़िल का ज़ीना देखने वाले

ह़त़ीमे का'बा में सजदे, वोह बोसे संगे अस्वद के
दरे का'बा पे रोना गिड़ गिड़ाना देखने वाले

मक़ामे मुलतज़िम मीज़ाब और रुक्ने यमानी पर
हमेशा अब्रे रह़मत का बरसना देखने वाले

वोह प्यासों का हुजूम आ़शिक़ाने कैफ़ का आ़लम
वोह पैमानों में ज़म ज़म का छलकना देखने वाले

त़वाफ़े का'बा की मस्ती सफ़ा मर्वा के मन्ज़र में
शराबे मा'रिफ़त का जाम व मीना देखने वाले

मिना में ईदे क़ुरबानी का मन्ज़र देख कर आए
सरे अ़रफ़ात परवानों का मैला देखने वाले

फ़िरिश्ते पर बिछाते हैं जहां तेरे क़दम पहुंचे
खुदा का घर रसूले हक़ का रौज़ा देखने वाले
सितारा तेरी क़िस्मत पर षुरय्या से भी ऊंचा है
जमाले गुम्बदे ख़ज़रा का जल्वा देखने वाले
मुबारक हैं मुबारक **आ'ज़मी** बेशक मुबारक हैं
खुदा का घर नबी के दर का जल्वा देखने वाले

❁❁❁❁❁

हुस्ने यूसुफ़ और है ताहा का जल्वा और है
माहे कनआं और है महरे मदीना और है
आस्मां पर गए इद्रीस व ईसा शक नहीं
दम में सैरे ला मकां मे'राजे असरा और है
है ख़लीलुल्लाह हबीबुल्लाह में फ़र्क़े अज़ीम
शाने ख़ल्अत और है ताजे फतरज़ा और है
इन्फ़िलाक़ बहूरे बुरहान अज़ीमुश्शान था
इन्शिक़ाक़ बद्र का लेकीन नतीजा और है
मुफ़्त भी लेते नहीं आशिक़ हयाते ख़िज़्र को
ख़ाली जीना और है मर मर के जीना और है
जन्नती फूलों की खुश्बू तो मुसल्लम है मगर
निकहते गुल और है उन का पसीना और है
आ'ज़मी थी नूह की किश्ती में आलम की नजात
अहले बैते पाक का लेकिन सफ़ीना और है

अज़ : आ'ला ह़ज़रत क़िब्ला बरेल्वी عَلَيْهِ رَحْمَة

सब से औला व आ'ला हमारा नबी सब से बाला व वाला हमारा नबी
जिस को शायां है अ़र्शे ख़ुदा पर जुलूस है वोह सुल्त़ाने वाला हमारा नबी
ख़ल्क़ से औलिया औलिया से रुसुल और रसूलों से आ'ला हमारा नबी
हुस्न खाता है जिन के नमक की क़सम वोह मलीह़े दिल आरा हमारा नबी
जिस की दो बूंद हैं कौषरो सल्सबील है वोह रह़मत का दरिया हमारा नबी
क्या ख़बर कितने तारे खिले छुप गए पर न डूबे न डूबा हमारा नबी
जिस ने मुर्दा दिलों को दी उ़म्रे अबद है वोह जाने मसीह़ा हमारा नबी

ग़मज़दों को **रज़ा** मुज़्दा दीजिये कि है
बे कसों का सहारा हमारा नबी

❁❁❁❁❁

ज़हे इ़ज़्ज़तो ए'तिलाए मुह़म्मद कि है अ़र्शे ह़क़ ज़ेरे पाए मुह़म्मद
मकां अ़र्श उन का फ़लक फ़र्श उन का मलक ख़ादिमाने सराए मुह़म्मद
ख़ुदा की रिज़ा चाहते हैं दो आ़लम ख़ुदा चाहता है रिज़ाए मुह़म्मद
अ़साए कलीम अज़्दहाए ग़ज़ब था गिरों का सहारा अ़साए मुह़म्मद
ख़ुदा उन को किस प्यार से देखता है जो आंखें हैं मह़्वे लिक़ाए मुह़म्मद
इजाबत ने झुक कर गले से लगाया बढ़ी नाज़ से जब दुआ़ए मुह़म्मद
इजाबत का सहरा इ़नायत का जोड़ा दुल्हन बन के निकली दुआ़ए मुह़म्मद
रज़ा पुल से अब वज्द करते गुज़रिये कि है रब्बे सल्लिम सदाए मुह़म्मद

❁❁❁❁❁

सर ता ब क़दम है तने सुल्ताने ज़मन फूल
लब फूल दहन फूल ज़क़न फूल बदन फूल

वल्लाह जो मिल जाए मेरे गुल का पसीना
मांगे न कभी इत्र न फिर चाहे दुल्हन फूल

तिन्का भी हमारे तो हिलाए नहीं हिलता
तुम चाहो तो हो जाए अभी कोहे मह़न फूल

दिल अपना भी शैदाई है इस नाख़ुने पा का
इतना भी महे नौ पे न ऐ चर्ख़े कुहन फूल

दिल बस्ता व ख़ू गश्ता न ख़ुश्बू न लत़ाफ़त
क्यूं गुंचा कहूं है मेरे आक़ा का दहन फूल

क्या बात **रज़ा** उस चमनिस्ताने करम की
ज़हरा है कली जिस में हुसैन और ह़सन फूल

❀❀❀❀❀

है लबे ईसा से जां बख़्शी निराली हाथ में
संगरेज़े पाते हैं शीरीं मक़ाली हाथ में

अबरे नैसां मोमिनों पर, तेग़े उ़र्यां कुफ़्र पर
जम्अ़ हैं शाने जमाली व जलाली हाथ में

मालिके कौनैन हैं गो पास कुछ रखते नहीं
दो जहां की ने'मतें हैं उन के ख़ाली हाथ में

साया अफ़गन सर पे हो परचमे इलाही झूम कर
जब लिवाउल ह़म्द ले उम्मत का वाली हाथ में
दस्तगीरे हर दो आ़लम कर दिया सिबत़ैन को
ऐ मैं क़ुरबां जाने जां अगुश्त क्या ली हाथ में
आह वोह आ़लम कि आंखें बन्द और लब पर दुरूद
वक़्फ़ संगे दरे जबीं रौज़े की जाली हाथ में
हश्र में क्या क्या मज़े वारफ़्तगी के लूं **रज़ा**
लौट जाऊं पा के वोह दामाने आ़ली हाथ में

❁❁❁❁❁

वोह कमाले ह़ुस्ने ह़ुज़ूर है कि गुमाने नक़्स जहां नहीं
येही फूल ख़ार से दूर है येही शम्अ़ है कि धूवां नहीं
मैं निषार तेरे कलाम पर मिली यूं तो किस को ज़बां नहीं
वोह सुख़न है जिस में सुख़न न हो वोह बयां है जिस का बयां नहीं
बख़ुदा का येही है दर नहीं और कोई मफ़र मक़र
जो वहां से हो यहीं आ के हो जो यहां नहीं तो वहां नहीं
दो जहां की बेहतरियां नहीं कि अमानिये दिलो जां नहीं
कहो क्या है वोह जो यहां नहीं मगर इक नहीं कि वोह हां नहीं
वोही नूरे ह़क़ वोही ज़िल्ले रब्ब है इन्हीं से सब है इन्हीं का सब
नहीं इन की मिल्क में आस्मां कि ज़मीं नहीं कि ज़मां नहीं

सरे अ़र्श पर है तेरी गुज़र दिले फ़र्श पर है तेरी नज़र
मलकूतो मुल्क में कोई शै नहीं वोह जो तुझ पे ईयां नहीं
करूं मद्ह़े अहले दुवल रज़ा पड़े इस बला में मेरी बला
मैं गदा हूं अपने करीम का मेरा दीन पारए नां नहीं

❁❁❁❁❁

अ़र्शे ह़क़ है मस्नदे रिफ़्अ़त रसूलुल्लाह की
देखनी है ह़श्र में इ़ज़्ज़त रसूलुल्लाह की
क़ब्र में लहराएंगे ता ह़श्र चश्मे नूर के
जल्वा फ़रमा होगी जब त़लअ़त रसूलुल्लाह की
ला–व–रब्बिल अ़र्श जिस को जो मिला उन से मिला
बटती है कौनैन में ने'मत रसूलुल्लाह की
वोह जहन्नम में गया जो उन से मुस्तग़नी हुवा
है ख़लीलुल्लाह को ह़ाजत रसूलुल्लाह की
टूट जाएंगे गुनाहगारों के फ़ौरन क़ैदो बन्द
ह़श्र को खुल जाएगी त़ाक़त रसूलुल्लाह की
या रब इक साअ़त में धुल जाएं सियहकारों के जुर्म
जोश में आ जाए अब रह़मत रसूलुल्लाह की
ऐ रज़ा ख़ुद साह़िबे क़ुरआं है मद्दाह़े हुज़ूर
तुझ से कब मुमकिन है फिर मिदह़त रसूलुल्लाह की

अज़ मौलाना ह़सन बरेल्वी عَلَيْهِ رَحْمَةٌ

ऐ मदीने के ताजदार सलाम ऐ ग़रीबों के ग़म गुसार सलाम
तेरी इक इक अदा पे ऐ प्यारे सो दुरूदें फ़िदा हज़ार सलाम
रब्बे सल्लिम के कहने वाले पर जान के साथ हों निषार सलाम
मेरी बिगड़ी बनाने वाले पर भेज ऐ मेरे किरदिगार सलाम
पर्दा मेरा न फ़ाश ह़श्र में हो ऐ मेरे ह़क़ के राज़दार सलाम
अ़र्ज़ करता है येह **ह़सन** तेरा
तुझ पर ऐ खुल्द की बहार सलाम

❀❀❀❀❀

अ़जब रंग पर है बहारे मदीना कि सब जन्नतें हैं निषारे मदीना
मुबारक रहे अ़न्दलीबो तुम्हें गुल हमें गुल से बेहतर है ख़ारे मदीना
मेरी ख़ाक या रब्ब न बरबाद जाए पसे मर्ग कर दे गुबारे मदीना
रगे गुल की जब नाज़ुकी देखता हूं मुझे याद आते हैं ख़ारे मदीना
जिधर देखिये बाग़े जन्नत खिला है नज़र में है नक़्शो निगारे मदीना
रहें उन के जल्वे बसें उन के जल्वे मेरा दिल बने यादगारे मदीना
बना आस्मां मंज़िले इब्ने मरयम
गए ला मकां ताजदारे मदीना

❀❀❀❀❀

तुम्हारा नाम मुसीबत में जब लिया होगा
हमारा बिगड़ा हुवा काम बन गया होगा

दिखाई जाएगी मेह़शर में शाने मह़बूबी
कि आप ही की ख़ुशी आप का कहा होगा

ख़ुदाए पाक की चाहेंगे अगले पिछले ख़ुशी
ख़ुदाए पाक ख़ुशी इन की चाहता होगा

किसी के पाऊं की बेड़ी येह काटते होंगे
कोई असीरे ग़म इन को पुकारता होगा

किसी के पल्ले पे होंगे येह वक़्ते वज़्ने अ़मल
कोई उम्मीद से मुंह इन का तक रहा होगा

कोई कहेगा दुहाई है या रसूलल्लाह
तो कोई थाम के दामन मचल गया होगा

किसी को ले के फ़िरिश्ते चलेंगे सूए जह़ीम
वोह इन का रास्ता फिर फिर के देखता होगा

कोई क़रीबे तराज़ू कोई लबे कौषर
कोई सिरात़ पे इन को पुकारता होगा

वोह पाक दिल कि नहीं जिस को अपना अन्देशा
हुजूमे फ़िक्रो तरद्दुद में घिर गया होगा

अज़ : मौलाना जमीलुर्रह़मान बरेल्वी عَلَيْهِ رَحْمَة

सुल्त़ाने जहां मह़बूबे ख़ुदा, तेरी शानो शौकत क्या कहना
हर शै पर लिखा है नाम तेरा, तेरे ज़िक्र की रिफ़्अ़त क्या कहना
मे'राज हुई, ता अ़र्श गए, ह़क़ तुम से मिला, तुम ह़क़ से मिले
सब राज़ फ़ओह़ा दिल पे खुले, येह इ़ज़्ज़त व ह़श्मत क्या कहना
हर ज़र्रा तेरा दीवाना है, हर दिल में तेरा काशाना है
हर शम्अ़ तेरी परवाना है, ऐ शम्ए़ हिदायत क्या कहना
आंखों से किया दरिया जारी और लब पे दुआ़ प्यारी प्यारी
रो रो के गुज़ारी शब सारी, ऐ ह़ामिये उम्मत क्या कहना
आ़लम की भरें हर दम झोली, ख़ुद खाएं फ़क़त़ जव की रोटी
वोह शान अ़त़ा व सख़ावत की, येह ज़ोहदो क़नाअ़त क्या कहना
वोह फूल बतूली गुलशन के इक सब्ज़ हुए इक सुर्ख़ हुए
बग़दादो अ़रब जिन से महके, उन फूलों की निकहत क्या कहना

❀❀❀❀❀

जा के सबा तू कूए मुह़म्मद صلی اللہ علیہ وسلم
ला के सुंघा ख़ुश्बूए मुह़म्मद صلی اللہ علیہ وسلم
चाक है हजर से अपना सीना, दिल में बसा है शहरे मदीना
चश्म लगी है सूए मुह़म्मद صلی اللہ علیہ وسلم

रंग है इन का बाग़े जहां में इन की महक है ख़ुल्दो जिनां में
सब में बसी ख़ुश्बूए मुह़म्मद صلی اللہ علیہ وسلم
हो न कभी ता ह़श्र नुमायां, ऐसा हिलाले ईद हो क़ुरबां
देखे अगर अबरूए मुह़म्मद صلی اللہ علیہ وسلم
तिश्ना दहानो ग़म है तुम्हें क्या ? अब्रे करम अब झूम के बरसा
लो वोह खुले गैसूए मुह़म्मद صلی اللہ علیہ وسلم
शम्सो क़मर में, अरज़ो फ़लक में, जिन्नो बशर में हूरो मलक में
साया फ़िगन है रूए मुह़म्मद صلی اللہ علیہ وسلم
दीन के दुश्मन इन को सताएं, देते रहें येह सब को दुआ़एं
सब से निराली ख़ूए मुह़म्मद صلی اللہ علیہ وسلم
हो न **जमीले क़ादिरी** मुज़्तर, हाथ उठा कर ह़क़ से दुआ़ कर
मुझ को दिखा दे कूए मुह़म्मद صلی اللہ علیہ وسلم

❁❁❁❁❁

ऐ दीने ह़क़ के रहबर तुम पर सलाम हर दम
मेरे शफ़ीए मेह़शर तुम पर सलाम हर दम
इस बे कसो ह़ज़ीं पर जो कुछ गुज़र रही है
ज़ाहिर है सब वोह तुम पर तुम पर सलाम हर दम
बन्दा तुम्हारे दर का आफ़त में मुब्तला है
रह़्म ऐ ह़बीबे दावर तुम पर सलाम हर दम

बे वारिषों के वारिष बे वालियों के वाली
तस्कीने जाने मुज़्तर तुम पर सलाम हर दम

लिल्लाह अब हमारी फ़रियाद को पहुंचिये
बे ह़द है ह़ाले अबतर तुम पर सलाम हर दम

दरयूज़ागर गिर हूं मैं भी अदना सा इस गली का
लुत़्फ़े करम हो मुझ पर तुम पर सलाम हर दम

कोई नहीं है मेरा में किस से दाद चाहूं
सुल्त़ाने बन्दा परवर तुम पर सलाम हर दम

बह़्रे ख़ुदा बचाओ इन ख़ार हाए ग़म से
इक दिल है लाख नशतर तुम पर सलाम हर दम

❁❁❁❁❁

मेरे मौला मेरे सरवर, रह़्मतुल्लिल आलमीं
मेरे आक़ा मेरे रेहबर, रह़्मतुल्लिल आलमीं

मज़्हरे ज़ाते ख़ुदा मह़्बूबे रब्बे दो सरा
बादशाहे हफ़्त किश्वर, रह़्मतुल्लिल आलमीं

आ़लमे इल्मे लदुन्नी आप को ह़क़ ने किया
ह़ाल सब रोशन हैं तुम पर, रह़्मतुल्लिल आलमीं

तूने फ़रमाया هُوَالْمُعْطِى وَاِنِّى قَاسِم
क्यूं न मांगूं तेरे दर पर, रह़्मतुल्लिल आलमीं

मैं पयामे ज़िन्दगी समझूं अगर यूं मौत आए
आप का दर हो मेरा सर, रहमतुल्लिल आलमीं
हम सियहकारों की बख़्शिश का कोई सामां नहीं
नाज़ है तेरे करम पर, रहमतुल्लिल आलमीं
बस ख़ुदा इन को न कहना और जो चाहो कहो
सब से बाला सब से बेहतर, रहमतुल्लिल आलमीं
दस्ते अक़्दस सीने पर हो रूह खींचती हो मेरी
लब पे जारी हो बराबर, रहमतुल्लिल आलमीं
सायए अर्शे इलाही में खड़ा करना मुझे
हैं सियह इस्यां से दफ़्तर, रहमतुल्लिल आलमीं

❁❁❁❁❁

आईना मन्फ़अ़ल तेरे जल्वे के सामने
साजिद हैं मह व महर तेरे तल्वे के सामने
जारी है हुक्म येह कि दो पारा क़मर हुवा
अंगुश्ते मुस्त़फ़ा के इशारे के सामने
क्यूं दर बदर फ़क़ीर तुम्हारा करे सुवाल
जब तुम हो भीक मांगने वाले के सामने
जन्नत तो खींचती है कि मेरी त़रफ़ चलो
ईमान ले चला है मदीने के सामने

अहले नज़र ने ग़ौर से देखा तो येह खुला
का'बा झुका हुवा है मदीने के सामने
येह वोह करीम हैं कि जो मांगो वोही मिले
ऐ साइलो चलो तो दुआ़ ले के सामने
रब्बे करीम येह है दुआ़ मेरी रोज़े मेह़शर
शर्मिन्दा मैं न होऊं तेरे प्यारे के सामने

❁❁❁❁❁

बयां हो किस से कमाले मुह़म्मदे अ़रबी — है बे मिषाल जमाले मुह़म्मदे अ़रबी
मजाल क्या है कि इन्सो मलक करें ता'रीफ़ — ख़ुदा से पूछिये ह़ाले मुह़म्मदे अ़रबी
ज़माना पलता है इस आस्ताने आ़ली से — अ़जब है जूदो नवाले मुह़म्मदे अ़रबी
लगा रहे हैं हमेशा महरोमा चक्कर — मिला न कोई मिषाले मुह़म्मदे अ़रबी
अन्धेरी रात न होगी मेरी लह़द में कभी — मैं हूं ग़ुलामे बिलाले मुह़म्मदे अ़रबी
ग्याह व ख़ारो ख़स व ख़ाक से वोह बदतर है — नहीं है जिस को ख़याले मुह़म्मदे अ़रबी
येह जान क्या दो जहां मुझे गर मुयस्सर हों — करूं फ़िदा ब जमाले मुह़म्मदे अ़रबी

जमीले क़ादिरी शुक्रे ख़ुदा कि तू भी हुवा
ग़ुलामे इ़तरत व आले मुह़म्मदे अ़रबी

अज़ : ह़ज़रते आसी عَلَیْہِ رَحْمَۃ

कहां गुलशन कहां रूए मुह़म्मद — कहां सुम्बुल कहां मूए मुह़म्मद
है आ़लम आहिन व आहिन रुबा का — खिंचा जाता है दिल सूए मुह़म्मद

न छानी मुश्ते ख़ाक अपनी किसी ने — है दिल ही में रहे कूए मुह़म्मद
दिल सद चाक में मानिन्दे शाना — रची है बूए गैसूए मुह़म्मद
दमे जां बख़्श ए'जाज़े मसीहा — नसीमे गुलशन कूए मुह़म्मद
ह़याते जाविदां पाता है **आसी**
क़ीतल तेग़ अब्रूए मुह़म्मद

दीगर

न मेरे दिल न जिगर पर न दीदए तर पर
करम करे वोह निशाने क़दम तो पथ्थर पर
तुम्हारे हुस्न की तस्वीर कोई क्या खींचे
नज़र ठहरती नहीं आ़रिज़े मुनव्वर पर
किसी ने ली रहे का'बा कोई गया सूए दीर
पड़े रहे तेरे बन्दे मगर तेरे दर पर
गुनाहगार हूं मैं वाइज़ो तुम्हें क्या फ़िक्र
मेरा मुआ़मला छोड़ो शफ़ीए मेह़शर पर
पिला दे कि आज तो मरते हैं रिन्द ऐ साक़ी
ज़रूर किया कि येह जल्सा हो ह़ौज़े कौषर पर
आख़िरी वक़्त है **आसी** चलो मदीने को
निषार हो के मरो तुर्बते पयम्बर पर

अज़ : ह़ज़रते शफ़ीक़ जौनपूरी عَلَيْهِ رَحْمَة

नज़र आती है गुलशन में हवा ना साज़ गार अपनी

गुले बाग़े ख़लीली भेज दे बा'दे बहार अपनी

उठ ऐ उम्मत के वाली कुफ़्र धमकाता है मुस्लिम को

अली को भेज दे आ जाएं ले कर ज़ुलफ़िक़ार अपनी

त़रीक़े मुस्त़फ़ा को छोड़ना है वजहे बरबादी

इसी से क़ौम दुन्या में हुई बे इक़्तिदार अपनी

हमें करनी है शहनशाहे बत़ह़ा की रिज़ा जोई

वोह अपने हो गए तो रह़मते परवर दगार अपनी

बनेगी गर्मिये ख़ुर्शीद ख़नकी बाग़े जन्नत की

वोह जिस दम ले के आएंगे नसीमे ख़ुश गवार अपनी

वोह बैठे हों उठा हो बारगाहे पाक का पर्दा

कहानी दर पे कहता हो **शफ़ीक़े** जां निषार अपनी

दीगर

उजाली रात होगी और मैदाने क़ुबा होगा

ज़बाने शौक़ पर या मुस्त़फ़ा या मुस्त़फ़ा होगा

कि उतरे होंगे रह़मत के फ़िरिश्ते आस्मानों से

ख़ुदा का नूर होगा रौज़ए ख़ैरुल वरा होगा

वोह नख़्लिस्ताने मक्का वोह मदीना की गुज़रगाहें
कहीं नूरे नबी होगा कहीं नूरे ख़ुदा होगा

यलमलम ही से शौरश होगी दिल की बे क़रारी में
हन कर जामए एह़राम ज़ाइर झूमता होगा

न पूछो आ़शिक़ों का वलवला जिद्दा के साहि़ल पर
लबों पर नग़मा اِنْ نِلْتِ يَا رِيْحَ الصَّبَا होगा

झूकी होगी मेरी गर्दन गुनाहों की ख़जालत से
ज़बा पर या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم होगा

कुछ ऊंटों की क़ितारों में अनोखी सादगी होगी
हुदी ख़्वानों से त़यबा का बयाबां गूंजता होगा

कभी कोहे मफ़रह़ से नज़ारे होंगे गुम्बद के
कभी बीरे अ़ली पर आ़शिक़ों का झमघटा होगा

शफ़ीक़ उस दिन न पूछो दर्दे उ़ल्फ़त की फ़िरावानी
कि हम होंगे हिजाज़े पाक का दारुश्शिफ़ा होगा

दीगर

اِلَيْهِ يَاصَبَا بَلِّغْ سَلَامِىْ नहीं तेरे सिवा कोई पयामी
वोह जागें तो ख़ुदा से हम कलामी वोह सो जाएं तो मे'राजे मनामी
शहे ख़ूबां तेरे दर की गुलामी है शाहों को भी वजहे नेक नामी
इराक़ी हो कि रूमी हो कि शामी हर इक शैदा है सुल्त़ाने अ़रब का

निगाहे सीरगाहे لِی مَعَ اللّٰہِ تَعَالَی اللّٰہ तेरी आ़ली मक़ामी

इसी सर्दे ख़रामां का है सदक़ा नसीमे सुब्ह़ ! तेरी ख़ुश ख़िरामी

शफ़ीक़ अन्दाज़े ह़सरत के इलावा

मेरे अश्आ़र में है रंगे जामी

अज़ मौलाना नसीम बस्तवी مدظلہ

मुह़म्मद का दारुस्सलाम **अल्लाह अल्लाह** वोह बाराने फ़ैज़ दवाम **अल्लाह अल्लाह**

जहाने रिसालत के ख़ुरशीदे ताबान नुबुव्वत के माहे तमाम **अल्लाह अल्लाह**

निगाहों में त़यबा की फिरती है अकषर ह़सीं सुब्ह़ पुरनूर शाम **अल्लाह अल्लाह**

सरे ह़श्र तिश्ना लबों को वोह अपने पिलाएंगे कौषर का जाम **अल्लाह अल्लाह**

जबीं उस के क़दमों पे झूकती है सब की जो है मुस्त़फ़ा का ग़ुलाम **अल्लाह अल्लाह**

दिले मुज़्त़रिब बह्‌रे त़यबा है नालां करें अब कोई एहतिमाम **अल्लाह अल्लाह**

नसीम और इन की मह़ब्बत की मंज़िल

ज़हे आ़शिक़ तेज़ गाम **अल्लाह अल्लाह**

दीगर

येह कैसा मुबारक मक़ाम आ रहा है लबों पर दुरूदो सलाम आ रहा है

अदब से चलो और सरों को झुका लो मुह़म्मद का दारुस्सलाम आ रहा है

बसाई गई राह में निकहते गुल रसूले ख़ुदा का ग़ुलाम आ रहा है

क़दम चूमने आ रहे हैं फ़िरिश्ते ज़मी पर वोह माहे तमाम आ रहा है

मदीने के आक़ा का हर हर सुवाली तबस्सुम ब लबे शाद काम आ रहा है

वोह देखो उठीं रह़मतों की घटाएं ज़बान पर मुह़म्मद का नाम आ रहा है

ग़रीबों का मूनिस यतीमों का हमदम लिये ज़िन्दगी का पयाम आ रहा है

रसूले गिरामी के रौज़े की जानिब ज़माना बसद एह़तिराम आ रहा है

नसीम षना ख़्वाने सरवर, मुबारक !

ख़ुदा की त़रफ़ से सलाम आ रहा है

दीगर

त़यबा के मुसाफ़िर से

सुल्त़ाने दो जहां से मेरा सलाम कहना

महबूबे दो जहां से मेरा सलाम कहना

उम्मत के पासबां से मेरा सलाम कहना

वह़दत के राज़दां से मेरा सलाम कहना

अ़ज़्मत के हुकमरां से मेरा सलाम कहना

रिफ्अ़त के आस्मां से मेरा सलाम कहना

रौज़े के नूरी जल्वे आंखों में रख लाना

पुरनूर आस्तां से मेरा सलाम कहना

अ़र्शे उ़ला की शौकत ख़ुल्दे जीनां की ज़ीनत

पैग़म्बरे अमां से मेरा सलाम कहना

अर्ज़ो समां के सरवर सद रश्के माहे अख़्तर

तन्वीरे कहकशां से मेरा सलाम कहना

तुझ पर निषार जाऊं बा'दे सबा ख़ुदारा

तस्कीने क़ल्बो जां से मेरा सलाम कहना

रौज़े की जालियों से भी हम कनार हो कर

ख़ुल्दे नज़र समां से मेरा सलाम कहना

शाहो गदा के ख़ाली दामन को भरने वाले

आ़लम के हुक्मरां से मेरा सलाम कहना

ऐ आ़ज़िमे मदीना अ़र्ज़े **नसीम** ले जा

ग़म ख़्वारे बेकसां से मेरा सलाम कहना

दीगर

ज़मीं पर मालिके ख़ुल्दे बरीं तशरीफ़ लाते हैं

जहां में रह़्मतुल्लिल आ़लमीं तशरीफ़ लाते हैं

मुबारक वो शहे दुन्या व दीं तशरीफ़ लाते हैं

इमामुल अम्बिया व मुरसलीं तशरीफ़ लाते हैं

सुकूं बख़्श दिल अन्दोहगीं तशरीफ़ लाते हैं

बहारे गुलशने इल्मो यक़ीं तशरीफ़ लाते हैं

सलात़ीन जहां जिस के क़दम पर सर झुकाएंगे

वोही मह़बूबे रब्बुल आ़लमीं तशरीफ़ लाते हैं

नुबुव्वत के रिसालत के शरीअ़त के त़रीक़त के
मुक़द्दस ताजदारे अव्वलीं तशरीफ़ लाते हैं

फ़क़ीरो बे नवा अब दिल शिकस्ता रह नहीं सकते
दो आ़लम जिस के है ज़ेरे नगीं तशरीफ़ लाते हैं

ज़मीं से आस्मां तक रोशनी ही रोशनी होगी
कि शम्ए़ पुरज़िया नूरे मुबीं तशरीफ़ लाते हैं

हज़ारों ईद है क़ुरबान उस पुरनूर साअ़त पर
कि जिस में रह़मतुल्लिल आ़लमीं तशरीफ़ लाते हैं

जहाने हुस्न के मस्नद नशीं की आमद आमद है
शहे ख़ूबानो रश्के मेहजबीं तशरीफ़ लाते हैं

नसीम आवाज़ दो जिन्नो बशर बहरे सलाम आए
सरीर आराए बज़्मे मुरसलीं तशरीफ़ लाते हैं

सलाम

फ़ख़्रे ईसा नाज़े आदम अस्सलातो वस्सलाम
रूहे ईमां जाने आ़लम अस्सलातो वस्सलाम

ताजदारे अ़र्शे आ'ज़म अस्सलातो वस्सलाम
शम्ए़ ह़क़ नूरे मुजस्सम अस्सलातो वस्सलाम

सरवरे अर्ज़ो समां सुल्त़ाने बज़्मे अम्बिया
ख़लक़ में सब से मुकर्रम अस्सलातो वस्सलाम

रंजो ग़म की शाम हो या लुत्फ़ो राह़त की सह़र
बा अदब पढ़ते रहें हम अस्सलातो वस्सलाम

जब शबे मे'राज रखा अ़र्श पर तुम ने क़दम
मुस्कुराई रूह़े आदम अस्सलातो वस्सलाम

राह़ते क़ल्बे ह़ज़ीं है आप का ज़िक्रे जमील
ऐ सुकूने चश्में पुरनम अस्सलातो वस्सलाम

हम असीराने ग़म व इफ़्कार पर बहरे ख़ुदा
हो करम सुल्ताने अकरम अस्सलातो वस्सलाम

हर घड़ी आग़ोशे रह़मत में वोह रहता है **नसीम**
जो पढ़ा करता है हर दम अस्सलातो वस्सलाम

दीगर

नबी की निगाहे करम **अल्लाह अल्लाह** बयाबां है रश्के इरम **अल्लाह अल्लाह**

कहां बारगाहे रिसालत की रिफ़्अ़त कहां मा'सिय्यत कार हम **अल्लाह अल्लाह**

वोह शहरे मदीना की सुब्ह़ दिल आरा वोह पुर कैफ़ शामो सह़र **अल्लाह अल्लाह**

जब आमद हुई सरवरे दो जहां की गिरे मुंह के बल सब सनम **अल्लाह अल्लाह**

सुवाली कोई उन का मह़रूम क्यूं हो? वोह हैं शाहे जूदो करम **अल्लाह अल्लाह**

वोह चाहें तो ज़र्रे बनें माह व अन्जुम इशारों में रब की क़सम **अल्लाह अल्लाह**

नसीम उन के जन्नत बकफ़े आस्तां पर
फ़िरिश्तों के सर भी हैं ख़म **अल्लाह अल्लाह**

मालिके कौनैन

मकीं आप के मकां आप का है   हक़ीक़त में सारा जहां आप का है
हैं शाहाने आ़लम जहां सर ख़मीदा   वोह जन्नत बकफ़ आस्तां आप का है
हक़ीक़त की आंखों से देखे तो कोई   हर इक शै में जल्वा इ़यां आप का है
सरे अ़र्श है इन की अ़ज़्मत का परचम   दो आ़लम में सिक्का रवां आप का है
यहां से वहां तक है रह़मत ही रह़मत   अगर नाम विर्दे ज़बां आप का है
मुक़द्दस मुत़ह्हर मुबारक मुनव्वर   अज़ल ही से नामो निशां आप का है
ह़बीबे ख़ुदा ताजदारे मदीना   ज़मीं आप की आस्मां आप का है

नसीमे ह़ज़ीं पर निगाहे करम हो
कि वोह भी शहा मद्ह़ख़्वां आप का है

जाने ईमान

जाने ईमान या रसूलल्लाह   तेरे क़ुरबान या रसूलल्लाह
अ़र्शो फ़र्श व फ़लक है सब तेरे   ज़ेरे फ़रमान या रसूलल्लाह
और किस के ह़ुज़ूर ले जाऊं   ख़ाली दामान या रसूलल्लाह
तेरी हस्ती बनाई है रब ने   कैसी ज़ीशान या रसूलल्लाह
मंज़िलें क़ब्रो ह़श्र की होंगी   तुम से आसान या रसूलल्लाह
होगा मेह़शर में सायबां सर पर   तेरा दामान या रसूलल्लाह
ता अबद क़ल्ब में रहे रोशन   शम्ए ईमान या रसूलल्लाह

तेरे इन्सानिय्यत पे हैं बेशक लाखों एह्सान या रसूलल्लाह
का'बए दिल न क्यूं हों अर्शे मक़ाम तुम हो मेहमान या रसूलल्लाह

कर दो पूरे **नसीम** के दिल के
सारे अरमान या रसूलल्लाह

अज़ : ह़ज़रते मुफ़्तिये आ'ज़म साहि़ब क़िब्ला बरेल्वी مدظلہ

तू शम्ए रिसालत है आ़लम तेरा परवाना
तू माहे नुबुव्वत है ऐ जल्वए जानाना

जो साक़िये कौषर के चेहरे से निक़ाब उठे
हर दिल बने मयख़ाना हर आंख हो पैमाना

दिल अपना चमक उठे ईमान की त़लअ़त से
कर आंखें भी नूरानी ऐ जल्वए जानाना

मैं शाहे नशीं टूटे दिल को न कहूं कैसे
है टूटा हुवा दिल ही सरकार का काशाना

क्यूं ज़ुल्फ़े मुअ़म्बर से कूचे न महक उठे
है पन्जए क़ुदरत जब ज़ुल्फ़ों का तेरी शाना

हर फूल में बू तेरी हर शम्अ़ में ज़ौ तेरी
बुलबुल है तेरा बुलबुल परवाना है परवाना

इस दर की हुज़ूरी ही इ़स्यां की दवा ठहरी
है ज़हरे मआ़सी का त़यबा ही दवाख़ाना

आबाद इसे फ़रमा वीरां है दिले **नूरी**
जल्वे तेरे बस जाएं आबाद हो वीराना

अज़ : ह़ज़रते मुह़द्दिषे आ'ज़म क़िब्ला किछोछवी عَلَیْہِ رَحْمَۃ

शबे मे'राज अ़जब नूर है سُبْحٰنَ اللّٰه
पत्ता पत्ता शजरे त़ूर है سُبْحٰنَ اللّٰه

एक क़दम फ़र्श पर है एक क़दम अ़र्श पर है
इन को नज़्दीक है जो दूर है سُبْحٰنَ اللّٰه

ग़ैब क्या चीज़ है देख आए हैं वोह ग़ैबूल गैब
या'नी वोह ज़ात जो मश्हूर है سُبْحٰنَ اللّٰه

देख आए हैं वोह आयाते ख़ुदाए बरतर
येही क़ुरआन में मस्तूर है سُبْحٰنَ اللّٰه

मरह़बा कहता है कोई तो कोई सल्ले अ़ला
नग़मा संजी में लबे ह़ूर है سُبْحٰنَ اللّٰه

रब्बे हबली येह कहा रब्ब ने कि ऐ मेरे ह़बीब
तुम को मन्ज़ूर, तो मन्ज़ूर है سُبْحٰنَ اللّٰه

ऐ शफ़ात के धनी तेरी शफ़ाअ़त सुन कर
शादमां हर दिले रंजूर है سُبْحٰنَ اللّٰه

पा लिया इन को तो कौनैन को पाया **सय्यिद**
या'नी झोली मेरी भरपूर है سُبْحٰنَ اللّٰه

अज़ : मौलाना क़ुदरतुल्लाह साहिब आ़रिफ़ बस्तवी

न होती जो मन्ज़ूर बि'षत किसी की तो दुन्या में होती न ख़ल्क़त किसी की
ख़ुदा की क़सम अम्बिया भी न आते न मक़बूल होती इ़बादत किसी की
येह चांद और सूरज की नूरी शुआ़एं नुमायां है इन में सबाह़त किसी की
शफ़ाअ़त की कुंजी अ़ता कर के मौला दिखाएगा मह़शर में इ़ज़्ज़त किसी की
सभी अम्बिया ता ब मूसा व ईसा सुनाने को आए बिशारत किसी की
किसी की मह़ब्बत से जन्नत मिलेगी दिलाएगी दोज़ख़ अ़दावत किसी की
लबों पर गुनहगारे **आ़रिफ़** के या रब्ब
दमे नज़्अ़ जारी हो मिदह़त किसी की

दीगर

मदहे़ चार यार

जहां में जो आईना दारे नबी हैं ह़क़ीक़त में वोह चार यारे नबी हैं
रफ़ीक़े नबी ग़म गुसारे नबी हैं फ़िदाए नबी जां निषारे नबी हैं
बड़ा इन का रुत्बा है अल्लाहु अक्बर
अबू बक्रो फ़ारूक़ व उ़षमानो ह़ैदर
ये चारों ख़िलाफ़त के मस्नद नशीं हैं येह चारों अराकीने दीने नबी हैं
येही बाग़बाने रियाज़े यक़ीं हैं येही राज़दारे रसूले अमीं हैं

येह महबूबे सरवर येह मक़बूले दावर
अबू बक्रो फ़ारूक़ व उ़षमानो ह़ैदर

येह परवाने हैं शम्ए़ बाग़े ह़िरा के फ़िदाए नबी और मुक़र्रबे ख़ुदा है
नमूने हैं येह सीरते अम्बिया के येह पुतले वफ़ा के येह पैकर ह़या के
येह अ़दले मुजस्सम येह सिदक़े मसूर
अबू बक्रो फ़ारूक़ व उ़षमानो ह़ैदर

येह मे'राजे ईमां के हैं चार ज़ीने येह चारों हैं ताजे शरफ़ के नगीने
मुजल्ला हैं अन्वार से इन के सीने संवारा है इन को जमाले नबी ने
मुज़क्का मुसफ़्फ़ा मुक़द्दस मुत़ह्हर
अबू बक्रो फ़ारूक़ व उ़षमानो ह़ैदर

इलाही तड़पती है जब तक रगे जां मह़ब्बत रहे इन के सीने में रक़्सां
वीला इन की है जाने दीं रूह़े ईमां ख़ुदा से दुआ़ है येही मेरी हर आं
रहे ता दमे मर्ग मेरी ज़बां पर
अबू बक्रो फ़ारूक़ व उ़षमानो ह़ैदर

अज़ : जनाब ख़ुमार बारहबंक्वी

वाह रे दाग़े इश्क़े रसूल शाम को तारा सुब्ह़ को फूल
कैसे छुपें अन्वारे रसूल चांद पे किस ने डाली धूल
पेशे नज़र है शक्ले रसूल दे दे ख़ुदाया ह़श्र को तूल
नामे मुह़म्मद ले के तू देख रह़मतें हैं बे ताबे नुज़ूल
बात मदीने जैसी कहां कौन करे फ़िरदोस क़बूल

इन से येह कहना जा के सबा दिल है बहुत दूरी से मलूल
अब तो बुला लो पास मुझे अब तो गुज़ारिश कर लो क़बूल
पेशे नज़र रौज़ा हो ख़ुमार
और पढूं में ना'ते रसूल

अज़ हज़रते बैदम वारिषी عَلَیْہِ رَحْمَۃ

अ़दम से लाई है हस्ती में आरज़ूए रसूल
कहां कहां लिये फिरती है जुस्त्जूए रसूल
ख़ुशा वोह दिल की हो जिस दिन में आरज़ूए रसूल
ख़ुशा वोह आंख कि हो महवे हुस्ने रूए रसूल
तलाशे नक़्शे कफ़े पाए मुस्त़फ़ा की क़सम
चुने हैं आंखों से ज़र्राते ख़ाके कूए रसूल
फिर इन के नशए ईमां का पूछना क्या है
जो पी चुके हैं अज़ल से मए सबूए रसूल
बलाएं लूं तेरी ऐ जज़्बे शौक़ सल्ले अ़ला
कि आज दामने दिल खींच रहा है सूए रसूल
शगुफ़्ता गुलशने ज़हरा का हर गुल तर है
किसी में रंगे अ़ली है किसी में बूए रसूल
अ़जब तमाशा हो मैदाने ह़श्र में **बैदम**
कि सब हों पेशे ख़ुदा और में रू ब रूए रसूल

अज़ : जनाब ह़यात वारिषी साहि़ब

हुब्बे अह़मद अज़ल ही से सीने में है मैं यहां हूं मेरा दिल मदीने में है
इत्रे जन्नत में भी ऐसी ख़ुश्बू नहीं जैसी ख़ुश्बू नबी के पसीने में है
इस लिये है इसी सम्त का'बा झुका घर ख़ुदा का मुह़म्मद के सीने में है
फूल तो फूल कांटों में भी हुस्न है लुत़्फ़ जन्नत से बढ़ कर मदीने में है
क्या मुक़द्दर है बू बक्रो फ़ारूक़ का जिन का घर रह़मतों के ख़ज़ीने में है
बे सहारा न समझे ज़माना मुझे मेरे आक़ा का मस्कन मदीने में है
मौत लाई **ह़यात** अब नई ज़िन्दगी
येह मज़ा मेरे मर मर के जीने में है

तरानए नमाज़

दीदारे ह़क़ दिखाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़ जन्नत तुम्हें दिलाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़
दरबारे मुस्त़फ़ा में तुम्हें ले के जाएगी ख़ालिक़ से बख़्शवाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़
इ़ज़्ज़त के साथ नूरी लिबास अच्छे ज़ेवरात सब कुछ तुम्हें पहनाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़
जन्नत में नर्म नर्म बिछौनों के तख़्त पर आराम से सुलाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़
ख़िदमत तुम्हारी हूरें करेंगी अदब के साथ रुतबा बहुत बढ़ाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़
कौषर के सल्सबील के शरबत पिलाएगी मेवे तुम्हें खिलाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़
सब इत्रो फूल होंगे निछावर पसीने पर ख़ुश्बू में जब बसाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़
रह़मत के शामियानों में ख़ुश्बू के साथ साथ ठन्डी हवा चलाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़

बाग़े बहिश्त रौज़ए रिज़्वां बहारे ख़ुल्द   सब कुछ तुम्हें दिखाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़

हूरे तराने गाएगी और झूम झूम कर   नग़मे तुम्हें सुनाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़

पढ़ती रहो नमाज़ कि दोनों जहान में   सब कुछ तुम्हें दिलाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़

फ़ाक़े से मुफ़्लिसी से जहन्नम की आग से   सब से तुम्हें बचाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़

पढ़ कर नमाज़ साथ लो सामाने आख़िरत   मेह़शर में काम आएगी ऐ बीबियो ! नमाज़

बात आ'ज़मी की मानो न छोड़ो कभी नमाज़   अल्लाह से मिलाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़

शजरए नक़्शबन्दिया मुजद्दिदिय्या

या इलाही रह़्म फ़रमा मुस्त़फ़ा के वासित़े
ह़ज़रते बू बक्र बा सिदक़ो सफ़ा के वासित़े
बहरे सलमां क़ासिमो जा'फ़र ब ह़क़्क़े बा यज़ीद
अबुल ह़सन और बू अ़ली बा ख़ुदा के वासित़े
ख़्वाजा यूसुफ़ अ़ब्दे ख़ालिक़ आरिफ़ व मह़मूदे ह़क़
शहे अ़ज़ीज़ाने अ़ली सदरुल उ़ला के वासित़े
बाबा सम्मासी मुह़म्मद सय्यिद मीर कलाल
शह बहाउद्दीन इमामुल औलिया के वासित़े
शैख़ अ़लाउद्दीन व या'क़ूब व उ़बैदुल्लाह वली
ख़्वाजा ज़ाहिद शाह दुरवेश ख़ुदा के वासित़े

शाह अमकिंगी मुह़म्मद ख़्वाजा बाक़ी ब ह़क़

ह़ज़रते अह़मद मुजद्दिदे ह़क़ नुमा के वासित़े

ख़्वाजा मा'सूम व सैफ़ुद्दीन व मोह़सिन देहलवी

सय्यिद नूरे मुह़म्मद पारसा के वासित़े

मज़्हरे ह़क़ जाने जां व शाह अ़ब्दुल्लाह वली

मौलवी अ़ब्दुर्रह़मान मुक़्तदा के वासित़े

मौलवी अ़ब्दुल ग़फ़ूर व सय्यिद अह़मद मियां

ह़ाफ़िज़ अबरार ह़सन पीरे हुदा के वासित़े

ह़ज़रते मह़बूब अह़मद के तवस्सुल से कर अ़त़ा

ने'मते दारैन अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा के वासित़े

﴿رضی اللہ تعالٰی عنہم اجمعین﴾

शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या

या इलाही रह़्म फ़रमा मुस्त़फ़ा के वासित़े

या रसूलल्लाह करम कीजिये ख़ुदा के वासित़े

मुश्किलें ह़ल कर शहे मुश्किल कुशा के वासित़े

कर बलाएं रद शहीदे करबला के वासित़े

सय्यिदे सज्जाद के सदक़े में साजिद रख मुझे

इल्मे ह़क़ दे बाक़िरे इल्मे हुदा के वासित़े

सिद्क़े सादिक़ का तसद्दुक़ सादिक़ुल इस्लाम कर

बे ग़ज़ब राज़ी हो काज़िम और रज़ा के वासित़े

बहरे मा'रूफ़ो सरी मा'रूफ़ दे बे ख़ुद सरी

जुन्दे ह़क़ में गिन जुनैदे बा सफ़ा के वासित़े

बहरे शिब्ली शेरे ह़क़ दुन्या के कुत्तों से बचा

एक का रख अ़ब्दे वाह़िद बे रिया के वासित़े

बुल फ़रह़ का सदक़ा कर ग़म को फ़रह़ दे ह़ुस्नो सा'द

बुल ह़सन और बू सईदे सा'दे ज़ा के वासित़े

क़ादिरी कर क़ादिरी रख क़ादिरियों में उठा

क़द्रे अ़ब्दुल क़ादिरे क़ुदरत नुमा के वासित़े

اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهُمْ رِزْقًا से दे रिज़्क़े ह़सन

अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ इब्ने ग़ौसुल औलिया के वासित़े

नस्र अबी सालेह़ का सदक़ा सालेह़ो मन्सूर रख

दे ह़याते दीं मुह़ये जां फ़िज़ा के वासित़े

त़ूरे इरफ़ानो उ़लुव्वो ह़म्दो ह़ुस्ना व बहा

दे अ़ली मूसा ह़सन अह़मद बहा के वासिते

बहरे इब्राहीम मुझ पर नारे ग़म गुलज़ार कर

भीक दे दाता भीकारी बादशाह के वासित़े

ख़ानए दिल को ज़िया दे रूए ईमां को जमाल

शह ज़िया मौला जमालुल औलिया के वासिते

दे मुहम्मद के लिये रोज़ी कर अहमद के लिये

ख़्वाने फ़ज़्लुल्लाह से हिस्सा गदा के वासिते

दीनो दुन्या के मुझे बरकात दे बरकात से

इश्के़ हक़ दे इश्क़ी इश्के़ इन्तिमा के वासिते

हुब्बे अहले बैत दे आले मुहम्मद के लिये

कर शहीदे इश्क़े, हम्ज़ा पेश्वा के वासिते

दिल को अच्छा तन को सुथरा जान को पुर नूर कर

अच्छे प्यारे शम्से दीं बदरुल उ़ला के वासिते

दो जहां में ख़ादिमे आले रसूलुल्लाह कर

हज़रते आले रसूले मुक़्तदा के वासिते

नूरे जान व नूरे ईमां नूरे क़ब्रो हश्र दे

अबुल हसन अहमद नूरी लक़ा के वासिते

कर अ़ता अहमद रज़ाए अहमदे मुरसल मुझे

मेरे मौला हज़रते अहमद रज़ा के वासिते

सायए जुम्ला मशाइख़ या ख़ुदा हम पर रहे

मेरे मुर्शिद हज़रते हामिद रज़ा के वासिते

या इलाही इन मशाइख़ के वसीले कर अ़ता
ने'मते कौनैन अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा के वासिते
सदक़ा इन आ'यां का दे छे ऐन इ़ज़्ज़ो इ़ल्मो अ़मल
अ़फ्वो इरफ़ां आ़फ़िय्यत इस बे नवा के वासित़्

﴾رضی اللہ تعالی عنھم اجمعین﴿

फ़ातिह़ए सिलसिला

शजरए मुबारका हर रोज़ बा'द नमाज़े फ़ज्र एक बार पढ़ लिया करें, इस के बा'द दुरूदे ग़ौषिय्या सात बार, अलह़म्द शरीफ़ एक बार, आयतुल कुरसी एक बार, सूरए इख़्लास सात बार, फिर दुरूदे ग़ौषिया तीन बार पढ़ कर इस का षवाब इन तमाम मशाइख़े किराम की अरवाह़े त़य्यिबा को नज़्र करें जिस के हाथ पर बैअ़त की है अगर वोह जिन्दा है तो उस के लिये दुआ़ए आ़फ़िय्यत व सलामत करें वरना उस का नाम भी शामिले फ़ातिह़ा करें।

दुरूदे ग़ौषिया

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلَا نَا مُحَمَّدٍ مَعْدَنِ الْجُوْدِ وَ الْکَرَمِ وَ اٰلِہٖ وَ بَارِکْ وَسَلِّمْ

पंज गंज क़ादिरी

बा'द नमाज़े फ़ज्र یَاعَزِیْزُیَااَللّٰہُ   बा'द नमाज़े ज़ोहर یَا کَرِیْمُ یَااَللّٰہُ
बा'द नमाज़े अ़स्र یَاجَبَّارُیَااَللّٰہُ   बा'द नमाज़े मग़रीब یَاسَتَّارُیَااَللّٰہُ
बा'द नमाज़े इ़शा یَاغَفَّارُیَااَللّٰہُ

सब सो सो बार और अव्वल व आख़िर तीन तीन बार दुरूद शरीफ़, इन को रोज़ाना पढ़ने से दीनो दुन्या की बे शुमार बरकतें ज़ाहिर होंगी।

बराए क़ज़ाए ह़ाजात

﴾1﴿ اَللّٰہُ رَبِّیْ لَا شَرِیْکَ لَہٗ :- आठ सो चोहत्तर बार अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ ग्यारह ग्यारह बार इस क़दर मुतअ़य्यन ता'दाद में बा वुज़ू क़िब्ला रू दो ज़ानू बैठ कर ता ह़ुसूले मुराद पढ़ें और इसी कलिमे को उठते बैठते चलते फिरते वुज़ू बे वुज़ू हर ह़ाल में बे गिनती बे शुमार पढ़ते रहें, اِنْ شَاءَاللّٰہ تَعَالٰی मुराद पूरी होगी।

﴾2﴿ حَسْبُنَا اللّٰہُ وَنِعْمَ الْوَکِیْلُ :-साढ़े चार सो मरतबा रोज़ाना ता ह़ुसूले मुराद पढ़ें, अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ ग्यारह ग्यारह बार, जिस वक़्त घबराहट हो इसी कलिमे को ब कषरत पढ़ें, اِنْ شَاءَاللّٰہ تَعَالٰی काम बन जाएगा।

﴾3﴿ **"तुफ़ैले ह़ज़रते दस्तगीर दुश्मन होवे ज़ेर"** :- बा'द नमाज़े ई़शा एक सो ग्यारह बार और अव्वल आख़िर ग्यारह ग्यारह बार दुरूद शरीफ़ पढ़ें। येह तीनों अ़मल निहायत मुजर्रब और आसान हैं, इन से ग़फ़्लत न की जाए।

मुनाजात

या इलाही हर जगह तेरी अ़ता का साथ हो
जब पड़े मुश्किल शहे मुश्किल कुशा का साथ हो

या इलाही भूल जाऊं नज़अ़ की तक्लीफ़ को
शादिये दीदार ह़ुस्ने मुस्त़फ़ा का साथ हो

या इलाही गोरे तीरा की जब आए सख़्त रात
उन के प्यारे मुंह की सुब्ह़े जां फ़िज़ा का साथ हो

या इलाही जब पड़े मह़शर में शोरे दारोगीर
अम्न देने वाले प्यारे मुस्त़फ़ा का साथ हो

या इलाही जब ज़बानें बाहर आएं प्यास से
साक़िये कौषर शहे जूदो अ़ता का साथ हो

या इलाही गर्मिये मेह़शर से जब भड़कें बदन
दामने मह़बूब की ठंडी हवा का साथ हो

या इलाही रंग लाएं जब मेरी बे बाकियां
उन की नीची नीची नज़रो की ह़या का साथ हो

या इलाही जब बहें आंखें ह़िसाबे जुर्म से
उन तबस्सुम रेज़ होटों की दुआ़ का साथ हो

या इलाही जब सरे शम्शीर पर चलना पड़े
रब्बे सल्लिम कहने वाले पेश्वा का साथ हो

या इलाही जब **रज़ा** ख़्वाबे गिरां से सर उठाए
दौलते बेदार इश्क़े मुस्त़फ़ा का साथ हो

❋❋❋❋❋

ماخذ و مراجع

نمبرشمار	کتاب	مطبوعہ
۱	قرآن مجید	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاهور
۲	تفسیر روح البیان	مکتبه عثمانیه ،کوئٹه
۳	تفسیر بیضاوی	میر محمد کتب خانه کراچی
۴	التفسیرات الاحمدیة	مکتبه حقانیه ، کوئٹه
۵	تفسیر روح المعانی	مکتبه حقانیه ، ملتان
۶	التفسیر الکبیر	داراحیاء التراث العربی ، بیروت
۷	تفسیر جمل	قدیمی کتب خانه ،کراچی
۸	تفسیر خازن	صدیقیه کتب خانه ، اکوڑه خٹک
۹	الدرالمنثور فی التفسیر الماثور	دارالفکر،بیروت
۱۰	حاشیة الصاوی	دارالفکر،بیروت
۱۱	صحیح البخاری	دارالکتب العلمیة، بیروت
۱۲	صحیح مسلم	دارابن حزم ، بیروت
۱۳	جامع الترمذی	دارالفکر، بیروت
۱۴	سنن ابن ماجه	دارالمعرفة ، بیروت
۱۵	سنن ابی داود	داراحیاء التراث العربی ،بیروت
۱۶	سنن النسائی	دارالجیل، بیروت
۱۷	المؤطالامام مالک	دارالمعرفة ، بیروت
۱۸	مشکاة المصابیح	دارالفکر،بیروت
۱۹	شعب الایمان للبیهقی	دارالکتب العلمیة ، بیروت
۲۰	المسند لامام احمد بن حنبل	دارالفکر ،بیروت
۲۱	کنزالعمال	دارالکتب العلمیة ،بیروت
۲۲	الترغیب والترهیب	دارالکتب العلمیة ،بیروت

۲۳	شرح صحیح مسلم،للنووی	ایچ ایم سعید کمپنی ، کراچی
۲۴	شرح السنة	دارالکتب العلمیة ،بیروت
۲۵	فیوض الباری شرح صحیح البخاری	دارالکتب العلمیة ،بیروت
۲۶	ماثبت من السنة (مترجم)	فرید بک اسٹال، لاھور
۲۷	المواھب اللدنیة	مرکزاھلسنت برکات رضا، الھند
۲۸	فتح الباری شرح صحیح البخاری	دارالکتب العلمیة ،بیروت
۲۹	المعجم الاوسط	دارالکتب العلمیة ،بیروت
۳۰	المعجم الکبیر	داراحیاء التراث العربی، بیروت
۳۱	اشعة اللمعات شرح المشکاة	المکتبة الرشیدیة ، کوئٹه
۳۲	مرقاة المفاتیح شرح مشکاة المصابیح	دارالفکر ، بیروت
۳۳	کشف الخفاء	دارالکتب العلمیة ،بیروت
۳۴	شرح العلامة الزرقانی علی المواھب	دارالکتب العلمیة ،بیروت
۳۵	المستدرک للحاکم	دارالمعرفة ، بیروت
۳۶	جامع الاحادیث للسیوطی	دارالفکر ، بیروت
۳۷	جمع الجوامع	
۳۸	سنن الدارمی	قدیمی کتب خانه ، کراچی
۳۹	مصنف ابن ابی شیبة	دارالفکر،بیروت
۴۰	السنن الکبری للنسائی	دارالکتب العلمیة ،بیروت
۴۱	السنن الکبری للبیهقی	دارالکتب العلمیة ،بیروت
۴۲	مجمع الزوائد	دارالفکر ، بیروت
۴۳	الفتاوی الرضویة (الجدیدة)	رضا فاؤنڈیشن ، لاھور
۴۴	القول الجمیل	
۴۵	فتاوی عزیزیة	
۴۶	بھارشریعت	مکتبه رضویه ، کراچی
۴۷	البحرالرائق	المکتبة الرشیدیة ، کوئٹه

۴۸	الفتاوی الھندیة	المکتبة الرشیدیة، کوئٹہ
۴۹	مجمع الانھر	المکتبة الغفاریة، کوئٹہ
۵۰	الفتاوی التاتارخانیة	ادارة القرآن ، کراچی
۵۱	ردالمحتارعلی الدرالمختار	دارالمعرفة،بیروت
۵۲	خلاصة الفتاوٰی	المکتبة الرشیدیة، کوئٹہ
۵۳	فتح القدیر	مرکزاھلسنت برکات رضا، ھند
۵۴	نصب الرایة	مکتبة حقانیة، پشاور
۵۵	تبیین الحقائق	دارالکتب العلمیة ،بیروت
۵۶	کتاب المناسک لملاء علی قاری	ادارة القراٰن ، کراچی
۵۷	مراقی الفلاح	مکتبہ امدادیہ، ملتان
۵۸	شرح وقایة	میر محمد کتب خانہ ،کراچی
۵۹	غنیة المتملی	سھیل اکیڈمی ، لاھور
۶۰	صغیری شرح منیة المصلی	میر محمد کتب خانہ ، کراچی
۶۱	مراقی الفلاح مع حاشیة الطحطاوی	قدیمی کتب خانہ ، کراچی
۶۲	الھدایة	داراحیاء التراث العربی ، بیروت
۶۳	الجوھرة النیرة	میر محمد کتب خانہ ، کراچی
۶۴	تاریخ الخلفاء للسیوطی	قدیمی کتب خانہ ، کراچی
۶۵	الکامل فی ضعفاء الرجال	دارالکتب العلمیة ، بیروت
۶۶	احیاء علوم الدین	دارصادر، بیروت
۶۷	غنیة الطالبین	دارالکتب العلمیة، بیروت
۶۸	شرح العقائد النسفیة	قدیمی کتب خانہ ، کراچی
۶۹	کتاب القلیوبی	ایچ ایم سعید کمپنی ، کراچی
۷۰	المسامرة بشرح المسایرة	مطبعة السعادة بمصر
۷۱	شرح الفقة الاکبرلملا علی قاری	میر محمد کتب خانہ ، کراچی
۷۲	المعتقد المنتقد مع المستند المعتمد	ب کات پبلش ز، ک اچ

۷۳	الخصائص الکبری	دارالکتب العلمیة ،بیروت
۷۴	النبراس	مکتبة حقانیة ،ملتان
۷۵	الشفاء بتعریف حقوق المصطفی	عبدالتواب اکیڈمی ، ملتان
۷۶	مرقع کلیمی	
۷۷	شرح الصدور	دارالکتب العلمیة ،بیروت
۷۸	فیوض قرآنی	
۷۹	مدارج النبوت	مرکز اھلسنت برکات رضا، ھند
۸۰	السیرة النبویة لابن ھشام	دارالمعرفة ، بیروت
۸۱	الاستیعاب	دارالکتب العلمیة ،بیروت
۸۲	الاصابة فی تمییز الصحابة	دارالکتب العلمیة ،بیروت
۸۳	حجة الله علی العالمین	مرکزاھلسنت برکات رضا، ھند
۸۴	بھجة الاسرار	دارالکتب العلمیة ،بیروت
۸۵	عمل الیوم واللیلة لابن السني	دارالکتاب العربی ، بیروت
۸۶	اخبار الاخیار(فارسی)	فاروق اکیڈمی ، گمبٹ پاکستان
۸۷	فوائد الفواد مع ھشت بھشت	شبیر برادرز، لاھور
۸۸	مفتاح الحسن	
۸۹	الیواقیت والجواھر	دارالکتب العلمیة ،بیروت
۹۰	الفتاوی القاضی خان	مکتبہ حقانیہ ، کوئٹہ
۹۱	مجربات دیربی	
۹۲	شرح سفرالسعادة	
۹۳	سیرت صدر الشریعہ علیہ الرحمة	مکتبہ اعلی حضرت

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुत़ालआ़ कुतुब

﴾शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ﴿

(1) करन्सी नोट के शरई अह़कामात :

(अल किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी क़िरत़ासिद्दराहिम) (कुल सफ़ह़ात : 199)

(2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़)

(अल याक़ूतितुल वासित़ह) (कुल सफ़ह़ात : 60)

(3) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

(4) मआ़शी तरक़्क़ी का राज़

(ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

(5) शरीअ़त व त़रीक़त

(मक़ालुल उ़-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शर-इ व उ़-लमाअ) (कुल सफ़ह़ात : 57)

(6) षुबूते हिलाल के त़रीक़े (तुरुक़ि इस्बाति हिलाल) (कुल सफ़ह़ात : 63)

(7) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब

(इज़्हारिल ह़क़्क़िल जली) (कुल सफ़ह़ात : 100)

(8) ईदैन में गले मिलना कैसा ?

(विशाहुल जीद फ़ी तह़लीलि मुआ़नि-क़तिल ईद) (कुल सफ़ह़ात : 55)

(9) राहे ख़ुदा عزّوجل में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल

(रद्दिल कह़्त़ि वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फ़ु-क़राअ) (कुल सफ़ह़ात : 40)

(10) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़

(अल हुक़ूक़ लि त़र्ह़िल उ़क़ूक़) (कुल सफ़ह़ात : 125)

(11) दुआ़ के फ़ज़ाइल (अह़्सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़अ मअ़ह़ू ज़ैलुल मुद्दआ़ लि अह़्सनिल विआ़अ)

(कुल सफ़ह़ात : 326)

शाएअ़ होने वाली अ़-रबी कुतुब

अज़ : इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत

मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

(12) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़ह़ात : 74)

(13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़ह़ात : 77)

(14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल सफ़ह़ात : 62)

(15) इक़ा-मतुल क़ियामह (कुल सफ़ह़ात : 60)

(16) अल फ़ज़्लुल मौहबी (कुल सफ़ह़ात : 46)

(17) अज्लल ए'लाम (कुल सफ़ह़ात : 70)

(18) अज़्ज़म-ज़-मतुल क़-मरिय्यह (कुल सफ़ह़ात : 93)

(19,20,21) जद्दिल मुम्तार अ़ला रद्दिल मुह़तार

(अल मुजल्लद अल अव्वल वष्षानी)(कुल सफ़ह़ात : 713,677,570)

शो'बए इस्लाही़ कुतुब

(22) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़ह़ात : 160)

(23) इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़ह़ात : 200)

(24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़ह़ात : 33)

(25) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़ह़ात : 164)

(26) इमतिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़ह़ात : 32)

(27) नमाज़ में लुक़्मा के मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 39)

(28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़ह़ात : 152)

(29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़ह़ात : 43)

(30) निसाबे मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 196)

(31) काम्याब त़ालिबे इ़ल्म कौन ? (कुल सफ़ह़ात : तक़रीबन 63)

(32) फ़ैज़ाने एह़याउल उ़लूम (कुल सफ़ह़ात : 325)

(33) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़ह़ात : 96)

(34) ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़ह़ात : 50)

(35) तह़क़ीक़ात (कुल सफ़ह़ात : 142)

(36) अर-बईने ह़-नफ़िय्यह (कुल सफ़ह़ात : 112)

(37) अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़ह़ात : 24)

(38) त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 30)

(39) तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़ह़ात : 124)

(40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़ह़ात : 48)

(41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से) (कुल सफ़ह़ात : 275)

(42) टी वी और मूवी (कुल सफ़ह़ात : 32)

(43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात ह़िस्से)

(50) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़ह़ात : 24)

(51) ग़ौषे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ह़ालात (कुल सफ़ह़ात :106)

(52) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 100)

(53) रहनुमाए जदवल बराए म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 255)

(54) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़ह़ात : 24)

(55) म-दनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़ह़ात : 68)

(56) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़ह़ात : 220)

(57) तरबिय्यते अवलाद (कुल सफ़ह़ात : 187)

(58) आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 62)

(59) अह़ादीषे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़ह़ात : 66)

(60) फ़ैज़ाने चह्ल अह़ादीष (कुल सफ़ह़ात : 120)

(61) बद गुमानी (कुल सफ़ह़ात : 57)

शो'बए तराजिमे कुतुब

(62) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल

(अल मुत्जरुर्राबेह़ फ़ी षवाबिल अ़-मलिस्सालेह़) (कुल सफ़ह़ात : 743)

(63) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन) (कुल सफ़ह़ात : 36)

(64) ह़ुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़)(कुल सफ़ह़ात : 74)

(65) राहे इ़ल्म (ता'लीमुल मु-तअ़ल्लिम त़रीक़ुत्तअ़ल्लुम) (कुल सफ़ह़ात : 102)

(66) बेटे को नसीह़त (अय्युहल वलद)(कुल सफ़ह़ात : 64)

(67) अद्दा'वति इलल फ़िक्र (कुल सफ़्हात : 148)

(68) आंसूओं का दरिया (बहूरुद्दुमूअ़) (कुल सफ़्हात : 300)

(69) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (कुर्रतुल उ़यून) (कुल सफ़्हात : 136)

(70) उ़यूनुल हि़कायात (मुतर्जम) (कुल सफ़्हात : 412)

शो'बए दर्सी कुतुब

(71) ता'रीफ़ाते नह़्विय्यह (कुल सफ़्हात : 45)

(72) किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़्हात : 64)

(73) नुज़्हतुन्नज़र शर्हे नख़्बतुल फ़िक्र (कुल सफ़्हात : 175)

(74) अर-बईनिन न-वविय्यह (कुल सफ़्हात : 121)

(75) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़्हात : 79)

(76) गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़्हात : 180)

(77) वक़ा-यतिन्नह़्व फ़ी शर्हे हिदा-यतुन्नह़्व

(78) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ़ ह़ाशिया सर्फ़ बनाई

शो'बए तख़्रीज

(79) अ़जाइबुल क़ुर्आन मअ़ ग़राइबुल क़ुर्आन (कुल सफ़्हात : 422)

(80) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़्हात : 679)

(81) बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (हि़स्सा : 1 से 6)

(82) बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (हि़स्सा : 7 से 13)

(83) बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम (हि़स्सा : 14 से 20)

(84) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़्हात : 170)

(85) आईनए क़ियामत (कुल सफ़्हात : 108)

(86) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़्हात : 59)

(87) सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का इ़श्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم (कुल सफ़्हात : 274)

शो'बए अमीरे अहले सुन्नत

(88) सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अ़त्तार के नाम (कुल सफ़हात : 49)
(89) मुक़द्दस तह़रीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़हात : 48)
(90) इस्लाह़ का राज़ (म-दनी चैनल की बहारें हि़स्सए दुवुम) (कुल सफ़हात : 32)
(91) 25 क्रिस्चैन क़ैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 33)
(92) दा'वते इस्लामी की जैलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़हात : 24)
(93) वुज़ू के बारे में वस्वसे और इन का इलाज (कुल सफ़हात : 48)
(94) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ सिवुम (सुन्नते निकाह़)(कुल सफ़हात : 86)
(95) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हि़स्से) (कुल सफ़हात : 275)
(96) बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में हि़कमत (कुल सफ़हात : 48)
(97) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात :48)
(98) पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़हात : 48)
(99) गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़हात : 55)
(100) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़हात : 220)
(101) गुम शुदा दुल्हा (कुल सफ़हात : 33)
(102) मैं ने म-दनी बुर्क़अ़ क्यूं पहना ? (कुल सफ़हात : 33)
(103) जिन्नों की दुन्या (कुल सफ़हात : 32)
(104) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ दुवुम (कुल सफ़हात : 48)
(105) ग़ाफ़िल दर्ज़ी (कुल सफ़हात : 36)
(106) मुख़ालिफ़त मह़ब्बत में कैसे बदली ? (कुल सफ़हात : 33)
(107) मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़हात : 32)
(108) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ अव्वल (कुल सफ़हात : 49)
(109) कफ़न की सलामती (कुल सफ़हात : 33)
(110) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ चहारुम (कुल सफ़हात : 49)

(111) चल मदीना की सआ़दत मिल गई (कुल सफ़ह़ात : 32)

(112) बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़ह़ात : 32)

(113) मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिग़ा कैसे बनी ? (कुल सफ़ह़ात : 32)

(114) बे क़ुसूर की मदद (कुल सफ़ह़ात : 32)

(115) अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़ह़ात : 24)

(116) नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़ह़ात : 32)

(117) आंखो का तारा (कुल सफ़ह़ात : 32)

(118) वली से निस्बत की ब-रकत (कुल सफ़ह़ात : 32)

(119) बा बरकत रोटी (कुल सफ़ह़ात : 32)

(120) इग़वा शुदा बच्चों की वापसी (कुल सफ़ह़ात : 32)

(121) मैं नेक कैसे बना ? (कुल सफ़ह़ात : 32)

(122) शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ? (कुल सफ़ह़ात : 32)

(123) बद किरदार की तौबा (कुल सफ़ह़ात : 32)

(124) ख़ुश नसीबी की किरनें (कुल सफ़ह़ात : 32)

(125) नाकाम आ़शिक़ (कुल सफ़ह़ात : 32)

(126) नादान आ़शिक़ (कुल सफ़ह़ात : 32)

(127) हैरोइन्ची की तौबा (कुल सफ़ह़ात : 32)

(128) नौ मुस्लिम की दर्दभरी दास्तान (कुल सफ़ह़ात : 32)

(129) मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़ह़ात : 32)

(130) ख़ौफ़नाक दांतो वाला बच्चा (कुल सफ़ह़ात : 32)

(131) फ़िल्मी अदा कार की तौबा (कुल सफ़ह़ात : 32)

(132) सास बहू में सुल्ह़ का राज़ (कुल सफ़ह़ात : 32)

(133) क़ब्रिस्तान की चुड़ेल (कुल सफ़ह़ात : 24)

(134) फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 101)

(135) हैरत अंगेज़ हादिषा (कुल सफ़ह़ात : 32)

(136) मॉडर्न नौ जवान की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
(137) क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 32)
(138) सलातो सलाम की आशिक़ा (कुल सफ़हात : 33)
(139) क्रिस्चैन मुसलमान हो गया (कुल सफ़हात : 32)
(140) चमकती आंखों वाले बुर्जुग (कुल सफ़हात : 32)
(141) म्यूज़िकल शो का मतवाला (कुल सफ़हात : 32)
(142) म्यूज़िकल नौ जवान की तौबा (कुल सफ़हात : 32)

मजलिसे तराजुमे कुतुब की त़रफ़ से पेश कर्दा कुतुब

बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ العَالِی के इन रसाइल के अ-रबी तराजुम शाएअ़ हो चुके हैं :
(1) बादशाहों की हड्डियां (इज़ामुल मलूक)
(2) मुर्दे के सदमे (हुमूमिल मय्यित)
(3) ज़ियाए दुरूदो सलाम (ज़ियाइस्सलाति वस्सलाम)
(4) श-ज-रए आलिया क़ादिरिय्या र-ज़विय्या अत्तारिय्या

इन रसाइल के सिन्धी तराजुम भी शाएअ़ हो चुके है

(1) ज़ियाए दुरूदो सलाम (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ العَالِی)
(2) ग़फ़्लत (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ العَالِی)
(3) अबू जहल की मौत (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ العَالِی)
(4) एह्तिरामे मुस्लिम (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी مَدَّظِلُّهُ العَالِی)
(5) दा'वते इस्लामी का तआ़रुफ़।

﴾इस के इलावा अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه के कई रसाइल के सिन्धी तराजुम भी शाएअ़ हो चुके हैं﴿

(1) अह़कामे नमाज़

(2) फ़ैज़ाने रमज़ान

(3) फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह

(4) पेट जो कुफ़्ले मदीना

(5) आदाबे त़आ़म

(6) बयानाते अ़त्तारिय्या

(7) जिन्नात जो बादशाह

(8) सुब्हे बहारां

(9) ज़ल्ज़लो इन इनजा अस्बाब

(10) आक़ा जो महीनो

(11) अब्लक़ घोड़े सुवार

(12) पुल सिरात़ जी दहशत

(13) ज़ख़्मी नांग

(14) कफ़न जी वापसी

(15) बरेली कान मदीना

(16) मुलाज़िमीन जा लाइ 21 म–दनी गुल

(17) शजरए अ़त्तारिय्या

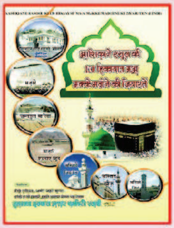
(18) 40 रूह़ानी इलाज

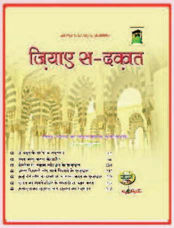
﴾अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के इन रसाइल के सिन्धी तराजुम भी शाएअ़ हो चुके हैं﴿

(1) मूवी इन टीवी
(2) उ़श्र जा अह़काम (हारीन जा लाइ)
(3) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी
(4) आदाबे मुर्शिदे कामिल
(5) इन्फ़िरादी कोशिश
(6) ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ
(7) तंगदस्ती इन इनजा अस्बाब
(8) निसाबे म-दनी क़ाफ़िला

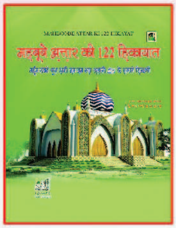
दिखावे के लिये ज़ेवरात पहनना कैसा?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 397 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "पर्दे के बारे में सुवाल जवाब" सफ़ह़ा 270 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : औ़रत को बत़ौरे फ़ख़्र व तकब्बुर दिखावा करने के लिये ज़ेवर पहनना बाइ़से अ़ज़ाब है। हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम, दाफ़ेए़ रंजो अलम, साह़िबे जूदो करम, शाफ़ेए़ उ़मम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : तुम में से जो औ़रत सोने के ज़ेवर पहने जिसे ज़ाहिर करे उसे इस के सबब अ़ज़ाब दिया जाएगा। (سنن ابی داود، ج٤، ص ٦٢١، الحديث:٧٣٢٤)









اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है, आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते षवाब सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना ''फ़िक्रे मदीना'' के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।'' اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''मदनी इन्आ़मात'' पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''मदनी क़ाफ़िलों'' में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक्तबतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

देहली : उर्दू मार्केट, मटया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली-6 फ़ोन (011) 23284560

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

मक्तबतुल मदीना

सिलेक्टेड हाऊस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात, अल हिन्द MO. 9374031409

Web : www.dawateislami.net / E-mail:maktabaahmedabad@gmail.com